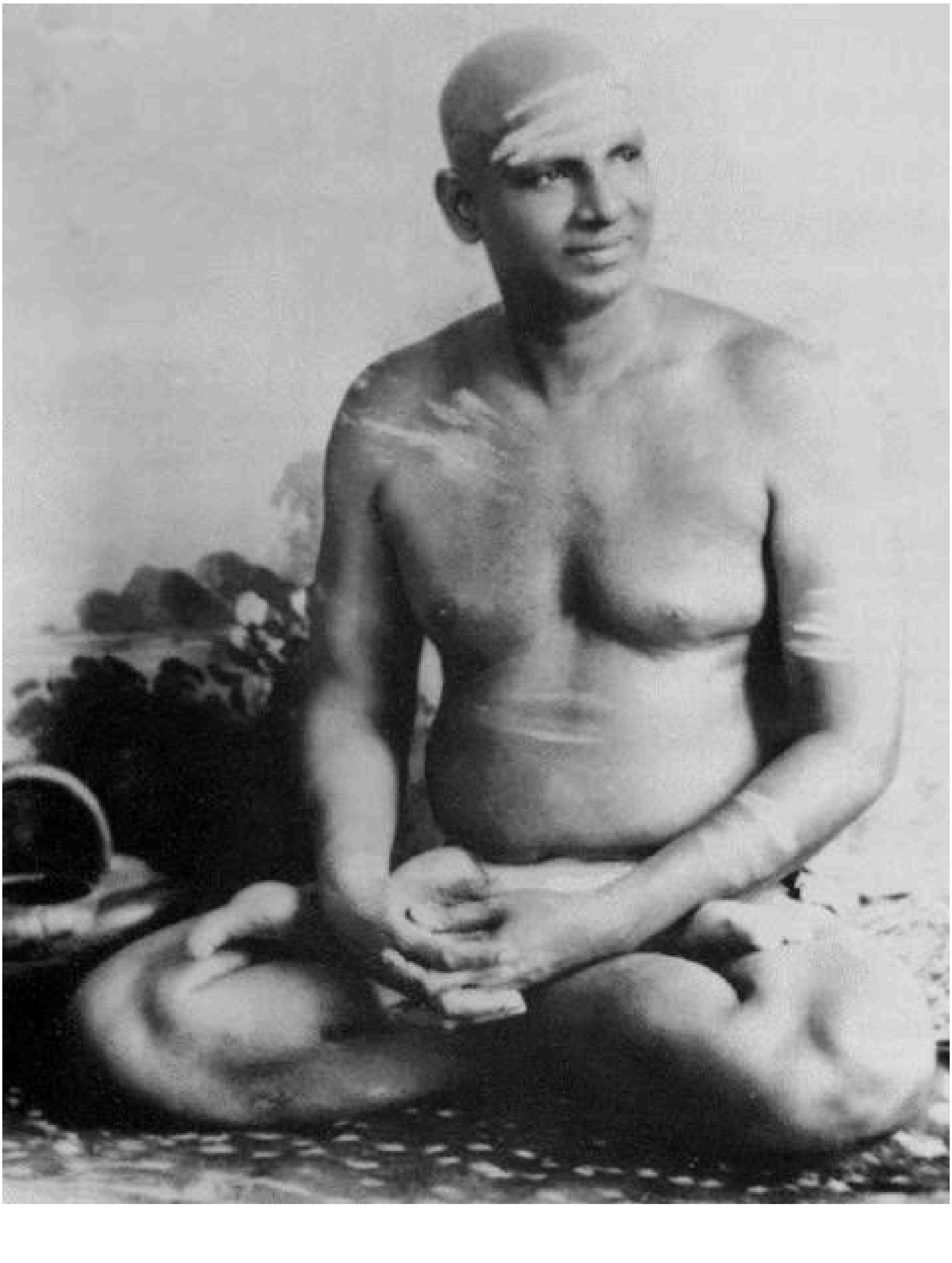
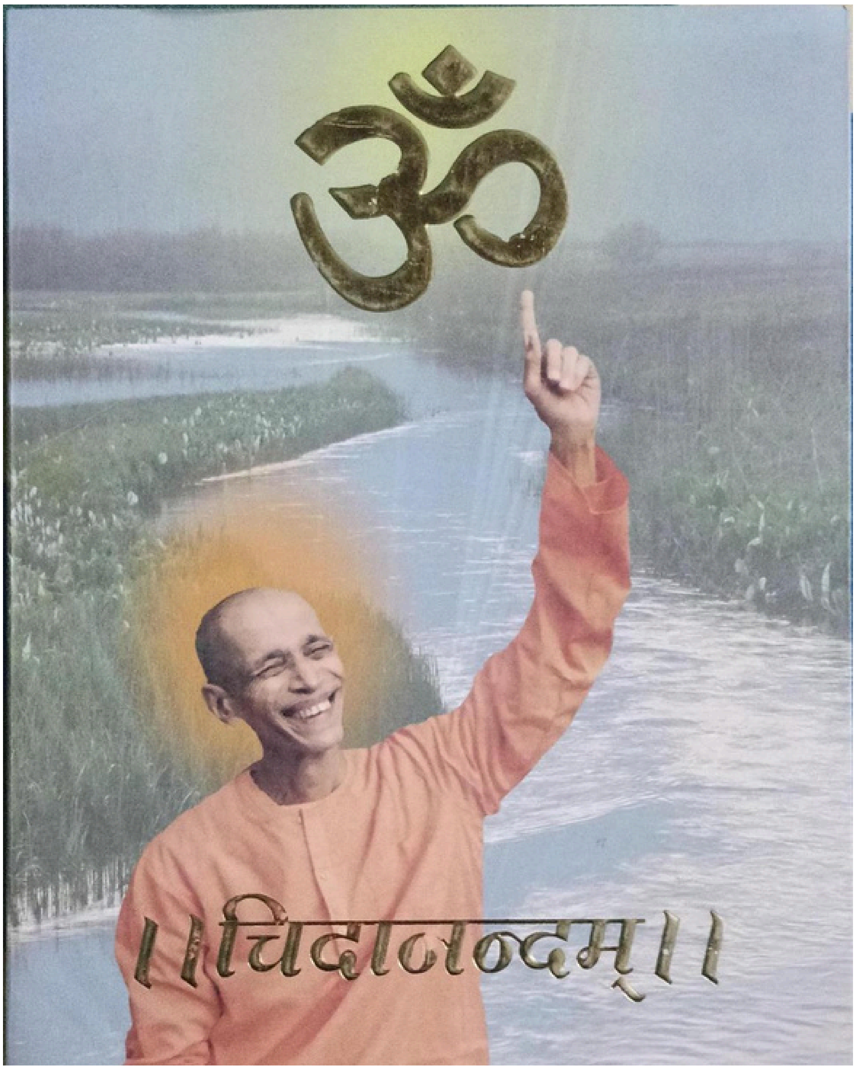




ॐ

चिदानन्दम्

सद्गुरुभगवान् श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के अचभन्नरूप श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की 'प्रथम पुण्यचिचथ आराधना' पर प्रकाचि 'चिदानन्दम्' सूमृचिग्रन्थ

प्रकािक

द चिवाइन लाइफ सोसायटी

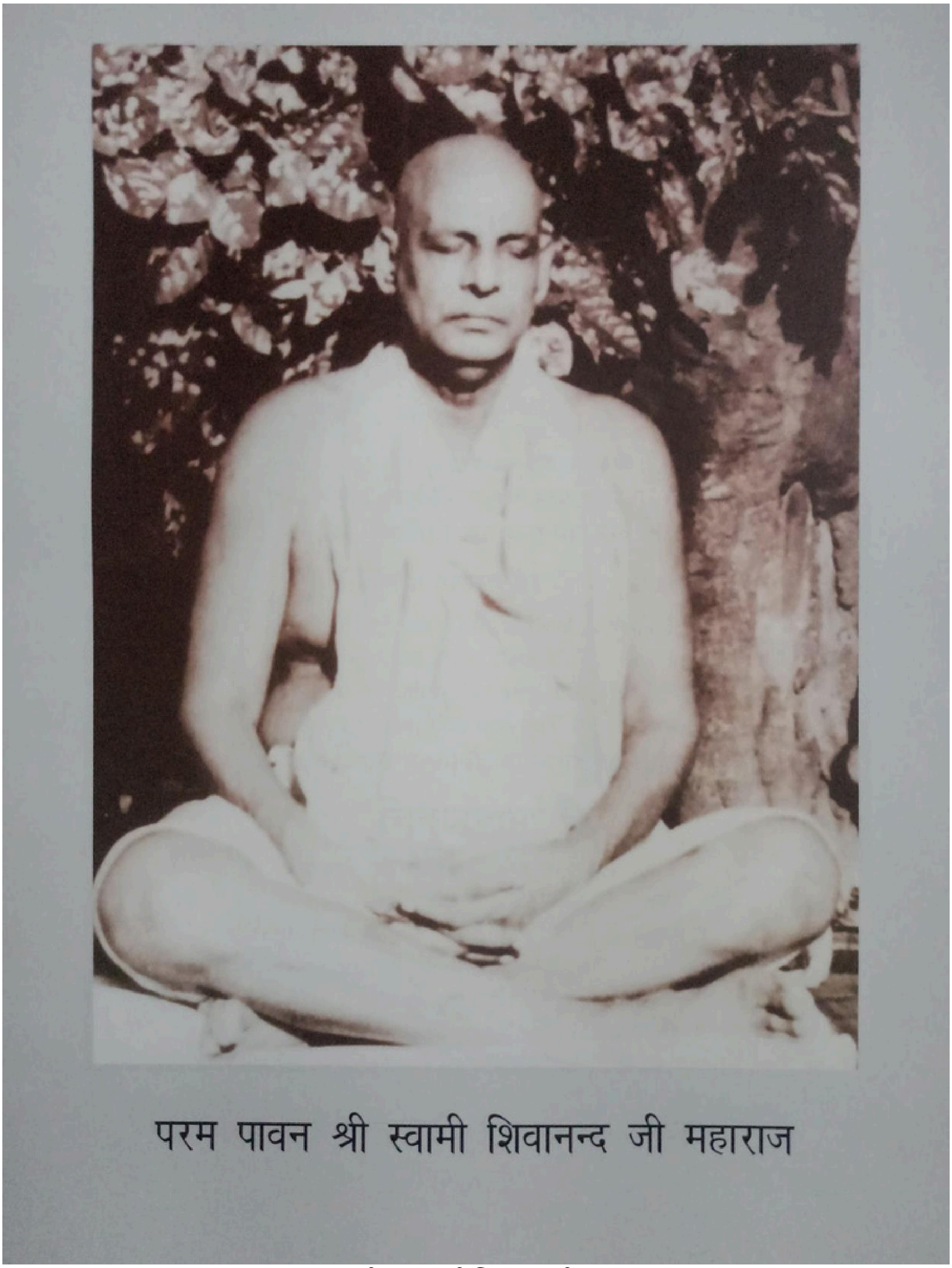
पत्रालय: चिवानन्दनगर-२४९१९२

चजला: चटहरी गढ़वाल (चहमालय),उत्तराखण्ड, भारि

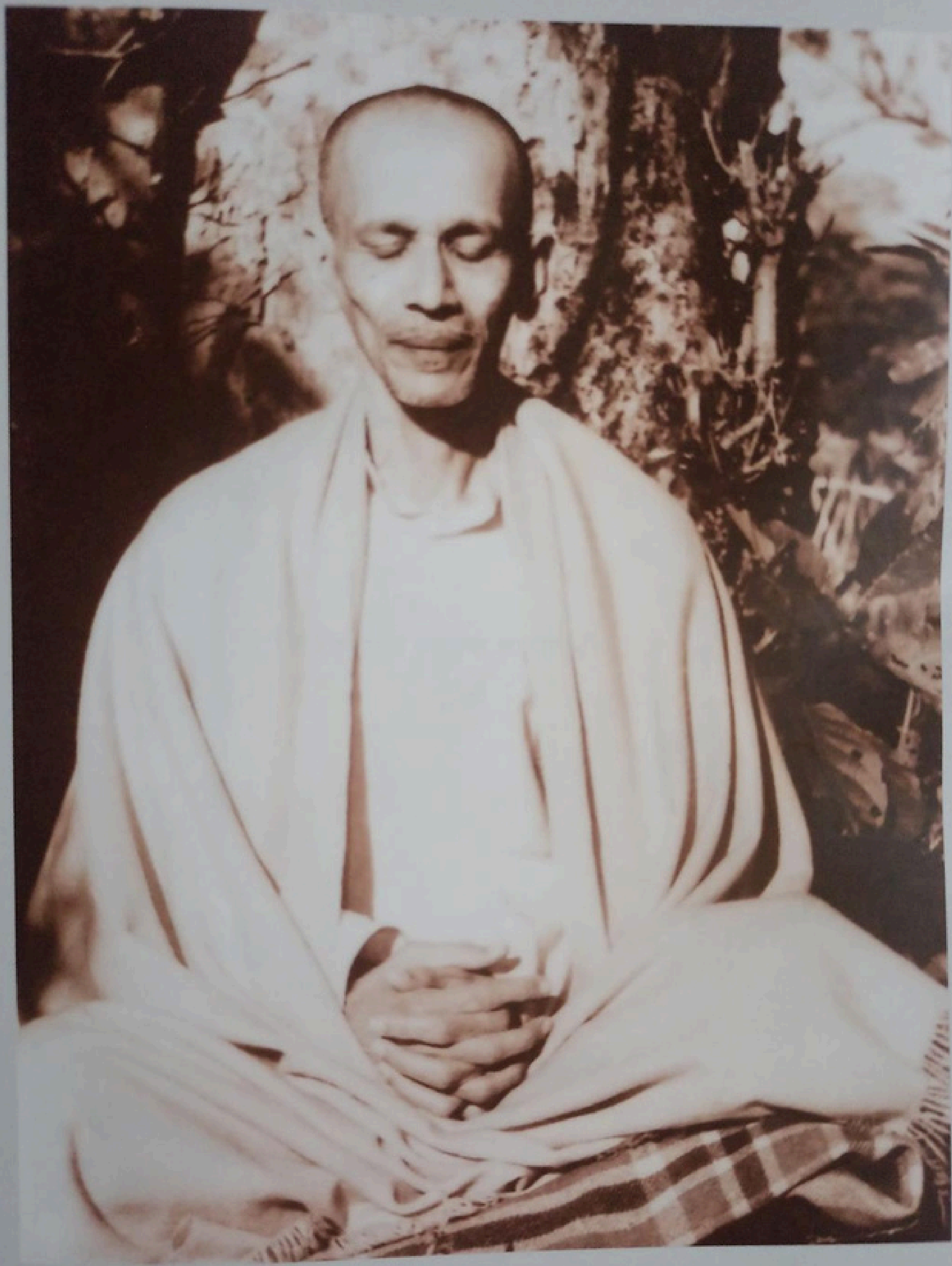
२००९

प्रथम संस्करण-२००९(२,०००प्रचियााँ)

'द चिवाइन लाइफ सोसायटी, चिवानन्दनगर'के चलए स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाचिि
थिा उन्ीं ंके द्वारा 'योग-वेदान्त फारेस्टएकिोमी प्ेरेस, चिवानन्दनगर-२४९ १९२,
चजला: चटहरी गढ़वाल,उत्तराखण्ड' में प्रकाचिि ।



परम पावनश्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज



परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

ॐ

श्रीीः गुरवेनमीः

समपपण

सादर सप्ेरेम समचपपि है- चवश्ववंद्य, परम महनीय, प्रणमनीय, वन्दनीय, नमनीय, अिपनीय
सद्गुरु भगवान् श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराजको - अनन्य गुरु-भक्ति, गुरु-सेवाके
परम आदिप परम चप्रय चदव्यजीवनस्वरूप, अनुपम समचपपि चिष्य

भगवत्पुरुष

सवोत्तम, महानिम, श्ेरे ष्ठिम, अन्यिम, चदव्यिम ब्रह्मलीन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की
प्रथम पावन पुण्यशिशथ आराधना महोत्सवके

पुनिी अवसर पर

सन्त-महात्माओं ंि था अक्तखल चवश्वकेचिष्यों,ंअनुयाचययों,ं श्रद्धालुओं,ं भिों,ं प्ेरेचमयों ंके चदव्य
गुरु-प्ेरेम-वारर सुसंचिि हृदय-वाचटकाकेचवचवधभव्य, रमणीय, सौम्य भाव-सुमनों ंसे सुवाचसि
सुग्ंरंचथि यहप्रत्यक्षभावमयी, वाङ्मयी मंजुलमाला

'शिदानन्दम्'

स्वीकारो, स्वीकारो, करुणावरुणालयगुरुदेव करो कृिाथप, अचपपि है

अन्तरापष्ट्रीय चदव्य जीवन संघ एवं सवप भि-प्ेरेचमयों ंकी ओर से भावचवह्वल-भावभीने हृदयों ंसे,
प्ेरेमपूररि सजल नेत्रों ंसे, श्रद्धायुि समचपपि करों ंसे।
ॐ

विनामिृ

मैं सद्गुरु भगवान् को प्रशिपिा करिा हूँ,
जो सक्तिदानन्दहैं,जोब्रह्मानन्दप्रदानकरिेहैं ,
जो द्वनिद्विीहैं,जोगगनके सदृिचवशालहैं ,
जो 'ित्वमचस' के उिरण से लभ्य हैं ,
जो एक, चनत्य और अपररविपनीय हैं ,
जो मन की सभी अवस्थाओं ं के साक्षी हैं ,

जो भावों ़से परे हैं,और जो प्रकृचिके
ीिनों ़गुणों ़सेरचहि हैं।

ॐ

त्वमाशददेवः पुरुषः पुरिा-
स्त्वमस्य शवश्वस्य परं शनधानम् ।
वेत्ताशस वेद्यं ि परं ि धाम
त्वया िि शवश्वमनन्तरूप ।।

हे सच्चिदानन्दघन ब्रह्म! आप आशद देव
और सनिान पुरुष हैं, आपइसजगि् केपरमआश्रयऔरजाननेवालेिथाजाननेयोग्यऔर परम धाम हैं। हे अनन्तरूप!आपसेयहसबजगि्व्याप्तअथापि्पररपूणपहै।(गीिा:११-३८)

ॐ

गुरु की कृपा प्राप्त करने के चलए आपकोसमपपणकेमाध्यमसेपात्रिाअचजपिकरनीहोगी।
समपपण िथा गुरु-कृपा परस्पर सम्बन्धिि हैं।समपपणगुरु-कृपाकोअपनीओरआकचषपिकरिाहै।
गुरु-कृपा समपपणकोपूणपबनािीहै।

-स्वामी शिवानन्द

चिदानन्द हाँ

ॐ

"ॐ मेरा असली नाम है। ॐ में से आया हूँ। ॐ में ही रहिा हूँ। ॐ में ही समा जाना है।" इस ब्रह्मिित्त्व के केवल वेिा ही नहीं ़प्रत्युि 'ॐ ब्रह्म सच्चिदानन्दघन परमात्मिित्त्व' की सार-सार दीपचनकिा को अध्यात्म-सौन्दयपमय परमोत्कृष्ट जीवन में वास्तचवक रूप में िररिाथप कर सवोत्कृष्ट आदिप प्रस्तुि करने वाले हैं-ख्याचि प्राप्त अन्तरापष्ट्रीय चदव्य जीवन संघ के आद्य संस्थापक-संिलिक **गुरुभगवान् स्वामी शिवानन्द जी महाराज के प्रशिरूप-स्वामी शिदानन्द जी महाराज।**

अनाचद अनन्त सत्य सनािन वैचदक धमप-अध्यात्म एवं गौरवमयी वैचदक संस्कृचि के दृढ़ात्मक पोषक हैं आप; चकन्तु साथ ही साथ चवश्व के समग्र धमों, धमापध्यक्षों,़ पूजास्थलों ़के प्रचि उल्लेखनीय समादरणीय भाव है आपका। द्रष्टव्य है आपका यह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' स्वरूप । वगपजाचिसम्प्रदाय - चनरपेक्ष मानव जाचि के उद्धारक, प्राचणमात्र के चहिैषी हैं आप। यह है आपका वणपिीि करुणावरुणालयस्वरूप- 'सवपभूि चहिे रिाः।' िर-अिर में प्रभु-दिपन करने वाले 'गीिा' के 'वासुदेवीः सवपचमचि' (सब-कुछ वासुदेव है) िथा गीिा-वचणपि प्रकािपुंजरूप सभी सद्गुणों ़के

साक्षि् स्वरूप हैं आप। परम पावनी गंगा-यमुना-सरस्विी चत्रवेणी रूप-परम लक्ष्यप्राप्त्यथप अध्यात्म-पथ साधनों ंयथा : चदव्य जीवन, योग-वेदान्त व कमपपे्रेमाभक्तियोगाचद समस्तयोगसमन्वय के–रण-ािरण चवलक्षण संगम हैं आप। भगवन्नाममचहमा के व अन्य अनेक मनोहारी चिक्षाप्रद, बोधप्रदव पे्रेरक भविारक स्वरूपों ंके प्रभावी साधन-दिपन हैं इसमें। सवोपरर प्रिा स्मरणीय गुरुभगवान्के अपार - अगाध अनुग्रह, मंगल आिीषों–ंउपहारों ंके परम धनी स्वरूप हैं आप िथा गुरु-चिष्य अलौचकक सम्बि व चिष्य-गुरु अनन्य सम्बि के अनुकरणीय परन्तु अचनवपिनीय, अचद्विीय, दिपनीय एकमेव स्वरूप ही हैं आप। हररीः ॐ ित्सि्!

स्वामी शवमलानन्द
शद. जी. सं.

प्राक्कथन

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यचिचथ आराधना स्मरणोत्सव मनाने के उपलक्ष्य में प्रकाचिि चकये जाने वाले इस सूमृचि-ग्रन्थ के सम्बि में इन िब्दों ंको चलखिे हुए मुझे अत्यन्त हषप अनुभव हो रहा है।

परम वन्दनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, परम श्रदे्धेय सद्गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के प्रथम और प्रमुख सवपश्रेष्ठ चिष्यों ंमें से थे। सुसम्माचनि चदव्य जीवन संघ के संस्थापक परमाध्यक्ष की महासमाचध के उपरान्त, पे्रेमास्पद श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज इसके प्रथम परमाध्यक्ष बने और १९६३ से २००८ िक के लगभग ४५ वषप िक परमाध्यक्ष पद को सुिोचभि करिे हुए कायपरि रहे।

स्वामी चिदानन्द जी महाराज १९४३ की बुद्ध पूचणपमा के चदन सद्गुरुदेव के श्रीिरणों ंकी िरण ग्रहण करने से ले कर अपने जीवन के अन्तिम क्षण (२००८) िक श्री गुरुदेव के चमिन के प्रचि समचपपि भाव से सेवारि रहे।

१८ अगस्त २००९ को जो उनका प्रथम पुण्यचिचथ आराधना स्मरणोत्सव मनाया गया है, उसी के उपलक्ष्य में हम इस 'चिदानन्दम्' सूमृचि-ग्रन्थ का उन्मोिन कर रहे हैं। 'चिदानन्दम्' में परम श्रद्धास्पद गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के अपने आदिप चप्रय चिष्य चिदानन्द जी के चवषय में चदव्य भाव-चविार एवं परम गुरुभि श्री स्वामी जी महाराज के अपने परम आराध्य श्री गुरुदेव चवषयक पे्रेरक लेख िथा स्वयं श्री स्वामी चिदानन्द जी के श्रीमुख-चन सृि उपदेिामृिमय प्रविनों ंके लेख हैं। इसके साथ ही सन्त-महात्माओं ंके हृदयोद्गार एवं स्वामी जी के अन्तरंग गुरुबन्धुओं,ं चिष्यों ंऔर गहन श्रद्धालु भिों ंके हाचदपक भाव-चविार संग्रहीि हैं।

इस समस्त चवषय-सामग्री को श्रदे्धेय स्वामी जी के अन्तरंग चिष्यों,ं भिों ंएवं साधकों–ंजो आश्रम- अन्तीःवासी हैं-के द्वारा संकचलि, पररमाचजपि और पररवचधपि चकया गया है। उनके अथक

पररश्रम से ही यह 'चिदानन्दम्' सूमृचि-ग्रन्थ रूप में आपके सामने प्रसुतुि है। मुझे िआा ही नहीं ं पूणप चवश्वास है चक अध्यात्म-प्रेमी एवं पाठक वृन्द इससे लाभाक्तन्वि होंगें।

इस चवचिष्ट् कायप-पूचिप के चलए सवपश्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, िआायप कुकरिी जी महाराज (दिपन महाचवद्यालय), स्वामी चवज्ञानानन्द जी महाराज, स्वामी ब्रह्मचनष्ठानन्द मिाा जी, स्वामी भक्तिचप्रयानन्द मिाा जी, श्रीमिी सुधा भारद्वाज मिाा जी, स्वामी श्रीचप्रयानन्द मिाा जी, स्वामी राचधकाचश्रानन्द मिाा जी और स्वामी युगलचप्रयानन्द मिाा जी, लायब्रेरी स्टाफ़ एवं प्रेस स्टाफ आचद **सभी सहयोशगयों ंकी भच्चिभावपूण सेवा अत्यन्त सराहनीय है।**

भगवान् एवं गुरुदेव इन सब पर परम प्रेम, श्रद्धा-भच्चि और अहैिुकी कृपा का वषणि करिे रहें; यही मेरी हाशदणक मंगल कामना है!

चिवानन्द आश्रम,
पत्रालय: चिवानन्द नगर
१८ अगस्त, २००९

ॐ, प्रेम सचहि
Swami Vimalands
(स्वामी चवमलानन्द)
परमाध्यक्ष, चदव्य जीवन संघ

प्रकािकीय विव्य

अन्तरापष्ट्रीय चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष परम पावन श्री स्वामी चवमलानन्द जी महाराजने हमारे **सवणस्व** पूवप परमाध्यक्ष परम पावन, **मानवीय और भगवदीय स्वरूप** के अद्भिु संगम, चदव्यिा एवं गुरु-कृपा-धनी श्री गुरुभगवान् स्वामी चिवानन्द जी के **स्वस्वरूप भगवतुपुरुष** ब्रह्मलीन

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के अचनचुछुक होने पर भी-श्री गुरुदेव के परम चप्रय सम्माननीय आदिप चिष्य चवषयक अन्तीः आदेि-चनदेि को चिरोधायप चकया िथा श्रद्धालु भिजनों के बारम्बार प्रेममय अनुरोध करने पर उनके हृदयस्थ भावनाओं को मूिप रूप देने का सचनश्चय चकया;
पररणामिीः चजसका साकार पुस्तकाकार रूप प्रसुिुि है आपके समुमुख **'शिदानन्दम्'** ।

श्री गुरुदेव के परम श्रद्धालु योग्यिम शिष्य-भि एवं गुिग्राही विणमान परमाध्यक्ष श्री स्वामी शवमलानन्द जी महाराज पिास वषण पयपन्त परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के अन्त-बाह्य, चदव्य स्वरूप के चदव्य साचन्नध्य में रिसे रहे। अिीः वह श्री स्वामी जी महाराज के व्यक्तिगि व आध्यात्क्त्मक जीवन की चविेषिाओं से पूणपिया पररचिि हैं। ब्रह्मलीन श्री स्वामी जी महाराज अपने जीवन काल में एक चवनीि सेवक एवं आज्ञाकारी चिष्य के रूप में चदव्य जीवन यापन कर श्री गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी को ही सवपप्रकारेण मचहमात्क्न्वि- गौरवात्क्न्वि कर चदव्यानन्दानुभूचि में लीन रहे। **वीिरागी** श्री स्वामी जी महाराज मान-सम्मान, पद-प्रचिष्ठा व प्रिंसा-प्रचसक्त्द्ध से कोसों दूर रहे अथापि् चन:स्पृह रहे। न िो उनको इसकी अपेक्षा थी या है न ही आकाक्षा; चकन्तु **'मैं िो हूँ भिन को दास, भि मेरे शिरोमशि'** की भावोक्ति को **भावग्राही** श्री स्वामी जी महाराज ने **'शिदानन्दम्'** रूप में िररिाथप कर चदखाया है। **धन्य धन्य हैं भिवत्सल श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज।**

'चिदानन्दम्' में वचणपि चवषय-सामग्री िार प्रकिोों में प्रकाचिि है। प्रथम प्रकि में **सवणगुि सम्पन्न, शवनम्रिा के अविार** श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के **मंगलमय जन्मोत्सवों** पर श्री गुरुदेव श्रीमुख चनीःसृि सत्यचनष्ठ, समचपपि चिष्य के प्रचि प्रभाविाली आदिप भावाचभव्यक्तियों िथा अन्य सन्त-महात्माओं एवं भिजनों द्वारा वचणपि सवपत्यागी-वैरागी यचिश्रेष्ठ चवलक्षण **युवा** स्वामी जी महाराज चवषयक प्रेरणाप्रद, बोधप्रद, चिक्षाप्रद भाषणों एवं लेखों का प्रसुिुिीकरण है चजनमें अद्भुि युवा स्वामी जी के **'अमाशनत्व'** रूप का, अनन्य गुरु-भक्ति का प्रकािन है, जो सवपवगप-जन आत्मोद्बोधक है। चविेषकर युवावगप को यह **सद्बोधन** प्रदान करने वाला **सद्बोधक प्रकि** है।

चद्विीय प्रकि **शजिेक्त्िय** श्री स्वामी जी के **बहुआयामी शदव्य व्यक्त्ित्व** िथा **मशहमामय शदव्य कृशित्व** के चदग्बोधन से दीक्तप्तमान् है। सवपचप्रय, सवपचमत्र एवं सवपचहिैषी श्री स्वामी जी के युवावस्था से अक्तन्तम क्षण िक के िप, त्याग, उत्कट वैराग्य, चनष्काम कमप, प्रभुभक्ति, नामस्मरण, जप, कीिपन, चनस्वाथप सेवा, प्रेम, दान, पचवत्रिा, ध्यान, धैयप, िाक्तन्त, परचहि, समत्वयोग एवं वेदान्त की चनयचमि व्यावहाररक िथा **प्रखर आध्याक्त्मक शवद्वत्ता की दीक्त्ि से देदीप्यमान** है यह। सवपप्रकार से सवपवगप-जन को आत्म-प्रकाि प्रदायक है यह दीक्तप्तमान् **शदग्बोधक प्रकि**।

िृिीय प्रकि है, **'शिदानन्द हूँ'** के प्रचि अचपपि भाव-श्रद्धांजचलयों की ज्योचि से ज्योचिि। सबके जीवनप्राणधन श्री स्वामी जी महाराज के महाप्रयाण के उपरान्त पावन 'षोडिी महोत्सव' की पुनीि बेला पर पूज्य महामण्डलेश्वरों, सन्त-महात्माओं िथा भिजनों द्वारा उनके अकथनीय 'सक्तिदानन्द' स्वरूप के कथन के सत्प्रयास की ज्योचि से ज्योचिि है यह **सवणजन प्रबोधक ज्योशि-प्रकि** ।

िुिुथप प्रकि आलोचकि है **सन्तत्व-ज्योशिपुंज** श्री स्वामी जी महाराज के ज्योचिमपय सवपरूपों से यथा-ज्ञान-ज्योचिपुज से, दैवी सम्पद् स्वरूप से, 'क्तस्थिप्रज्ञ' की प्रज्ञि से, साधन िुिुष्टय-सम्पन्निा से, 'सवपभूि चहिे रिीः', 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'योग कमपसु कौिलम्' के साक्षाि् स्वरूप से, सत्य-अचहंसा-ब्रह्मियप, िाक्तन्त, करुणा-दया, अनासक्ति, चिचिक्षा, धीरिा, सात्क्त्वकिा, मृदुलिा, मधुरिा िथा चदव्य प्रेम आचद अनेकानेक सद्गुणों के अलंकरण से, सदािार िूडामचण से। इन सबका चित्रण चकया है पूज्य सन्त-महात्माओं ने अपने अनुभवों एव अनुभूचियों में िथा चिष्य-भिजनों ने अपने संस्मरणों में। इन श्रद्धालुओं के चदव्य श्री स्वामी जी के चदव्य गुणों चवषयक

भावोद्गारों ंरूपी मचणयों ंके प्रकाि से आलोचकि है सवपजन का उद्बोधन करने वाला यह **उद्बोधक आलोक प्रकाि।**

साररीः 'चिदानन्दम्' है एक अनमोल सन्दचिपका, जो सत्दिपन कररी है चक वह है **मानवीय भगवदीय स्वरूप एक साथ-भागवी िना में संच्चथथि भागवि पुरुष,** असाधारण

चिष्य, मानवाि के सेवक, सन्तप्रेमी, सवपधमप सद्भावना के प्रिीक आध्याक्तत्मक सम्पदा के चविरक थिा महान् सद्बोधक, उत्साही चदग्बोधक, प्रेरक प्रबोधक और हैं प्रभावी उदार उद्बोधक। अवापीन एवं आगामी पीचढ़यों ंके मानवमात्र के चलए चनत्य उपादेयी है यह चिदानन्दम्-सन्दचिपका । दुलपभ मानव जीवन के परम लक्ष्य 'भगवत्साक्षात्कार' प्राप्त्यथप श्रेय मागप की ओर ले जाने वाली है यह चिदानन्दम्-सन्दचिपका। यह ले िलिी है हमें सत्य सनािन वैचदक संस्कृचि िथा अनाचद अनन्त सनािन वैचदक धमप-अध्यात्म-प्रकाि की ओर, जो सवप ग्राह्य है। और है यह करुणाचसौ गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज की अहैिुकी कृपा का प्रत्यक्ष प्रमाण।

शिदानन्दम् से गौरवान्वि हैं विणमान परमाध्यक्ष परम पावन श्री स्वामी शवमलानन्द जी महाराज एवं अन्तराणष्ट्रीय शदव्य जीवन संघ।

हररीः ॐ ित्सि् ।

-द शिवाइन लाइफ सोसायटी

ॐ

शिदानन्दम्–िारु िररिामृिकाजो सश्रद्धा करें पान,
उनके शलये है यह एकअशद्विीय शदव्यौषध महान्
पा लेंगे परम लक्ष्य भगवत्साक्षात्कारश्रद्धालु अध्याि पथ-पशथक।
शिदानन्दम् है अनमोल संजीवनीसवण आशध-व्याशधयों ंकी,
शमलेगा इससे सबको अभयदानऔर भूलेंगे सब अपान।

–सं. ि.

चिदानन्दम्

(शिदानन्दमय हैं जो)

जब आप स्वामी चिदानन्द जी के प्रविन ध्यानपूवपक सुनेंगे, िो आप पायेंगे चक उनमें समस्त उपचनषदों ंका ज्ञान प्रकट कर चदया गया है, भले ही उन्होंनें उपचनषदों ंका अध्ययन नहीं ं चकया है और न ही उन्हें पढ़ने की इच्छा रखिे हैं। उपचनषद् िो उनके हृदय से प्रकट हिो हैं। वह ब्रह्मसूत्रों ंऔर गीिा का साकार रूप हैं। हाल ही में मैंने देखा है चक जब भी कभी वह भक्ति और चनष्काम्य कमप योग पर प्रविन करिे हैं िो पररसमाक्तप्त वह हमेिा वेदान्त पर ही करिे हैं। इससे यह चसद्ध हिोा है चक यचद आप अपनी साधना के प्रचि सिे हैं और भगवान् के प्रचि आपकी चनष्ठा गहन और दृढ़ है िो वेदान्त अथवा ब्रह्मसूत्रों ंका ज्ञान अपने आप ही प्रकट होने लगिा है।

चिदानन्द जी अपने पूवप-जन्म में ही एक महान् योगी और सन्त थे; यह उनका अक्तन्तम जन्म है... चिदानन्द जी को संस्था के सभी सामान्य कायप से मुि कर देना िाचहए, चकन्तु मैं िाहिा हूँ चक वह महासचिव के उि पद पर बने रहें। ऐसे महान् सन्त को अपना महासचिव रखना संस्था के चलए गौरव की बाि है....**यह इस (शिवानन्द आश्रम) शमिन के कोहनूर है।** चिदानन्द जी के प्रविन उनके सन्त-हृदय के भावोद्रेक हैं, अन्तज्ञापन की अचभव्यक्तियाँ हैं। व्यावहाररक वेदान्ती होने के नािे उनकी वाणी में अचमि िक्ति है... उनके भाषण स्वणापक्षरों ंमें मुचद्रि चकये जाने िाचहए...

'शिदानन्द, शिदानन्द, शिदानन्द हूँ।'

Swami Sivananda
(स्वामी शिवानन्द)

ॐ

२४ जून, १९५४

चप्रय बिुओ,
पे्रेमपूणप प्रणाम!

जीवन में आपका सबसे आवश्यक और महत्त्वपूणप किपव्य है भगवद्-प्राक्तप्त के चलए प्रयास करना।

केवल भगवान् की ही सत्ता है। इस जीवन में िेष सब-कुछ बदलिी हुई परछाईं मात्र है। भौचिक जीवन दुीःखों ंऔर कष्टों ंसे भरा हुआ है। ईश्वर 'पररपूणप आनन्द' हैं।

उनें पाने की आकांक्षा करें। अन्य सब इच्छाएँ त्याग दें। अपने मन और इक्तियों ंको चनयक्तिि करें। िुद्ध बनें। गुरु की सेवा करें। आपको भगवद्-प्राक्तप्त होगी।

स्वामी चिदानन्द

जन्म-चिचथ आठ श्री गुरुदेव की : जीवन-नौका साधक की

(८ शदसम्बर , १९५१ में परमपावनश्री स्वामी शिदानन्द जी का प्रविन)

श्रद्ेधेय अमर आत्मन् !

आज का चदवस वह आनन्दपूणप चदन है, चजसे हम प्रत्येक मास अपने चप्रय गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के सम्मान में मनािे हैं अपने उन्हीं ंगुरुदेव के सम्मान में जो हमें अत्यचधक चप्रय हैं, जो सबके जीवन के जीवन है। चजन्ोंने हमें जन्म-मरण वाले, दुीःख और कष्ट् से भरे इस जीवन िथा मोक्ष, पूणपिा और परम आनन्द के िाश्वि जीवन के बीि के अन्तर को समझाया है और अब हम इस दुीःख से पूणप-बिनमय जीवन से परे चदन-प्रचिचदन उज्ज्वल जीवन की ओर, परम आनन्द और िाश्वि सुख से पररपूणप जीवन की ओर बढ़ने लगे हैं। गुरुदेव के चबना

ऐसापरमसुखमयजीवनहमारे चलए एक दूर का सपना ही हिा चजसे प्राप्त करनेकीहमकभी कल्पनाभीनकरिेऔरइस प्रकार हमारा इस अमूल्य मानव-देह को धारण करनाव्यथपहीहो गया हिा।

जन्म शदनांक

अपने गुरुदेव के सम्मान में हम शविेष रूप से ८ शसिम्बर के पावन शदवस को और सामान्य रूप से प्रत्येक मास की ८ िारीख को उस शदव्यािा के इस धरा पर आगमन के
पुनीि अवसर के उपलक्ष्य में इसशलए मनािे हैं शक हम उनके िरिकमलों ंमें अपनी शनष्ठा
को पुनः पुनः सुदृढ़ करने के प्रत्येक सुअवसर का पूिण लाभ उठा सकें और साथ ही अपने हृदय में सिेे शिष्यत्व को और सिेे प्रेम की सही भावना को, पुनःपुनः प्रज्वशलि कर सकें,
क्ोंशंक यशद हम अपने आध्याच्चिक जीवन को सफल बनाना िाहिे हैं िो ऐसी भावना को
अपने भीिर पूिण रूप से सदैव प्रदीप्त रखना अत्यन्त आवश्यक है। इस आन्तररक ज्वाला को चवकचसि करने के चलए, पुनीः अनुप्राचणि करने के चलए उनके िरणारचवन्द में भक्ति की इस ज्वाला की वृक्तद्ध के चलए हमें समय-समय पर ऐसा करना ही िाचहए, क्ोंचंक अपनी साधना को सफलिापूवपक कर सकने में यह गुरु-भक्ति ही केवल एक आश्वासन-एक गारंटी है। महान् वेदान्ती श्रीमद्िंकिरािायप जी के अनुसार धरा पर परमात्मा स्वरूप अपने गुरु के िरणकमलों ंमें भक्ति नहीं ं हिैसबव्यथप है।

गुरु-भच्चि

अद्वैि चसद्धान्त के प्रणेिा महान् आिायप िंकर चजनें चनज आत्म-स्वरूप परमात्मा के अचिररि अन्य कोई सत्ता मान्य नहीं ंथी, उन्होंने इस प्रकार अपने चविार अचभव्यक्ति करिे हुए गुरु के िरणकमलों ंमें इस प्रकार की भक्ति का होना िब िक अचि आवश्यक माना है, जब िक व्यक्ति द्वैि भाव का अचिक्रमण करके उसके पार नहीं ंपहुँि जािा। **शनस्सन्देह सत्य िो एकमेव अशद्विीय का भाव ही है,** चकन्तु द्वैिानुभूचि के चवसृिृ दीघप पथ को लाँघ कर ही अन्ति अद्वैि िेिना के िरम चिखर िक पहुँिा जािा है और पूणपिा प्राक्तप्त िक की इस प्रचक्रया में **श्री गुरु के िरिारशवन्द के प्रशि भच्चि ही एक सवोपरर आधार है और यह श्रेष्ठिम साधनाओं ंमें से एक है।** बक्ति सि कहें िो समस्त साधनाओं ंमें से यह सवापचधक महत्त्वपूणप मुख्य आधार है चजसके अभाव में साधना साधना न रह कर नीरस संघषप, एक दुष्कर प्रचक्रया बन कर रह जािी है और इसके होने से समूपूणप साधना एक आनन्द दायक, प्रेरणास्पद सोपान बन जािी है, आध्याक्तत्मक अनुभूचियों ंके चिखर की ओर ले जाने वाली एक प्रेरक द्रुि गामी िात्काचलक उडान बन जािी है प्रत्युि हम कह सकिे हैं चक यह एक ऐसी महान् िक्ति है जो हमारी साधना का आधार है और हमारी आध्याक्तत्मक आकांक्षाओं ंकी पोषक है। चजस लक्ष्य की प्राक्तप्त हमारी अचभलाषा है, उसको अचि िीघ्र फचलि करने वाली यही िक्ति है।

इस गुरु-भक्ति में स्वयं को क्तस्थर करने के चलए, साधक को समय-समय पर चभन्न-चभन्न साधन अपनाने िाचहए और इस प्रकार के सामचयक उत्सवों ंद्वारा, स्वयं को गुरु-भक्तिभाव से पूररि

करने का प्रयास करिे रहना िाचहए चजससे चक आध्यात्त्मक प्रकाि उसके हृदय में और ित्पश्चाि् समस्त मानव जाचि में भी हो सके।

इस कायणक्रम के पीछे यही आध्याच्त्मक उद्देश्य शनशहि है। इसका लक्ष्य गुरुदेव को प्रसन्न करना नहीं, प्रत्युि यह हमारे शलए है, हम अपने आध्याच्त्मक स्वाथण के शलए यह जन्म िारीख मनािे हैं। हम इसशलए यह करिे हैं शक इससे हमारा लाभ हो; इसशलए शक ऐसा करने से, उनके समक्ष निमस्तक होने से हम अपनी ओर उस प्रकाि-पुंज को प्रवाशहि कर सकें जो करुिा- शसन्धु, प्रेम के सागर हमारे शप्रय गुरुदेव के पास अथाह है और उस कृपा की हमें अत्यन्त आवश्यकिा है। गुरुदेव की ओर से प्रवाशहि होने वाले कृपा के प्रवाह को शनबाणध रूप से प्रवाशहि होने देने के शलए ही हम ऐसे िुभ शदनों को मनािे हैं।

'गुरु के शनत्य स्मरि से अहं का शवनाि करें"

हम सभी को प्रयास करना िाचहए चक हम जहााँ-कहीं भी हों–वहााँ ही, केवल ८ िारीख को ही नहीं, प्रत्युि चनत्य ही अपने गुरु का स्मरण करें, चनत्य ही हम अपने भीिर ऐसे ही चविेष उत्साह को जाग्रि करिे रहें, ऐसे ही चविेष भाव को, चिष्यत्व की ऐसी ही चवचिष्ट् भावना को जाग्रि करें चजससे चक आये चदन अपने भीिर हम इस ज्वाला को प्रज्वचलि रख सकें और अपनी साधना को द्रुि गचि से आगे बढ़ा सकें। मानव मात्र के भीिर जो अहंकार भाव चछपा हुआ है, यह एक ऐसा असुर है जो हमारे िाश्वि सुख की ओर के अचभयान में एक अवरोध है। यह एक ऐसी बाधा है जो हमें ब्रह्मानन्द की प्राच्त्प्त नहीं होने देिी। अिः जो अपने इस अहंकार भाव का िीघ्र अन्त करना िाहिे हैं, उन सबके चलए साधना का रहस्य यही चनत्य स्मरण ही है।

ॐ

शिवानन्द का दरबार है, िोभा अपारहै।
शनश्चय वाले सेवकों का हो गया बेडा पारहै।।

शवषय-स्िूी

एक सरल प्राथपना

–असीसी सन्त फ्राच्चिस –

हे प्रभु! बनाओ मुझे अपनी चदव्य ि◌ाक्तन्त का सोपान,

जहााँ घृणा है, वहााँ पे्रेम ले आऊाँ,
जहााँ चहंसा है, वहााँ मैं क्षमा ले आऊाँ;

जहााँ ि◌ंका है, वहााँ मैं श्रद्धा-चवश्वास ले आऊाँ,
जहााँ चनरिाा है, वहााँ मैं नवीन आिा ले आऊाँ;

जहााँ मनमुटाव है, वहााँ मैं सामरस्य ले आऊाँ,
जहााँ संघषप है, वहााँ मैं एकिा ले आऊाँ;

जहााँ अिकार है, वहााँ मैं प्रकिा ले आऊाँ,
जहााँ दुीःख है, वहााँ मैं सुख ले आऊााँ।

हे प्रभु! बनाओ मुझे अपनी चदव्य ि◌ाक्तन्त का सोपान ।
मैं यह नहीं ◌ंि◌ाहाँ चक मैं दूसरों ◌ंसे सानत्वना पाऊाँ,
बक्ति मैं दूसरों ◌ंको सानत्वना दिेा रहाँ;

मैं यह नहीं ◌ंि◌ाहाँ चक लोग मुझे समझें,
बक्ति मैं दूसरों ◌ंको समझने की कोचिि करिा रहाँ,

मैं यह नहीं ◌ंि◌ाहाँ चक लोग मुझे प्यार करें,
बक्ति मैं सबको प्यार करिा रहाँ।

क्ोंचंक जो दिेा है वही पिाा है।
दूसरों ◌ंको क्षमा करने में ही,
हमें प्रभु से क्षमा-प्राक्तप्त है;
क्ोंचंक यह छोटा अहंकार चमटने से ही
मानव को अमर जीवन की प्राक्तप्त है।

(अनुवादक : स्वामी शिदानन्द)



प्रथम प्रकिा

ॐ

"महाजनो येन गिः स पन्ाः"

महिाओं का◌ंमहान् जीवन ,

करिा है प्ेरेररि हमको
बनायें अपने जीवन को,
हम उन-जैसा महान् ।।



सं-मिहिााओं ◌ंकी मंगल कामनाएँ एवं भिों ◌ंकी सद्भावनाएँ

ॐ

चप्रयिम गुरु भगवान् श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के चप्रयिम चिष्य
भगवतुपुरुष श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के ३६ वें जन्मोत्सव, ६० वें जन्मोत्सव
(हीरक जयन्ती-षष्ट्यक्तब्पूचिप महोत्सव),
७५ वें जन्मोत्सव (अमृि महोत्सव) के ि◌ुभावसर
पर सं-मिहात्माओं ◌ंकी मंगल कामनाओं ◌ंएवं
भिों ◌ंकी सद्भावनाओं ◌ंयिु कुछेक
भाषणों ◌ंएवं लेखों ◌ंकी

यथािथ्य प्रसुतुचि

स्वामी शिदानन्द के जीवन से 'आपको क्ा सीखना ि◌ाशहए!'

– श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज –

(सन् १९५४ में श्री स्वामी चिदानन्द जी के ३९ वें जन्म-चदवस पर चदया गया प्रविन)

स्वामी शिदानन्द जी का जन्म-शदन मनाना वास्तव में भगवान् की पूजा करना है। इस जगि् में एक ब्रह्म के अचिररि अन्य कुछ है ही नहीं।◌ं आप मूचिप की पूजा करिे हैं। मूचिप ि◌ो चवराटर का एक अत्यन्त लघु अंि है, चकन्तुु इस पर भी भगवान् प्रसन्न हो जािे हैं, भले ही आपने चवराट् के एक लघुिम अंि को ही स्पिप चकया होिा है। वह अपने भि को आिीवापद देिे हैं चजससे भि हृदय की पचवत्रिा प्राप्त कर लेिा है, जो चक परमात्मानुभूचि के चलए अत्यन्त अचनवायप है।

महापुरुषों ◌ं के जन्म-चदन मनािे समय आप उनके कायों के बारे में, उनके चविारों ◌ं के और उनके चनदेिनों ◌ं के बारे में सुनिे हैं और उन्ों ंने कैसा जीवन चजया यह सुनिे हैं। उनके मचहमामयी उदाहरण से आप बहुि से सद्गुण अपने में उिारने का प्रयास करिे हैं। उन सद्गुणों ◌ं का आप अपने दैचनक जीवन में अभ्यास करने का प्रयत्न करिे हैं।

आपने स्वामी चिदानन्द जी के बारे में आज इिना कुछ सुना है। यह सब सुनने के बाद चजसने भी यह दृढ़ चनश्चय कर चलया चक, "मैं स्वामी चिदानन्द जी जैसा बनूूँगा," केवल उसी को यह सब सुनने का लाभ प्राप्त होगा।

चकन्तुु माया बहुि ि◌क्तिाली है। आप सोिेंगे चक आप सब ि◌ो अब समुन्नि हो गये हैं; चकन्तुु जैसे ही आप प्रािः सो कर उठेंगे, आपका मन अपने उन्हीं ◌ं पुराने खाूँिों ◌ं में बहने लगेगा। जो चनरन्तर सत्संग करिा है और वैराग्य की पुस्तकें पढ़िा है-"संन्यास की आवश्यकिा" (नसैसटी फॉर संन्यास), "सन्त-जीवन" और "प्रबोधक कथाएूँ" (इचलयूचमनेचटंग स्टोरीज़) पुस्तकें पढ़िा है-वह गचििील रहेगा; और केवल वही सदािारी ि◌ुद्ध जीवन जी सकेगा। प्रविन आप सबने सुन चलए हैं। **रामनाम की मशहमा को सभी जानिे हैं, शकन्तुु आप इसको अभ्यास में नहीं ◌ं लािे।** आपको भगवन्नाम में चवश्वास ही नहीं ◌ं है; आपको केवल धन-सम्पचत्त में चवश्वास है। इस प्रकार जन्म-चदवस मनाये जाने पर आपको सन्त के चविारों ◌ं और उनके कायों पर गहन चिन्तन करने का अवसर चमलिा है। ि◌ब चफर आपको उसी लक्ष्य ि◌क पहुूँिने की प्रेरणा और प्रोत्साहन चमलिा है चजस पर चक वह पहुूँि गये हैं।

समय-समय पर जन्म-चदवस मनाये जाने अचि आवश्यक हैं। उदात्त और पावन चविारों ◌ं का मन पर चनरन्तर प्रहार चकया जािा रहना आवश्यक है। नहीं ◌ं ि◌ो आपका मन अपने वही पुराने खाूँिों ◌ं में बहने लग जायेगा। **दैशनक जप के द्वारा आपको इसे अपने शनयन्त्रि में लाना होगा। शनयमबद्धिा अत्यन्त आवश्यक वसुतु है। आत्म- साक्षात्कार प्राप्त सन्तों ◌ं की पुस्तकों ◌ं को बार-बार पढ़ें।** चववेक-िूडामचण, आत्म-बोध और ि◌त्त्व-बोध पढ़ें। **जीवन एक संग्राम है; शकन्तुु यशद आपका भगवान् में शवश्वास है,** ि◌ो **यह जीवन एक महान् प्रेरमगीि है। बार-बार सन्तों ◌ं के साशन्नध्य में - जायें।** आध्याक्तत्मक दैनक्तन्दनी (ि◌ायरी) रखें। चनरीक्षण - करें चक आपने चकिनी

आत्मोन्नचि की है, चकिने सद्गुणों ं- का चवकास चकया है, चकिने दोष या अवगुण अपने आप में से दूर चकये हैं, क्ा आप चनीःस्वाथी बन गये हैं, - क्ा आप चनीःस्वाथप सेवा कर रहे हैं? यह सब बिों आवश्यक हैं।

चकनु्तु जीवन की यह आवश्यक बिों आप हमेिा ने ही भूल जिो हैं। अपने भोजन की छोटी से छोटी वसु्तु भी आप नहीं ंभूलिे; चकनु्तु भगवान् को आप भूल जिो हैं। टनों ंचसद्धान्तों ंसे एक आउंस अभ्यास कहीं ंअच्छा है। अभ्यास करें! केवल िभी िो आपको पिा िलेगा चक यह चकिना कचठन है। एक चंकंचिि् सा कठोर िब् आपको चविचलि कर दिा है। यह चपछले कुसंस्कारों ंकी प्रबल िक्ति के कारण है। यहााँ आपका काम गंगा के जल को पुनीः उसके उद्गम स्थल िक वाचपस ले जाने के समान है। यह उिना ही कचठन है। चफर भी भगवान् की कृपा से, अपने दृढ़ चनश्चय से आप चवजयी होंगें।

रीर और भोजन के बारे में अचधक ध्यान न दें। यह सब अज्ञान की उपज हैं। आत्म-ज्ञान के द्वारा इस अज्ञान को दूर कर दें, साधन िििुष्टय सम्पदा चवकचसि करें और जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करें। **भगवन्नाम लें, जप करें, किीिपन करें। शनःस्वाथण सेवा करें। ज्ञान अपने आप आ जायेगा। भच्चि के फलस्वरूप ज्ञान का उदय होगा।**

भगवान् का सिि स्मरण, यह सबसे अचधक आवश्यक है। मन अगर इधर-उधर भागिा है िो उसे भागिा रहने दें। **भगवन्नाम की आध्याच्चिक िच्चि मन की इस बाहर भागने वाली वृशत्त को शनयच्चन्त्रि कर देगी और इसे अन्दर की ओर मोड देगी।**

सद्गुिों ंको शवकशसि करें। सभी सद्गुिों ंमें से करुिा और शवनम्रिा अशधक आवश्यक हैं, जो शक एक सन्त में होने ही िाशहए। आपका हृदय िीिों के पापकमों से कठोर हो िुका है, इसी चलए अनुचिि कायप कर बैठिा है। इसे दया के अभ्यास द्वारा नविनीि के समान कोमल बनाना पडेगा। कोई व्यक्ति िाहे घण्ों ंप्रविन करने की योग्यिा रखिा हो, चकनु्तु यचद उसमें दया भाव नहीं ंहै िो उसे त्याग दें। यह बनावटी चवनम्रिा नहीं ंिाचहए! हो सकिा है चक आप चकसी दूसरे व्यक्ति के सामने चवनीि बन कर चदखा रहे हों ंऔर उसके जािे ही उसकी पीठ पीछे उसकी आलोिना करने, उसे बुरा-भला कहने लग जायें। यह चवनम्रिा नहीं ंहै। चवनम्रिा आपका स्वभाव ही बन जाना िाचहए। आपके आिरण से आपके कायों से वह अपने आप दूसरों ं को चदखायी देनी िाचहए। **शवनम्रिा आपका स्वभाव ही हो जाये। गीिा में दैवी गुिों ंमें अमाशनत्वम् को सवोत्तम थथान शदया गया है।**

अपने सामने सदैव चकसी सन्त को आदिप रूप में रखें। वैराग्य भाव चवकचसि करें। वैराग्य की िुलना में संसार की समू्पणप सम्पदा िुच्छ है। वैराग्य से व्यक्ति सबसे अचधक धनवान् बन जािा है; उसे कभी न समाप्त होने वाली आध्याक्तत्मक सम्पचत्त प्राप्त हो जािी है। **इस संसार में केवल शववेक सम्पन्न व्यच्चि ही धनी व्यच्चि है। जो जप करिा है वह संसार में धनवान् व्यच्चि है। भगवान् की समू्पिण सम्पदा उसकी सम्पशत्त है।**

आपको धैयप, सहनिीलिा और क्षमािीलिा की साकार प्रचिमा बन जाना िाचहए। भले ही लोग आपको गाचलयााँ दें, आप सदैव चहमालय की भााँचि खडे रहें। आपको चकसी भी बाि से

प्रभाचवि या चविचलि हुए चबना सदैव मन को ि ान्त रखना ि ाचहए। आप चकिने दुबपल मन वाले हो गये हैं! सदैव मन को सनुतुचलि रखें। यह आध्याक्तत्मक ि क्ति है; यही बुक्तद्धमत्ता है।

आप बहुि कुछ सुन ि ुके हैं। अब इसका अभ्यास करने का प्रयत्न करें। अपने अन्तमपन का चनरीक्षण करें और देखें आपने स्वयं में सुधार लाने के चलए अब ि क क्ा चकया है। अब ि क आपने कौन सी साधना का अभ्यास चकया है? भले बनो और भला करो।

जप के अभ्यास से अपनी इच्छा ि क्ति को चवकचसि करें। इसे कभी न भूलें। समाचध अपने आप ही लगनी ि ुरू हो जायेगी? भगवान् ने आपको अच्छी बुक्तद्ध दी है। इसका सही उपयोग करें और चववेक से काम लें।

स्वामी शिदानन्द जी में दया, सहानुभूशि और शवनम्रिा भरपूर मात्रा में है। अपने शपछले जन्म में भी - वह संन्यासी ही थे; उनका जैसा व्यवहार है, उससे हम यह समझ सकि हैं। **यह गि संस्कारों ंकी अशजणि की हुई सम्पशत्त है शजसने इनको इस छोटी आयु से ही यह पथ अपनाने की योग्यिा प्रदान की है।** आप में यचद यह नहीं ंहै ि ो उपवास द्वारा, प्राथपना द्वारा और सेवा द्वारा इसे अचजपि करना ि ाचहए, चजससे चक अगले जन्म में आप सन्त बन कर जन्म लें। ि ब आप अचे्छे गुरु बनेंगे, आप ि ीघ्र उन्नि होंगें। अभी भी कुछ नहीं ंचबगडा है, आज ही संकल्प करें। सद्गुणों ंका चवकास करें।

लोगों ंने स्वामी चिदानन्द जी के बारे में वणपन चकया है। **वह शिशकत्सकों ंके भी शिशकत्सक हैं। वह कुष्ठ रोशगयों ंके ि ाक्टर हैं। वह करुिा से भरपूर हैं। आपको भी अपने में दया भाव लाना ि ाशहए।** यचद कोई व्यक्ति सडक पर चगरा पडा हो ि ो आप उसके चनकट नहीं ं जािे; आप कह देि हैं चक, "यह उसका प्रारब्ध है।" भले ही आपको बहुि भूख लगी हो ि ब भी अपने दूध का प्याला उसे दे देना ि ाचहए; इस प्रकार आप चविाल-हृदयी बनेंगे। एकात्म भाव इसी प्रकार चवकचसि होगा। **शनष्काम सेवा के द्वारा मानव को मानव से अलग करने वाली सब दीवारें ि ोड फेंशकए।** एम. ए., पी-एि. ि ी. कर लेने से ही आप वैश्व ि ेिना को प्राप्त नहीं ंकर सकि। आपके पास जो कुछ है, उसे दूसरों ंसे बाँटें। दें! दें! दें! देने से आप समस्त संसार के साथ हृदय से जुड जायेंगे। यही भरपूरिा का रहस्य है। संग्रह वृचत्त न अपनाएँ! भगवान् अपने सभी बालकों ंका ध्यान रखिे हैं। अपना सब-कुछ दान कर दें! सारा संसार दु ीःख-कष्ों ंसे चघरा पडा है। उनके कष्् दूर करें; आपकी आध्याक्तत्मक उन्नचि होगी। ये सभी सन्त-भगवान् बुद्ध, भगवान् यीिु आचद सब की सेवा कर के ही देव मानव और सन्त बनें हैं। वैचदक ग्रन्थों ंको रट लेने से काम नहीं ंि लेगा। ये पक्तण्डि लोग-यचद इन्ें जनिा के मध्य सम्मानजनक गद्दी न चमले ि ो इनका मन चविचलि हो जायेगा। यह सन्त होने का चिह्न नहीं ंहै। बार-बार ऐसे चविारों ंकी ि ोट मन पर लगिी रहें, **"मैं प्रेम का िाित्र हूँ।" करुिा, दया, सेवा, शवनम्रिा ि था अन्य दैवी गुिों ंकी साधना करें। ि ब हमारे शिदानन्द जी की भाँति ि मकेंगे। यही मेरी गहन हाशदणक प्राथणना है!**

ॐ

सवपिक्तिमान् प्रभु ि था गुरुदेव से मेरीयहीचवनय है चक मैं एक सिा भि ि था योग्य चिष्य बन सकूँ। मैं प्राथपना करिा हूँ चक उनकीकृपािथा आिीवापद मुझे धमप ि था सदािार का

मागपगामी होने में दृढ़ रहने की ि क्ति दें। मैं एक साधक हाँ जो चक चदव्य जीवन यापन िथा उसमें चवकास के चलए प्रयत्नील है, चजसका उपदि हमारे गुरुदेव चिवानन्द जी ने अपने चिष्यों ंको चदया है। आप सभी जो मेरे ि ुभ-चिन्तक हैं, उनसे मैं सचवनय कहिा हाँ चक आप मेरे चलए प्राथपना करें, आिीवापद दें ि था ि ुभ-कामना करें चक **मैं गुरुदेव की शिक्षा के अनुरूप शदव्य जीवन यापन कर कर सकूँ । आपकी प्राथणना मेरे शलए सवोत्तम 'जन्मशदवसोपहार' होगी।**

-स्वामी शिदानन्द

हमारे आदिण-गुरुदेव की जय !

–श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज –

(का अपने ३९ वें जन्म-चदवस पर चदया गया प्रविन)

यह जन्म-चदन मनाया गया इसकी मुझे प्रसन्निा है। पहले ि ो मैंने श्री स्वामी जी से प्राथपना की थी, चक मुझे इसके चलए क्षमा कर चदया जाये, चकन्तु इस उत्सव के मनाये जाने के कारण हमने अभी-अभी यह समस्त धमप-ग्रन्थों ंका सार ित्त्व सुना; उनके श्रीमुख से सभी युगों ंऔर समस्त वगों के सन्तों ंके ज्ञानोपदिों ंका सत्त्व चनी:सृि हिोा, हमने श्रवण चकया। हमें उपचनषदों ंका ज्ञान सरल भाषा में सुनने को चमला। हम कुरान, बाइचबल, गीिा, पुराण, सभी धमप ग्रन्थों ंके अत्यन्त सरल, प्रभाविाली, रोमहषपक, उत्साहवधपक और पे्ररणास्पद जीवन्त ि ब्, प्रत्यक्ष गुरुदेव के श्रीमुख से सुन रहे थे। इस एक ही बाि के चलए, जन्म-चदन का मनाया जाना साथपक हो गया। मैं चकिना प्रसन्न हाँ, यह वणपन नहीं ंचकया जा सकिा। **न जाने शपछले शकिने जन्मों ंके पुण्य-कमों के पररणाम-स्वरूप हम इस पावन थथली पर बैठे हुए हैं और शजस अनन्त आध्याच्त्मकिा, असीम शदव्यिा की जीवन्त ज्वाला की गुरुदेव प्रशिमूशिण हैं, उस अशि को आज शविी के रूप में हम यहाँ श्रवि कर रहे हैं। अभी जो कुछ भी आपने सुना, उसका विणन नहीं ंशकया जा सकिा। उन्होंनें हममें शदव्य प्रकाि भर शदया है। प्रत्येक ि ब्द जीवन्त-आध्याच्त्मकिा की धधकिी अशि है।** चकन्तु गुरुदेव ने कहा, कल प्रािः हम सो कर उठेंगे, ि ो वही, वैसे ही पुराने व्यक्ति होंगें। इसके चवपरीि चनचश्चि रूप से सुरचक्षि रहने के चलए भगवान् ने स्वामी वेंकटेिानन्द जी को भेजा हुआ है। प्रत्येक ि ब् अब चलचपबद्ध हो गया है और यह मुचद्रि भी हो जायेगा।

मेरी आप सबसे प्राथपना है चक गुरुदेव के इस प्रविन की मुचद्रि प्रचिचलचप अपने पास सुरचक्षि रखें। प्रचिचदन प्रािः उठिे ही, िथा राि को सोने से पहले इसे एक बार पढ़ें। हमारे सम्पूपूणप जीवन के चलए एक आदिप उदाहरण के रूप में और हमें, जीव से असीम सक्तिदानन्द आत्मा में पररचणि करने के चलए; हमें िीिम चदव्यिा िक समुन्नि करने के चलए यह एक प्रविन ही पयापप्त है।

श्री स्वामी कृष्णानन्द जी के जन्म-चदवस का उत्सव मनाने के एकदम साथ ही, इिनी ◌ीघ्र अपना जन्म-चदवस न मनाने के चलए मैंने श्री गुरुदेव से प्राथपना की थी चक इसे छोड चदया जाये।
कुछ चदनों ◌ंबाद उन्होंनें कहा, "भले ही ◌ुम्हारी इच्छा हो या न हो, मैं ◌ो यह मनाने जा रहा हाँ।" ◌ब उन्होंनें मुझे एक अद्भिु नुस्खा चदया। यह मेरे चलए एक परीक्षा थी, चजसमें गुरुदेव की कृपा से मैं सफल हुआ। "◌ुम चिन्ता क्ों ◌ंकरिे हो?" उन्होंनें कहा, "उन्हें जन्म-चदन मनाने दो।
ुमि समझो चक यह चकसी और का जन्म-चदवस है। महसूस करो : मैं अकिाप, अभोि हाँ। साक्षी बन जाओ।" यह आध्यात्त्मक वटी उन्होंनें मुझे दी। यही भाव था, जो मैंने आज प्रिीः से बनाये रखा है। परन्तु अभी-अभी ◌ो मुझे पूरा चनश्चय हो गया है चक यह चकसी और का ही जन्म-चदवस है। चजस चिदानन्द नाम के व्यक्ति का आप सबने इिना अद्भिु चववरण चदया है चक मैं सिो रहा हाँ चक मैं भी उससे चमलूाँ।

आप सबने चनी:स्वाथप सेवा की भावना की प्रिंसा की है। जब हमारे सामने गुरुदेव का उदाहरण प्रत्यक्ष रूप में है, ◌ब चफर हम ऐसी सेवा क्ों ◌ंनहीं ◌ंकर सकिे? स्वामी जी के कागजों ◌ं में मुझे एक छोटी दैनत्न्दनी चमली थी चजसे वे स्वगापश्रम में चलखा करिे थे। यह लाइट फाउन्टेन (आलोक-पुंज) पुस्तक में मुचद्रि है। इसमें आपको ऐसे चनदेि चमलेंगे, "स्वच्छिा कमपिाररयों ◌ंकी सेवा करो। दुजपनों ◌ंकी सेवा करो। चजस क्षेत्र में आप अपमाचनि चकये गये हो, वहीं ◌ंजाओ।" यह सब उन्होंनें अपने चलए अनुिासन का एक अंग बनाया। जब यह उज्ज्वल प्रकाि हमारे सम्मुख है बि क्ा यह सम्भव है चक इसका अनुकरण करने के अचिररि हम कुछ और करें?

आप एक बाि के चलए मेरी प्रिंसा कर सकिे हैं, चक मैं गुरुदेव की आज्ञा पालन करने का प्रयत्न कर रहा हाँ। चकन्तु चिष्य के नािे यह ◌ो मेरा किपव्य है।

समस्त श्रेष्ठिा भगवान् में है! सविो प्रिंसनीय परमािा हैं। हम अपने स्वभाव में भलाई अशभव्यि करके, अपने शविारों ◌ंसे, वािी से, भावनाओं ◌ंऔर संवेदनाओं ◌ंसे अच्छाई अशभव्यि करके भगवान् का गुिगान कर सकिे हैं। यशद हम स्वामी जी को देखें ◌ो हम समझ सकिे हैं शक वे अपने जीवन में और अपने जीवन के द्वारा शकस पररपूिणिा से और शकस भव्यिा से परमािा की मशहमा को अशभव्यि कर रहे हैं। मैं ◌ो, जो स्वामी जी कहिे हैं, उन आदेिों ◌ंका पालन करने का शवनम्र प्रयास मात्र कर रहा हूँ।

आप एक मूशिण की प्रिंसा कर रहे हैं, प्रिंसनीय ◌ो मूशिणकार है। यह मूशिणकार की ही शवद्वत्ता और प्रशिभा है जो मूशिण में से झलकिी है। आप मूशिणकार को पूरी ◌रह शवस्मृि करके मूशिण के बारे में ही इिना कुछ कहे जा रहे हैं। वह मूशिणकार ◌ो श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज हैं। स्वामी शिदानन्द के शदव्य-शनमाणिा श्री स्वामी शिवानन्द जी हैं। यह सारी मशहमा उन्हीं ◌ं◌रि-कमलों ◌ंकी है।

इसशलए हम सबको अपने हृदय-मच्चन्दर के शसंहासन पर सदैव अपने आदिण, श्री गुरुदेवको प्रशिशष्ठि करके रखना ◌ाशहए। आइए, हम सदैव अपने मन-मच्चन्दरों ◌ंमें, एक महान्आदिण, एक शदव्य उदाहरि अपने सम्मुख शवद्यमान एक जीवन्त शदव्यिा, श्री गुरुदेव कीआराधना करें।

ध्यानमूलं गुरोमूणशिण:, पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोवाणक्ं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।

उनके कथन हमारे चलए चसद्धान्त होने ाचहए। आइए हम अपने समूपूणप जीवन को, उस चदव्य मूचिप, जो श्री गुरुदेव के रूप में हमारे समक्ष चवद्यमान है, की एक जीवन्त, व्यावहाररक और सचक्रय उपासना बना लें; इस प्रकार करने से हम अपने जीवन के लक्ष्य-गुरुदेव के वास्तचवक
स्वरूप से साक्षात्कार-को इसी जन्म में प्राप्त कर सकेंगे। इस चदव्यिा के िरणों ंके हम
सौभाग्यिाली, अवणपनीय-सौभाग्यिाली चिष्य यचद ऐसा कर सकें, िो हमारे जीवन चनचश्चि रूप से
धन्य हो जायेंगे।

समस्तप्रिंसा,सारीमशहमा प्रभु की है! समूपूिण प्रिंसा सारी मशहमा गुरुदेव भगवान्
की है।इनदोनों ंमेंपरस्परकोई अन्तर नहीं ंहै। दोनों ंएक ही हैं। भगवान् शनराकार,
शनगुणि,अव्यिहैं,गुरुदेवसाकार, सगुि, व्यि हैं। हमारी उनके शदव्य िरि युगल में
शवनम्रप्राथणनाहैशकवहहमेंआिीवाणद दें शक इसी जीवन में हम अपने जीवन के आदिण,
जोशकवहहीहैं,कोप्रिाकरने में प्रयत्निील रहें।

सौभाग्य से श्री स्वामी चिवानन्द जी जैसे महान् व्यक्तित्व का मुझे साचन्नध्य प्राप्त हुआ है,
वह एक चवकचसि पुष्प है चजसके अंकुरण और चवकास को जानने के चलए हमें उनके प्रारक्तम्भक
जीवन को देखना होगा, जो उन्होंनें मलेचिया के चिचकत्सालय में एक पररश्रमी चिचकत्सक के रूप में ष्यिीि चकया। वह दिक इनके मूक चवकास का काल था जो इन्होंनें यत्नपूवपक मानविा के
संकट-चनवारण में लगाया।

-स्वामी शिदानन्द

शप्रय शिष्य बनने का रहस्य

–श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज –

श्री गुरु महाराज के काम करने के ढंग की वास्तचवक सुन्दरिा इस िथ्य में चनचहि है चक सैकडों ंचजज्ञासु आश्रम में आ कर चकिनी भी अवचध िक ठहर सकिे हैं और चकसी भी चवभाग में चबना चकसी बाधा या चभड़िा के कायप कर सकिे हैं। सभी चवभाग एक-दूसरे से सम्बक्तिि हैं, चफर भी लोग अपनी क्षमिा के अनुसार चबना चकसी के सम्पकप में आये स्वििापूवपक कायप कर सकिे हैं िथा आश्रम की िक्तन्त को सुन्दरिा से बनाये हुए आश्रम के दैचनक कायपक्रमों ंमें अपनी रुचि की

या सामूचहक साधना का चवकास कर सकिे हैं। क्ा चवलक्षण व्यक्तित्व है? श्री गुरुदेव लोगों ंकी मानचसक क्तस्थचि एवं मनोनुकूलिा की परख करने में समथप हैं। उन्ें उचिि कायप सौंप कर सभी चवभागों ंका चनरीक्षण करिे हैं। इस प्रकार उन्ोंने अध्यात्म-पथ पर अग्रसर होने के चलए कायप करने वाले िथा अल्प समय में स्वयं के चवकास करने वाले भि-सदस्यों ंके 'चदव्य चमिन' को एक
िक्तििाली संघ बनाया।

यहााँ दूसरों ंसे िस्विापूवपक घुलने-चमलने की िचनक भी सम्भावना नहीं ंहै। यही प्रमुख कारण है चक चजससे आश्रमवासी एक-दूसरे के गुणों ंसे पररचिि नहीं ंहो पािे। वे सभी अपने-अपने कायप-क्षेत्र के सेवा-कायप में गुरु महाराज के चनदेिानुसार अत्यन्त व्यस्त रहिे हैं; इसीचलए आश्रम के लगभग दो सौ कायपकिाप और अनेक दिपनाथी स्वामी चिदानन्द जी को अच्छी िरह नहीं ंजानिे। बहुिों ंको िो उनसे चमलने का अवसर कई सप्ताह और महीनों ंिक नहीं ंचमलिा। चकन्तु मैं यह जानने के चलए अत्यन्त उत्सुक था चक स्वामी चिदानन्द श्री स्वामी चिवानन्द जी के सवापचधक चप्रय चिष्य कैसे बने और अत्यन्त महत्त्वपूणप स्थानों, ंजैसे 'चदव्य जीवन संघ' के 'महासचिव' और 'अरण्य चवश्वचवद्यालय' के उपकुलपचि के चलए िुने गये !

गुरु अपने उपदेि और सुझाव सभी को समान भाव से देिे हैं, सभी के स्वास्थ्य एवं आध्याक्तत्मक उन्नचि का बडा ध्यान रखिे हैं, सभी से प्रेम करिे हैं और सभी को उनकी श्रद्धा िथा चवश्वास के आध्याक्तत्मक साधना-क्षेत्र में आगे बढ़ने के चलए प्रोत्साचहि करिे हैं। वे उनकी कचमयों ंऔर दोषों ंका चनराकरण करने के चलए, आध्याक्तत्मक चवकास के चलए उन्ें अच्छा से अच्छा अवसर देिे हैं। यह मैं दावे के साथ कह सकिा हाँ चक गुरुदेव ने स्वामी चिदानन्द जी को कोई चवचिष्ट् जादुई मन्त्र या गुप्त दीक्षा नहीं ंदी है, चजससे चक वह हजारों ंचिष्यों, ंब्रह्मिाररयों ंएवं संन्याचसयों ंके मध्य अपने को अग्रणी बनाने में समथप हो गये।

ऐसे लोग भी हैं जो िेजस्वी भाषण िो देिे हैं, चकन्तु चनःस्वाथप सेवा करने और चकसी मृिप्राय व्यक्ति को िुल्लू-भर पानी देने में उनकी जान चनकलिी है। ऐसे लोग भूल कर भी गुरु महाराज के चहि या चदव्य जीवन की उन्नचि के सम्बन्ध में नहीं ंसोििे । श्री स्वामी चिवानन्द जी महान् उद्यमी सन्त हैं। वह कहिे हैं चक ऐसे लोग लोक-उत्थान या लोगों ंके अध्यात्मीकरण के सन्दभप में प्रथम आक्रमणकिाप की िरह हैं। वह सोििे हैं चक चजज्ञासुओं ंको सभी क्षेत्रों ंमें प्रवीण बनना िाचहए। इसी को हम गुरुदेव का 'समत्वयोग' कह सकिे हैं। **गुरु महाराज के शनकट सम्पकण में आने वाले हजारों ंमें से केवल स्वामी शिदानन्द जी ही ऐसे हैं शजन्ोंने सभी क्षेत्रों ंमें िुद्ध हृदय से सेवा करके गुरु महाराज को समूपूिण सन्तोष प्रदान शकया। इसीशलए श्री स्वामी शिदानन्द जी आश्रम के केि-शबनदु बन सके।**

मैंने उन्ें चबक्तल्लयों, ंकुत्तों ंऔर बन्दरों ंको खाना क्तखलािे एवं उनकी सेवा करिे देखा है। इधर आश्रम अथप-संकट में है, उधर वह बीमार कुत्तों ंको महाँगे 'इंजेक्शन' लगवाने के चलए पयापप्त धन व्यय करिे हैं। इधर सैकडों ंपत्र उत्तर की प्रिीक्षा कर रहे हैं, उधर वह स्थानीय बालक-बाचलकाओं ंको उपदेि देने िथा चमठाइयााँ, चबसुकुट और फल बााँट कर उनका मनोरंजन करने में लगे हुए हैं। यहााँ िक चक कभी-कभी वह अपने व्यक्तिगि कायप से चनपटने में िूक जािे हैं, चकन्तु बीमार व्यक्तियों ंको सानत्वना देने अथवा दीन-हीनों ंकी सेवा करने अथवा सुन्दर पुष्पों ंकी सुन्दरिा देखने में घंटों ंव्यिीि कर देिे हैं। व्याकुल कर देने वाले दैचनक कायों के बीि में भी वह चकसी भी चवषय पर चनिान्त ग्राह्य और प्रभाविाली ढंग से चकसी भी भाषा में िेजस्वी भाषण दे

सकिे हैं, सुमधुर कीिपन कर सकिे हैं। यहााँ िक चक नाक्तस्तक को आक्तस्तक बना सकिे हैं और उसे िब िक नहीं ंछोडेंगे, जब िक सने्देह चमट नहीं ंजािे, समस्याएाँ सुलझ नहीं ंजािीं।ं

उनके कमरे में मैंने श्री स्वामी चिवानन्द जी के चित्र के चनकट भगवान् ईसामसीह, भगवान् बुद्ध, िंकर िथा अन्यों ंके चित्र देखे हैं। सूक्ष्म चनरीक्षण से यह िथ्य दैवी ढंग से प्रकट हिेा है चक गुरु के िरण-कमलों ंमें उनकी अगाध भक्ति है। गुरु का िब् उनके चलए 'चवधान' है। छोटी-से-छोटी वसु्तु के चलए वह गुरु-आज्ञा की अपेक्षा रखिे हैं। यह स्वाभाचवक भी है। कुछ आश्रमवासी अपने को गहरी साधना में िुबा देना िाहिे हैं, कुछ चसक्तद्धयााँ (भौचिक या आचधभौचिक िक्तियााँ) प्राप्त करने के चलए एकान्तवास करना िाहिे हैं, या चफर पे्रस (मुद्रणालय) एवं मंि के माध्यम से नाम व कीचिप के इचु्छुक हिे हैं कुछ ओजस्वी भाषण देने के चलए िास्त्ों ंका अध्ययन करना िाहिे हैं या चफर 'संघ' के सचिव बन कर सभ चवभागों ंपर अचधकार जमाना िाहिे हैं। कुछ ऐसे भी है
जो नया आश्रम खोलने के चलए गुप्त रूप से आवश्यक वसु्तुएाँ एकचत्रि करिे हैं। चजज्ञासुओं ंकी व्यक्तिगि आकांक्षाएाँ चनस्सने्देह भिों ंको गुरु की चिक्षा और अचधक से अचधक आध्याक्तत्मक लाभ से वंचिि कर देिी है।

लेचकन श्री स्वामी चिदानन्द जी में मैंने ऐसी कोई िाह कहीं ंनहीं ंदेखी। उनके पास ऐसी कोई भी योजना या पररयोजना नहीं ंहै। वह गुरु के मागप पर िुपिाप िलने वाले का-सा जीवन व्यिीि करिे हैं। अन्य महत्त्वपूणप बाि जो मैंने उनमें पायी, वह यह चक वह गुरुदेव के आदेि का अक्षरिः पालन करिे हैं, जब चक हममें से बहुि से आश्रमवासी वही कायप करना स्वीकार करिे हैं जो हमारी रुचि के अनुकूल हिेा है।

प्रायः सभी चवभागों ंके सचिव आदेि और अनुिासन का पालन करिे हैं और सामान्य से सामान्य कायप को सन्तोषजनक ढंग से सम्पन्न करिे हैं। इिना होने पर भी कभी-कभी संस्थापक या अध्यक्ष को अप्रसन्न करने का अवसर आ ही जािा है- 'चदव्य जीवन संघ' में िो ऐसे अवसरों ंकी पयापप्त सम्भावना है। चकनु्तु स्वामी चिदानन्द जी सदा ही पूणपिः गुरु-कृपा पर चनभपर करिे हैं, गुरु-आज्ञा का अक्षरिः पालन करिे हैं और सभी कायों में उनके संकेि की प्रिीक्षा करिे हैं। यही भावना चबना िचनक-सी अरुचि के उन्ें 'चदव्य जीवन संघ' में कायप करने में सहायिा प्रदान करिी है, चजससे गुरु महाराज िथा सभी आश्रमवाचसयों ंिथा दिपनाचथपयों ंको पूणप सन्तोष प्राप्त हिेा है। इसचलए वह गुरुदेव के परम चप्रय चिष्य हैं। **मेरा यह अनुभव है शक मैं यशद स्वामी शिदानन्द जी की कायणि–च्चि िथा गुरि–रिें ंमें भच्चि का सहस्रांि भी गुरुदेव के शनकट सम्पकण में रह कर प्रा कर लेिा िो शनस्सने्देह 'त्रोटकािायण' की उपाशध से शवभूशषि हो जािा।**

शदव्य जीवन संघ, शिवानन्द आश्रम
शिवानन्दनगर (ऋशषकेि)

प्रिपी का प्रकिा

–श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज –

िाश्वि काल से अंिुमान अपने िेज-पुंज के साथ प्रिपी चदिा से उचदि हो कर अपनी ज्ुम्बिकीय िक्ति के साथ समस्त भूमण्डल को अपनी प्राणभिू िक्ति से प्रभाचवि करिे आ रहे हैं। इसी से प्रिपी चदिा पावन मानी जािी है। इसी प्रिपी चदिा के महान् देि-भारिवषप के सन्त-मण्डल के आकाि में, चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज एक िेज-पुंज सूयप की भाँाँचि देदीप्यमान होिे हुए िीिल चकरणें चबखेर रहे हैं।

स्वामी चिदानन्द जी महाराज प्रत्येक समय में न केवल मेरे सिे दािपचनक चमत्र और पथ-प्रदिपक रहे हैं, प्रत्युि मेरे गुरु भी हैं। पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी के पश्चाि् मैं उन्ीं ंको ही सादर नमन करिा हाँ। अपने इस लौचकक प्रवास में जीवन के समस्त ज्ञान के एक-एक कण का भी यचद मैं भागी हाँ चजससे प्रत्यक्ष रूप से मेरे जीवन की बहुमुखी प्रचिचक्रयाओं ंके समन्वय का आनन्द प्राप्त हुआ है, िो इसका श्रेय दो अचवस्मरणीय स्रोिों ंको है-गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज और पूजनीय स्वामी चिदानन्द जी महाराज। जीवन-दिपन का यह अलौचकक पक्ष मुझे चिवानन्द जी महाराज से प्राप्त हुआ, िो इसके आन्तररक पक्षों ंको मन में प्रविे कराने का श्रेय स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आत्म-समचपपि जीवन को प्राप्त है।

सुचवचदि ही है चक श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के भीिर आध्याक्तत्मकिा के बीज बाल्यकाल से ही अंकुररि हो कर िीघ्रिा से पनपने लगे। उनके ज्वलन्त बौक्तद्धक चिक्षण का संयोग सारांिि: और स्पष्ट रूप से वह मानवीय दृचष्टकोण था जो ईसाई धमप के आदिों का अत्यन्त रूचढ़वादी परम्पराओं ंके साथ सुन्दर सक्तम्मश्रण उस ब्राह्मण पररवार में देखा जा सकिा था चजसमें दृढ़ ईश्वर-चनष्ठा के साथ ही पदाथों के प्रचि जीवन्त और प्रेरणाप्रद गमन की क्षमिा थी। उनके जन्म, पाररवाररक जीवन और चिक्षण की यह चवरल और सुन्दर भूचमका उनके अक्तस्तत्व की गहराइयों ंसे ईश्वर-भक्ति की चनचहि िक्ति को उनके िेिना-पटल पर लाने के चलए पयापप्त थी।

चकन्तु १९४३ में गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के श्रीिरणों ंमें उनका चिष्यत्व उनके उदात्त जीवन में एक चविेष महत्त्व रखिा है; क्ोंचक यहीं ंसे उन्ोंने चसद्धान्त रूप से भारिीय आध्याक्तत्मक संस्कृचि के चवस्तार एवं प्रिार-प्रसार हेिु कायप प्रारम्भ चकया और वे चवश्वचवख्याि िक्तििाली अग्रणी पथ-प्रदिपक बने।

आश्रम के बाहर जन-गण के हृदयों ंमें स्वामी जी के गुणों ंके प्रचि सम्मान और चवश्वास था; अिः उन्ें 'मुचनकीरेिी' स्थान का प्रथम िो उपाध्यक्ष और ित्पश्चाि् नगर कमेटी के अध्यक्ष पद से चवभूचषि चकया गया। इसी क्षेत्र के अचधकाररयों ंद्वारा वे 'कुष्ठ कल्याण संघ' के भी अध्यक्ष पद पर आसीन हुए।

उनके प्रविन उनकी अन्तरात्मा की अचभव्यक्ति थे। सामान्य व्यवसायी व्यक्ति के प्रविन में जो िब्ावली की कृचत्रम िोभा झलकिी है, वह उनके प्रविन में न थी। वे एक स्पष्ट्विा थे। उनके व्यक्तित्व में हृदयंगम िक्ति थी, ओज था जो उनके मन, विन, कमप के अनुरूप थे। अकादमी में वे गुरुदेव के बाद प्रथम महत्त्वपूणप कायपकिाप माने जािे। 'राजयोग' के चनपुण प्रविा िो वे थे ही, गुरुदेव ने उन्ें उपकुलपचि की उपाचध से भी सुिोचभि चकया। उनकी महान् कृचि 'Light Fountain' ('आलोक-पुंज') को चवसृ्मि नहीं ंचकया जा सकिा चजसका लेखन सुन्दर प्रवाहयुि िैली में आंग्ल भाषा में उन्ोंने अपने आश्रम के प्रारक्तम्भक चदनों ंमें अत्यन्त गोपनीयिा से चकया था। इसमें स्वयं गुरुदेव के मुखारचवन्द से मुखररि गुरुदेव के जीवन-वृत्त का लावण्यमय चववरण है।

१९४८ में स्वामी चिदानन्द जी ने चदव्य जीवन संघ के महासचिव (General Secretary) पद को साँभाला। आश्रम के सभी अन्ती:वाचसयों ंके चलए यह एक हषप का चवषय था। संन्यासी, साधक, ब्रह्मिारी, सेवक सभी प्रसन्न थे; क्ोंचक अब उनके पास एक नेिा, चमत्र, दािपचनक और पथ-प्रदिपक के रूप में एक सिे युचधचष्ठर थे। स्वयं गुरुदेव भी आह्लाचदि थे; क्ोंचक आश्रम की कायपकाररणी अब सविो, आदरणीय, आध्याक्तत्मक प्रविा के हाथों ंमें आ गयी थी।

१९५९ के नवम्बर मास से मािप १९६२ पयपन्त की अमेररका यात्रा के चलए गुरुदेव ने श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को 'चदव्य जीवन संघ' के प्रचिचनचध के रूप में भेजा। स्वामी जी उन अलौचकक चवभूचियों ंमें एक चवरल अपवाद हैं चजन्ोंने पचश्चम दिेवाचसयों ंके हृदयों ंको छू चलया; चकनु्त स्वयं बाह्याभ्यन्तर रूप से पचश्चमी सभ्यिा से अछूिे रहे। रूचढ़वादी ब्राह्मण की परम्परानुसार सरल स्वल्पाहार ग्रहण करके िथा गेरुआ वस्त् धारण करके उन्ोंने एक भारिीय संन्यासी की परम्परा को बहुि अच्छी िरह से चनभाया। पचश्चमी सभ्यिा के सहस्रों ंलुभावने दृश्यों ंके मध्य, सुख-सुचवधाओं ंऔर इक्तियोते्तजक वािावरण के गहन कुहरे में रह कर भी उन्ोंने भारिीय आध्याक्तत्मक आदिों का त्याग नहीं ंचकया। हाथ में ज्ञान की मिाल ले कर स्वामी जी जहााँ भी वे गये, उन्ोंने चदव्य जीवन, आध्याक्तत्मकिा, भारिीय संसृ्कचि और धरिी पर रहिे हुए दैवी जीवन यापन करने का सने्दि घर-घर, नगर-नगर, िहर, संस्थान, चवद्यालय और चवश्वचवद्यालयों ंमें चदया। चनचश्चिरूपेण पचश्चमी सभ्यिा को इसकी चविेष आवश्यकिा है; क्ोंचक आधुचनकिा की िकािौंध में जीने वाले बीसवीं ंििाब्ी के वे लोग इसी ज्ञान के द्वारा िमसू से ज्योचि की ओर बढ़ सकिे हैं।

इसके उपरान्त वे ध्यान और िपस्या के चलए एकान्तवास को िले गये। इसका प्रयोजन उन्ोंने स्वयं यह बिाया चक दीघप काल िक चवदेिी वािावरण में समय चबिाने के पश्चाि् वे आत्म-िुक्तिद्ध करना िाहिे थे, यद्यचप चवदेिी संसृ्कचि से अप्रभाचवि, अछूिे और अक्षि रह कर उन्ोंने अपने देि को गौरवाक्तन्वि चकया था। इस स्वैक्तच्छक िपश्चयाप और कठोर मौन-व्रि के पश्चाि् स्वामी जी भारिवषप की पावन धरा पर आदिप संन्याचसयों ंके मध्य नव-पल्लचवि पौधे की भााँचि दीक्तप्तमि् स्वरूप के समक्ष आये। चदव्य ज्योचि श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के महासमाचध में चवलीन होने से पूवप ही वे आश्रम लौट आये। कहना न होगा-गुरुदेव को चकिनी प्रसन्निा हुई होगी चक उनका चप्रय आध्याक्तत्मक पुत्र उनकी स्मरणीय महासमाचध के समय उनके समीप था; क्ोंचक उनके किों ं पर आश्रम का भचवष्य चनभपर था। अक्तन्तम समय में वे ही गुरुदेव के चनकट प्रणव का उिारण करिे हुए चवद्यमान थे। गुरुदेव के 'अज्ञाि' में चवलीन होने पर वे ही सभी िोकग्रस्त साधकों ंको सानत्वना देने वाले थे। १४ जुलाई १९६३ को गुरुदेव के महाप्रयाण के पश्चाि् आश्रम में आयी ररििा

(िून्यिा) की क्तस्थचि को स्वामी जी ने अपने आन्तररक प्रभाव और िक्ति से १८ अगस्त १९६३ कि साँभाला चजस चदन वे चदव्य जीवन संघ के बिोप ऑफ टरस्टीज़ द्वारा आश्रम के अध्यक्ष चनवापचिि हुए।

संघ के परमाध्यक्ष पद पर आसीन होने के बाद स्वामी जी ने समपपण, सेवा और आदिप आध्याक्तत्मक भाव में लीन हो कर, न केवल चदव्य जीवन संघ के चविाल संस्थान में, प्रत्ुयिु चवश्व-भर के साधकों ंके हृदय में, जो उन्ें अपना चप्रय अचभभावक, िुभ-चिन्तक, सलाहकार अथवा मागपदिपक मानिे थे, त्यागभाव जाग्रि चकया। 'त्याग' की ध्वजा को ऊाँिा फहराने में उन्ोंनें सक्षम पररश्रम चकया। आश्रम में उनका जीवन दो स्वरूपों ंमें अचभव्यि था। प्रथम िो गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज की कठोर (उग्र) आध्याक्तत्मक िपश्चयाप का जीवन और चद्विीय एक आधुचनक चिचक्षि मनुष्य चजसमें जीवन का सुन्दर मानवीय दृचष्टकोण चविार और कमप का महत्त्वपूणप सन्ुतुलन बनाये झलकिा था। यह कलात्मक सक्तम्मश्रण एक अचद्विीय िररत्र को जन्म देने वाला था चजसने स्वामी जी को न केवल छोटे-बडे चकसी भी स्तर के व्यक्ति के साथ िदूरूप बनाया, प्रत्ुयिु आध्याक्तत्मक जगि् में प्रत्ेयेक प्रकार के धमप, जाचि, समुदाय, चिष्यों ंके मध्य उन्ें अनन्य धमापत्मा बना चदया। स्वामी जी ने 'सेवा' भाव को जो स्थान चदया, वह केवल मनुष्य-जाचि िक ही सीचमि न था, वह िो प्राचणमात्र के चलए था। इसी कारण सामान्य जीवन के क्ेषेत्र में कायप करने वालों ंऔर ग्रामीण धमप-प्रिारकों ंकी अपेक्षा वे कहीं ंअचधक पूज्य थे। उनके चलए सेवा ही धमप है, जब चक उन मनुष्यों ंके अनुसार सेवा और धमप चवपरीि-चवरुद्ध गुणों ंसे युि माने जािे हैं जो धमप को एक प्रकार का बचहफे़न (कडवा चवष) अथवा चित्त की भ्राक्तन्त समझिे हैं। एक ओर जहााँ एक पक्तण्डि समाज-सेवा की अवज्ञा करिा है, िो दूसरी ओर एक कट्टर समाज-सेवी धाचमपक व्यक्ति को हीन दृचष्ट से देखिा है। जीवन के प्रचि दोनों ंही प्रकार के त्ुरुचटपूणप उपगमनों ंने मानविा को संकीणप बना कर अस्त-व्यस्त कर चदया है और इचिहास के क्रम में चवपचत्तजनक क्तस्थचि उत्पन्न कर दी है। स्वामी चिदानन्द जी गुरुदेव के एक ज्ञानवृद्ध चिष्य के रूप में सफल हुए। अपने दोनों ंहाथों ंमें धमप और सेवा की पिाका उठा कर उन्ोंनें िदूरूप हो कर इन दो मानवीय आदिों को आत्म-साक्षात्कार में सहायक एकल ज्योचि-स्वरूप मानने का उपदेि चदया। यह एक सफल और उद्ेदेश्यपूणप जीवन का एक ज्वलन्त दृष्टान्त है। यह कहना अचियोक्ति न होगी चक स्वामी जी इस ज्वलन्त दृष्टान्त के अनुरूप अभी िक चजये और आज भी इसी के अनुरूप जी रहे हैं।

दररद्रिा, रोग और अज्ञान मनुष्य की सबसे बडी व्याचधयााँ हैं। इनका िमन करने के चलए अपने िरीर, मन और आत्मा को ही समचपपि कर देने के अचिररि मानविा की और क्ा सेवा हो सकिी है। दूर से भी उन्ें कहीं ंऐसा अवसर प्राप्त हो, स्वामी जी सदा ित्परिा से उसे चनभािे रहे हैं। हृदय को द्रचवि कर देने वाली ऐसी सेवा की घटनाओं ंका पुनलेखन िो यहााँ उचिि न होगा चजनसे प्रायीः सभी पररचिि हैं और चजनके चवषय में बहुि-कुछ पहले ही चलखा जा िुका है, पुनरचप कुछ प्रमाचणक सत्यों ंका चववेिन यहााँ अचनवायप है इस अमानवीय पुरुष के मानवीय कृत्यों ं का।

आश्रम के दो अन्य सहयोचगयों ंके साथ स्वामी जी टैक्सी में जा रहे थे। रास्ेते में उन्ोंनें एक व्यक्ति को बुरी िरह घायल अवस्था में सडक पर पडे देखा। टैक्सी िालक उसे अनदेखा करके आगे बढ़ गया। चकन्ुतु स्वामी जी ने इस दृश्य को िीघ्रिापूवपक देखा और टैक्सी वाले को रुकने को कहा। नीिे उिर कर उन्ोंनें पूछिाछ की। पिा िला चक दुघपटना का चिकार हो कर वह व्यक्ति असहाय अवस्था में ऐसे पडा था। स्वामी जी उसे उठा कर िीघ्र ही चनकटिम

अस्पिाल पहुँानेि के चलए टैक्सी में रखने को िैयार थे। चकन्तु टैक्सी िालक इस बाि के चलए सहमि न था। उसे भय था, कहीं ंपुचलस उसे ही अपराधी न समझ बैठे चक उसी की गाडी से दुघपटना हुई हो। िालक उग्र-स्वभाव था। चकसी भी मूल्य पर वह उस व्यक्ति को अस्पिाल िक ले जाने के चलए सहमि न हुआ। स्वामी जी क्ा करिे? उन्होंनें टैक्सी िालक को उसका चकराया चदया और उसे जाने को कह चदया। स्वयं वे अपने सहयोचगयों ंके साथ उस व्यक्ति को उठा कर चनकटिम अस्पिाल िक पहुँानेि के चलए पैदल जाने को िैयार हुए, दूरी चकिनी भी रही हो ! अचधक क्ा कहें! टैक्सी िालक का हृदय द्रचवि हो उठा और वह अपनी गाडी में उस दुघपटनाग्रस्त व्यक्ति को ले जाने के चलए िैयार हो गया। यचद मानविा पाचवक वृचत्तयों ंसे ऊपर है, िो चदव्यिा मानविा से बढ़ कर है।

एक किपव्यपरायण धाचमपक जीवन के चलए मूल धमप संचहिाओं ंमें प्रचिपाचदि व्रि, अनुष्ठान, पिंजचल योग के यम-चनयम अथवा बौद्ध धमप के पंािील चविेषकर अचहंसा की प्रवृचत्त, व्यवहार में यथाथप सत्य, ब्रह्मियप अथवा मन और इक्तियों ंका पूणपिीः विीकरण स्वामी जी के चलए कोई अनुकरणीय धमप, चसद्धान्त, आदिप अथवा चकसी रूप में अचनवपिनीय सत्य न कर उनके जीवन के अचभन्न अंग थे चजसमें वे चविरण करिे और चजसमें वे उन्हीं ंगुणों ंके मूिप रूप में सबके समक्ष चदखायी दिे। यचद हम यह सोिें चक कोई संन्यासी घृणा-भाव रख सकिा है, िो उनमें था; लेचकन केवल दो बािों ंके चलए-अनैचिक जीवन और चमथ्या भाषण। िैिव काल से ही उन्हें नैचिक जीवन से लगाव था, प्यार था। उनमें सदािार और साधुिा के चवसुफुचलंग िो सदा उनके िान्त भाव को प्रचिभाचसि करिे रहिे।

स्वामी जी के हृदय की यह एक अनूठी चविेषिा है चक यह अपने से बाहर जाने को सवपदा ित्पर रहिा है। वे स्वयं को भूल कर सदा दूसरों ंकी आवश्यकिाओं,ं इच्छाओं,ं आकांक्षाओं ं को पूणप करने के चलए उद्यि रहिे हैं। अिीः कहा नहीं ंजा सकिा चक १९६३ में चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष पद पर आसीन होने के उपरान्त सिा वषों में िारीररक चवश्राम हेिु कदाचिि् ही समय चनकाल पाये होंगें। यह चबना भी अप्रासंचगक न होगा चक वे उन चवरल क्तस्थिप्रज्ञ आत्माओं ं में से एक हैं जो मन को चविचलि एवं भ्रान्त कर देने वाले इस संसार की अनेक रंग-ध्वचनयों ंऔर गचियों ंसे अप्रभाचवि और अछूिे रह कर सवपत्र उपदेि करिे हुए चविरण करिे रहे होंगें। वे चनभीक हो कर भ्रमण करिे और चनरािा के सागर में िूबे चविाल समुदाय के मानस में आिा की चकरण, चववेक और चवश्वास जाग्रि करने के चलए अश्रान्त रूप से िसि कायप करिे रहे। स्वामी जी लोगों ंके सामाचजक िनाव और व्यक्तिगि समस्याओं ंका समाधान करिे। सवोपरर, उन्हें आध्याक्तत्मक सुख प्रदान करने िथा उस ज्ञान–िक्ति का आिीवापद देने के चलए वे कायपरि रहिे चजससे वे लोग जीवन-पथ में िरम लक्ष्य-आत्म-साक्षात्कार की अनुभूचि के चलए योग्य बन सकें।

शकसी शवशिष्ट् व्यच्चि की षष्ट्यच्चब्दपूशिण का उत्सव मनाना भारिीय परम्परा को अलंकृि करिा है। आज स्वामी शिदानन्द जी महाराज के इस महोत्सव में हमें यह सौभाग्य प्राि हुआ है शक हम भारि की उस महान् संस्कृशि को कृिज्ञिा की श्रद्धांजशल अशपणि कर सकें शजसका महान् िेज यहाँ के महान् सन्तों ंऔर िपच्चस्वयों ंकी नाशडयों ंमें आज भी प्रवाशहि हो रहा है। इसी आध्याच्चिक पीढ़ी का एक अनुपम दृष्टान्त हैं-स्वामी शिदानन्द जी महाराज। सवणिः अपनी व्यच्चिगि उपलच्चियों ंके साथ आि-समपणि की कला सीखने के शलए यह एक महत्त्वपूण अवसर है।

शदव्य जीवन संघ, शिवानन्द आश्रम
शिवानन्दनगर (ऋशषकेि)

१९५० में स्वामी जी ने गुरुदेव के साथ समूपूणप भारि की दीघप यात्रा की। गुरुदेव की इस यात्रा में स्वामी जी महाराज का महान् योगदान था। वे रास्ते भर सुन्दर माचमपक प्रविन दिे रहे जो गुरुदेव द्वारा चदये गये प्रविनों ं के पररचिष्ट् रूप में थे। स्वामी जी न केवल ओजस्वी वाणी में प्रविन ही करिे, प्रत्युिु योगासनों ं का प्रदिपन भी करिे। यद्यचप अपनी चिचथल पािन प्रणाली और दुबपल िरीर के कारण स्वामी जी को अनेक कचठनाइयों ं का सामना करना पिा, िथाचप उन्होंने इन कचठनाइयों ं की ओर ध्यान नहीं ं चदया। गुरुदेव की महानिा और मचहमा की वेदी पर यह एक सेवा, िपश्चयापऔरभक्तिभावकीसुन्दरभेंटथी।इसयात्राकेमाध्यमसेप्रथमबार'चदव्यजीवन संघ' और'चिवानन्दआश्रम'जन-जनकीदृचष्ट्मेंआये।दिेके महान्सामाचजकऔर राजनैचिकनेिाओं ंिथासरकारीउिचधकाररयों ंकोइसकीजानकारीचमली।आत्म-साक्षात्कारके पथ परअग्रसरहोनेकेइच्छुकएवंआध्याक्तत्मकचपपासुओं ंकोमागपचमला।

चदव्य जीवन ज्योचि की जय हो!

– श्री स्वामी वेंकटेिानन्द जी महाराज –

कृपया अपने पावन िरणों ंमें हमारे चवनम्र हाचदपक प्रणाम स्वीकार करें!

आपके अत्यन्त प्रभाविाली व्यक्तित्व के वैभव के समक्ष, आपकी िकिाौंधं कर देने वाली अध्याक्तत्मक अपक्तस्थचि में, हम प्रिंसा में मौन खडे हुए हैं। **आप कृपापूवणक अपनी आन्तररक शदव्यिा की वेदी की ओर हमें भी ले िलें।**

आपके परम प्रकािमान आध्याक्तत्मक व्यक्तित्व की दीक्तप्त के सामने हम अपनी आँखें ढके हुए हैं िाचक हम अपनी आँखों ंऔर अपने उत्कंचठि हृदय में आपके मानवीय व्यक्तित्व का पान कर सकें; चकन्तु यहाँ, यद्यचप हम देख रहे हैं, परन्तु आपमें से चवचवध प्रकार की िकिाौंधं कर देने वाली इिनी चकरणें प्रकट हो रही हैं, चक हम पुनीः अपनी आँखें आपके उज्वल िरणों ंमें झुका दिे हैं और प्राथपना करिे हैं, **"हमें अपने वास्तशवक स्वरूप की वेदी की ओर ले िलें- शवस्मयाकुल श्रद्धा से हम आपके समक्ष मूक खडे हुए हैं।"**

क्ोंचक, ऐसे पररपूणप व्यक्ति के पावन जन्म-चदवस पर हम क्ा कर सकिे हैं? हम बडे से बडा सम्मान भी आपको समचपपि करें, प्रिंसा के सवोत्तम ियचनि िब् भी अपनी चवनम्र पूजा के रूप में आपके पावन िरणों ंमें समचपपि करें, िो वह सब भी केवल आपकी महानिा को कम करने वाला ही होगा। आपके उदात्त आदिप का अनुकरण करना िथा आपके मचहमाक्तन्वि जीवन से चिक्षा ग्रहण करना असम्भव कायप ही प्रिीि होिा है; क्ोंचक हमें िो लगिा है **आपकी अनेकों ं शवशिष्टिाओं ंमें से शकसी एक को प्रिा करने के शलए भी हमें घोर पररश्रम से युि अनेकों ं जन्म लग जायेंगे।**

चवश्व के इचिहास में ऐसे अत्यन्त चगने िुने ही व्यक्ति होंगें चजनमें बहुमुखी सवपश्रेेष्ठिा प्रकचटि होने के चलए गौरवाक्तन्वि हुआ जा सके। अविारों ंमें केवल पूणापविार भगवान श्री कृष्ण के खान पार में ग्रह माना जािा है चक उन्होंनें स्वयं में यह बहुमुखी-पररपूणपिा प्रकट की। हमारे आज के समय में ऐसे दो व्यक्तियों ंकी चवद्यमानिा का सौभाग्य हमें प्राप्त है- गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज और श्री महात्मा गांिी चजनके आदिप में आपने स्वयं को ढाला है। इसके साथ-साथ आपमें भगवान् बुद्ध की अपूवप करुणा और भगवान् ईसा के अनवरि सुधारात्मक उत्साह का चवलक्षण सक्तम्मश्रण है, वस्तुिीः इन दोनों ंका ही प्रचिचबम्ब हम आपमें देखिे हैं।

आपके जीवन में संन्यास मशहमाक्तन्वि हुआ है। आपकी त्याग भावना के स्वरूप का कठोपचनषद् में नचचकेिा के िब्दों ंमें अत्यन्त सुन्दर ढंग से वणपन चमलिा है। इस प्रकार का महान् त्याग हमें वास्तव में यह स्मरण करािा है चक सच्चे त्यागी साधक की दो चत्रलोकी की सम्पदा का महत्त्व एक िृण के िुल्य हीं ंहै। इसके साथ ही हमने देखा है धन के प्रचि आपन में घृणा भी नहीं ं है। चदव्य जीवन संघ के महासचिव रूप में, धन के प्रचि आपका भाव, संसार के समस्त लोगों ंके चलए एक सीख है चक **धन का उपयोग जीवन के लक्ष्य की पूशिण का एक साधन मान कर करना िाशहए, इसे अपने आप में एक लक्ष्य मान कर नहीं**;ं और यह भी चक स्वयं को भगवान् की सम्पचत्त का न्यासी (टरस्टी) मान कर, **उस सम्पशत्त का उपयोग उनकी सन्तानों ंकी भलाई के शलए करना िाशहए।**

आपके महान् त्याग के प्रथम उदाहरण के रूप में, **आप ने समूपूिण मानव-जाशि को उस सवणव्यापक परमािा के ही रूप में देखिे हुए गले लगाया है। आपमें इस पररपूिणिा की अनुभूशि का होना आपके शदव्य व्यक्तित्व की समग्र पररपूिणिा से स्पष्ट् रूप में अशभव्यि**

हिाे है। क्योंचंक आपमें एक सुयोग्य प्रािसक, बुक्तद्ध सम्पन्न चनदेिक, चवनम्र सेवक, उत्साही साधक, आदिप सन्त, िसि लेखक, प्ेरेरक विा, अचद्विीय हास्य-रसज्ञ, सवपचप्रय चमत्र, और इन सबसे चिरोमचण एक आत्म-साक्षात्कार प्राप्त जीवनुमुि सन्त होने का सक्तम्मचश्रि रूप चमलिा है।
और वास्तव में ऐसा इसचलए हो पाया है, क्योंचंक आपने अपने जीवन में उन स्वचणपम िब्दों ंको प्रिुर मात्रा में चसद्ध करके चदखा चदया है जो चक आप बारम्बार हमारे कणप-कुहरों ंमें गुाँजिो रहिे हैं-**"जीवन शदव्य होना िाशहए, साधना हमारा जीवन-श्वास बन जानी िाशहए।"** आप चदव्य पैदा हुए हैं, अिः आपके व्यक्तित्व का कोई भी अंग चदव्यिा चवहीन नहीं ंहै, और आपका कोई भी कायप ऐसा नहीं ंहै जो सविो, उदात्त और पावन न हो।

आपकी उदात्त-पावनिा के सम्बन्ि में हम क्या कहें? जो भी िब्द हम िुनेंगे वह आपसे ही चलये हुए हैं; क्योंचंक हमारे समूपूणप ज्ञान का कोष आपका ही उपहार है। **महान् है वह धरा शजसने आप सरीखे महापुरुष को जन्म शदया है। धन्य है वह लोग शजनछ जरा सी भी के शलए आपका सत्ंसंग शमलने का सौभाग्य प्रा हुआ है। धन्य है वह युग शजसमें अविरिर होने के शलए आपने उसे िुना है।** हमें िो इस बाि की अत्यचधक प्रसन्निा है चक भगवान् ने हमें यह मनुष्य जन्म चदया और वह भी चविेष रूप से इस कचलयुग में चदया, क्योंचंक िभी िो हम आपके और परम पूज्य गुरुदेव के पावन िरणों ंमें रहने का सौभाग्य पा सके! हम स्वयं को सौभाग्यिाली समझिे हैं चक गुरुदेव की सम्मोहक वाणी और उनकी आकषपक आध्याक्तत्मक िक्ति ने हमें अपने िरणों ंमें खींिी चलया और हमारे मन में ईश्वराकांक्षा की चिनगारी जलायी; और आपके िसि प्ेरेमपूणप प्रबोधनों ंने उस सुफुचलंग को जीचवि ही नहीं ंरखा है बक्ति उसे हवा दे कर ज्वाला बना चदया है। **हम आपके आध्याच्चिक बालक हैं। क्योंशंक हम आपमें और गुरुदेव में शकसी भी प्रकार का कोई अन्तर नहीं ंदेखिे हैं (यहाँू िक शक दोनों ंके नामों ंमें भी इिना सादृश्य है)। और हमने स्वयं को पूिणिया आपकी शदव्य सुरक्षा में सौंपं शदया है।**

क्योंचंक गुरुदेव के 'चदव्य जीवन चमिन' के चलए आप (जैसा चक आपने स्वयं को ठीक ही कहा) एक ऐसा चप्रज्म हैं जो स्वयं में से चवचवध रंगों ंका अत्यन्त सुन्दर चदव्य प्रकाि प्रकट करिा है। **हे गुरुदेव की शदव्य सन्तान, आप गुरुदेव की प्रशिकृशि ही हैं। साधुओं ंऔर संन्याशसयों ंके शलए आप एक सुयोग्य मागणदिणक हैं। समस्त मानविा के शलए आप अशद्विीय शहिैषी हैं। हम योग-वेदान्त फारेस्ट युशनवशसणटी के शवद्याशथणयों ंके शलए आप असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाि की ओर िथा देर मृत्युु से अमरत्व की ओर ले जाने वाला उज्वल प्रकािस्तम्भ हैं!**

इस अपररचमि आनन्द के िुभ अवसर पर हम आपमें प्रकचटि उस सवपिक्तिमान् परमात्मा से प्राथपना करिे हैं चक वह आपको उत्तम स्वास्थ्य और मानविा की सविो सेवा (चजसके चलए आप अविरिर हुए हैं) में रि दीघप जीवन प्रदान करे।

आपकी पावन िरण धूचल में हम पुनीः वन्दनाकरिे हैं।

अपने दैचनक जीवन में ईश्वर की इच्छा को पूणप करना, यही धमप का सार है।

-स्वामी शिदानन्द

सत्य एवं सन्त का मागण

श्री स्वामी माधवानन्द जी महाराज

जीवन चदव्य आराधना की एक प्रचक्रया है। बहिु से लोगों ंका सम्बि जीवन के बाहरी उपकरणों ंके साथ ही हिोा है और उन्हीं ंउपकरणों ंको वे अक्तन्तम लक्ष्य समझिे हैं। यद्यचप प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य अलग-अलग हिोा है, चकनु्तु हिोा है वह बाहरी उपकरण का ही। इन बाहरी उपकरणों ंके साथ उनका सम्बि एक अनवरि प्रचक्रया है, जो कभी न िो समाप्त हिोी है और न चवराम ही लेिी है।

लोगों ंने धमप के मूलभू िित्त्व को भुला चदया है। वे बाहरी और अनावश्यक उपकरणों ंके चलए लड बैठे हैं। लोक-जीवन में एक धमोपदेिक को दूसरे की चनन्दा करिे हुए प्रायीः देखा जािा है। एक चवचिष्ट् चविार-धारा के धमोपदेिक दूसरी चविारधारा चविेष के धमोपदेिक के दोषों ं की घोषणा खुले आम करिे कहीं ंभी चमल जायेंगे। यहााँ िक चक िथाकचथि पढ़े-चलखे लोग भी इस लज्जास्पद कायप से चवलग नहीं ंहैं। बडे खेद का चवषय है चक यह सब धमप के नाम पर चकया जािा है।

अगर हम इस क्तस्थचि का कारण खोजने जायें िो मूल में िीन बािें स्पष्ट् दीख पडिी हैं- आन्तररक अपचवत्रिा, मन की अक्तस्थरिा िथा अज्ञानावरण। इन िीनों ंमें से आन्तररक अपचवत्रिा को 'कमपयोग' के माध्यम से दूर चकया जा सकिा है। भगवान् ने 'भगवद्गीिा' में भी यही उपदेि चकया है। मन की अक्तस्थरिा को उपासना, आराधना िथा ईश्वर के प्रचि आत्म-समपपण के द्वारा दूर चकया जा सकिा है। अज्ञान के आवरण को ज्ञानयोग' के माध्यम िथा चववेक और वैराग्य के अभ्यास से हटाया जा सकिा है।

सन्तों ंका जीवन अत्यन्त चवलक्षण हिोा है। व्यक्ति जो वसुतु वषों के पररश्रम से, वषों के स्वाध्याय िथा लम्बी िपस्या के पश्चाि् कचठनाई से प्राप्त करिा है, उसे सन्तों ंके जीवन का चनष्ठा थिा लगन से अनुसरण करके अचि िीघ्र पा सकिा है। **सन्तों ंका जीवन वाजाल नहीं ंहै, वह िो स्वयं की आहुशि है। उनकी करनी िथा कथनी में अन्तर नहीं ंहोिा।** वे प्रत्येक गुण को जीवन में ढाल लेिे हैं। गुण स्विीः सहज रूप से उनके स्वभाव में समाचहि हिोे हैं, जैसे दुग्ध में मक्खन।

सन्त का ज्ञान अनुभवात्मक हिोा है, जब चक पक्तण्डि का ज्ञान काल्पचनक िथा सीचमि।
उदाहरणाथप सन्त का सम्बि कूप के जल से है और पक्तण्डि का ज्ञान हौज के जल के समान है। कूप के जल का सम्बि स्रिो से हिोा है, अिीः वह न िो कभी ररि हिोा है और न कभी गन्दा
एवं पुराना। यह िो चनि नवीन, स्वच्छ हिोा जािा है। चकन्तु दूसरी ओर हौज का जल अल्प समय में ही दुगपक्तिि हो जािा है, उस पर काई जम जािी है िथा वह समाप्त भी हो जािा है।

अिीः व्यक्ति के जीवन की समस्याएँ अथवा समस्याओं ंके मूल कारण, चजनका उले्लेख
ऊपर चकया जा िुका है, सन्तों ंके जीवन से चिक्षा ले कर उनका चनराकरण चकया जा सकिा है।
श्री स्वामी शिदानन्द जी जैसे सन्त अपने दैशनक जीवन से प्रेररि दे कर साधकों ंका मागणदिणन करिे हैं, शजससे वह आध्याच्चिक पथ पर अग्रसर हो कर इस जीवन का अपना लक्ष्य प्राि करिे हैं। सन्त ही धरिी पर िलिे-शफरिे साक्षाि् ईश्वर का रूप है।

श्री स्वामी चिदानन्द जी की 'हीरक जयन्ती' पर हमारी यही कामना है चक वे दीघप काल किस्वस्थ रह कर मानव मात्र की आन्तररक अनवरि चपपासा को िान्त करिे रहें।

शदव्य जीवन संघ, शिवानन्द आश्रम
शिवानन्दनगर (ऋशषकेि)

श्री १०८ स्वामी शिदानन्द जी महाराज मेरा अनुभव

–श्री स्वामी हरररिानन्द जी महाराज, बरसाना –

श्री स्वामी चिदानन्द जी से मेरा गि इकत्तीस वषों से पररिय है। स्वामी जी १९४३ में गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी के आश्रम में आये थे। बारह वषप िो श्री स्वामी जी के चबलकुल साथ, पडोस में, बीस फुट की दूरी पर रहने का सौभाग्य चमला था। १९४५ से १९५७ िक का

जो 'योग साधना कुटीर' का छह कुचटयों ंका 'ब्लाक' है ििा जो 'चिवानन्द आश्रम' की कुचटयाओं ंमें सवपप्रथम बना था, उसमें एक और दो नम्बर वाले कमरे में श्री चिदानन्द स्वामी जी
रहिे थे। नम्बर िीन में श्री स्वामी कृष्णानन्द जी, नम्बर िार में श्री स्वामी हररओमानन्द जी और
नम्बर पााँि में श्री स्वामी िाश्विानन्द जी रहिे थे।

जीवन के वे बारह वषप बडे सुन्दर चदन थे। वैसे चदन न कभी गुजरे और न गुजरेंगे। वैसे
िो स्वामी जी सभी से प्रेम करिे थे, सभी की सेवा करिे थे, **परन्तु मुझसे आयु में छोटे होने के कारि कुछ शविेष प्रेम करिे थे। मेरी आयु में भी एक शवशित्र शविेषिा यह है शक मैं श्री गुरुदेव से साढ़े िौदह वषण छोटा हूँ और श्री स्वामी जी से साढ़े िौदह वषण बडा हूँ। दोनों ं शवभूशियों ंके मध्य में मेरी आयु है।** मेरा जन्म ५ मिाप, १९०२ का है।

श्री स्वामी जी के जीवन पर हजारों ंिो लेख आयेंगे जो एक से एक सुन्दर और बचढ़या होंगें, चकन्तु मैं िो केवल अपने हृदय, वाणी और लेखनी को पचवत्र करने के चलए थोडे से टूटे-फूटे िब्ों ंमें अपना अनुभव चलख रहा हाँ। मेरा चलखना ऐसा ही है जैसे मक्खी आकाि का पिा लगाने के चलए उडे।

श्री स्वामी जी का स्वभाव जन्म से ही उदार, सेवाभावी, परोपकारी िथा स्नेहपूणप है। यही कारण था चक यहााँ आश्रम में भी आ कर उन्ोंने कोचढ़यों ंऔर बीमारों ंकी सेवा करने के चनचमत्त सवपप्रथम अस्पिाल का काम साँभाला और वह श्री गुरुदेव के मन में उत्तर गये। चफर िो अपनी दक्षिा से और गुरुदेव की कृपा से थोडा-थोडा आश्रम के अन्य चवभागों ंमें सेवा करिे-करिे आज सवेसवाप सेवक और स्वामी बन गये। **श्री हनुमान् जी ने अपनी सेवा के बल पर सबको अपने अधीन और ऋिी बना शलया था। श्री राम, भरि जी, लक्ष्मि जी, श्री सीिा जी आशद सभी उनका उपकार मानिे थे। स्वामी शिदानन्द जी भी वैसे ही थे।**

वैसे िो हजारों ंलेखों ंमें स्वामी जी के कार्यों की दक्षिा, सफलिा, चवद्वत्ता, सेवा आचद के लेख आयेंगे, चकन्तु चफर भी दो–िार वे बािें मैं चलखना िाहिा हाँ, चजन्ें िायद कोई न जानिा हो, चलख न सके। यह िो सभी जानिे हैं चक **स्वामी जी ने शकस िरह प्रेम और सेवा-भाव से सब आश्रमवाशसयों, ं अशिशथयों ंिथा नौकरों ंआशद से ले कर बन्दरों, ं कुत्तों, ं कौवों, ं िोिों ं आशद िक की सेवा की। इिना ही नहीं, ं वरन् श्री स्वामी जी ने कुत्तों, ं बन्दरों ंऔर पशक्षयों ं का अच्चन्तम संस्कार भी मनुष्यों ंकी िरह 'नाम-संकीिणन' के साथ शवशधवि् शकया।**

ऋशषकेि के कोशढयों ंकी सेवा िो खूब िन-मन-धन से की है, अब भी कर रहे हैं।
परन्तु बाहर से भी एक कोढ़ी को ला कर आश्रम में कई महीने (मूयूचजयम) के पास ही िमूबू में रखा। अपने हाथ से स्नान कराना, क्तखलाना-चपलाना िथा सब प्रकार की सेवा करना, कपडे धोना, हजामि बनाना आचद भी आप स्वयं करिे थे, क्ोंचक नाई ने अस्वीकार कर चदया था। अच्छा हो जाने पर भी उसे जाने नहीं ंदेिे थे। परन्तु १ चसिम्बर ५० को श्री गुरुदेव के 'अक्तखल भारि यात्रा' में जिो समय श्री स्वामी चिदानन्द जी को उनके साथ जाना था। इसचलए उसे बडे आदर से सब नये कपडे, चबस्तर आचद दे कर, जहााँ िक उसने कहा, वहााँ िक का चकराया दे कर, एक व्यक्ति को साथ भेज कर चवदा चकया था।

दो अिूबर को महात्मा गिी के जन्म-चदन पर **हररजनों ंकी जैसी पूजा वह करि थे,** ि**ायद ही कोई करिा होगा।** मुझे ि ओिा नहीं ंचक और कोई ऐसा कर सके। उन्ें चिलक
लगाना, हार पहनाना, उनके पैर धोना, आसन पर चबठा कर उन्ें भोजन कराना, उनके साथ
प्रसाद लेना, चफर पैर छू कर, दचक्षणा दे कर आदर से भेजना और एक दो नहीं–ंसारे आश्रम के, मुचनकीरेरी ि था ऋचषकेि िक के सब हररजन स्त्री-बिों ंसमेि आिे थे।

श्री स्वामी जी के आने के थोडे समय के बाद उनकी कायप-दक्षिा, चवद्वत्ता आचद के भाव
को देख कर गुरुदेव भगवान् ने अपने मुख-कमल से यह बाि कही थी-**'यह मेरा सौभाग्य है
शक रामकृष्ण शमिन वालों ंकी कृपा से मुझे श्रीधर स्वामी जैसा हीरा रत्न प्राि हुआ।'** बाि
ऐसी थी चक श्रीधर राव बी. ए. पास करके मद्रास से जब आये, िो पहले रामकृष्ण चमिन में
सेवा करने के भाव से गये। उन्ोंने कुछ िीप और प्रचिबंि लगाने िाहे। इन्ोंने स्वीकार नहीं ंचकया
और यह उसे छोड कर यहााँ आ गये। इसी बाि को ले कर गुरुदेव ने उि उद्गार प्रकट चकये
थे। ये उनके हृदय के सिे उद्गार थे।

महापुरुषों ंके गुण कहने और चलखने में नहीं ंआ सकिे। वे अपार होिे हैं। अनन्त का
अन्त कैसे पाया जा सकिा है? चकसी ने आकाि का अन्त भी पाया है?

एक कथा आिी है। एक बार सभी नभिरों ंने एक सभा की। उस सभा में उन्ोंने प्रस्ताव
रखा चक हमें आकाि के अन्त का पिा लगाना है। इस पर गरुड, बाज, चिकरी, गीध आचद
पचक्षयों ंने अचभमान पूवपक कहा चक हम इसका पिा लगायेंगे और वे वहााँ से उड िले। इसके
पश्चाि् मक्खी, मच्छरों ंने सूिना दी चक हम आकाि का पार नहीं ंपा सके। वह अपार है, अनन्त
है। उनकी यह सूिना चलख ली गयी। चफर गरुड आचद दूसरे पक्षी भी आये कोई छह महीने में,
कोई एक वषप में और कोई वषों पश्चाि्। उन सबने यही सूिना दी चक आकाि का कोई अन्त
नहीं ंहै, हम उसका पार न पा सके। वह अपार है। इस पर न्यायाधीिों ंने कहा चक यह सूिना
िो हमें मक्खी और मच्छरों ंने पााँच चमनट में ही दे दी थी, चफर िुम लोगों ंने इिने चदनों ंके बाद
कौन-सी चविेष बाि का पिा लगाया? वृथा ही इिना श्रम और समय गाँवाया। बेिारे बहुि लक्तज्जि
हुए।

यही हाल हम लोगों ंका भी है। वृथा ही महापुरुषों ंऔर सन्तों ंके गुणों,ं कमों और स्वभाव
आचद को जानने में समय और िक्ति लगािे हैं। **'हरर अनन्त, हरर कथा अनन्ता!'** -ऐसे ही
भि, महापुरुष और सन्तों ंके गुण भी अनन्त होिे हैं। क्ोंचक :

**'भच्चि, भि, भगवन्त, गुरु िीुनाणम वपुएक।
इनके पद वन्दन शकये नािं शवघ्न अनेक।'**

इनमें से चकसी का भी पार नहीं ंपाया जा सकिा। इसचलए इसमें समय और िक्ति नष्ट न
करके उसी समय और िक्ति को उनकी आज्ञा पालन करने में लगायें और इनके बिाये मागप पर
िल कर अपना कल्याण करें।

अन्त में भगवान् से प्राथपना करिा हाँ चक भगवान् इन्ें पूरे सौ वषप जीचवि रखें, िाचक यह
गुरुदेव िथा उनके चविारों ंका प्रिार इसी प्रकार दि-चविि में करिे रहें।

माँ राधे राधे राधे , जय राधे राधे राधे। जय जय राधे गोचवन्द, जय जय राधे गोचवन्द।
ॐ श्रीः
ब्रज ि◌ौरासी कोस में, ि◌ारि गााँव चनज धाम। वृन्दावन और मधुपुरी बरसाना नन्दगााँव ।।

शदव्य जीवन संघ के समथण सेनानी-स्वामी शिदानन्द

–श्री स्वामी शिआनन्द जी महाराज, ऋशषकेि-

महामशहम, धमणधुरन्धर, यशिराज श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की प्रायः समस्त आध्याच्चिक-सम्पशत्त-सम्पन्न हो कर स्वामी शिदानन्द जी आज संघ के प्रत्येक सदस्य एवं उसके ि◌ुभ-शिन्तक की दृशष्ट् और विी के शप्रय शवषय हो रहे हैं।

गुरुदेव के चनकट सम्पकप में आने का सौभाग्य ि◌ो मुझ जैसे साधारण चिष्य को भी चमला है, चकनुतु गुरुदेव का उपदि, आदि, चिक्षा-दीक्षा, सेवा-ि◌ुशूरूषा, ि◌त्परिा से आज्ञा-पालन आचद का अवसर प्राप्त करने का सौभाग्य चवरलों ◌ंको ही चमला। उन्हीं ◌ंचवरलों ◌ंमें श्री स्वामी चिदानन्द जी प्रमुख हैं। **गुरुदेव के आदिों पर ि◌ल कर उन्होंनें गुरुदेव के सन्देि को, भारिीय संस्कृशि को शवश्व के कोने-कोने में फैला शदया। 'गुरु-कृपा' स्वामी शिदानन्द जी में मुखररि हो उठी है।**

चसद्धान्तों ◌ंि◌था आदिों को ले कर संसार में न जाने चकिने चववाद और संघषप हुए हैं, चकनुतु उन चसद्धान्तों ◌ंि◌था आदिों को अपने व्यावहाररक जीवन में आत्मसाि् करने वाले कुछ सन्त ही हिे हैं। स्वामी चिदानन्द जी में अनेक गुणों ◌ंका समन्वय है। नीरस ि◌था ि◌ुष्क प्रविनों ◌ंसे संसार ऊब ि◌ुका है। **स्वामी शिदानन्द जी ने अपने ि◌ारु ि◌ररत्र से सहृदयिा, करुिा, दया, क्षमा, सेवा ि◌था प्रेम प्रवाशहि कर ऊसर धरिी को उवणरा कर शदया। उनके मधुर कीिणन से, उनकी करुि पुकार से मानव का ि◌ुष्क हृदय भी आप्लाशवि हो उठिा है।**

असहायों ◌ंको सहायिा देना-शनधणन को धन, भूखों ◌ंको भोजन ि◌था शनवणस्त्र को वस्त्र देना ि◌था सभी में 'नारायि' का भाव रखना, रोशगयों ◌ंकी सेवा, शविेष रूप से कुष्ठ रोशगयों ◌ंकी ि◌था हररजनों ◌ंके ि◌रि धोना, उन्हें स्वयं भोजन कराना- ये सभी बािें आज के युग के शलए बडी शवशित्र ही नहीं ◌ंवरन् असम्भव-सी प्रिीि होिी हैं। शकनुतु स्वामी शिदानन्द जी के शलए ये साधारि बािें हैं, क्योंशक यह उनका स्वभाव बन गया है। 'गुरु कृपा' ि◌था कठोर साधना से उनका व्यच्चित्व खरा स्विण बन कर शनखर आया है।

परम चपिा परमेश्वर एवं पूज्य गुरुदेव से हमारी यही प्राथपना है ि◌था हम सबकी मंगल कामना है चक वे हमारे गुरुभाई स्वामी चिदानन्द जी को दीघापयु प्रदान करें ि◌था सदा स्वस्थ रखें, िाचक आने वाले अनेकानेक वषों ि◌क वह इस धरिी पर आध्याक्त्मकिा का अलख जगािे रहें।

ॐ

यशद आपका भाव ईश्वर-पूजन का है और आपका काम उसके नाम के साथ जुडा है, ि◌ो आपका प्रत्ेयेक काम भजन बन जायेगा। थथान : घर हो, खिे हो िाहे जंगल हो, वह प्रभु का मच्चन्दर बन जायेगा। आप जहाँ भी ि◌लेंगे, वह ईश्वर की ही प्रदशक्षिा होगी।

-स्वामी शिदानन्द

गिीा के कमणयोग का एक आदिण

–श्री स्वामी ज्योशिमणयानन्द जी महाराज, अमरीका –

यह हमारे चलए सुिमि ही चविेष महत्व का चवषय है चक हम स्वामी चिदानन्द जी जैसे महात्मा का 'जन्म-चदवसोत्सव' मनाने के चलए एकचत्रि हुए हैं। चकसी महात्मा की वास्तचवक प्रिंसा चजन बािों ◌ंमें चनचहि है, मैं उन्हीं ◌ंकी ओर संकेि करना िाहाँगा। प्रायीः हमारा ध्यान व्यक्ति चविेष के कायों का चकसी गहराई में उत्तर कर जान लेने का हेिा है; चकनुतु यहीं ◌ंहम भूल करिे हैं। इससे आन्तररक जीवन उपेचक्षि रह जािा है। चजस प्रकार समुद्र में बहिे हुए 'चहम-खण्ड' के प्रायीः नौ-दस भाग पानी की सिह में चछपे रहिे हैं, उसी प्रकार मनुष्य की दिा है। यचद आप चकसी महात्मा का मूल्यांकन करना िाहिे हैं, िब उनके आन्तररक जीवन, आन्तररक संघषप, आन्तररक गहराई और आन्तररक गम्भीरिा का गहन अध्ययन िथा चवशे्लेषण करना होगा।

मेरे चलए स्वामी चिदानन्द जी का सौम्य मुख, गम्भीर वािापलाप, िान्त और चनश्छल भावभंचगमा आचद उनकी सुचवकचसि महान् आत्मा के ग्राह्य एवं सुचनचश्चि संकेि हैं। उन का मन सदैव िान्त और क्तस्थर रहिा है, यद्यचप िरीर गचिचीलिा के चनयम के अनुसार चहलिा-िुलिा रहिा है। वह कमपयोग की पूणपिा के चिखर पर पहुाँि िुके हैं। वह गीिा की सारभूि चिक्षा के उत्तम आदिप हैं, जो चक इस प्रकार है:

कमणण्यकमण यः पशे्येदकमणशि ि कमणयः।
स बुच्चद्धमान्मनुषे्येषु स युिः कृत्स्नकमणकृि्।।

(गीिा : ४–१८)

'जो पुरुष कमप करिे हुए अपने मन को िान्त रखिा है, उसमें अकमप की भावना रखिा हैिथा जो पुरुष अकमप में भी कमप को अथापि् त्यागरूप चक्रया को देखिा है, वह पुरुष मनुष्यों ◌ं मेंबुक्तद्धमान् है और वह योगी समूपूणप कमों का किाप है।'

धैयप और ि ान्त-चित्त से कमप करिे रहना-यही चिक्षा का सार है। चिदानन्द जी को देक्तखए; आप क्ा अनुभव करिे हैं? समस्त िरीर में गहरी कमपिीलिा और साथ-साथ मुख पर गहरे नीले आकाि की-सी गम्भीरिा और चनमपलिा। चनीःसन्देह स्वामी चिदानन्द जी हमारे गुरुदेव के सवोत्तम चिष्य हैं। उन्ोंने अपने 'समत्वयोग' के चसद्धान्त को स्वयं अपने जीवन में उिारा है। वह एक आदिप भि हैं। वह मािृ–िक्ति के उपासक हैं। माँ के हाथ िो सवपव्यापक हैं, चकनु्त चिदानन्द जी जैसे समुज्ज्वल पुत्र ही माँ की गोद में िाक्तन्तपूवपक चवश्राम कर सकिे हैं, उनके वास्तचवक स्नेह का अनुभव कर सकिे हैं। वह अपने हृदय में माँ की िाश्वि उपक्तस्थचि का अनुभव करिे हैं और उनका जीवन चनरन्तर प्रसन्निा का 'चनत्य पवप' है। गुरुकृपा से उनका रोम-रोम सदैव हचषपि रहिा है। यही उनके िीघ्र चवकास का कारण है।

ज्ञानयोग को मानने वाले ऊपर कही गयी बािों को छोटा समझिे हैं। हम लोग जो हैं, उनमें से चकिनों ने उन्नचि की है? **युवा स्वामी (श्री स्वामी शिदानन्द जी) की गशिशवशधयाँ उनके ज्ञान प्राच्चि की िीिम अवथथा की सूिक हैं।** चमश्री की वास्तचवक प्रिंसा िखने के बाद ही होिी है। इसी िरह उनके िरण-चिह्नों का अनुकरण करके, उनके सद्गुणों को आत्मसाि् करके ही हम उनके माहात्म्य को जान सकिे हैं। हम सबको उनका अनुकरण करने का प्रयत्न करना िाचहए। हमारी यही िुभेच्छा है चक वह हमारे बीि बने रहें। 'आनन्दधाम' िक हमारा मागपदिपन करने िथा हम पर कृपा बनाये रखने के चलए ईश्वर उन्हें दीघापयु प्रदान करें।

करुिा और त्याग के अविार

–श्री स्वामी वेंकटेशानन्द जी महाराज –

पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी के ही समान स्वामी चिदानन्द जी भी रोचगयों और दीन दुीःक्तखयों की सेवा करने का, कभी भी समाप्त न होने वाला उत्साह ले कर जन्मे थे। कुष्ठ रोचगयों की सेवा करना िो उनका लक्ष्य ही बन गया था। अपने घर के चविाल घास के मैदानों में वे इन लोगों के चलए कुचटयाएँ बना लेिे और उनकी इस प्रकार देखभाल करिे मानो वह भगवान् की साकार प्रचिमाएँ हों। ऐसी सेवा के द्वारा उनका हृदय इस प्रकार िुद्ध हो गया चक उसके प्रभाव से वे गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के िरणों में क्तखंिे िले आये और १९४३ में चिवानन्द आश्रम से जुड गये। आश्रम में आने के बाद भी उन्होंने रोचगयों और पीचडिों की सेवा जारी रखी। वह आश्रम के 'उपगुरु,' संन्याचसयों के चलए अनुकरणीय आदिप, योग-वेदान्त फारेस्ट एकेडेमी के प्राध्यापक, चदव्य जीवन संघ-चजसकी स्थापना गुरुदेव ने १९३६ में की थी-के वह प्राण और आत्मा रहे।

गुरुदेव उनकी चदव्य अनुकम्पा की प्रिंसा करिे थे। गुरुदेव ने कहा चक स्वामी चिदानन्द के करुणािील हृदय में से गीिा और उपचनषदों का ज्ञान प्रवाचहि होिा है। गुरुदेव अपने समस्त

चिष्यों ‌ंसे बढ़ कर इनकी प्रिंसा करि थे। **गुरुदेव ने स्वामी शिदानन्द में अपने ही प्रशिशबम्ब को पहिान शलया था।** आश्रम का कोई भी कायपक्रम या समारोह स्वामी चिदानन्द के प्रविन के चबना पूणप नहीं ‌ंमाना जािा था। मैं उन प्रविनों ‌ंको चलचपबद्ध चकया करिा था और वह 'योग' (अ‌ाँगरेजी में) नामक बहुमूल्य ग्रन्थ में प्रकाचिि चकये गये थे, यह ग्रन्थ आध्यात्त्मक चजज्ञासुओं ‌ंके चलए एक अनमोल चनचध है। १९४९ से आज िक उन्होंने आश्रम के, संघ के, और वहााँ के चनवाचसयों ‌ंके िथा समस्त चवश्व के अन्य असंख्य लोगों ‌ंके भचवष्य को चनदेचिि चकया है और कर रहे हैं। १९४८
से १९६३ में गुरुदेव के बाद उनका स्थान ग्रहण करने िक वह चदव्य जीवन संघ के महासचिव रहे हैं।

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज में प्राप्त होने वाले असंख्य दैवी गुणों ‌ंमें से सम्भविया **सबसे शवलक्षि है त्याग की प्रज्वशलि अशि और उिनी ही ज्वलन्त करुिा की भावना।** यह त्याग की भावना िो अपना घर-द्वार-पररवार त्याग कर आ जाने के बाद भी समाप्त या चंकुचिि् भी कम नहीं ‌ंहुई, यह त्याग-वैराग्य का भाव उनके चलए सहज-स्वाभाचवक, चनत्य प्रचि के जीवन का एक अंग है। अिः वे पूणप रूप से मुि, अनासि िथा अचलप्त हैं। वे अनेकों ‌ंबार सारे चवश्व का भ्रमण कर िुके हैं; सहस्रों ‌ंलाखों ‌ंलोगों ‌ंद्वारा समूपूणप चवश्व भर में पूजे जािे हैं, िथाचप वे एक महात्यागी, पूणपिया मुि की भााँचि प्रचिभाचसि होिे हैं।

त्याग की इस ज्वलन्त अचि के ही कारण उनमें दया और करुणािीलिा की ऐसी गररमा है जो प्रत्येक दिपन करने वाले को उनके दिपन करिे ही अनुभव होिी है, और उनसे जो चदव्य प्रकाि चवचकरचणि होिा है, वह चवश्व के लाखों ‌ंलोगों ‌ंके पथ को आलोचकि करिा है। यह प्रकाि इिना िक्तििाली और जीवन-पररविपनकारी है चक उसके द्वारा प्रकाचिि होने वाले व्यक्ति अलग ही पहिाने जािे हैं उनमें भी त्याग की भावना प्रज्वचलि हो गयी है और उनके हृदयों ‌ंमें भी करुणा घर कर िुकी है।

वास्तव में वे मानविा के एक ऐसे महान्‌शहिैषी हैं जो अपने सम्पकण में आने वाले प्रत्येक व्यच्चि का जीवन बदल कर रख दिे हैं। . .

****

राजयोगी श्री स्वामी शिदानन्द

– श्री स्वामी भीमानन्द जी महाराज –

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज जी के सामीप्य में जो व्यक्ति एक बार भी आने का सौभाग्य प्राप्त करिा है, वह उस यचिवयप के महि् िरत्र के दिपन से प्रभाचवि हुए चबना नहीं ‌ंरह सकिा। प्राचणमात्र की यह स्वाभाचवक प्रवृचत्त होिी है चक चजस चकसी में वह चवचित्रिा का दिपन करिा है, चवचिष्ट् गुणों ‌ंको पािा है िो उससे प्रभाचवि हुए चबना नहीं ‌ंरह सकिा। उससे कुछ न कुछ गुण ग्रहण करने की इच्छा रखिा है। यही दिा हमें उनकी दृचष्ट्गोचर होिी है, जो एक बार भी श्री स्वामी चिदानन्द के सचन्नकट आिे हैं, **उनकी अद्‌भुि प्रशिभा, अनुपम शवद्वत्ता एवं सरल स्वभाव को देख कर दिणक शवशिित्रिा का अनुभव करने लगिा है शक इस महापच्चण्डि ने**

समग्र गुिों ंसे सुसम्पन्न होि हुए भी संसार से संन्यास क्ों ंशलया? संसार में रहिे िो चकसी न चकसी महत्त्वपूणप पद पर कायप करिे। चकसी चवद्यालय के उि अध्यापक बन कर छात्रों ंकी चवद्याप्राक्तप्त-रूपी कुषुधा चनवृत्त करिे। अथवा चकसी दे का राजदूित्व स्वीकार कर दे का प्रचिचनचधत्व करिे। चकसी राजनैचिक अथवा व्यापाररक पद पर कायप कर सकिे थे िो चफर संन्यास क्ों ंचलया? सांसाररक मायामोह के जाल में फंसे हुए जनों ंको क्ा पिा चक समग्र सुखोपभोग के साधनों ंके त्याग का ही नाम संन्यास है।

श्रीधर ने श्री स्वामी चिवानन्द सरस्विी महाराज में िास्त्ानुसार संन्यास दीक्षा ली। दोनों ंको अत्यन्त हाचदपक आनन्द हुआ। गुरु को प्राप्त कर चिष्य को िो होना ही था, वरं प्रिखरमचि चिष्य को प्राप्त कर गुरु को भी आनन्द हुआ। चिष्य गुरु के पचवत्र पादपद्मों ंमें रह कर सेवारि रहा। योग-वेदान्त के अध्ययन के साथ-साथ चिवानन्दाश्रम का प्रधान पद स्वीकार कर प्रधान सचिव का कायप करना आरम्भ कर चदया। 'योग-वेदान्त आरण्य चवश्वचवद्यालय' की स्थापना होने के पश्चाि् उपकुलपचि का पदभार भी साँभालना पडा। इस पद के साथ ही साथ राजयोगी होने के कारण राजयोग का अध्यापन भी स्वीकृि चकया। राजयोग की व्याख्या करने में अपनी अनुपम प्रचिभा का पररिय दिे हैं।

अधुना इस योचगवयप की जन्म चिचथ का महोत्सव आनन्द-कुटीर, चिवानन्दनगर में सम्पन्न हो रहा है। परमात्मा से हमारी यही प्राथपना है चक राजयोगी स्वामी चिदानन्द िििायु हो कर समाज की सेवा में ित्पर रहें।

ध्यात्वा ध्यात्वा गुरोवाणक्ं
मुच्चिदं िैव िाश्विम्।
शिवानन्ंदं ि िच्चच्छष्ंयं
शिदानन्ंदं नमाम्यहम्।।

सब िक्तियों ंकी मूल िक्ति ब्रह्मियप में है। िक्तियों ंका संरक्षण होना िाचहए। संयमी पुरुष के अन्दर पूणप ब्रह्मियप चनचहि रहिा है। ब्रह्मिारी कुछ भी कर सकिा है।

-स्वामी शिदानन्द

पुष्ांजशल

– श्री स्वामी हृदयानन्द मिाा जी –

भारि मिाा के दुलणभ पुष्, हमारे श्रदे्धेय श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज, अपने गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के िरिशिह्नों ंपर िलिे हुए, समस्त भारि िथा शवश्व के अन्य अनेकों ंदिों ंमें अपने ज्ञान की सुगन्ध फैला रहे हैं। वे चनधपनों ंऔर धनवानों, ं अनपढ़ों ंऔर पढ़े चलखों ंिथा पूवप और पचश्चम के सभी वगों के लोगों ंकी आध्याक्तत्मक आवश्यकिाओं ंकी चनरन्तर पूचिप कर रहे हैं। समस्त संसार को एक बडे आश्रम की भााँचि मानिे हुए वह चवश्व के िारों ंकोनों ंमें चदव्य प्रेम और आध्याक्तत्मक आनन्द िथा अपनी चिक्षाओं ंका कोष चविररि करिे हुए चनरन्तर घूम रहे हैं।

वह असंख्य लोगों ंके प्रेम पात्र बन गये हैं, क्ोंशंक उनमें आध्याच्चिक प्रेम-शपपासुओं ं की प्यास बुझाने की िथा आध्याच्चिक कुषुधािुरों ंकी कुषुधा िान्त करने की सामर्थ्यण है।

दयालु, शवनम्र और प्रेम पूिण होने के कारि उनके हृदय में समाज द्वारा शिरसृ्कि और शनष्काशसि माने जाने वाले लोगों ंके शलए भी भरपूर थथान है।

कुष्ठ रोशगयों ंकी दयनीय अवथथा ने स्वामी जी के हृदय को छू शलया और वे इनके कष्टों ंको दूर करने िथा इनकी च्चथथशि को सुधारने के हर सम्भव प्रयास में जुट गये और अभी भी जुटे हुए हैं।

मेरीभगवान् से हाचदपक प्राथपना है चक वह स्वामी जी को उत्तम स्वास्थ्य, दीघापयु और िक्ति प्रदानकरेंचजससे चक मानविा के प्रचि की जाने वाली अपनी इस सेवा को जारी रख सकें। स्वामी जीकोमेराप्रेमपूणप चवनम्र प्रणाम !

अचद्विीय सन्त स्वामी चिदानन्द

जब स्वामी रंगनाथानन्द जी जैसे व्यक्ति की ओर से चकसी के चवषय में राय दी जािी है,िो वह असाधारण महत्त्वपूणप मानी जािी है। एक बार स्वामी रंगनाथानन्द जी चिवानन्द आश्रम,ऋचषकेि में संन्यासी-समुदाय के एक सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर आसीन थे जहााँ स्वामीचिदानन्द जी चद्विीय अध्यक्ष के पद पर थे।

वहााँ उन्होंनें स्वामी चिदानन्द जी के बारे में उल्लेख करिे हुए कहा, **"हम सब यहााँ संन्यासी हैं, शकनु्त हममें से एक सन्त हैं यहााँ।"** जब मैंने स्वामी चिदानन्द जी के एक चिष्य कोयहबिाया, िो यह बाि स्वामी चिदानन्द जी के चिष्यों ंके बीि िुरन्त फैल गयी, **"स यत्प्रमािं कुरुिे लोकस्तदनुविपिे** (गीिा: ३-२१)।" महापुरुषों ंके उदाहरण का सामान्य जन अनुकरण करिे हैं। **स्वामी शिदानन्द जी से जो पररशिि हैं, वे उनके सन्तत्व को और रोशगयों ंके प्रशि उनकी सेवा को जानिे हैं। शकनु्त इस भाव की जो उपयुि अशभव्यच्चि स्वामी रंगनाथानन्द जी ने दी, यह उनकी शवशिष्टिा थी।**

वास्तशवक संसृ्कृशि के प्रिीक

–श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज, नूयू याकण-

१० जुलाई, १९४९ को परम पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने एक ऐसे व्यक्ति को पावन संन्यास परम्परा में दीचक्षि चकया, चजसने उनका आध्याक्तत्मक पुत्र बन कर उनके कायप को भारि भर में और चफर भारि से िेष समस्त आधुचनक चवश्व भर में प्रिीन देवदूिों ंकी भााँचि सचक्रयिा से प्रसाररि करना था। अपने इन िब्ों ंद्वारा मैं आज इस मिु भव्य आत्मा को अपने श्रद्धा-सुमन समचपपि कर रहा हाँ।

आत्मा, मैंने इसचलए कहा है, क्ोंचंक स्वामी चिदानन्द जी महाराज उस एक व्यक्ति श्रीधर राव, जो दचक्षण भारि में २४ चसिम्बर, १९१६ को पैदा हुआ था, के रूप में इस संसार में कायप नहीं ंकर रहे हैं। **अपनी इिाा की प्ेरेरिा से और अपने आदिण के अनुसार, वह मन द्वारा कल्पना शकये जा सकने वाले समस्त भेद-भावों ंसे, िथा िरीर द्वारा सम्भाशवि समस्त पररसीमाओं ंसे ऊपर उठ िुके हैं। एक गुरुभाई होने के निे, मेरा हृदय द्रशवि हो उठिा है, और सि कहूँ िो मैं स्वयं को गौरवान्विि अनुभव करिा हूँ, शक जब भी कभी हम शमले हैं-मैंने सदा ही इनकी शप्रय छशव को प्रकाि से पररपूण पाया है,** भौचिक सीमाओं ंसे ऊपर सदैव सेवारि, प्ेरेमपूणप, हर जगह चबना चकसी भेदभाव के प्रकाि की वृचष्ट् करिे हुए भारिीय आदिप की साकार प्रचिमा!

अपने जीवन्त अनुभव के द्वारा उन्ोंनें मचहमामयी ईसाई सत्यों ंका हमारे प्रािीन भारिीय वैचदक साचहत्य में वचणपि सत्यों ंसे चमलान करिे हुए बिा चदया चक सब एक हैं। **इस जीवन्त समिय का उदाहरि यह है शक जब वह भारिीय संन्यास परम्परा के प्रिीक गेरुवे पररधान में शवदेि यात्रा पर जािे हैं, िो उनकी शवनम्रिा और प्रािी मात्र के प्रशि प्ेरेम भाव के कारि अनेकों ंहृदय प्रभाशवि हो जािे हैं-मानो आधुशनक असीसी के सन्त फ्ांशसस ही हों।ं**

परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी के उत्तराशधकारी के रूप में िथा भारि के आदिण पुत्र के िौर पर स्वामी शिदानन्द जी, प्रत्ेयेक सम्पकण में आने वाले की दृशष्ट् में त्याग और वास्तशवक भारिीय संसृ्कृशि के सविो प्रिीक बन कर खडे हुए शदखायी दे हैं, क्ोंशंक वास्तव में वह शवश्व की एक ही भाषा-हृदय की भाषा बोलिे हैं, एक ही भगवान् सवणव्यापक, सवणशच्चिमान् परमािा की पूजा करिे हैं, एक ही शनयम-सत्य के शनयम का अनुसरि करिे हैं, एक ही धमण-प्ेरेम के धमण की उपासना करिे हैं। सबके मूल स्रोि, परम शपिा परमािा से प्राथणना है शक वे उन्ें शनरन्तर शदव्य जीवन और िच्चि प्रदान करिे रहें शजससे शक समूपूण जगि् में समस्त मानविा इस प्ेरेरिास्पद और मशहमामयी प्रिीि से उशदि होने वाले सूयण से लाभान्विि होिी रहे!

सद्गुरुदेव सद्गुरुदेव सद्गुरुदेव पाशहमाम्।
शिवानन्द शिवानन्द शिवानन्द रक्षमाम् ।।

देदीप्यमान शसिारा

–श्री स्वामी प्रिवानन्द जी महाराज, मलेशिया –

लोयला कॉलेज में श्रीधर का जीवन एक प्रचिभाशाली रूचढ़वाचदिा का था। उनका ईसाई कॉलेज में चिक्षाग्रहण चकये जाने का अपना महत्त्व था। ईसामसीह के आदिों और चिक्षाओं ंका िथा अन्य महान् ईसाई सन्तों ंऔर धमपप्रेरकों ंका श्रीधर के हृदय में इस हद िक प्रभाव पडा चक वह उनका चहनदू धमप की सवोत्तम और उदात्त संसूकृचि के साथ अत्यन्त सौंदंयपूवपक समन्वय कर सके। उनकी अन्तजापि चविाल दृचष्ट् ने उन्हें यह सामथ्यप दी थी चक वह श्री कृष्ण में यीिु को देख सकें न चक श्री कृष्ण के स्थान पर यीिु को देखें।

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने उन्हें मानविा की आध्याच्त्मक उन्नशि के क्षेत्र में की गयी असाधारि सेवाओं ंके शलए िथा सत्य, प्रेम और पशवत्रिा के प्रशि उनकी दृढ़ शनष्ठा के शलए 'अध्यात्म-ज्ञान-ज्योशि" की उपाशध से अलंकृि शकया था। अन्य अवसरों ंपर उनके सम्बन्ध में िािण करिे हुए गुरुदेव ने कहा था, "वह शमिन का कोहनूर हैं," "चिदानन्द जी के प्रविन उनके सन्त हृदय से प्रसुफुचटि उद्गार हैं, उनके सहजानुभूि ज्ञान का प्रकटीकरण हैं।" "उनके प्रविनों ंको स्वणापक्षरों ंमें चलखा जाना िाचहए।" एक बार आश्रमवाचसयों ंको सम्बोचधि करिे हुए गुरुदेव ने कहा, **"आप सबको शिदानन्द जी के साथ अपने गुरु समान व्यवहार करना िाशहए। मैं भी उनका अपने गुरु जैसा सम्मान करिा हूँ। मैंने उनसे असंख्य बािें सीखी हैं। मैं उनसे प्रेम करिा हूँ; उनकी पूजा करिा हूँ; उनका ज्ञान शवषद है; उनका शववेक अपौरुषेय और स्वानुभूि है। उनका सुन्दर स्वभाव अिुलनीय है। आप सबको उनसे सीखना िाशहए। िभी आप उन्नि और शवकशसि होंगे।"** स्वामी चिदानन्द जी के सम्बन्ध में गुरुदेव के मन में इिने उच्च और प्रिंसात्मक भाव थे।

स्वामी शिदानन्द जी जन्म से ही सन्त, योगी और दािशशनक हैं। वह गुरुदेव की सवोत्तम प्रशिकृशि हैं। वह सेवा, प्रेम और त्याग की साकार मूशिश हैं; एक भक्त, ज्ञानी, शनष्काम कमशयोगी और राजयोगी हैं, योग का समन्वय करने में दक्ष, भाषाशवद्, अच्छे वक्ता और सिि लेखक हैं। उनके कीिशन और भजन उत्थानकारी हैं। वे हास्य-शवनोद के सूक्ष्म ज्ञािा हैं। अपनी स्नेहमयी कोमल देह में भगवान् बुद्ध की छशव समेटे हुए हैं। स्वामी जी आज

केवल शदव्य जीवन संघ के अन्तराणष्ट्रीय परमाध्यक्ष ही नहीं,ं वह भारि के विणमान शवद्यमान सन्तों ंमें अग्रगण्य सन्तों ंमें से आध्याच्चिक आकाि के देदीप्यमान शसिारा हैं।

"मानविा कोई दूर की वसुतु नहीं ंहै, वह ि्ुम्हारे सामने है, ि्ुम्हारे चनकट है और रहै ि्ुम्हारे ि्ारों ंओर। अपने पडोसी से मानविा का पाठ प्रारम्भ करो।"

शदव्य जीवन संघ का अनमोल हीरा स्वामी – शिदानन्द

–श्री स्वामी शववेकानन्द जी महाराज –

श्री रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी चववेकानन्द के रूप में एक महान् चिष्य को जन्म चदया, महात्मा गिाी ने अपने सदृश्य चवनोबा भावे को बनाया और गुरु भगवान् श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने (श्रीधर राव में से) स्वामी चिदानन्द के रूप में एक महान् सन्त को जन्म चदया, जो चक आज चदव्य जीवन संघ के अनमोल हीरे के रूप में माने और पूजे जािे हैं।

अपने गुरु स्वामी चिवानन्द जी की ही भााँचि स्वामी चिदानन्द की वाणी सब ओर गूाँज रही है। उनके मुख से ज्ञान के मुिाओं ंकी वृचष्ट् हाेिी है। उनके श्रीमुख से गुरु भगवान् की प्ेरेरणाप्रद वाणी ही प्रवाचहि हाेिी है, **"केवल एक ही जाशि है-मानविा की जाशि; केवल एक ही धमण है-प्ेरेम का धमण; केवल एक ही आदि है-**सत्य पालन का आदि; एक ही चनयम है-कायप-कारण का चनयम; केवल एक ही भगवान् है-सवपिक्तिमान्, सवपव्यापक और सवपज्ञ परमात्मा; केवल एक ही भाषा है-हृदय की भाषा या मौन की भाषा।" चदव्य जीवन के इस सने्दि ने मानविा को झकझोर चदया है। **लोग स्वामी शिदानन्द में शिवानन्द भगवान् के दिणन करिे हैं।** सेवा, भक्ति, दान, पचवत्रिा, ध्यान और साक्षात्कार- चिवानन्द के यह चसद्धान्त स्वामी चिदानन्द के दैचनक जीवन में प्रकट रूप में चदखायी दिे हैं। स्वामी चिदानन्द के जीवन का यह प्रकाि उनकी चववेक-बुक्तद्ध का ही प्रकाि नहीं ंहै, यह एक गहनिर मूल स्रोि से उचदि हो कर उनके मक्तस्तष्क में से नहीं,ं हृदय में से प्रकट होिा है। उनके व्यक्तित्व के आकषपण का रहस्य, उनके स्वभाव की शैिव सरलिा में; मनुष्य, भगवान् और अपने गुरु के प्रचि दृढ़ चवश्वास में, िथा सेवा और त्याग की गहन भावना में चनचहि है।

जो ि्ारीर मन और आत्मा से रोग-ग्रस्त हैं, सदा उन्ीं ंकी सेवा में रि, स्वयं को पूणपिया खो कर कायप के प्रचि समचपपि, और चवश्व-प्ेरेम से छलकिे हुए हृदय सचहि, स्वामी जी का जीवन वास्तव में हर ि्रह से चदव्य जीवन है। आरक्तम्भक बिपन से ले कर अब साठ वषप की पररपक्क आयु ि्क का उनका समस्त जीवन ज्ञान और योग से पररपूणप - चजज्ञासु साधकों ंके चलए; गीिामय जीवन रहा है।

सन्त चिदानन्द के पावन स्पिप ने अनेकों ंटूटे-हृदयों ंके घावों ंको भरा है, असंख्य पीचडि आत्माओं ंको प्रसन्निा प्रदान की है। बुद्ध और महावीर की भााँचि, कबीर और नानक की ि्रह, भारि के सभी साधु-सन्तों ंकी ि्रह स्वामी जी महाराज समूपूणप सृचष्ट्-मनुष्य और पिु-पक्षी, पेड-पौधों,ं नचदयों,ं आकाि, जडि्ेिन मात्र सभी से एकात्म भाव अनुभव करिे हैं। उनके प्ेरेम में सजीव-चनजीव, सभी समाये हुए हैं। पडोस में रहने वाले कुष्ठ रोचगयों ंकी स्वयं देखभाल करने में

उन्‍ं आनन्द शिाा है। **कुष्ठ रोशगयों ंकी शनभीक और अथक सेवा से उनकी ख्याशि सारे शवश्व में फैल गयी है और उनको असीसी के सन्त फ्रांशसस की भाँशि पूजा शिाा है।**

करोडों ंवषों में कभी मानविा के उपवन में ऐसा-स्वामी जी महाराज जैसा फूल च्चखलिा है! ऐसा फूल शजसकी सुगन्ध सारे शवश्व के एक शसरे से दूसरे शसरे िक फैल जािी है। ...

*****

प्राशिमात्र के शमत्र

- श्री स्वामी अपणािानन्द जी महाराज –

रोशगयों ंकी सेवा करने की उन्‍ं सदा िीव्र लगन रही है। उनकी यह रुशि केवल मानविा के प्रशि ही सीशमि नहीं रही। यशद उन्‍ोंनें टरक के निी कुत्ते को किुला शिाा देख शलया, िो उसे शनकटिम पिु-शिशकत्सालय में भेजने के उपरान्त ही आराम करेंगे। प्रायः वह पशक्षयों ंऔर बन्दरों ंके मरहम-पट्टी करिे हुए शदखायी देंगे। पिु-पचक्षयों ंके प्रेेमवि वह अक्सर अपने कुटीर में से गायों,ं कुत्तों ंऔर बन्दरों ंकेजो आश्रम को अपना घर समझ कर रहिे हैं-न मारने के चलए पररपत्र भेजा करिे हैं। पुष्पािापना करिे समय उनकी पैनी दृचष्ट् प्रायीः फूलों ंमें चछपे कीट-पिंगे को देख लेिी है और वह उन्‍ं अत्यन्त ध्यानपूवपक िथा कोमलिा से उठा कर चनकट के पेड-पौधों ंपर रख दिे हैं। सुन्दर गुलाब के फूलों ंको वह अत्यन्त कोमलिा से स्पिप करिे हुए उठािे हैं। **संक्ेषेप में, स्वामी जी दैशनक जीवन में वेदान्त-साधना करिे हैं।** रोचगयों ंके प्रचि उनका गिीव प्ेरेम, चजसमें चक उनकी वास्तचवक िक्ति चनचहि है, आज जब चक आश्रम के प्रमुखपद पर होने के नािे उन पर अन्य असंख्य कायपभार भी हैं-अभी भी उसी प्रकार बना हुआ है। समयाभाव में जकडे हुए अपने कायपक्रमों ंमें वह अब भी रोचगयों ंको देख कर आने के चलए चकसी न चकसी प्रकार समय चनकाल ही लेिे हैं। सबसे बढ़ कर, जहााँ उनकी अत्यचधक आवश्यकिा होिी है वहााँ वह दौड कर पहुाँचने में कभी पीछे नहीं ंहटिे।

बौच्चद्धक क्ेषेत्र में भी स्वामी जी अग्रगण्य हैं। योग पर उनके सार-गशभणि प्रविन अपना उदाहरि स्वयं ही हैं, और चवचवध चवषयों ंपर उनकी अनेकों ंरिनाएाँ हमें सदैव चनदेचिि करिी रहेंगी। 'चदव्य जीवन' पचत्रका में चविेष अवसरों ंपर समय-समय पर आने वाले इनके सन्‍ेदिे िथा माचसक पत्र, योग-पथ पर पयापप्त प्रकाि डालने वाले हैं।

सभी मंिउनके हैं। जैन हों ंया बौद्ध, चसक्ख हों ंया मुच्तिम, चनरंकारी हों ंया राधास्वामी, ब्रह्मकुमाररयााँ हों ंया आयप समाजी, ईसाई हों ंया रोटेररयन-सभी उन्‍ं अपने मंिपर लाने का लालाचयि हैं। **इटली के मान्यवर पोप हों ंअथवा श्रद्ेधेय िंकरािायण िििुष्य, या रुडकी के पीर-सभी इनकी प्रिंसा करिे हैं और सभी ने इनके आध्याच्चिक पक्ष की प्रसुतुशि की भूरर-भूरर प्रिंसा की है।**

श्री स्वामी चिवानन्द जी के चवषय में पूणप ज्ञान से रचहि दीन स्वामी चिदानन्द-रूपी चप्रज़्म (संक्ेषेत्र चजससे सूयप की सप्तरंगी चकरणें वचक्रि हो प्रचिचबक्तम्बि होिी हैं) द्वारा उनके जीवन्त प्रकािमय जीवन की कुछेक चकरणें प्रचिचबक्तम्बि करने का एक चवनम्र प्रयास 'आलोक-पुंज' में चकया है। सम्भव है इनसे चकसी का पथ प्रकािमय हो जाये, उसका हृदय ज्योचिि हो जाये चजससे चक वह चफर जीवन-पथ पर वह चिसि हो कर अग्रसर हो

योग-वेदान्त के शनष्ठावान् समथणक

– श्री कशव-योगी ुद्धिानन्द भारशियार जी महाराज –

चविाल-हृदयी चिवानन्द ने अपने अक्तन्तम चदनों ंमें मेरी रिनाओं ंमें श्रेष्ठिम कृचि 'भारि िक्ति महाकाव्यम्' की सुरीली प्रस्तुचि को सुना। उन्होंने कहा, "आपको इसका अाँगरेजी में अनुवाद करना िाचहए।" "हााँ, मैं इसका अाँगरेजी रूपान्तर िैयार कर रहा हाँ।" चफर मैंने उनसे प्रश्न चकया-"स्वामी जी कृपया मुझे बिलाइए, चक अपनी पुस्तकों ंऔर इन भवनों ंके अचिररि आप मानविा को क्ा िाश्वि धरोहर अपनी वसीयि में प्रदान करेंगे? क्ा यह चदव्य जीवन संघ है? अथवा आपके द्वारा प्रचिचक्षि चकये गये संन्याचसयों ंका यह पावन समूह है?" स्वामी जी कुछ क्षणों ं के चलए गम्भीर हो गये... स्वामी जी ने गहन चविार के उपरान्त अपना हृदय खोला, "चनचश्चि रूप से चिदानन्द-यह है जो मैं अपने पीछे सजीव धरोहर छोड कर जाऊाँगा, मेरे बाद चदव्य जीवन के चमिन को िलाए रखने के चलए।" "वह िीघ्र ही आ रहा है," गुरुदेव ने कहा। वह आ ही गये; चकन्तु उनकी वैराग्य की भावना और ईश्वर-प्रेम उन्हें ऐसे चकसी भी उत्तरदाचयत्व को लेने से रोक रहा था जो उन्हें सांसाररक व्यस्तिाओं ंमें बााँध देने वाला हो।

उनका संकल्प केदारनाथ जा कर कठोर िपस्या करने का था। गुरुदेव से उन्होंने कहा, "मैं जा रहा हाँ।" गुरुदेव ने गहराई से उनकी आाँखों ंमें देखा और गम्भीरिा पूवपक बोले, "चिदानन्द, देखो, यह िुम ही हो चजसके चलए मैंने चिवानन्दनगर बसाया है, और िुम्हीं ंअब कह रहे हो चक िुम यह सब कुछ छोड कर िले जाओगे?" इन स्तक्तम्भि कर देने वाले िब्दों ंने इस चनष्ठावान् चिष्य के मन को बदल चदया, "आप ही की इच्छा पूणप हो," उन्होंने कहा और अपने गुरु के पास ही रुक गये और गुरुदेव की आत्मा उनमें प्रचवष्ट् हो गयी और उनके चदव्य जीवन के प्रचि समचपपि जीवन को एक के बाद एक चवजय की ओर ले जािी िली गयी। गुरुदेव की महासमाचध के बाद चिदानन्द जी सवपसम्मचि से चदव्य जीवन संघ के परम अध्यक्ष िुन चलये गये।

यह चनष्ठावान् समथपक अपने गुरुदेव के कायप को पूणप सफलिा सचहि एक से दूसरे दि कि, एक सम्मेलन से दूसरे सम्मेलन िक ले कर गया। योग-वेदान्त के सन्देि को उन्होंने प्रत्येक घर िक, प्रत्येक आत्मा िक पहुाँिा चदया। उन्होंने चदव्य जीवन संघ को समृक्तद्धिाली करके वैश्व-मान्यिा चदलायी। गुरुदेव चिवानन्द का सन्देि और उनकी भचवष्यवाणी महात्मा चिदानन्द ने प्रिुर मात्रा में पूणप की। चवश्व यचद आज चहनदू सनािन धमप के चवषय में कुछ जानिा है िो इसका श्रेय

चदव्य जीवन संघ को जिाा है। इस प्रकार आज चिवानन्द हर जगह चवद्यमान हैं, और चिदानन्द चदव्य जीवन के चवलक्षण समथपक िथा पथ-प्रदिपक के रूप में सवपत्र पूचजि हैं। चिदानन्द जी के अत्यन्त सुिारु रूप से संचािलि सम्मेलन इिने लाभप्रद चसद्ध हुए हैं चक उनके आध्यात्तत्मक प्राण संिालन ने। एक वैश्व रूपान्तरण ला चदया है। हम उनको जन-जागरण के मसीहा के रूप में पूजने को उद्यि हो जिे हैं। **उनके हृदय के सौंदंयण से उनका मुखमण्डल आलोशकि है, उनका हृदय उनकी आिा के प्रेम और प्रकिा से प्रकािमान है। उनकी मुस्कान मीलों ंिक िाच्चन्त और आनन्द शबखेरिी जािी है।**

चिदानन्द जी उद्घोचषि करिे हैं, "चदव्य अमर आत्मन्! आप चदव्य हैं। अपने भीिर की चदव्यिा का साक्षात्कार करना और अपनी चदव्यिा को प्रचिचदन के जीवन में अचभव्यि करना आपका किपव्य है।" **शिदानन्द जी साधुिा के मूशिणमान् आदिण हैं, पावन, शदव्य वैश्व आिा हैं, व्यावहाररक अनुकरणीय आदिण हैं, िथा योग-वेदान्त के सजीव उदाहरि हैं।**

सरलिा की साक्षाि् मूशिण

–श्री स्वामी शवद्यानन्द शगरर जी महाराज-

मनशस विशस काये, पुण्य पीयूषःपूिाणः,
शत्रभुवनमुपकार श्रेणशशभः पूरयन्तः।
परगुिपरमाणून् पवणीकृत्यशनत्यं,
शनज हृशदशवकसन्तः, सन्त सन्तः शकअन्तः||

-भिृपहरर

'चजनके मन, वाणी और िरीर में अमृि-िुल्य पुण्य भरे हुए हैं, जो एक के बाद दूसरे और दूसरे के बाद िीसरे-ऐसी अनेक उपकार-श्रेचणयों ंसे िीनों ंलोकों ंको िृप्त करिे रहिे हैं; जो दूसरों ंके परमाणु के समान थोडे से गुणों ंको सुमेरु पवपि के िुल्य मानिे हैं और ऐसा करके सदा अपने हृदय में प्रसन्न रहिे हैं- ऐसे सन्त संसार में आत्तखर चकिने हैं!' अथापि् ऐसे गुण वाले सन्त बहुि ही थोडे हुआ करिे हैं। **भिृणहरर की सन्तों ंके शवषय में इस सूच्चि का संस्मरि श्री १०८ स्वामी शिदानन्द जी महाराज को देखने के बाद बरबस हो जािा है।**

सरलिा की साक्षाि् मूशिण, साधना के जीवन्त शवग्रह एवं अपने मन, विन, िरीर से सभी प्राशियों ंकी सेवा में शनरि, आपको देख कर, मन में अपार हषण होिा है। ऐसे सन्त जब िक इस धरा-धाम पर शवद्यमान रहेंगे, शनःसन्देह भारि का शसर ऊँिा रहेगा और भारिवषण गौरवपूिण माना जायेगा।

कृष्णयजुवेदीय 'कठशुरुचि' का नाचिकेिा उपाख्यान नेत्रों ं के समुमुख निाने लगिा है, जब हमआपको देखिे हैं। वहाँ पर 'कठशुरुचि' ने कहा है-

'शत्रिाशिकेिच्चखशभरेत्य सच्चनंधंशत्रकमणकृत्तरशि जन्ममृतूयू। '

-कठोपचनषद् : १-१७

'नािकेचि अचि का िीन बार ियन करने वाला व्यक्ति, मािा-चपिा एवं आिायप-इन िीनों ं से अनुचिष्ट् पुरुष, जन्म और मृत्युु को पार कर जािा है।' इस शुरुचि में कहे गये उपदेि आपके जीवन में अक्षरिः घटिे हैं।

उि कुल एवं समृद्ध पररवार में जन्म ले कर ऊँािी चिक्षा प्राप्त की और पुनीः उन सारे भोग-साधनों ंको ठुकरा कर चहमालय की उपत्तत्यका में रहने वाले महान् िपस्वी, श्रोचत्रय, ब्रह्मचनष्ठ आिायप के िरणों ंमें स्वयं को न्यौछावर कर चदया। आपके गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज सदा आपके चवषय में कहा करिे थे- **'स्वामी शिदानन्द का यह अच्चन्तम जन्म है...।'** इससे यह चसद्ध हिोिा है चक आप पूवप जन्म के कोई साधन-सम्पन्न योग-भ्रष्ट् पुरुष हैं, जो साधन की यत्कंत्ंकचिि् त्रुरुचटयों ंको पूणप कर स्वयं अपने आप 'जीवनुमुक्ति' का आनन्द ले रहे हैं और चवश्व के अनेक भूले-भटके प्राचणयों ंका मागप-दिपन कर रहे हैं।

ऐसे महापुरुष की 'िि **जीवेि्'** इस शुरुचि-वाक् से हम उनकी 'षष्ट्यब्पूचिप' महोत्सव पर िुभ कामना करिे हैं। िििोुष भगवान् िंकर उन्ें पूणप आयुष्य प्रदान करें चजससे लोक का अनेकधा मंगलमय कायप हिोिा रहे।

महामण्डलेश्वर, कैलासपीठाधीश्वर
ऋशषकेि (शहमालय)

****

'सबचह मान प्रद आप अमानी'

–श्री स्वामी वेदव्यासानन्द जी महाराज-

स्वामी चिदानन्द जी महाराज यथा नाम ि था गुण हैं। चिि्+आनन्द-चिदानन्द! चिदानन्द, अव्यय, अनाचद, िि े न, चनचवपकार, अजर, अमर परमात्मा का नाम है। **परमािा का समूपूण नाम सच्चिदानन्द है। सि् कहिे हैं, जो िीनों ंकाल में रहे, कभी नष्ट् न हो। चिि् कहिे हैं जो िि े न हो, जड न हो और आनन्द कहिे हैं, आनन्द-स्वरूप हो; शजसमें आनन्द ही आनन्द भरा हो। परमािा का यही स्वरूप है और यही स्वरूप है हमारे स्वामी शिदानन्द जी का। उनमें िीनों ंगुि हैं-सि्, चिि् और आनन्द।** मैंने देखा चक स्वामी चिदानन्द जी सदा प्रसन्न रहिे हैं। कभी चकसी ने उन्ें दु ी:खी या िोक-ग्रस्त नहीं ंदेखा। ब्रह्मज्ञानी के जो लक्षण 'श्रीमद्भगवद्गीिा' (१५-५, १४-२५, १३-७) में चलखे हैं, वे सब स्वामी चिदानन्द जी में पाये जािे हैं।

स्वामी चिदानन्द जी महाराज को मैं लगभग २५ वषप से जानिा हूँ। वह चवनम्रिा, सज्जनिा, सहनशीलिा िथा सरलिा की मूचिप हैं। अ ्ँगरेजी भाषा के धुरिर चवद्वान् होिे हुए भी वह अनेक पाश्चात्य एवं भारिीय भाषाओं ंके ज्ञािा हैं। राष्ट्र भाषा चहन्दी, देववाणी संस्कृि का ज्ञान भी उन्ें पयापप्त मात्रा में हैं। सबसे बडा गुण जो मैंने उनमें देखा, **वह है शनरशभमानिा। अहंकार और अशभमान उन्ें छू िक नहीं ंगया। त्यागी, िपस्वी, शवद्वान् और संन्यासी हो कर उन्ें मैंने कभी झाड लगािे देखा, कभी सन्तों ंके जूठे बिपन उठािे, कभी अपने से ज्ञान और िपस्या में न्यून महात्माओं ंको भी साष्टांग प्रिाम करिे देखा।** गि वषप जब मैं चदसम्बर मास में, लगभग िीन मास पूवप, चवदेि में भ्रमण कर रहा था, जहाँ श्री स्वामी चिदानन्द जी भी उसी घर के उसी कमरे में एक बार ठहर िुके थे, **मुझे बिाया गया शक स्वामी शिदानन्द जी उस घर में शजिने शदन ठहरे, वह सभी कायण अपने हाथ से करना पसन्द करिे थे।** यहाँ िक चक उस कमरे की िथा अपने वस्त्रों ंकी सफाई िक वह अपने हाथ से करने लग जािे थे। भारि से बीसों ं सन्त अमरीका आये, पर लोगों ंकी श्रद्धा चिदानन्द जी के बराबर चकसी में नहीं ंहुई। इसी प्रकार अमरीका के अन्य िहरों ंमें भी मैंने स्वामी चिदानन्द जी की प्रिंसा में अनेक प्रकार की अनेक कथाएँ अनेक भिों ंसे सुनीं।ं

िॉ. चमश्रा (अमरीका वाले) िथा **भारि के मुशन सुिील कुमार जी, दोनों ंने ही मुझे अमरीका में बिाया शक उन्ोंने जीवन में स्वामी शिदानन्द जी जैसा सरल और शनष्कपट सन्त दूसरा नहीं ंदेखा।**

यमुनानगर में पंजाब प्रान्त का प्रान्तीय गीिा सम्मेलन हो रहा था। कोई दस-बारह वषप पुरानी बाि है। पंजाब के ित्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामचकिन िथा गृहमंत्री सरदार दरबाराचसंह दोनों ंमंच पर चवराजमान थे। देि के अनेक प्रचसद्ध सन्त इस सम्मेलन में पधारे हुए थे। स्वामी चिदानन्द जी इस सम्मेलन में एक चदन के चलए अध्यक्ष िुने गये। मैं इस सम्मेलन का संयोजक था। जैसे ही मैंने 'लाउिस्पीकर' पर स्वामी चिदानन्द जी के नाम की, **उस शदन की अध्यक्षिा के हेिु घोषिा की शक स्वामी शिदानन्द जी पीछे से आ कर मंच पर िढ़े और सब सन्तों ंको प्रिाम करने लगे। मैं एक लम्बी माला ले कर उन्ें पहनाने के शलए खडा था, शकन्तु मुझ से**

छीन कर वह उन्होंनें मुझे ही पहना दी। अपार जन-समूह उनके सहज भाव को देख कर पाँँ शिमनट िक िशलयाँँ बजािा रहा।

सन् १९६२ के इसी प्रकार के **अमृिसर के 'अच्चखल भारिीय गीिा सम्मेलन' में स्वामी शिदानन्द जी ने केवल भगवन्नाम कीिणन करके अपने अध्यक्षीय भाषि का लगभग आधा समय समाप्ि कर शदया। इस कीिणन को उन्होंनें अपनी परा विी से भगवि् भच्चि में भाव-शवभोर हो कर इस प्रकार गा-गा कर सुनाया शक आधे से अशधक जनिा की आँँखों से अश्रुधारा बहने लगा। इिना ही नहीं मंच पर बैठे एक सौ से अशधक प्रशसद्ध सन्त िथा महोपदेशक सभी भाव-शवभोर हो गये।**

दो वषप पूवप 'चिवाइन लाइफ सोसायटी' का 'उत्कल प्रान्तीय सम्मेलन' राउरकेला में मनाया गया था। एक चदन प्रािःकाल के सत्र में मेरा भाषण होना था। मेरे भाषण के पश्चाि् अध्यक्षीय भाषण स्वामी चिदानन्द जी महाराज का होने वाला था। स्वामी चिदानन्द जी ने अपना भाषण जैसे ही प्रारम्भ चकया, मैंने उन्हें अपने 'गीिा आश्रम' से प्रकाचिि अपनी दो पुस्तकें भेंट की। बस, अब क्या था, स्वामी चिदानन्द जी ने अपना पयापप्त समय इन दोनों पुस्तकों और मेरी प्रिंसा में ही लगा चदया। परमहंसिा का इससे उत्तम उदाहरण और कहाँँ चमलेगा?

'सबशह मान प्रद आप अमानी' रामायण की यह चौपाई स्वामी जी पर पूणप घचटि होिी है। भारि में सि पूछो िो कोई भी ऐसा बडा सम्मेलन िब िक सफल होिा नहीं दीखिा, जब कि उसमें चिदानन्द जी न बुलाए जायें। स्वामी चिदानन्द जी कभी हजारों दीन-दुःच्चखयों को भोजन करािे, कभी उनका पूजन करिे, कभी कीिपन करिे-करिे भाव-चवह्वल हो कर भगवद्भक्ति में अश्रुधारा बहािे और कभी रेलवे स्टेिनों और हवाई अड्डों पर अपना सामान उठािे, कभी सन्तों की आरिी करिे हुए, कभी उन्हें अपने हाथ से भोजन परोसिे हुए, कभी ध्यानयोग में और कभी चनष्काम कमपयोग में अनेक प्रकार की लीलाएँँ करिे हुए देखे जा सकिे हैं।

दुबले-पिले िरीर के इस सन्त ने भारि और चवश्व-भर में जो सन्त-स्वभाव से ख्याचि अचजपि की है, वैसी ख्याचि विपमान काल में चकसी सन्त को प्राप्त नहीं है। परमात्मा करे ऐसी चवभूचियाँँ भारि में बार-बार स्थान-स्थान पर प्रकट हों, चजससे आदिप सन्तों के आदिप िररत्रों के उत्तम प्रभाव की छाप चवश्व भर के मानवों के हृदय-पटल पर अचमट रूप से स्थाचपि हो कर संसार की नाच्चस्तकिा चमटाने में सहायक बने और स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चलए भगवान् से मेरी हाचदपक प्राथपना है चक कम से कम सौ वषप की आयु पयपन्त वह पूणप चनरोग रह कर अध्यात्म जगि् में, इसी प्रकार संसार के कोने-कोने में जनिा की सेवा करिे हुए अध्यात्मवाद की प्रचिष्ठा बढ़ाएँँ। सदा मेरी मंगल कामनाएँँ!

महामण्डलेश्वर, संस्थापक, गीिा आश्रम
स्वगापश्रम (चहमालय)

इहलौचकक अच्चस्तत्व के अि-सागर में जब जीवन की जीणप-िीणप नौका िीव्रगामी माया-द्वन्द्व िथा वासनाओं के प्रबल झंझावाि के थपेडों से डाँँवाडोल हो जािी है, िब संसार-सागर के िूफानों में भटके हुए एकाकी यात्री के चलए चदव्य महान् आत्माओं के देदीप्यमान जीवन-िररत्र प्रकाि स्तम्भ की जाज्वल्यमान चकरणों के समान

शवनम्रिा के साक्षिा् अविार

– श्री स्वामी अखण्डानन्द जी महाराज –

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की 'हीरक जयन्ती' के िुभ अवसर पर हाचदपक िुभ-कामनाएँ।

श्री स्वामी चिदानन्द जी साक्षिा् चवनम्रिा की मूचिप हैं। यचद कोई व्यक्ति चवनम्रिाकोमनुष्य के रूप में देखना िथा चवनम्न बनने का पाठ सीखना िाहिा है िो उसे स्वामी चिदानन्दजीके पास जाना िाचहए। इस युग में ऐसा असाधारण चवनयिील सन्त चमलना दुलपभ है।

स्वामी अखण्डानन्द आश्रम
मोिी झील, वृन्दावन (मथुरा)

****

ईश्वरानुग्रह प्रिा स्वामी शिदानन्द

– श्री स्वामी शविुद्धानन्द जी महाराज-

श्री स्वामी चिदानन्द जी से मेरा पररिय िब हुआ था, जब वह नये-नये संन्यासाश्श्रम में दीचक्षि हुए थे। उन में त्याग िथा वैराग्य की भावना पहले से ही प्रबल थी। 'चदव्य जीवन संघ' के चसद्धान्तों ंपर उनका प्रविन भी माचमपक हुआ करिा था चजसे श्रवण करने वाले पयापप्त प्रभाचवि हुआ करिे थे।

कालान्तर में श्री १००८ स्वामी चिवानन्द जी के ब्रह्मलीन होने के पश्चिा् श्री स्वामी चिदानन्द जी को सवपसम्मचि से 'चदव्य जीवन संघ' का परमाध्यक्ष बनाया गया। इसमें सने्देह नहीं ंचक श्री

स्वामी चिदानन्द जी के त्याग, वैराग्य और चवद्वत्ता को देखिे हुए वह इस पद के सवपथा उपयुि
थे। अपने अध्यक्ष-काल में श्री स्वामी चिदानन्द जी ने इस संस्था का पयापप्त चवस्तार चकया जो
सवपचवचदि है। पाश्चात्य देिों ं में भी जा कर 'चदव्य जीवन संघ' के कई केिों ं की स्थापना की िथा पुराने केिों ं का समुचिि सुधार चकया।

भारिवषप में यह पुरानी परम्परा है चक जब-जब धमप की ग्लाचन होिी है िथा क्षचणक
भौचिक सुखों ं से उचद्वि मानव चिाक्रान्त की प्राक्तप्त के चलए ईश्वर को पुकारिा है, िब करुणामय परमेश्वर व्यचथि, सिस्त जीवों ं के पथ-प्रदिपन िथा उद्धार के चलए अपने अंिसे समूभि चदव्य आत्माओं ं को पृथ्वी पर भेजिा है। ये चदव्यात्माएँ, उन अविारों ं से चभन्न हैं जो देिावार के रूप में
प्रचसद्ध हैं।

श्री स्वामी चिदानन्द जी भी ईश्वरानुग्रह प्राप्त उन चदव्यात्माओं ं में से हैं चजनके द्वारा अनेक
भ्रान्त, पथ-भ्रष्ट् जीवों ं का पथ-प्रदिपन िथा उद्धार हुआ है। ईश्वर उन्हें दीघापयु प्रदान करें चजससे
अचधकाचधक जीवों ं का कल्याण हो।

'सेवाश्रम ', फूलिट्टी, पौडी-गढ़वाल

****

सिे सन्त

– श्री स्वामी गिगीानन्द जी महाराज-

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के अल्पकाचलक सम्पकप से भी मैंने यह देखा चक स्वामी
जी सरल स्वभाव के सिे सन्त हैं। ऐसे सन्त की धराधाम पर उपक्तस्थचि सवपलोक मंगलकारररणी है।

उनकी 'हीरक जयन्ती' के अवसर पर हमारी हाचदपक िुभेच्छा है चक स्वामी श्री चिदानन्द
जी महाराज अपने उज्ज्वल जीवन से चिरकाल िक चजज्ञासु भिों ं को अभय एवं चदव्यानन्द प्रदान
करिे रहे।

त्यागमूचिप, महामण्डलेश्वर
संस्थापक,
साधना सदन, हररद्वार

सन्त पूजन ही सवेश्वर पूजन है

–श्री स्वामी कृपाल्वानन्द जी महाराज –

मुझे यह जान कर अिीव प्रसन्नाि हुई चक आप लोगों ंने आदरणीय स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज की 'हीरक जयन्ती' मनाने का िुभ संकल्प चकया है।

गुण-पूजा ही 'लोक-संग्रह' है। उसमें स्थूल दृचष्ट् से व्यक्ति का पूजन नयनगोिर होिा है, चकन्तु सूक्ष्म दृचष्ट् से यह व्यक्ति-पूजा नहीं, ं िाररत्र्य की पूजा, गुण-पूजा है। गुण-पूजा ही गुणों ंको प्राप्त करने का उपकरण है। चजस समाज अथवा राष्ट्र में गुण-पूजा नहीं ंहोिी अथापि् सुिीलिा का सत्कार नहीं ंहोिा, वह समाज अथवा राष्ट्र संस्कारहीन है। उसका उत्कषप कदाचप नहीं ंहो सकिा।

चजस प्रकार रत्न की परीक्षा सामान्य मनुष्य नहीं ंकर सकिा, कोई चवचिष्ट् मनुष्य-रत्नाकर ही कर सकिा है, उसी प्रकार सुिीलिा की परीक्षा भी सामान्य मनुष्य, सामान्य समाज अथवा सामान्य राष्ट्र नहीं ंकर सकिा। कोई एक सुिील मनुष्य, एक सुिील समाज अथवा कोई एक सुिील राष्ट्र ही कर सकिा है।

सन्त का पूजन सवेश्वर का ही पूजन है।

जलिी ज्योचि से ही ज्योचि को जलाया जा सकिा है।

सुिील सन्त जलिी हुई सत्य-ज्योचि है। उसी की कृपा से व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की ज्योचि जल उठिी है।

दीघापयुष्य हो सद्गुणी सन्त और दीघापयुष्य हो सद्गुण-पूजक समाज! समारोह की सफलिा िाहिा हाँ। हाचदपक िुभ-कामनाएँ।

योगिाायण, संथथापक,
श्री कायावरोहि जी िीथण सेवा
समाज बडौदा

'सवणभिू शहिे रिाः'

–श्री स्वामी गुरुिरिदास जी महाराज –

प्रायिे देव मुनयः स्वशवमुच्चिकामा।
मौनं िरच्चन्त शवजने न पराथणशनष्ठाः।।

-श्रीमद् भागवि : ७/९/४४

'मुक्ति की कामना के चलए ऋचष-मुचन लोग, चनजपन वन में, योग-मागप का अनुसरण करिे हैं; धारणा, ध्यान िथा समाचध लगा कर परमेश्वर को, परमपद को प्राप्त करिे हैं।' चकन्तु **'सवणभिू शहिे रिाः-**पराथप चनष्ठा समस्त सन्तों ंिथा ऋचष-मुचनयों ंमें भी नहीं ंपाई जािी। संसार में भोजन, वस्त्, स्वणप, भूचम िथा ियनागार दान करना उिने महत्त्व का नहीं ंहै, चजिना चक अज्ञान

से उन्मत्त, चवषय-वासना में आसि हुई इक्तियों ंको ज्ञान के माध्यम से सन्मागप में लगाना महत्त्वपूणप है। मनुष्य सब कुछ छोड सकिा है-भोजन, वस्त् का भी त्याग कर सकिा है, चकनुतु अपने स्वभाव को पररवचिपि करना अत्यन्त दुष्कर है। सन्त-महात्मा व्यक्ति के स्वभाव को, उसके हृदय को पररवचिपि कर दिे हैं।

स्वामी चववेकानन्द जी, स्वामी रामिीथप जी, श्री अरचवन्द िथा रमण महचषप जैसे चवद्वान् सन्तों ं ने भारिीय संसृकृचि को, अपने सनािन धमप को पाश्चात्य दिें ंमें फैलाया। **उसी परम्परा में श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज आये शजन्ोंनें भच्चि, ज्ञान िथा योग आशद पर अनेकों ं प्रामाशिक ग्रन् शलख कर शवश्व-ख्याशि प्राि की। अब उन्ीं ंके थथानापन्न, 'शदव्य जीवन संघ' के विणमान परमाध्यक्ष श्री स्वामी शिदानन्द जी हैं, जो अपने गुरुदेव के पद-शिह्ों ंपर लि कर, दि-शवदि में नयी िेना, आिा िथा शवश्वास का संिार कर रहे हैं।**

आप परम सन्त ही नहीं ंवरन् एक उि कोचट के चवद्वान् भी हैं। अंगरेजी में आपने अनेक पुस्तकें चलखी हैं, चजनका अनेक भाषाओं ंमें अनुवाद भी हो िुका है।

स्वामी चिदानन्द जी ने चनजपन वन में बैठ कर, एकान्त साधना के द्वारा मुक्ति प्राप्त करने की कामना को त्याग कर अपने **गुरुदेव की भाँशि सशक्रय हो कर अपने जीवन में सेवा को प्रथम थथान शदया है। उनका समस्त जीवन दूसरों ंके शलए अशपणि है- 'लोकाः समस्ताः सुच्चखनो भवनुतु '।**

उनके सम्पकण में आने से उनकी शवद्वत्ता, गम्भीरिा, सरलिा, शवनम्रिा िथा सादगी स्पष्ट् दीख पडिी है। यही एक सिे सन्त िथा ित्ववेत्ता के लक्षि हैं।

ऐसे सन्त संसार में शवरले ही शमलेंगे। २४ चसिम्बर को स्वामी चिदानन्द जी की 'हीरक जयन्ती' के अवसर पर मैं भारि साधु समाज िथा व्यक्तिगि रूप से अपनी हाचदपक िुभ-कामनाएँ भेजिा हाँ।

अध्यक्ष, भारि साधु समाज, नई शदल्ली

जीवन के दुगपम पथ पर संघषपरि पररश्रान्त पचथक के चलए ज्योचिमपय महान् व्यक्तियों ंका जीवन एवं उनके कायप अनवरि प्रेरणा एवं नविेना के स्थायी स्रोि हैं। सन्तों ं और ऋचषयों ं की दैनक्तन्दन प्रवृचत्तयाँ एवं चिक्षाप्रद सम्भाषण भ्रचमि पचथकों ंके चलए अिीव सहायक हैं।

-स्वामी शिदानन्द

स्वामी शिदानन्द जी: मेरी दृशष्ट् में

–श्री स्वामी आिप्रकिा जी महाराज-

परम श्रदे्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी से मेरा अनेक वषों का पररिय है। जब कभी मैंने आपसे सामाचजक कायों में सलाह एवं सहयोग लेना िाहा, आपने बडे उदार भाव से सहषप मुझे
महत्त्वपूणप परामिप एवं सहयोग चदया। अब िक के सम्पकप में जैसा महाराज जी को मैं समझ पाया हाँ, वह अत्यन्त महत्त्वपूणप है। वह अनेकचवध गुणों ंके धनी हैं। श्री स्वामी जी में अपने सद्गुरुदेव महाराज श्री स्वामी चिवानन्द जी के प्रचि अगाध श्रद्धा िथा समूपूणप समपपण के भाव है। महाराजश्री जब भी कुछ समाज-सेवा के कायप करिे हैं और उन कायों के चलए स्वामी जी की प्रिंसा की जािी है, िो महाराज जी िुरन्त बोल उठिे हैं, **'यह कायण करने की क्षमिा मुझमें नहीं ंहै वरन् यह सब सद्गुरुदेव महाराज की कृपा िथा आिीवाणद से ही सम्भव है।'** प्रते्येक कायप को सम्पन्न करने में स्वामी जी 'गुरु-कृपा' का अनुभव करिे हैं िथा किृपत्व के अहं से सदा रचहि रहिे हैं।

महाराजश्री चवनम्रिा की साक्षाि् मूचिप हैं। इिने बडे चवद्वान् और इिनी चविाल चवश्व चवख्याि संस्था के परमाध्यक्ष होिे हुए भी उनके व्यवहार में कहीं ंअहं की गंध हमें देखने को नहीं ंचमली। महाराज जी का स्वभाव अचि उदार है। जो भी उनसे चमलने आिा है, उसे पुस्तकें बााँटिे ही रहिे हैं। सबसे बडे प्यार और आत्मीयिा से चमलिे हैं। महाराज जी की वाणी में अचि सरलिा है। बडे प्यार से सबसे बोलिे हैं। स्वभाविीः लोगों ंका उनके प्रचि सहज आकषपण है। महाराजश्री भारिीय संसृ्कचि के सिे उपासक हैं, अनुयायी हैं। महाराजश्री का जीवन एक आदिप जीवन है। महाराज जी की गरीबों ंके प्रचि बडी ही सहानुभूचि है। गरीबों ंको सदा वस्त्, धन, औषध आचद प्रदान करिे रहिे हैं। हमारे 'आनन्द धाम आश्रम' के चनकट लक्ष्मणझूला में कुष्ठ रोचगयों ंकी सेवाथप महाराज जी ने एक औषधालय खोला है, चजसमें चनीःिुल्क उनकी सेवा होिी है। कोई भी गरीब उनसे जा कर चमले, उसके दुीःख-ददप को बडी सहानुभूचि से सुनिे हैं िथा उसकी नारायण भाव से कुछ न कुछ सेवा अवश्य ही करिे हैं।

स्वामी जी में जाचि आचद का भेदभाव नहीं ंहै। महात्मा गााँधी के जन्म-चदवस पर सभी हररजनों ंको सादर आमंचत्रि करके आप उनके स्वयं िरण धोिे हैं। अपने हाथों ंसे त्तखलािे हैं। उनकी जूठी पत्तल आप स्वयं उठािे हैं। सभी मनुष्यों ंमें महाराज जी साक्षाि् 'नारायण' की भावना रखिे हैं और नारायण-रूप समझ कर ही सबकी सेवा नम्रिा और पे्रमपूवपक करिे हैं। गरीब-अमीर सब महाराज जी की दृचष्ट् में एक हैं। महाराज जी का िरीर सदा समाज-सेवा में रि रहिा है। इत्तियों ंमें संयम है। हृदय में सबके प्रचि आत्मीयिा िथा गुरुदेव एवं भगवान् के प्रचि अगाध चवश्वास है। सन्तों ंऔर धमप-िास्त्ों ंके प्रचि पूणप श्रद्धा है। किपव्य के प्रचि चनष्ठा, 'सादा जीवन िथा उि चविार' का आदिप स्वामी जी में चवद्यमान है। सदा प्रसन्नचित्त रहना सहज स्वभाव है। हर

प्रकार की पररक्तस्थचि में सनुतुचलि रहना स्वामी जी के चलए सहज है। बालकोचिि चनश्छल एवं चनरचभमानिा का व्यवहार सभी के प्रचि है। मेरे प्रचि भी महाराज जी का सहज स्नेह है। स्वामी जी
का जीवन अहं, मद और वासना से मिु है। एक बार जो चमल लेिा है, उसे उनसे बार-बार चमलने की स्वाभाचवक इच्छा हो जािी है।

भगवान् से यही प्राथपना है चक महाराजश्री चिरायु रह कर इस धरिाल पर मानव समाज की
इसी प्रकार सेवा करिे रहें। महाराज जी सदा िरीर से चनरोग रहें।

संथथापक : शवश्व मानव सत्संग पररषद्
लक्ष्मिझूला, शटहरी गढ़वाल

श्रद्धा के सुमनन

– श्री स्वामी शदव्यानन्द जी महाराज, हररद्वार –

श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज शवश्व शवख्यािा महापुरुष हैं। आपका सौम्य स्वरूप,
स्वस्थ पिला िरीर, धीमी मीठी वाणी और सुमधुर स्वर आपके व्यक्तित्व के उज्वल अंग हैं। **कोई भी व्यच्चि जब एक बार आपके सम्पकण में आ जािा है,** िो **वह सदा के शलए आपका हो**
जािा है। यह आपमें एक िमत्कार है।

कचववर िुलसीदास जी की उक्ति है- **'प्रभुिा पाइ काशह मद नाहीं**?ं' अथापि्, जब प्रभुिा प्राप्त हो जािी है, िो कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं,ं चजसे अहंकार न हो जािा हो। **यह सत्य है,**

पर हमारे िररत्रनायक श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज इस शदिा में एक अपवाद हैं। आपमें अहंकार का लवलिे भी नहीं ंहै। सिे सन्त का यही एकमात्र लक्षि है। ऐसे सन्त-महात्मा आज-कल कम ही देखने को चमलिे हैं।

ब्रह्मलीन गुरुवयप श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज द्वारा संन्यास-दीक्षा ग्रहण करने के पूवप जब मैं 'चिवानन्द आश्रम' में एक भि व साधक के रूप में जाया करिा था, **उन शदनों ंश्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज 'शदव्य जीवन संघ' के महासशिव के पद पर आसीन थे। अिः इस नािे मुझे आपके साथ सत्संग करने का पयाणि अवसर शमल जािा था। घण्टों ंधमणिाा िाण हािी और आप अपने उपदिों ंएवं युच्चियों ंद्वारा मेरे संियों ंका सन्तोषपूण शनराकरि कर दिे थे। यह आप ही के सदुपदिों ंका सुफल था शक मैं कालान्तर में संन्यास ग्रहि कर इसी आश्रम में प्रवि पा सका िथा लगभग पााँ विषों िक महाराजश्री के शनकट रहने का सुअवसर प्राि कर सका।**

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का मेरे प्रचि भ्रािृभाव, समादर व स्नेह अगाध रहा है। इस सम्बि में मुझे एक घटना याद आ रही है चजसका उल्लेख कर देना यहााँ असंगि नहीं ंहोगा। बाि १९६५ की है जब स्वामी जी धमप-प्रिाराथप चवदि यात्रा पर थे। उन्होंने िबपन (साउथ अफ्रीका) से मेरे नाम एक पत्र भेजा। मेरी पुस्तकों ंके चवषय में उन्होंने बडा सन्तोष प्रकट चकया था िथा उन्हें मूल्यवान् बिाया। आज भी वह मेरी कचिपय पुस्तकों ंकी समालोिना के सन्दभप से मुझे आध्याक्तत्मक मागप में उत्साचहि करिे रहिे हैं।

अन्त में मैं महामाया भगविी राजराजेश्वरी से यही प्राथपना करिा हाँ चक वे उन्हें सुस्वास्थ्य और दीघापयु प्रदान करें िाचक उनके सदुपदिों ंद्वारा चवश्व लाभाक्तन्वि हािा रहे।

शिदानन्द महाराज के, युग-पद-पंकज मूाँय।
पुष्पांजशल अशपणि करूाँ, सादर िीष नवाय ।।

गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज का नाम असंख्य घरों ंमें चवख्याि है, जो आध्याक्तत्मक जगि् में आदिप िररत्र और चनष्काम सेवा का द्योिक बन गया है। स्वामी चिवानन्द जी ने मानविा की चनष्काम सेवा, भगवान् की पूजा व आराधना, चदव्य ज्ञान की प्राक्तप्त व ध्यान के अभ्यास िथा आत्म-साक्षात्कार द्वारा मुक्ति का उपदिे चदया।

-स्वामी शिदानन्द

एक अशद्वीय प्रकिा-स्तम्भ

–श्री स्वामी मनुवयण जी महाराज-

'चदव्य जीवन संघ' के संस्थापक-अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चि् परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज संस्था के परमाध्यक्ष िथा अपने गुरुदेव के चमिन के सुयोग्य पथ-प्रदिपक बन गये हैं।

प्रायीः देखने में आया है चक संस्था के प्रधान के अभाव में संस्था का वैभव भी समाप्त हो जािा है। कहीं–कहीं ंिो संस्था को बन्द हिो भी देखा गया है; चकन्तुु यहाँ क्तस्थचि दूसरी ही है। परम पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चि् भी 'चदव्य जीवन संघ' ने त्तक्ति अचजपि की है और अन्तरापष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक क्षेत्र में चवकास चकया है। गि बारह वषों से, श्री स्वामी चिदानन्द जी जब से परमाध्यक्ष बने हैं, 'चदव्य जीवन संघ' ने न केवल िहुाँमुखी प्रगचि की है, वरन् सभी क्षेत्रों ंमें अनेक उपलक्तब्धयााँ भी प्राप्त की है।

यद्यचप 'चदव्य जीवन संघ' परम पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी के समय में ही अन्तरापष्ट्रीय ख्याचि की संस्था बन गया था, िथाचप श्री स्वामी चिदानन्द जी ने संस्था के उद्देश्यों ंके प्रिाराथप अब िक चवदेिों ंकी अनेक बार लम्बी यात्राएँ कीं ंऔर इस प्रकार उन्होंने संघ को चवश्व के सभी भागों ंसे अत्यन्त पररचचि कराया। अथाचप् स्वामी जी महाराज ने चवदेिों ंमें भारिीय संसूकृचि के प्रिार-प्रसार के चलए चवलक्षण कायप चकये हैं।

परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज सदैव व्यस्त रहिे हैं। वह सदा पूवप से पचश्चम और उत्तर से दचक्षण आिौ-जािो चदखायी पडिे हैं। 'चदव्य जीवन संघ' से के उद्देश्यों ंके प्रिार-प्रसार में उन्होंने अपनी पूरी िक्ति लगा दी है। उनका उत्साह और लगन से पूररि प्रयत्न सदैव फलीभूि हुआ है। उन्होंने संघ के उद्देश्य िथा अपनी संसूकृचि के चलए भारि के दूर-दूरस्थ क्षेत्रों ंकी व्यापक यात्राएँ की हैं।

स्वामी जी ब्राह्ममुहिप से राचत्र में चवलम्ब िक कायपरि रहिे हैं। प्रिीः वह अपने पत्रों ंिक को स्वयं टाइप करिे हैं। यहााँ िक चक वायुयान, टेरन अथवा कार से यात्रा करिे समय भी वह कायप में व्यस्त रहिे हैं। उनके चलए प्रत्येक क्षण महत्त्वपूणप है। उनका पिला दुबला िरीर िक्ति का भण्डार है, जो चक िौबीसों ंघणे् कठोर उद्यम झेल सकने में सक्षम हैं। उनके पास अचद्विीय आत्म–क्ति है चजसके कारण वह इस सीमा िक कायप कर पािे हैं।

उनकी चवनम्रिा अिुलनीय है। उनके इसी गुण ने उन्हें प्रत्येक का चप्रयपात्र बना चदया है। **वह अिुलनीय गुिों ंके स्वामी हैं। वह स्वयं को सद्गुरुदेव महाराज का एक शवनिी 'सेवक' कहिे हैं।**

सद्गुरुदेव महाराज की िरह उन्होंनें भी सभी योगों ंका समन्वय चकया है एवं संस्था के हेिुक- 'सवप-धमप सम भाव' सभी धमों एवं सन्तों ंके प्रचि वह प्रेम और सम्मान के पक्ष का समथपन करिे हैं। वह स्वयं भी सबके प्रचि प्रेम और सहानुभूचि से ओि-प्रोि हैं िथा सत्याथप में चवश्व को व्यापक स्तर पर उन्नि बनाने के चलए उन्होंनें अपनी आत्मा को समचपपि कर रखा है। उन्होंनें दूसरों ंको वेदान्त की परम्परागि चिक्षा प्रदान करने के चलए स्वयं अपने अहं का पूणप रूप से दमन कर चदया है।

उनके इस 'हीरक जयन्ती' महोत्सव के अवसर पर मैं हाचदपक बधाई प्रेचषि करिा हाँ िथा परम चपिा परमात्मा प्राथपना करिा हाँ चक स्वामी जी को स्वास्थ्यप्रद दीघप आयुष्य प्रदान करें िथा वह परम पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के प्रकाि स्तम्भ बने रहें।

संथथापक, योग-साधन आश्रम,
अहमदाबाद

शवनय-प्रिीक

–श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज –

हमारे दिे में अनाचद काल से अविारी पुरुषों, ं चदव्य चवभूचियों ंिथा सन्त-महापुरुषों ंका एक चविेष पद्धचि से जन्म-चदवस मनाया जािा रहा है। उन जन्म-चदवसों ंमें, चविेषिः षष्ट्यब्दपूचिप (६० वीं ंजयन्ती) को लोग चविेष रूप से मनािे हैं। इसका अथप यह है चक आपने इन साठ वषों
में कैसा जीवन यापन चकया? स्वयं के चलए और संसार के चलए क्या चकया? इसका थोडा चसंहावलोकन करके िथा जो कुछ िेष समय रह गया है, उसे और भी सुिारू रूप से अपने िथालोक-कल्याण में चबिाने के चलए स्मरण करने का प्रयास करना है।

हम चजस महापुरुष की 'हीरक जयन्ती' मनाने जा रहे हैं, वह सन्त-महापुरुष हैं। सन्त-महापुरुष अपनी 'जयन्ती' मनाना नहीं ंािहिे, लेचकन लोक-कल्याण हेिु िथा भिों ंकी श्रद्धा और भक्ति बढ़ाने के चलए ही जयक्तन्तयाँ मनायी जािी हैं। प्रश्न उठिा है, सन्त- महापुरुष कैसे होिे हैं?

ान्िा महान्तो शनवसच्चन्त सन्तो वसन्तवल्लोक शहिं िरन्तः।
िीणाः स्वयं भीमभविाणवं जनाः नहेिुनान्यानशप िारयन्तः।।

'जैसे वसन्त ऋिु सुगि, मन्द वायु से, नव कोमल मृदु पत्र-पुष्प-लिाओं ंसे चवश्व को िक्तन्त िथा आनन्द प्रदान करिी है, उसी प्रकार सन्त-महापुरुष भयंकर संसार रूपी सागर को स्वयं पार करके अपनी अहेिुकी कृपा से इस संसार-सागर में िूबी हुई जनिा को पार करके िक्तन्त िथा परमानन्द प्रदान करिे हैं।' उन्हीं ंउिकोचट के महापुरुषों ंमें हमारे परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज हैं। हम सब जानिे हैं चक वह चवनम्र स्वभाव वाले, प्रेम-स्वरूप िथा ान्ति-मूचिप हैं। **उनके पास जो भी जाये, छोटे-बडे का भेद-भाव भूल कर सवणप्रथम स्वयं ही प्रिाम करिे हैं।**

फरवरी '६८ में पूज्य स्वामी जी के साथ मैं हैदराबाद गया था। वहाँ श्रीमिी रानी लचलिा देवी के घर पूज्य स्वामी जी महाराज की अध्यक्षिा में 'श्री राम सप्ताह' िथा प्रिीः सायं प्रविन का कायपक्रम था। उस कायपक्रम में **गायत्री पीठाशधपशि श्री शवद्यािंकर भारिी स्वामी भी आये थे।** अपने एक प्रविन के प्रारम्भ में उन्होंने कहा- "श्री स्वामी चिदानन्द जी चवनय के स्वरूप हैं। वह चवनय की मूचिप हैं। एक बडी संस्था के परमाध्यक्ष होिे हुए भी उनमें अहंकार का लेि भी नहीं ंहै। वह पहले सबको प्रणाम करिे हैं। हम उनकी िरह नहीं ंकर सकिे। सबसे प्रेमपूवपक वािापलाप करिे हैं। चजन्होंने ऐसे उत्तम चिष्य को पाया, वह श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज धन्य हैं। श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज भी चवलक्षण मूचिप थे। जीवन काल में ही मैंने उनका प्रभाव देखा था। श्री स्वामी चिदानन्द जी और अन्य चिष्यों ंको चवदेि भेज कर उन्होंने भारिीय संस्कृचि का खूब प्रिार कराया। श्री स्वामी चिदानन्द जी की प्रिंसा मैंने चविेष रूप से सुनी। धन्य है 'चदव्य जीवन संघ' चजसने एक 'चवनम्र मूचिप' को परमाध्यक्ष के रूप में प्राप्त चकया।" ये िब्द उन्होंने एक बृहद् सभा में कहे थे।

उनकी 'हीरक जयन्ती' के िुभ अवसर पर हम भगवान् से और सद्गुरुदेव से प्राथपना करिे हैं चक पूज्य श्री स्वामी जी महाराज को पूणप आयुष्य िथा िुचष्ट, पुचष्ट प्रदान करें; िाचक वे और भी लोक-कल्याण करने में समथप हो सकें।

-शिवानन्दाश्रम, ऋशषकेि

स्वामी शिदानन्द : अलौशकक गुरु-भच्चि के धनी

– श्री स्वामी शवषुणिुरिानन्द मिाा जी-

धमपिास्त्रों ंमें गायी हुई गुरु-भक्ति की मचहमा सवपचवचदि है। गुरु को ब्रह्मा, चवषुणु, महिे थिा साक्षिात् परम ब्रह्म के समान बिाया है। सन्त कबीर ने िो गुरु को ईश्वर से भी बडा बिाया है–

गुरु गोशवन्द दोऊ खडे काके लागू पाँय ।
बशलहारी गुरु आपकी गोशवन्द शदये बिाय ।।

गुरु-प्रदत्त ज्ञान और मागपदिपन से ही चिष्य परमात्म-प्राक्तप्त का अचधकारी बनिा है- '**शबन गुरु ज्ञान न होय गोसाईं।ं**'

सभी महान् अिायों, ऋचष-मुचनयों,ं महात्माओं ंिथा अविारों ंिक ने गुरु–िरणों ंका आश्रय ले कर कठोर अनुिासन एवं िपश्चयाप द्वारा ब्रह्म-चवद्या सीखी और गुरु-भक्ति के बल से ही वे स्वयं गुरु-पद के अचधकारी बने। भगवान् श्री कृष्ण ने अपने गुरु सान्दीपचन ऋचष के िरणों ंका आश्रय चलया। श्री राम को गुरु वचसष्ठ जी ने उपदेि चदया। स्वामी जी महाराज ने गुरुदेव चिवानन्द जी से िक्ति प्राप्त की और अब अनन्य गुरु-भक्ति के बल से उस प्रकाि को अक्तखल चवश्व में प्रज्ज्वचलि कर रहे हैं। सन् १९४३ में स्वामी जी ने गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी के िरणों ंमें आश्रय चलया था। िभी से परोक्ष रूप में गुरु-भक्ति का अनवरि स्रोि उनके जीवन में संिररि होिा रहा।

सन् १९४९ में उन्ोंनें संन्यास की दीक्षा ली और गुरुदेव की महासमाचध िक उनके रंग में रंगे रह कर चदव्य जीवन के सन्देि सुने। गुरु-भक्ति के धनी स्वामी चिदानन्द जी चवश्व-भ्रमण द्वारा अपने इस अलौचकक धन को देि-चवदेिों ंमें चवकीणप करिे हुए अक्तखल मानविा को त्राण दे रहे हैं।

चदव्यत्व के प्रिीक स्वामी चिदानन्द जी महाराज का मानस जाज्वल्यमान गुरु-भक्ति से ऐसा ओि-प्रोि है मानो उनके अक्तस्तत्व के कण-कण और रग-रग में गुरु की ज्योचि प्रदीप्त है। जब वह स्नेहमयी दृचष्ट से देखिे हैं िो मानो गुरु की िक्ति उनके नेत्रों ंसे चवकीणप होिी है। जब भी ं

को चदव्य वाणी से आिीष दि हैं िो गुरुदेव के नाम पर और प्रविन दि हैं िो बारम्बार श्रोिाओं ंको स्मरण करिो रहिे हैं- 'मैं नहीं ंबोल रहा हाँ, मेरे कण्ठ के माध्यम से गुरुदेव की वाणी प्रसुफुचटि हो रही है।' यह है सिी गुरु-भक्ति चजसके कारण पूज्य गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज के पाचथपव िरीर के न रहने पर भी आश्रम एवं 'चदव्य जीवन संघ' की चवश्व-व्यापी िाखाओं ंके सभी कायप-कलापों ंमें सचन्नचहि आपकी आत्मा के प्रकाि से उत्तरोत्तर चदव्य भावों ंका अचधक प्रिार और प्रसार हो रहा है िथा पीचडि मानविा की सेवा हो रही है।

कुष्ठ रोचगयों ंकी सेवा में प्रबल रुचि होना उनकी चनष्काम सेवा-वृचत्त का ज्वलन्त प्रमाण है। स्वामी जी में देवत्व और मानवत्व का अपूवप सक्तम्मश्रण उनकी अलौचकक गुरु-भक्ति का ही प्रसाद है।

हमारी परम चपिा परमात्मा से प्राथपना है चक स्वामी जी महाराज षष्ट्यब्पूचिप समारोह' के मंगलमय अवसर पर गुरु-भक्ति से प्राप्त चदव्य आक्तत्मक िक्ति का अपने भिों ंमें संिार करिे हुए भारि की अध्यात्म-चनचध से अनन्त काल िक चवश्व-कल्याण करिे रहें।

****

उनकी ज्योचि से ज्योचि

–श्री स्वामी राधाशप्रयानन्द मिा जी, श्रीधाम-

िाश्वि सत्य है चक सूयोदय होिे ही चिचमर चवक्तच्छन्न हो जािा है। सूयप स्वभाविः समस्त प्राचण-जगि्, वनस्पचि-जगि्, समग्र सृचष्ट् का जीवनदायक है, प्राणपोषक है, नेत्रों ंकी ज्योचि है, आचद-आचद। जो वस्तुएँ घने अंिकार के आवरण में अस्पष्ट् होिी हैं, चजनका नाम-रूप, अक्तस्तत्व अज्ञाि प्रिीि होिा है, वे सब सूयप के प्रकाि में प्रकाचिि हो कर प्रकट हो जािी हैं।

संसार के पूवप में अवक्तस्थि पुण्यमय देि भारिवषप के आध्याक्तत्मक क्षेत्र में उचदि एवं प्रदीप्त हुआ सूयप-स्वामी चिवानन्द सरस्विी-अज्ञानांिकार- नािक, प्राण-संिारक, आनन्द एवं प्रफुल्लिा-प्रदायक, समभाव दीपक एवं चदव्य जीवन संिालक के रूप में। चिवानन्द-सूयप की ज्ञान-ज्योचि के ज्योचिि होिे ही मानव-हृदय में दैवी सम्पदा रूपी प्रकाि का अविरण होिा है और आसुरी सम्पदा रूपी िचमस्रा चवनष्ट् हो जािी है। भारि को ही नहीं, ंअचपिु समूिे चवश्व को चनत्य चिवानन्द सूयप, चनत्य आध्याक्तत्मक ज्ञान-प्रकाि से, प्रकाचिि कर रहे हैं।

चनचवपवाद िथ्य है चक ििि सूयप के प्रकाि से प्रकाचिि होिा है। िि-प्रकाि का मूल स्रोि है सूयप। िि अपने स्रोि के समक्ष िान्त, चवनीि एवं सौम्य है। ठीक वैसे ही चिदानन्दिि– का स्रोि है चिवानन्द सूयप। चिदानन्द-ज्योत्स्ना पररव्याप्त है चनत्य पूचणपमा की िि–क्तिका सम िििचदपक्। चिदानन्दिि– की

र्ीिलि, ािान्त, सुखदायक ज्योत्स्ना में स्नान कर समस्त प्राचण-वगप के मन-मक्तन्दर आध्याक्तत्मक प्रकाि की र्ीिील चकरणों ंद्वारा पररिान्त एवं चनमपल हो जािे हैं, जो र्ीसि सूमृचि चदलािी हैं चिवानन्द-सूयप की।

र्ी आचद काल से अपनी पररसीमा में सीचमि है, मयापदा पालन में संक्तस्थि है। नि है वह सदैव सूयप के समक्ष । ठीक उसी प्रकार चिदानन्द र्ीि चवनिी भाव से आज्ञाकारी अनुयायी, स्वाचम-भि सेवक की भााँचि, चिवानन्द-सूयप-प्रदत्त चदव्य ज्ञान प्रकाि द्वारा आनन्द, र्ीिीलिा एवं अमृि वृचष्ट कर रहा है िाहुाँ ओर-भव-जीवों ंके उद्धारक, नवजीवन प्रदायक, मानविा के उन्नायक, लोकोपकारक के रूप में। चकन्तु चिदानन्दर्ी– पूणपिया र्ीसे है अपनी पररसीमा एवं मयापदा के प्रचि चवनि है चिवानन्द-सूयप के समुमुख। चिवानन्द-सूयप प्रचिचबक्तम्बि हो रहा है चिदानन्दर्ी– में। चिदानन्द उद्घोचषि करिे हैं-

'मेरा मुझमें कुछ नहीं,ं जो कुछ है सो िोर।'

उल्लेखनीय है, अनुकरणीय है, चकन्तु अकथनीय है चिदानन्द–ररत्र!

आइए! चनज जीवन धन्य बनाएाँ-चनमज्जन कर चिवानन्द-सूयप-प्रकाि में! अवगाहन कर चिदानन्दर्ी–ि–क्तिका में।

जय चिवानन्द! जय चिदानन्द !!

शिवानन्द आश्रम, शदव्य जीवन संघ
शिवानन्दनगर (उत्तराखण्ड)

शवलक्षि व्यच्चित्व

– श्री स्वामी याज्ञवल्क्यानन्द जी महाराज-

परम पूज्य गुरुदेव के आदरणीय चिष्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को भक्तिभाव-सुमन अचपपि करना हमें अचि चप्रय होगा।

अनुमान करो, कोई व्यक्ति चकसी बालक को यचद पूछे, "क्ा िुम मुझे बिा सकोगे चक ईश्वर कैसा है?" ि–ब वह बालक क्ा कहेगा? उसी प्रकार मैं स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चवषय में क्ा कह सकिा हाँ? कुछ कहने का प्रयास करना भी व्यथप है। चकन्तु मानव अहंकारी है और कोई-न-कोई बाि कहना िाहेगा। अिः मैं भी आपके समुमुख स्वामी जी की कुछ चविेषिाएाँ चजिना संभव हो सकेगा उिना संचक्षप्त रूप में कहाँगा। अनेक वषों पूवप, हम गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी के

साथ कुटीर में बैठे थे और िाय-पान कर रहे थे। संध्या का समय था। उन चदनों ंमें स्वामी जी की कुटीर में चबजली नहीं ंथी। स्वामी चिदानन्द जी गंगा स्नान हेिु घाट की ओर जा रहे थे।
क्ा आप जानिे हैं चक उनके िरीर पर चकिने वस्त् थे? एकमात्र वस्त् गंगाजी में नहाने के चलए और केवल एक वस्त् स्नान-पश्चाि् धारण करने के चलए। िभी गुरुदेव ने मुझसे पूछा, "क्ा आप
इस व्यक्ति से पररचिि हैं?" मैंने कहा, "आप मेरी हाँसी उडा रहे हैं। पूरे आश्रम में स्वामी
चिदानन्द जी से कौन पररचिि नहीं?ं" स्वामी जी ने नेत्र एक चमनट बंद चकए और बोले, "नहीं,ं नहीं,ं आप उन्ें नहीं ंजानिे, कदाचिि् ही कोई उन्ें जानिा है। वे चकसी की भी कल्पना से कहीं ंअचधक महान् हैं। आपकी बुक्तद्ध उनकी महानिा ग्रहण नहीं ंकर पाएगी। वे इिने महान् व्यक्ति हैं।
चकनु्तु मैं उनकी चसक्तद्धिा को चसद्ध करने यहााँ आया हाँ।" वास्तव में ये िब् गुरुदेव ने वषप
१९५६/१९५७ में कहे थे। थोडे चमनटों ंपश्चाि् कुछ सैन्य अचधकारी गुरुदेव के दिपनाथप आये। कुछ
ही

क्षणों ंमें हाथ में एक फाइल चलए स्वामी कृष्णानन्द जी आये। अचधकारी बैठे थे और स्वामी कृष्णानन्द जी खडे थे। इिने में गुरुदेव ने कहा," कृष्णानन्द जी, इन सैन्य अचधकाररयों ंको चदव्य जीवन के चवषय में दस चमनट में कुछ बिाओ।" जैसे ही स्वामी जी ने यह कहा, कृष्णानन्द जी ने कहना प्रारम्भ चकया और दस चमनटों ंमें ही उन्ोंने अपना विव्य समाप्त कर चदया। उनके िले जाने के पश्चाि् गुरुदेव ने अचधकाररयों ंसे कहा, "मानो िंकरािायप जी ने कृष्णानन्द के रूप में पुनीः जन्म चलया हो ।" गुरुदेव की अपने चिष्यों ंके प्रचि यही संकल्पना अथवा धारणा थी। मैंने वसु्तिीः ऐसे गुरु नहीं ंदेखे जो अपने चिष्यों ंकी प्रिंसा करें। वे आत्मश्लाघा कर सकिे हैं। परनु्तु कदाचिि् ही अपने चिष्यों ंकी प्रिंसा करें।

दूसरी एक घटना है चक गुरुदेव की महासमाचध के पश्चाि् स्वामी जी सवपसम्मचि से परमाध्यक्ष मनोनीि चकए गए। चिवराचत्र, जो उनके परमाध्यक्ष के पद पर आसीन होने से पहले थी, को मैंने स्वामी जी से पूछा, नीलकंठ महादेव के दिपन हेिु जाना उन्ें अनुकूल रहेगा क्ा? वास्तव में वह चदन चिवराचत्र के दो–िीन चदन पूवप का था। उन्ोंने मुझे लमे्ब मागप से जाने के चलए बिाया और कहा चक वे थोडे समय पश्चाि् प्रस्थान करेंगे। इसचलए हमने प्रािीःकाल में ही प्रस्थान चकया िथा मध्याह्न के बारह बजे वहााँ पहुाँचे। इिने में स्वामी जी भी वहााँ पहुाँच गये। अत्यचधक िीि का अनुभव हो रहा था जैसा चक चिवराचत्र-पूवप होिा है। हमने राचत्र वहााँ व्यिीि की और ब्राह्ममुहूिप में स्वामी जी ने हमें पूछा, "आप सब स्नान करेंगे?" मैंने कहा, "स्वामी जी, बहुि ठण्ढ है इस कारण िचलए, हम आश्रम को लौटेंगे और चफर वहीं ंस्नान करेंगे।" उन्ोंने कुछ नहीं ंकहा। आधे घंटे में स्वामी जी ने स्नान कर चलया और हमारी ओर आये। जैसे ही वे हमारे पास से गुजरे, उन्ोंने मंद क्तस्मि चकया। उस क्तस्मि ने हमें िक्ति और प्रेरणा दी और हमने भी स्नान चकया, पश्चाि् मध्याह्न भोजन भी चकया और सब िैयार हो गये। एक हररजन, जो मंचदर को बुहारिा था, उसको स्वच्छ करिा था, बाहर खडा था। स्वामी जी ने मुझसे पूछा, "मेरी जेब में चकिने पैसे हैं?" मेरे पास चजिने भी थे, उिने मैंने एक प्लेट में रखे। स्वामी जी बाहर गये और उस प्लेट को हररजन के समु्मख रखकर उसे प्रणाम चकया। वे जब वापस आए िब उन्ोंने मुझे कहा, "वह महान् साधक है।"

चकसी और अवसर पर हम आश्रम गये थे और पावपिी कुटीर में ठहरे थे। स्वामी जी प्रायीः अपराह्न में सैर करने (घूमने) जािे थे। एक चदन हम वहााँ बैठे थे और वे हमारे पास से मुस्करािे

हुए चनकल गये। मुझे ज्ञाि था चक स्वामी जी जब सैर को चनकलिे थे िब कोई उनके साथ हो,
यह उन्हें पसंद नहीं ंथा, इसचलए मैं िांि रहा। लगभग आधे घंटे के पश्चाि् वे वापस आये और बोले, "िाक्टर जी, हम सैर को जाएँगे?" सामान्यिया, वे इस प्रकार नहीं ंकहिे, इसचलए मैंने
चविार चकया चक वे मुझसे कोई बाि करना िाहिे हैं अथवा उन्हें मुझसे कोई काम होगा, अिः मैं
उनके साथ गया। जब हम मुख्य मागप पर पहुँिे िब मैंने देखा चक एक थोडे से बडे कद के श्वान (कुत्ते) को एक टरक ने टक्कर लगायी थी। स्वामी जी श्वान को पहले ही सडक की एक ओर ले
गये थे, उसके ऊपर जल चछडका था और उसके िारों ंओर पत्थर का घेरा बनाया था चजससे उसे
कोई पुनः कुिल न दे। इिना सब करने के पश्चाि् ही वे मुझे बुलाने आए थे। इसी बीि पूवप ही,
उन्होंने चकसी को, नागराजन जी (स्वामी चवमलानन्द जी) को बुलाने के चलए भेज चदया था। वे
उस समय स्वामी जी के सचिव के रूप में कायप कर रहे थे। श्वान अभी भी जीचवि था परन्तु
उसकी पीठ टूट गयी थी, इसचलए वह चहलने-िुलने की कोई िेष्टा नहीं ंकर पा रहा था। मैंने स्वामी जी को कहा चक मैं मानव-चिचकत्सक हूँ, श्वान के उपिार का मुझे ज्ञान नहीं ंहै। श्वान
गंभीर रूप से जख्मी हुआ था इस कारण हम चकसी पिु-चिचकत्सा के िल्यचक्रया चनष्णाि का परामिप ले सकिे हैं। उसी दौरान नागराजन जी वहाँ आ पहुँिे। स्वामी जी ने उनके कक्ष में
चजिना भी दूध है, उसको लाने को कहा; दूध आने पर उन्होंने श्वान को दूध चपलाया और कहा,
"नागराजन जी, हमें श्वान को पिु चिचकत्सालय में ले जाना िाचहए।" नागराजन जी ने उन्हें कहा
चक पिु- चिचकत्सालय में जो श्वान पालिू या घरेलु न हो उस श्वान को भिी नहीं ंकरिे। स्वामी जी
ने कहा, "उन्हें कहो चक यह स्वामी जी का अपना श्वान है िथा उसके उपिार का खिप वे ही करेंगे।" श्वान की दूसरे चदन मृत्यु हो गयी, चकन्तु वह संयोग ही था। ये सब घटनाएँ उनके
व्यक्तित्व के चवचिष्ट गुणों ंकी कुछ झलक चदखािी हैं।

मैं एक अंचिम घटना बिाना िाहूंगा। बोिप ऑफ टरस्टीज (न्यासी मंिल) ने वषप १९६३ में
स्वामी जी का चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष के पद पर सवपसम्मचि से ियन चकया था। चकन्तु,
स्वामी जी ने कहा चक उनको केदारनाथ भगवान् के अनुमोदन की आवश्यकिा थी। "मेरी आकांक्षा
भगवान् केदारनाथ जी के िरणों ंमें बैठकर अंचिम चनणपय लेने की है।" अपने मन की यही बाि
उन्होंने मुझे कही। इसचलए वे केदारनाथ गये; वापस आये परन्तु आश्रम में चकसी को ज्ञाि नहीं ंथा
चक वहाँ क्या हुआ। थोडे समय पश्चाि्, मैं बद्रीनाथ-केदारनाथ की यात्रा को प्रस्थान करने वाली
मंिली का एक प्रचिभागी था। मैंने स्वामी जी को, हमें एक संदेि देने की प्राथपना की, चजसे हम
प्रचिचदन प्रािः ही, टेप-ररकािपर पर बजा सकें चक चजससे याचत्रयों ंको सामर्थ्प और प्रेरणा चमले।
उन्होंने मुझे टेप ररकािपर उनके पास छोड जाने को कहा, चजससे वे संदेि को बाद में ररकािप
कर सकें। हमने कैसेट यात्रा मागप में बजाया। उनके परामिप के अचिररि उनके एक चनदेि
आदि ने मेरा ध्यान आकचषपि कर चलया। "केदारनाथ में श्री चिवारी नामक एक व्यक्ति हैं; उन्होंने
इस िरीर की उत्तम सेवा की, उनके यहाँ ठहरना।" बस, इिना ही उन्होंने बिाया था। जब हम
केदारनाथ पहुँिे, हमने उस व्यक्ति को खोज चलया और उनके साथ ठहरने का प्रबंध कर चलया।
मैंने उन्हें, स्वामी जी ने चकस कारण आपका उल्लेख चकया, इस चवषय में पूछा। उन्होंने इस
चवषय में अपनी अज्ञानिा िो जिलायी चकन्तु कुछ समय सोिने के पश्चाि् उन्होंने बिाया चक थोिे
चदन पूवप एक संन्यासी यहाँ आये थे; चकन्तु वे देर से आये थे। पूजा पहले ही समाप्त हो िुकी थी
और हर व्यक्ति काम से चनवृत्त हो कर िला गया था। चकसी काम से हाथ में टािप चलए मैं बाहर
चनकला। टािप के सहारे मैंने देखा चक कोई

व्यक्ति वहााँ बैठा था। चहमवषाप हो रही थी। उस पर से बफप चनकालने के पश्चि् मुझे ज्ञिि
हुआ चक वह एक संन्यासी था। बडी कचठनाई से मैं उनें् अपने चनवासस्थान पर ले आया और
उनकी सेवा की। अगले चदन वे लौट गए। उन्ोंनें यह नहीं ंबिाया चक वे कौन थे, चकन्तु केदारनाथ भगवान् के श्रीचरणों
ंमें पहुाँिने की उनकी दृढ़प्रचिज्ञा, उनके कष्ट्-पीडा िथा उनके
संकल्प के साक्षी हम हो सके हैं।

इस प्रकार की घटनाएाँ अनेक हैं, परन्तु उनके द्वारा हम स्वामी जी की महानिा का कुछ
ही ज्ञान प्राप्त कर सके हैं।

वीरनगर, गुजराि

ॐ

जो स्वामी चिवानन्द जी के बहुि चनकट सम्पकप में आये, उन्ोंनें देखा चक स्वामी जी एक ऐसे अलौचकक गुण से सम्पन्न हैं जो बहुि खोजने पर भी नहीं ं चमल पािा। अपने प्रचि चकये गये गम्भीर अपराधों ं को भी वे िीघ्र भूल जािे हैं। िथाचप प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से की गयी उनकी सेवा को
हृदय में सदैव साँजोये रखिे हैं। भूलो और क्षमा करो' चसद्धान्त उपदेि के चलए सरल है; चकन्तु
चवरली ही कोई ऐसी महान् आत्मा पायी जािी है जो इस गुण को सहज आचरण में लायी हो। यह
गुण मैंने इस सन्त में (गुरुदेव में) पराकाष्ठा िक पहुाँिा हुआ पाया है।

मेरा अशभन**न्द* न ल्ो

उदारिा और परोपकार को अचधक महत्त्व देिे हुए वह कभी थकिे नहीं।ं पूजा-भाव से चकया
गया एकमात्र यह कायप ही लक्ष्य प्राक्तप्त में सहायक होिा है। गुरुदेव के चवचार से यह साधन और
साध्य दोनों ंही है। यहााँ इससे व्यक्ति अनेक बार इस पररणाम पर पहुाँचिा है चक स्वामी जी का प्रमुख
उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार- प्राप्त्यथप चनष्काम सेवा को चनश्चयात्मक पथ बनाना है। चनकट सम्पकप में आने
वाले व्यक्तियों ंका यह अचभमि है चक इस युग की महान् पूजा के रूप में चनष्काम सेवा के चसद्धान्तों ं
को प्रचिष्ठाचपि करना ही स्वामी जी के जीवन का प्रमुख लक्ष्य है।

- स्वामी शिदानन्द

– श्री स्वामी शदव्यानन्दसरस्विी, ऊधमशसंहनगर –

(श्री कुाँवरबहादुरशसंह , ऊधमशसंहनगर)

मेरा अचभनन्दन लो हे चहमचगरर के वासी !
श्रद्धाके इनसुमनों ंकोदीरणिरणमें ,
हाथ गहो जन-जन के िुम भव-चसिु–रण में ,

कमप-अकमप-चवकमप-भेद-द्रष्टा संन्यासी!!

याज्ञवल्क्य िंकर के िुम अचि भव्य संस्करण,
आप्तकाम िुम, सोम-पान से िृप्त िीि-पचि,
आत्मक्रिी, व्यापार िुम्हारा मात्र आत्म-रचि,
दि-दि के, चदिा-चदिा के िुम आकषपण।।

िुमि समथप हो स्वणप-पात्र के अनावरण में,
प्रकृचि-नृत्य चनीःोंषि िुम्हारे समुमुख यचिवर,
मधु-चवद्या-चनष्णाि, िुम्हारी कीचिप अनश्वर,
समदिी िीिोंप, सुख-दुीःख, जन्म-मरण में ।।।

यह व्यक्तित्व िुम्हारा बहुआयामी अप्रचिम,
ईसा और िथागि की करुणा के चनझपर,
चकनुतु साथ ही अनुचद्वि मन, अचविलप्रस्तर,
चनरासि से ही चमलिा है स्नेह अकृचत्रम।।

रिण-स्पिप िुम्हारा िीथापटन से पावन,
िुमको देखा, िन-मन के सब कलुष धुल गये,
आज अयाचिि ही िीि- वरदान चमल गये,
हुए अविररि नयनों ंके समुमुख 'नारायि।'
मेरा अशभनन्दन लो...!

***

शिदानन्द-हृदया

– श्री ए. के. शसन्हा –

हम सबके अचि चप्रय चिदानन्द जी से चमलने से पूवप, िीस-वषीय आयु में ही जो जीवनुमुि होने हेिु संसार-त्याग कर रहा हो, इस प्रकार के चकसी भी युवक से मैं पररचिि नहीं ंथा। यह सामान्यिया सहज ही देखने में नहीं ंआिा चक श्रीमंिमिा-चपिा द्वारा संवचधपि िथा ईसाई महाचवद्यालय में चिचक्षि एक युवक स्नािक, चववाह कर गृहस्थाश्रम में त्तस्थर होने की अपेक्षा यथाथप रूप में संन्यासी बन रहा हो। **वे संन्यासी बने। उनके शलए एक श्वान िथा एक िण्डाल उिने ही प्रेम पात्र हैं शजिने शक एक राजकुमार या पच्चण्डि!** सामान्य नागररक से घृणा प्राप्त करने वाला कुष्ठरोगी उनकी स्नेहपूणप सेवा पर अचधकार रखिा है। **स्वामी शिदानन्द जी शकसी भी कुष्ठरोगी के घावों ंको उिनी ही सिकिा और सावधानीपूवणक स्वच्छ करेंगे शजिने ध्यान और शिन्तापूवणक शवश्व की सवोत्तम पररिाररका शकसी सम्राट् की सेवा करेगी।** उनकी चवनम्रिा, त्त्विमीमांसा के उनके द्वारा चदये गये उत्तरों ंके समान ही चप्रयकर और आकषपक है। **पटना रोटरी क्लब में, परम पूज्य गुरुदेव के रोटरी-सदस्यों ंको शकये गये उद्बोधन पश्चाि् शवशभन्न वगणसमुदाय के बुच्चद्धजीशवयों ंद्वारा रखे गये प्रश्नों ंके उत्तर परम पूज्य गुरुदेव के आदेिानुसार स्वामी शिदानन्द जी द्वारा अशि शवस्मयजनक प्रांजलिा से शदये गये। प्रश्नोत्तर के उस कायणक्रम**

की कायणवाही में प्रशिभागी उि न्यायालय के न्यायाधिीशों ंिथा वकीलों ंको, उनके द्वारा शदये गये उत्तरों ंकी त्पिरिा, सम्पन्निा और शसद्धिा ने प्रभाशवि शकया। सवणत्र, उन्हें प्रेम प्रिा हिा है, इसमें कोई आश्चयण नहीं।ं मैं उनके पररिय से स्वयं को धन्य मानिा हूँ। प्रभु कृपा और आिीवापद उन पर हों।ं मानव-जाचि की उन्नचि के उनके कायप हिु, विपमान िरीर में वे िि वर्षों से भी अचधक आयुष्मान् हों।ं

सेवा-शनवृत्त पुशलस इंस्पैक्टर जनरल
पटना

आवरि मुच्चि

आत्म-साक्षात्कार का अथप उस प्रभु के साक्षात्कार से है, जो आपके वास्तचवक स्वरूप, आपके अपने चनज स्वरूप के रूप में आपकी हृदय गुहा में उद्भाचसि हो रहा है। यह आपकी िाश्वि चदव्य पहिान है जो इस अस्थाई, क्षण-भंगुर और पररविपनिील मानवीय पहिान से परे है, क्योंचक यह मानवीय स्वरूप िो व्यावहाररक सत्ता मात्र है जो केवल प्रचिभाचसि हो रहा है। आपकी वास्तचवक पहिान इस अस्थाई स्वरूप के निी चछप कर रह गयी है। चकन्तु आपकी वास्तचवक पहिान के ऊपर यह अस्थाई स्वरूप का आवरण चकसी भी रूप में क्यों ंन चवद्यमान हो, इसे धीरे-धीरे एक िरफ हटाना ही पडेगा, इसका बचहष्कार करके इसके िीि में जाना ही होगा।

-स्वामी शिदानन्द

चदव्य जीवन का कोहनूर

– शिवानन्द श्रीशनवासन, मद्रास –

स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जन्मचदन समारोह के अचि सुखद और स्मरणीय अवसर पर मैं दैवी प्रयोजन िथा पीचडि मानव-जाचि के चलए उनकी अमूल्य सेवाओं ंको अपनी चवनम्र पुष्पांजचल देना िाहिा हूँ। मैं, अब गुरुमहाराज स्वामी चिवानन्द जी और स्वामी वेंकटेिानन्द जी द्वारा, स्वामी चिदानन्द जी महाराज चवषयक कहे गये िब्दों ंको यहाँ उद्धृि करिा हूँ।

गुरुमहाराज कहिे हैं, "स्वामी चिदानन्द जी, चमिन के कोहनूर हैं। आप सबको उनके साथ अपने गुरु के अनुरूप व्यवहार करना िाचहए। वास्तव में, मैं भी उन्हें अपने गुरु समान सम्मान देिा हूँ। मैंने उनसे अगचणि पाठ सीखे हैं। वे मुझे चप्रय प हैं। मैं उनको पूजनीय समझिा हूँ। उनका ज्ञान बृहि है। उनका चववेक यथाथप में अन्तः-प्रेररि और स्वानुभूि है। उनका सुस्वभाव अनुपम है। उनका हृदय अचि चविाल िथा उनकी करुणा अचद्विीय है। आप सबको उनसे चिक्षा प्राप्त करनी िाचहए, िब ही आपमें सुधार हो कर आपका चवकास और ऊधीकरण होगा।"

स्वामी वेंकटेिानन्द जी, स्वामी चिदानन्द जी चवषयक स्व-चलच्खि संचक्षप्त जीवन रेखाचित्र में चलखिे हैं, **"अलौशकक िथा प्रशिभािाली आभापूण रंग शबखेरने वाले शविुद्ध िथा पावन शप्रज़्म, आज हमारे गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी के रूप में दीच्चिमान् परमािा, श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज के शदव्य िरियुगल में कोशट-कोशट प्रिाम। उनके पशवत्र िरिकमलों ंकी रज, हम सबको शवमल करके हमारी रक्षा करे।"**

वषप १९५० में गुरुदेव की अक्तखल भारि-यात्रा के दौरान चत्रप्लीकेन, मद्रास में, चदनांक १ अिूबर को गुरुदेव के दिपन करने के पश्चाि् मैं बस की प्रिीक्षा कर रहा था। स्वामी चिदानन्द जी
उस मागप से जा रहे थे। उस समय स्वामी वेंकटेशानन्द जी ने मेरा उनसे पररिय कराया। हमारा
वािापलाप कुछ ही क्षणों ंका था, िथाचप स्वामी जी के िुम्बकीय व्यक्तित्व और सरलिा के कारण
मैं उनकी ओर अत्यन्त आकचषपि हुआ। **वषण १९५३ के अप्रैल माह में पाशलणयामेन्ट ऑफ रीशलशजयि की अवशध में मैं आश्रम में था, िब स्वामी शिदानन्द जी को कुष्ठरोशगयों ंकी बस्ती के रोशगयों ंकी सेवा करिे और हर एक कुष्ठरोगी को प्रिाम सशहि वख शवरिरि करिे देख मैं िशकि हो गया।**

मैं मानिा हूँ शक गुरुमहाराज ने 'अठारह ईटीज़' - Eighteen Ities की गीि-रिना करिे समय स्वामी शिदानन्द जी का आदिण स्व-समुमुख रखा होगा।

परम कृपालु प्रभु आनन्द-कुटीर के इस कोहनूर को अत्यन्त दीक्तप्तयुि रखें िथा समस्त संसार को प्रबुद्ध करने हेिु, स्वास्थ्य िथा दीघापयुष्य प्रदान करें।

सभी वसुतुओं ंऔर व्यक्तियों ंमें भलाई ही देखने की दुलपभ प्रवृचत्त का स्वामी चिवानन्द जी में अचि-आश्चयपजनक मात्रा में चवकास हो िुका है। उनमें दूसरों ंमें त्रुचटयों ंऔर दोषों ंका देखने की प्रवृचत्त लेिमात्र भी नहीं ंहै। कई बार ऐसा हुआ चक कई ऐसे
व्यक्ति प्रायीः उनके पास आिे रहे और कायप करिे चजनमें चवचभन्न प्रकार की कई
कमजोररयाँ होिीं ंऔर वे वसुिुिः कई रूपों ंमें आिोधनीय थे। यचद उनमें एक गुण भी
लेिमात्र चदखायी दे जािा, िो उन पर अपना वरदहस्त रखिे और उनकी समस्त
कुचटलिाओं ंकी ओर से आँखें मूंद लेिे।

-स्वामी शिदानन्द

इिने युवा, िथाशप, इिने प्रज्ञ!

– श्री लेिी फ्लोरेंस द रेन्डाल, यू. एस. ए. —

यह युवा-रत्न, स्वामी चिदानन्द, चवश्व-भर के युवा-वगप को, एक श्रेष्ठ उदात्त वरदान है। उनसे मैं चवस्मयपूणप िथ्य सीख पायी हूँ। इस प्रचिभा सम्पन्न युवक को सम्मानपूवपक मेरे श्रद्धा-सुमन! मैंने उनके चविार कुछ चसद्धों ंिथा चिन्तकों ंको प्रदचिपि चकये हैं।

स्वामी शिदानन्द से अशधक महान् कोई भी व्यक्ति हो नहीं ंसकिा, शजससे श्री स्वामी शिवानन्द जी का शमिन न्यस्त शकया जाये। मैं बहुि से अन्य महान् व्यक्तियों ंको चमली हूँ िथा उनकी ज्ञानपूणप पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं। चकसी में भी इिनी युवा उम्र में, आध्याक्तत्मक क्षेत्र में परब्रह्म चवषयक इिनी पररपक्व प्रचिभा सम्पन्निा िथा गहरी पहुँि कदाचिि् ही देखने को चमलिी है।

श्री स्वामी चिवानन्द जी की पुस्तकें िथा उनके कायप में सहायक उनके पट्ु, समथप और पथदिपक आध्यात्त्मक चिष्य मेरे चलए आश्चयप का अनवरि स्रोि है।

परोपकारी और सेवाभावी बनें!

अपने दैचनक जीवन और चनत्य-प्रचि के कायप-कलापों ंमें परोपकार िथा सेवा के चनयम और आदिप को सवोपरर स्थान दें। प्रत्येक पररवार के सदस्य इस उत्कृष्ट् भावना को आत्मसाि् करें और इससे प्रेररि हों।ं इस प्रकार पररवार के अन्य सभी सदस्यों ंकी सेवा करिे हुए और उन्हें हषप प्रदान करिे हुए जीवन व्यिीि करें। अब पाररवाररक क्षेत्र में जीवन एक नवीन और उत्कृष्ट् स्तर की ऊँचाइयों ंिक उन्नयन कर जायेगा।

आपका व्यावसाचयक जीवन एक यज्ञ बन जाना िाचहए। व्यावसाचयक कायप परोपकार की भावना पर आधाररि होने िाचहए। व्यावसाचयक जीवन का आय-अजपन पक्ष गौण है, प्रमुख नहीं।ं यह पक्ष यज्ञ, सेवा और परोपकार के आधारभूि आदिों के अधीन रहना िाचहए, अन्यथा मानव मानव नहीं ंहै। वह मानव के रूप में एक पिु ही है, भेड की खाल पहने हुए भेचडया है।

-स्वामी शिदानन्द

देह से प्रसुफुशटि शदव्यत्व

– श्री िॉ. इरि शसंह, एम. बी. बी. एस., देहरादून –

एक गौरवणीय सुसत्ज्जि मोहक युविी मेरे चिचकत्सालय में परामिप हेिु आयी। "मेरा नाम कुमारी माया है िथा मैं आपकी मदद िाहिी हूँ"- स्व-पररिय देिे हुए उसने कहा। "हाँ, मािा जी, मैं आपके चलए क्या कर सकिा हूँ" मैंने उत्तर चदया।

वह गहन व्यथा में िूबी सी चदखिी थीं।ं धीरे-धीरे उसने कहना प्रारम्भ चकया, "व्यवसाय से मैं जादूगरनी हूँ। मैं अचि समृद्ध हूँ। अपनी सांसाररक समस्याओं ंके चवषय में मैं सदैव चित्तन्ति हूँ। मैं मोह, क्रोध, लोभ, िृष्णा, घमण्ड िथा चमथ्यात्व में गहनिा से उलझ गयी हूँ। मैं अचि समथप हूँ चफर भी, बुत्द्धवादी और चवश्लेषणात्मक होिे हुए भी मैं अगचणि अिृप्त कामनाओं,ं अगचणि भय िथा आिंकाओं ंसे आपूररि हूँ। मेरा मन सदा व्यग्र रहिा है और मैं दुःखी हूँ। मुझे चकस प्रकार िात्न्त और परमानन्द की प्रात्प्त हो सकेगी? कृपया, मेरी अवश्य सहायिा कीचजए!" -उसने रोिे-रोिे कहा।

"ठीक है, कृपया, कल अपराह्न में ४-०० बजे ऋचषकेि पहुँचना," मैंने उत्तर चदया। वह सहमि हुई। अगले चदन मैं उसे ऋचषकेि में बस स्टैन्ड पर चमला और हम चिवानन्द आश्रम की ओर पैदल िले।

"ऋचषकेि सन्तों ंसे भरा हुआ है" - मैंने चटप्पणी की।

"सन्तों ्से? चकिनी अथपहीन बाि! कचलयुग में सन्त है ही नहीं ,ं" कठोरिा सेउसने उत्तर चदया।

"क्ा आप जानिी हैं चक यथाथप सन्त चकसे कहिे है?" मैंने पूछा।

"स्पष्ट् रूप से नहीं।ं कृपया, मुझे बिाइए िाचक यचद मैं चकसी सन्त से चमलूूँ िो उन्ें पहिान सकूूँ" -उसने उत्तर चदया।

"ध्यान से सुनना, मािा जी, गुरु नानकदेव जी ने सन्त चवषयक जो कहा है, वह मैं आपको कहूँगा। वे ही सन्त हैं-

"१. चजन्ोंनें प्रभु-कृपा से सन्तों ंका संग चकया है, चजन्ें सद्गुरु प्राप्त हुए हैं िथा चजन्ोंनें श्रद्धापूवपक स्वयं को उनके िरणों ंमें आत्म-समचपपि चकया है, उनसे गुरु-मि प्राप्त चकया है; पश्चाि् जो उनकी आज्ञा का पालन करिे हैं और परम प्ेरमपूवपक प्राथपना, गुरु-पूजा, गुरु-सेवा और कीिपन करिे हैं।

"२. ईश्वर-कृपा से चजनके मोह, क्रोध, वासना, लोभ, मद रूप मल की माया दूर हुई हो, चजन्ोंनें संसार के चमथ्यात्व को जान चलया हो, वैराग्य रूप माला धारणा की हो, चजनमें सत्य, ब्रह्मियप, सौम्यिा और अनुकम्पा हो, जो 'ईश्वरेच्छा बचलयचस' मान कर चवनम्रिा और सत्य से जीवन व्यिीि करिे हों।ं

"३. ईश्वर-कृपा से चजनमें वास्तचवक ज्ञान और आत्म-चविार हों।ं

"४. प्रभु-कृपा से चजन पर 'नाम-खुमारी िढ़ी रहिी हो' िथा जो ध्यान, समाचध और चदव्य आनन्द में लीन रहिे हों ंऔर सदा चनभपय हों।ं

"५. जो प्रभु-कृपा से माया से अचलप्त हों ंऔर सिरिर में केवल ईश्वर का ही दिपन करिे हों।ं"

वह प्रत्येक िब् ध्यानपूवपक सुनिी थी िथा ऐसा प्रिीि होिा था चक मेरा हर एक िब् वह याद कर रही थी। कुछ देर के पश्चाि् उसने कहा, "इन सबकी प्राक्तप्त िो अचि दुष्कर है। वास्तव में यह लौचकक अक्तस्तत्व की समाक्तप्त है। यचद इस प्रकार का कोई वीर होगा भी, िो मेरी उससे भेंट होनी अभी बाकी है।" दीघप काल पैदल िलने से हम थोडे श्रान्त हुए थे चकन्तु िीघ्र ही हम एक कुचटया पर पहुूँिे, चजसका द्वार बन्द था। कुचटया के समीप नीिे ही हम बैठे। "यहाूँ कौन रहिे हैं?" उसने मुझे पूछा।

"कहिे हैं चक स्वामी चिदानन्द यहाूँ रहिे हैं," मैंने उत्तर चदया। स्वामी जी नमस्कार की मुद्रा में हाथ जोड कर आये और हमें साष्टांग दण्डवि् कर हमारे िरणस्पिप चकये। पश्चाि्, क्तस्मि चबखेरिे हुए उन्ोंनें कहा, "बडे हषप की बाि है चक आपने मुझे दिपन चदये।" वे अपने छोटे से कमरे में हमें ले गये।

जीवन में इससे पूवप ऐसा अनुभव न हुआ हो, ऐसी स्वामी जी की असीम नम्रिा, परमानन्द अवस्था, िाक्तन्त िथा स्नेह से कुमारी माया प्रभाचवि हुई। "ये ऊाँ िे व्यक्ति कैसे परमानन्द में िूबे हैं," कुमारी माया ने कहा।

"आप यहााँ, चहमालय में कैसे आये?" कुमारी माया ने पूछा।

"मेरा जन्म ३८ वषप पूवप दचक्षण भारि के एक धनाढ्य पररवार में हुआ। प्रभु कृपा से मुझे सन्तों ंका संग चमलिा रहा, वैराग्य हुआ और ऋचषकेि में मेरे सद्गुरु स्वामी चिवानन्द जी महाराज के चमलन हेिु मैंने गुप्त रूप से गृहत्याग चकया। मैं श्रद्धापूवपक उनके िरणकमलों ंपूणपिया िरणागि हुआ और अब परम प्रेम सचहि में मैं दासत्वभाव से प्राथपना, गुरु-पूजा, गुरु-सेवा और कीिपन करिा हाँ," स्वामी जी ने उत्तर चदया। कुमारी माया यह सुन कर आश्चयपचचकि हो गयी। यह सिे सन्त के लक्षणों ंका प्रथम लक्षण था। उनकी चजज्ञासा बढ़ी।

"आपने कब चववाह चकया और आपकी चकिनी सन्तानें हैं?" कुमारी माया ने प्रश्न चकया।

स्वामी जी मुस्कराये और प्रत्युत्तर चदया, "मैंने चववाह का चविार कदाचप नहीं ंचकया और इस कारण सन्तानों ंका प्रश्न नहीं ंउठिा।"

कुमारी माया को चवस्मय हुआ और आश्चयप से बह बोल पडी, "सिमुि कचलयुग में आप जैसे सन्त दुलपभ हैं जो वैराग्य और ब्रह्मियप के मूिप रूप हों।ं"

कुमारी माया ने कमरे में िारों ंओर दृचष्टपाि चकया। कमरे में फचनपिर, िारपाइयााँ, वस्त्रों ं के चलए सूटकेस, रेचियो, ग्रामोफोन, इलेक्तक्टरक हीटर अथवा इलेक्तक्टरक इस्त्री, िेरचसंग टेबल अथवा िाइचनंग टेबल कुछ भी नहीं ंथा। वह केवल सन्तों ंऔर पैगम्बरों ंकी िस्वीरें, अगचणि पुस्तकें और एक कोने में रखे हुए थोडे रसोई के बिपन देख सकी। कुमारी माया को इस प्रकार के घर को देख अचि चवस्मय हुआ।' "यह घर है चक लायब्रेरी?" वह धीरे से बोली। स्वामी जी ने कहा, "मैं कहीं ंभी रह सकिा हाँ। अपने इस चनवास से मैं सन्तुष्ट हाँ। यह भी मेरे चलए आवश्यकिा से अचधक ही है।"

कुमारी माया गहरे सोि में िूब गयी। चफर उसने पूछा, "स्वामी जी, आपके कोई ररश्तेदार नहीं ंहैं और यचद इस एकान्त स्थान में आप बीमार हो गये िो आप क्ा करोगे? और आपको भोजन-वस्त्र कैसे चमल जािे हैं?" स्वामी जी हाँस पडे और उन्ोंने प्रत्युत्तर चदया, "मािा जी भगवान् मेरी देखभाल करिे हैं। उनके योगक्षेम से मुझे जो िाचहए, वह चमल जािा है।" कुमारी माया आश्चयप से भौंिक्की रह गयी। कैसे व्यक्ति है ये? इन्ें न चिन्ता है, न भय। यथाथप सन्त होने का यह एक और लक्षण।

इस समयावचध में उन्ोंने सन्त चवषयक स्व-चविारों ंका संिोधन प्रारम्भ कर चदया था। स्वामी जी उनकी मनोःक्तस्थि जान गये और उन्ोंने हाँसिे हुए चटप्पणी की, "मािा जी, यह संसार माया का एक खेल है। वह बहुि ही िमक-दमक युि िथा िालबाज है। भौचिक सम्पचत्त, सांसाररक चविार–िक्र, अहं, मोह, काम, क्रोध, लोभ, मद और झूठ, अिृप्त िृष्णाएाँ, आिंकाएाँ, सांसाररक ज्ञान यहााँ हैं और उनके फलस्वरूप भय, चिन्ताएाँ और पीडा होिी हैं, और

मानव आवागमन के िक्र में उलझा रहिा है। केवल ईश्वर-कृपा से प्राप्त चदव्य जीवन ही परमानन्द और िाक्तन्त दे सकिा है। अपने चनज स्वरूप-आत्मा में ही सदैव क्तस्थि रहो।"

कुमारी माया को और भी आश्चयप हुआ उसके एक भी प्रश्न चबना पूछे ही स्वामी जी उनके मन की सब बािें जान गये। इिने कम िब्दों ंमें चकिना दुलपभ आत्म-चविार उन्होंने समझाया। ित्पश्चाि् ही स्वामी जी ने हमारे आचिथ्य सत्कार में चवलम्ब होने के कारण क्षमा मााँगी। हााँ, चकन्तु यह उनका दोष नहीं ंथा। कुमारी माया द्वारा पुनीः पुनीः पूछे गये प्रश्नों ंके कारण ही यह चवलम्ब हुआ था। वे िीघ्र ही थोडा दूध िथा फल ले कर आये और हमारे सम्मुख रख कर, उनके उपभोग के चलए हमें प्राथपना की। हमारा साथ देने हेिु हमारी चवनिी को स्वामी जी ने मेरे थोडे आग्रह के पश्चाि् ही स्वीकार चकया। उनका समग्र जीवन सेवाथप ही है। कुछ जप, ध्यान और समाचध के पश्चाि् उन्होंने अल्पाहार चलया। कुमारी माया स्विीः ही कुछ बोलने लगी। "कैसे व्यक्ति हैं ये! इिने एकान्त स्थान पर रहिे हैं िथाचप उन्हें इिने सुन्दर फल प्राप्त होिे हैं िथा वे सदैव ईश्वर-चिन्तन करिे हैं।" हम धीरे-धीरे फलों ंका उपभोग करिे थे। सहसा, एक बन्दर भीिर आया और कुमारी माया के हाथ से नारंगी झपटने का प्रयास करने लगा। वे भयभीि और क्रोचधि हुईं; चकन्तु स्वामी जी चनभपय, िान्त और करुणा के सागर थे। उन्होंने मुट्ठी भर फल चलये और बन्दर को चदये, चजन्हें बन्दर ने आनन्द से ग्रहण चकया। चफर स्वामी जी ने द्वार बन्द चकये। कुमारी माया का हृदय भय से अभी भी धडक रहा था। कैसा स्थान है! उन्होंने स्वामी जी की िान्त और प्रसन्न मुद्रा देखी और मनीः सन्तुलन पाया िथा फल खाने लगी।

कुमारी माया अब एक पररवचिपि स्त्री थी। वह स्वामी जी के दिपन से इिनी अचभभूि हुई चक प्रेमाश्रु सचहि उन्होंने सब बहुमूल्य आभूषण स्वामी जी के िरणों ंमें रखे, कारण अपपण करने हेिु हमारे पास अन्य कुछ नहीं ंथा। स्वामी जी ने कहा, "वे (आभूषण) आपको चवभूचषि करिे हैं, मैं उनका क्या करूाँ? मेरे चलए वे चमट्टी के समान हैं।" मेरे पास ईश्वरनाम स्मरण का बडा खजाना है। पश्चाि् उन्होंने अपने हाथ जोडे िथा उनकी वापसी के चलए प्राथपना की। **कुमारी माया स्वामी जी की सराहना में पूणिया िूब गयी और उसने अनुभव शकया शक स्वामी जी मूशिणमंि ईश्वर का अविार हैं जो शविरि कर रहे हैं।** उसकी सब िंकाएाँ नष्ट् हुईं। वह देख सकी चक **स्वामी जी ित्काम हैं और माया से परे केवल सि् स्वरूप ही हैं। उसने परमानन्द की झलक की अनुभूशि की** और जैसे ही मैंने उसे अपनी वापसी के प्रचि सिेि चकया, वह एकाएक रुदन में फूट पडी। उसने स्वामी जी के िरणकमलों ंमें साष्टांग प्रणाम चकये िथा चनज अश्रुओं ंसे उनका प्रक्षालन चकया, िरणस्पिप चकया और इस धरा पर ईश्वर द्वारा चनज स्वरूप के हमें इहलोक में ही दिपन कराने के चलए ईश्वर के आभार प्रकट चकये। प्रेमाश्रु से हमारा कण्ठ अवरुद्ध हुआ था चवदाई लेनी भी भूल गये एवं बस स्टैन्ड की ओर िीघ्रिा से िल पडे। वे हम सब पर दया करें और पुनीः दिपन दें रहें।

गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज में सावपभौचमक िक्ति एवं प्रेम की धारा ही उनके चक्रया-कलापों ंमें बह रही है। उनका जीवन पचवत्रिा से पररपूणप है चजसे साधारण दिपक समझने में असमथप हैं। अचद्विीय सरलिा, पूणप चनष्कपटिा, पूणप चनस्स्वाथपिा और अनासक्ति-ये सब अन्तिप्रेरणा से प्रस्फुचटि हुए हैं।

-स्वामी शिदानन्द

शमिन के अन्तयाणशमन्

–श्री ज्ञान-भास्कर, शदवान बहादुर के. एस. रामस्वामी ि◌ास्त्री, बी . ए .
वी. एल., मद्रास-

परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी, चजनमें अनेक दुलपभ जन्मजिा गुणों ◌ंकी अक्षय-चनचध चनचहि है। उनका हमारे दिपनिास्त् में समूपूणप प्रभुत्व है। वे ओजस्वी और चविद प्रचिभासम्पन्न हैं। वैसे ही वे अत्यन्त सुमधुर स्वभावयुि पचवत्र आत्मा हैं। सामान्यिया वे ि◌ान्त ि◌था मौन हैं, चकनुतु वे अपने गुरु श्री स्वामी चिवानन्द में अपनी श्रद्धा अचभव्यि करने हेिु एवं हमारे दिपनिास्त् की जचटल समस्याएँ प्रचिपाचदि करने हेिु अन्तीःपे्रेररि होिे हैं, ि◌दा उनके मुख से वेगवान् झरने सदृि, ि◌ब् प्रवाचहि होिे हैं।

वे चदव्य जीवन संघ के अन्तयापचमन् हैं; केवल इस कारण नहीं ◌ंचक वे महासचिव हैं चकनुतु इस कारण भी चक अनेक वषों पयपन्त उन्होंनें इसकी गचिचवचधयों ◌ंका आयोजन चकया है ि◌था इसके चवकास हेिु मागपदिपन चदया है। चदव्य जीवन संघ के स्थापक और परमाध्यक्ष, आनन्द-कुटीर के संिपरम पूज्य गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी उनके उतृकृष्ट् गुणों ◌ंसे अचभज्ञ हैं ि◌था स्वामी चिदानन्द में उनें् समूपूणप चवश्वास है। प्रचिवषप वे चदव्य जीवन का वाचषपक चववरण प्रसुिुि करिे हैं और उस चववरण की चवषयवसुिु ि◌था ि◌ैली की पररपूणपिा के कारण उनका श्रवण या पठन सदा ही सुखद और पे्रेरक होिा है।

स्वामी चिदानन्द को प्रायीः इसकी प्रिीचि होिी है और वे कहिे हैं चक चदव्य जीवन संघ का कायप बृहि् रूप से चवसृिृि हो रहा है। यह एक ि◌मत्कार है चक जब आनन्द-कुटीर के संि-सेवकगण चवत्तीय पररक्तस्थचि के कारण चनरािा का अनुभव करिे हैं ि◌ब चकस प्रकार, ि◌मत्काररक रीचि से धनवषाप होिी है। वषप १९४९ में अपने चववरण में स्वामी चिदानन्द ने चलखा: "स्वामी चिवानन्द जी के मानवों ◌ंके हृदयों ◌ंपयपन्त पहुँिने के ि◌था समय-समय पर उनें् चनमपल और अन्तिुिद्ध करने के प्रयास चनस्सीम रहे हैं। चदव्य जीवन संघ चनज को खिरनाक ढंग से आचथपक भाँवर ि◌था जलाविों ◌ंमें उलझा हुआ देखिा है और कोई भी ि◌चकि होिा है चक वह उनसे चकस प्रकार बि चनकलिा है ि◌था जलािविों पर से चनज को ऊपर उठा देखिा है। आनन्द-कुटीर का यह महानिम और सबसे अनजान ि◌मत्कार है। यह, सदैव प्रसुिुि ईश्वरीय अनुग्रह जो चक सन्तों ◌ंमें शे्रेष्ठ और उदात्त, स्वामी चिवानन्द जी महाराज पर चनरन्तर बरसिा रहिा है, उसका भी प्रमाण है।

इस वषप (१९५४) में प्रकाचिि स्वामी चिवानन्द के, 'ब्रह्म-चवद्या-चवलास' में, स्वामी चिदानन्द कहिे हैं, "सभी लोग मानिे हैं चक स्वामी चिवानन्द अचि समृद्ध स्वामी हैं-सत्य यह है चक स्वामी जी का हृदय अचि समृद्ध है- यथोचिि समय पर स्वगप से कुछ बरसिा है।"

इस प्रकार के ि◌मत्कार केवल यही प्रमाचणि करिे हैं चक परमात्मा की चवचध-संचहिा मानव की चवचध- संचहिा से ििर है और जब मानव अपनी स्वाथी इच्छाओं ◌ंको त्याग देिा है ि◌था ईश्वर से जुडिा है, ईश्वर की सन्तानों ◌ंका भला करिा है, ि◌ब ईश्वर आवश्यक योगके्षेम इस प्रकार वहन करिा है जो हमारे चलए रहस्यमय चकनुतु उसके चलए पूवपभाचसि है। मैं मानिा हाँ चक इससे भी अचधक वास्तचवक ि◌मत्कार यह है चक मेधावी और आध्याक्तत्मक रुचियुि आध्याक्तत्मक चवकास में

संवृद्धचविाल मण्डली स्वामी चिवानन्द के आध्यात्त्क्तत्मक प्रभाविाली आकषपण से चनरन्तर त्तखंचीिीआिी हैऔरउस मण्डली में अत्यन्त पररषूकृि और ियचनि मनीचषयों ंमें से एक, स्वामी चिदानन्दहैं।

****

शजनके हृदय से शदव्यजीवन-ऊजाण प्रवाशहि हो्िी है

–श्री योगी गौरी प्रसाद, शनवृत्तन्यायाधी, स्वगाणश्रम –

चिवानन्द आश्रम के उत्तराचधकारी वगप में चजनका व्यक्तित्व अचद्विीय है, चजनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना सरल नहीं ंहै, चजनके प्रचि अपनी चवनम्र पुष्पांजचल अचपपि करने हेिु हम यहााँ इस सन्ध्या-बेला में एकचत्रि हुए हैं। वह चदव्य जीवन संघ, ऋचषकेि के महासचिव ि था फारेस्ट यूचनवचसपटी के उपकुलपचि श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज हैं। उनका ही जन्मोत्सव मनाने चहिाथप आज हम यहााँ आये हैं।

आध्यात्त्क्तत्मक पररभाषा में मानव के दो जन्म माने जािे हैं। एक वह मानव-देह में जन्म लेिा है ि था दूसरा जन्म, आध्यात्त्क्तत्मक जन्म है जो चनज-स्वरूप प्रात्क्तप्त के चलए है। हमारे आदरणीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज-जो चदव्य जीवन संघ ि था चिवानन्द आश्रम के िेि और हृदय-स्पन्दन हैं-के कदाचिि्् इस चद्विीय पुनजपन्म को आज मनाने का सम्मान ि था चविेषाचधकार हमें उपलब्ध हुआ है।

यह अनवरि कायपरि हृदय वास्तव में चदव्य जीवन की कायप–ित्ति और चदव्य जीवन संघ के संस्थापक ि था संघ और उसकी बहुचवध गचिचवचधयों ंके आधार, अपने गुरुदेव की चित्ित्ति स्पत्क्तन्दि करिा है। जो आनन्द कुटीर के जगद्गुरु, ऋचष और सन्त के ज्ञान, इच्छा–ित्ति ि था चदव्य गचिचवचधयों ंकी कात्क्तन्तमय िेज चकरणें चबखेर रहे हैं, उनका कोई चकस प्रकार पयापप्त रूप में िब्द-चित्रण, अंकन करने में समथप हो सकिा है।

हमारे अचि चप्रय व परम पावन युवा स्वामी चिदानन्द एक चनष्ठावान् भि ही नहीं ंदैवी सम्पद युि ऋचष और द्रष्टा भी हैं, संन्यास-परम्परा के सवपगुण सम्पन्न िुद्ध स्वरूप हैं जो अपने सदािरण एवं चदव्य चविारों ंसे सन्तमण्डल को मचहमात्क्तन्वि करिे हैं। वे उन असाधारण व्यक्तियों ंमें से एक हैं जो चदव्य जीवन संघ के आदिप-सेवा, प्रेम, ध्यान और साक्षात्कार-के पालन हेिु गहन प्रयास कर रहे हैं। वे सिि प्रेमभाव ि था चवचिष्ट् नम्रिापूवपक सबकी सेवा कर रहे हैं। इसमें वे प्रायीः अपने िारीररक स्वास्थ्य की देखभाल करना भूल जािे हैं अथवा उसकी उपेक्षा करिे हैं।

चजसे भी उनके अन्तरंग सम्पकप में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, 'चप्रज़्म' उपनाम से अपने गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज के जीवन ि था उपदेि चवषयक उनकी एक दिक पूवप चलत्क्तखि पुस्तक 'Light Fountain' का बारीक अध्ययन करने का सुसंयोग चमला है, वह मानस-दिपन करने में सक्षम हो सकेगा चक जब उन्ोंने अपने गुरुदेव (एक सन्त और ऋचष) की दैचनक गचिचवचधयों ंका चनरीक्षण करने का ि था उनके िैिन्य की िुिम अवस्था का यथाथप रूप में

अथपघटन चकया है िब वे चकिने नैचिक, आध्यात्क्तत्मक ििम और सूक्ष्म स्तर पर चवहार कर रहे थे। चकिनी लगन से अपनी चवश्ेलेषणात्मक बुक्तद्ध से अपने गुरुदेव की गचिचवचधयों ंके छोटे गूढ़ कोनों ंपर ित्क्तत्त्वक चवश्ेलेषण का उज्ज्वल प्रकाि िाल सके और सैे नैचिक िथा आध्यात्क्तत्मक दृचष्टकोण प्रदचिपि कर सके; यह सत्य स्पष्ट् रूप में प्रकट करिा है चक अन्य कोई नहीं ंपरन्तु उनमें उभरिे हुए ऋचष और सन्त ही इस प्रकार की सुन्दरिा और सुगमिा से यह दिपन करा सकिे हैं।

मैंइस प्रकार के दृष्टान्त रूप और पावन व्यक्ति का नम्र अचभवादन िथा श्रद्धापूवपक नमन करिाहाँ।सवपिक्तिमान् प्रभु, हमारे आदरणीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की मानव जाचि के प्रचिउिआध्यात्क्तत्मक सेवा हेिु दीघापयुष्य प्रदान करें। *

****

भगवान् हमारे हैं

– िा. श्रीमिी अमरकौर, एम. बी. बी. एस., देहरादून-

भगवान् हमारे हैं।
शिवानन्द सिगुरु के।
शिदा बडे प्यार हैं।।

भगवान् हमारे हैं।
किर भोले के ।
भगवान् हमारे हैं।

शिदा अख दे िारे हैं।।
इन सब सन्तन में।
शिदा सन्त न्यारे हैं।।

भगवान् हमारे हैं।
हम सब मिााओं ंके
शिदा बेटे दुलारे हैं।।

ऋचषकेि, चहमालय के पुण्यिील मनीषी एवं सन्त श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज आधुचनक आध्यात्क्तत्मक जगि् में सवपत्र चवख्यिा हैं। बीसवीं ंसदी के चपछले पिास वषों में वे अपने समय के उनजगद्गुरुओं ंमें से एक हैं चजन्ोंने संसार के अनेक देिों ंके लाखों ंलोगों ंके हृदयों ंमें आध्यात्क्तत्मक जाग्रचि उत्पन्न की। चवश्व-भर के असंख्य चजज्ञासु इनके आभारी हैं। उनके चलए वे एक कृपालु चिक्षक, महान् सद्गुरु और अनुपम व करुणामय सन्त हैं।

श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने आध्यात्क्तत्मक प्रकाि प्रकाचिि कर चवचभन्न क्ेषेत्रों ंके लोगों ंको िक्तिन्त िथा आनन्द प्रदान चकया। इनका चित्ताकषपक एवं देदीप्यमान व्यक्तित्व भद्रिा, चनस्स्वाथपिा और सावपभौचमक पे्रम से दीप्त है चजसके कारण ऋचषकेि के सचन्नकट पावनी गंगा िट पर अवक्तस्थि

'जीवेम ि रदः ि म

– पं. पुण्डरीकाक्षिाायण जी महाराज-

चकसी भी महापुरुष के जीवन के सम्बि में कुछ चलखने से पूवप लेखक को उस महापुरुष के पूवप-सम्पकप में आना आवश्यक है और सम्पकप सम्बि भी अचधक समय िक का अवश्य होना िाचहए चजससे चक उन महापुरुष के जीवन-दिपन की झाँकी का भली प्रकार पररिय हो और िथ्य
को समझने का पूणप अवसर प्राप्त हुआ हो।

मैं चजनके सम्बि में अपने इस छोटे-से लेख में कुछ पंक्तियााँ चलखना िाहिा हाँ, उनका
पररिय मुझ से श्रीधर राव नाम से उस समय हुआ, जब वे 'आनन्द- कुटीर' के परम सन्त,
चहमालय की चदव्य चवभूचि, 'चदव्य जीवन संघ' के संस्थापक ब्रह्मलीन श्री स्वामी चिवानन्द जी
महाराज के चिष्य के रूप में उन्हीं ंकी आज्ञा से रोचगयों ंको औषचध-दान के कायप में रि रहिे थे।

चजनकी 'षष्ट्यब्पूचिप' के अवसर पर यह 'अचभनन्दन-ग्रन्थ' प्रकाचिि हो रहा है, वे ही
श्रीधर नाम से मेरे पररचिि हैं, जो चक आज १००८ श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के नाम से
आप सबके समक्ष चवद्यमान हैं।

मैं 'चदव्य जीवन संघ' संस्था के चनकट ही 'आदिप श्री दिपन महाचवद्यालय' में पढ़िा था,
अिः यथा-समय औषचध लेने के चलए आिे-जािे रहने से अपने िररत्रनायक से उत्तरोत्तर घचनष्ठ
सम्बि होिा ही गया, क्ोंचक राव जी ने सहृदयिा, उदारिा, नम्रिा, सरलिा व सेवा-भाव आचद
अपने अनन्त चदव्य गुणों ंसे मेरे ही मन को अपनी ओर आकृष्ट् चकया हो, ऐसी बाि नहीं,ं अचपिु
चकसी भी कायपवि अपने सम्पकप में आने वाले सभी व्यक्तियों ंको अपने उि गुणों ंके कारण
अपनी ओर आकृष्ट् करने में वे सदा सक्षम रहे हैं। वही गुण उनमें आज भी पहले की अपेक्षा
अचधक सक्षम व कायपिील हैं।

राव जी के उि गुणों ंके ही कारण गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने भी अपने
हर कायप में इनको अपना उत्तरोत्तर कायप-भार सौंपना आरम्भ कर चदया। अपनी कायप-कुिलिा के
कारण ही वह 'चदव्य जीवन संघ' के महासचिव पद पर आरूढ़ हो गये।

और चफर आपको गुरुदेव ने संन्यास-दीक्षा से दीचक्षि कर चदया िथा 'चिदानन्द सरस्विी'
नामकरण चकया और क्रम यह रहा चक श्री गुरुदेव के ब्रह्मलीन होने के पश्चाि् उनके योग्यिम
चिष्य श्री चिदानन्द जी सरस्विी को आश्रम का पूणप उत्तराचधकारी चनयुि कर चदया गया।

'यथानामस्तथागिु:' के अनुसार श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज आज चवश्व-प्राणीकी आत्मा हैं। इनके अन्दर अपार करुणा है, चजससे पे्रेरिर हो कर वह जीव मात्र की दुी:ख-चनवृचत्तव
सुख-प्राक्तप्त हेिु सिि प्रयत्निील हैं।

पराथपबद्धदक्ष महापुरुष चवरले ही हिो हैं। ये महामचहम अपने िारीररक िथा सांसाररकसुखों ं थिा उसकी पररचध से परे, अनन्त से अपना अन्तस्-सम्बि स्थाचपि कर, देखने में बाह्यरूपसे प्राचण मात्र की सेवा, उन्नचि िथा मोक्ष का प्रयास करिे हैं।

अिीः मैं श्री स्वामी जी के इस 'षष्ट्यब्पूचिप महोत्सव' के प्रसंग पर स्वामी जी की दीघापयु के चलए आनन्दकन्द मंगलमय भगवान् से प्राथपना- 'पश्येम िरदीः ििम्, जीवेम िरदीः ििम्' करिा हाँ।

-महन्त, श्री दिणन महाशवद्यालय
शिवानन्दनगर, उत्तराखण्ड

शिवानन्द-हृदय-शिदानन्द

शप्रंसीपल श्री िमनलाल िमाण,शदल्ली-

आज सभी की चजह्वा पर एक ही बाि आिी है चक 'स्वामी चिदानन्द जी पूणपरूपेण गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज के ही रूप में हैं।' सत्य भी है, क्ोंचक श्रीधर राव (स्वामी चिदानन्द जी) ने आश्रम पहुाँििे ही उनके महान् व्यक्तित्व के एक-एक गुण को सूक्ष्म रूप से देखा और
उस समय िक की गुरुदेव द्वारा चलक्तखि सैकडों ंपुस्तकों ंका गहन स्वाध्याय चकया। िभी िो वे एक ही वषप के अन्दर 'लाइट फाउन्ेटेन' जैसी गम्भीर िथा रोिक पुस्तक चलखने में सफल हो सके।
उस पर गुरुदेव ने सहषप यह चटप्पणी की- **'शिवानन्द भले ही ब्रह्मलीन हो जायें, शकन्तु यह पुस्तक अमर रहेगी।'** इिने से ही

श्रीधर जी सनुतुष्ट् नहीं ंहुए। िभी से उन्ोंनें गुरुदेव के आदिों–आदिों का अनुसरण प्रारम्भ कर चदया, चजसके फल-स्वरूप आजके स्वामी चिदानन्द जी में गुरुदेव का प्रचिरूप सहज ही दृचष्िग िोिा है।

सन् १९५० की भारि यात्रा में भी जहााँ कायपक्रम रहिा, उस स्थान के समीप के चजज्ञासुओं ं की चपपासा िान्त करने यचद गुरुदेव स्वयं पहुाँि पाने में असमथप रहिे, िो स्वामी चिदानन्द जी वहााँ पहुाँि कर उनका प्रचिचनचधत्व करिे थे।

वास्तव में श्री स्वामी चिदानन्द जी पूज्य गुरुदेव के हृदय ही है। मैं उन्ें श्रद्धा के सुमन अचपपि करिा हाँ।

****

आत्म-साक्षात्कार की सविो अवस्था की प्राक्तप्त की अहपिा

यह शनयम है शक हमें मााँगना होगा, पाने के शलए प्रयास करना होगा, द्वार खटखटाना होगा। और, यह सब करने के पश्चाि् इनको प्राि करने के शलए हमें अवश्यमेव उद्यि रहना िाशहए। यशद यह सब आप करिे हैं, िब गुरु-कृपा के िमत्कार देखने को शमलिे हैं। गुरु-कृपा हमारी ओर प्रवाशहि होने लगिी है और हमें असीशमि आनन्द की ऊाँिाइयों ंिक ले जािी है। अिः सवणप्रथम हमें गुरु के साथ के समस्त मानवीय सम्बन्धों ंको भुला देना होगा। उसके शलए हमें आिशनष्ठ रूप में अपना आन्तररक रूपान्तरि करना होगा। जब िक ऐसा नहीं ंहोगा, उनकी शदव्यिा हमारे शलए पूिणिः उद्घाशटि नहीं ंहो पायेगी। हमें अपने गुरु के मानव पक्ष की ओर शबलकुल ध्यान नहीं ंदेना िाशहए और केवल उस शदव्यिा के प्रशि जागरूक रहना िाशहए जो वह हैं। केवल िभी हम उस कृपा को ग्रहि करने के योग्य होंगें, जो हमें शनम्न मानवीय स्तर से ऊपर उठा कर लोकोत्तर सत्ता में रूपान्तररि कर देगी।

मेरी ममिामयी मािृश्री स्वामी शिदानन्द् जी **स्वामी शिदानन्द**

–श्री नादशित्स्वरूप जी 'पाल जी ' –

मोरे िुम प्रभु गुरु शपिु मािा।
जाऊाँ कहााँ िशज पद जल जािा।।

(श्रीरामिररिमानस, उत्तरकाण्ड)

चवश्ववन्दनीय सद्गुरु स्वामी चिवानन्द जी के आश्रम में अपने बालकपन से रहिा रहा हाँ। यहााँ के चिवानन्द प्राइमरी सूकूल का मैं छात्र भी रहा। गुरुदेव अपने उपदिे जो भी गायन के रूप
में चसखािे, मैं उसे भली प्रकार गा चलया करिा था। चजस कारण गुरुदेव िो प्रसन्न हिे ही थे;
परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी की भी मुझ पर बडी कृपा रहिी। सीखे हुए भजनों ंको कण्ठस्थ करके सुनाने पर स्वामी जी हचषपि हो मुझे प्रोत्साचहि करिे रहिे। उन्हीं ंकी अहैिुकी कृपा का
पररणाम है चक एक कुिल संगीिज्ञ के रूप में मेरा समूपूणप जीवन-चनवपहन हो पाया। प्रारम्भ से ही स्वामी जी के प्रचि मेरा मािृभाव प्रबल रहा। अन्तयापमी गुरुमहाराज स्वामी जी भी मेरे इस भाव को
गहराई से लेिे हैं। वे मेरे भजन बडे िाव से यदा-कदा सुन कर मझे आिीवापचदि करिे रहिे हैं।

परम पूज्य स्वामी जी महाराज के जन्मोत्सव पर आज २४ चसिम्बर को एक घटना बार-बार
मेरे सूमृचि-पटल पर आ रही है। बाि पुरानी है। मैं छोटा बालक था। नेत्र-ज्योचि िो िुरू से मन्द
थी ही। चफर भी संध्या-समय अन्य बालक साचथयों ंके साथ चबल्वपत्र संचयन करना मुझे बहुि
पसन्द था। एक िाम मैं पेड पर िढ़ कर बेलपत्ते िोड रहा था चक अिानक मेरी दृचष्ट् सामने एक
ऊाँिी िाल पर पहुाँि गयी। उिक कर मैंने िाल को पकड ही चलया, पत्ते िोड रहा था चक
चपछली िाल से पैर चखसक गये और मैं धडाम से नीिे चगर गया। बेहोि हो गया। (होि आने
पर मुझे जो सब बिाया गया अब मैं वह सब आपके समक्ष प्रसुिु कर रहा हाँ) बालक िारों ंओर
इकट्ठे हो गये। मुझे होि नहीं ंआ रहा था। पूज्य स्वामी जी को सूचिि चकया गया। सुनिे ही
अपना कमरा चबना बन्द चकये घटनास्थल पर दौड कर पहुाँि गये। मुझे गोदी में उठा कर भजन
हाल के साइि वाले कमरे में, जो 'चिवानन्द चपलर' की ओर है, ले गये। वहााँ बैठ कर मेरे
िरीर के प्रत्येक अंग पर हाथ चफरािे हुए टटोल कर जााँि की चक िोट कहााँ-कहााँ लगी। घावों ं
की मरहम-पट्टी कर दी गयी। बेहोिी उनके चलए चिन्ता का कारण था। कानों ंमें महामृत्युंजय मि
का जाप कर रहे थे। चसर पर ममिामय हृदय से अपने हाथ फेरिे रहे। कई घण्टों ंमें होि आया।
ऐसा बिाया गया। आाँखें खुलने पर मैंने देखा िो अवाक् रह गया। जैसे ममिामयी जननी-मााँ अपने
चििु को अंक में चलटाये हुए हैं। स्वामी जी मेरी आाँखें खुली देख कुछ आश्वस्त हुए। िरीर में
कहीं ंभी पीडा का एहसास िो नहीं ंथा, परनुतु पूणप स्वस्थ न होने के कारण सारी राि स्वामी जी
इसी िरह मुझे गोदी में चलये बैठे रहे।

प्रभाि समय गुरुदेव आये और प्रेेमपूणप िब्दों ंमें स्वामी जी से कहा- 'यह ठीक हो
जायेगा। इसके िरीर को कोई हाचन न होगी। अब चनचश्चन्त हो कर चनत्य-चक्रया से चनवृत्त होने के
चलए आप जा सकिे हैं जी।' गुरुदेव ऐसा कह कर िले गये और पुनीः आये एक अन्य स्वामी जी
को ले कर मेरे पास बैठाने के चलए और चफर िले गये प्रािीः ध्यान कक्षा संिालन हेिु। िदनन्तर
पूज्य स्वामी जी महाराज औि-जािे चनदेि दे गये उनको जो मेरी देखभाल के चलए आये थे,
'मि-जप जारी रहे, छोडना नहीं;ं िाय भेजूंगा, चपला देना।' परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने
अपनेहाथ से बना कर िाय-दूध भेजा। मैं आज भी अचभभूि हाँ उनकी ममिा, उनके वात्सल्य
पर।

-शिव कुटीर, शिवानन्द आश्रम

ऐसे हैं स्वामी जी

– श्री योर्गिगे बहुगुिा –

बाहर से देखें िो परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी अखण्ड कमप-प्रवाह की पीडा को झेलिे कमपयोगी चदखायी देंगे, दूसरी ओर जरा अन्दर आ कर देखें, िो वहााँ भक्ति की चनमपल, िान्त अजस्र धारा बहिी चदखायी देगी। प्रिचलि अथों में उन्हें चवद्वान् (कोरे िास्त्रों को जानने वाला) नहीं कहा जा सकिा। कभी-कभी वह कहिे भी हैं, "मैंने िास्त्र बहुि नहीं पढ़े हैं। अन्दर से जो भगवद् प्रेरणा होिी है, वही मैं लोगों के सामने वाणी से प्रकट करिा हाँ।"

जब सारी वासनाएाँ क्षीण हो जािी हैं, िब एक करुणा की वासना चजलाए रखिी है चक जो प्राप्त चकया है,उसे करोडों–करोडों प्यासे प्राचणयों िक पहुाँिा चदया जाये। वेद का ऋचष आज्ञा देिा है- "िि हस्त समाहर सहस्र संचकरीः" अथापि्-सौ हाथों से इकट्ठा करो और हजार हाथों से उसे बााँट िालो। इस अक्तन्तम अवस्था में वह जो भी कमप करिा है, वह करुणा-प्रेररि करिा है। जब-जब स्वामी चिदानन्द जी के साचन्नध्य में रहने का मौका चमला है, िब–िब इस करुणा से अन्तभूपि िेिना का स्पिप हुआ है। भगवान् ने 'मााँ' के रूप में करुणा को सजीव व साकार रूप चदया है। मााँ का बात्सल्य बिे की सेवा करिा है। वात्सल्य लेने के चलए नहीं जीिा। बस, देना ही जानिा है। स्वामी जी के साचन्नध्य में रहने पर भी मााँ के आाँिल लहराने की सुखद अनुभूचि होिी है।

अन्तीःराष्ट्रीय भ्रमण द्वारा ज्ञान-यज्ञ से ले कर सामान्य गृहस्थ की समस्याएाँ सुलझाने िक स्वामी जी के सेवा-क्षेत्र का चवस्तार है। इसकी एक हृदयस्पिी घटना मैं कभी भूल नहीं पाऊाँगा। दूर देहाि से एक मुसलमान भाई अपनी लडकी की िादी की समस्या को ले कर स्वामी जी के पास आया था। पााँि-साि चदनों में बारि आने वाली थी। लगभग बीसेक मेहमान आने वाले थे, परन्तु उनके भोजन की व्यवस्था अभी िक न हो पायी थी। संयोगवि मैं भी वहााँ पर पहुाँि गया। उन्होंने हर िीज के बाजार भाव की जानकारी मुझसे ली। वह भी मैं अन्दाज से ही बिा पाया था। बीस आदचमयों के भोजन और िीजों के बाजार भाव से एक सौ पैंिालीस रुपये के लगभग बनिे थे। स्वामी जी ने इिनी रकम फौरन उस मुसलमान भाई के हाथ में थमा दी। लेचकन इिनी रकम से उस मुसलमान भाई का समाधान नहीं दीखिा था। "थोडी-सी कमी और रह गयी है, स्वामी जी", उसकी िरफ से चनवेदन था। स्वामी जी ने सहायक को पुकारा और बीस रुपये का नोट ले कर उस भाई को दे चदया। चफर एक चलफाफे पर अपने हाथ से पिा चलख कर उस भाई को देिे हुए कहा, "बाजार से जो सामान खरीदोगे, उसकी रसीद दुकानदार से ले लेना और इस चलफाफे में रख कर हमें भेज देना।" िेहरे पर रौनक चबखेरिा वह भाई िला गया।

जीवन-भर गृहथथ-जीवन से शवमुख रहने पर भी आश्रम और दिे-दुशनयााँ की गृहच्चथथयों से जुडे, वीिराग होने पर भी सिि शनष्काम सेवा-कायों में प्रवृत्त, ख्याशि प्राप्त होने पर भी नम्रिा की प्रशिमूशिप, संन्यास के कठोर अनुिासन के बावजूद मृदु-हृदय, 'समं सवेषु भूिेषु' की दृशष्ट-ऐसे हैं स्वामी जी! चजसने भी एक बार उनके व्यक्तित्व का स्पिप पा चलया, वह सदा-सदा के चलए उनका हो जािा है।

श्री स्वामी जी की 'हीरक जयन्ती' पर मैं उनका हाचदपक अचभनन्दन करिा हाँ। ..

****

ब्रह्मशनष्ठ श्री स्वामी शिदानन्द सरस्विी

– श्री सच्चिदानन्द मैठानी, आयुवेदिाायण, शिवानन्दनगर –

भगवत्प्रेररि अनन्त-चवभूचि अध्यात्म-ज्योचि श्रोचत्रय ब्रह्मचनष्ठ स्वनामधन्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का चदव्य जन्म **'बहुजन शहिाय बहुजन सुखाय लोकानुग्रहाय'** इस ईश्वरीय प्ेरेरणा-पूचिप हेिु हुआ। ईश्वर-प्रदत्त पुरुष ब्रह्मचनष्ठ श्री स्वामी चिदानन्द जी का पचवत्र चसद्धान्त अपने में पूणपिः एवं सवपिः भारिीय चवद्या चवचहि एवं उपचनषद्, पुराण, धमपिास्त् आचद कलाओं से ओि-प्रोि है। उनकी चविुद्धात्मा भारिीय संसृकृचि की पचवत्र ज्ञान-गररमा को अपनी ही ऋिम्भरा-प्रज्ञा में सचन्नचहि कर उसकी पावन-प्रभा को चवश्व के चवचवध भूभागों में प्रकीणप कर रही है।

इस बीसवीं ििी के महापुरुष श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज न केवल भारिीय आत्मा हैं, वरन् यह चदव्यात्मा आज अपने पूवप पुण्याचजपि प्रभाव से चवश्वात्मा बन गये हैं। समूपूणप चवश्व उनका अपना चनवास है, चवश्व के जन-मानस में एवं प्रत्ेयेक प्राणी में उनका अपना प्राण है- **'सवणभूिहिे रिाः'** सेवा एवं श्रद्धा के स्वरूप में अपने दैचवक-कमपयोग के माध्यम से वे अक्तखल चवश्व की आराधना कर रहे हैं, उनके पचवत्र िरीर का कण-कण एवं चदव्य जीवन संघ का प्रचिक्षण इस धराधाम के प्राचणयों की सेवा हेिु समचपपि है। चदव्यात्मा श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का चसद्धान्त मानव को पचवत्र कमपयोग से आत्मानुभूचि की ओर प्ेरेररि करिा है-

न त्वहं कामये राज्ंयं न स्वगं न पुनभणवम्।

कामये दु:खिखानां प्राशिनामाशिण निानम् ।।

'स्वगीय ऐश्वयप, सुख-समृक्तद्ध इस नश्वर िरीर को नहीं ंिाचहए, केवल दुीःख, िोकाचद ग्रचसि प्राचण मात्र की सेवा करना मेरे जीवन का लक्ष्य है।'

इस भू-भारिी में स्वनामधन्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का लोक-कल्याण कायप हजारों ंदचलि-पचिि वगों को अपनी अचभरामधाम छत्र-छाया में स्वान्तीः सुखाय आश्रय प्रदान कर रहा है। रोचगयों ंकी रोगमुक्ति हेिु एवं मानव की सुख-समृक्तद्ध के चलए उन्ोंनें अपने पुण्यमय जीवन में चविेष स्थान चदया है। भारिीय वेदान्त िास्त् पर पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने अनेक उत्कोचट के ग्रन्थ चलखे हैं। इन चवचिष्ट् ग्रन्थों ंके माध्यम से पाश्चात्य देि वाचसयों ंको, भारिीय संसृ्कचि के आदान-प्रदान में अभूिपूवप सहायिा चमली है।

चवश्व की ख्याचि प्राप्त आध्याक्तत्मक संस्था 'चदव्य जीवन संघ' के परमाध्यक्ष-पीठाचधपचि के सविो पद पर आसीन होने पर भी उन्ें उपरोि पद से चंकंचिदचप मोह-ममिा िथा आसक्ति नहीं, ं **'पद्मपत्रशमवाम्भसा'** (गीिा : ५-१०) अथापि्-जल के अन्दर कमल-पत्र के रहने पर भी उसमें जल का प्रभाव नहीं ंपडिा। धन्य है यह भारिवषीय िपोभूचम चजसमें पावन मनस्वी यिस्वी श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का चदव्य जन्म हुआ! धन्य है यह गंगा-चहमालय की देवभूचम एवं ब्रह्मलीन गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज की पावन िपोभूचम चिवानन्दनगर जहााँ इस मंगलमय पचवत्र वेला में श्रोचत्रय ब्रह्मचनष्ठ श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की कीचिपमान् 'हीरक जयन्ती' उनके यिस्वी जीवन की 'षष्ट्यब्द- पूचिप' में मनायी जा रही है। भारिीय आध्याक्तत्मक-संसृ्कचि के चवकास के इचिहास में स्वनामधन्य चदव्यात्मा श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की अमरगाथामयी हीरक जयन्ती सदैव सृ्मचिगि रहेगी- 'वन्े दे महापुरुष िे िरणारचवन्दम्।'

****

जय हे, जय हे, जय हे!

-श्री सन्तिरि पाण्डेय-

चिदानन्दमय सद्गुरु चिवहे ,
जय हे, जय हे, जयहे !

जचटल ग्रक्तन्थ टूटे मानस की
नष्ट् चिचमर प्रभु िुम मुस्काये,
मि दीप्त िैिन्य बोध से
चदव्यीकृ ि साधक स्वर पाये,

पुनीः जागरण की बेला में
चिर प्रकाि के स्रोि अभय हे!

योग समन्वय के चिल्पीप्रभु
ज्ञान ख्ग िआि काकरले,

चछन्न करो प्रभुमोहपिाको
कचठन पुरािचनमपमप्रणले,
मानव के आराध्यवनद्यचनि
जीवन के चनमपलचनश्चयहे!

हे नटराज चपनाकी पिुपचि
महाकाल भैरव हे आओ,
रुद्र रूप धर करो ध्वस्तदुीःख
चवप्लव भेरी वाद्य बजाओ,

गरल पान कर सुधा दान दो
यिु वराभय योगीश्वर है!
भुिि ज्ञान यिु िू न्य मागप से
कुल-कुण्डचलनी का संिालिन,

ििक्तिपिा से कर दो स्वामी
सहज चसद्ध प्रभु िव अनुिासन,
चदक्तिजयी वेदान्त िुम्हारा
परम चपिा चप्रय करुणामय हे!

***

थवामी शिदानन्द और करुिा

- श्री एल. एन. आत्रेय -

करुणा ही कदाचिि् सृचष्ट का कारण है। उस राि! आिनक स्वप्न से जाग कर िा. कुप्पू स्वामी के मन में करुणा का सागर ही िो िरंचगि हो उठा था। स्वप्न में ही िो चकसी ने कहा था- 'मैं जानिा हूँ, िू िॉक्टर है। कराहिे रोचगयों को हँसिे-खेलिे देखना िुझे अच्छा लगिा है। परन्तु क्या िू उन्हें सुख दे पाया? क्या िूने उन्हें हँसिे-खेलिे देखा? इस सीचमि चचचकत्सीय जीवन को

छोड, असीचमि चवश्व-चिचकत्सक के जीवन में पदापपण कर। ि‍ुझे वहाँ अक्षय सुख प्राप्त होगा। **'सवे भवनुतु सुच्चखनः'** का स्वप्न साकार होगा और ि‍ुझे ि‍ाक्तन्त चमलेगी।'

और सारे ऐश्वयप, वैभव को उसी क्षण छोड कर वह नगराज चहमालय की हरी-भरी घाचटयों ‍ं और धवल चिखरों ‍ंकी ओर ि‍ल पडे थे, जहाँ उन्होंनें भूिभावन भगवान् ि‍ाि‍ुोष ि‍ंकर की ि‍रह अनेक ि‍ारीररक कष्टों ‍ंका गरल पान कर संसार को आनन्द प्रदान चकया और **'शिवकल्ामिसुतु'** की उक्ति को यथाथप में ि‍ररिाथप कर चिवानन्द कहलाये।

उन्हीं ‍ंकी कृपा से श्रीधर राव साक्षि्‍ चिदानन्द हो गये। वैसे ि‍ो वैराग्य के बीज का रोपण नन्हें से श्रीधर राव के मन में उनके नाना के चमत्र श्री अनन्‍िैया ने चकया और मानव-सेवा के क्षेत्र में राष्ट्रचपिा बापू के प्रचि उनके हृदय में बिपन से ही अगाध श्रद्धा रही।

कभी 'आनन्द-कुटीर' के सामने बैठ कर गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज दीन-दुक्तखयों ‍ं की सेवा-सुशूरूषा करके **'सवेसनुतु शनरामयाः'** को ि‍ररिाथप करिे थे। श्रीधर राव को भी हमने देखा है- चजनके दुगपक्तिि घावों ‍ंसे पीप ि‍ूि‍ू पडिा था, हाथों ‍ंऔर पैरों ‍ंकी उँगचलयों ‍ंका चलजचलजािा हुआ वह सडा माँस रह-रह कर टपक पडिा था चजसमें कीडे कुल-बुलिे थे, उनका औषधोपिार करिे समय जब कभी कोई रोगी भावों ‍ंसे उठिी हुई असहनीय टीस के कारण कराह उठिा ि‍ो उसकी आँखों ‍ंकी कोरों ‍ंमें उमडिे हुए आँसुओं ‍ंको श्रीधर राव जी धीरे से अपनी लम्बी-लम्बी, गोरी गोरी 'स्‍पंज सी' उँगचलयों ‍ंसे पोंछ चदया करिे थे और ि‍ब वह रोगी टकटकी बाँध कर राव जी की ओर देखिे हुए करुणा से अचभभूि हो कर चससक उठिा था, 'स्वामी जी! मैं मर चकलैणी नी जान्दों!‍ं' हमने उस समय राव जी की बडी-बडी आँखों ‍ंमें ि‍ैरिी चजस ि‍रलिा को देखा है, उसकी याद कर हम आज भी चसहर उठिे हैं, रोमांि हो जािा है।

हमने राव जी को लंगर में झाडू लगािे, जूठे बिपन माँजिे अनेक बार देखा है। ि‍ब भी चिवानन्द चिस्पेंसरी ि‍ो जैसे उनका संसार थी। रोचगयों ‍ंका मल-मूत्र साफ करिे हुए, लम्बी साँस के साथ राव जी के अधरों ‍ंसे प्रस्फुचटि होने वाला 'हरर! हरर!' ि‍ब् हमने अनेकों ‍ंबार सुना है।

भलों ‍ंको ि‍ो सभी प्यार करिे हैं, पर बुरों ‍ंपर प्यार बरसाने वाला कोई चवरला ही होिा है। 'पचिि-पावन' बनना सरल ि‍ो नहीं ‍ंहै? बुरों ‍ंको राह पर लगािे हुए ि‍ब के राव जी और आज के स्वामी चिदानन्द जी को कई बार धोखा भी चमला है, चकनुतु मनुष्य की अच्छाई पर से उनका चवश्वास कभी नहीं ‍ंि‍गमगाया। चजन्होंनें इस चिवानन्द आश्रम में घुटनों ‍ंके बल रेंगना छोड कर लडखडािे कदमों ‍ंपर खडा होना सीखा, महा-मानव स्वामी चिवानन्द जी से चपिा का प्यार पाया, उन्होंनें 'कुपुत्रो जायेि क्वचिदचप कुमािा न भवचि' के अनुसार स्वामी चिदानन्द जी से मािा की ममिा भी पायी है। यचद कोई थोडा भी बीमार पड जािा था ि‍ो राव जी की आँखों ‍ंसे नीदं कोसों ‍ंदूर ि‍ली जािी थी।

ईश्वर करे वे चदन सदा-सदा बने रहें। मेरी ि‍ि‍ि‍ि‍ – ि‍ुभ-कामनाएँ।

* * *

साधु-स्वभाव

– श्री पंशि गोपालदत्तिाायण जी –

स्वामी जी के साधु-स्वभाव से प्रायीः सभी लोग पररचिि हैं। आये चदन लोग उनके सन्त-स्वभाव के कृपा-भाजन बनिे रहिे हैं िथा उनकी िरण में आ कर उनकी कृपा से सनुतुष्ट् िथा कृिाथप हिो रहिे हैं। मुझे भी स्वामी जी के चनकट सम्पकप में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं उनके सहज-सरल व्यवहार से पररचिि हाँ। स्वामी जी अत्यन्त दयालु िथा कृपालु स्वभाव के हैं। वह गुणों ंके भण्डार हैं िथा सन्त-स्वभाव और परोपकार की भावना उनमें स्वाभाचवक है। िुलसीदास जी ने सन्त की असली पहिान यही बिायी है-

'पर उपकार विन, मन, काया।
सन्त सहज सुभाउ खगराया ।।'

(मानस उ.का. १२०/७)

स्वामी जी के दयालु स्वभाव से मानव-समाज के दीन-दुीःखी व अनाथ लोग चविेष रूप से लाभाक्तन्वि हुए हैं। स्वामी जी का दयालु स्वभाव उस समय नजर आिा है, जब समाज की दृचष्ट् में घृचणि, िारीररक व मानचसक व्याचधयों ंसे अत्यन्त रोगयुि िथा आचथपक ऩस्थचि से दीन-हीन के ऊपर स्वामी जी दृचष्ट्पाि करिे हैं। ऐसे लोगों ंको देख कर स्वामी जी का दयालु स्वभाव द्रचवि हो जािा है चजसके कारण उनमें अन्तर-पीडा उत्पन्न हिोिी है और चजसके फल-स्वरूप स्वामी जी के प्रसन्न मुख पर उदासी के बादल छा जािे हैं और सब-कुछ भूल कर वे उनके पास िक पहुाँनिे के चलए, उन्ें दोनों ंहाथ फैला कर आश्रय देने के चलए िथा उनके दुीःख में भाग लेने के चलए; उन्ें चदव्य व नवीन जीवन देने के चलए अपने िीव्रगामी कदमों ंसे आगे बढ़िे हैं। स्वामी जी को इस िरह जािे देख कर सभी दिपक गण उनके सन्त-स्वभाव से आश्चयपचचकि हो जािे हैं।

स्वामी जी को जब कभी मैंने आश्रम में देखा, लोगों ंसे चघरा हुआ पाया। सिाा चक चकसी चवषय में चविार-चवमिप हो रहा होगा। उत्सुकिावि जब मैं वहााँ पहुाँिा, िो देखा चक स्वामी जी के इदप-चगदप अनेकों ंझंझटों ंमें फैसे, परेिान, दुीःखी लोग अपनी-अपनी राम कहानी सुना रहे हैं, क्ोंचक स्वामी जी ऐसे सन्त हैं चजनके पास आ कर हर दुीःखी व्यक्ति अपनी समस्या अथवा

दुीःखभरी कहानी सुना कर कुछ सन्तोष पािा है और स्वामी जी से उचिि राय अथवा अन्य सहायिा ले कर अपने दुीःख से छुटकारा पािा है। इधर स्वामी जी भी 'येन-केन- प्रकारेण' उन्ें
समस्याओं ंसे उबारने के चलए िक्ति से भी अचधक प्रयास करिे हैं और जब एक दुीःखी व्यक्ति का उदास व मुरझाया हुआ मुख उनके समुमुख एक बार खुले रूप में हाँस नहीं ंजािा, िब िक उन्ें सन्तुचष्ट् नहीं ंहोिी। चविेष कर हाँसना स्वामी जी का एक स्वभाव भी है। उनके चित्त को भाने वाली
केवल यही दो बािें हैं-हाँसना और हाँसाना।

अिीः अक्तन्तम पंक्तियों ंमें संचक्षप्त रूप से यही कहाँगा चक स्वामी जी आनन्द चनधान हैं।
उनके सम्पकप में आ कर व्यक्ति पूणप सन्तोष व चदव्यानन्द को प्राप्त करिा है, फल-स्वरूप उनका
जीवन चदव्य हो जािा है। स्वामी जी भगवान् से सदैव 'सवप-लोक-कल्याण' के चलए ही प्राथपना
करिे हैं।

समस्त पररवार की ओर से उनके िरणों ंमें मेरी मंगल-कामनाएाँ।

-महन्त, ित्रुघ्न मच्चन्दर
शिवानन्दनगर

***

बहुशवध शवभूशियों ंके धनी स्वामी शिदानन्द

-श्रीमिी रामप्यारी िमनलाल िमाण, शदल्ली-

सन्त-जन भगवान् के साकार रूप हैं जो धरिाल पर अविररि हो भवसागर में िूबिे हुए
जीवों ंका उद्धार करिे िथा भवरोगों ंसे पीचडि जीवों ंके अज्ञानान्धकार को चमटा कर ज्ञान के प्रकाि से प्रकाचिि करिे रहिे हैं। चिवस्वरूप, आनन्ददािा िथा कचलप्रदत्त पीडा से पीचडि जीवों ं

के उद्धारक, भिों ंके रक्षक, दुक्तखयों ंके सहायक सद्गुरु भगवान् श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज ऐसे ही सन्त थे। उन्हीं ंस्वामी चिवानन्द जी के योग्यिम चिष्य एवं उत्तराचधकारी हैं- श्रद्धास्पद स्वामी चिदानन्द जी महाराज।

'परशहि सररस धरम नशहं भाई।
पर पीडा सम नशहं अधमाई ।।'

यह चसद्धान्त श्री स्वामी जी के जीवन का मूलमि है। आपका समूपूणप जीवन त्यागमय है। सेवा के ि आप मूचिपमान् रूप ही है। मन, विन िथा कमप से सदा सेवा में लीन रहिे हैं। जीवन का हर क्षण सेवामय है। सब प्राचणयों ंका कल्याण हो यही आपका हर क्षण प्रयत्न रहिा है। आपका रोम-रोम लोक-कल्याण और चवश्व-कल्याण की यािना करिा है। आपके चलए समूपूणप जगि् ही अपना पररवार है- **'वसुधैव कुटुम्बकम् ।'** भला भगवान् में भेद-बुक्तद्ध कहााँ? सब चबना रोक-टोक आपके पास पहुाँि अपना चभक्षा-पात्र फैला सकिे हैं और आप उन्हें चनरिा कभी नहीं ं लौटािे; क्योंचंक आप जनिा में जनादपन, जीव में चिव िथा नर में नारायण के दिपन करिे हैं। आपकी दृचष्ट् में भेद नहीं ंहै। सबके साथ समान व्यवहार आपकी अपनी चविेषिा है।

चवनम्रिा की ि आप साक्षाि् मूचिप ही हैं। यचद आप मयापदा-पालन में भगवान् राम और िारीररक गठन िथा भाव-चवभोरिा में िैिन्य महाप्रभु के सदृश्य हैं, ि नाम-चनष्ठा में गुरु नानक की कोचट में आिे हैं। आपके िब्दों ंमें- 'हमारा असली रोग है प्रभु-चवस्मरण और भगवद्-नाम गान में अरुचि।' यही भवरोग है। उसके चलए औषचध है एकमात्र राम-नाम ।

पूज्य स्वामी जी ने अपने गुरुदेव के चदव्य गुणों ंको इिना स्वायत्त कर चलया है चक भिजन अपनी अटूट श्रद्धा एवं प्रगाढ़ भक्ति से आपमें ही गुरु भगवान् के दिपन करिे हैं। आप अब भी अपने सारे चक्रया-कलाप अपने को गुरुदेव का सेवक मान कर ही करिे हैं। **'मेरा मुझ में कुछ नहीं,ं जो कुछ है सो िोर।'** 'चिवानन्दापपणमसुिु' कह कर ही सारे कायप आरम्भ करिे हैं।

'करुणैकमूचिप.' 'करुणाचसिौ' आपके नाम हैं। आपकी करुणा के पात्र केवल मनुष्य ही नहीं,ं पिु-पक्षी एवं वनस्पचि- जगि् के पेड-पौधे भी हैं।

आप क्या नहीं ंहैं? प्रेेम, भक्ति, कमप, ज्ञान एवं राजयोग सभी रूपों ंमें आपके चनराले दिपन हैं। मनो-चनग्रह एवं इक्तिय-संयम का ि आप मूचिपमान् रूप हैं। आपका जीवन अत्यन्त कायप-व्यस्त है। **शनःस्वाथण सेवा ही आपका शदन है, शनष्काम भच्चि ही राशत्र है िथा सेवायोग ही आपका शवश्राम है।**

आपका जीवनादिप है-

देखो, पर ध्यान न दो, सुनो, पर कान न दो,
स्पिण करो, पर स्पिण-भान न हो, िखो, पर स्वाद न लो।

हमारी प्रभु से प्राथपना है चक वह आपको दीघापयुष्य प्रदान करें चजससे संसार के मायाजाल में भ्रचमि मानविा आपके पथ-प्रदिपन का लाभ चिरकाल िक उठािी रहे!

***

मिोश्वरी िू धन्य है!

– कु. शवमला िमाण-

माँसरोचजनी िू धन्य है! मिृ-श्री िू धन्य है!
माँसरोचजनी िू धन्य है! मिोश्वरी िू धन्य है!

श्रीधर-सरीखे सिु को, जन्म चदया िुम्हीं ंने;
चिचु-क्रीडा, बाल-केचल का आनन्द चलया िुम्हीं ं ने।
िेरी कोख धन्य है, िेरी गोद धन्य है।
ममिामयी िू धन्य है, मिोश्वरी िू धन्य है।।

ईि-प्रेम का संगीि सुनाया िुम्हीं ंने,
मानव-सेवा का गीि चसखाया िुम्हीं ंने।
िेरी ममिा धन्य है, िेरी वत्सलिा धन्य है।
नेहमयी िू धन्य है, मिोश्वरी िू धन्य है ।।

चदव्य जीवन का बीज बोया िुम्हीं ंने,
सन्त-जीवन का पाठ पढ़ाया िुम्हीं ंने।
िेरा त्याग धन्य है, िेरा भाग्य धन्य है।
करुणामयी िू धन्य है, मिोश्वरी िू धन्य है।।

िेरा लाडला बना, चिवानन्द-दुलारा,
िेरे नयनों ंका िारा, जगि् का सहारा।
िुम्हारी चिक्षा धन्य है, िुम्हारी दीक्षा धन्य है।
जगज्जननी िू धन्य है, मिोश्वरी िू धन्य है।।

'चिदानन्द' ि◌ुम्हारा प्राणधन है हमारा।
हृदय-धन ि◌ुम्हारा, जीवन-धन है हमारा।
ि◌ुम्हारा धाम धन्य है, ि◌ुम्हारा पररवार धन्य है।।
प्रिा: स्मरणीया ि◌ू धन्य है, मिोश्वरी ि◌ू धन्य है।।

कोचट-कोचट प्रणाम माँ! ि◌व श्रीि–रणों ◌ंमें,
यही माँगिे आज माँ कर-बद्ध ि◌ुम्हीं ◌ंसे।
सूरजि–न्दा जब लौं ◌ंि◌मकैं,
चिदानन्दर्ी–-वदन ि◌ब लौं ◌ंदमकैं।
चदव्य जीवन संघ धन्य है, चिवानन्द आश्रम धन्य है।
चवश्व-वनद्या ि◌ू धन्य है, मिोश्वरी ि◌ू धन्य है।

जब लौं ◌ंगंग-जमुन की धारा, ि◌ब लौं ◌ंजीये 'लाल'ि◌ुम्हारा।
पा कर ि◌ुम्हारे लाल को, अक्तखल चवश्व धन्य है।।
'चिवानन्द-दरबार' धन्य है, 'चिवानन्द-श्रीधाम'धन्यहै।
परम आराध्या ि◌ू धन्य है, परम वन्दनीया ि◌ू धन्यहै।।

– श्रीधाम पररवार

नूिन ि◌ुभारम्भ

सौभाग्यिाली आत्मन्!
दुलणभ मानव-जन्म उपहार शमला,
चफर क्ों ◌ंकरना इसे व्यथण भला?
है कहाँ भरोसा इस क्षचणक साँस का भला?

इसी मानव देह से पाओ आत्मसाक्षात्कार।
मानव िरीर से ही सम्भव भगवद् साक्षात्कार ।

भारीय परम्परा में

श्री एन. अनन्तनारायि-

–

कटक के बाराबत्ती स्टेचियम का मैदान था और सचदपयों ंकी दोपहर थी, धूप त्तखली हुई थी। उस धूप का आनन्द लिे हुए हजारों ं लोग-त्तस्त्याँ, पुरुष और बिे, हर जाचि के, अमीर- गरीब, पढ़े-चलखे और अनपढ़, रंग-चबरंगे कपडों ंमें एक चविेष उत्साह और उत्सुकिा चलये हुए इधर-उधर घूम रहे थे। ये लोग कोई सकपस या मेला देखने नहीं ंआये थे, न ही कोई खेल ि मिाा-चक्रकेट या फुटबाल का मैि देखने के चलए आये थे। इिनी बडी संख्या में इन लोगों ंको यहााँ खींि कर ले आने वाला यह अवसर था, चदव्य जीवन संघ का अत्तखल भारीय सम्मेलन और आकषपण का मुख्य कें द्र था-स्वामी चिदानन्द के दिपन!

सम्मेलन के अत्तन्तम चदन, जब मुख्य अचिचथ सामूचहक चित्र के चलए एकचत्रि हुए िो जनरल कररअप्पा, जो चक स्वामी जी महाराज की अगली कुसी पर बैठे हुए थे, उनकी ओर झुक कर

आश्चयप सचहि बोले, **"इन लोगों ों में आपके प्रशि जो दृढ़ शवश्वास और पूिण भरोसा है, उसे देख कर िो मैं आश्चयण िशकि रह गया हूँ!"**

उनकी यह चटप्पणी हमें स्वामी जी की गहराई और ऊँाँिाई और उसका मूल्य बिािी है।
स्वामी चिदानन्द जो काचिपक के मनोरम और ज्योचिमपय पिूिमा की भााँचि स्वामी चिवानन्द नामक प्रकािमान आध्याक्त्मक सूयप के प्रकाि को पूणपिया प्रचिचबक्म्बि करिा है, आज बडी संख्या में चवश्व भर के आध्याक्त्मक चजज्ञासुओं ों के पूणप चवश्वास और आस्था को प्राप्त चकये हुए हैं। उनके अनुयायी और प्रिंसकों ों में चवनिी, चनम्न िथा उि एवं सभी श्रेचणयों ों के और सभी प्रकार के लोग हैं।

स्वामी चिवानन्द जी महाराज के बेजोड चिष्य आध्याक्त्मक ज्ञान के प्रिार-प्रसार के सेवा कायप को (जो चक गुरुदेव को अिीव चप्रय रहा है) चवश्व-भर में कर रहे हैं। चदव्य जीवन लहर के इन समस्त मिलचियों ों में से सम्भविया स्वामी चिदानन्द अग्रगण्य हैं जो चपपासु आत्माओं ों के चलए व्यक्तिगि रूप से सवपत्र सुलभ हैं।

यह मानव-जन्म परमात्मा का अमूल्य चदव्य उपहार है। अपने परम श्रेयस के हेिु इसका भव्य उपयोग करें। इक्तियों ों को चनरथपक िुिुष्ट् करने में इस जीवन को नष्ट् न करें। सेवा करें। पचवत्र बनें। ईश्वर की उपासना करें। ध्यान करें। ज्ञान प्राप्त करें। आत्म-साक्षात्कार करें।

-स्वामी शिदानन्द

चदव्य जीवन का प्रकाि

– श्री एन. सी. घोष –

चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज **भारि की सांस्कृशिक परम्परा के वास्तशवक स्वरूप हैं।** चहनदू धमप और दिपन को पावन और समृद्ध करने वाले आधुचनक सन्तों ों और चविारकों ों में उनका एक चवचिष्ट् स्थान है। **उनकी सहज स्वाभाशवक शवनम्रिा जो उनके व्यवहार में एक शवलक्षिा लािी है, शनष्काम सेवा के शलए उनका छलकिा हुआ उत्साह; उनमें से शवकीण होने वाली िाच्चन्त और आनन्द, और सबसे बढ़ कर शदव्य जीवन के मशहमा मच्चण्डि आदिों का शवश्व में िुहुँ ओर पुनरुत्थापन करने के शलए उनका अथक प्रयास, यह सब हमें आध्याच्चिक जीवन और साधना के प्रशि एक नवीन दृशष्ट्कोि दिे हैं।**

अपने िपस्वी और पचवत्र व्यक्तिगि जीवन िथा सने्दि और चवदि में प्राप्त चवलक्षण उपलक्तब्धयों ों के कारण स्वामी चिदानन्द जी ने चवश्व-ख्याचि प्राप्त कर ली है िथा चजनें् भी उनके सम्पकप में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उन सभी के चलए वे हरमन प्यारे हो गये हैं।

भारिीय सांस्कृचिक परम्परा के सौभाग्यिाली उत्तराचधकारी के रूप में, स्वामी जी ने अपना जीवन भारिवषप के त्याग और सेवा के दीक्तप्तमान् आदिों का उज्ज्वल ज्योचिपुंज बना चलया है; स्वयं को हमारे धमप का जीवन्त साकार रूप बना चलया है िथा परोपकार और परम आत्म-ज्ञान के उदात्त चसद्धान्तों ों का स्वयं को मूचिपमान् रूप बना चदया है।

'मुझे अपने दासोंकादास बनने दो'

आजकल पचश्चम के युवा लोगों ंके बिी एक बहुि अथप-गचभपि और लोकचप्रय
कहावि प्रिचलि है- 'लेट गो एंलिेट गॉि' अथापि् 'अहंकार का त्याग करो और ईश्वर
को (अपने में) प्रविे करने दो।' यह त्याग भी है और चनग्रह भी। अहंकार बार-बार प्रकट होना िाहिा है, अपने-आपको अचभव्यि करना िाहिा है, अपने अक्तस्तत्व को प्रमाचणि करना िाहिा है, अपनी उपक्तस्थचि की ओर ध्यान आकचषपि करवाना िाहिा है।
अहंकार की इस अचभव्यक्ति के प्रचि अस्वीकृचि ही इस प्रचक्रया का प्रारम्भ है "मुझे अपने
दासों ंका दास बनने दो।"

-स्वामी शिदानन्द

उनकी पावनिा की एक झलक

-जनरल के. एम. कररअप्पा –

कुछ वषप पहले जब मैं पहली बार उनसे चमला िो **उनके शनरस्त्र कर देने वाले, मनोहारी और आकषणक प्रेमपूिण व्यवहार, और मानव मात्र की भलाई के प्रशि उनके सिै गम्भीर उद्गारों ंके कारि मैं अनजाने में ही उनकी ओर च्चखंि गया। गुरुदेव ने शजस भलाई और अच्छाई का विणन शकया है, ये उन समस्त अच्छाइयों ंका मूशिणमान् रूप हैं। शकसी भी बाि को कहने और करने के ढंग में उनकी सदा ही दृशष्टगोिर होने वाली सौम्यिा सिमुि ही व्यच्चि को आनन्द प्रदान करने वाली है।** मैं हर आयु के, हर श्रेणी के, चकसी भी धमप या जाचि के उस व्यक्ति को-जो मानविा की भलाई करने में रुचि रखिा है-स्वामी चिदानन्द जी के सन्देिे के छोटे-छोटे िौपन्ने या पुक्तस्तकाएँ पढ़ने के चलए अत्यन्त बलपूवपक अनुरोध करिा हूँ, क्योंचक ये सन्देिे अत्यन्त उदार हृदयी और प्रयोग करने के चलए अत्यन्त व्यावहाररक हैं।

यह बाि िायद कुछ अटपटी लगे चकन्तु उन परम पूज्यश्री का अपने आरक्तम्भक चदनों ंमें बाइचबल का अध्ययन करना मात्र एक चनयम ही नहीं ंथा। उनके चलए यह परमात्मा में ही चनवास
करना था। वे यीिु के प्रचि उिना ही भक्तिभाव रखिे हैं, चजिना श्री चवष्णु भगवान् के प्रचि। वे
ऐसे कट्टर व्यक्ति नहीं ंहैं (मैं पुनीः दोहरािा हूँ-नहीं ंहैं) जो केवल चहनदू धमप की महानिा के बारे में बाि करिे हों।ं आजके इस समय में, जब चक सारे संसार के लोगों ंके मन-मक्तस्तष्क में
पूणपिया हलिल है, और सभी भ्रान्त अवस्था में हैं, **हमारे विणमान गुरु, परम पूज्य श्री स्वामी शिदानन्द जी से बढ़ कर और कोई परमािा का सन्देिवाहक नहीं ंहो सकिा।** योग और साधना के सम्बि में उनके चविारों ंको जानना सिमुि बहुि ही लाभप्रद है, क्योंचक वह दैवी उपदेि बन कर व्यक्ति के चविारों ंऔर कमों को सँवारने में सहायक बनिे हैं। उनकी अपनी ही
पुस्तक 'पाथ टू बैलेंसनैस' में 'लेखक की भूचमका' चजस सहज भाषा में चलखी है, वह उनकी
चवनम्रिा को अत्यन्त भली-भाँचि अचभव्यि करने के चलए पयापप्त है। जो लोग मानचसक िाक्तन्त और चदव्य आनन्द प्राक्तप्त के इच्छुक हैं, उन सभी को मैं अत्यन्त बलपूवपक उनकी पुस्तक - 'पाथ टू
बैलेंसनैस' पढ़ने का अनुरोध चकया करिा हूँ। मैंने इसे बहुि बार पढ़ा है और सदा ही अत्यचधक मानचसक िाक्तन्त और सन्तुचष्ट प्राप्त की है।

गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने सत्य, अचहंसा िथा ब्रह्मियप के चसद्धान्तों के ओिरण पर बल चदया। सत्यिा, िुद्धिा, प्रेम, सेवा, भक्ति, ध्यान िथा ईश्वरानुभूचिमय जीवन को स्वामी जी ने 'चदव्य जीवन' की संज्ञा दी है। १९३६ में संस्थाचपि अपनी 'चदव्य जीवन संघ' संस्था द्वारा इन्होंने चदव्य सन्देिों का प्रिार चकया। वे चदव्य जीवन के धमपदूि के रूप में अचभनक्तन्दि हुए।

- स्वामी शिदानन्द

प्रािीन मूल्यों पर बल

-श्रीमिी साशवत्री असोपा मिा जी –

श्री स्वामी चिदानन्द जी अत्यचधक सवपिोमुखी व्यक्तित्व से सम्पन्न हैं। यह उन पर चिवानन्द का मुद्रांकण है। मैंने उन्हें प्रभुमूचिपयों की पूजा करिे और सफाई कमपिाररयों को भोजन क्तखलािे समय एक ही सम-भाव में देखा है। आश्रम में यचद चकसी पर कोई मुसीबि आ पडे िो वह सीधा स्वामी चिदानन्द जी के पास जािा चदखायी देगा, क्योंचक उनके चलए सेवा, साधना का प्रथम पग है। वह रोग-ग्रस्त पिु और ररसिे घावों वाले कुष्ठ रोगी की सेवा अत्यन्त चदव्य भाव से करेंगे। सम्भविया वह उनमें भगवान् के ही दिपन कर रहे होिे हैं। और चनचश्चि रूप से वे लोग भी उन्हें अपना भगवान् ही समझिे हैं। वह प्राथचमक सहायिा देिे हुए साथ ही साथ हास-पररहास भी कर सकिे हैं। वह अचिचथयों की देखभाल अत्यन्त हषापनन्द पूवपक कर सकिे हैं और अवसर के अनुकूल अत्यचधक उत्साह और गम्भीरिा से प्रविन भी कर सकिे हैं। स्वामी चिवानन्द जी कहिे हैं चक चकसी भी पथ पर सफलिा पाने का रहस्य है प्रसन्निा, चिदानन्द जी सदैव प्रसन्न रहिे हैं। वह सदा कहिे हैं, "चिन्ता क्यों? जो कुछ भी होिा है, सब भगवान् की इच्छा के अनुसार होिा है। इसे जान लो और प्रसन्न रहो।" यही कारण है चक स्वामी चिदानन्द जी कभी भी असफल या चविचलि नहीं होिे, भले ही कैसी भी पररक्तस्थचि क्यों न हो! चकसी भी िरह का काम हो, वह अत्यन्त प्रसन्निापूवपक करेंगे। वह एक ही समान सहजिा से क्तखलाने, पकाने, गाने, झाडू-बुहारी करने िथा ध्यान करने और समाचध में जाने के कायप कर लेंगे। वह सरलिम जीवन जीने िथा उच्चिम चविार रखने में चवश्वास रखिे हैं। उनका दिपन अचधक से अचधकिम व्यावहाररक िथा न्यून से न्यूनिम सैद्धाक्तन्तक है। वह प्रािीन आध्याक्तत्मक मूल्यों पर आधाररि नव-जगि् को लाने वाले अग्रदूि हैं। वह स्वयं भी उनके अनुसार जीवन जीिे हैं और हमें भी ससखािे हैं चक प्रािीन आध्याक्तत्मक मूल्य जीवन्त सत्य हैं, पुस्तकों में बन्द कपोल कल्पनाएँ मात्र नहीं हैं।

चपंजरा िो चपंजरा ही है भले ही लोहे का हो अथवा स्वणपका।स्वणपकाचपंजराभी उन्मुििा को छीनिा ही है। अिः इसको भी त्यागना ही पडेगा।यहलोहेकेचपंजरेसे अचधक सुन्दर और मूल्यवान् हो सकिा है; चकन्तु कायप िो इसकाभीवहीहै।अिःइसके साथ की ममिा को भी एक चदन त्यागना ही होगा। और, यहत्यागिीघ्रिा-प्रिीघ्र होगा अथवा चबलकुल भी नहीं होगा।

-स्वामी शिदानन्द

आदिण महापुरुषों ्के आकिा का एक उज्ज्वल नक्षत्र

–श्री ए. के. कृष्ण-सिीा नाच्चम्बयार –

दचक्षण भारि के एक धनिा् पिररवार में उत्पन्न होने बाले श्रीधर राव (अब स्वामी चिदानन्द), भारिवषप की आध्याक्त्मक संसूकृचि की सवोत्तम परम्परा- 'ईश्वर से संयुक्ति और सांसाररक जीवन से चवरक्ति' को साथ ले कर जन्मे थे। वह उिकोचट के साधक हैं और अन्ती:प्रज्ञा, अिीव करुणा और स्वाभाचवक सरलिा से सम्पन्न हैं। गुरु स्वामी चिवानन्द जी की योग चिक्षाओं ्में पूणपिा से ढल गये और उन चिक्षाओं ्की प्रचिमूचिप बन गये। स्वामी चिदानन्द सदैव प्ेरेमपूवपक चनष्काम भाव से दूसरों ्की सेवा में रि रहने लगे िथा कुष्ठरोचगयों, ् कष्ट्-पीचडि पिु-पचक्षयों ्िथा अन्य अभावग्रस्तों ्की देखभाल अपने हाथों ्से करने लगे िीघ्र ही ऋचषकेि के आस-पास के सभी लोगों ्के चदलों ्को उन्होंने जीि चलया। लोग उनमें एक सहायक चमत्र, एक दािपचनक और एक चनदेिक के दिपन करने लगे।

यद्यचप स्वामी चिदानन्द जी सभी प्रकार के योगों ्में रुचि रखिे हैं, िथाचप आध्याक्त्मक चवकास के चलए वह राजयोग की साधना करिे रहे हैं। इस साधना ने उन्हें ऐसा बना चदया है चक अपने चनज सक्तिदानन्द स्वरूप में क्तस्थि रहिे हुए ही वह हर सम्भव पररक्तस्थचि में चवचवध प्रकार के लोगों ्से यथानुसार यथोचिि व्यवहार करिे हैं। वह सदैव राग-द्वेष की िरंगों ्से ऊपर सदा-सवपदा समिा की अवस्था में क्तस्थि पाये जािे हैं। अहं से ऊपर उठे हुए वह चवनम्रिा की मानो प्रचिमूचिप ही हो गये हैं।

स्वामी शिदानन्द हमारी आध्याच्चिक संसृकृशि की सिी सन्तान हैं। मानव के शवशवध धर्मों के प्रशि वह एक माँ के समान समभावपूिण सहानुभूशि रखिे हैं। स्वामी जी का कथन है चक भगवान् चकसी एक धमप के ही नहीं ्हैं, क्योंचक भगवान् न चहन्दू हैं, न ही चसख या ईसाई। इस सम्बन्ध में वह 'विपमान, भिू और भचवष्य के सभी सन्तों'् को निमस्तक प्रणाम करिे हैं। वह भगवान् के पथ पर आरूढ़ एक सन्त-स्वभाव के व्यक्ति हैं। भारिवषप की आध्याक्त्मक संसूकृचि के अनुरूप जीवन, जो चक उनके गुरु स्वामी चिवानन्द जी के चसद्धान्त थे, के प्रचार-प्रसार के चलए वह अपने िरीर की सुख-सुचवधा की ओर चंकचिि् भी ध्यान न देिे हुए अथक पररश्रम करिे हैं। इस रूप से वह चबलकुल वही कर रहे हैं जो सेंट पाल ने यीिु के चसद्धान्तों ्के चलए चकया था।

स्वामी चिदानन्द जी ऋचषकेि में चजस आध्याक्त्मक संस्था अथापि् चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष होने से एक अचनवायप अंग हैं-उसी के माध्यम से चवगि बहुि वषों से आध्याक्त्मकिा का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। अपने इस कायप के दौरान वह इस चवश्व में लगभग सभी देिों ्में चवचभन्न धमों के लोगों ्को सम्बोचधि करिे हुए घूमे हैं। और उनका केवल चहन्दू ही अत्यन्त उत्साहपूवपक स्वागि नहीं ्करिे अचपिु ईसाई, मुक्तिम, यहदी आचद सभी उिने ही उत्साह और प्ेरेमपूवपक उनका स्वागि करिे हैं, क्योंचक वह जहाँ भी जािे हैं, केवल मानविा की भलाई की बाि करिे हैं। **अब िो वह शवश्व में िाच्चन्तदूि बन गये हैं,** िथा जो भी उनके सम्पकप में आिे हैं उनके चलए एक बडे सहायक और सान्त्वना प्रदािा हैं। उनके आध्याक्त्मक व्यक्तित्व की दीक्तप्त िथा उनके

उपदिों के प्रकिा ने उन्ें पयापप्त प्रचसक्तद्ध चदलायी है। वास्तव में स्वामी और चिक्षाओं द्वारा दूसरों की सेवा करने के चलए ही है। ...

***

गुरुदेव उनमें शनवास करिे हैं

– प्रो. जे. एन. असोपा-

"मैं एक अप्रकट हीरक था,
मेरी प्रदिी शकरि ने मुझे प्रकट कर शदया!"

श्री स्वामी चिदानन्द जी के चलए मुझे प्रायीः कुरान की यह पंक्तियााँ याद आ जािी हैं। श्रीधर राव (पूवापश्रम में चिदानन्द जी इस नाम से जाने जािे थे) से श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज िक की यात्रा, आकांक्षा और उपलक्तब्ध, दोनों एक से एक बढ़ कर और स्वयं को प्रकट कर देने वाली ज्वलन्त चकरण रही है। सिंिोा के मूल्यों की उपलक्तब्ध में, वास्तव में स्वामी चिदानन्द जी महाराज सवपश्रेष्ठ हैं। सवपप्रथम जो व्यक्ति को प्रभाचवि करिा है, वह उनकी चवनम्रिा और सेवा की भावना है। **वह शवनम्रिा के अविार हैं। मैं, जो अनुभव करिा हूँ, वह यह है शक वे केवल इिना ही नहीं हैं। मेरे शलए िो वे स्वयं शवनम्रिा ही हैं।** मैं यह कोई अचियोक्ति का प्रयोग नहीं कर रहा हाँ। चवनम्रिा उनमें मूचिपमान् हो गयी है, चवनम्रिा उनमें पररपूणपिा को प्राप्त हो गयी है। सेवा-भावना उनमें अचि गहन है, ऐसे **सेवामय जीवन के प्रशि उनके प्रेम का कहीं ओर छोर नहीं है।** मैं उस िथ्य को दोहरा मात्र ही रहा हाँ जो चबलकुल सामने प्रत्यक्ष चदखायी दिा है। **सेवा, भच्चि, दान, पशवत्रिा, ध्यान, साक्षात्कार के गुरुदेव के कथन उनमें सजीव हो उठे हैं।**

मनुष्य और बन्दर की समान भाव से सेवा करिे हुए वे देखे जािे हैं। जो व्यक्ति ररसिे हुए घावों वाले कुष्ठरोचगयों में अथवा अपंग बन्दर या घायल चगलहरी में श्रीमन्नारायण के दिपन कर सकिा है, वे चनस्सन्देह नारायण भगवान् का चप्रय पात्र ही हो सकिा है।

चिदानन्द जी हमारी प्रािीन संस्कृचि से भी एक कदम आगे हैं। चकसी राष्ट्र की संस्कृचि का प्रिीक वास्तव में उस राष्ट्र की वे कचिपय महान् चवभूचियााँ ही होिी हैं जो अपने जीवन के कायपक्षेत्र में दुीःखी हृदयों को सानत्वना देने के चलए िथा संसार–िक्र में फाँसी हुई मानविा के अध्यात्म के प्रचि िोलिे हुए चवश्वासों को पुनीः दृढ़ करने के चलए अविररि होिी हैं। **हमारी संस्कृशि में श्रेष्ठिम और उदात्तिम होने के नािे जो कुछ भी सवोत्तम, है, वह सभी कुछ देने के शलए, शिदानन्द जी के पास है। िप और शनष्ठा, सेवा ओर सिाई, परोपकाररिा और आत्याग आशद गुि उनमें श्रेष्ठिा की िरम सीमा िक या सही कहें िो श्रेष्ठिा हैं। एक आदिण साधु, परम संन्यासी, परोपकारी गुरु-यह वे हैं, हमारी संस्कृशि उनमें अपनी पररपूणिा पािी है।**

आधुचनक भारि के पावन सन्त गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज जगि् को प्रकाचि करने वाला प्रिाी चदिा का प्रकाि थे। उनके दि ने मुचनयों, पुण्यात्माओं, सन्तों और ऋचषयों की इस भूचम में जन्म लेने वाले उिकोचट के आध्याक्तत्मक मागप-प्रदिपकों में से उन्ें एक महान् सन्त माना। उन्ोंने अपनी आजीवन की गयी सेवाओं से वैचदक धमप को पुनजीचवि चकया। योग-वेदान्त की अध्यात्म-चवद्या का प्रभाविाली प्रिार चकया जो विपमान िी में अचद्विीय थिा चवचिष्ट् मानी गयी।

- स्वामी शिदानन्द

'सन्त-शमलन सम सुख जग नाहीं'

– श्री लक्ष्मिरि भागविशकंकर, जयपुर –

दुलणभो मानुषोदेहो देशहनां क्षिभंगुरः।
त्रािप दुलणभंमन्ेये वैकुण्ठशप्रयदिणनम्।।

(श्रीमद्भागवि : ११-२-२९)

अपने परमाराध्य श्री सद्गुरु के लाडले-दुलारे एवं हम दीन-हीन, अचंकंनों के सहारे, पथ-प्रदिपक श्री श्री अनन्त श्री सम्पन्न गुरुवयप श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का दिपन चवगि वषप गुरुपूचणपमा के परम पावन सुअवसर पर श्री चिवानन्द आश्रम में हुआ। दिपन करके ऐसा लगा जैसे श्रीमद्भागवि के कचपलोपाख्यान में वचणपि सन्त लक्षणों से प्रकट साक्षात्कार हो रहा है।

शिशिक्षवः कारुशिकाःसुहृदःसवणदेशहनाम्।
अशिजाित्रवः िान्ताःसाधवःसाधुभूषिाः।।

मय्यनन्ेयि भावेन भच्चिंकुवणच्चन्तयेदृढाम्।
मत्कृिे त्यि कमाणिस्त्यिस्वजनबान्धवाः।।

मदाश्रयाः कथामृष्टाःशृण्वच्चन्तकथयच्चन्ति।
पिच्चन्त शवशवधास्तापानैिान्मद्गिसाः।।

(श्रीमद्भागवि : ३/२५-२१-२३)

सरलिा एवं सादगी से प्लाचवि श्री गुरु श्री गोचवन्द रस से आपूररि भीगा-भीगा चदल, खोई-खोई आँखें सदैव भगवदाराधना में समचपपि महान् सन्त का दिपन करके जीवन धन्य हुआ।

अपनेगुरुदेव परम पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के लाडले-दुलारे कृपापात्र हमारे गुरुवर्य्यश्रीस्वामी चिदानन्द जी महाराज, चजनकी दृचष्ट् में परमात्मा के अलावा कोई अन्य स्वरूप
नहीं ◌ंएवंपरमात्म-सेवा के अलावा कोई दूसरा कायप नहीं,◌ं का दिपन कर जीवन धन्य हुआ।

हमारे गीिाकार श्री पाथपसारथी नेपाथप को बिाया-

अनन्यिेिाः सििं यो मां स्मरशि शनत्यिः।
िस्याहं सुलभः पाथण शनत्ययुिस्य योशगनः॥

(श्रीमद्भगवद्गीिा : ८-१४)

पाथप! मेरा चमलना िो बहुि सरल है, पर मेरे हृदय स्वरूप मेरे सन्तों ◌ंका चमलना बहुि दुलपभ है।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यिे।
वासुदेवः सवणशमशि स महात्मा सुदुलणभः॥

(श्रीमद्भगवद्गीिा : ७-१९)

राम का शमलना सहज है सन्त का शमलना दूर।
पलटू सन्त शमले शबना राम से परे न पूर ॥

हमारे परम पावन भारि दे के ऐसे महान् सन्त की चिरायु की िुभ मंगल कामना के साथ-साथ पावन पाद पद्मों ◌ंमें साष्टांग प्रचणपाि।

सन्त सरल शचि जगि शहि जाशन सुभाउ सनेहु।
बाल शवनय सुशन करर कृपा, राम िरन रशि देहु ॥

त्वमेव मािा ि शपिा त्वमेवत्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव शवद्या द्रशविं त्वमेवत्वमेव सवं मम देवदेव॥

शिवानन्द स्वरूप शिदानन्द हे!

–श्रीधाम पररवार –

चिवानन्द स्वस्वरूप, आत्मरूप चिदानन्द है। चिवानन्द अचभन्नरूप, प्रचिरूप चिदानन्द हे। चिवानन्द हृदयरूप, चित्तस्वरूप चिदानन्द है। चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द हे।।

गुरु भगवान्, गुरु गुणगान,गुरुहीप्राणमानीहै।
गुरु ही ज्ञान, गुरु ही ध्यान,गुरुहीपे्रेममानीहै।
गुरु ही दिाा, गुरु ही मिाा,गोचवन्दरूपचनहारीहे।
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचमचिदानन्दहै।।

प्रफुल्ल मुखमण्डल, स्वरूप मनोहारी है।
सरस नैन, मंगल बैन, सवपचित्त हारी है।
लचलि गान, मधुर ि◌ान, कोचकल कण्ठ पै वारी हे।
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द है।

अधर ि◌ुचि, हास उज्ज्वल, रूपहली दन्तावलीहै।
दीप्त भाल, कमुबु कण्ठ, गचि गयन्दवारीहे।
सवाांग लचसि, संग सुखद, चप्रयदिीरूपचनहारीहे।
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्दहे।।

आजानु भुज, वरदहस्त, सवपचहिकारी है।
पादामुबुज ि◌रचणरूप, भव-वाररचधारी है।
िापिल्य मधुर, अचि गम्भीर,पुण्यश्लोक जानी है।
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचमचिदानन्द हे ।।

भि-वृन्द-वक्तन्दिै, चत्रचवध ि◌ापहारी है।
अनाथ नाथ, करुणैक मूचिप, सवप सुखकारीहे।
चवश्व-मण्डन, पाप-खण्डन, सवप दु◌ुःखहारीहै।
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्दहै।

'ि◌ृणादचप सुर्नीन' चवर्नी रूप चनहारी है।
'अमाचनना मानदेन' समर्दी रूप चनखारी है।
'ि◌रोरचप सचहष्णुना', ि◌ान्तचित्त चवहारी है।
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द हे ।।

महादानी, आत्मध्यानी, देहाध्यासनजानीहै।
परम त्यागी, सदिारी, पुण्यश्लोकमानीहे।
परोपकारी, रोगोपिारी, चनजसुख-त्यागीहै।
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचमचिदानन्दहे।।

सवपिास्त् ज्ञान ज्ञिा, ज्ञानयोगी जानी है|
ब्रह्मचनष्ठ, िपोचनष्ठ, वीिरागी मानी है|
प्राण प्रणव, राजयोगी, कमपयोगी मानी हे|
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द हे ||

धमप-प्रिारक, प्ेरेम-संिारक,जन-सेवाधमपमानीहै|
कमप-रि, मृदुल गिा, वणप-भेदनमानीहै|
परम भक्ति, परम िक्ति,सत्यअचहंसामानीहै|
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचमचिदानन्दहै||

चिवानन्द-सन्ेदि सुरचभ, चदव्योपदि प्रसारी हे|
सहज भाव रस-चसिु, काषाय वस्त् धारी है|
या छचव पै बचलहारी हे, 'िरी' सवपस्व वारी है|
चिवानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द हे||

यौवन के स्वचणपम काल में जब हममें से अचधकांि व्यक्ति अपना समय जीवन के सुखोपभोग प्राप्त करने में लगा दिे हैं, श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज उस समय की बहुि अचधक एवं ज्वचलि िक्ति का प्रयोग प्रसन्निापूवपक एवं मिु उदार हृदय से अपने आस-पास की जनिा के कल्याणाथप चकया|

गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज का समूपूणप जीवन पूणपिया चनरन्तर आध्याक्तत्मकिा के क्ेषेत्र में समचपपि हुआ चजसने इन्् चजज्ञासु साधक िथा स्त्ी-पुरुष, युवक, वृद्ध, चवद्याथी, चिक्षक, व्यवसायी, राजनीचिज्ञ जैसे सभी प्रकार के व्यक्तियों ंको चिक्षण-प्रचिक्षण देने, प्ेरेरणा िथा मागप-दिपन देने, प्ेरेररि करने, िाक्तन्त प्रदान करने, रूपान्तरण लाने िथा सहायिा करने में अहचनपि व्यस्त रखा|

- स्वामी शिदानन्द

भच्चिमय जीवन

स्वामी चिदानन्द जी का जीवन भक्तिमय था| श्रीमद्भागवि में कहा गया है–

विी गुिानुकथने श्रवौ कथायां
हस्तौ ि कमणसु मनस्तव पादयोनण:|

सृमृत्यां शिरस्तवशनवास जगत्प्रिामे
दृशष्ट्: सिां दिणनऽसुतु भवत्तनूनाम्।।

भिभगवान् से प्राथपना करिे हैं- हे प्रभो! वाणी आपके गुणानुवाद में, श्रवण आपके कथा-श्रवणमें,हाथ आपकी सेवा में, मन आपके िरण कमलों ंके स्मरण में, िीष आपके चनवासभिूसारेजगि् के प्रणाम करने में िथा नेत्र आपके ििैन्यमय चवग्रह सन्तजनों ंके दिपन में लगे रहें।



चद्वितीय प्रकिा

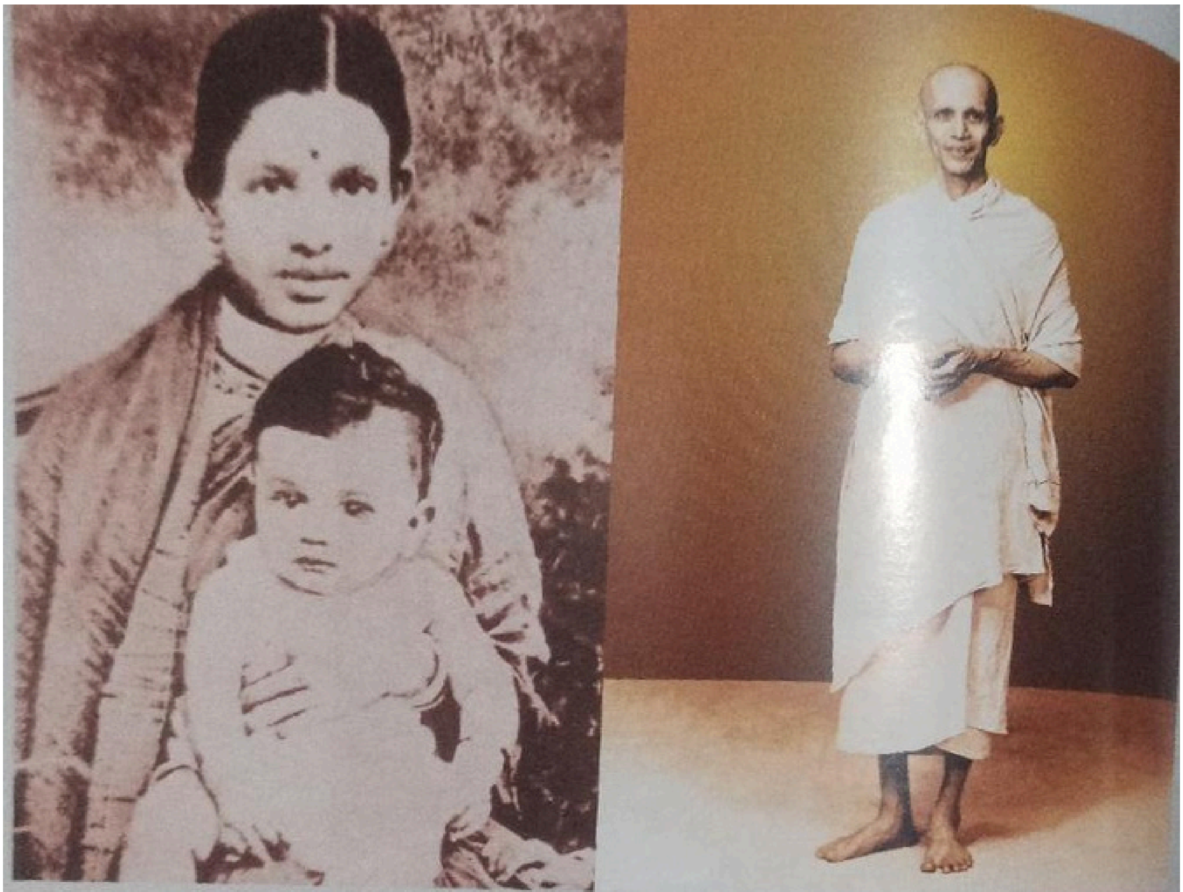
ॐ

' श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

मेरे गुरु ही नहीं ं वरन्
मेरी मिाा िथा मेरे चपिा भी हैं
मैं उन्हीं ं का एक रूप हाँ
मैंने अनुभव चकया है चक मेरे

पीछे उन्ीं ंकी प्ेरेरणा
कायप कर रही है-'

-स्वामी चिदानन्द



जननी के दिव्य अंक में   दिव्यतम संन्यासी रूप में

शदव्यव्यच्चित्व एवं शदव्य कृशित्व
ॐ

धन्य हैं भाग्य िेरे, माँ सरोजनी िू धन्य है ।
श्रीधर (चिदानन्द) सिु को जन्म चदया िुम्हीं ंने,
बोया सेवा, स्ेनेह, सरलिा, दया, दान, परचहि,
एवं चदव्य जीवन का यह चदव्य बीज िुम्हीं ंने,
धन्य है कोख िेरी, 'चदव्य जीवन संघ' धन्य है ।।

चिवानन्द स्वस्वरूप, आत्मरूप चिदानन्दहे।
चिवानन्द अचभन्नरूप, प्रचिरूप चिदानन्दहै।

चिवानन्द हृदयरूप, चित्तस्वरूप चिदानन्दहै। चिवानन्द
आनन्द रूप, नमाचम चिदानन्दहे।। चिवानन्द स्वस्वरूप,
आत्मरूप चिदानन्दहै।

'आस्तां ावदीयं प्रसूशिसमये दुवाणरषूलव्यथा ।
नैरचं्यं िनिुोषिं मलमयिीय्या ि संवत्सरी ।
एकस्याशप न गभणभारभरिके्लिस्य यस्याः क्षमो ।
दिुंशनषृ्कृशिमुन्निोशप िनयस्तस्ै्यै जनन्ै्यै नमः ।।'

1

श्री स्वामी शिदानन्द सरस्विी

– जीवन का एक रेखा-शित्र –

स्वामी चिदानन्द जी के पूवापश्रम का नाम श्रीधर राव था। उनके चपिा का नाम श्रीचनवास
राव और मिाा का नाम सरोचजनी था। उनका जन्म २४ चसिम्बर, १९१६ को हुआ। वह अपने
मिाा-चपिा की पााँि सिन्तानों ंमें से चद्विीय सन्तान और पुत्रों ंमें जे्येष्ठ थे। श्रीचनवास राव समृद्ध में जमीदंार और दचक्षण
भारि में कई ग्राम, चवसूतृि भूखण्ड और राजसी भवन के स्वामी थे। सरोचजनी
देवी एक आदिप भारिीय मिाा थीं ंऔर अपने साध्विाार के चलए प्रचसद्ध थीं।ं

आठ वषण की आयु में उनके जीवन पर एक अनन्ै्तैया नामक व्यक्ति का प्रभाव पडा। श्री
अनन्ै्तैया इनके दादा के चमत्र थे और रामायण िथा महाभारि महाकाव्य से उन्ें कथाएाँ सुनाया
करिे थे। िपश्चयाप, **ऋशष-जीवन यापन और भगवद्-दिणन उनके शप्रय आदिण बने ।**

उनके फूफा श्रीकृष्ण राव ने उनके िििुचदपक् व्याप्त भौचिकवादी जगि् के कुप्रभावों ंसे
उनकी रक्षा की और उनमें चनवृचत्त-जीवन का बीज वपन चकया। जैसा चक बाद की घटनाओं ंने
चसद्ध चकया, यह उस बीज को सन्तत्व में चवकचसि होने िक बडी प्रसन्निा से धारण चकये रहे।

प्रारक्तम्भक चिक्षा मेंगलोर में प्राप्त कर यह सन् १९३२ में मद्रास के मुत्ैथैया िेिट्टी सूकूल में
प्रचवष्ट् हुए जहााँ पर एक प्रचिभिााली चवद्याथी के रूप में इन्ोंनें ख्याचि प्राप्त की। इन्ोंनें अपने
प्रफुल्ल व्यक्तित्व, अनुकरणीय व्यवहार िथा असाधारण गुणों ंसे अपने सम्पकप में आने वाले सभी
अध्यापकों ंऔर चवद्याचथपयों ंके हृदय में अपने चलए एक चवचिष्ट् स्थान प्राप्त कर चलया।

सन् १९३६ में लॉयोला कालेज में प्रविे चकया, चजसमें बहुि ही मेधावी चवद्याथी ही प्रविे
पािे हैं। सन् १९३८ में साचहत्य-स्निाक (बी. ए.) की उपाचध प्राप्त की। इनका चवद्याथी जीवन
अचधकांििः ईसाई कालेज िव्यिी हुआ, इसका भी अपना महत्त्व है। इनके हृदय प्रभु ईसा,
ईििदूिों ंिथा ईसाई सन्तों ंके भव्य आदिप का चहनदू-संसूकृचि के सवोत्ृकृष्ट् एवं अचभजाि ित्त्वों ंके
साथ सुन्दर संश्ेलेषण हुआ है। बाइचबल का स्वाध्याय इनके चलए केवल दैचनक कृत्य ही नहीं ंथा,

1यहााँ से चदव्यव्यक्तित्व सम्बिी लेख प्रारम्भ।

वह ि◌ो इनके चलए भागवि-जीवन था। वह इनके चलए उिना ही जीवन्त और सत्य था चजिना चक वेद, उपचनषद् और गीिा के ि◌ब्। अपने स्वाभाचवक चविाल दृचष्टकोण के कारण ये कृष्ण में ईसा के, कृष्ण के स्थान में ईसा के नहीं, ◌ं दिपन कर सके। यह ईसा मसीह के उिने ही भि थे चजिने चक भगवान् चवष्णु के थे।

राव पररवार उि कोचट की सदािाररिा के चलए प्रचसद्ध था और यह श्रीधर राव के जीवन में भी प्रचिचबचि चकया गया। **उनके पररवार के प्रत्येक व्यच्चि के कि-कि में दान और सेवा का गुि व्याि था। इन सद्गुिों ◌ं ने श्रीधर राव में अपना साकार रूप ग्रहि शकया।** उन्होंने इन गुणों ◌ं की अचभव्यक्ति के साधन ढूँढ़ चनकाले। कोई भी व्यक्ति, जो उनसे सहायिा की यािना करिा था, खाली हाथ वापस नहीं ◌ं जािा था। वह दररद्रों ◌ं को मुि हस्त से दान करिे थे।

कुशष्ठयों ◌ं की सेवा ने उनके जीवनादिण का रूप शलया। वह अपने घर के शवस्तृि मैदान में उनके शलए झोपशडयाँ बनविे और उनकी इस ि◌रह से देखभाल करिे मानो वे साक्षाि् देविा हों।◌ं कालान्तर में जब वह आश्रम में आ गये ि◌ो उनके प्रारच्चम्भक जीवन का यह गुि पूिण व शनवाणध रूप से अशभव्यि हुआ। 'सभी प्रािी एक हैं', इस परम ज्ञान पर आशश्रि शदव्य प्रेम के शविाल साम्राज्य में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ व्यच्चि भी कदाशि् ही प्रवेि करने का साहस करे। पास-पडोस से नाना प्रकार के उग्र व्याचधयों ◌ं से पीचडि रोगी उनके पास आिे और चिदानन्द जी के चलए वे रोगी नहीं ◌ं थे, साक्षाि् नारायण थे। वह मृदु प्रेम और करुणा से उनकी सेवा करिे। उनके हाथों ◌ं की गचि ही उनका ऐसा चित्रांकन करिी मानो वह साक्षाि् भगवान् नारायण की पूजा कर रहे हों।◌ं कोई भी कायप हो, चकिना ही ि◌ात्काचलक अचवलक्तम्बि का कायप हो, वह रुग्ण आश्रमवासी को सुख और सानत्वना देने से कभी न रुकिे ।

सेवा और शविेषकर रोशगयों ◌ं की सेवा से ऐसा पिा ि◌ला शक उन्हें अपनी व्यच्चिगि पृथक् सत्ता का भान नहीं ◌ं रहिा। ऐसा लगिा है चक मानो उनका ि◌रीर एक ऐसे जीवात्मा से ढीला-ढाला चिपटा हुआ है जो चक पूणप रूप से उद्बुद्ध हो ि◌ुका है और यह अनुभव करिा है चक वही सब ि◌रीरों ◌ं में चनवास करिा है।

और उनकी यह सेवा केवल मानव जाशि ि◌क ही सीशमि नहीं ◌ं थी। पिु और पक्षी भी, यशद मनुष्य से अशधक नहीं ◌ं ि◌ो कम-से-कम मनुष्य के समान उनके ध्यान के अशधकारी थे। वह उनकी पीडा की भाषा समझिे थे। एक बीमार कुत्ते की सेवा पर गुरुदेव ने उनकी बडी सराहना की थी। चकसी व्यक्ति को अपनी उपक्तस्थचि में चकसी मूक प्राणी पर निंसा का व्यवहार करिे देख कर वह अपने हाथ के इंचगि से उसे उग्र चिक्षा देिे।

कुचष्ठयों ◌ं के कल्याण-कायप में गम्भीर और क्तस्थर रुचि रखने के कारण वह राजकीय अचधकाररयों ◌ं की प्रिंसा व चवश्वास के पात्र बने और प्रदेि द्वारा संस्थाचपि कुष्ठी कल्याण सचमचि के चलए चनवापचिि चकये गये। मुचन-की-रेिी अचधसूचिि क्षेत्र सचमचि के वह पहले ि◌ो उपाध्यक्ष और बाद में अध्यक्ष चनवापचिि हुए।

यद्यशप श्रीधर सम्पन्न पररवार के थे, ि◌थाशप एकान्त और ध्यान में संलि रहने के शलए उन्होंने बिपन से ही सभी सांसाररक भोगों ◌ं को शिलांजशल दे दी। जहाँ ि◌क अध्ययन का सम्बि है, कालेज की पुस्तकों ◌ं की अपेक्षा आध्याक्तत्मक पुस्तकों ◌ं में उनकी अचधक रुचि थी। लॉयोला कालेज

में रहिे हुए भी वह पाठ्य-पुस्तकों ंकी िुलना में आध्यात्त्मक पुस्तकों ंको प्राथचमक स्थान दिे थे। श्री रामकृष्ण, स्वामी चववेकानन्द और गुरुदेव की पुस्तकों ंको अन्य सभी पुस्तकों ंसे पूवपिा दिे थे।

श्रीधर अपने ज्ञान में दूसरों ंको इिना सहभागी बनािे थे चक वह घर िथा पास-पडोस के लोगों ंके वस्िुिः गुरु बन गये। उनके साथ वह सिाई, प्रेम, िुचिा, सेवा और भगवद्-भक्ति की िाप चकया करिे थे। वह श्री राम का जप करने के चलए उन्हें उत्साचहि चकया करिे थे। जब **वह बीस वषण की वय के ही थे, िभी से उन्होंने नवयुवकों ंको रामिारक मन्त्र की दीक्षा देना आरम्भ कर शदया था। उनके अनुयाशययों ंमें एक श्री योगी थे जो बालक गुरु श्रीधर द्वारा शदये गये िारक मन्त्र का जप १२ वषण िक शनरन्तर करिे रहे।**

वह श्री रामकृष्ण और स्वामी चववेकानन्द के परम प्रेमी थे। मद्रास के मठ में चनयचमि रूप से जािे और वहाँ पूजा में भाग लेिे थे। स्वामी चववेकानन्द का संन्यास के चलए आह्वान उनके िुद्ध हृदय में गूँजिा रहिा था। महानगर में पधारने वाले साधु-सन्तों ंके दिपन के चलए वह सदा ही लालाचयि रहिे थे।

सन् १९३६ में श्रीधर छुप कर घर से िले गये। उनके मािा-चपिा ने बडी खोज के बाद उन्हें चिरुपचि के पचवत्र पविपीय मत्क्न्दर से कुछ मील दूर एक धमापत्मा सन्त के चनजपन आश्रम में पाया। बहुि समझाने-बुझाने पर वे घर वापस गये। उनका यह अस्थायी चवयोग पररवार, चमत्र और सम्पचत्त के मोहमय संसार से अत्क्न्तम चवदाई लेने की िैयारी थी। जब वह घर पर थे, िब भी उनका हृदय अपने अन्तविपी ज्ञान-गंगा के सनिान प्रणव-नाद के साथ सस्वर हो कर स्पत्क्न्दि होिा और आध्यात्त्मक चविारों ंके चनस्तब्ध बनों ंमें रमण करिा रहिा था। चिरुपचि से वापस आने पर उन्होंने साि वषप घर में व्यिीि चकये। इन चदनों ंउनके **जीवन पर एकान्तवास, सेवा, आध्यात्त्मक साशहत्य के गहन अध्ययन, आत्म-संयम, इत्न्द्रय-शनग्रह, सरल और सात्त्वक जीवनयापन और आहार, शवलाशसिा का पररहार और िपोशनष्ठ जीवन के अभ्यास की गहरी छाप पडी और ये ही उनकी अन्तःआध्यात्त्मक िक्ति के संवधणन में सहायक हुए।**

सन् १९४३ में उन्होंने अपने भावी जीवन के सम्बन्ध में अत्क्न्तम चनणपय चकया। ऋचषकेि के श्री स्वामी चिवानन्द जी से वे पहले से ही पत्र-व्यवहार कर रहे थे। अन्त में वह आश्रम में सत्म्मचलि होने के चलए स्वामी जी की अनुमचि प्राप्त करने में सफल हुए।

आश्रम में पदापपण करने के साथ ही उन्होंने पद से स्वभाविः औषधालय का कायणभार अपने ऊपर ले शलया। उनके हाथों ंमें रोग के शनवारण की अद्भुि िक्ति थी। यह ख्याशि िारों ंओर फैल गयी, शजससे शिवानन्द दािव्य औषधालय में रोशगयों ंका जमघट लगने लगा।

आश्रम आने के ित्काल बाद ही श्रीधर ने अपनी कुिाग्र बुत्क्द्ध का पयापप्त पररिय चदया। उन्होंने भाषण चदये, पत्र-पचत्रकाओं ंके चलए लेख िैयार चकये और आश्रम में पधारने वाले चजज्ञासुओं ं को आध्यात्त्मक उपदेि चदये। **सन् १९४८ में जब 'योग-वेदान्त आरण्य शवश्वशवद्यालय' (अब योग-वेदान्त आरण्य अकादमी के नाम से प्रशसद्ध) की थथापना हुई, िो गुरुदेव ने उन्हें इसका उप-कुलपशि और राजयोग का प्राध्यापक शनयुक्त कर यथोशिि सम्मान शदया। प्रथम वषण में उन्होंने महशषण पिंजशल के योग-सूत्रों ंकी प्रांजल व्याख्या प्रस्िुि कर शजज्ञासुओं ंको योग-मागण की प्रेरणा दी।**

आश्रम में अपने चनवास-काल के प्रथम वषप में ही उन्होंनें स्वामी चिवानन्द जी की अमर जीवन-कथा पर 'आलोक-पुंज' (लाइट् फाउन्ेटेन) नामक ग्रन्थ की रिना की। इस **ग्रन् पर गुरुदेव ने एक बार अपना मि व्यि करिे हुए कहा था- 'ऐसा समय आयेगा जब शिवानन्द इस जगि् से प्रयाि कर जायेगा, शकन्तु 'लाइट् फाउन्ेटेन' सदा अमर रहेगी।"**

कायपबहुल एवं गम्भीर साधनामय जीवन हिो हुए भी उन्होंनें गुरुदेव के चनदिन में सन् १९४८ में योग-मूयूचज़यम (योग-संग्रहालय) की स्थापना की चजसमें वेदान्त का सारा दिपन िथा योग साधना की सभी प्रचक्रयाएँ चित्रों ंद्वारा दिापयी गयी हैं।

सन् १९४८ के अच्चन्तम शदनों ंमें जब श्री शनजबोध जी ने शदव्य जीवन संघ के महासशिव के अवकिा ग्रहि शकया, िो गुरुदेव ने श्रीधर को उनके थथान पर मनोनीि शकया। अब उनके कन्धों ंपर संघ की व्यवथथा का महान् उत्तरदाशयत्व आ पडा। इस शनयुच्चि के ित्काल बाद ही इन्होंनें संथथा की सभी प्रवृशत्तयों ंमें उपच्चथथि रह कर, मन्त्रिा दे कर थिा बुच्चद्धमत्तापूवणक उनका नेृत्व वहन कर आध्याच्चिकिा का पुट शदया। वह सभी को अपनी िेना को शदव्य िेना के समकक्ष लाने प्रोत्साशहि करिे रहिे थे।

१० जुलाई १९४९ को गुरु-पूशिणमा के शदन श्रीधर परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से दीक्षा ले कर संन्यास आश्रम में प्रशवष्ट् हुए। अब वह 'स्वामी शिदानन्द' के नाम से अशभशहि हुए। शिदानन्द का अथण है- सवोपरर िेना और ज्ञान में च्चथथि व्यच्चि।

भारि के चवचभन्न भागों ंमें चदव्य जीवन संघ की िाखाओं ंके कुिलिापूवपक संयोजन का श्रेय उन्हें प्राप्त हुआ। इसके अचिररि **सन् १९५० में गुरुदेव की नवयुग शनमाणिकारी अच्चखल भारि यात्रा की सफलिा में उनका योगदान शिरस्मरणीय रहेगा। सब लोगों ंके सच्चम्मशलि प्रयास से भारि के बडे-बडे राजनैशिक िथा सामाशजक नेिा गि, राजकीय उि पदाशधकारी िथा राज्यों ंके नरेशों ंमें शदव्य जीवन के अशभयान की ओर जाग्रशि पैदा की।**

गुरुदेव ने स्वामी शिदानन्द को अपने व्यच्चिगि प्रशिशनशध के रूप में नूिन जगि् में शदव्य जीवन के सन्ेदि का प्रिार करने के शलए भेजा। उन्होंनें अमरीका का यह चवसृिृ पयपटन सन् १९५९ के नवम्बर माह में आरम्भ चकया। **अमरीकावाशसयों ंने पाश्चात्य वैिररक भूशम में पले हुए लोगों ंमें भारिीय योग की व्याख्या प्रस्तुि करने में पूिण शनष्ठा भारि के एक योगी के रूप में उनका स्वागि शकया।** उन्होंनें दचक्षणी अमरीका का भी पयपटन चकया और माण्ट्रीवीचियो थिा बूयूचनस आयसप आचद नगरों ंमें धमप-प्रिार चकया। अमरीका से उन्होंनें यूरोप की चक्षप्र यात्रा की और १९६२ के मिाप माह में आश्रम वापस आ गये।

अप्रैल १९६२ में उन्होंनें दचक्षण भारि की िीथपयात्रा के चलए प्रस्थान चकया। अपनी इस यात्रा में वह दचक्षण के मन्दिरों ंऔर िीथपस्थानों ंके दिपन करिे िथा आत्मप्रेरक भाषण दिे थे। **गुरुदेव की महासमाशध से लगभग आठ-दि शदन पूवण ही वह १९६३ की जुलाई के प्रारम्भ में ही दशक्षि की यात्रा से आश्रम में वापस आ गये। इसे वह एक अलौशकक घटना ही मानिे हैं।**

अगस्त सन् १९६३ में वह गुरुदेव के उत्तराशधकारी के रूप में शदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष िथा योग-वेदान्त आरण्य अकादमी के कुलपशि शनवाणीिि हुए।

महान् गुरु के एक सुयोग्य उत्तराचधकारी होने के निे उन्होंने इन कचिपय वर्षों में न केवल इस संस्था की सुदूर दिों ंिक फैली हुई िाखाओं ंके ढााँ में ही, वरन् चवश्व-भर के उन असंख्य साधकों ंके हृदयों ंमें भी जो चक उनका परामिप, उनकी सहायिा िथा मागप-दिपन प्राप्त करने के चलए उत्सुक रहे हैं-**त्याग, सेवा, प्रेम और आध्यात्त्मकिा का झण्डा ऊाँचा बनाये रखने के शलए अथक श्रम शकया है। एक उन्नि कोशट के संन्यासी का अनुकरणीय जीवन यापन करने, आध्यात्त्मकिा का आकषपण कें होने िथा शवश्व में शदव्य जीवन के भव्य आदिों को पुनजीवन प्रदान करने के शलए अपने बहुमुखी उग्र प्रयास के कारण वह सभी लोगों ंके प्रेम-पात्र बन गये।**

पूणप अवधानपूवपक सुरचक्षि उनके व्यक्तित्व के स्वभावगि सौजन्य िथा स्वच्छन्द सेवाभावी प्रेमल स्वभाव ने लाखों ंव्यक्तियों ंके जीवन में अचमि सानत्वना प्रदान की है। दि के सुदूर और चनकट के स्थानों ंकी यात्रा के साथ-साथ स्वामी जी ने अभी हाल ही में मलेचिया िथा हााँगकााँग की यात्रा की और वहााँ पर सिी संसूकृचि, आध्यात्त्मकिा िथा सभी कमों में अहंभावराचहत्य की भावना को चवकीणप एवं प्रसारिर चकया और इस भााँचि सहस्रों ंव्यक्तियों ंके हृदयों ंमें चदव्य जीवन यापन की कला स्थाचपि की। उनके इन गुणों ंके कारण जीवन के सभी क्षेत्रों ंके लोग उनके प्रचि अचमि कृिज्ञिा का भाव द्योिन करिे हैं।

संसार-भर में चदव्य जीवन के महान् आदिों के पुनरुज्जीवन के चलए अथक पररश्रम करिे-करिे गुरुवार, २८ अगस्त २००८ को परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ब्रह्मलीन हो गये।

* * *

असाधारण चदव्य व्यक्तित्व

"परोपकाराय सिां शवभू िय:

-सज्जनों ंकी सम्पचत्त परोपकार के चलए ही हिी है।"

शिवानन्द जी ने मानव जाशि को शजस महत्तम शनशध का उत्तरदान शकया है वह है शिदानन्द जो उनके ही प्रशिरूप में ढले एक असाधारि आध्यात्त्मक व्यत्त्ि हैं, उनकी ही प्रशिकृशि हैं। गुरुदेव अपने इस कथन में सुचनचश्चि थे चक चिदानन्द अपने पूवप-जन्म में एक उिकोचट के सन्त थे और उनका जन्म अपने इस अत्तन्तम जन्म में एक महान् कायप पूणप करने के चलए हुआ है। गुरुदेव उनकी सवोपरर प्रिंसा करिे थे। उन्होंने अपने चिष्यों ंको यहााँ िक कहा- **"आप सबको स्वामी शिदानन्द के साथ अपने गुरु के रूप में व्यवहार करना िाशहए। मैं भी अपने गुरु के रूप में उनका सम्मान करिा हूँ। मैंने उनसे असंख्य शिक्षाएँ ग्रहि की हैं। मैं उनसे प्रेम करिा हूँ। मैं उन पर श्रद्धा रखिा हूँ।"** भचवष्यविा के इन िब्दों ंको अचिन्त्य,

अचि-उदार प्रिंसोक्ति नहीं ंसमझा जा सकिा। जैसे-जैसे समय व्यिीि होिा गया, स्वामी जी जो- कुछ भी कहिे अथवा करिे रहे हैं उन सबके द्वारा उन्होंने वास्तव में अपने अचद्विीय होने का
औचित्य अचधकाचधक चसद्ध चकया है। वह सवपथा चवमल चदव्य जीवन के उत्कृष्ट् उदाहरण हैं। चजस
प्रकार गुरुदेव उनसे अत्यन्त प्रभाचवि थे उसी भााँचि अन्य सन्त भी स्वामी जी की उच्च आध्यात्मिक स्थिचि से प्रभाचवि हुए हैं।

कहा जािा है चक चनत्य चसद्ध आत्माएँ मानव जाचि का पथ-प्रदिपन करने के चलए समय-समय पर भूलोक में अविररि होिी रहिी हैं। भगवान् की कायप-चवचध अबोधगम्य है; इसी भााँचि ईश्वर-मानवों ंकी भी कायप-चवचध अबोधगम्य हुआ करिी है। अपने क्षुद्र अहं से आबद्ध हम कचठनाई से समझ सकिे हैं चक वे क्या थे और वे क्या हैं। **पाश्चात्य देिों ंमें अनेक लोग स्वामी शिदानन्द पर भारि के सन्त फ्राच्चिस के रूप में श्रद्धा करिे हैं।** असीसी के सन्त फ्रान्सिस की सरल प्राथपना, जो स्वामी जी का चप्रय सुतुचि-गीि है, चनश्चय ही वह आदिप है चजस पर उनके जीवन का चनमापण हुआ है। **अन्य कुछ लोग उनके भावप्रवि संकीणपिा ंिथा सावपभौम प्रेम के कारि उन्हें श्री चैिन्य के अविार के रूप में पूज्य मानिे हैं।** स्वामी जी का हृदय बुद्ध के हृदय की भााँचि कोमल िथा प्रफुल्ल है। वह पीचडि प्राचणयों ंको देखिे ही द्रचवि हो जािा है िथा गम्भीर सहानुभूचि और व्यग्रिा से उनके पास जािा है। इनकी चिन्ता का चवस्तार वनस्पचि-जगि् िक है। महाचिवराचत्र के चदन आश्रम के भजन भगवान् चिव की पूजा के चलए जब चबल्वपत्र एकत्र करने जािे हैं िो उन्हें यह परामिप देिे हैं चक वे वृक्ष की ओर कुल्हाडी उठाये हुए न जायें; क्योंचक इससे वृक्ष भयभीि हो जायेगा। वे वृक्ष के पास स्नेह िथा चवनम्रिापूवपक जायें और उससे पचत्तयों ंके चलए याचना करें। पत्ते िोडने का कायप कोमलिा, प्रेम िथा भक्तिभाव से करें।

स्वामी जी की आन्तररक च्स्थचि वणपनािीि है। स्वामी वेंकटेिानन्द के िब्दों ंमें, "उनका वणपन करने का प्रयास न करें। आप असफल रहेंगे। मौन भगवान् का नाम है।"

एक बार राउरकेला में सभामंच पर जब उनका पररचय 'एक असाधारि शदव्य व्यच्चि' के रूप में शदया गया िो उन्होंने अपने भाषि के प्रारच्म्भक भाग में कहा शक यशद श्रोिाओं ंमें से प्रत्येक व्यच्चि यह स्वीकार करे शक वह भी एक शदव्य व्यच्चि है िो मैं उस सम्मान को स्वीकार करिा हूँ। यह चनश्चय ही उनके जन्म के उद्देश्य को व्यंचजि करिा है। ऐसा प्रिीि होिा है चक भगवान् ने चिदानन्द को हमें यह चनश्चय कराने के चलए भेजा है चक जैसा सत्त्व उनमें है, वैसा सत्त्व-सम्पन्न व्यक्ति मत्यप मानव मात्र नहीं ंसमझा जा सकिा है।

शिदानन्द गुरु-भच्चि के सवपश्रेष्ठ उदाहरि हैं। गुरुदेव के समस्त उच्चिर गुणों ंसे सम्पन्न होने पर भी इस महान् आत्मा ने केवल एक समचपपि चिष्य की भूचमका अदा करना ही पसन्द चकया है। वे अपनी सभी महिी नैचिक िथा आध्यात्मिक उपलक्तब्धयों ंका श्रेय चवनम्रिापूवपक गुरु-कृपा को ही देिे हैं। वे जो कुछ करिे हैं, **वे जो कुछ भी कहिे हैं वह सब वे सदा ही गुरुदेव शिवानन्द के नाम से ही करिे हैं।** यह अहंभाव के पूणप उन्मूलन िथा गुरु के प्रचि अिेष आत्मसमपपण का उत्कृष्ट् चनदिपन है। उन्होंने गुरुदेव के जीवन काल में अपने एक प्रेरणादायी प्रविन में बल चदया **"गुरु भगवान् के समान नहीं ंहै, गुरु भगवान् ही हैं।"** एक अन्य प्रविन में उन्होंने श्रद्धामयी कृिज्ञिा के साथ अपना उद्गार प्रकट चकया : "पूवप-जीवनों ंके अनन्त पुण्यों ंने हमें इस पचवत्र स्थान में बैठने िथा उस अपररचमि आध्यात्मिकिा की, अपररचमि चदव्यिा की जीवन्त ज्वाला से चनी:सृि अचन का दिपन करने का यह उत्कृष्ट् सुअवसर प्रदान चकया है चजससे

गुरुदेव ने अपने में मूिपरूप चदया है।" यद्यचप स्वामी जी स्वयं एक अतुयि कोचट के प्रबुद्ध योगी थिा आधुचनक जगि् की आवश्यकिाओं ंका समाधान प्रसुिुि करने को उतूकृष्ट् रूप में उपयुि हैं; **शकनुतु वह कभी भी अपने ऊपर सन्त की कोई भी पदवी प्रक्षेशपि करना नहीं ंािहे हैं िथा अपने प्रत्येक कमण को गुरुदेव के पशवत्र िरिों ंमें समशपणि कर पशवत्र बनिो हैं। वह कभी भी ऐसा अनुभव नहीं ंकरिे शक वह गुरुदेव की गद्दी के उत्तराशधकारी बन िुके हैं। वह सदा ही अपने को गुरुदेव के सेवक के रूप में ही शनशदणष्ट् करिे हैं।** गुरुदेव के उत्तराचधकारी की हैचसयि से, संस्था के अध्यक्ष के रूप में चदव्य जीवन संघ की िाखाओं ंकी सम्बद्धिा के प्रमाण- पत्रों ंपर औपिाररक रूप से हस्ताक्षर करिे समय भी वह ऐसा ही करिे हैं। वह कई बार चवश्व की यात्राएँ कर िुके हैं, सनािन धमप का सन्देि ले कर भारि के एक कोने से दूसरे कोने िक पररभ्रमण कर िुके हैं। उन्होंने इिनी प्रिक्तस्तयााँ िथा बधाइयााँ प्राप्त की हैं चजिनी चक अन्य इने- चगने व्यक्तियों ंने ही प्राप्त की होंगी। अगण्य चजज्ञासुओं ंने अपने जीवन के एकमात्र आनन्द के रूप में इनकी कल्याणकारी कृपा का आश्रय चलया है। इन सबको वह गुरुदेव के िरण-कमलों ंमें सहज भाव से अचपपि करिे हैं। इनका कथन है चक 'भि चजस भगवान् की उपासना करिा है वह कम-से-कम कुछ अंिों ंमें उसकी कल्पना पर आधाररि होिा है, चकन्तु उसका गुरु िो िरीर (की दृचष्ट्) से उपक्तस्थि है। चिष्य अपने सद्गुरु की पूजा करिा है और इस भााँचि वह अन्तिः गुरु-भक्ति को यथाथपिः भगवद्भक्ति में रूपान्तररि करने में सफल होिा है।'

स्वामी जी ने चकसी आिायप के िरणों ंके पास बैठ कर उपचनषदों ंका आद्योपान्त अध्ययन कभी भी नहीं ंचकया। उन्होंने गुरुदेव से भी उनका अध्ययन नहीं ंचकया। िथाचप गुरुदेव ने उनके सम्बन्ध में कहा : "यद्यचप स्वामी चिदानन्द ने उपचनषदों ंका पररिीलन नहीं ंचकया है और न वह उनका पररिीलन करना िाहिे ही हैं, पर यचद आप उनके प्रविनों ंको ध्यानपूवपक समझेंगे िो आपको ज्ञाि होगा चक उनमें समस्त औपचनषचदक ज्ञान स्पष्ट् चकया गया है। वह उपचनषदों ंको अपने हृदय से प्रकट करिे हैं। वह ब्रह्मसूत्र िथा गीिा के मूिपरूप हैं।" स्वामी जी ने १९६४ के साधना-सप्ताह में 'मेरा ब्रह्मसूत्र' पर प्रविन चकया। अपने इस बोधप्रद प्रविन में उन्होंने इस बाि पर बल चदया चक चिष्य के चलए गुरु-वाक् ही ब्रह्मसूत्र है। ऐसा कह कर उन्होंने गुरुदेव-रचिि एक पुस्तक चनकाली और उसमें से एक पररच्छेद पढ़ कर सुनाया चजसमें वेदान्त का सार समाचवष्ट् था।

इस भााँचि स्वामी जी अपने अनुकरणीय जीवन द्वारा यह चिक्षा देिे हैं चक एक साधक को गुरुभक्ति-रूप कवि के द्वारा सदैव सुरचक्षि रहना िाचहए। उनके उनिालीसवें जन्म-चदवस पर चिवानन्दाश्रम के सभी वररष्ठ साधकों ंने जब इन पर अपनी प्रिंसाओं ंकी वृचष्ट् की िो स्वामी जी ने कहा, "आप सभी मूचिप की प्रिंसा कर रहे हैं। इसका श्रेय िो मूचिपकार को है। मूचिप में मूचिपकार की ही बौक्तद्धक क्षमिा िथा प्रचिभा दृचष्ट्गोिर होिी है। आप मूचिपकार के चवषय में सब-कुछ चवस्मरण कर मूचिप के चवषय में सभी प्रकार की बािें कर रहे हैं। मूचिपकार स्वामी चिवानन्द जी महाराज में चवद्यमान है। स्वामी चिदानन्द के चदव्य अचभयन्ता स्वामी चिवानन्द हैं। सभी गुणगान उन िरण-कमलों ंको ही उचिि है।" स्वामी जी ने इससे यह चदखाया चक व्यक्ति को चकस प्रकार नाम िथा यि सचहि अपने सभी कमों के फल को अपने गुरुदेव के िरणों ंमें समचपपि कर देना िाचहए।

उनके एक अन्य मंगलमय जन्म-चदवस के अवसर पर समारोह में भाग लेने के चलए कैलास-आश्रम के हररहर िीथप जी महाराज चिवानन्दाश्रम पधारे। उन्होंने अपने प्रविन में स्वामी जी

की सेवाओं, ं आध्यात्त्त्मक उपलत्त्ब्धयों, ं उदारिा िथा गुरु-भक्ति की प्रिंसा की। अपने उत्तर में स्वामी जी ने िीथप जी महाराज के प्रचि उनके स्नेहमय िब्दों ंके चलए कृिज्ञिा के गम्भीर भाव व्यि करने के साथ ही कहा, **"मुझ पर की गयी प्रिंसा की वृशष्ट िो गुरुदेव पर ही की जानी िाशहए। मैं िो उनका शनशमत्त मात्र हूँ। यशद पररपक्व फल मधुर है िो इसका कारि उसका बीज है। आज मैं जैसा िथा जो कुछ भी हूँ, वैसा मुझे गुरुदेव की कृपा ने ही शनशमणि शकया है।"**

उडीसा के भद्रक नगर के एक साधना-चिचवर में एक सिे चजज्ञासु ने यह जानने की अचभरुचि प्रदचिपि की चक क्या स्वामी जी अब भी चकसी भाविीि लोक में गुरुदेव के दिपन करिे हैं। स्वामी जी ने उत्तर चदया चक उनके चवषय में श्री गुरुदेव के दिपनों ंका प्रश्न ही नहीं ंउठिा। उन्हें प्रचिक्षण यह अनुभव िथा प्रत्यक्ष बोध होिा है चक गुरुदेव उनके भीिर हैं, उनके बाहर हैं िथा आकाि के अणु-अणु में व्याप्त हैं।

स्वामी जी के पाश्चात्य जगि् के एक चिष्य िान चब्रेल ने उनसे अपना पररिय देने को कहा। इस पर स्वामी जी ने अपने कक्ष के अत्त्न्तम छोर में वेदी पर प्रचिष्ठाचपि स्वामी चिवानन्द के एक चित्र की ओर इंचगि कर चदया। ित्पश्चाि् उन्होंने स्पष्ट चकया चक जब गुरुदेव से यही प्रश्न चकया जािा था िो वह प्रश्नकिाप को चदव्य आत्मा अथापि् अन्तरस्थ भगवान् की ओर चनचदपष्ट चकया करिे थे। िान चब्रेल ठीक ही कहिे हैं: "यह स्पष्ट है चक चिवानन्द अपनी चदव्य सत्ता में चनरविेषीकृि हो िुके थे और स्वामी चिदानन्द, चिवानन्द नामक उस चदव्य सत्ता को इिना पूणप रूप से आत्मसमचपपि हैं चक उनका चिवानन्द के परम ित्त्व के साथ पूणप िादात्म्य हो िुका है।"

स्वामी जी अपने को िून्य िक अस्वीकृि कर अपने को िुच्छ समझने को सदा ही प्रयत्निील रहिे िथा अपने गुरुदेव के गुणगान के चलए सिि दृढ़संकल्प हैं। चकन्तु उनकी-जैसी प्रभा चकसी भी उपाय से गुप्त नहीं ंरखी जा सकिी थी। 'चकम्बली' के इस अमूल्य रत्न, चजसे चिवानन्द ने अपने चमिन के कोहनूर के रूप में खोज चनकाला था, की चनयचि में चवश्व के महत्तम िथा श्रेष्ठिम लोगों ंसे श्लाघा िथा सम्मान प्राप्त करना था।

> **" मैं प्रच्छन्न हीरा था;**
> **प्रखर रत्त्मियों ंने मुझे उद्घाशटि कर शदया।"**

जब व्यक्ति स्वामी चिदानन्द के चवषय में चिन्तन करिा है िो कुरानिरीफ के उपयुपि सारगचभपि िब्द उसे सहज ही स्मरण हो उठिे हैं।

भले ही एक व्यक्ति इस भागवि पुरुष का चवचवध दृचष्टकोणों ंसे अवलोकन करे, उसे इनके कार्यों में कुछ िमत्कारक वस्तु अवश्य ही चदखायी पडेगी। वेदान्त-ज्ञान के उन्नि चिखर से संसार के गचिमान पररदृश्य को देखिे हुए िान्त िथा अनुचद्वि रहिे हुए भी चकसी चजज्ञासु आत्मा से चमलने पर वह एक संवेदनिील, स्नेही मािा-चपिा का किपव्य अपना लेिे हैं। वह अपने चलए कठोरिम रूप के उपवास, िपश्चयाप, आत्मत्याग िथा संयम चनधापररि करिे हैं िथा दूसरों ंको वह स्नेचहल अनुरोध, भ्रािृवि् अनुराग िथा मािृसुलभ देखभाल प्रदान करिे हैं। उनका अचवरि िथा सुसंगि लोकोपकारवाद अगण्य अवसरों ंपर प्रभाविाली ढंग से अचभव्यि हुआ है।

स्वामी जी को सम्बलपुर चवश्वचवद्यालय के पररसर में क्तस्थि 'ज्योचि चवहार' के अपने आवास-काल में एक बार अपने चिर का मुण्डन कराने के चलए एक नाचपि की आवश्यकिा पडी।
जब नाचपि आया िो स्वामी जी ने सौजन्यिापूवपक उससे उसका नाम पूछा। नाचपि ने बिलाया चक उसका नाम माधव है। इस पर स्वामी जी ने नाचपि के रूप में उनकी सेवा करने वाले माधव के रिणों ंमें साष्टांग प्रणाम चकया चजससे वह परम आश्चयप में पड गया। नाचपि की सेवाएँ प्राप्त करने के पूवप उन्होंनें सवपप्रथम उस व्यक्ति को अपनी हाचदपक प्राथपना चनवेचदि की। क्षौर-कमप समाप्त होने पर स्वामी जी ने उसे भोग के रूप में प्रिुर फल िथा दचक्षणा के रूप में कुछ चसक्के चदये। इस भाँचि वह अपने वैयक्तिक उदाहरण द्वारा यह चिक्षा प्रदान करिे हैं चक चजज्ञासु को मानव में माधव का दिपन करना िाचहए िथा मनुष्यत्व से देवत्व में उन्नि होना िाचहए।

ऐसी असंख्य घटनाएँ होंगी, स्वामी जी के चदव्य व्यक्तित्व के सुरचभि सत्त्व को अचभव्यि करने वाले अगण्य पुष्प होंगें। उनका जीवन यह िथ्य व्यि करिा है चक भगवान् अन्तररक्ष के कण-कण में व्याप्त है। रहस्यवादी िुलसीदास की भाँचि ही वह सवपत्र िथा सबये भगविी सीिा मािा िथा भगवान् रामिि के दिपन करिे हैं। ऐसा सन्त जो सवपत्र भगवान् को देखिा है िथा भगवान् के अन्दर समस्त चवश्व को देखिा है, चनत्य ईश्वरीय िेिना में क्तस्थि रहिा है। वह चनस्सन्देह एक चवरल चदव्य व्यक्ति है जो अनेक जन्मों ंकी दीघपकाचलक साधना के अनन्तर यह अनुभव कर लेिा है चक यहाँ जो कुछ भी है, वह सब भगवान् से व्याप्त है। भगवान् गीिा में कहिे हैं:
"ज्ञानवान् व्यक्ति बहुि जन्मों ंके अचिक्रमण के पश्चाि् समस्त जगि् वासुदेव-रूप है, इस प्रकार मुझे प्राप्त करिा है, सुिरां ऐसा महात्मा बहुि ही दुलपभ है" (७/१९)।

उनके इस अहंभाव के परम राचहत्य िथा दृचष्ट की चनदोष िुििा के कारण गुरुदेव ने दृढ़िापूवपक कहा था, **"यह उनका अच्चन्तम जन्म है।" शिदानन्द शनस्सन्देह वह प्रबुद्ध सन्त हैं, शवरल शदव्य व्यच्चि है जो अनेक जन्मों ंकी िपस्या के सुकृि के पररिामस्वरूप आज सवणत्र भगवान् को देखिे हैं और उनमें ही सदा-सवणदा च्चथथि हैं। भगवत्साक्षात्कार-प्राि आिाओं ंमें वह मानव-जाशि के वरदान के रूप में शवभाशसि हैं। अब यह मनुष्य के शहि में है शक वह उनका आह्वान सुने, "हे मानव! िुम शदव्य हो। िुम यह भौशिक िरीर नहीं ंहो, िुम यह िंिल मन भी नहीं ंहो। िुम ज्योशिमणय शदव्य आिा हो। िुममें से प्रत्येक व्यच्चि शदव्य व्यच्चि है।" वह मनुष्य के पास मसीहा के रूप में आये हैं और इस महान् पाठ की शिक्षा देने के शलए घर से दूसरे घर, से पशश्चम पूवण छ छोटी िथा िुच्छ झोपडी से भव्य भवन के लोगों ंमें शविरि कर रहे हैं शक मनुष्य पािशवकिा त्याग दे और मनुष्यिा से देवत्व िक उन्नि बने और इस भाँशि मानव-जीवन के प्रमुख उद्देश्य को प्राि करे। ...**

* * *

सन्तों ंकी संगशि में

"महत्संगस्तु दुलणभोऽगम्योऽमोघश्च

-महािाओं ंका संग दुलणभ, अगम्य और अमोघ है"

-(नारदभक्तिसूत्र-३९)।

स्वामी चिदानन्द ने दो दिकों ंिक चवश्व के एक छोर से दूसरे छोर िक भ्रमण चकया, बहुि बडी दूरी िय की िथा महाद्वीपों ंके आर-पार अपने यि की सुरचभ फैलायी। उन पर अिुलनीय श्रद्धा िथा प्रिंसा की वृचष्ट् हुिी रही, बहुि बडी संख्या में नगर िथा लोग उनके दिपन की माँग करिे रहे, आध्यात्क्तत्मक िथा प्रापंचिक दोनों ंप्रकार के अत्यचधक प्रचिचष्ठि व्यक्तियों ंने उन्ें अपनी श्रद्धांजचल िथा सकामनाएँ अचपपि कीं; ं चकनुतु वह सदा की भााँचि ही वही चवनम्र िथा सरल सन्त, गुरुदेव का प्रकिा चवचकरण करने वाले क्रकि (चप्रज़्म) बने रहे। लोक-संग्रह िथा **एकान्त-साधना के अशिररि यशद उनकी कोई वैयच्चिक कामना थी िो वह थी सन्तों ंकी संगशि की। उनके मन में यह कभी नहीं ंआिा है शक वह स्वयं एक उि कोशट के सन्त हैं जो अपने को शकसी उतृ्कष्ट् एकान्तिा में रखने का पयाणि कारि है। गुरुदेव ने बार-बार कहा था शक 'शिदानन्द एक जन्मजिा सन्त, आदिण योगी, परम भि िथा महान् ज्ञानी हैं' िथा इस दृढ़ोच्चि की सत्यिा स्वामी जी के जीवन िथा कायों ने अनेक प्रकार से शसद्ध भी कर दी है।** चनष्कल्मष व्यक्तिगि पचवत्रिा िथा सजािीय मानवों ंके चलए गहरी संवेदना, जो उनके समग्र जीवन की चवचिष्ट्िाएँ हैं, चकसी महान् सन्त में ही हो सकिी हैं। एक ओर िो वह अपनी समस्त संवेदना िथा लोक-संग्रह को रखिे हुए भी अपने हृदय के गुप्त प्रकोष्ठ में चनरन्तर प्रचिचष्ठि रहिे हैं, अनाचद िथा अमर सत्ता के साथ एकीभूि रहिे हैं िो दूसरी ओर अपनी पूणप अनासक्ति िथा चनरविेष आत्म-िुचष्ट् के हिे हुए भी **वह सभी मिों ंिथा दिों ंके सन्तों ंसे शमलने िथा उनके साथ संलाप करने को सदा लालाशयि रहिे हैं। प्रवृशत्त के आन्तर िथा बाह्य क्ेषेत्रों ंमें जैसा एकीकरि शिदानन्द लिो हैं वैसा केवल एक आदिण योगी ही कर सकिा है। उनके सदृि सरलिा, शवनम्रिा िथा अपने ििुशदणक् के सभी अथथावर प्राशियों ंके प्रशि प्रखर शकनुतु अनासि प्ेरेम एक परम भि में ही हो सकिा है। जीवन के गम्भीर दािणशनक सत्यों ंके व्यीकरि की उनकी सहजिा िथा प्रिस्य सरलिा केवल महान् ज्ञानी में ही हो सकिी है।** उन्ें अपने भाषणों ंके चलए चजस सामग्री की आवश्यकिा हुिी है, उसे वह प्रायीः अपने अन्दर से ही लिो हैं; िथाचप वह अपने सभी धमोपदिों ंमें ऐसी अचि-जचटल िथा दुबोध समस्याओं ंकी ििप करिे िथा उन्ें स्पष्ट् करिे रहिे हैं चजससे प्रकाण्ड वेदान्ती भी चवक्तस्मि िथा अचभभूि हो जािे हैं। जब वह अपना मुँह खोलिे हैं, िो वह सहज ज्ञानी की अवस्था में हिो हैं। जब कभी वह बिों करिे हैं िो उनके ओष्ठों ंसे सुिारु रूप से चवद्वत्ता मात्र नहीं ंअचपिु ज्ञान टपकिा है। ये बिों इिनी सुचवचदि हैं चक इनके चवस्तार में जाने की आवश्यकिा नहीं ंहै। भूमण्डल के सभी सुदूर भूभागों ंमें असंख्य कृिज्ञ साधकों ंने स्वामी जी में भक्ति, ध्यान िथा ज्ञान के अद्भुि समन्वय के अपने-अपने मूल्यांकन अंचकि चकये हैं। यचद मानव जाचि के सामान्य लोगों ंकी ऐसी अनुचक्रया है िि प्रश्न उठिा है चक उनके समान के सन्त उन्ें चकस रूप में देखिे हैं? स्वामी जी सन्तों ंिथा योचगयों ंके प्रचि कैसा व्यवहार करिे हैं और वे लोग इनके साथ कैसा व्यवहार करिे िथा इन्ें कैसा मानिे हैं? सन्तों ंकी रीचि अबोधगम्य हुिी है, उनके सम्भाषण की भाषा हमारे चलए अत्यचधक गूढ़ िथा रहस्यपूणप हुिी है। िथाचप उनकी पारस्पररक अनुचक्रयाएँ िथा समादर कभी-कभी ऊपर आिे हैं और यह चविाराधीन पुिात्माओं ंकी महत्ता को समझने का प्रयास करने वाले व्यक्ति के चलए चनश्चय ही परम महत्त्व का चवषय है।

सन्तत्व स्वामी जी के जीवनभर उनके अप्रशिरोध्य आकषणि का शवषय रहा है। चकनुतु यह सन्तत्व ऐसा नहीं ंथा जो चकसी चविेष वगप अथवा साधना के अन्तगपि हो। सामान्य संन्यासी से चभन्न, स्वामी जी अपने जीवन के प्रारक्तम्भक काल से ही, जहााँ-कहीं ंभी उन्ें सन्तत्व चदखायी दिा,

उस पर ध्यान देने िथा उसको महत्त्व देने को पयापप्त संवेदनिील थे। **गैररक वस्त्र उनके हृदय में प्रवेि पाने के शलए कोई आवश्यक पारपत्र न था।** उदाहरणाथप, गांधी जी उनके चलए आजीवन
एक महान् सन्त बने रहे। वह उन सवपप्रथम सन्तों में से एक थे जो उनके जीवन में बहुि ही अल्पायु में आये िथा चजन्होंने उनके व्यक्तित्व पर अपना अचमट प्रभाव िाला। सत्य, अचहंसा िथा
ब्रह्मचयप, जो बापू जी के चसद्धान्त थे, श्रीधर के प्रारक्तम्भक जीवन से ही उनके वैयक्तिक स्वीकृि धमप बन गये। राम-नाम ने, जो गांधी जी का प्रायीः प्राण था, उनके हृदय में उसके समान स्थान पाया। वास्तव में, व्यक्ति स्वामी जी के जीवन में ऐसी अनेक महत्त्वपूणप बािें देख सकिा है चजनमें
उनके ऊपर गांधी जी का प्रभाव अन्तभूपि है। उदाहरणाथप व्यक्ति इस चदिा में उनकी कुचष्ठयों की सेवा िथा हररजनों की पूजा की ओर इंचगि कर सकिा है।

सन्तों की संगचि में स्वामी जी का आचरण चविेष रूप से चिक्षाप्रद होिा है। भारिीय
परम्परा के पक्के अनुयायी वह वयोवृद्ध सन्तों को बडी ही चवनम्रिापूवपक नमस्कार करिे, उनका
अत्यचधक चिष्ट िथा अवधानपूणप रीचि से आचिथ्य-सत्कार करिे िथा उन्हें सम्मान देिे हैं। गुरुदेव के
जीवन-काल में कैलास-आश्रम के महामण्डलेश्वर स्वामी चवष्णुदेवानन्द जी महाराज, चहमालय के
डूिामचण िथा आकािदीप उत्तरकािी के स्वामी िपोवन जी महाराज, गुरुदेव के पूवापश्रम के
सहपाठी िथा दचक्षण भारि के सन्त-चवद्वान् कचवयोगी महचषप िुद्धानन्द भारिी जैसे वयोवृद्ध
लब्धप्रचिष्ठ आध्याक्तत्मक व्यक्ति आश्रम में आया करिे थे। उस समय स्वामी जी महासचिव थे। वह
उन सबकी सेवा का सभी उत्तरदाचयत्व अपने ऊपर ले चलया करिे थे और इसे अपनी लोकप्रचसद्ध
चवनम्रिा से सम्पन्न करिे थे। कचवयोगी के चमलन को वह एक िीथप के सत्संग के िुल्य मानिे
थे। इसी भााँचि वह वषप में न्यूनाचिन्यून एक बार गुरुदेव की भेंट के साथ कैलास-आश्रम के
महामण्डलेश्वर के दिपन करने को उत्सुक रहिे थे।

स्वामी जी सन्त-महात्माओं के दिपन के सुअवसर को कभी भी हाथ से नहीं जाने देिे थे।
हररद्वार में श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के एक चिष्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज द्वारा
**'सत्संग के महत्त्व' के शवषय को श्रवण कर स्वामी जी महाराज अत्यशधक प्रभाशवि हुए।
उनके मन पर उनकी महानिा की गहरी छाप पडी।**

कभी नमपदा िट पर, कभी उत्तरकािी, कभी स्वगापश्रम में वास कर साधना चनचष्ठ परमहंस
नारायण स्वामी जी भागविीय िेना में अहचनपि अचभचनचवष्ट रहिे थे। उ**नके आनन्दमय मुखमण्डल
िथा शदव्य आनन्दमयी अवस्था का दिपन स्वामी जी लगािार घण्टों िक करिे रहिे। उन्होंने
स्वयं भी अन्तरात्मा के आनन्द का अनुभव शकया। स्वामी जी ने उनमें शवनम्रिा िथा सरलिा
को मूशिपमान् पाया।**

श्री श्री मााँ आनन्दमयी के साथ श्री स्वामी जी महाराज का सम्बन्ध िथा व्यवहार चवलक्षण
रहा। वे दोनों एक-दूसरे के प्रचि चदव्यानन्द में अचिचय प्रेम िथा सम्मान प्रकट करिे हैं। श्री मााँ
के हृदय में श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज िथा श्री स्वामी चिदानन्द जी के चलए असाधारण प्रेम
िथा सम्मान है। वे इन दोनों में कोई भेद नहीं करिीं। **वह स्वामी शचदानन्द को 'शिवानन्द
बाबा' सम्बोशधि करिी हैं।** उनका कथन है- "बाबा िो चनत्य ही संयम की क्तस्थचि में रहिे हैं।"
स्वामी जी सुचनचश्चि हैं चक 'श्री मााँ सदा सहज समाचध अवस्था में रहिी हैं।' 'हे भगवान्, हे
भगवान्' मााँ का यह सुमधुर कीिपन गायन सबको अचभभूि कर देिा है।

श्री माँ उनसे सन्तान के समान वात्सल्, ममिा एवं स्नेह करिी हैं, योगी के रूप में सम्मान दिी हैं, सन्त के रूप में उनकी प्रिंसा करिी हैं िथा उनके साथ शमत्रवि् व्यवहार करिी हैं। स्वामी जी भी उन्ें 'भगविी माँ' का अविार मानिे हैं। उनके शलए वह सन्त
नहीं ं'िुद्ध भागवि सत्ता हैं'।

श्री स्वामी जी महाराज जब कभी चकसी सन्त से चमलिे हैं िो चवनम्रिा िथा िालीनिा के साथ आगे बढ़ कर उन्ें अपनी श्रद्धा अचपपि करिे हैं। उनका यह सदािार सबके चलए प्रेरणादायी उदाहरण प्रसुिि करिा है। **वह उत्कृष्ट कोशट के वेदान्ती हैं जो सदा अपने सच्चिदानन्द स्वरूप में च्चथथि रहिे हैं। शकनुिु वह परम सत्ता के सभी प्रकट रूपों ंकी पूजा करिे हैं िथा उनके उपासकों ंऔर शसद्धों ंको प्रिाम करिे हैं।**

उत्तर भारि के एक चवलक्षण रहस्यवादी सन्त 'हनुमान् चसद्ध नीम करोली बाबा' के प्रचि भी स्वामी जी अत्यचधक पूज्य भाव रखिे थे। एक बार कुमायूँ में नैनीिाल के चनकट च्तस्थि कैंिि ग्राम में उनका सक्तम्मलन हुआ। स्वामी जी ने िख्त पर चवराजमान बाबा के िख्त के पास घुटने टेक कर प्रणाम चकया िथा 'श्री हनुमान्' की सुिुचि में कुछ स्तोत्र िथा भजन गाये। कीिपन की समाक्तप्त पर **मौनावलम्बी बाबा ने अपने सभी शिष्यों ंको स्वामी जी महाराज के श्रीिरिों ंमें नमस्कार करने का आदेि शदया और कहा शक यशद वह ऐसा नहीं ंकरिे िो वे सब एक उिकोशट के सन्त को साष्टांग प्रिाम करने का अनुपम अवसर खो देंगे।** इस पर स्वामी जी ने करबद्ध नम्रिापूवपक कहा, **"मैं िो गुरुदेव शिवानन्द जी महाराज का एक साधारि सेवक मात्र हूँ।" आगे कहा, "यशद एक व्यच्चि एक पुष् को अपनी हथेली में शिरकाल िक कस कर पकडे रखे िो उसकी सुगच्चन्ध हथेली में महकिी रहेगी। अिएव गुरुदेव के दीघपकाशलक मंगलप्रद सम्पकप के कारि उनके सद्गुिों ंकी सुरशभ कभी-कभी उनसे हो कर फैलिी है िो उसमें कोई आश्चयप नहीं।ं" यह है स्वामी शिदानन्द जी महाराज का ढंग। अपनी इस बालसुलभ सरलिा एवं नम्रिा वैभव से वह सन्त जगि् में सुिोशभि हैं।**

श्री िंकरािायप, श्री रामानुजािायप, श्रीमध्वािायप िथा अन्य महान् आिायों की पीठों ंके धमापध्यक्षों ंके प्रचि स्वामी जी की श्रद्धा अनुकरणीय है। परनुिु वह स्वयं श्री िंकरािायप के केवलाद्वैिवाद के अनुयायी हैं। **'कांिीकामकोशट पीठ' के वररष्ठ िंकरािायप जगद्गुरु श्री िंिखेर सरस्विी के दिपनाथप एक बार वह शिशिरकालीन राशत्र में केवल एक वस्त्र धारि कर अपने हाथों ंमें फलों ंकी टोकरी ले, शबना शकसी पूवप सूिना के मच्चन्दर में पहुँि गये। धमापध्यक्ष को दण्डवि् प्रिाम शकया। धमापध्यक्ष मौनव्रि में थे। उन्ोंने अपनी मंगलमयी दृशष्ट से आनन्दप्रद आिीष शदया। स्वामी जी के शलए यह पूिपरूपेि सन्तोषजनक दिपन था।**

आधुचनक भारि के सन्त 'ठाकुर श्री सीिारामदास ओंकारनाथ' बाबा जी महाराज 'महामि की कीिपन साधना' में दृढ़चवश्वास रखिे थे। उनसे स्वामी जी का चविेष प्रेममय सम्बन्ध रहा। परस्पर प्रेचमल व्यवहार करिे। एक बार 'एकाक्षर ॐ उत्कीचणपि लाठी उन्ोंने स्वामी जो को ससम्मान भेंट की िथा अन्य अवसर पर एक पूरा 'व्याघ्रिमप' सप्रेम भेंट चकया। स्वामी जी ने इन्ें पावन 'सृमृचि-प्रिीक' रूप में सहेज कर रखा हुआ है। स्वामी जी का कथन है चक **बाबा शदव्य नाम स्वरूप आधुशनक भारि के भगवत्साक्षात्कार प्राप्त सन्तों ंमें वररष्ठ सन्त हैं।**

स्वामी जी दचक्षण भारि के कन्नगढ़ अवक्तस्थि 'आनन्द आश्रम' के यिस्वी संस्थापक 'स्वामी रामदास' जी महाराज की आध्यात्त्क्तत्मक ऊँाँइयों ंसे भलीभााँचि सुपररचिि ही नहीं ंबक्ति अचिय प्रभाचवि भी थे। पूवापश्रम में ही स्वामी जी पापा रामदास के आश्रम में जाया करिे थे िथा पापा की आिीवापद-सम्पदा से समृद्ध हुए थे, चजससे वह चप्रय पापा स्वामी रामदास जी की आध्यात्त्क्तत्मक उत्तराचधकाररणी पुण्यात्मा मिाा कृष्णाबाई के चनकट सम्पकप में आ गये। मिाा जी स्वामी जी का बडा सम्मान करिी थीं ंिथा उनका आश्रम-वास के समय पर वात्सल्यभाव से ध्यान रखिी थीं।ं स्वामी जी के अपने िब्ों ंमें **"मिाा कृष्णाबाई वात्सल्मयी श्री माँू आनन्दमयी के सदृ ही हैं।"**

वृन्दावन के श्रीमद्भागवि के लब्धप्रचिष्ठ व्याख्याकार **स्वामी अखण्डानन्द जी महाराज स्वामी जी का 'शवनम्रिा के साक्षिा् अविार' के रूप में सम्मान करिे हैं।**

स्वामी जी महाराज ऋचषकेि आने वाले प्रचिष्ठ सन्तों ंमें से अचधकांि को चिवानन्द आश्रम में चनमंत्रि करिे हैं। प्रज्ञािकुषु स्वामी िरणानन्द जी (वृन्दावन) ऐसे ही एक चसद्ध महात्मा थे। वह प्रचिवषप ग्रीष्मकाल में गीिा भवन (स्वगापश्रम) में आिे और मास पयपन्त प्रविन करिे। बाहर कहीं ं नहीं ंजािे थे। चकन्तु स्वामी चिदानन्द जी के प्रचि चविेष प्रेम के कारण वह उनके अनुरोध पर एक-दो बार चिवानन्द आश्रम आ कर प्रविन करिे िथा वहााँ के साधकों ंको आिीवापद दिे।

गुरुदेव के समकालीन सन्तों ंके साथ स्वामी जी चिष्य सुलभ व्यवहार करिे हैं। परमाथप चनकेिन के श्री स्वामी िुकदेवानन्द जी महाराज, श्री स्वामी भजनानन्द जी महाराज िथा दचक्षण क्तस्थि िाक्तन्त आश्रम के स्वामी ओंकारानन्द जी महाराज जैसे महात्माओं ंके प्रचि स्वामी जी का श्रद्धास्पद व्यवहार अनुकरणीय है।

मोक्ष-आश्रम नैचमषारण्य के जगदािायप स्वामी नारदानन्द जी कहिे हैं-**"स्वामी शिदानन्द जी गंगा की धारा हैं", "प्रेम की गंगा हैं। आपने शिदानन्द में शिवानन्द को प्रािा कर शलया है। उदारिा िथा शनथस्वाथणिा में शिदानन्द शिवानन्द के समान हैं। वह वेद स्वरूप हैं।"**

उडीसा के एक रहस्यवादी सन्त 'बाया बाबा' के प्रचि स्वामी जी की चविेष श्रद्धा थी। उधर 'बाया बाबा' भी स्वामी जी का चविेष सम्मान करिे थे।

इस प्रकार चिदानन्द सन्त समूह में िमकिे हैं। सन्त जन उन्ें अपना प्रेम और आदर प्रदान करिे हैं जबचक स्वामी जी महाराज को न इसकी आकांक्षा ही है न अपेक्षा ही। िथाचप सन्त जगि् में उनका चवचिष्ट् स्थान, असंख्य साधकों ंके चलए बहुि ही अथपूणप िथा चिक्षाप्रद है। वह पररव्राजकों ंऔर मठवाचसयों ंके चलए 'एक आदिप संन्यासी', व्यावहाररक लोकोपकारी के चलए 'महान् परोपकारी', 'पददचलिों ंके चमत्र', साक्षात्कार प्राप्त ज्ञाचनयों ंके चलए 'एक व्यावहाररक वेदान्ती' िथा असंख्य भिों ंके चलए 'पराभि' हैं।

मैंने गुरुदेव को कभी चकसी की प्राथपना अस्वीकार करिे नहीं ंदेखा। सत्य िो यह है चक व्यक्ति द्वारा आवश्यकिा प्रकट करने से पूवप ही वे उसको भााँप जािे हैं। यचद एक बार आवश्यकिा प्रकट की जािी है, िो जब िक वह पूणप नहीं ंहोिी, िब िक उन्ें िैन

नहीं ंपडि। पूचिप भी उसी समय, उसी जगह होनी िचहए। उपकार करने में देरी उन्
सहन नहीं।ं

कई ऐसे अवसर भी आये जब भिों ंने उन् संकीपन के चलए चनमंत्रि चकया। उस समय वे ज्वर से इिने अस्वस्थ थे चक उस क्तस्थचि में अन्य व्यक्ति िय्या पर ही पडा रहिा; चकनुतु स्वामी जी ज्वर की उपेक्षा करके िीघ्र ही संकीपन करने के चलए िले गये।

- स्वामी शिदानन्द

पददशलितों ंके शमत्र

"िे प्रापुनुवच्चन्त मामेव सवणभूशहिे रिाः।

-सब प्राशियों ंके शहि में शनरि व्यच्चि मुझ (ईश्वर) को प्रिा कर लेिे हैं"

-(गीिा: १२-४)।

चिदानन्द सेवा के चलए ही जीिे हैं। उन्होंने इस पाचथपव जगि् में अपना समूपूणप जीवन प्रभु के सृष्ट् जीवों ंकी चनरन्तर सेवा के चलए अचपपि कर चदया है। वह पचििों ंके उदात्त उद्धारक िथा पीचडिों ंकी चिन्ता करने वाले उनके चमत्र हैं। इस जन्मजिा सन्त के चदव्य हृदय से सभी जीवधाररयों ंके चलए अक्षय पररमाण में करुणा चनसृि होिी है। ऋचषकेि िथा उसके पररसर के अभागे कुचष्ठयों ंके चलए िो यह साक्षाि् पररत्रािा ही रहे हैं। अपने सम्बक्तियों ंद्वारा भी चनक्तन्दि, अचभिप्त िथा बचहष्कृि इन सजािीय व्यक्तियों ंके प्रचि उनकी दयालुिा िथा सहानुभूचि समूपूणप मानव-जाचि के चलए सेवा िथा परोपकार का एक प्रेरणादायी पाठ रहेगा। आध्याक्तत्मक आिायप िथा सन्त िो अनेक हुए हैं चजन्होंने अपनी व्यक्तिगि हाचन उठा कर भी चजज्ञासुओं ंके मागप को प्रकाचिि चकया है; चकनुतु उनमें अल्पसंख्यक व्यक्ति ही ऐसे हुए हैं चजन्होंने चिदानन्द के समान पूणप समपपण-भाव से चवकलांगों ंिथा रोगग्रस्तों ंके सहानुभूचिपूणप िारीररक देखरेख के कायप में आजीवन अपने को लगाये रखा हो। महापुरुषों ंमें ईसा, बुद्ध, गांधी, िैचमयन, चिदानन्द बहुि ही कम संख्या में हैं जो इन सभी वैचवध्य के मध्य परमैक् का साक्षात्कार कर सामाचजक िथा मानवीय अचभरुचियों ंकी मयापदाओं ंसे ऊपर उठे हैं िथा इस संसार के घोर पापी, चनकृष्ट्म कुक्तत्सि िथा

पीचडि प्राचणयों ंको गले लगिो हैं। चिदानन्द ने अपने जीवन के प्रारक्तम्भक काल से ही इन हिभाग्य प्राचणयों ंके चलए जो असाधारण सहानुभूचि िथा चिन्ता प्रदचिपि की, उस पर जीवन-स्रिो पुस्तक में
इससे पूवपविी एक अध्याय में प्रकिा िाला जा िुका है। **एक कुष्ठी की कुछ अथथायी सहायिा थिा देखभाल से सनुतुष्ट् न रह कर उन्ोंनें उसके शलए अपने घर के अहािे में एक झोपडी बनवायी िथा उसका योग-क्षेम वहन शकया। ऐसा करना उनके शलए स्वाभाशवक ही था और ऐसा उन्ोंनें उस समय शकया जब वह अल्पवयस्क ही थे।** सावपलौचकक साहियप, आक्तत्मक एकिा िथा सावपभौम प्रेम की दृढ़ धारणा ने उन्ें न केवल मानवों ंमें अचपिु पचक्षयों,ं पिुओं ंिथा िुिचदपक् अलचक्षि रूप से िलने थिा रेंगने वाले कीटों ंकी सेवा करने को प्रेररि चकया। अिएव एकान्त, मौन िथा साधना के चलए अपने घर िथा पररजनों ंको त्याग कर गंगा के िट पर आ
जाने पर भी अपने नये घर-आश्रम के िुिचदपक् के वािावरण को चवदीणप करने वाले घोर व्यथा के क्रन्दन को अनसुनी न कर पाना उनके चवषय में स्वाभाचवक ही था। **उन्ोंनें इसे शित्त-शवक्षेप के रूप में देखने अथवा इसके प्रशि वेदाच्यन्तक उदासीनिा का भाव उत्पन्न करने के बजाय सशक्रय साधना िथा पूजा के रूप में, सावपभौशमक प्रेम की सामान्य अशभव्यच्क्ि के रूप में संवेदनिीील सेवा को अपनाया।** प्रचिकूल प्रकृचि िथा उदासीन मानवों ंसे समान रूप से पररत्यि बहुि बडी संख्या में कुचष्ठयों ंको वहााँ चकसी प्रकार अपने दुीःखद जीवन को घसीटिे देख कर वह अत्यचधक द्रचवि हो उठे। उनकी दुदपिा चनश्चय ही अवणपनीय थी। उन्ें रास्िे के चकनारे पर िीथपयाचत्रयों ंसे जो कुछ चभक्षा-रूप में चमल जािा, उसी से वह चकसी-न-चकसी िरह अपने िरीर थिा प्राण को बनाये रखिे थे। कुष्ठरोग के साथ-साथ उनमें अनेक प्रकार की िारीररक िथा मनोवैज्ञाचनक वेदनाएाँ प्रवेि कर गयी थीं।ं उनमें से अनेक चवचवध प्रकार के अन्य रोगों ंसे पीचडि थे।

अपने अभ्यासगि सायंकालीन भ्रमण के समय स्वामी जी ने सडक के चकनारे चभक्षा मााँगिे हुए कुष्ठरोचगयों ंकी पंक्तियााँ देखीं।ं उनके भाग्य को सुधारना िीघ्र ही उनकी चिन्ता का मुख्य चवषय बन गया। यद्यचप कुष्ठी गैररक वस्त्धारी संन्यासी से कुछ भी अपेक्षा नहीं ंरखिे थे; **शकनु्तु यह युवा संन्यासी उनका परम शमत्र िथा पररत्रािा बन गया।**

सन् १९४३ के प्रारक्तम्भक चदनों ंमें जब स्वामी जी चिवानन्द धमापथप औषधालय के कायपभारी थे िब उन्ें कुचष्ठयों ंकी कुछ साथपक सेवा प्रदान करने का अवसर स्विीः प्राप्त हो गया। उन्ोंनें उनके स्वास्थ्य की ओर पूरा ध्यान देना आरम्भ कर चदया। वह स्वयं ही उनकी झोपचडयों ंिक उनके चलए औषचधयााँ ले जािे थे। जब कुचष्ठयों ंको पिा िल गया चक उन्ें प्रेम िथा आिा लाने वाला मनुष्यों ं में एक देवदूि है, उनके िरीर, मन िथा आत्मा का उपिार करने वाला िाक्टर है िथा औषधालय के कायपभारी स्नेहिील ब्रह्मिारी से औषचधयााँ िथा परामिप उपलब्ध हो सकिे हैं िो वे बडी संख्या में औषधालय में आने लग गये। इस प्रकार चिवानन्द धमापथप औषधालय कुचष्ठयों ंके चलए एक चिचकत्सालय बन गया। नरेिनगर के उदार महाराजा कुष्ठरोचगयों ंके चलए प्रथमोपिार का सामान िथा मरहमपट्टी की सामग्री उपलब्ध करिे थे। उस समय कुचष्ठयों ंको एकमात्र यही व्यवक्तस्थि चिचकत्सीय सहायिा उपलब्ध थी। **अब स्वामी जी अपना रोगहर हाथ ले कर साक्षाि् भगवान् के रूप में उनके समक्ष आये और स्वामी जी के शलए इन पीशडिों ंके रूप में स्वयं भगवान् उपच्थथि हुए। अिएव वह लोकोपकारी कमप वास्तव में सवपिच्क्िमान् प्रभु की सेवा थी। स्वामी जी जब कुष्ठरोग की शवकशसि अवथथा में रोशगयों ंके खुले व्रणों ंकी मरहमपट्टी करने में संलि रहिे िो उनके नेत्रों ंसे करुणा व्यि होिी िथा उनके मुख से गम्भीर वात्सल्-प्रेम िुशदपक् प्रसररि होिा था।** स्वामी जी उनके चलए प्रािीः बडे सबेरे ही औषधालय में

उपलब्ध रहे चजससे चभक्षा-संग्रह करने के चलए वे खाली हो जायें और औषधालय में आने वाले अन्य रोचगयों ं के मन में उनकी उपक्तस्थचि से चवक्षोभ न हो। औषधालय में कुचष्ठयों ं की इनकी महिी सेवा से चिचकत्सा िास्त् के चविेषज्ञों ंमें भी चवस्मय िथा श्लाघा का भाव उत्पन्न हिोा। स्वामी जी रोचगयों ंको चजस प्रकार रोग-मिु करिे थे, उसे देख कर भारिीय सेना की चिचकत्सा सेवाओं ंके ित्कालीन चनदेिक मेजर जनरल ए. एन. िमाप चिकि रह गये। **उन्ोंनें कहा शक यह युवक ब्रह्मिारी सामान्य व्यच्चि नहीं ंहै।**

एक पंजाबी सन्त कुष्ठरोग से पीचडि थे। रोग गम्भीर रूप से बढ़ िला था। वह कुछ चदनों ं कि िो सडक पर ही चदन काटिा रहा। अन्त में उसने एक चदन स्थानीय पाठिाला के एक अध्यापक से उन्ें चिवानन्दाश्रम पहुाँिाने की प्राथपना की। उस अध्यापक की सहायिा से वह रोगी आश्रम के द्वार िक पहुाँ पाया। उस समय राचत्र के दि बज िुके थे। जब स्वामी जी को यह सूिना प्राप्त हुई चक एक रोगी उनकी प्रिीक्षा कर रहा है िो राचत्रकालीन सत्संग समाप्तप्राय था। स्वामी जी हाथ में टिाबत्ती चलये हुए बाहर आ गये और उस स्थान पर गये जहााँ रोगी लेटा हुआ था िथा उसकी दयनीय दिा देखी। वह उसे ित्काल योग साधना-कुटीर के बरामदे में ले गये और गुरुदेव को सन्ेि दे कर उस रोगी को आश्रम के अन्दर स्थान देने के चलए उनकी अनुमचि मााँगी। गुरुदेव स्वयं दया भाव से अचभभिू थे। उन्ोंनें आवश्यक अनुमचि दे दी।

उसके पश्चाि् स्वामी जी ने उस रोगी की सेवा-सुशूरूषा इिनै प्ेरम िथा ध्यान के साथ आरम्भ कर दी चक उससे बढ़ कर मााँ भी नहीं ंकर सकिी थी। उन्ोंनें उस रोगी के चलए, चजसने उनके िरणों ंका आश्रय चलया था, अपने कुटीर के सामने ही एक झोपडी बनवा दी। उन्ोंनें पन्दरह चदन िक लगािार सेवा कायप चकया िथा क्लोरोफामप, िारपीन िथा अन्य औषचधयााँ लगा कर रोगी के िरीर से रोगाणुओं ंको दूर करने में वह सफल हुए। वह अपने हाथों ंसे उसके व्रणों ंकी मरहमपट्टी करिे थे। उन्ें प्रसन्निा थी चक उन्ें इस महान् सेवा में पुत्तूर के श्री सूयपनारायण का सहयोग प्राप्त था। **शमत्र, शिशकत्सक, पररिाररका, रसोइया िथा स्वच्छिा कमपिारी'की संयुि भूशमका शनभािे हुए वह लगािार कई महीनों ंिक यह सेवा करिे रहे। उस अभागे प्रािी का मल-मूत्र भी वह साफ करिे थे। जब नाई ने उसके बाल काटने से इनकार कर शदया िब उन्ोंनें स्वयं ही यह कायप शकया। शनयि िाशलका के अनुसार उन्ें उस रोगी को शदन में आठ या दि बार च्चखलाना पडिा था। आच्चखरकार, वह रोगी शनस्सहाय के रूप में नारायि के अशिररि अन्य कोई न था, अिएव उसके शलए जो कुछ भी आवश्यक हिोा उसे यह शवनम्र भि (स्वामी जी) बडी ही परवाह, प्ेरम िथा श्रद्धा के साथ करिा था।**

एक चदन सन्ध्या के समय आाँधी आयी चजससे रोगी की झोपडी नष्ट् हो गयी। कुछ-न-कुछ अस्थायी प्रबन्ध करना था; चकन्तु वहााँ कौन था जो उस असहाय प्राणी की ऐसे चवषम समय में देख-भाल करिा! उसके एकमात्र चमत्र, सहानुभूचििील स्वामी जी उस रोगी को एक समीपविी गुफा में ले जाने के चलए आाँधी रहिे ही अपने कुटीर से बाहर आ गये। वह रोगी की खाट िथा अन्य सामान भी अपने कंधों ंपर ले गये। आगामी चदवस को उन्ोंनें उस छोटी-सी गुफा को साफ-सुथरा चकया और िब उस व्यक्ति के चलए एक नयी झोपडी बनवायी। ित्पश्चाि् पुनीः वही मूक सेवा धारा की भााँचि अपने सामान्य िथा सहज प्रवाह के साथ िलिी रही। वहााँ न िो कोलाहल था और न आत्माचभनन्दन अथवा थकान की भावना ही। यह सब सावपभौचमक प्ेरम की भावना से परम प्रिाक्तन्त से चकया गया। **रोगी कभी-कभी शमष्टान्न खाने की इच्छा व्यि करिा। स्वामी जी उसके शनदेिानुसार उन शमष्टान्नों ंको िैयार करिे और उसे सूफूशिपदायक स्नान कराने के पश्चाि्**

स्वयं उसे से्नेह पूवणक परोसिे। दूसरों ंके उपहास की उपेक्षा करिे हुए िथा सभी प्रकार की कचठनाइयों ंको पार करिे हुए अन्त में वह उस रोगी को रोगमुि करने में सफल हुए।

गुरुदेव ने चटप्पणी की चक स्वामी जी ने िो एक िमत्कार कर चदखाया। रोगी साधु, चजसके बिने की आिा अन्य लोगों ंने छोड दी थी, अब स्वयं इधर-उधर िलने िथा स्नान करने में सक्षम हो गया। गुरुदेव ने बडे ही प्रिंसात्मक भाव से कहा, **"शिदानन्द जी ने अपनी प्ेरेममयी सेवा से उसे नवजीवन प्रदान शकया है।"** उन्ोंनें और आगे कहा चक वह स्वयं भी ऐसी पूणप भक्ति के साथ उसकी सेवा न कर पाये हिो। जब स्वामी जी चसिम्बर १९५० में अक्तखल भारि यात्रा में गुरुदेव के साथ जाने की िैयारी कर रहे थे िब उस रोगी ने स्वयं ही सूचिि चकया चक वह चकसी मागपरक्षी की सहायिा से अमृिसर में अपने मठ में जाना अचधक पसन्द करिा है। स्वामी जी ने उसे उसके मागप-व्यय के चलए रुपये चदये और इस प्रकार परम सन्तोष के साथ अपनी सेवा पूणप की। रोग-मुि करने का उनका यह िमत्काररक कायप चिवानन्दाश्रम की सेवाओं ंकी गाथा में बहु-उद्धृि उदाहरण बन गया है। स्वयं गुरुदेव ने अक्तखल भारि यात्रा में अपने व्याख्यानों ंमें स्वामी जी की इस असाधारण सेवा का कई बार उल्ेलेख चकया था।

अक्तखल भारि यात्रा से वापस आने के पश्चाि् स्वामी जी ने कुष्ठरोचगयों ंकी सेवा के कायप को िीव्र कर चदया। **उनके दीघणकाशलक प्रयास के पररिामस्वरूप कुछ भूशम प्रा की जा सकी थिा ब्रह्मपुरी की कुष्ठ-बस्ती का शनमाणि हो सका।**

सन् १९५२ में एक चदन मूसलाधार वषाप हुई और ििभागा ने अपने चकनारों ंको िोड िला। मुचनकीरिी के चनकट की कुष्ठ-बस्ती की कई झोपचडयााँ बह गयीं। ं िब चजला अचधकाररयों ंसे स्वामी जी ने सम्पकप चकया। उन्ोंनें एक सावपजचनक सभा का भी आयोजन चकया और कुचष्ठयों ंकी चवकट समस्या की ओर सभी सम्बंक्तिि व्यक्तियों ंका ध्यान आकचषपि चकया। सभा में यह चनणपय चकया गया चक एक कुष्ठ-चनवारक-सचमचि स्थाचपि की जाये। उनके प्रयत्नों ंसे पररणामिः चटहरी गढ़वाल चजले की **प्रथम कुष्ठ-शनवारक सशमशि संघशटि हुई।**

कुचष्ठयों ंको, धन संग्रह करके, खाद्यान्न चविरण चकया जाने लगा। उनसे कहा गया चक अब कुष्ठी अपने जीवन चनवापह चहिाथप सडक के चकनारे नहीं ंबैठा करेंगे। चजला अचधकाररयों ंने बस्ती के चलए एक प्रचिचष्ठि कुष्ठ चनवारक चिचकत्सक की सेवायें उपलब्ध करवायीं।ं

अचधकांि सामाचजक कायपकिापओं ंके चलए इस प्रकार का कायप दुष्कर हो सकिा था। इधर देक्तखए श्री स्वामी जी महाराज अपनी आध्याक्तत्मक साधना के चलए जीवन का सब-कुछ त्याग कर आश्रम में आये थे, चकन्तु **उन्ोंनें इन सबको भगवान् की पूजा के रूप में माना और जो उस महान् आध्याच्चिक ऊँिाई पर प्रशिशष्ठि हो िुका हो उसके शलए कोई भी प्रवृशत्त वास्तव में शित्त शवक्ेषेप का कारि नहीं ंबन सकी।**

जब स्वामी जी महाराज चवदेि यात्रा पर थे िब चनस्स्वाथप सेवा पर उनके प्रविन से प्रभाचवि मिा सिी प्रथम व्यक्ति थीं ंचजसने इस चनस्स्वाथप सेवा के महान् यज्ञ में उदारिा से प्रिुर दान चदया। अन्तरापष्ट्रीय ख्याचि प्राप्त मचहला मिा चसमोनेटा ने अन्तर िक प्रभाचवि हो, अपना पुराना व्यवसाय छोड ब्रह्मपुरी (ऋचषकेि, भारि) में कुचष्ठयों ंकी, िरणाचथपयों, ं चनस्सहायों ंिथा अनाथों ंकी सेवा में अपना जीवन अचपपि करने के चलए चिवानन्द आश्रम, भारि आ गयीं। ं िब से

उनके चलए हाचदपक समपपण िथा सहानुभूचि से कायप कर रही हैं। वह कहिी हैं-"स्वामी जी महाराज में अपनी चनष्ठा के कारण ही मैं यह कायप कर सकिी हैं। और मैं यह कायप अपनी साधना के रूप में करिी हाँ?"

इस सेवाचनष्ठ मचहला ने **श्री स्वामी जी की प्ेरेरिा िच्चि से ब्रह्मपुरी बस्ती में बुनाई की मीिने लगवायीं ंऔर स्वथथ हो िुके कुष्ठ रोशगयों ंको उत्पादनकारी कायण में लगा शदया।** श्री स्वामी जी महाराज वहााँ जािे और उन्ें सप्ेरेम प्रोत्साचहि करिे। श्री स्वामी महाराज की प्ेरेरणा से 'चदव्य जीवन संघ' ने 'चजला कुष्ठ चनवारक सचमचि' को अपना सहयोग प्रदान चकया।

मिाा चसमोनेटा की सप्रयत्नों ंके फलस्वरूप '**इंच्चिि कुष्ठ-शनवारक संथथा' का नाम 'शिदानन्द अन्तराणष्ट्रीय कुष्ठ शनवारक-शनशध' रखा गया। इस भााँशि हमारे समय के परम सहानुभूशिशील सन्त के नाम पर इस लोकोपकारी संथथा का जन्म हुआ। शदव्य जीवन संघ की सभी कुष्ठ-शनवारक-प्रवृशत्तयााँ इस शनशध के माध्यम से िलिी हैं।**

चविेष िुभावसरों ंजैसे चिवानन्द जयन्ती, चिदानन्द जयन्ती पर श्री स्वामी जी महाराज स्वयंसेवकों ंकी टोली के साथ कार द्वारा 'ब्रह्मपुरी, ढालवाला िथा लक्ष्मणझूला बक्तस्तयों' ं में जािे हैं। वहााँ चमष्टान्न, फल, दचक्षणा रूप में नकद भेंट देिे हैं। कभी-कभी खाद्यान्न िथा वस्त्ाचद भी ले जािे हैं।

मिाा चसमोनेटा ने अपने अन्य चनष्काम-सेवा-साचथयों ंके साथ (जैसे श्रीमान् व श्रीमिी ब्ेरेल आचद) **वहााँ ढालवाला बस्ती में किाई-बुनाई की एक औद्योशगक इकाई खोली जो दररयााँ, ऊनी स्ेवेटर, गुलूबन्द (मफलर) िथा इसी प्रकार की अन्य वस्ुतुएाँ िैयार करिी है शजससे कुष्ठ-रोगी स्वावलम्बी बन सकें। ित्पश्चाि् 'शिदानन्द कुष्ठ उपिार शिशकत्सालय' खोला गया। वहााँ िाक्टर सूिक िथा अन्य उदार हृदयी जन अपनी सेवाएाँ उपलि करा रहे हैं।**

इसके अचिररि स्वामी जी द्वारा आरम्भ चकये गये कुष्ठ-चनवारण-कायपक्रम की एक अन्य प्रमुख ऐचिहाचसक घटना है सन् १९७५ में लक्ष्मणझूला कुष्ठ-बस्ती में औषधालय की स्थापना। इससे उन रोचगयों ंको बहुि आराम प्राप्त हुआ चजन्ें इससे पूवप आश्रम के चिचकत्सालय िक का पूरा मागप िलकर आना पडिा था। **शनस्सन्ेदेह उनकी आध्याच्चिक िच्चि के कारि ही शदव्य जीवन संघ प्रशि वषण सहस्रों ंरुपये व्यय करके थथानीय कुष्ठ-बच्चस्तयों ंके बनुधुओं ंको स्मरिीय लोकोपकारी सेवा प्रदान करने में सक्षम हुआ है।**

स्वामी जी की कुशष्ठयों ंकी सेवा उनकी शदव्य प्रकृशि की सुन्दर अशभव्यच्चि है। स्वामी जी, जो चक चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष िथा विपमान समय के महत्तम आध्याक्तत्मक नेिाओं ंमें से एक हैं और जो चदपन िथा पथप्रचदपन के चलए सभी सामाचजक क्तस्थचि िथा व्यवसाय के अनेक भिों ंसे सदा चघरे रहिे हैं, दीनों ंमें से सवापचधक दीनों ंसे चमलने, उनमें से प्रत्ेयेक के साथ कुछ चप्रय विन बोलने िथा उनकी िारीररक सुख-सुचवधा की देख-भाल करने के चलए चकसी-न-चकसी िरह समय चनकाल ही लेिे हैं। चगररधारी की कहानी चजसके चलए इचिहास सम्भविः स्थान न दे सके; चकनुतु यह लोकोपकारवाद के इचिहास में, सेिे भाइिारे िथा स्वभाव-सौजन्य के इचिहास में स्वचणपम अक्षरों ंमें अचभचलक्तखि होगी।

स्वामी जी कदाचिश् अपने शप्रयिम शिष्य की शजिनी देखभाल करिे उससे भी अशधक उन्होंनें शगररधारी की की। बीस अथवा इससे भी अचधक वषों िक रोगी िलने में असमथप था और स्वामी जी इन सब वषों में उसे भोजन भेजिे िथा सभी सम्भाव्य उपायों ंसे उसकी देखभाल करिे रहे। चगररधारी सदा ही उनके ध्यान का प्रथम चवषय हिोा था। उदाहरणाथप, वह जब अपनी लम्बी चवश्व-यात्रा पर आश्रम से प्रस्थान करने वाले थे िब वह उस व्यक्ति से चवदाई लेने गये और कहा चक वह उसे प्रचिचदन स्मरण करिे रहेंगे। उस बिेारे ने करबद्ध प्राथपना की िथा स्वामी से आश्वासन प्राप्त चकया चक वह उसकी मृतुयु से पूवप उसके पास अवश्य आ जायेंगे।

उसकी प्राथपनाएँ सुन ली गयीं।ं कोई भी यह चवश्वास नहीं ंकरिा था चक स्वामी जी के आने कि चगररधारी जीचवि रह सकेगा। चकन्तुु ऐसा हुआ चक स्वामी जी चनयि समय से ढाई माह पूवप ही आश्रम वापस आ गये। जब उन्हें चगररधारी की दिा का पिा िला िो वह-चजन्होंनें बीस वषों िक उसकी अथक सेवा-सुशूरूषा की थी-अब उसको िाक्तन्तपूणप महाप्रयाण के चलए िैयार करने को उतुसुक थे। **उन्होंनें एक साधारिे कम्बल खरीदा और ढालवाला में शगररधारी की झोपडी में उससे शमलने गये।** मिाा चसमोनेटा उस समय उसके पास उपक्तस्थि थीं।ं **स्वामी जी ने मृदु स्वर में शगररधारी से कहा: "अब आप अपना िरीर त्याग सकिे हैं। आप िाच्चन्त से जा सकिे हैं।" इस भाँशि असीम करुिाशील गुरुदेव को अपने पास बैठा हुआ देख कर सद्भाग्यवान् शगररधारी कुछ समय िक प्रसन्न िथा िान्त रहा और ित्पश्चाि् उसने अपना नश्वर िरीर त्याग शदया।** उसे उसी छोटे सिेी वस्त् से ढक चदया गया और चदव्य नाम के उिार के साथ उसके िरीर का दाहसंस्कार चकया गया।

असहाय लोगों ंके प्रशि स्वामी जी की ऐसी हृदयस्पिेी सेवा िथा प्ेरेम के उदाहरिे अनेक हैं। ढालवाला का एक अन्य कुष्ठी चजसकी पत्नी उसे छोड कर िली गयी थी, अपने दो बिेों ंके साथ असहाय रह गया था। स्वामी जी को अपनी माँ से अलग होने पर बिेों ंके दुीःख थिा ित्पररणाम स्वरूप बिेारे चपिा के कष्ट् का पिा िला। अिेः वह उन बिेों ंको आश्रम में लाये, उनको भोजन कराया िथा वस्त् चदये और ित्पश्चाि् उन्हें एक मचहला चिचकत्सक को समचपपि कर चदया जो उनकी मिाा जी बनीं।ं इस प्रकार के उदाहरण संख्यिेी हैं।

वषप में एक बार जब होली का आनन्दपूणप उत्सव आिाा है िब िीनों ंकुष्ठ-बक्तस्तयों ंके कुष्ठी भाई कुछ-कुछ क्षणों ंके पश्चाि् 'चिदानन्द भगवान् की जय' के िुमुल नाद के साथ नृत्य िथा गान करिे िथा अपनी ढोलकै बजिे हुए आश्रम आिे हैं। वे आिे हैं, अपने चमत्र िथा परचत्राा से चमलिे हैं और उस व्यक्ति को स्ेनेहमय नमस्कार करिे हैं जो उनमें से प्रत्ेयेक के जीवन में बहुि ही महत्त्वपूणप रहा है। इधर सन्त भी उनके समान उत्साह के साथ बाहर उनके पास आिे, उनका स्वागि करिे िथा उन्हें चमष्टान्न भेंट करिे हैं। प्ेरेम िथा उल्लास, सन्त के मुख पर की काक्तन्त, कुचष्ठयों ंके मुख पर की कृिज्ञिा िथा स्ेनेह और पूणपिया मुि िथा अबाध सत्कार-चवचनमय दिपकों ं में उन्नयनकारी आनन्दानुभूचि संघचटि करिे हैं।

इस प्रकार उत्तराखण्ड की अभागी िथा पीशडि आिमाओं ंने स्वामी जी से िाच्चन्त िथा आश्रय प्राि शकया। सहानुभूशिशील स्वामी जी उन सबके न केवल शिशकत्सक थे अशपिु उनमें से प्रत्ेयेक के स्ेनेहमयी माँ, कठोर शपिा, सहायक शमत्र िथा सवोपरर उद्धारक िथा परचत्राा भी थे और हैं।

व्यक्ति अपनी चनष्कपट चनस्स्वाथप सेवा से उद्दण्ड व्यक्तियों ंका हृदय सदा ही पररवचिपि कर सकिा है। गुरुदेव ने अपनी पुस्तक 'कमपयोग-सम्बिी संकेि' में चलखा है चक 'चकस प्रकार ऐसे सभी व्यवहार हृदय को पचवत्र िथा चविाल बनािे, संकल्पिक्ति को सुदृढ़ करिे िथा आत्मज्ञान की प्राक्तप्त के चलए मन को िैयार करिे हैं।' स्वामी जी के चलए िो ऐसे कायप उनकी बाल्यावस्था से ही उनकी प्रकृचि के अंग बन िुके हैं। िथाचप इस अवस्था में भी, जब वह आप्तकाम हैं और व्यक्तिगि साधना के रूप में उन्हें कुछ भी करने को िेष नहीं ंरहा है, वह इन व्यवहारों ंको केवल इसचलए बनाये नहीं ंरखिे चक यह 'लोकचिक्षा' है िथा उनके चिष्य िथा प्रेमी उसी मागप का अनुसरण करेंगे, वरन् इसचलए चक उत्कृष्ट् कोचट की परोपकाररिा का कोई परविी-सामाचजक अथवा धाचमपक-उद्देश्य नहीं ंहुआ करिा है।

उनके जीवन का आनन्द दूसरों ंको, यहााँ िक चक संसार-भर को चदन-रािि चनरन्तर िारीररक, मानचसक, बौक्तद्धक िथा आध्याक्तत्मक रूप में अपना जीवन िथा समय प्रदान करने में पूणपिया चनचहि है। इस िैलधारावि् आत्म-त्याग की भावना से सन्तुष्ट् न हो कर श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज का जीवन सदैव चनत्य नयी चवचधयों ंको अपनाने में रि है चजससे वे संसार-भर के क्षुद्र प्राणी िक पहुाँिकर उसका कष्ट् चमटा सकें। इस प्रेचमल और चनष्काम सेवा में ही अपने को चमटा देने वाले स्वामी जी के हषोल्लास व अखण्ड आनन्द का रहस्य चछपा है। आनन्दपूणप त्याग ही जीवन है, प्रमाद या आराम नहीं।ं

-स्वामी शिदानन्द

गुरुदेव के साथ उनके अच्चन्तम शदनों ंमें

"योगः कमणसु कौिलम्

-कमण करने का कौिल ही योग है"

(गीिा : २-५०)।

पिश्चयाप ि था अज्ञि संगिर की अवचध इस भााँचि अकस्मि् समाप्त हो गयी। स्वामी जी २१ जून १९६३ को आश्रम वापस आ गये। गुरुदेव उस समय अपनी महासमाचध की िैयारी कर रहे थे।
यद्यचप उन्होंने कोई चवचिष्ट् घोषणा नहीं ंकी थी, उन्होंने १४ जुलाई की चिचथ की ओर अपने चिष्यों ंका ध्यान स्पष्ट् रूप से आकृष्ट् चकया था िथा उसे चिचथ-पत्र में रेखांचकि कर चदया था। उन्होंने
उनसे प्रीयमानीः चवनोद के रूप में कहा था चक उन्हें ऊपर ले जाने के चलए वैकुण्ठ से चवमान उिर रहा है। उनके अचिररि अन्य चकसी को भी इस अनागि का ज्ञान न हो सका चक उनका चिरोभावचदवस इिना िीघ्र आने वाला है। िथाचप वह उत्क्रमण की िैयारी कर रहे थे। अिः उनके
उत्तराचधकारी को उस महत्त्वपूणप चदवस से पयापप्त समय पूवप ही आश्रम को वापस लाना पडा। यह दैवकृि योजना थी चजसने स्वामी चिदानन्द को बारलोगंज से अपने पग वापस लेने को चववि चकया।

चजन चदनों ंस्वामी जी आश्रम से बाहर थे, लगभग सैकडों ंमील दूर अपने आन्तररक िको में चछपे हुए थे, संयोगवि उन्हीं ंचदनों ंयोग-समाज, िन्नै के संस्थापक कचवयोगी िुद्धानन्द भारिी आश्रम पधारे। गुरुदेव उनके बालपन के सखा थे। उनके साथ अपने वािाप-काल में उन्होंने गुरुदेव से पूछा, **"स्वामी जी! कृपया मुझे वह अनश्वर ररक्थ (वसीयि) बिलाइए जो आप मानव-जाशि को अपनी पुस्तकों ंिथा भवनों ंके अशिररि उत्तरदान करेंगे।** क्या यह चदव्य जीवन संघ है अथवा संन्याचसयों ंका वह पुण्यिील समाज है चजसे आपने प्रचिचक्षि चकया है।" **शिवानन्द कुछ समय िक अन्तमुणख िथा मौन हो गये और ित्पश्चाि् उन्होंने कहा: "शनस्सन्देह शिदानन्द। वह जीशवि ररक्थ हैं शजसे मेरे पश्चाि् शदव्य जीवन संथथा का कायण िलाने के शलए मैं अपने पीछे छोड रहा हूँ।"** और िब, मानो चक उन्होंने ब्रह्माण्डीय योजना को अपने मन में पहले ही देख चलया हो, आगे कहा, "वह िीघ्र ही आ रहे हैं।" अनेक अवसरों ंपर उन्होंने यह संकेि चदया था चक चिदानन्द उनके उत्तराचधकारी हैं। सन् १९५३ में आश्रम में आयोचजि चवश्व धमप पररषद् के समय उन्होंने कोलकािा के श्री एन. सी. घोष को ऐसा ही इंचगि चकया था। स्वामी चवमलानन्द ने हमें बिाया चक इसी भााँचि एक अन्य अवसर पर जब गुरुदेव ियमण्ड जुचबली हाल में कायापलय का कायप कर रहे थे, गीिा-प्रेस के प्रचसद्ध संस्थापक श्री जयदयाल गोयन्दका ने उनका दिपन चकया िथा उनसे अपने उत्तराचधकारी के िुनाव के चवषय में पूछा। गुरुदेव ने उनके प्रश्न का उत्तर देने के बदले चिदानन्द जी को वहााँ ित्काल आने का सन्देि कहला भेजा। स्वामी जी आये और दूर से ही गुरुदेव को श्रद्धापूवपक िीन बार दण्डवि् प्रणाम चकया और ित्पश्चाि् गोयन्दका जी को भी साष्टांग प्रणाम चकया। अन्य कुछ भी नहीं ंहुआ। कुछ कहा भी नहीं ंगया; चकन्तु सहज चिष्टािार ने गीिा-प्रेस के श्रद्धेय संस्थापक पर बहुि गहरा प्रभाव िाला। चिदानन्द की मात्र उपक्तस्थचि िथा चवनम्र दण्डवि् प्रणाम ने उन्हें एक असाधारण भाव से पूररि कर चदया। उन्हें उनका उत्तर प्राप्त हो गया।

इस िुने हुए उत्तराचधकारी को ठीक समय पर आश्रम वापस आना पडा। वह वहााँ २१ जून को पहुाँ गये िथा पूछिाछ करने पर उन्हें ज्ञाि हुआ चक गुरुदेव चंकचिि् अस्वस्थ हैं िथा चवश्राम ले रहे हैं; अिएव वह िाक्तन्तपूवपक अपने कुटीर को वापस िले गये। अगले चदन प्रािःकाल उन्होंने गुरुदेव के कुटीर में उनके दिपन चकये।

गुरुदेव िथा उनके इस िुने हुए चिष्य का पारस्पररक सम्बन्ध भी चवलक्षण प्रकार का था। स्वामी जी श्रुचियों ंका श्रवण करने के चलए अपने ब्रह्मचनष्ठ गुरु के समीप कभी नहीं ंबैठे। गुरुदेव के समय-समय पर कहे हुए िब्द ही इस समचपपि चिष्य के चलए ब्रह्मसूत्र थे। वह न िो चनरन्तर गुरुदेव के साथ रहे थे और न उनके चनजी सचिव ही रहे थे। उनकी गम्भीरिम श्रद्धा िथा पूणप

चवनम्रिा गुरुदेव के साथ परमावश्यक चवषय से अचधक वािाप करने में उनके मागप में बाधक थीं। ं
वह सदा ही श्रद्धापूणप दूरी बनाये रखिे थे और यचद कभी वह उनसे बािें करिे भी थे िो वह
कुछ आवश्यक इने-चगने िब्द ही बोलिे थे। जब स्वामी जी चदव्य जीवन संघ के महासचिव के उच्चपद पर थे और गुरुदेव के साथ व्यक्तिगि वािाप करने के चलए अनेक अवसर उन्हें उपलब्ध
थे, उस समय भी वह सामान्यिीः चवनम्र िथा संकोिी थे। वह यद्यचप परमोच्च अद्वैि क्तस्थचि से
सम्पन्न थे िथाचप वह िास्त्राज्ञा का पालन करिे िथा सदा ही गुरुदेव से यथोचिि दूरी पर रहिे थे।
गुरुदेव यह जानिे थे चक उनका िुना हुआ चिष्य पूणपिया अपने व्यक्तिगि अचधकार से िमक रहा
है; सदा चदव्य ििेना में क्तस्थि है िथा उसे उनके समीप रहने की कोई आवश्यकिा नहीं ंहै।

चकन्तु अब समय आ गया था। गुरुदेव ने अपने उत्तराचधकारी को अपने पास खींि चलया
और अपनी आध्याक्तत्मक िक्ति के महान् आवेग से उन्हें अनुप्राचणि कर चदया। यही रहस्यमय
िक्ति-संिार के नाम से चवचदि है। वह आध्याक्तत्मक संसगप समाप्त हो गया। चिवानन्द अब चिदानन्द
में अन्तचनपचवष्ट थे। दो एक बन गये। चिवानन्द अब चिदानन्द और चिदानन्द चिवानन्द स्वरूप थे।

गुरुदेव के चलए यह परम सन्तोष का चवषय था चक उनके चिरोभाव के समय उनका योग्य
चिष्य उनके पास था। अपनी महासमाचध से दो चदन पूवप एक सायंकाल को गुरुदेव ने चिदानन्द जी
की ओर उँगली से संकेि कर िा. कुट्टी से कहा: "वररष्ठिम चिष्य।" उन्होंनें इसे दो बार
दोहराया। वह पााँिवें दिक में सूचिि कर िुके थे चक राव जी उनके उत्तराचधकारी हैं। महासमाचध
की पूवप-सन्ध्या को वररष्ठिम चिष्य के रूप में चिदानन्द जी का बार-बार उल्लेख कर उन्होंनें
पूवपसम्प्रत्यय की पुचष्ट की थी। जब गुरुदेव के चिरोभाव की अक्तन्तम घडी द्रुिगचि से आ रही थी
उनका योग्य उत्तराचधकारी उनके पास पूणप गाम्भीयप के साथ उपचनषद् के महावाक्यों ंका उच्चारण
करिे हुए पाया गया। अन्त में जब १४ जुलाई १९६३ की अधपराचत्र को उनके जीवन का अवसान
हुआ िो वह गुरुदेव के कुटीर से बाहर आये और एकचत्रि आश्रमवाचसयों ंसे कहा, **"यह एक
सुन्दर जीवन था और इसने अनेक जीवनों ंको सुन्दर आकार शदया।"**

जगद्गुरु ने अपना जीवनोद्देश्य पूणप कर चलया था। वह परम सत्ता में चवलीन हो गये।
गुरुदेव द्वारा अपने पीछे छोडे गये चिष्यों ंमें सबसे वररष्ठ होने के कारण चिदानन्द ने गुरुदेव की
महासमाचध के समय भगवन्नाम का उच्चारण चकया। दो चदन पश्चाि् १६ जुलाई १९६३ को अपराह्न में
गुरुदेव के पचवत्र पाचथपव िरीर को पूणप गाम्भीयप िथा चवषाद के साथ पचवत्र समाचध-मक्तन्दर में
भूसमाचध दे दी गयी। ित्पश्चाि् चिदानन्द जी की वैयक्तिक देख-रेख में षोडिी चक्रया सम्पन्न हुई।
गुरुदेव के रुग्णिा-काल में िथा बाद में उनकी महासमाचध के अनन्तर चिदानन्द ने ही सभी
महत्त्वपूणप व्यवस्थाओं ंकी देखभाल की। एक बूंद भी अश्रुपाि चकये चबना, वह अत्यन्त गम्भीर िथा
अन्तमुपखी बदन से सभी आवश्यक कार्यों को करने िथा आश्रम के भिों ंके िोकसन्तप्त पररवार
को सान्त्वना देने में लगे रहे। िेष समय वह सदा ही मौन, प्रिान्त िथा चिन्तनिील रहिे थे।

१४ जुलाई १९६३ से १८ अगस्त १९६३ िक प्रकटिीः (पद) ररक्तिा की मध्यावचध थी।
षोडिी-पूजा के समाप्त हो जाने पर अध्यक्ष चनवापचिि करने के चलए चदव्य जीवन संघ के प्रन्याचसयों ं
की एक बैठक हुई। उस समय स्वामी चिदानन्द जी मौन ध्यान में अत्यचधक िल्लीन रह कर सबसे
दूर रहा करिे थे। संघ के सदस्य िाहिे थे चक अचनचुछुक स्वामी चिदानन्द जी महाराज गुरुदेव का
स्थान ग्रहण करें। गुरुदेव के नाम में उन्हें वस्तुिीः बलाि् उस स्थान में िाला गया। सदा की भााँचि
ही चवनिी िथा अनाटकीय रह कर उन्होंनें उस समय अपना चविार प्रकट चकया : "एक भार ले

चलया गया है। इस वहन करना ही होगा।" वह १८ अगस्त १९६३ को औपिपाररक रूप से चदव्य जीवन संघ के अध्यक्ष चनवापचिि हुए। उत्तरदाचयत्व ग्रहण करने के समय उन्होंनें गुरुदेव से एक भावपूणप बालसुलभ प्राथपना की : "गुरुदेव की आत्मा से मेरी एकमात्र प्राथपना यह है चक वह िुद्ध भाव से मुझे सेवा करने, किपव्यचनष्ठा से कायप करने िथा योग्य रीचि से जीवन यापन करने में समथप करें। वह इस सेवक को नम्रिा का गुण और चनस्स्वाथपरिा िथा समपपण की योग्यिा प्रदान करने से इनकार न करें।"

चदव्य जीवन संघ के इचिहास में १९४३ से १९६३ िक के दो दिक चनस्सन्देह अत्यचधक महत्त्वपूणप हैं। पुण्यसचलला गंगा के िट पर भागविीय सत्ता ने अपनी चवभूचि को दो रूपों–कमपठ गुरु िथा समचपपि चिष्य में प्रकट चकया। भारिवषप की पुण्य भूचम मेंभागविीय सत्ता अपने को सद्गुरु के रूप में असंख्य बार प्रकट करिी है, चकन्तु केवल समचपपि िथा अचधकारी चिष्य दुलपभ होिे हैं। स्वामी चिदानन्द इन दुलपभिम पुष्पों ंमें से एक हैं जो गुरुदेव की चकरण के स्पिपमात्र से पुस्ष्पि िथा चवश्व को मधुर रूप देने के चलए अपने में सुरचभ संचिि चकये हुए आये। अिः ऐसी आत्मसंयमी िथा समचपपि आत्मा सारे चवश्वभर के साधकों ंको उनके जीवन-पथ में मागपदिपन कराने वाले सद्गुरु, वास्तचवक चमत्र, ित्त्ववेत्ता िथा मागपदिपक के रूप में उभर कर आगे आये िो इसमें कोई आश्चयप नहीं। ं गुरुदेव ने उनसे चकसी चविेष रहस्य का उद्घाटन नहीं ंचकया। स्वामी जी ने गुरुदेव के जीवन से जो एकमात्र रहस्य सीखा, वह था : **"अपने को ररि बनाओ, मैं िुम्हें सम्पूपूररिकरदूँगा।"शिदानन्द वास्तव में िररागशि िथा गुरुभच्चि के मूशिणमान् आदिण हैं जो अपनेगुरुदेवसेअपृथक्करणीय हैं और मानव को महान् पाठ की शिक्षा देने में प्रवृत्त है: "ईश्वरपरमगुरुहै,शवश्वसद्गुरु है। यह शवश्व ईश्वर का दृश्गोर रूप है। अिः शवश्व गुरु है औरजीवनशिष्यत्वहै;अिएव आपको शवश्व की सेवा िथा शवश्व से ज्ञान प्रिा करने के शलए हीजीवनयापनकरनािाशहए। यह ही मोक्ष प्रदायक धमण है।"**

स्वामी चिवानन्द जी के मानव-रूप का एक रेखा-चित्र देक्तखए। आश्रमवाचसयों ं व अभ्यागिों ं के साथ आत्मीयिापूणप व्यवहार करिे हुए वे एक महान् एवं िान्तमूचिप के रूप में अचभव्यि हो उठिे हैं। वे सरल एवं महान् व्यक्ति हैं और सभी कायप चनष्काम व चनिान्त अनासि भाव से करिे हैं। जब उनके साचन्नध्य में रहने का पयापप्त अवसर चमलिा है, िब उनके स्वणपिुल्य चविुद्ध व्यक्तित्व में बहुमूल्य रत्न-रूपी चवचिष्टिाएँ प्रकाि में आिी है।

इस महान् व्यक्ति की सवोत्तम चवचिष्टिा है-आिार और चविार में आश्चयपजनक चनष्कपटिा। उनका मन सांसाररकिा एवं कुचटलिा से एकदम रचहि है। वे िचुिि् सरल हैं और उनकी चक्रयाओं ंमें प्रचि-पग पर सरलिा प्रचिचवक्तम्बि होिी है। मन की दािपचनक गरहाइयों ंके होिे हुए भी यह सहज स्विः प्रसुफुचटि अकृचत्रमिा ििीघ्र ही उनकी थोडी देर की उपक्तस्थचि से ही प्रकट हो जािी है, जो एक समय में एक गम्भीर सन्त और िचुि के अनूठे मेल को प्रदचिपि करिी है।

चजन व्यक्तियों ंका स्वामी जी से सम्पकप रहा है, उनके हृदय स्वामी जी की स्वभावगि सरलिा के कारण प्रभाचवि हो जािे हैं।

-स्वामी शिदानन्द

शदव्य जीवन

"सवणगुहिामं भूयः शृ्णु मे परमं विः

-समूपूिण गोपनीयों ंसे भी अशिगोपनीय मेरे परम रहस्यमय विन को शफर सुनो"

(गीिा : १८/६४) ।

स्वामी शिदानन्द का इशिवृत्त मानव-व्यच्चित्व के पूिण शदव्यीकरि का इशिवृत्त है। यह मौन सेवा िथा पूिण अनिासा का इशिवृत्त है। अिः चहमालय का यह अप्रचिम सन्त अपने वैयक्तिक अनुभव के गम्भीर प्रमाण िथा अपरोक्ष अन्तज्ञापनोपलब्ध बोध के आधार पर चजज्ञासु-जगि् में यह घोचषि कर सका, "योग मात्र चनचवपकल्प-समाचध की अवस्था में ही नहीं ंहै। यह जीवन के प्रत्येक क्षण में है।" उनका चनष्कलंक जीवन ईश्वरपरायणिा से प्रचिक्षण प्रदीप्त रहिा है।

शिदानन्द का जीवन पशवत्र सेवा की गाथा है। सेवा िथा आत्याग उनके जीवन की प्रमुख शवशिष्टिाएँ रही हैं। उनका संस्कार ऐसा था चक श्रेष्ठ आध्यात्मिक सद्गुण उनके चलए सहज संकल्प-व्यापार थे। इस भााँचि **इस शनःसीम करुिापूिण सन्त ने अपनी शकिोरावथथा में ही उन भाग्यहीन कुशष्ठयों ंके शपिा िथा शिशकत्सक होने के भयजनक कायण का उत्तरदाशयत्व अपने ऊपर ले शलया शजन्हें उनके सभी सजाशियों ंने ठुकरा शदया था और शजनको वे घृिा करिे थे। औदायण, पशवत्रिा िथा करुिा उनमें सहज रूप से आये। भौशिक समृच्चद्धमय जीवन के शविारों ंसे वह कभी भी प्रलुब्ध नहीं ंहुए। उनका जन्म एक सम्पन्न पररवार में हुआ िथा राजकुमारों ंकी भााँशि उनका पालन-पोषि हुआ; शकन्तु धन-सम्पशत्त िथा सांसाररक प्रशिष्ठा उनके शलए अथणहीन थी। यौवनावथथा में भी वह इच्चियों ंके पिा से बहुि ऊपर थे। सेवा िथा आत्याग ही उनके सुख-साधन थे। सन्तों ंकी संगशि ही उनकी एकमात्र लालसा थी। ध्यान उनकी एकमात्र वासना थी। पूजा ही उनका एकमात्र आमोद था।**

इस जन्मजाि चसद्ध को अपने नवयौवन-काल में यह अनुभव हुआ चक वह संसाराचि में झुलस रहे हैं। अिः उपयुक्त समय आिे ही उन्होंने ित्काल अपना घरबार त्याग चदया। वह एक पूचणपमा के पुण्य चदवस को ऋचषकेश में पावनी गंगा के िट पर अपने गुरुदेव से चमले। उन्होंने गैररक पररधान धारण कर चलया िथा पुरािन संन्यास-आश्रम से सम्बद्ध हो गये। एक दशक से अचधक समय िक वह उग्र सेवा िथा साधना में चनरि रहे िथा एक ज्ञानी के रूप में चवभाचसि हुए। इसके आगामी दशक में गुरुदेव के जीवनकाल में उन्होंने नयी दुचनया (अमेररका) में योग िथा वेदान्त का सन्देश पहुाँचाया। वहााँ से वापस आ कर वह स्वेच्छा से एक एकाकी पररव्राजक संन्यासी का जीवन यापन करिे हुए एकान्तवास में चनरि हो गये। वह संन्यासाश्रम से भी उदासीन हो गये। वह भगवान् पर चनभपर रह कर ईश्वरीय िेिना की भूचमका में आनन्दपूवपक चनवास करिे हुए सभी पाशों ंसे मुक्त हो एक अवधूि की भााँचि स्वच्छन्द चविरण करिे थे।

इस अवस्था में भगवचदच्छा उन्हें लोक-संग्रह की, उत्कृष्ट आध्यात्मिक सेवा की भूचमका में वापस लायी। **गुरुदेव स्वामी शिवानन्द ने अपना भौशिक कलेवर त्याग शदया िथा वह परम**

सत्ता में शवलीन हो गये। अिः गुरुदेव के शदव्य शमिन के नेतृत्व का कायण उनके ि◌ुने हुए शिष्य के कन्धों ◌ंपर पडा। इस भाँशि संसार का त्याग करने वाला व्यच्चि आधुशनक जगि् में सवाणशधक सशक्रय धाशमणक कायणकिाण बना।

चिदानन्द सभी समयों ◌ंि◌था सभी अवसरों ◌ंपर अश्वान्त सेवा करिे हैं। वह प्रभु की इस चवश्व-रूप में सेवा करिे हैं। वह अपने गुरुदेव के चदव्य चमिन के माध्यम से सेवा करिे हैं। वह राममय जगि् में चनवास करिे हैं। राम उनके जीवन में क्ों कर आये, यह प्रत्येक चजज्ञासु के चलए एक चिक्षाप्रद पाठ है। वह उनके जीवन में उनकी बाल्यावस्था में कोदण्ड राम की मूचिप के रूप में आये चजनकी वह पूजा करिे ि◌था चजनमें अपनी पूणप सत्ता रखिे थे। एक परविी अवस्था में वह उनके पास हिभाग्य कुचष्ठयों ◌ंके रूप में आये। ि◌त्पश्चाि् एक ऐसा समय आया जब वह रामदास के उत्प्रेररि ि◌ब्ों ◌ंके रूप में उनके समक्ष प्रकट हुए। ि◌दनन्तर रामकृष्ण परमहंस का जीवन अपनी ओर संकेि करिे हुए एक आदिप के रूप में उनके समुमुख चदखायी पडा। सन्तों ◌ंि◌था रहस्यवाचदयों ◌ं ने उन्ें आिीवापद चदया। **अन्त में भगवान् ने अपने सद्गुरु के रूप में उन्ें दिणन शदया। शिवानन्द उनकी सत्ता में ही प्रविे कर गये। वह गुरुभच्चि से आपूररि हो उठे। शिवानन्द उनमें वास करिे थे और वह शिवानन्द में वास करिे थे। दोनों ◌ंशमल कर एक बन गये।** स्वामी कृष्णानन्द जी के ि◌ब्ों ◌ंमें **"उन्ोंने (शिदानन्द ने) श्री गुरुदेव से जो ररक्थ प्राप्त शकया है, वह ि◌प्रिीशि है। हमें उनमें गुरुदेव के सभी ि◌मत्काररिक ि◌था आश्चयणकारक गुि दृशष्टगोचर होिे हैं।"**

'सवं राममयं जगि्', 'सवण शवष्णुमयं जगि्', 'वासुदेवः सवणम्', 'सवं खच्चल्वदं ब्रह्म' - ये उनके जीवन के सूत्र ि◌था जीवन में आने वाली सभी पररच्स्थचियों ◌ंके नुसखे हैं। **वह समग्र शवश्व को ईश्वर की अशभव्यच्चि के रूप में देखिे हैं। यह संसार गुरु है। जीवन शिष्यत्व है। अिः व्यच्चि को अपना जीवन संसार की सेवा करने ि◌था स्वयं संसार से ज्ञान ग्रहि करने के शलए यापन करना है। यह धमण है जो व्यच्चि को मोक्ष ि◌क पहुँिािा है। यही मानव के प्रशि शिदानन्द के सन्ेिे का मूल भाव है। वह इस सन्ेिे को अपने व्यच्चिगि उदाहरि ि◌था गूँजने वाले आदेिों ◌ंके माध्यम से सम्प्रेशषि करिे हैं।** अिः उनमें चवपमान गुरुपन की भावना ने चवनम्र चिष्यत्व के जीवन को वरण चकया है। **वह अपने को सदा गुरुदेव का सेवक मात्र मानिे हैं। वह अपने शिष्यों ◌ंको गुरुदेव का शिष्य मानिे हैं। इिना ही क्ों, ◌ं वह उन्ें साक्षाि् नारायि समझिे हैं। वह आधुशनक काल के सन्तों ◌ंके ि◌ूडामशि हैं, शकन्तु वह सबके सामने शनमस्तक होिे हैं। वह न केवल अपने गुरुजनों ◌ंको अशपिु अधमाधम लोगों ◌ंको भी साष्टांग प्रिाम करिे हैं।**

वह इस पाशथणव जगि् के सभी प्राशियों ◌ंकी अक्षय करुिा के साथ सेवा करिे ि◌था उनसे प्ेरेम करिे हैं।जबवहआध्यात्त्मकउपलत्त्बधयों ◌ंकीपराकाष्ठापरपहुँगियेिोचनरथपकबािों ◌ं मेंकरुणाजनकरूपसेउलझेहुएअपनेसजाचियों ◌ंके दयनीयदृश्यदेखकरउनकाहृदयद्रचवि होगया।उन्ोंनेंसभीप्रकारकीअसुचवधाओं ◌ंि◌थाकचठनाइयों ◌ंपरध्याननदेकरउनलोगों ◌ंको मुिकरानेकेकायपकेचलएअपनेकोसमचपपिकरचदया।उन्ेंज्ञाििथाचकलोगअज्ञानिावि भूलेंकरिेहैं।अिःउन्ोंनेंउन्ेंतिरस्कृिनिींहैंकियाजोउच्छसमझाऔरनउनकीभत्सपनाहीकी।वरन्उनको ऊपरउठानेकेचलएवेस्वयंप्ेरेमसेनिीझुकगये।उनकाप्ेरेमचनीःसीमहैजोपिुओं,◌ंपचक्षयों ◌ं ि◌थाकीडों ◌ंि◌ककोअपनेक्रोडमेंलेनेकेचलएफैलारहिाहै।

चिदानन्द सनिान धमप की चकरणें प्रसाररि करने वाले एक ि्ुद्ध क्रकि (चप्रज्म) हैं। चनिान्त चनष्कल्मष साधु व्यक्ति थिा साक्षात्कार प्राप्त आत्मा होने से वह अचमि आध्याक्तत्मक ि्क्ति से सम्पन्न
हैं। उनकी उपक्तस्थचि ही उन्नयनकारी अनुभव है। वह संघषपरि चजज्ञासुओं ्के संयिों ्का चनराकरण करिी ि्था उनमें नवीन आध्याक्तत्मक ओज अनुप्राचणि करिी है। उनके चिष्य अनेक हैं और ऐसे लोग ि्ो असंख्य हैं जो यद्यचप उनसे दीचक्षि नहीं ्है पर उन्ें अपना सद्गुरु मानिे हैं। चकन्तु यह प्ेरेम ि्था करुणा का महान् स्वामी उन सबके मध्य में एक सामान्य साधक की भााँचि चविरण करिा है। **वह जन्मजाि शसद्ध है, शकन्तु शजज्ञासु की भााँशि आिरि करिे रहिे हैं।**

असाधारण ऊाँिाइयों ्पर आरोहण करने वाले ईि-मानवों ्ने मानव-मन पर अपनी अचमट छाप छोडी है। बुद्ध अपने पीछे 'ि्ार आयप सत्य' ि्था 'अष्टांचगक मागप' छोड गये। ि्ंकरािायप ने हमें परम सत्ता के पाठ का उत्तरदान चकया। िि्ैन्य ने हमें नाम-संकीिपन का आनन्दाचिरेक प्रदान चकया। चिवानन्द ने मानवि‍ा की सेवा, भक्ति, ध्यान ि्था प्रबोध-रूप साधनिि्ुष्टय प्रदान चकया। इसी अचवक्तच्छन्न परम्परा में, चिदानन्द सृचष्टकिाप की खोज चकसी अज्ञाि रहस्यमय लोक में न कर स्वयं सृचष्ट में ही खोजने का उपदेि हमें अपने भाव ि्था कमप द्वारा देिे हैं। उन्ोंने मानव को कमप-योग, प्रकािपूणप िि्ैन्य-योग, प्राचणयों ्की सेवा ि्था भगवदाराधन-योग का उत्तरदान चकया है। वह चनत्य चनरन्तर पुजारी-भगवान् के सिि आराधक हैं। वह अपने सजाचियों ्को चदव्य जीवन यापन करने के चलए भावोद्दीपक उपदेि देिे हैं। वह अत्यचधक उत्कण्ठा ि्था गम्भीर भाव से परामिप देिे हैं :

भगवान् के चवराट् स्वरूप को नमस्कार करने के चलए प्रचिचदन ब्राह्ममुहिप में जग जायें। चदन का कायप आरम्भ करने से पूवप उन-(प्रभु) के समक्ष श्रद्धा से निमस्तक हों।् ि्ान्त चित्त ि्था सुखि्ाक्तन्त ि्था सन्तोष से पूणप रह कर चदनभर व्यवहार करें। इस संसार में कुछ भी गचहपि नहीं ् है। अपने दृचष्टकोण में पररविपन लायें। दुभापव त्याग दें। ि्त्रु को क्षमा कर दें। चिन्ता करना बन्द कर दें ि्था अपने-आप मन्द-मन्द मुस्करायें। अनुभव करें चक यह समग्र संसार ईश्वर की अचभव्यक्ति है ि्था आप इन सभी नामरूपों ्में उस ईश्वर की ही सेवा कर रहे हैं। जीवन को योग में रूपान्तररि कर दें। सदािारी ि्था परोपकारी बनने का प्रयास करें। **ईश्वर सरल लोगों ्के साथ रहिा है, दुःचचखयों ्के प्रशि अपने को उद्घाशटि करिा है, भद्र लोगों ्को शववेक प्रदान करिा है ि्था अहंकाररयों ्से अपनी कृपा अलग रखिा है। अिः अहंिा त्यागें, सद्गुणों ्का अजणन करें ि्था मृदु बनें।** मन को सदा ि्ान्त ि्था चनरुचद्वग्न रखें। मन की बाधाओं ्पर चवजय पाने का यही रहस्य है। बोलने से पूवप अपने सभी ि्ब्दों ्पर भली-भााँचि चविार करें। इने-चगने ि्ब्द ही बोलें। यह ि्क्ति को सुरचक्षि रखेगा ि्था मानचसक ि्ाक्तन्त ि्था आन्तररक ि्क्ति प्रदान करेगा। अपना प्ेरेम व्यि करें। इसे पुनीः व्यि करें। इसे और भी पुनीः व्यि करें। इसे एक बार पुनीः और व्यि करें। मन को कभी भी पूणपिया बचहगापमी न होने दें। अपने मन के चवजेिा, अपनी वासनाओं ्के दमनकारी ि्था **अपने भाग्य के स्वामी बनें; क्ोंशक आप ही स्वामी हैं।**

गुरुदेव शिवानन्द आपको जगाने के शलए आये। भूल जायें चक आप यह नश्वर ि्रीर हैं। **स्मरि रखें शक आप ि्ुद्ध िि्ेना हैं।** और अचधक चनद्रा में न पडे रहें। **िृिव् शवनम्र बनें। सेवा करें। प्ेरेम करें। दान दें। ि्ुद्ध बनें। ध्यान करें। आिसाक्षात्कार करें। भले बनें। भला करें। दयालु बनें। संवेदनील बनें। शदव्यिा आपका जन्मशसद्ध अशधकार है।** इस चदव्यिा को चनयचमि साधना द्वारा प्रकट करें। **"ईिावास्यशमदं सवणम्।"** यह अक्तखल ब्रह्माण्ड ईश्वर से व्याप्त है। अिीः मानव जाचि की सेवा करें ि्था चदव्यिा की खोज करें।

ये चिदानन्द के सन्देिे के स्वरचिह्न हैं। महान् गुरुदेव की भााँचि वह समान रूप से बल दिे हैं: "केवल चवश्वास ही न कीचजए, वरन् वैसा बचनए िथा उसे जीवन में उिारिए।"

मानव-जीवन का महि् उद्देश्य भगवत्साक्षात्कार है। वृक्ष, पिु, पक्षी िथा कीडे जन्म लेिे िथा मर जािे हैं। उनका चवकास नहीं होिा है। उन्हें उनके स्रष्टा ने सद् िथा असद् में चववेक करने की क्षमिा से सम्पन्न नहीं चकया है; चकन्तु मानव-जीवन ईश्वर की अमूल्य देन है। चकन्तु मानव-जीवन का पथ 'क्षुरस्यधारा' का पथ है। इन्द्रियों ने हमें दास बना चदया है और हमारी िाक्ति का अपहरण कर चलया है। हमारे अनेक अन्धकूप हैं। जीवन के इस महान् िथा दुगपम पथ में हमारी साँभाल करने िथा हमें सम्बल प्रदान करने के चलए यदा-कदा ईश्वर के सन्देिवाहक, हमारे चमत्र िथा पथप्रदिपक के रूप में प्रकट होिे हैं। वह गुरु है। वह समग्र मानव जाचि का है। वह आपके अन्तिपम प्रकोष्ठ को खटखटािा िथा आपसे सानुकम्पा अनुरोध करिा है: "हे भाग्यिाली चमत्र! पालन करूाँगा। आप अज्ञान की गहन चनद्रा से कब जागेंगे?... आइए! आइए! अब जग जाइए। इस स्वप्न को भंग कीचजए। अपने जन्मचसद्ध अचधकार की मााँग कीचजए िथा अपने सत्स्वरूप को पहचाचनए। अभी िथा यहीं पर अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कीचजए िथा चदव्य आनन्द, िाक्तन्त िथा ज्ञान के अनुभव में प्रवेि कीचजए जो चक आपका िाश्वि स्वरूप है।"

यह मानव जाचि को चिदानन्द का चदव्य आह्वान है। ईश्वर करे चक हम इस रोमांिकारी उद्बोधन पर ध्यान दें िथा गीिा के अजुपन की भााँचि कहें :

"कररष्ये विनं िव" मैं आपकी आज्ञा का पालन करूाँगा ।

ॐ िक्तस्!

ॐ

ओ मानव! सूयोदय से ले कर सूयापस्त िक िुम्हारे जीवन का एक चदन समाप्त हो गया। इस प्रकार से िुम्हारी जीवनावचध का चकिना ही समय बीििा जा रहा है। इस अल्प काल में ही िुम्हें वह सब करना है जो जीवन के चलए अत्यन्त आवश्यक है। इसचलए उठो! जागो! अब देर मि करो। ऊपर उठ कर कुछ करो। आध्याक्तत्मक पथ पर सचक्रय हो जाओ।

जागो, अपनी आाँखें खोलो। ईश्वर की इस रिना में उसे अपने समक्ष देखो। वह सिोत्तम मानव से ले कर छोटे-से-छोटे कृचम में समान रूप से गचििील है। इसी रूप में ईश्वर की सेवा और आराधना के चलए चजओ। सभी प्राचणयों में बसने वाली चदव्यिा की पूजा ही िुम्हारा जीवन हो।

गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज िुम्हें चदव्यिा के चलए जागरूक करिे रहिे थे चक िुम समस्त प्रकािों के प्रकाि की िाश्वि प्रदीप्त चकरण के समान ईश्वर के बालक हो। इसचलए पचवत्रिा, सत्य, दया, चनष्काम सेवा से, ईश्वर के प्रचि प्रेम, चनत्य ईश्वर की प्राक्तप्त के चलए ध्यान करके अपने जीवन को चदव्य बनाओ। चदव्य जीवन के इस उत्कृष्ट् कायप में िुम्हें सफलिा प्राप्त हो!

-स्वामी शिदानन्द

चप्रयिम गुरुमहाराज

(स्वामी चिदानन्दजीद्वाराहस्तचलक्तखिपत्रकाटाइप प्रचि)

THE DIVINE LIFE SOCIETY (REGD.)

Propagates Yoga and VedantaandtheEthical and Spiritual Culture of India, Promotes UniversalLove,theUnity of Religions, the ideas of Brotherhood, and theSpiritofService among Mankind

Founder: H.H.SRISWAMISIVANANDA

P.O. SHIVANANDANAGAR 249 192, DISTT TEHRI GARHWAL, U.P.,HIMALAYAS, INDIA
(Grams: DIVINELIVE: Phone: RISHIKESH 40: Rly. Stn.: RISHIKESH. N. Rly.)

ॐ

श्री शिवानन्दाश्रम ।

ॐ श्री शिवानन्दाय नम: ॥ जय गुरुदेव ॥ हमारे परम पूजनीय िथा शप्रयिम गुरुमहाराज श्री स्वामी शिवानन्द भगवान का शवषय कुछ शलखने का सु अवसर शमलना यह मेरे शलए एक परम सौभाग्य है। श्री गुरुदेव िो हमारे शलए एक आदिण देविा पुरुष है। इस विणमान युग में आधुशनक जगि का शवशिष्ट् शदव्य शवभूशि हिोहुवे वे अपना स्वयं जीवन द्वारा शवश्व मानव जगि को शदव्य जीवन का का मगण शदखलाया िथा उस शदव्य शदिा में प्ेररि शकया ।।

गुरुदेव शिवानन्द जी िाच्चन्तकी की दिू थे। शवश्व प्ेम का प्रशिरुप थे। आपका उत्कृष्ट् व्यच्चित्व धाशमणकिा का आश्रय था । उनमें हम िारों ंयोगों ंका सुन्दर समिय देखा और सीखा ॥ मानव इशिहास में गुरुदेव सदा काल के शलये अमर बनकर रहेंगे ॥ हे पाठक वृन्द आप भी गुरुदेव का शदव्य िरिों ंमें भेंट िढ़ाना हो िो िुम - शदव्य जीवन पथ पर िलो।। सत्य व्रिी बनो। सदािार को अपनावों ं। दयावान बनो। सेवाकरो। योगी बनो। भाल ज्ञान प्रिा करो।

स्वामी शिदानन्द ॐ

यहाँ से शदव्य कृशित्व सम्बन्धी लेख-श्री गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी शवषयक ।

श्री गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज-प्राथणना के धमणदिू

हममें से वे लोग जो ऐसी क्तस्थचि में हैं चक न ि◌ो वे सेवा के क्षेत्र में हैं और न चजनको चनष्काम सेवा का सुअवसर ही चमलिा है, उनके सामने **स्वामी जी के जीवन का यह (प्राथणना)**
एक ऐसा अल्प-पररचिि पक्ष है जो प्रेरेरिा और महानिा की सम्पदा से पररपूण है। परशहि हिु गिु रूप से चिि प्राथणना करना उनका अभ्यास है। जो लोग ठोस सेवा करने में
चिि हैं, उनें सदैव, सवणत्र, सभी अवसरों ◌ंपर सबके शहि के शलए प्राथणना करनी ही ि◌ाशहए। सभी प्राचणयों के चहि एवं कल्याण के चलए प्रामाचणकिा से प्राथपना आरम्भ कर देनी ि◌ाचहए। चजनको सहायिा की आवश्यकिा है, उन सबको हम अपनी चनष्काम प्रेरेम की भावनाओं ◌ंसे
रहस्यमय ढंग से सेवा कर सकिे हैं। अपने-आपमें यह एक उत्कृष्ट् सेवा है।

सेवा प्रेरेम का अशभव्यि स्वरूप है। व्यक्ति में चवकचसि यह असीम प्रेरेम चवश्व-चहि की दृढ़ सकारात्मक ि◌ाह से चद्वगुचणि होने पर प्रभावी एवं उि कोचट की सेवा का रूप धारण कर लेिा है। स्वास्थ्य एवं सहयोग का हमारा ऐसा स्पन्दन ही सूक्ष्म ि◌थाचप अचधक चिि रूप से सामान्य चहि-साधन करेगा।

स्वामी जी अब भी इसको अभ्यास में प्रचिचदन लािे हैं। मैंने देखा है चक वे चनरपवाद रूप से सबके चलए प्राथपना करिे हैं। **यशद वे शकसी रुग्ण व्यच्चि को देखिे हैं, ि◌ो ि◌त्क्षि उसकी स्वथिा के शलए प्राथणना करिे हैं। शकसी की मृत्यु के ि◌ोक-समािार को सुनिे ही शदवंगि आिा की ि◌ाच्चन्त के शलए वे ि◌ुरन्त प्राथणना करेंगे।** युद्ध की समाक्तप्त के चलए ि◌था बंगाल की कुषुधा-पीचडि जनिा की राहि के चलए वे चनत्य चनयचमि रूप से प्राथपना करिे हैं। **लूँगडो कुत्ते को देख कर प्राथणना उनके हृदय से प्रसुफुशटि हो उठिी है। उनकी उपच्चथथशि में शकसी के पाँव से यशद ि◌ीटी कुिल जािी है, ि◌ो ि◌त्काल ही उनका हृदय मूक भाव से प्राथणना करने लग जािा है।**

शकसी से अन्य व्यच्चि की अस्वथिा का समािार जानने पर स्वामी जी उस अपररचिि व्यच्चि के आरोग्य एवं स्वास्थ्य के शलए प्राथणना करने लग जािे हैं। जब कभी उनके अपने दो चिष्य परस्पर असहमि होने पर क्रोधाविे में कुछ अपिब् कह बैठिे, ि◌ो स्वामी जी चबना चकसी को बिाये उस चदन चनराहार रह कर दोषी व्यक्ति के चलए प्राथपना करने लग जािे। **प्राथणना करने का चिि अभ्यास उनके जीवन का इिना आधार बन गया है शक वह स्वामी जी के अच्चस्तत्व से अशभन्न हो गया है।**

स्वामी जी प्राथपना में चनष्कपटिा और प्रामाचणकिा के प्रचि प्रबल आस्थावान् हैं। एक बार एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था- **"हाँ, प्राथणना में अशमि प्रभाव है। शनष्कपटिा से की गयी प्राथणना सब-कुछ करने में समथण है। यह ि◌ुरन्त सुनी जािी है ि◌था ि◌त्काल फलविी होिी है।** अपने चनत्य-प्रचि के संघषपयुि जीवन में प्राथपना करें ि◌था अपने चलए महान् प्रभाव की अनुभूचि कीचजए। **प्राथणना शजस ढंग से करना ि◌ाहें, करें। चििुवि् सरल बशनए। शनष्कपट बशनए। ि◌भी आप सब-कुछ प्रिा करेंगे।"**

उन्होंने अपने इसी जीवन में इसको प्रमाचणि कर चदखाया है। मुझे इसमें चंकंचिि् भी सन्देह नहीं ◌ंहै। स्वामी जी के पास दिे भर से आने वाले असंख्य पत्रों ◌ंको पढ़ने का सौभाग्य मुझे चमला हुआ था। यह कहना अत्युक्ति न होगा चक भारि के कोने-कोने से लोग उनसे पत्र-व्यवहार करिे हैं। **मैंने पाया शक स्वामी जी के पास प्रशिशदन आने वाले असंख्य पत्रों ◌ंमें शकसी व्यच्चि के**

शलए प्राथणना करने का शनवेदन हिो था। कभी शकसी की रोग-मुच्चि के शलए, कभी नव- शववाशहि दम्पशि की सुख-समृच्चद्ध के शलए अथवा नवजाि शिशु की मंगल-कामना के शलए शनवेदन हिो था। कोई पीिदे कायण में सफलिा प्राि करने हेिु प्राथणना के शलए अनुनय करिा है। स्वामी जी द्वारा की गयी प्राथणनाओं ंके रहस्यािक प्रभाव के प्रशि कृिज्ञिापूण प्रमाि-पत्र अशनच्चच्छि होने पर भी आिे रहिे हैं।

इसे आप आत्म-चवश्वास का फल कचहए या मनोचचचकत्सा-सम्बिी चनयम या कुछ भी कचहए, ठोस वास्तचवकिा िो यही है चक यह एक यथाथप है। । हाल ही में लगािार िीन चदन आवश्यक िीन िार आये। उन िीनों ंमें मालाबार के फैरोकी (Feroke) चनवासी गोपाल एम. नामक दीघपकालीन रोगी की ओर से प्राथपना के चलए चवनय की गयी थी। ऐसी असंख्य घटनाएँ हैं चजनको देख कर संशय करने का साहस ही नहीं ंहोिा चक स्वामी जी का प्राथपना-चवषयक दृढ़ अचभमि उनके चनजी अनुभवों ंऔर प्रयोगों ंपर आधाररि है।

आज के जाग्रि युग में एक बौचद्धक एवं िाचकपक व्यक्ति चनयचमि प्राथपना करने के चवलक्षण काल- व्यचिक्रम पर हाँसे चबना नहीं ंरह सकेगा। यह उचिि होगा चक व्यक्ति अपने-आपसे पूछे चक प्राथपना के कट्टर व आस्थावान् समथपक गांधी जी को नवयुग का महान् चचंिक कैसे माना जािा है? यचद प्राथपना प्राचीन परम्परागि मात्र ही होिी, िो गांधी जी की चववेकात्मक बुचद्ध, चजसकी श्रेष्ठिा प्रचसद्ध है, इसको चनःसंकोच ठुकरा देिी। जो प्राथपना को िुच्छ एवं असंगि समझिे हैं, उन्होंने कभी चवचार ही नहीं ंचकया चक प्राथपना क्या है और कैसे चक्रयाशील होिी है?

परजनों ंके चलए प्राथपना एक प्रकार से उनकी भलाई िाहने का उत्कट भाव है। **सबकी भलाई के शलए शनरन्तर शिन्तन करने का यह शनःस्वाथण भाव प्राथणनापूण हृदय में शवशुद्ध प्रेम की धारा प्रवाशहि करिा है। शवशुद्ध अहैिुकी प्रेम वस्तुिः स्वयं में ईश्वर है। प्रेम शदव्यिा का सार ित्त्व है।** अिः आकाश-मण्डल में चजसके अन्तगपि ब्रह्माण्ड का अक्तस्तत्व है, प्राथपना चदव्यिा की धारा प्रवाचहि करिी है और जहाँ इसकी आवश्यकिा पडिी है, यह िरंग (लहरी) अपनी अनुग्रहशक्ति से वहाँ पहुाँचकर चक्रयाशील होिी है। चवश्व के एक कोने के एक अाँधेरे कक्ष की मेज पर बैठा हुआ व्यक्ति जब बटन दबा कर ित्काल अपना सन्देश सहस्रों ंमील दूर भेजने में समथप होिा है, िब प्राथपना के चवधायक प्रभाव को सरलिा से समझा जा सकिा है। मानव में अन्तचनपचहि मानचसक एवं अचि-मानचसक शक्तियों ंको मानव-चक्रयाओं ंके चनधापरण में सशि कारक चकया जा रहा है। के रूप में िेजी के साथ मान्य

स्वामी जी इस दृढ़ चवश्वास से इिने आपूररि हैं चक कोई भी पयपवेक्षक जो चनरीक्षण में चवशेष उत्सुक है, जान जायेगा चक **उन्होंने प्रत्येक सम्भव कायण और अवसर (प्रसंग) को प्राथणना के कायण से संयुि शकया हुआ है। मैंने देखा है शक जो कुछ उनके अपने द्वारा या उनके मागण-दशणन से अन्यों ंद्वारा सम्पन्न होिा है, उन सबका शुभारम्भ व उपसंहार प्राथणना द्वारा ही होिा है। यशद शकसी कमरे का शनमाणण हो रहा होिा है, िो सभी कमणिारी नन्हें दीप के िारों ंओर एकत्र हो कर पहले भगवद्-कीिणन िथा प्राथणना करिे हैं और िब कायण प्रारम्भ करिे हैं। यशद शकसी द्वारा प्रेशषि संगमरमर की प्रशिमा पहुाँििी है, िो िुरन्त ही प्राथणना की जािी है।**

साधुओं ंको शदये गये भोज के अवसर पर प्राथणना भी उस समारोह का अशभन्न कायणक्रम हिोा है। पैकेट और पशत्रकाओं ंको िाक में भेजने के शलए बाँधिे और लपेटिे समय स्वामी जी कमणिाररयों ंको शिबो हैं शक हाथों ंसे कायण करिे हुए भगवद्- गिुगान करो। व्यथप की ििबिीमिकरो। आश्रम में पवपिपरक्तस्थिभजन-कक्षमेंविथाउनके थोडे से कायपकिाप एकचत्रिहोकरसक्तम्मचलि स्वर व लयमेंईश्वरकानामगिोहैं।पुनी:सान्ध्य वेला में गम्भीर मौन में चवश्विाक्तन्तके चलए चवश्व-प्राथपना कीजिािीहै।

* * *

अक्तस्तत्व और कमप

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की बाह्य प्रवृचत्तयों ंको देख कर नव-दिपनाथी उनके प्राथपनामय जीवन का अनुमान नहीं ंलगा सकिा, अचपिु उसके ऊपर चवपरीि प्रभाव पडिा है। यचद कोई ऐसा व्यक्ति है जो काल्पचनक जगि् में चविरण नहीं ंकरिा, िो वह स्वामी जी हैं। मैंने इनसे अचधक व्यस्त और सचक्रय जीवन कोई और देखा ही नहीं।ं चजस िपस्वी ने पााँि वषप िक अपनी कुचटया में ही एकान्तवास चकया और २५ वषप िक उस स्थान को नहीं ंत्यागा, उसकी गत्यात्मकिा पर सहज ही चवश्वास नहीं ंहो पािा। जब उनसे मेरा सम्पकप नया था और उनकी आश्चयपजनक चक्रयािीलिा के साथ मैं अभ्यस्त नहीं ंहो पाया था, िो मैं इनकी व्यस्तिा को देख कर िचकि व असहाय रह जािा था। छह मास पूवप जब चक इनका सत्तावनवााँ जन्म-चदवस मनाया गया, िब से आज िक यह भास नहीं ंहो पािा चक वह षोिवषीय (युवक) नहीं ंहैं।

पाठक यह चवश्वास रखें चक मैं लेिमात्र भी भावुक नहीं ंहाँ, पर जो यथाथपिा मेरे सामने है, उसे स्वीकार करने को बाध्य हो जािा हाँ। यौवनमय उत्साह से पररपूणप हाव-भाव उनकी अवस्था को नकारिा है। प्रायी: देखा गया है चक अनायास कोई चविार अथवा कोई नयी योजना उनको जैसे ही सूझी, िो ित्क्षण ही आभा-युि मुखाकृचि से बाल-सुलभ उल्लास प्रस्फुचटि हो उठिा है, उनके अन्तमपन की प्रफुल्लिा नेत्रों ंमें िमक उठिी है। इससे यह प्रकट हो जािा है चक उनकी कल्पनािीलिा में उद्भूि चविारों ंको चक्रयाक्तन्वि करने में वे चकिने संलि हो जािे हैं। वे चकसी कायप को अधूरा नहीं ंछोडिे। उनमें अचनचश्चििा नहीं ंहै। चझझक िो नाम मात्र को नहीं ंहै। वे कमप-सम्पादन में चजिने प्रवीण हैं, उिने ही प्राथपनामय जीवन में चनष्कपट, प्रगाढ़ एवं परम पावन है।

कल-कल ध्वचन-युि प्रवाचहि गररमामयी मौन गंगा के िट पर क्तस्थि िान्त कुटीर से आप प्रािी: १० बजे बाहर पधारिे हैं। चनज कक्ष से बाहर चनकलिे ही वे चभन्न व्यक्ति बन जािे हैं। वे जीवन-चवद्युि् िरंगों ंसे पररपूणप हो उठिे हैं। ईंटों ंसे चनचमपि द्वार से संस्था के प्रांगण में उनके

िीव्र गचि से पहुाँिी ही छोटे-से चिष्य-समुदाय में सचक्रयिा प्रकट होने लगिी है। उनकी उपक्तस्थचि में चकसी का भी चक्रयाहीन रहना असम्भव हो जािा है।

कचिपय प्रमादी साधकों ंके साथ उनका व्यवहार रोिक था। ऐसे ही एक साधक का स्वभाव दम्भपूणप एवं प्रमादी था। अपने इस स्वभाव को वह आन्तररक आध्याक्तत्मक िाक्तन्त के रूप में अचभचहि करिा था। पवपि पर क्तस्थि सामूचहक पूजा-गृह के बाहर िौडे बरामदे में स्वामी जी कुछ आगन्तुकों ंके साथ वािापलाप कर रहे थे। ढीली-ढाली मस्त िाल से िलिे उि साधक पर ित्काल स्वामी जी की दृचष्ट् पडी। उन्ोंने कहा- "युवक! इधर आओ। आपके साथ क्ा समस्या है? क्ा भूखे रहिे हो? क्ा रसोईघर में भोज्य पदाथप कुछ भी नहीं ंहै या िुम्हारे पास भोजन करने के चलए समय नहीं ंहै? िुम्हारे बाल अभी सफेद नहीं ंहुए; चकन्तु अधप भूखे व्यक्ति की-सी िाल क्ों ं है? िुम्हारी िक्ति और यौवन कहााँ िला गया है? िुम दौड कर िुिी से क्ों ंनहीं ंिलिे? मैं िुम्हें दौडिे हुए देखना िाहिा हाँ। आओ, उपासना-गृह का एक िक्कर लगाओ।"

उस नव-युवक का संकोि देख कर एकाएक मेरी ओर मुड कर स्वामी जी ने मुझे गम्भीर वाणी में कहा- "इस युवक को मैं सैचनक-चिचवर में भेजना िाहिा हाँ। सैचनक प्रचिक्षण द्वारा मदहोि साधुओं ंमें भी िक्ति का संिार हो सकिा है। मेरा चविार है चक यह व्यक्ति जन्मिा ही आलसी है। ऐसा मालूम पडिा है चक इनके चलए वैराग्यमय जीवन िारीररक चिचथलिा और चनक्तियिा का पयापय है। भगवान् जाने ऐसे चविार इनको कहााँ से प्राप्त होिे हैं? मेचिकल कालेज के युवा छात्रों ंसे िथा नगर-चनवाचसयों ंके व्यस्त जीवन से िुम्हें कुछ सीखना िाचहए। एक युवा चिचकत्सक चकिना स्फूचिपवान्, योग्य और उत्साह से पररपूणप होिा है। अस्पिाल के दैचनक जीवन में वह चकिनी िुिी से एक प्रखण्ड से दूसरे प्रखण्ड में, एक वािप से दूसरे वािप में, बरामदों ंिथा सीचढ़यों ंसे जािा है। हम उसको अपना आदिप क्ों ंनहीं ंमानिे? इसके चवपरीि एक संन्यासी को िो गचििील कायपकिाप होना िाचहए; क्ोंचक वह (लौचकक) जीवन की चवचवध सन्तापपूणप चिन्ताओं ं से मुि होिा है। कल से ही स्फूचिपवान् बन जाओ। मैं िुम्हें इस रूप में देखने के बजाय दौडिा हुआ देखूाँ। मैं िुम्हें ित्काल सवपत्र उपक्तस्थि देखें। साधुिा चिचथलिा का पयापय नहीं ंहै। यचद ऐसा होिा िो कुसी, मेज, स्तम्भ, चभचत्त भी इस श्रेणी में आ जािे। चप्रय युवक! अपने में स्फूचिप लाओ और चनष्ठा कायपकिाप में पररणि हो जाओ।"

संयि-युि युवक के मुख से हडबडी व उचद्वग्निापूवपक ये िब् चनकले "श्रीमान्! मैं ऐसा ही बनूाँगा।" ये िब् कहिा हुआ वह वहााँ से िीघ्रिा से िला गया। दूसरे ही क्षण स्वामी जी ने अभ्यागिों ंको सरल चित्त से सम्बोचधि करिे हुए कहा - "आपका इस सम्बन्ध में क्ा चविार है? क्ा मैंने उचिि नहीं ंकहा? अथवा क्ा यह उबा देने वाला उपदेि मात्र था? क्ा आपका यह चविार नहीं ंहै चक प्रत्येक युवा को सचक्रय और स्फूचिपवान् होना िाचहए?"

चवश्वास कीचजए चक दूसरे ही चदन से न केवल वह साधक बक्ति ऐसे ही एक-दो और ढीले-ढाले साधक िुस्ती एवं िक्तिमय स्फूचिप से कायप करिे देखे गये।

इस सन्दभप में एक चवलक्षण प्रमेय के वणपन चकये चबना नहीं ंरह सकिा चजसने चवचिष्ट् रूप से मेरा ध्यान आकृष्ट् चकया है। स्वामी जी जब चकसी व्यक्ति के कमप का मागप-दिपन करिे हैं, िो वह न िाहिे हुए भी देर-सवेर उसका अनुसरण करने ही लग जािा है। वह िाहे चकिना ही प्रमादी क्ों ंन हो, िाहे उसको चनदेिों ंका चवस्मरण ही हो जाये अथवा भले ही उस समय उनके

मागप-दिपन को वह इिनी महत्ता न दे या व्यस्तिा के कारण उस पर ध्यान देने में असमथप रहे; चकनु्तु अन्तिीः वह स्वामी जी की चिक्षाओं ◌ंका अनुपालन करने लग ही जािा है। इसके पीछे का रहस्य क्ा है?

पाठक चनस्सने्देह रूप से जानिे हैं चक ऐसे सहस्रों ◌ंकु्रुद्ध चपिृ गण, चनरिा मािाएँ, असहाय चिक्षक वगप, आिायप गण, भयकारी अचधकारी गण िथा कटु चिकायिें करने वाले निा गण हैं जो सदा आदिों ◌ंका अनुपालन करवाने में जनिा को आकृष्ट् करने में असफल रहे हैं। वे नहीं ◌ंजान पािे चक चकस प्रकार जनिा का ध्यान अपने आदिों की ओर आकचषपि चकया जाये? चकनु्तु ऐसे कायपकिापओं ◌ंसे, चजनका लौचकक जीवन से परस्पर कोई सम्बि नहीं ◌ंहै और चजनका उदे्देश्य सब बिनों ◌ंसे चवमुि होना है, एक ऐसा चवलक्षण व्यक्ति है जो संचक्षप्त उपदेि व परामिप दिा है; परनु्तु अनुपालन की चवचधयों ◌ंव पद्धचियों ◌ंकी चिन्ता नहीं ◌ंकरिा। चफर भी थोडे ही समयोपरान्त बडे उपयुि प्रयास से िदनुसार आिरण हिा देखिे हैं। इसका रहस्य कहाँ है? इसकी व्यावहाररक उपयोचगिा से क्ा ग्रहण कर सकिे हैं ?

मैं इस पररणाम पर पहुँिने में बाध्य हो जािा हूँ शक व्यच्चि की कथनी और करनी के अन्तर में यह गूढ़ रहस्य शछपा है। लोग केवल शकसी व्यच्चि के िब्द सुन कर ही कायण के शलए पे्ररेरि नहीं ◌ंहोिे; परनु्तु शजसका आिरि कथनानुसार है, उसका अनजाने ही अनुसरि करने लग जािे हैं। वाणी के अनुसार आिरण करने वाले व्यक्ति के सामने अत्यचधक अचडयल िथा अहंकारी व्यक्ति भी निमस्तक हो जायेगा। उदाहरण-रूप में स्वयं को आदिप-रूप में प्रसु्ति करना ही उसके अनुसार करवाने की पद्धचि है। जो केवल उपदेि मात्र करिे हैं और वे जो स्वभावानुसार िि चनस्स्वाथप रूप से सब प्राचणयों ◌ंकी समदृचष्ट् से सेवा करिे है-दोनों ◌ंमें महान् अन्तर है। इस चदिा में परामिप और अनुपालन करने की गम्भीर समस्या की समीक्षा करने से चनस्सने्देह सन्तप्त अचभभावक, उपदेिक, चिक्षक और निा गणों ◌ंको बहुि अचधक सहायिा चमलेगी।

आधुचनक युग के िमत्कारी पुरुष गािी जी के जीवन के राजनैचिक एवं सामाचजक नैचिकिा की उपलक्तब्धयों ◌ंकी पृष्ठभूचम में यही चनयम चक्रयािील है। लाखों ◌ंके हृदयों ◌ंमें उनके नाम का प्रभाव है और उन्ें एक िक्ति के रूप में जाना गया है। यह उले्लखनीय उपलक्तब्ध आस्थाओं ◌ंके प्रचि जीवन की समरसिा एवं परम चनष्कपटिा के कारण ही उन्ें हो पायी है। कु्षद्र कायप को भी पूजा का रूप देना उनके जीवन का प्रभावकारी अंग है।

कहा जािा है चक जब उनके सुपुत्र देवदास गािी का चववाह सुचवख्याि श्री राजगोपालािायप की सुपुत्री से हुआ, िो चववाह-संस्कार के िुरन्त बाद टोकरी और झाडू ले कर उस क्षेत्र के कुछ स्थानों ◌ंकी सफाई के चलए कहा। वर के चपिा की चववाह-संस्कार के उपलक्ष्य में नव-दम्पचि को यही िुभ भेंट थी। सेवाग्राम के महान् सन्त स्वयं उन आदिों की जीवन्त मूचिप हैं चजनका प्रिार वे स्वयं भी करिे हैं। ठीक यही चविेषिा आनन्द-कुटीर के गररमािील सन्त की चवचभन्न प्रकार की प्रवृचत्तयों ◌ंमें प्रकट हिी है। मुझे यह प्रत्यक्ष अनुभव हुआ चक स्वामी जी के चलए नैचिक िथा आध्याक्तत्मक सत्य केवल धमप-ग्रन्थों ◌ंकी िोभा बढ़ाने वाले वाक् मात्र नहीं ◌ंहैं, अचपिु अपने जीवन की कथनी और करनी में साम्य प्रमाचणि करने के िथ्य हिे हैं। व्यक्ति को उन उपदेिों ◌ंऔर चिक्षाओं ◌ंका चजन्ें वह सुनाना और अनुसरण कराना िाहिा है, मूचिपमान् अचभव्यक्ति बनना िाचहए।

भिी जगि् उसका उसी प्रकार अनुसरण करेगा जैसा चक चदवस राचत्र का करिा है। नहीं ं िो कथाविाक ब्राह्मण की िरह आज्ञा पालन करवाने की आिा रखना व्यथप होगा।

ऐसा कहा जािा है चक कनापटक के एक व्यावसाचयक कथाविाक ब्राह्मण को एक समय दैचनक श्रोिाओं ंमें से एक प्रिंसक ने एक सब्जी की टोकरी भेंट की। उपहार में दी गयी िाक-सक्तब्जयों ंके अचिररि उसमें कुछ एक िाजा रस-भरे बैंगन भी थे। पक्तण्डि ने घर पहुँाँचकर अपनी पत्नी को टोकरी देिे हुए कहा चक इनसे स्वाचदष्ट् कढ़ी िैयार करो। बाि यह थी चक उससे एक चदन पूवप पक्तण्डि जी ने कथा में कई वस्तुओं ंका गुण-कथन करिे हुए बैंगनों ंको प्रचिचदन के आहार में त्याज्य बिलाया था, क्ोंचक वह मानव में िामचसकिा को उद्दीप्त करिे हैं। उनकी पत्नी ने, जो उस व्याख्यान में उपक्तस्थि थी, यह सब सुना था उसने साहस के साथ पक्तण्डि जी को िास्त्रीय उक्ति का स्मरण चदलाया। ित्क्षण वह क्रुद्ध हो गया और चिल्लाया-"ओ नारी! क्ा िुम मुझे धमप का पाठ पढ़ाना िाहिी हो? सुनो! ग्रन्थों ंमें वचणपि बैंगनों ंका प्रयोग वचजपि कहा गया है, टोकरी वाले बैंगनों ंका नहीं। ं िीघ्रिा से टोकरी वाले बैंगनों ंको पकाओ!"

स्वामी जी पूणप योग्यिा के साथ अपने लेखों ंमें वचणपि चविारों ंऔर विनों ंको चनरन्तर िथा यथािक्ति अपने कायों में िररिाथप करिे हैं। यही कारण है चक उनके विनों ंका उल्लंघन अन्य व्यक्तियों ंके चलए असम्भव-सा हो जािा है। स्वामी जी से प्राप्त होने वाला व्यक्तिगि परामिप जीवन्त,अचधकारपूणप चकन्तु मूक होिा है।

चवश्व के सभी धमों के अनुसार प्राथपना िथा पूजा जीवन का आधार है। अचधकांि साधकों ंके चलए चनत्य दैवी उपासना हेिु यह साधन है। प्राथपना से मनोभाव की वृक्तद्ध होिी है िथा चदव्यिा की चदिा में गचि होिी है। इस भााँचि प्राथपना साधक को पचवत्र कर उन्नि बनािी है।

-स्वामी शिदानन्द

जीवनोपदेि

प्रस्तुि चवषय अन्य चवषयों ंकी अपेक्षा आध्याक्तत्मक जीवन िथा व्यावहाररक **आध्याक्तत्मक साधना से अशधक सम्बक्तन्धि है,** चजसका चनष्पक्ष अध्ययन करने पर अनेक चिक्षाएँ चमलिी हैं- वन्दनीय **श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज** के साधना-काल की प्रारक्तम्भक अवस्थाओं ंमें कठोर अनुिासन, िपश्चयाप, अन्तद्वपनद्व, चनस्पृह अभीप्सा का अनवरि अथक प्रयत्न, दृढ़ संकल्प की प्रगचििील चवजय, चनचश्चि चदनियाप एवं मायावी रूप मन पर उत्तरोत्तर चवजय से उनका व्यक्तित्व पूणपिः चनखर उठा, चजसका उद्घाटन इस संन्यासी व्यक्तित्व में प्रत्यक्ष हो रहा है।

वैराग्य और आध्याक्तत्मक उपलक्तब्धयों ंसे कई चिक्षाप्रद िथ्यों ंका प्रकटन होिा है। जीवन के प्रारक्तम्भक वषप उस बुचनयाद बनाने का काम कर रहे थे चजस पर परविी प्रेरणादायी आध्याक्तत्मक जीवन का मकान चनचमपि होना था।

अपने जीवन के प्रारक्तम्भक काल से गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज स्वभाविः हर कायप के चलए, चजसको वे हाथ में लेिे थे, अपनी सारी (ईश्वर-प्रदत्त) िक्ति व समस्त ध्यान लगा

चदया करिे थे। उस चविेष कायप से सम्बि न रखने वाली हर बाि को वे दूर रखिे व उसकी उपेक्षा करिे। उदाहरणाथप-एक नवयुवक के रूप में, जब वे चकिोर ही थे, िरीर को सुिौल बनाने की धुन उन्ें सवार हो गयी। ित्क्षण उनके मक्तस्तष्क ने सोत्साह इस चविार को पकड चलया और उसमें लीन हो गया। ित्काल उन्ोंने व्यायाम का चविेष अभ्यास आरम्भ कर चदया। पुराणपन्थी मािा-चपिा इसके बहुि अनुकूल नहीं थे, िो भी वह चकिोर प्रभाि-वेला में ही िीन अथवा साढ़े िीन बजे िय्या त्याग देिा और पररवार के दूसरे सदस्यों के (चनद्रा त्यागने) से पहले ही घर से लाि जािा।

सूमृचि आने पर िमक भरी आँखों से उन्ोंने एक बार कहा - "मैं इस बाि को अब भी स्वीकार करिा हँ। चक कई बार मैं अपनी िय्या पर िचकये को इस िरह चबछा देिा चक जैसे चनदोष गहन चनद्रा में मैं ही सो रहा हँ।" ये सब उन्ें अपने चनरीक्षक चपिा को सन्तुष्ट करने के चलए। करना पडिा। उनको यह ज्ञाि न हो पािा चक उनका बेटा व्यायामिाला में है और िरीर को हृष्ट-पुष्ट करने वाली क्रीडा में िल्लीन है।

वे अदम्य साहस से सम्पन्न थे। सम्माचनि अचिचथयों की अभ्यथपना करने, स्वागि-भाषण देने या अचभनय के चलए वे अपने चमत्र गणों िथा चवचिष्ट जनों के आकषपण का केि बने रहिे। चवनम्र होिे हुए भी अवसर आने पर वे चनभपय हो चवचिष्ट जनों के समक्ष आ जािे। उनकी यह चनभपयिा अब भी उनमें प्रमुख है और स्वगापश्रम में साधना के चदनों में इससे उन्ें बहुि सहायिा चमली है। यह चविेषिा अब भी उनके स्वभाव में चवद्यमान है। अंििः उनके स्पष्टवादी व चनभीक सुधारक होने का रहस्य भी इसी में है। जनिा की आलोिना उन्ें कभी चवचलि नहीं करिी। लोक-कल्याण से सम्बक्तिि चकसी योजना के चलए कचटबद्ध हो जाने पर वे चकसी की राय पर ध्यान नहीं देिे।

पाठक गण को भी इसका अनुभव हुआ होगा चक कोई भी मनुष्य जो अटल चसद्धान्तों को मूिप रूप देने का प्रयत्न करिा है, उसे अपने साहस की परीक्षा देने के चलए कडे प्रचिरोध का सामना करना पडिा है। ऐसे अवसर आने पर स्वामी जी सदैव अपने चसद्धान्तों पर अचिग रहिे हैं। दायें हाथ से ऐनक ठीक करिे हुए उठे हुए बायें हाथ की अनाचमका ऊँगली से संकेि कर एक चवचिष्ट चवलक्षण मुद्रा में स्वामी जी ने एक बार कहा था-"नहीं–नहीं, मेरा यह रूप सदा नहीं रहिा। मैं अत्यचधक आक्रमक भी हो जािा हँ। यचद कोई ऐसा अवसर आिा है, िो मैं पराजय स्वीकार नहीं करिा। कभी-कभी िो मैं योद्धा के आवेि में आ कर उग्र रूप धारण कर लेिा हँ। इस चदिा में मैं गुरु गोचवन्दचसंह सरीखा हँ। समय आने पर सबको उत्साह चदखाना िाचहए।"

जो व्यक्ति उि आदिों व चसद्धान्तों का अनुसरण करने के चलए प्रयत्निील है िथा चजसको इस साधना में पग-पग पर परीक्षा देनी पडिी है, उसके चलए यह ठोस उदाहरण है। चविेषिया यचद आप चवनम्र और िान्त प्रकृचि के हैं और चवरोधी पररक्तस्थचियों में भीरु समझे जािे हैं, िो उस समय आप स्वामी जी के उपयुपि दृचष्टकोण का सहारा ले सकिे हैं।

जो िन्मयिा और उत्साह आज स्वामी जी के स्वभाव में दृचष्टगोिर होिा है, यह स्वभाव उनका चिचकत्सक-चवद्याथी-काल में भी था। उनकी उपक्तस्थचि में जब यह चवरल चटप्पणी सुनने में आयी, िो स्वामी जी ने एक बार कहा -"मुझे यह नहीं मालूम चक काम को अधूरा कैसे छोडा जािा है? मैं सदैव काम को पूणप व सम्यक् ढंग से चकया करिा था िथा पूरा करके ही छोडा करिा था। आज के िरुण-वगप में चनचदपष्ट समय पर ही िैयारी करने का जो स्वभाव है, उससे मैं

सदा अपररिचि रहा। चबना पूवप-सूिना के चकसी भी चवषय की परीक्षा देने को मैं सदैव िैयार रहिा। आज भी मैं अपने को परीक्षाथी के रूप में िैयार रखिा हाँ। सिि ित्पर रहने िथा सजग
रहने का मेरा सहज गुण बन गया है।"

"चवश्राम का मेरी दृचष्ट् में कोई अक्तस्तत्व नहीं। मैं सदैव सजग िथा व्यस्त रहिा हाँ। आपको जीवन के प्रचि िाश्वि चिष्य की िरह यही दृचष्ट्कोण रखना िाचहए और अपने को सदैव परीक्षाथी समझना िाचहए। प्रत्येक घडी, प्रत्येक समय, प्रत्येक चदन नये चवषय को सीखने के चलए उत्सुक रचहए। मेरी िरह बौक्तद्धक सेवक बचनए। आप हर एक से कुछ-न-कुछ चिक्षा ग्रहण कर सकिे हैं। एक चजज्ञासु के चलए सृचष्ट् के कण-कण से उपदेिामृि झरिा है।"

"चकसी भी अनुभव की उपेक्षा मि कररए। संसार के हर महान् उदाहरण से कुछ प्ेरेरणा व चिक्षा ग्रहण कररए। इस प्रकार िायद चकसी समय आपके प्रचि की गयी चिंिन में सुप्त आलोिना आपके जीवन में उभर कर आपको आपचत्त से बिा ले और आपके जीवन की धारा को ही पररवचिवि कर दे। हर वसुतु से सार-संग्रह करके उसे अपने मक्तस्तष्क में साँजो के रक्तखए। छोटी-छोटी बािों के प्रचि उदासीनिा वैराग्य का लक्षण नहीं, बक्ति उपेक्षा की िामचसक प्रवृचत्त का लक्षण है।"

उपयुवि प्रकार की अपनी ग्राह्य िक्ति को स्वामी जी ने बडी सावधानी िथा चववेक से बनाये रखा है। अपनी उपक्तस्थचि में प्रसुतुि हर नये सुझाव, नये चविार, नयी सूिना को ित्क्षण वे अपने पास रखी नोटबुक में चलख लेिे हैं। नोट करने के चलए वे सदैव अपने पास दैनक्तन्दनी रखिे हैं। लौचकक िथा आध्याक्तत्मक-दोनों दृचष्ट्कोणों से इस अभ्यास के व्यापक चहि के प्रचि वे आश्वस्त हैं।

रुिण िाक्टर के रूप में भी वे अपने अवकाि के क्षणों को व्यथव गाँवाने की अपेक्षा अध्ययन, चनरीक्षण में ही पूरी िरह िल्लीन रहिे। अपना सारा चिन्तन वे और चवषयों से हटा कर इसी एक चवषय पर केक्तिि कर लेिे। इसमें कोई आश्चयव की बाि नहीं चक प्रथम वषव में ही वे चिचकत्सा के पूरे पाठ्यक्रम से पररचिि हो गये थे। उनकी अटूट एकाग्रिा एवं सहजिा का रहस्य उनके आज के दैचनक जीवन में भी देखा जा सकिा है।

मैंने कई बार चदव्य जीवन संघ के कायावलय में चबछी हुई पीचठका पर उनके चवराजमान होिे समय इसका चनरीक्षण चकया। उस समय कभी चकसी उत्तेचजि चजज्ञासु की चपपासा िान्त करने के चलए वे पत्रोत्तर चलखिे, िो कभी िंका-समाधान अथवा प्रश्नोत्तरी करिे। चनकट से टाइपराइटर की टक-टक आवाज और पास के कमरे से ठक-ठक की आवाज आ रही है जहााँ कोई सेवक नयी पुस्तकों पर कायावलय की मुहर लगा रहा है। बाहर से हथौडी से पुस्तकों की पेचटका पर कील ठोकने का िोर आ रहा है। कक्ष से कुछ दूर सडक पर िलने वाली मोटर गाचडयों की कणव-कटु ध्वचन और गंगा की धारा में िैरिी नाव में याचत्रयों के पावन गान का उनकी भाव-मुद्रा पर कोई प्रभाव नहीं पडिा।

यही नहीं, स्वामी जी के पाश्वव में अभ्यागिों का समूह बैठा है। कोई चहन्दी पुस्तक के चलए यािना कर रहा है, िो कोई मेज पर फल-फूल भेंट कर रहा है। कोई चििु िंिल व िंिल है और कोई पहाडी रोग-ग्रस्त पुत्री के चलए औषचध की मााँग कर रहा है। इन सबके मध्य पीचठका

पर िान्त मुद्रा में चवराजमान स्वामी जी आस-पास के इस वािावरण से अचविचलि हैं और उनकी लेखनी अपनी सहज गचि से िल रही है। वह अपने इस कायप में इिने अचधक संलि हैं चक जब कि पत्र पूरा नहीं ंहोिा, वह अपने िश्मे को आँखों ंसे हटा कर 'केस' में वापस नहीं ंरख दें और लेखनी को 'कैप' लगा कर मेज पर नहीं ंरख दें, िब िक वह आस-पास के वािावरण से अनचभज्ञ ही रहिे हैं।

जब उनकी दृचष्ट् समक्ष बैठे अभ्यागिों ंपर पडिी है और उनको िोरगुल का भास होिा है, िब वे कह उठिे हैं-"कृपया यह ठक-ठक बन्द करो और एस. को कहो चक वह पुस्तकों ंपर मुद्रा-अंकन कुछ समय उपरान्त करे।"

इस प्रकार का अभ्यास प्रत्येक चजज्ञासु व सामान्य जन के चलए अचनवायप है। एकाग्रिा का सम्बि समय और क्तस्थचि-चविेष में चकये जाने वाले कमपकाण्ड से न हो कर साधक की अभ्यस्त मानचसक क्तस्थचि से है। स्वामी जी के अनुसार धारणा और ध्यान का अभ्यास कोई िमत्कारक जादूगरी का चवषय नहीं।ं यह िो छोटे-से-छोटे काम को रुचि व ध्यानपूवपक करने वाले व्यक्ति को सहज ही प्राप्त हो जािा है।

छोटे-से-छोटे कायप को व्यवक्तस्थि ढंग से न करने वाले का मक्तस्तष्क कमजोर हो जािा है, चजस कारण वह ध्यान की क्षमिा भी खो बैठिा है। स्वामी जी कहिे हैं-"िाहे आप पेक्तिल बनायें या चटकट चिपकायें, उसको भी उिनी ही िन्मयिा व सावधानी से कररए चजिनी िन्मयिा से एक जौहरी राजसी अंगूठी में हीरा जडिा है या एक नेत्र चचचकत्सक नेत्र की िल्य-चचचकत्सा का कायप करिा है। जो भी कायप आप करें–िाहे भोजन करने का हो या दन्त-धावन का, पढ़ने का हो या चलखने का, िाहे जूिे साफ करने का ही हो, उसे पूणप िन्मयिा से ध्यानपूवपक करें। इस अभ्यास से एकाग्रिा प्रभावी ढंग से चवकचसि होगी।"

गाजीपुर के पवहारी बाबा भी अपने साधकों ंको यही चिक्षा दें चक छोटे-से-छोटे कायप को भी इिनी सावधानी से करो चक समस्त जीवन उसी पर आधाररि है। प्रस्तुि कायप के अचिररि और सब-कुछ भूल जाओ।

चवद्याथी-काल के पश्चाि् मलेचिया िथा चसंगापुर में चचचकत्सक के रूप में स्वामी जी ने चचचकत्सा िथा मानव-समाज-सेवा के कायों में वही िल्लीनिा चदखायी। मलाया में व्यिीि चकये दि वषों में वह चनष्कलंक रहे।

चनस्सन्देह आध्याक्तत्मक साधना में ित्पर एक साधक के चलए एकाग्रिा िथा उसकी प्राक्तप्त की मनोवृचत्त अचनवायपिया धाचमपक भावना से सम्बि रखिी है। उसको अपनी हर चक्रया आध्याक्तत्मक आदिप से सम्बक्तिि करनी होिी है।

सांस्कृचिक उत्थान के सम्बि में सबसे अचधक महत्त्व की बाि यह है चक व्यक्तिगि जीवन में ऐसा प्रचिक्षण िैिव-काल से आरम्भ कर देना िाचहए। बिपन में ही इस वृचत्त को प्रोत्साहन देने की आवश्यकिा पचश्चमी देिों ंमें सुपररचिि है। बिों ंको भवन-खण्डों,ं चित्रों,ं पहेचलयों ंऔर बाद में प्रचिभािाली व वैज्ञाचनक चवचध वाले 'मेकानो' की िरह के खेलों ंमें व्यस्त रखा जािा है जो िन्मयिा व िल्लीनिा को प्रचवष्ट् कराने में सहायक होिे हैं।

मैं यह देख कर आश्चयपिचकि रह गया चक यह िपस्वी भारीय सभ्यिा व संसूकृचि के पुनरुत्थान जैसे उदे्देश्य की पूचिप के चलए ऋचषकि जैसे एकान्त स्थल में बैठ कर दीघप काल से
एकाग्रिा, िन्मयिा िथा िल्लीनिा जैसे चसद्धान्तों ंका प्रयोग कर रहे हैं। अपने चनकट के क्षेत्र में चकये गये प्रयोग से उनको अभिूपूवप सफलिा चमली है। आश्रम द्वारा संचिलि प्राथचमक पाठिाला इसी प्रयोग का एक उदाहरण है। नन्हे-मुन्हे जो अभी िििुलिो हैं, किीपन करने व राम-सीिा चिरल व किीपन प्रमाण में कुिल हिो जा रहे हैं।

साधना-सप्ताह िथा अन्य ऐसे ही अनेक सुअवसरों ंपर आये अभ्यागि चवक्तस्मि रह जिो हैं, जब वे देखिे हैं चक इिनी बडी सभा में एक छोटा-सा बालक, चजसको उठा कर मंपिर खडा चकया जिाा है, प्रणाम करिा है, चहन्दी िथा अंाँगरेजी में संचक्षप्त भाषण देने के पश्चाि् मधुर स्वर में 'राधाकृष्ण', 'गोपालकृष्ण' का किीपन आरम्भ कर दिेा है। दूसरा बिा आ कर 'उपचनषद्' व 'गिीा' में से उद्धिृ कुछ पंक्तियों ंको अपनी ििोली भाषा में अचवराम गचि से प्रसुिुि करके आपको स्तब्ध कर दिेा है।

बडी महत्त्वपूणप बिा यह है चक स्वामी जी यद्यचप अपने चविारों ंव चसद्धान्तों ंमें अद्यिन ििप्री हिो हैं, िथाचप दैचनक व्यवहार में दिे की सांसूकृचिक परम्परा के अनुरूप बने रहने के प्रचि पूणपिया सजग रहिे हैं। आज का युवा-वगप पूवी व पचश्चमी सभ्यिा की मूल प्रवृचत्तयों, ं चविारों ं थिा आदिों के दुिःखदायी िालमेल में अपनी असावधानी के कारण ही असफल चसद्ध हुआ है।

चजस प्रकार एक कहाविे है-"सुबह का भूला िाम को घर आ जाये, िो भूला नहीं ं कहलिाा", स्वामी जी एक दूसरी ही कहाविे लागू करने में चवश्वास रखिे हैं-"अच्छी चिक्षा चजिनी िीघ्रि प्रारम्भ की जाये उिना ही अच्छा है।" इससे भी आगे बढ़िे हुए वे मानिे हैं चक बिे की चिक्षा उसके जन्म से पूवप ही प्रारम्भ हो जानी िाचहए।

उनका कथन है- "गभपस्थ चििु के मक्तस्तष्क पर माँ की प्रत्येक चक्रया का गहरा प्रभाव पडिा है। यचद एक गभपविी स्त्री किीपन, अप िथा धाचमपक पुस्तकों ंके अध्ययन में समय व्यििी करिी है और अपनी इस अवचध में जीवन को पूणप पचवत्र बनाये रखिी है, िो वह गभपस्थ चििु आध्याक्तत्मक संस्कारों ंसे सुसम्पन्न होगा। उसकी चित्त-वृचत्त जन्म से ही आध्याक्तत्मक होगी।"

पुनिः कहे गये स्वामी जी के िब्द हैं- "बिों ंका मक्तस्तष्क सुकोमल व लिीला हिोा है चजसे चबना अचधक पररश्रम के सुन्दरिा से चनचमपि चकया जा सकिा है। जो भी संस्कार बाल्यावस्था में िाले जिो हैं, उनका प्रभाव आजीवन रहिा है। वे संस्कार अचमट हिो हैं।"

जब कभी कोई गृहस्थी स्वामी जी के पास आिाा है, िो वे उससे यह अवश्य पूछिे हैं चक वह अपनी सन्तान को बिपन से ही चिक्षा-दीक्षा उचिि चवचध अनुसार दे रहे है अथवा नहीं।ं

स्वामीजीकीयह उत्कट अचभलाषा है चक एक ऐसी संस्था स्थाचपि की जाये (चजसमें मिाा-चपिास्वेच्छासेअपने बिों ंको भेजें) जहाँ चनिःस्वाथप संन्याचसयों ंके मागपदिपन में चनष्काम सेवा एवंआध्याक्तत्मकिाकाप्रचिक्षण बिों ंको बाल्यावस्था से चदया जाये। मिाा-चपिा का स्वेच्छा से सन्तानकोवहाँभेजनेका सहयोग वांछनीय है। वहाँ पर वे ऐसे उिव आदिप वािावरण में चघरे रहेचकसांसाररकिासेपूणपिया अछिूे रहें। उनमें श्रेष्ठ व उिचविारों ंका संिार चकया जाये।

कौन जानिा है (क्ा पिा?) एक चदन ऐसी संस्थाका चनमापण हो जाये जो सावपभौचमक थिा चवश्व-पे्रेम का पाठ पढ़ाने वाले मानव-सेचवयों ंको जन्मदे!

पथ-शनदि

जीवन के परम लक्ष्य-सम्बिी समस्त प्रश्नोत्तरों ं में **श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के शविार सार-रूप में ग्रहि कीशजए।** चवचभन्न अवसरों ं पर अचभव्यि उनकी उक्तियों ं का संकलन सुबोध िी षपकों ं में प्रस्तुति है, जो अनौपिाररक िीबािी व कुछ उत्सुक चजज्ञासुओं ंके प्रश्नों ंके उत्तरों ं में अचभव्यचजि हुई। एक ही दृचष्टपाि से आप इसके सारित्त्व से अवगि हो जायेंगे।

वास्तशवक जीवन: जीवन की पृष्ठभूचम में एक भव्य उिदेि है जो खाने-पीने िथा सोने से कहीं ंअचधक महत्वपूणप है। पूणप िीस्विा, पूणप चनभपयिा, पूणप आनन्दमय आत्ममय चनत्य जीवन ही वास्तचवक जीवन है। यह अमरत्व और परम िाक्तन्त की क्तस्थचि है। सभी प्रकार के चवनािा, मृत्युु, अिाक्तन्त व कामिनािी क्तस्थचि ही चनत्य िुचष्ट् की क्तस्थचि है।

जगि् : पृथ्वी चविाल सृचष्ट् के एक चबनदु मात्र से भी छोटी है। समस्त सृजन अपने अनचगनि सूयप, िि िथा िारा-मण्डल सचहि परम सत्ता की अनन्तिा के एक क्षण िुल्य है।

सवाािीि परम सत्य चनत्य, अखण्ड, सि्, चिि्, आनन्द है।

यह सम्पूणप दृश्य जगि् अणुओं ंका चपण्ड मात्र है। यह महान् महासागर केवल दो गैसों ंकी संयुि संरिना है।

लक्ष्य : इस पाचथपव जीवन का लक्ष्य सि्, चिि्, आनन्द की परमानन्द क्तस्थचि की अनुभूचि करना जीवन का उद्देश्य मन की चनम्न वृचत्तयों ंको चवचजि करना, पररसीमाओं ंसे ऊपर उठना और खोये हुए चदव्यत्व को पुन प्राप्त करना है।

शवघ्न-बाधाएूँ: क्षचणक ऐक्तिक सुखों ंके आवेग में मानव ने अपने लक्ष्य का चवस्मरण कर चदया है। वह नहीं ंजानिा चक वह वस्तुिः क्ा कर रहा है। वह समझिा है चक वह सब-कुछ जानिा है, चकन्तु वह अज्ञान के में िूबा हुआ है। इस भ्रम का कारण अचवद्या या माया है। यह रहस्यमयी िक्ति आपके वास्तचवक रूप को आच्छाचदि कर लेिी है िथा आनन्द व अमरत्व की प्राक्तप्त में बाधक बनी है। अिंिय अहं-भावना, मानचसक िंिलिा और ऐक्तिक सुखों ंकी िृष्णा

लालसा के रूप में माया मानव को भ्रचमि करिी है। चनज देह के, कांनि और काचमनी की आसक्ति के मद में मानव पूणपिया अिा हो गया है।

लौशकक जीवन: इस जगि् का जीवन अव्यवक्तस्थि, अपूणप िथा अिक्तन्त से पररपूणप है। सांसाररक चवषय-सुख-भोगों ंकी कामना ही इस दुख का कारण है। इस चवषय-सुख-भोग की कामना का कारण िाक्तन्त को बाहर से प्राप्त करने की अज्ञानिा है। समस्त कामनाएँ, आसक्तियााँ, चनरािाएँ और यािनाएँ सदा के चलए चवनष्ट् हो जायेंगी, जब यह अनुभूचि हो जायेगी चक िाक्तन्त आपके हृदय में क्तस्थि है। आपके भीिर ही आनन्द का सागर है। बाहर अहं एवं वासना की आग धधक रही है। सब प्राणी इसमें झुलस रहे हैं। उनके पास आत्म-चनरीक्षण, मानचसक िुक्तद्ध व ध्यान करने के चलए समय ही नहीं ंहै।

एकमात्र उपाय: मानव िरीर ही एकमात्र ऐसा माध्यम है, चजससे हम भव सागर को पार कर सकिे हैं। इसके अचिररि और कोई चवकल्प नहीं ंहै। चवलोक में मानव-जन्म ही महत्त्व एवं बहुमूल्य वरदान है। असावधानी और ऐक्तिक सुख में जीवन को व्यथप ही मा गाँवाओं,ं अचपिु प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करो। यचद आपने इस दुलपभ अवसर को खो चदया, िो यह पुनीः प्राप्त नहीं ं होगा। समय गचििील है और मन व इक्तियााँ प्रत्येक पग पर आपको प्रलोचभि कर धोखा दे रही हैं। चवघ्न-बाधाएँ व चवरोधी िक्तियााँ सवपत्र हैं, िो भी मुक्ति के चलए यही समुपयुि स्थान एवं समुचचि समय है। 'समुद्र की िरंगों ंके िान्त होने पर ही मैं स्नान करूाँगा' -ऐसा सोचना मूखपिा है। साधना को स्थचगि मि करो।

आवश्यकिाएँ: अरे मानव! भली-भााँचि समझ लो चक आपको इसी क्षण से प्रयत्न करना प्रारम्भ कर देना होगा। जीवन अचनचश्चि है, जब चक मृत्यु चनचश्चि है। यह भी समझ लो चक अचनत्य लौचकक सम्बि और नश्वर चवषय-सुख असत्य हैं। सत्यिा या वास्तचवकिा केवल मात्र ईश्वर ही है। सत्य और असत्य को चववेक से जानो। सत्यानुसंधान के चलए उत्कट चजज्ञासा उत्पन्न करो और चमथ्या प्रलोभनों ंसे अपने को मुि करो। परीक्षाओं ंऔर कष्टों ंकी घडी में क्तस्थर रहना सीखो। अपनी इक्तियों ंऔर आवेगों ंको चनयंत्रण में रखो। सभी पररक्तस्थचियों ंमें सन्तुष्ट् और प्रसन्न रहो। आत्म-चवश्वास एवं ईश्वर में चनष्ठा बनाये रखो। सम्यक् ज्ञानानुसार आचरण करो।

खोज के थथल: ज्ञान और आनन्द केवल संन्याचसयों ंऔर आरण्यकों ंकी ही सम्पचत्त नहीं ं है। हृदय भगवान् का स्वणप-मक्तन्दर है। ईश्वर आपके और प्रत्येक प्राणी के हृदय में अवक्तस्थि है। यह जगि् ईश्वर का पररव्यि स्वरूप है। अपने हृदय एवं मन को िुद्ध कररए; िभी आप अपने भीिर, बाहर एवं सवपत्र उसी का दिपन करेंगे।

मागण-दिणक संकेि : सांसाररक दुीःखों ंऔर अपूणपिाओं ंका सिि स्मरण करो। भगवि्-साक्षात्कार प्राप्त सन्तों ंका स्मरण करो और उनसे प्रेरणा प्राप्त करो। एक चनचश्चि उद्देश्य सम्मुख रखो, उत्तम चवचारों ंकी पृष्ठभूचम में जीवन का चनधापररि समुचचि कायपक्रम बनाओ। श्रद्धा और चवश्वास से कायप करो। आत्म-संयम और युि जीवन के अभाव में सद्गुण प्रस्फुचटि नहीं ंहोगा। अिीः िररत्र का चवकास करो। समस्त ज्ञान और धन-सम्पदा की अपेक्षा िररत्र अचधक मूल्यवान् और िक्तिमान् है। िुद्धिा, सत्यिा, सिररत्रिा और दृढ़ धारणा से आप िुरन्त जीवनादिप की अनुभूचि करेंगे।

मागणर्ि्-ुष्य: चभन्न-चभन्न प्रवृत्यनुसार िार प्रिस्त मागप चनदेचिि हैं। बौक्तद्धक प्राचणयों ंके चलए ज्ञान-मागप, भावना-युि प्राचणयों ंके चलए भक्ति-मागप, सचक्रय व्यक्तियों ंके चलए कमप-मागप िथा रहस्यमयी प्रकृचि वालों ंके चलए राजयोग है।

अनुसिान कररए-चनज स्वरूप का, छल, भय िथा अहं के मूल कारण का, अवस्था-त्रय (जागृचि, स्वप्न िथा सुषुक्तप्त) का। अचनत्यि को पूणपरूपेण नकाररए, िभी आपमें ज्ञान-सूयप का उदय होगा और आप माया के बिन से मुि होंगें।

ईश्वर के प्रचि अगाध आसक्ति का उपाजपन करने से, उनसे दृढ़, प्रगाढ़ प्ेरम सम्बि स्थाचपि करने से िथा पूणप आत्म-समपपण एवं पूणप प्रपचत्त से आप चदव्य दृचष्ट् और ईश्वर िािन्यि की प्राक्तप्त करेंगे।

मानव-जाचि, मािा-चपिा, पूज्यजन, गुरुजन, साधुओं, ं सन्याचसयों, ं महात्माओं, ं रोचगयों ं और चनधपनों ंके प्रचि की गयी चनष्काम सेवा ही ईश्वर की आराधना है। फल की इच्छा से रचहि सेवा मन को िुद्ध करिी है िथा इसे चदव्य प्रकाि व आनन्द-प्राक्तप्त के चलए ियार करिी है।

यम और चनयम का अभ्यास, आसन में क्तस्थरिा, प्राणायाम, बाह्य चवषयों ंसे मन की उपरचि िथा प्रत्याहार से मन मे एकाग्रिा आिी है। पररणामि: मन ध्यान व समाचध में संक्तस्थि हो जािा है।

कमणयोग साधना : बुराई का प्रचिकार भलाई से करो। जो आपका अचहि करिे हों, ं उनकी सेवा करो। दूसरे की आवश्यकिाओं ंको अपनी आवश्यकिाओं ंअचधक महत्त्व दो। जो-कुछ आपके पास है, उसे दूसरों ंसे में बााँटो, चनधपनों ंको दान दो। अचिचक्षिों ंको चिचक्षि करो। रोचगयों ं की पररियाप करो। यथािक्ति दूसरों ंके कष्टों ंका चनवारण करो। सेवा के चलए अपनी सुख-सुचवधाओं ं का पररत्याग करो। **'मन में राम, हाथ में काम' के माध्यम से अपने दैशनक कायों को ईश्वर-पूजा में रूपान्तररि करो।**

चकनुिु नाम व यि की आकाक्षा से सिि रहो। अहंकार धीरे-धीरे पनपेगा। सेवाचभमान अचि हाचनकारक है। प्रचिचदन आत्म-चनरीक्षण एवं आत्म- चवश्ेलेषण द्वारा इसका चनवारण करो। अपनी सभी प्ेरेरणाओं ंका चवश्ेलेषण करो। सिि चवनयिीलिा का उपाजपन करो।

भच्चियोग : भिों ंऔर साधुओं ंकी सत्ंसंगचि, ब्राह्ममुहिप में उठना, भगवान् के मधुर नामों ंका संकीिपन करना, जप, प्राथपना व अपने इष्ट्देव का पूजन करना, धाचमपक ग्रन्थों ंका स्वाध्याय करना, दान देना, सामचयक व्रि करना, राचत्र जागरण करना आचद भगवत्ेप्रम के चवकास एवं प्रगचि के चलए अपेचक्षि साधनाएाँ हैं। भगवन्नाम का गायन भक्ति-भाव से करो। समस्त प्राचणयों ं में भगवद्-दिपन करो। अपने मन, हृदय िथा आत्मा को भगवान् के िरण-कमलों ंमें समचपपि करो। प्रह्लाद की भााँचि उत्ुसुकिा से प्राथपना करो। मीरा, राधा एवं रामकृष्ण परमहंस की भााँचि भगवद्-दिपन हेिु सिि हृदय से रुदन करो। भावपूणप हृदय से जपो- **"मैं आपका हूँ, सब आपका है; हे प्रभो! आपकी इच्छा पूिण हो!"**

आलस्य, कोरी भावुकिा, थोथी भावनाएँ, अहन्ता, कपट, स्वाथपरिा आचद भक्ति-मागप के चवकास में चवश्वासघािी ि ुतुरु हैं। ििि सजग रहो। चनचश्चि चदनियाप बनाओ और दृढ़िा से प्रते्येक ि याप का पालन करो। इस प्रकार आलस्य को चवचजि करो। सत्य पर दृढ़ रहो। नैचिक साहस का उपाजपन करो। ििीं के भिों ंके साहसपूणप कायों से पे्ररणा प्राप्त करो। सबको साष्टांग प्रणाम चनवेदन करने के द्वारा अहंकार और पाखण्ड पर चवजय पाओ। उसकी करुणा-प्राक्तप्त के चलए सदा प्राथी रहो।

ज्ञानयोग : ज्ञानी गुरु की िरण लो। उससे श्रुचियों ंका श्रवण करो। श्रवण चकये गये उपदेिों ंका पुन-पुनीः मनन करो। वेदान्त के सत्यों ंपर अनवरि चनचदध्यासन करो। स्पष्ट, गम्भीर ज्ञान िथा दृढ़ संकल्प–िक्ति चवकचसि करो। इस दृश्य जगि् को स्वप्नवि् समझो। चत्रलोकी की सम्पचत्त को िुच्छ समझो। िरीर की नश्वरिा और चवषय-वासनाओं ंकी क्षणभंगुरिा पर चविार करो। युगों ंके असत्य देहाध्यास को चवनष्ट करो। **खोजो- 'मैं कौन हूँ?' सत्य और असत्य को शववेक द्वारा जानो। मुच्चि और सत्य ज्ञान की प्राच्चि के शलए उत्कट आकांक्षा उत्पन्न करो।**

देहासक्ति िथा 'मैं' और 'मेरे' की भावना मन को अज्ञानबद्ध रखिी है। अहंकार सदैव मनमानी करिा है। पूवप-जन्मों ंकी वासनाएँ, संकल्प, भय, मानचसक ििलिा, भ्रमात्मक चविार एवं मोह आक्तत्मक खोज और ध्यान की बाधाएँ हैं।

ब्रह्म-भाव की सकारात्मक भावना को दृढ़िा से चवकचसि करो। आप चनत्य िुद्ध, चनराकार, असीम आत्मा हैं-इस भाव की अनुभूचि करो। जो भी पदाथप देखो, उसके नाम-रूप को नकारिे हुए उसके भीिर सक्तस्थि अन्तरात्मा के दिपन करो। बाह्य चवकारों ंसे अप्रभाचवि रह कर साक्षी-भाव में संक्तस्थि रहो। इक्तियानुभव को नकारो। **'ॐ' का शनरन्तर जाप करो िथा इस भाँशि मन को च्चथथर िथा िरीर और जगि् की भावना को शवनष्ट करो।**

राजयोग: इक्तिय-दमन िथा िररत्र की िुद्धिा के पश्चाि् ही राजयोग की कठोर साधना सम्भव है। यह एक गुप्त रहस्यमय चवज्ञान है। **सत्यवादी बनो। शकसी को हाशन नहीं ंपहुँिाओ। संयमी रहो। िुद्धिा, सन्तोष, िपश्चयाण, स्वाध्याय िथा आराधना-सम्बन्धी िास्त्रीय प्रशनयमों ंका अनुपालन करो।** आसनों ंके अभ्यास द्वारा स्वस्थ एवं पुष्ट िरीर बनाओ िथा प्राणायाम द्वारा अन्दर के कोषों ंको िुद्ध करो। जब मन िुद्ध हो जाये, िब उसे इक्तिय-जन्य अनुभवों ंसे चवमुख करो। इसे ही प्रत्याहार से अचभचहि चकया जािा है।

प्रत्याहार मन की बचहमुपखिा पर प्रभावकारी अंकुि का काम करिा है, मन की उत्तेजनाओं ंको िान्त करिा है िथा मन को एकाग्र करिा है। एकाग्रिा ही धारणा का रूप धारण करिी है। धारणा अचवक्तच्छन्न धारा में प्रवाचहि हो कर ध्यान में रूपान्तररि होिी है। पररणामि ध्यान समाचध में पररणि हो जािा है और समाचध आवागमन के िक्र से जीव को मुि करिी है।

अिुद्ध पे्ररणा, ब्रह्मियप का अभाव, अचधक भोजन, आलस्य, अचधक सोना, चमथ्या भय, कल्पना में चविरण करना और चनम्न स्तर की अलौचकक िक्तियाँ, जैसे-दूर की बािों ंको सुनने एवं घटनाओं ंको देखने की िक्ति आचद इस मागप की बाधाएँ एवं गटे्ट हैं। चजह्वा का चववेकपूणप चनयिण, त्राटक और प्राणायाम समाचध के सहायक उपकरण हैं। साहस को सजगिा से संयुि

कर प्रत्येक क्तस्थचि में अपनी सामान्य बुक्तद्ध का प्रयोग करो। **परमानन्द और अमरत्व के उिदोंं की अनुभूशि के शलए िीव्र वासनाओं ंव इच्छाओं ंके त्याग से शसच्चद्धयों ंको दूर भगाओ।**

सामान्य पृष्ठभूशम : मानव के सफल प्रयासों ंकी मौचलक पूवापेक्षाएँ सवपत्र समान हैं। वे हैं- नैचिकिा िथा सामान्य मानचसक और िारीररक स्वस्थ्या। नैचिकिा के अभाव में प्रगचि सम्भव नहीं।ं सब-कुछ हिी हुए भी यचद इस जगि् में व्यक्ति आरोग्यिा-सम्पन्न न हो, िो वह न स्वय के चलए और न जगि् के चलए ही लाभदायक होगा। स्वास्थ्य के अभाव में कोई भी प्रयत्न अथवा प्रयास सम्भव नहीं ंहै। इसी प्रकार संसार का स्वाचमत्व प्राप्त होने पर िथा असीम िक्ति एवं बुक्तद्ध से सम्पन्न होने पर भी नैचिकिा के अभाव में उसका जीवन व्यथप है। अन्ति उसका घोर पिन होगा। अि स्वास्थ्य और प्राकृचिक चनयमों ंका पालन करो। संयचमि िथा चनयचमि सरल जीवन यापन करो।

दैचनक व्यायाम, प्राणायाम, आसन, अल्पाहार और िुद्ध चविारों ंसे िरीर को हलका और ुद्धि रखो। सद्‌गुणों ंके व्यावहाररक अभ्यास द्वारा िररत्रवान् बनो। भले कायप करो और समस्त कुचटलिा और कायरिा को चवनष्ट् करो। ईष्याप व घृणा का उनूमूलन करो। सत्य पर दृढ रहो, समग्र स्त्री-जाचि में चदव्यिा के दिपन करो। सफलिाओं ंऔर उपलक्तब्धयों ंमें जीवन की प्रथम नीवं सक्तस्थि है। त्वररि प्रगचि और आत्म-साक्षात्कार के चलए आप आश्वस्त हो जायेंगे।

मशहमा: चकिना भी कचठन कायप क्ों ंन हो, एक ईमानदार व्यक्ति के चलए कुछ भी असम्भव नहीं ंहै। जो एक व्यक्ति कर िुका है, वह दूसरा भी कर सकिा है। जब आप जीचवकोपाजपनाथप पिीस रुपये माचसक विेन प्राप्त करने के चलए आठ घण्े कायापलय में बैठ कर खून-पसीना बहा सकिे हैं, िब कैवल्य और अमरत्व की आनन्दमयी क्तस्थचि प्राप्त करने के चलए क्ा थोडा भी प्रयास उपयोगी न होगा? यह परमानन्द की क्तस्थचि अवणपनीय है। आपको अखण्ड आनन्द, परम ििास्विा और चनत्य िाक्तन्त की प्राक्तप्त होगी। आप महाराजाचधराज हो। वह परम क्तस्थचि चनभपय, चनचवपकार और अमर है।

आह्वान : ओ अमर पुत्रो' अपूणपिा, अज्ञानिा और असन्तोष का जीवन खूब चबिा िुके हो। पूणप और सब प्रकार से चवकचसि जीवन व्यििी करो। **एक ज्योशिमणय आिा बनो। इसो क्षि, जहाँ भी िुम हो, पृथ्वी को स्वगण बनाओ। अशवद्या-रूपी शनद्रा से जागो और शदव्य जीवन व्यििी करने के शलए ित्पर हो जाओ। प्रयत्नीिल बनो। आलस्य और कायरिा को शवनष्ट् करो। शसंह के समान बनो। प्रत्येक कायण में आपको सफलिा प्रिा होगी। आप भौशिक और आध्याच्चिक क्षेत्र में भव्य उन्नशि करोगे। आप अशवलम्ब लक्ष्य की प्राच्चि करोगे। मैं आपको आश्वासन दिा हूँ।**

प्रगशि हेिु सामग्री (जानो और साहसी बनो):

१. बाह्य ितुरुओं ंसे भयभिी मि होइए। अहकार, मद, काम, क्रोध, लोभ, मोह और स्वाथप आपके वास्तचवक ितुरु है।

२. चजिनी िक्ति आप दूसरों ंके उत्थान में लगायेंगे, उिनी ही अचधक चदव्य िक्ति आपके भिीर प्रवाचहि होगी।

३. प्रारम्भ में संयम, आत्म-पररत्याग व धारणा के अभ्यास बहुि अचधक अरुचिकर व ि◌ुष्क
प्रिीि होंगें। यचद आप इनमें ि◌ाक्तन्तपूवपक सलग्न रहे, ि◌ो आपको इनके द्वारा बल, ि◌ाक्तन्त, नया
ओज और आनन्द की प्राक्तप्त होगी।

४. यचद आप सिे और ईमानदार हैं, यचद आप सदैव सामान्य बुक्तद्ध को प्रयुि करिे हैं
िथा धैयपवान् और चनरन्तर प्रयत्निील हैं, ि◌ो आप लक्ष्य की प्राक्तप्त ि◌ीघ्र ही कर लेंगे।

५. सफलिा आपको अवश्य चमलेगी; क्ोंचक आपने इसीचलए जीवन धारण चकया है। आप
अपने उत्तराचधकार का चवस्मरण कर ि◌ुके हैं। अभी अपने जन्मचसद्ध अचधकार की माँग करें।

पाठको' यही सन्देि है। यही जागृचि का उद्घोष है। यह आप पर चनभपर करिा है चक
अब आप माँगें, खोजें और खटखटाएँ। जो ि◌ाचहए वह यहीं ◌ंहै। केवल प्राक्तप्त की इच्छा की अपेक्षा
है। आओ' कुछ समय के चलए बािें बन्द कर दें। भगवान् आपको कायप करने की प्रेरणा दें।

मैंने देखा चक स्वामी चिवानन्द जो अपने ि◌क कुछ भी नहीं ◌ंरख सकिे, भले ही वह बाहरी सम्पदा हो या कोई
चविार या जानकारी ही क्ों ◌ंन हो। वे अिीव चनष्कपट व
उन्मुि हृदय है चजनको असावधानी से देखने पर सवपमान्य चवनिी कुिलिा का अभाव
समझने की भूल हो सकिी है।

अगाध आत्म-चवश्वास होिे हुए भी उनमें श्रेष्ठमन्यिा की भावना लेिमात्र भी नहीं ◌ंहै।
वे सबको आत्मवि् समझिे हैं और सबके साथ उन्मुि एव समिा का व्यवहार करिे हैं।
कुछेक क्षणों ◌ंकी बाििीि के पश्चाि् ही व्यक्ति उनको पूणपिया अपना समझने लग जािा है । वे सबसे, िाहे कोई
बिा ही क्ों ◌ंन हो, परामिप लेने को ि◌ैयार रहिे हैं, क्ोंचक वे चकसी को भी कम महत्त्वपूणप ि◌था बुक्तद्धहीन
नहीं ◌ंसमझिे।

दूसरी प्रमुख चविेषिा, चजसकी उनमें प्रधानिा है, वह हैिीिल ज्योत्स्ना के समान
परम ि◌ाक्तन्त जो उनके रोम-रोम में व्याप्त है। उन्होंनें लक्ष्य की प्राक्तप्त कर ली है और उसी में क्तस्थि हैं। चकसी
भी क्तस्थचि में वह उत्तेजना या भावना के विीभूि नहीं ◌ंहोिे।
प्रत्येक क्तस्थचि में वह ि◌ाक्तन्त की साकार मूचिप हैं। उनकी उपक्तस्थचि में यचद कोई व्यक्ति
चकसी कायप को अव्यवक्तस्थि व अचनयचमि ढंग से करिा है, ि◌ो उसका सांकेतिक मौन
असहमचि एवं गम्भीरिा प्रकट करिे हैं। आवश्यकिा पडे, ि◌ो वे उस स्थान को भी छोड देिे हैं।

-स्वामी शिदानन्द

आलोक-पुंज

समय ने सुदूरपूवप हमारी मािृभूचम में अत्यधिक रुचि ली। उसने इस पर अविरि होने वाले
प्रभु-प्रेरचि सन्देिवाहकों ◌ंको ि◌ाक्तन्तपूवपक, धैयप से, आश्चयप से चचचत्र चकया। सिाई की
ओिप्रोििा, वािावरण के मधुर प्रभा-मण्डल ि◌था धरिाल की उवपरिा को समय ने अनुभव चकया।

भारि दूर िक फैला चविाल वट वृक्ष है। योग-दिपन रूपी सुचवस्तीणप िाखाओं ंिथा अनन्त मूलों ंवाले इस वृक्ष की जडें धमप में गहराई िक प्रवि कर गयी हैं। जीवन-लक्ष्य, जीवनोद्देश्य िथा जीवनादिप का उपदि संसार में प्रिाररि करने के चलए भारि मिा एक के पश्चाि् दूसरा ित्त्ववेत्ता अविीणप करने में थकिी नहीं।ं आज उसने हमारे समक्ष चकसको प्रसुिु चकया है? **वे स्वामी शिवानन्द हैं।**

मानव नहीं ंिाहिा चक उसकी सन्तचि क्षीण ज्योचि चवकीणप करने वाली िाररका िथा वचिपका-दीप हो। जब सामान्य लोगों ंकी यह बाि है िो उनके चवषय में क्या कहना है जो स्वयं प्रोज्ज्वल ज्योचि हों!ं ऐसे ही एक पररवार ने गभप में ही पररपक्व अचि-पुंज को प्रज्वचलि चकया। ८ चसिम्बर १८८७ को सुदूर दचक्षण भारि में एक चििु ने जन्म चलया, चजसका रहस्य सम्भविः मािा-चपिा ने भी नहीं ंजाना था। बहुि सम्भावना इस बाि की है और चनश्चयात्मक रूप से कहा जा सकिा है चक प्रभु ने उस चििु को आत्मज्ञान से सम्पन्न कर चदया था। इनके जन्म-स्थान (पट्टामिई) को गायक पचक्षयों ंका घोंसला कहा जािा है। **इस ग्राम पर अप्पय दीशक्षिार की अशमट छाप लगी है,** जो सदैव स्मरणीय रहेगी। इसे एक छोटी नदी ने पररवृत्त कर रखा है। इसके ििुचदपक् िरागाहों ंिथा हरे-भरे खेिों ंकी दृश्यावचलयाँ हैं िथा यत्र-ित्र गगनिुम्बी गाढ़ा नीला पचश्चमी घाट है, जो सम्भविः माधुयप भाव को सूचिपमान् करिा है। इसके चनवासी ज्ञाि-अज्ञाि रूप से भगवद्-स्मरण में िल्लीन हो जािे थे।

ज्ञान और बुक्तद्धमत्ता से प्रदीप्त िथा पूणप उल्लास, िक्ति, उत्साह और अन्त प्ेरेरणा से युि स्वामी जी अपने सभी क्तखलाडी साचथयों ंऔर सहपाचठयों ंको पराचजि कर दिे थे। उनका िरीर चवलक्षण रूप से समुपुष्ट् एवं सुिौल था। चवद्यालय िथा महाचवद्यालय में वे अनेक पुरस्कारों ंके चवजेिा थे।

सम्भवि उन्ोंनें यह चविार चकया चक मनोचवज्ञान के ज्ञान से भी पूवप आरोग्य-चवज्ञान का ज्ञान होना परमावश्यक है। िभी सन् १९१० में उन्ोंनें चिचकत्सक का व्यवसाय अपनाया िथा चसंगापुर, मलेचिया प्रस्थान चकया। व्यक्ति और पदाथप में समिा लाने का कायप समीकरण कला के न्यायाधीिों ंको उत्तराचधकार के रूप में सौंपा गया, चकन्तु अचववेक और अज्ञानिा के कारण उनमें से अचधकांि इसका उपयुि प्रयोग करने में असफल रहे। अपनी बारी में चिचकत्सकों ंने इस कला को सीखा और देह की असन्तुचलि अवस्था को सन्तुचलि बनाने में इसका चववेकपूणप प्रयोग चकया।

स्वामी जी ने इस कला को शिशकत्सा क्ेषेत्र में नहीं ंबक्ि आध्याक्िक क्ेषेत्र में भी अपनाया। स्वामी जी ने न केवल सहस्रों ंरोशगयों ंको व्याशधयों ंसे मुि शकया अशपिु उन आिाओं ंको, जो शवणमान यािनाओं ंिथा कष्ट्ों ंसे संघषणरि व पीशडि और मुक्ि के शलए प्रयत्नील थीं– उनको भी मुि शकया। भारि मािा कब िक उनके चवयोग की पीडा सहन कर सकिी थी? परन्तु क्या वह पररिय-पत्रों ंिथा पत्र-िीषषों की िोभा बढ़ाने वाली िथा अंाँगरेजी वणपमाला के छब्बीस वषों के उलट-फेर मात्र से रचिि प्रचिचष्ठि उपाचधयों ंसे चवभूचषि इस व्यक्ति को स्वीकार करने को िैयार थी? कदाचप नहीं।ं कदाचप नहीं।ं क्या वह इनकी अनुपयोचगिा और अचक्रयिा को नहीं ंजानिी थी? क्या वह उस उद्देश्य का चवस्मरण कर िुकी थी, चजसके चलए उसने उन्ें जन्म चदया था?

उनका हृदय त्याग से दीप्त हो उठा था। उनका चनवास-स्थान उनके चलए अचि की भट्टी ुल्यि भडक उठा। आध्यात्त्क्त्मक ज्वालाओं ंने उनकी ि ल और अिल सम्पचत्त को चनगल चलया। पदवी, सम्पचत्त, चमत्रों ंिथा साचथयों ंका उन्ोंनें पररत्याग कर चदया। उनके अन्तर में आध्यात्त्क्त्मक आवेग ने प्रहार चकया और उनके हाथ में जलिी ज्वाला थमा दी।

दृढ़ चनश्चय और सकल्प से इस मिाल को ले कर चविार और आिार की बुराइयों–चजनसे मानविा आक्रान्त है-का उनूमूलन अपने िब् और नाद से करने के चलए अपूवप बुत्त्क्द्ध और नवीन उल्लास से पररपूणप व्यक्ति अब भारि में १९२३ में लौटे। **१ जून १९२४** को एक ज्योचिमपय महात्मा ने उनको परमहंस-परम्परा में दीचक्षि चकया। ि**ब से वे 'शिवानन्द सरस्विी' के नाम से समलंकृि हुए।**

संसार-रूपी चपंजरे से मिु हो कर उन्ोंनें एक स्थान से दूसरे स्थान की पद-यात्रा की, वहााँ के चनवाचसयों ंको अमूल्य चिक्षाएाँ प्रदान कीं, ं िैयार चजज्ञासुओं ंकी भावनाओं ंको उद्दीप्त चकया थिा जो उद्दीप्त थे, उनकी भावनाओं ंको पूणपिया प्रज्वचलि चकया।

पररव्राजक जीवन की सनुतुचष्ट् के उपरान्त उन्ोंनें चहमालय की िलहटी में पहुाँि कर एकान्त-वास चकया। **घोर िपस्या, संन्याशसयों ंिथा याशत्रयों ंकी शनष्काम सेवा, स्वाध्याय में अदम्य रुशि, उि गम्भीरिा, कायों में शनयशमििा, समग्र मानव जाशि का आशलंगन करने वाली महिी भावना एवं सहानुभूशिमय दृशष्ट्को से सम्पन्न हो कर िथा जाशि-भेद-भाव से ऊपर उठ कर वे पूिण योगी बन गये।** अवचिष्ट् ऐत्क्तिक उत्तेजनाएाँ िथा हदय के कोने में प्रच्छन्न अचि सूक्ष्म वासनाएाँ ऐसी भागी जैसे भट्टी से चबचूछू भागिा है।

उनके हृदय में आनन्ददायी गम्भीर िात्त्न्त का साम्राज्य है, शजसकी मधुर सुरशभ िथा आध्यात्त्मक स्पन्दन वे शवश्व-भर में भेजिे रहिे हैं, शजनका रसास्वादन संसार के शकसी भी कोने में वास करने वाला प्रत्येक व्यत्ति करिा है। वे ज्ञान की चवचभन्न पद्धचियों ंसे पूणपिया पररचिि हैं। वे चवलक्षण स्मरण–त्क्ति से सम्पन्न है। उनका प्रविन सबको मि-मुग्ध कर दिा है।

वे किणव्य-सम्पादन में शनपिु हैं। उनकी सब पर समदृशष्ट् है और अपने मधुर स्वभाव से सबके साथ सम-व्यवहार करिे हैं। वे अशिशय सरल हैं। वे सहज प्राप्य हैं, सबको आि-सम मानिे हैं। क्ा उनकी कृपा प्रात्ति का यह अवसर खो देना होगा? अचिमानव-रचिि स्पष्ट् सुबोध िैली में ज्ञान-प्रदाचयनी पुस्तकों ंके रूप में स्वचगपक उपहारों ंको प्रत्यक्ष पा कर भी हाथ से जाने देंगे? क्ा हमें दैवी उपहार-जो खडी िट्टान-सम पिनकारी सांसाररक बिनों ंसे मिु करवाने में सहायक है-को अस्वीकृि करना होगा ?

कुछ क्षिों ंके शलए अपनी आाँखें मूशदए। समूपूिण पापों ंसशहि अपने मन को शिवानन्द की ओर प्रेररि कीशजए। इस वेदी पर अपनी समस्त बुराइयााँ अपणि कर दीशजए। समस्त िारीररक अवयवों ंको िात्त्न्तः िात्त्न्तः !! िात्त्न्तः !!! का पाठ पढ़ाइए। कुछ समय के शलए आनन्द में लीन हो जाइए। ओ मानव! मन को अन्तमुणखी करो। आपने संसार का अभी पूिणरूपेि त्याग नहीं ंशकया है। 'जन्म-शदवस' पर शदये गये उनके सन्देि को श्रवि कीशजए। ध्यानपूवणक उनका अनुसरि कीशजए। ईश्वर आप पर िात्त्न्त, प्रिुरिा और समृत्त्द्ध की वषाण करें!

योगवेदान्तफॉरेस्टयूचनवचसपटी सचटपचफकेट

(मूल कापी का टाइप प्रचि)

THE YOGA - VEDANTA
FORESTUNIVERSITY

Service **Love** **Meditate** **Realise** **Tat-Twam-Asi**

WHEREAS, by the Grace of God, the Fountain of Eternal Bliss, and by the Will of the Almighty, it has been recognised that **Sri Prema-Murti Swami Chidananda** is worthy of being awarded the Sacred Title of **Adhyatma Jnana Jyoti** in appreciation of meritorious services rendered in the field of **spiritual uplift of mankind** and a firm devotion to Truth, Love and Purity, I hereby make this award in token of such recognition, with my best wishes and devout prayers to the Lord to bless the recipient hereof with health, long life, peace, prosperity, Eternal Bliss, success in all under- takings, Vidya, Tushti. Pushti and Divine Aiswarya

This Twenty-fourth day of June 1954.

Swami Sivananda.
(signature)
Chancellor

योग-वेदान्त फॉरेस्ट यूचनवचसपटी सचटपचफकेट

(चहन्दीरूपांरिण)

द योग-वेदान्त
फॉरेस्ट यूचनवचसपटी

सेवा **प्रेेम** **ध्यान** **साक्षात्कार** **[-त्विम्-अशस**

िाश्वि आनन्द के स्रोि परमात्मा की कृपा से और उस सवपिक्तिमान् की इच्छा से यह पाया गया है चक **श्री प्रेेम-मूशिण स्वामी शिदानन्द,** आध्याक्तत्मक क्ेषेत्र में मानविा के उत्थापन के चलए की गयी सराहनीय सेवाओं ंके चलए और सत्य, प्रेेम और पचवत्रिा में दृढचनष्ठ होने के चलए **अध्यािा ज्ञान ज्योशि** की उपाचध से चवभूचषि चकये जाने के योग्य हैं। अिः मैं इन प्रिंसनीय कार्यों के प्रमाण के रूप में प्रिक्तस्त पत्र अपनी इन समस्त हाचदपक िुभ कामनाओं ंऔर प्राथपनाओं ंसचहि प्रदान करिा हूँ चक स्वामी चिदानन्द उत्तम स्वास्थ्य, दीघापयु, िाक्तन्त, सम्पन्निा, िाश्वि आनन्द, सवप-कायप-साफल्यिा, चवद्या, िुचष्ट्, पुचष्ट् और चदव्य ऐश्वयप से सम्पन्न हो।

२४जून १९५४

SwamiSivavarda
सही
(स्वामी चिवानन्द)
कुलपचि

मानव-जीवन का लक्ष्य

इस संसारमेंिीनवसुतुएँदुलपभहैं-मानव-जन्म,मोक्षकीकामनाऔरसन्तों ंकासंग।ये िीनों ंभगवत्कृपाऔरउसकेअनुग्रहसेप्राप्तहोिीहैं।इनिीनों ंमेंमनुष्य-जन्मअमूल्यवरदानहै, अिः उसे प्रथमस्थानचदयागयाहै।सत्ताकीयहीएकऐसीअवस्थाहैचजसमेंजीवकोबुक्तिद्धऔर चनत्याचनत्य-वसुतु-चववेक की अचि-दुलपभ क्षमिा उपलब्ध होिी है। इसीचलए मनुष्य-जीवन भगवान् की अत्यन्त दुलपभ देन मानागयाहै।अिःमनुष्य-जीवनप्राप्तकरकेभीयचदआपमेंउसअवस्थाको पहुँचने की िीव्र अचभलाषानहीं ंहैजोआपकोचनत्यआनन्दऔरअमरिाप्रदानकरेगी,िोइसका अथप है चक आप इस मनुष्यजीवनकाउपयोगचकसीलक्ष्यहेिुनहीं ंकररहेहैं।यचदऐसाही

है, ि आपका अक्तस्तत्व पुिवि् है। खाना, पीना, सोना और वासना - जन्य आनन्दोपभोग मनुष्य और पिु में समान हैं। मनुष्य का आदिपवाद और भौचिक सत्ता से कहीं ंऊपर उठने की उसकी आकांक्षा उसे पिु से चभन्न बना दिी है। हम जानिे हैं चक हमें कुछ उिर प्राप्त करना है िथा इस भौचिक जीवन की अपूणपिाओं ंसे मुि होने की िीव्र आकाक्षा भी हममें है।

इसके पश्चाि् आिा है चवद्वज्जनों ंका संग। उि दो वसुतुएँ अथापि् मानव-जन्म और मुमुक्षुत्व प्राप्त कर लेने पर भी हमारा जीवन भ्रम से आवृि रहिा है, असफल प्रयासों ंसे भरा रहिा है। यह सब केवल इसी कारण चक हम नहीं ंजानिे चक सही प्रयत्न क्ा है? सम्यक् प्रयत्न की क्षमिा िो उस भाग्यिाली व्यक्ति को प्रदान की गयी है चजसे पथ की बाधाएँ दूर करने वाला यह िीसरा वरदान प्राप्त है। यचद हम स्वयं को प्रभु को अचपपि कर दें, िो वह

हमें मागप चदखािा है। जब प्रलोभन हमें पथ-भ्रान्त करिा है, उन क्षणों ंमें वह हमें पे्रेरणा दे सकिा है, अत्साह और साहस दे सकिा है। हमें िीनों ंही वरदान प्राप्त हैं-िीनों ंही नहीं,ं प्रतुयिु िारों ंअथापि् मन भी। मन भी सहमचि जिायेगा। मानव-मन से बडा कोई दानव नहीं ंहै। वह माया का दिू है, जो ईश्वर-प्राक्तप्त के मागप में बाधक है। अिएव मन अनुकूल होना िाचहए। आप पर िाहे देव-कृपा हो, गुरु-कृपा और िास्त्- कृपा ही क्ों ंन हो. मन को आपका सहयोगी होना ही िाचहए।

हम अपने परम धे्येय, परमादिप की ओर चदन-प्रचि-चदन उन्नचि िथा प्रगचि करिे जाने के चलए ही यहाँ हैं। जो आज का यह िुभ चदन और पुनीि अवसर है चक आज से हम ऐसी चनयचमि कक्षाएँ िालू कर रहे हैं चजनमें ध्यान के चसद्धान्त बिाये जायेंगे, ध्यान का अभ्यास कराया जायेगा िथा साधना के सभी पहलुओं ंपर प्रकाि डालिे हुए यह भी बिाया जायेगा चक अपनी प्रते्येक चक्रया

(यहां से लेख, प्रविन और सने्दि प्रारम्भ।)
को आध्याक्तत्मक चकस प्रकार बनाया जाये। हम प्रािः और सायं ध्यान करिे हैं, परन्तु चफर भी चदन-भर के अपने कायप-व्यापार िथा अन्य के संगण व्यवहार में अचि-संकीणपिा और स्वाथपरिा चदखािे हैं। यह हमारी साधना में अवरोध पैदा कर ध्यान के पररणाम को नष्ट् कर देिे हैं।

यूचलचसस की अनुपक्तस्थचि में उसकी पत्नी देवेलोप के कई िाहने वाले हो गये, परन्तु वह चकसी दूसरे को पत्नी होना ही नहीं ंिाहिी थी। वह चनष्ठावान् और पचिपरायण स्त्ी थी। अिः उसने अपने प्रणाचवयों ंसे कहा चक वह एक वस्त् बुन रही है और जब िक वह वस्त् िैयार नहीं ंहो जायेगा, वह िब िक चकसी से चववाह नहीं ंकर सकिी। उन्ोंनें मान चलया और जब िक बूचलचसस लौट कर नहीं ंआया, वह चदन-भर वस्त् बुनिी रहिी और चदन-भर का बुना राि में उधेड देिी। इसी िरह का उधेडना हमारे जीवन में नहीं ंहोना िाचहए। प्रािः और साथ हमने चजिनी भी साधना की हो, उसमें हमें अचदव्य ित्त्व नहीं ंजोडने िाचहए।

अपने कायों के बीि में यचद हम अपने मूलभूि ित्त्व को भूल जािे हैं, रुक्ष हो जािे हैं, चकसी की आलोिना करिे हैं या सिाई से हट जािे हैं, िो जो साधना हमने ध्यान के क्षणों ंमें की है, उसे उधेड कर रख देिे हैं। अिः हमारा बचहगपि जीवन और हमारी चक्रयाएँ, हमारी वाणी और कमप, हमारे ध्यान, उपासना और साधना की भावना के अनुरूप हों ंऔर उस भावना का

संवधपन करने वाले हो। इसचलए अपनी साधना को बनाये रखने के चलए आवश्यक है चक उसे हम केवल अपने िाक्तन्तपूणप क्षणों ं िक ही सीचमि न रख कर अपने समस्त कमों में चदव्यिा ले आयें। हमारे समस्त कमप हमारे वास्तचवक स्वभाव के अचभव्यंजक हों। ं वे चदव्य हो जायें।

यही कारण है चक कमपयोग में समस्त कमों को चदव्यिा प्रदान की जािी है। यह सबको जानना िाचहए ि–ाहे वह ध्यानयोगी हो, भि हो या वेदान्ती हो। कमपयोग बडा कचठन है। एकान्त में आपकी बडी आदिप भावना हो सकिी है, परन्तु कठोर यथाथप से सामना होने पर, इस चवषमिाओं ंसे भरे जगि् में सन्तुलन रखना, केवल चदव्यिा को अचभव्यि करना िथा चनीःस्वाथप रहना बडा कचठन कायप है। परन्तु चफर भी सूपृहणीय है, क्योंचंक इसके द्वारा अन्य योग सफल हो जायेंगे।

जो मनुष्य आत्म-त्याग की भावना के साथ, माधुयप के साथ आदिप जीवन व्यिीि करिा है, उसका एक माला जप भी अन्य व्यक्तियों ंकी हजारों ंमाला जप के बराबर हिोा है, क्योंचंक उसका स्वभाव चदव्य कमों के द्वारा पचवत्र और समुन्नि हो जािा है। परन्तु यचद स्वभाव काम, क्रोध आचद से पूणप है िब िाहे आप ध्यानोपासना करिे रहें, पर भूचम िैयार न होने से वह फलविी नहीं ंहोगी।

व्यक्ति को आश्चयप हिोा है चक उसकी उन्नचि क्यों ंनहीं ंहो रही है? नहीं ंहो रही है, क्योंचंक अपने कायपरि जीवन में वह साधना के प्रचिकूल िलिा है। साधक को चववेकिील होना िाचहए। उसे देखना िाचहए चक चछद्र कहााँ है? अन्यथा पात्र टपकिा ही रहेगा। आप चकिना ही भरिे जायें, व्यथप है। अिीः आपको जानना होगा चक पात्र कहााँ से ररसिा है और इस हेिु आपको कमपयोग की कला का ज्ञान होना िाचहए।

इसका व्यावहाररक ज्ञान आपको आश्रम की कक्षाओं ंमें ही चमलेगा। एक राजा के पास िीन खोपचडयााँ थीं। ं उसने अपने राज-पक्तण्डि से पूछा चक इन िीनों ंमें कौन श्रेष्ठ है? उस पक्तण्डि ने एक खोपडी को चलया और उसके कान में िार िाला। वह िार दूसरे कान से बाहर चनकल आया। दूसरी खोपडी के कान में जब िार िाला गया, िो वह मुख-द्वार से बाहर आ गया। िीसरी खोपडी के कान में जब िार िाला गया, िो वह सीधा वक्ष में िला गया। राज-पक्तण्डि ने बिाया चक िीसरी खोपडी श्रेष्ठ है।

पहली खोपडी ऐसे लोगों ंकी प्रिीक है जो एक कान से सुन कर उसे आत्मसाि् चकये चबना ही दूसरे कान से चनकाल देिे हैं और उसके चवषय में भूल जािे हैं। दूसरी खोपडी उन लोगों ंकी प्रिीक है जो ज्ञान प्राप्त कर उसे जनिा में फैलाने को िो व्यग्र रहिे हैं, परन्तु स्वयं उस पर नहीं ं िलिे। ये चद्विीय श्रेणी के लोग हैं। िीसरी खोपडी श्रेष्ठ कोचट के साधकों ंकी प्रिीक है जो ज्ञान श्रवण कर उसे हृदयंगम कर लेिे हैं और उसका दैचनक जीवन में प्रयोग करने की िेष्टा करिे हैं। मैं आपसे अनुरोध करूाँगा चक आप िीसरी खोपडी की िरह बन जाये और जो कुछ भी बुद्ध जनों ं के संग से, सन्तों ंऔर महात्माओं ंके चनकट सत्सग से प्राप्त हो, उसका चवकास और अभ्यास करें। भगवान् का आिीवापद आप सबको प्राप्त हो!

हमारे जीवन में गुरुदेव

आराध्य चदव्य उपक्तस्थचि को सादर प्रणाम! हम आपके िाश्वि, असीम अक्तस्तत्व के अचभन्न अंग हैं। हम अचनवायप रूप से आपसे जुडे हुए हैं। हम आपसे अपना सम्बि भूले बैठे हैं। आप हमारे आचद, मध्य और अन्त हैं। आप हमारे सवपस्व हैं। भूलवि हमने स्वयं को आपसे दूर कर चलया है। इसी कारण हम आनन्द, िाक्तन्त और प्रकाि से वंचिि रह रहे हैं जो हमारा जन्मचसद्ध अचधकार और हमारा अपना स्वरूप है। हमने इस आत्मानुभव की क्तस्थचि से स्वयं को वंचिि कर चलया है और हम अप्रामाचणक, झूठे, बनावटी अनुभवों ंसे भरा जीवन जी रहे हैं चजसमें प्रेम और घृणा, हाँसना और रोना, उत्सुकिा और िनाव, भय और बिन, लडना-झगडना, आत्मकेंक्तिि प्रवृचत्त, स्वाथपभाव, क्रोध और ईष्याप भरी पडी है। यह कृचत्रम अवस्था है। यह चवषम अवस्था है। यह हमारे चलए स्वाभाचवक नहीं ंहै, कृचत्रम है।

इस िान्त वािावरण में, इस क्षण, इस नीरव प्रािःकाल में हमारे चप्रय पूजनीय **गुरु भगवान् स्वामी शिवानन्द जी** की पावन उपक्तस्थचि में हम उनके िरणों ंमें अपनी श्रद्धाजचल और प्रणाम समचपपि करिे हैं। हम अपने हृदयिल से, मानवीय मन से, प्राथपना करिे हैं चक यह चवयोग, यह प्रचिकूलिा, आपसे दूर भागने की इस प्रवृचत्त का अन्त होना िाचहए। सारे कष्ट्, चवषाद, दुःख, हाचन, दुदपिा, भ्रम, सम्मोहन आचद क्तस्थचियों ंका मूल कारण अपने स्वरूप की जागरूकिा के प्रचि, आपके साथ हमारे िाश्वि सम्बिों ंके प्रचि सुषुक्तप्त का कारण, हमारा आपको भूल जाना ही है। आपकी कृपा से उसका अन्त हो जायेगा।

ईश्वर करें, हम पुनः आपके साथ अपनी आन्तररक चदव्य िाश्वि एकिा बनाये रखें। कोचट-कोचट अगचणि अधपसत्यों ंऔर प्रकट रूपों ंके मध्य आप ही केवल सत्य हैं। ऐसी जागृचि आने पर ही हमारा िोक आनन्द में , उत्सुकिा और व्याकुलिा िाक्तन्त में, भ्रम और अज्ञान बुक्तद्धमानी में िथा अपूणप अक्तस्तत्व पूणपत्व में अथापि् ब्रह्मानन्द में पररणि हो जायेगा।

इस ब्राह्ममुहिप में हम प्राथपना करिे हैं: **"असिो मा सद्गमय, िमसो मा ज्योशिगणमय, मृत्योमाण अमृिं गमय।"** इस चवयोग को समाप्त करो, इसके चलए आपने स्पष्ट् रूप से कहा है "**िम् शवद्याद् दुःख संयोग-शवयोगं योग संशज्ञिम्**" (गीिा ६-२३) कष्ट् रूप ससार के सयोग की समाक्तप्त को योग कहिे हैं। योग से सारे कष्ट् दूर हो जािे हैं, सारी चवपदा समाप्त हो जािी है, िाप-त्रय समाप्त हो जािे हैं। अब रोने-चवलाप करने के चदन गये। वहााँ िो आनन्द है, प्रसन्निा है। कृपया हमें उस योग का उपहार दीचजए।

श्रीमद्भगवद्गीता के अमर ज्ञान की चिक्षाओं ंका यही आह्वान है चजसमें सारे सन्देिों,ं सभी चिक्षाओं,ं सभी ईश्वरीय आदेिों ंमें यही कहा गया है चक िुम ही नारायण हो और अजुपन के माध्यम से नरों ंको आह्वान है- "िस्माद्योगी भवाजुणन" और स्वामी चिवानन्द जी के रूप में आपने
पुनीः यह आह्वान चकया है-"आओ, आओ, योगी बन जाओ, िुम क्‍यों ंरोिे और चवलाप करिे हो? िुम क्‍यों ंइस बिन को दूर िक खींिना िाहिे हो? आओ, योगी बन जाओ।" ऐसा उनका आह्वान था। बीसवीं ंििाब्दी के आधुचनक मानव के चलए श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने सनािन आह्वान की पुनरावृचत्त की है।

पूजनीय आध्याचत्मक उपचस्थचि, गुरुदेव आप ही हमारे प्रकाि और जीवन के मागपदिपक हैं। आप अपने आह्वान से हमें बार-बार इसी प्रकार सावधान करिे रचहए। आपके िरणों ंमें हमारी यही प्राथपना है। उन सभी साधक आत्माओं ंके चलए जो आपकी उपचस्थचि में, आपकी गुरु-कृपा से आकृष्ट हो कर हर चदन की प्रािीः बेला में आपके आश्रम के इस समाचध हाल में यहााँ उपचस्थि हुए हैं, उनके चलए आपसे यही प्राथपना है।

प्रकाि‍वान् आत्माओ! हम पुण्यचिचथ की वाचषपक आराधना के चनकट हैं। गुरुदेव अपने पीछे जो दाचयत्व हमारे ऊपर सौंपं कर गये हैं, हम उसी पर चिन्तन करिे रहे हैं। गंगा के चकनारे स्थाचपि मूल्यवान् अमूल्य आश्रम के रूप में हमें आपने जो सुचवधा दी है, हम उस पर चविार करिे रहे हैं। यह एक वास्तचवकिा है, यह एक अनुभव है; ठोस, साकार एक सारगचभपि िथ्य है। कोई इसे नकार नहीं ंसकिा। यह भवन भक्ति, ज्ञान, ध्यान, कमपयोग, परोपकार और सेवा की सुचवधा प्रदान करिा है िथा यहााँ पर ज्ञान-गंगा में स्नान करने के चलए प्रेरक, आत्म-जाग्रि करने वाला, प्रकाचिि करने वाला, अनुदेि देने वाला आध्याचत्मक साचहत्य है। उन्होंने हमें जीवन के आदिप और दृष्टान्त भी चदये, चजन्हें वे 'चदव्य जीवन' कहिे थे। यह जीवन केवल स्थूल िारीररक जीवन नहीं ंअथवा सूक्ष्म, मनोवैज्ञाचनक जीवन नहीं ंचदव्य जीवन है, एक ऐसा जीवन जो हमारे स्वरूप से चविेचषि है, हमारे पूणपिया आन्तररक स्वभाव से चविेचषि, एक ऐसा जीवन जो केवल हमारी अनावश्यक उपाचधयों ंकी ही अचभव्यक्ति नहीं ंहै, प्रत्युि एक ऐसा जीवन है जो देवत्व की अचभव्यक्ति है, जो हम सबका आभ्यन्तर सत्य है। उन्होंने हमें आदेि और सन्देि चदया- "िुम चजसके चलए आये हो, अपना जीवन चदव्यिा से िथ्यीं करो, यचद िुम अपनी उपाचधयों ंको प्रकट करिे रहोगे, िो िुम अपने-आपको प्रकट नहीं ंकर रहे हो।"

देवत्व की ओर अग्रसर होने के चलए धमपिास्त्रों ंके सारित्त्व को सुव्यवचस्थि स्वरूप चदया। गुरुदेव ने कहा "उसकी नींवं है-सत्य और दया िथा सावपभौम प्रेम। आकार है- चनीःस्वाथप सेवा, भक्तिपूणप आराधना, अनुिासन, एकाग्रिा, ध्यान, ििि आत्म-चनरीक्षण, आकांक्षा, चजज्ञासा, मुमुकुषुत्व, चविार, चववेक, अचभव्यक्ति से परे सत्य की प्रकृचि का चनरीक्षण, चनत्य पररविपनिील, चमथ्या नाम और रूप (जो मात्र अचभव्यक्ति हैं) से परे सक्तिदानन्द ित्त्व में लीन होना; क्‍योंचक वह चनत्य है, िाश्वि है, ज्योचिमपयी आत्मिाक्‍ना से उद्भाचसि है, ज्ञान स्वरूप है, प्रकाि स्वरूप है और जो वास्तव में अत्यन्त चप्रय है, आनन्द स्वरूप है।"

एवंचवध, सत्य, अचहंसा और ब्रह्मियप की नींवं पर उन्होंने सेवा, भक्ति, ध्यान और आत्मज्ञान का एक उत्तकृष्ट आकार हमें प्रदान चकया है। पर उनकी एक अनोखी प्रेरणा हमें हमारी एक नयी पहिान के रूप में चमली है। उन्होंने कहा- "िुम यहााँ केवल एक यात्री के समान घूमिे रहने के चलए नहीं ंहो, कहीं ंखाई में चगरने के चलए नहीं ंहो, पााँि िंइक्तियों ंरूपी िाकुओं ंसे चघ

लगा कर लुटने के चलए नहीं ़हो; बक्ति उससे हट कर ि़ुम यहााँ सविो ईश्वर से चमल जाने के चलए हो। ि़ुम उनके साचन्नध्य में रहो। जीवन का वास्तचवक अथप यही है। ईश्वर से चबछुडने और एक बार चफर उनसे चमलने की यात्रा है। ि़भी दु्ीःख आनन्द में पररणि होगा। दु्ीःख से सयोग समाप्त करने के चलए योगी बन जाओ।"

इस प्रकार उन्ोंनें हमें ऐसी पहिान दी है- "ि़ुम सभी योगी हो, ि़ुम्हें योगी के समान जीवन यापन करना है। जीवन ही योग है। उनसे पुनीः एकत्व प्राप्त करने की प्रचक्रया ही जीवन है। वह संयोग, वह आन्तररक सम्बि चजसने ि़ुम्हारे ईश्वर होने के दैवी स्रोि से टूटी हुई कडी को खो चदया है। इसचलए योगी के रूप में रहने के चलए अपने-आपको जागरूक रखो।"

और यह नयी पहिान वास्तचवक रूप में व्यावहाररक जीवन पर आधाररि थी। केवल अपने-आपको योगी मान लेना ही पयापप्त नहीं ़है। "व्यावहाररक योगी बनो। योग साधना का अभ्यास करो। साधक बनो। और कुछ बनने के स्थान पर योगी बनो। ि़ाहे ि़ुम वकील, इंजीचनयर, िाक्टिर, प्रोफेसर, चिक्षक, टैक्सिीालक, व्यवसायी या दुकानदार हो, इससे कोई अन्तर नहीं ़ पडिा। साधक बनो। मेरे चप्रय बिो ! सिी साधना करो, साधना करो, सिै साधक बनो, अपने-आपको आध्याक्तत्मक साधना में व्यस्त रखो। अपने चदन-प्रचिचदन के जीवन का इसे अंग बन जाने दो। चदन का प्रारम्भ साधना के साथ करो और अन्त भी साधना के साथ करो। चदन-भर के सारे कायप-कलाप सब साधना के भाव से पूरे करो - **"यि् यि् कमण करोशम ि़त्तदच्चखलं ि़म्भो विाराधनम्"** (मैं जो कुछ भी कमप करूाँ, हे ईश्वर। मैं सब आपको समचपपि करके करूाँ। यही मेरी पूजा है)।"

बीसवीं ़ि़ाब्दी की अच्चखल शवश्व की भाग्यिाली मानव-जाशि के शलए गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी का यही अनोखा उपहार है। और आप सबमें सबसे भाग्यिाली वे हैं जो इस प्रकार के उपहार के चलए सीधे-सीधे उनके सामने थे ि़था उन्ोंनें उस प्रकार की साधना का जीवन-चनवापह करने का चनश्चय चकया। ि़ुम्हीं ़साधक हो, ि़ुम्हीं ़योगी हो। उन्ोंनें इसी रूप में नया जीवन प्रदान चकया है। भ्रान्त पहिान को हटा कर यही नयी पहिान उन्ोंनें आपको दी "मैं यह हाँ, मैं वह हाँ, मैं अमुक व्यक्ति हाँ, मैं स्त्ी हाँ, मैं पुरुष हाँ, मैं ब्राह्मण क्षचत्रय हाँ, मैं वैश्यि्ूद्र हाँ, मैं ब्रह्मिारी संन्यासी वानप्रस्थी हाँ।" इन सबसे ऊपर उन्ोंनें आपकी पहिान करायी-"मैं योगी हाँ, मैं ईश्वर से अपना सम्बि स्थाचपि करना ि़ाहिा हाँ। मैं साधक हाँ, मेरा जीवन साधना के चलए है। मेरा जीवन साधना से भरा हुआ होना ि़ाचहए। यचद साधना मेरे से चछन गयी, ि़ो मैं ि़ून्य हाँ। उसे मेरे जीवन का अन्त समझो, मेरे जीवन में कुछ नहीं ़बिा समझो। मैं ि़व के समान हाँ।" उन्ोंनें इस प्रकार की पहिान हमें साधक, योगी, भि, परोपकारी, ध्यानी, वेदान्ती बनने के चलए दी। वेदान्ती बन जाओ। हाड-मास के इस चपंजरे में से ओंकार की ध्वचन की गूंज ि़ारों ़और फैल जाने दो। वह यही ि़ाहिे थे।

इस प्रकार उन्ोंनें हममें नयी ि़ेिना प्रदान की, पूणप रूप से ईश्वर के साथ सम्बि की नयी पहिान दी, सीधे-सीधे ईश्वर के साथ जुडे रहने की नयी ि़ेिना जगायी। पर उस सबसे ऊपर उन्ोंनें हमें जो पहिान करायी थी, वह थी- "योगी के समान चजयो, साधक के समान चजयो।" यही ि़ुम्हें उनसे उत्तराचधकार के रूप में चमला है। यही उन्ोंनें अपने पीछे छोडा है। अमूल्य चनचध, एक मूल्यवान् चथाी चजसका मूल्य जााँिा नहीं ़जा सकिा, उसे सोनेि्ााँदी और अमूल्य रत्नों ़के रूप में आाँका नहीं ़जा सकिा। वह अिुल्य है, अमूल्य है।

इस प्रकार सत्तम्मचलि रूप में हमें गुरुदेव के ि रणों ं में आदरपूवपक प्रणाम करके उस महापुरुष को पे्रम के साथ श्रद्धांजचल अचपपि करनी िाचहए, चजन्ोंनें प्रिीन घोषणा का प्रचिचनचधत्व चकया, चजसे 'गीिा' में भी सुन सकिे हैं। उन ज्ञान-उपदेिों ंको उन्ोंनें इस बीसवीं ंिाब्दी में
पुनीः जागररि करके योगी-वाणी प्रदान की-"आओ, आओ, योगी बन जाओ, इसी जीवन में
आत्मोपलत्तब्ध, ईश्वरोपलत्तब्ध प्राप्त करो।"

इसीचलए गुरुदेव हमारे चलए आये थे। इसीचलए वह उन लोगों ंके सदा अपने बने रहेंगे जो
सिाई के साथ इस पर मनन करिे हैं िथा यह खोजने का प्रयास करिे हैं चक हम उनके कौन
हैं, हम चकस रूप में उनसे सम्बत्तिि हैं, उन्ोंनें अपने जीवन और उपदेिों ंके रूप में हमारे
चलए क्ा चकया। इस महासमाचध चदवस पर हम इस मास की िौबीस िारीख को उस व्यक्ति के
जीवन और उनकी चिक्षाओं ंके रूप में मनाने की िैयारी कर रहे हैं। हमें पूणप रूप से उनके गुणों ं
की प्रिसा करनी िाचहए चक वह व्यक्ति कौन है चजसके महासमाचध चदवस का आयोजन हम
गुरुपूचणपमा के पश्चाि् की नवमी को करिे हैं। आप सबको ईश्वर का आिीवापद प्राप्त हो। .

गुरु-कृपा

हमारे धमपिास्त्र् हमें यह बिलािे हैं चक गुरु-कृपा एक ऐसा अद्भुि रहस्यमय ित्त्व है जो
साधक को जीवन के परम श्रेयस् आत्मसाक्षात्कार, भगवद्दिपन अथवा मोक्ष की खोज िथा उपलत्तब्ध
में सक्षम बनािा है। चिष्य साधना करे अथवा न करें, वह अचधकारी हो अथवा अनचधकारी, गुरु-
कृपा आध्यात्तत्मक क्षेत्र में प्रिचलि ंसभी प्रसामान्य चवधानों ंको उत्साचदि कर उसे (चिष्य को)
भाविीि आनन्द में ले जािी है। यचद हम िास्त्रों ंपर चवश्वास करें िो हम कह सकिे हैं चक
जीवन में पूणिा प्राप्त्यथण गुरु-कृपा के अशिररि अन्य कोई भी वसुतु अपेशक्षि नहीं ंहै।

इसके साथ ही, यचद यह िथ्य भी सत्य है चक गुरु दया के असीम सागर हैं िथा वे
समस्त चजज्ञासुओं ंपर, िाहे वे अचधकारी हों ंअथवा अनचधकारी, योग्य हों ंअथवा अयोग्य, अपनी
कृपा की वृचष्ट् चनरन्तर करिे रहिे हैं। यचद ऐसी बाि है िो अब िक हम सभी आप्तकाम,
आनन्दमय बन िुके होिे। पर क्ा ऐसा है? नहीं।ं हमें यह देख कर खेद होिा है चक हम फाँस
गये हैं। हममें अज्ञानिा है, भ्रम भी चवद्यमान है िथा हम अपनी ही चनम्न आत्मा द्वारा जीवन के
प्रत्येक मोड पर प्रवंचिि हो रहे हैं।

त्रुचट कहााँ है? इनमें से कौन असत्य है? यचद उपयुपि दोनों ंही कथन सत्य हैं िथाचप चिष्य
अद्यावचध बहुि कुछ पाचथपव ही बने हुए हैं िो कहीं ंपर अन्य कुछ भूल होगी। वह 'अन्य कुछ'
क्ा है? हम िास्त्रों ंको असत्य कहने की धृष्टिा नहीं ंकर सकिे, पर साथ ही हम यह भी
दृढ़िापूवपक नहीं ंकहिे चक गुरु करुणामय नहीं ंहैं िथा वह हम पर अपनी कृपा-वृचष्ट् नहीं ंकरिे।

यचद हम इस पर चिन्तन करें िो हमारे समक्ष कुछ ऐसे िथ्य उपत्तस्थि होिे हैं चजन पर
गम्भीरिापूवपक चविार करने की आवश्यकिा है। **शनस्सने्देह गुरु-कृपा एक ऐसी शदव्य ित्त्व है
जो िीन प्रिी ही नहीं,ं शनजीव पाषाण िक को असीम सच्चिदानन्द में रूपान्तररि कर**

सकिी है। इस कथन में ािथा इस ािथ्य में चक गुरु सदा ही दयापूणप हािे हैं, चकचिन्मात्र भी अतििियोक्ति नहीं ंहै। ािथाचप गुरु-कृपा केवल प्रदान ही नहीं ंकी जािी, दी ही नहीं ंजािी, अचपिु ग्रहण भी की जािी है। इसे ग्रहण कर हम अपने को अमर बनािे हैं, अपना चदव्यीकरण करिे हैं।

एक उदार दानदािा अपररचमि दान दे सकिा है, चकन्तु संसार की समस्त सम्पचत्त भी उस अचंकंनि के चलए चनरथपक ही है जो इस महान् अवसर का लाभ नहीं ंउदािा ािथा प्रापक नहीं ं बनिा। इसीचलए प्रभु यीिु ने कहा "माँगो, ािो ािुम्हें दे चदया जायेगा, ढूँढ़ो, ािो ािुम पाओगे; खटखटाओ, ािो ािुम्हारे चलए खोल चदया जायेगा।" ऐसी बाि नहीं ंचक भगवाि् दानिीलिा का, चदव्य कृपा का, गुरु-कृपा का कोई अभाव था। प्रकाि की कमी व थी, चकन्तु एक चवधान था चक हमें माँगना है, हमें ढूँढ़ना है ािथा हमें खटखटाना है और ऐसा करके हमें उसे ग्रहण करने के चलए उद्यि रहना होगा। यचद यह क्तस्थचि है ािो गुरु-कृपा सभी प्रकार के आश्चयप करिी है। यह हमारे अन्दर प्रवाचहि हो कर हमें उन्नि कर अमरत्व, ािाश्वि प्रकाि ािथा असीम आनन्द के ािुरिम प्रदेि में पहुँचा देिी है।

अब हम उस कृपा को कैसे प्राप्त कर सकिे हैं? उसको ग्रहण करने को उद्यि रहने के चलए हमें कैसा व्यवहार करना ािचहए? चिष्यत्व के द्वारा, क्योंचक गुरु ािथा गुरु कृपा का प्रश्न चिष्य के सम्बन्ध में ही उठिा है। जो चिष्य नामक श्रेणी में नहीं ंआिे, ऐसे लोगों ंके चलए ऐसा नहीं ंकहा गया चक उन्हें, दया, करुणा, कृपा अथवा आिीवापद नहीं ंप्रदान चकया जायेगा, चकन्तु इसमें गुरु कृपा का उल्लेख नहीं ंहै। जब मैं गुरु कृपा कहिा है ािो यह कुछ चविेष वस्तु है, कुछ रहस्यमय वस्तु है, कुछ ऐसी वस्तु है जो न केवल इस लोक की ही कोई भी वस्तु प्रदान करिी है वरन् वह सवोच्च वस्तु भी प्रदान करिी है चजसके चलए यह मानव-जन्म हुआ है, क्योंचक भक्त को सन्त का आिीवापद चमल सकिा है, वह उनकी करुणा का भी भागीदार बन सकिा है, चकन्तु गुरु-कृपा की भेंट प्राप्त करने के चलए प्रथम हमें चिष्य बनना होगा।

व्यक्ति चिष्य कैसे बन सकिा है? यह बाि नहीं ंहै चक गुरु चिष्य को स्वीकार करिा है, वरन् चिष्य को प्रथम गुरु को स्वीकार करना हािा है। यचद चिष्य सवपप्रथम अपने को चिष्य का रूप दे ािालिा है ािो इस बाि का कोई महत्त्व नहीं ंरहिा चक गुरु कहे 'हाँ, ािुम मेरे चिष्य हो' अथवा न कहे। वह गुरु-कृपा का अचधकारी ािथा वैध अध्यथपक बन जािा है।

ित्पश्चाि् हमें गुरु की सेवा करनी हािी है। यह सेवा है। सेवा ही वह रहस्यमय कोई वस्तु है जो हमारे ािथा गुरु-कृपा के प्रभाव के मध्य अवरोधक को धरािायी बना ािालिी है। अहंकार ही सबसे बडा अवरोधक है। हमारे आत्माचभमान के, पूवप-चनचमपि धारणाओं ंके प्रािीन समूह चद्विीय भीषण अवरोधक का काम करिे हैं। इन सबके चलए सेवा एक प्रभावकारी अवरोध-उन्मूलक है।

एक बार एक गुरु ने अपने चिष्य की परीक्षा लेने के चलए उसे अपने पैरों ंसे अपनी कमर दबाने का आदेि चदया। गुरु ने कहा "मेरी कमर में पीडा हो रही है। मेरे चप्रय चिष्य क्या ािुम अपने पैरों ंसे उसे दबाओगे?"

चिष्य ने कहा "महाराज' मैं आपके पचवत्र ािरीर पर अपने पाँव कैसे रख सकिा हाँ? यह जघन्य अपराध है।"

गुरु ने उत्तर चदया "चकनुतु क्ा ि्ुम इस भााँचि मेरी आज्ञा का उल्लघन कर मेरी चजह्वा पर पैर नहीं ंरख रहे हो ?"

व्यक्ति को इस उदाहरण से चिक्षा ग्रहण करनी िाचहए। **अपने गुरु की आज्ञा पालन में शिष्य को अपनी बुच्चद्ध का प्रयोग नहीं ंकरना िाशहए।** उसे धृष्ट्ा त्याग देनी िाचहए िथा गुरु के प्रचि सिी िथा चिरस्थायी भक्ति का चवकास करना िाचहए। व्यक्ति को प्रत्येक सम्भव उपाय से गुरु की सेवा करनी िाचहए। चबना चकसी चहिचकिाहट के उनकी आज्ञाओं ंका चन संयि पालन करना िाचहए।

गुरु की चिक्षाओं ंका यथासम्भव पालन करने का प्रयास ही उनकी सेवा है। उनके उदात्त उपदेिों ंपर हमें अपने जीवन का चनमापण करना है। आत्मा से स्वेच्छापूवपक गुरु की आज्ञाओं ंका पालन ही अपने कुषुद्र सामथ्यापनुसार उनके उपदेिों ंके अनुसरण का रहस्य है। भूलुक्तण्ठि हो उन्ें नमस्कार करने की ित्परिा रखना, उन्ें अपना मागपदिपक स्वीकार करना िथा उनकी आज्ञाओं ंका पालन करना ही सवापचधक आवश्यक वस्ु है।

गुरु, उनकी कृपा िथा उनके कायप के चवषय में जो चविार-समूह हमारे अन्दर चकसी-न-चकसी रूप में प्रविे कर गये हैं, उन्ें भी हमें अन्दर उनूमूलन करना है। यह कष्ट्साध्य कायप है, पर इसे करना ही होगा, क्ोंचक चिष्य के चलए गुरु का स्वरूप मानव नहीं ंहै। हमें गुरु के मानवीय पहलू की ओर से अपने नेत्र मूाँद लेने िाचहए िथा उनके चदव्य स्वरूप की ओर ही जागरूक रहना िाचहए। इस दिा में ही हम गुरु-कृपा के भागीदार बन सकेंगे जो चक हमें चनम्न मानव से मानविाेि चदव्यिा में रूपान्तररि कर देगी। जब िक हम अपने को पाचथपव प्राचणयों ंसे सभी अभावों, ंपररसीमाओं ंिथा कमजोररयों ंसे युि मानव- प्राणी, पाचथपव प्राणी समझिे हैं, िब िक हम गुरु के िरम चदव्य स्वरूप की ििेना में पूणपि प्रविे नहीं ंकर सकिे। अि हमारी साधना होनी िाचहए चदव्य ििेना को उत्पन्न करना िथा अपनी मानवी ििेना को चनकाल फेंकना। यचद हम यहााँ चदव्य चनयचि से युि चदव्य प्राणी के रूप में रहना आरम्भ कर दें िो गुरु-कृपा िथा गुरु का चदव्य स्वरूप िनैः िनै अचभव्यि होने लगेंगे। ...

धमप का सार

सवपप्रथम जीवन का अथप और ध्येय समझना अत्यन्त आवश्यक है िब ही व्यक्ति अपने अक्तस्तत्व और यहााँ पृथ्वी पर अपनी उपक्तस्थचि के महत्त्व को जानिे हुए अथपूणप जीवन यापन कर सकिा है िथा इस प्रकार से वह सही चदिा में अग्रसर हो सकिा है एवं जीवन में सफलिा और पूणपिा प्राप्त कर सकिा है। इस मानव संसार में सारे धमप जो अक्तस्तत्व में हैं, उनका उद्देश्य और प्रयोजन मानव-जाचि को अपने स्वयं के जीवन के सम्बन्ध में सही ज्ञान देना है। धमप हमें सिा

ज्ञान और चववेक देने के चलए है चक हम यहाँ क्ों ंआये हैं, पृथ्वी पर हमारी उपक्तस्थचि का अथप और महत्त्व क्ा है और र वह लक्ष्य क्ा है जो हमें इस जीवन में प्राप्त करना है। समस्त धमों के अन्तिपम उपदिे समान हैं।

धमों की बाह्य आकृचि और चक्रयाओं ंमें अन्तर है। यह अचनवायप है, क्ोंचंक इन धमों का चवकास चवश्व के चवचभन्न भागों ंऔर मानव-इचिहास के चभन्न-चभन्न कालों ंमें हुआ है और इसचलए ऐचिहाचसक ित्वों ंऔर भौगोचलक क्तस्थचियों ंके कारण धमप का बाह्य चवचध-चवधान और कमपकाण्ड स्वभावि एक-दूसरे से चभन्न है। भौगोचलक क्तस्थचि और ऐचिहाचसक कालावचध में चभन्निा के कारण ये धमप सवपप्रथम कुछ महान् पैगम्बरों ंके उपदिें ंद्वारा अक्तस्तत्व में आये, परन्तु जब कोई धमप के बाह्य रूचढ़वाद, मात्र कमपकाण्ड और धमापनुष्ठान के परे जाने की िेष्टा करे िो वह पायेगा चक समस्त धमों का आन्तररक सार उनको एक-दूसरे के चनकट लािा है और उनमें एक सादृश्यिा है जो धरिाल पर चदखायी नहीं ंदेिी। समस्त धमों का सार लगभग समान है; क्ोंचंक सभी महान् पैगम्बर परमात्मा के दूि थे और उनका सन्देि पृथ्वी पर मानव के चलए परमात्मा की इच्छा की घोषणा करना था। पृथ्वी पर मानव के चलए चदव्य योजना और मानव के जीवन और आिरण के चलए परमात्मा की आज्ञा िथा मनुष्य का पृथ्वी पर ध्येय प्रेम, िाचि, समरस्य, सेवा और सत्य है और सिा रहा है। ये समिा धमों के सबसे अचधक महत्त्वपूणप उपदिे रहे हैं, क्ोंचंक यह परमात्मा की इच्छा है चक मानव प्रेम की मूचिप बने जैसा चक वह (परमात्मा) स्वयं है िाचक मनुष्य सत्यिा, ईमानदारी व पचवत्रिा से पूणप प्राणी बने िथा व्यचक कृपालु और दयालु प्राणी बने। हम अपने चलए परमात्मा से यही आिा करिे हैं चक वे हमारे पापों ंको क्षमा करें, सहानुभूचि और दया भाव द्वारा हमारे छोटे-छोटे दोषों,ं कचमयों ंऔर मानवि–ररत्र की दुबपलिाओं ंको क्षमा करें।

हमें अपने स्वयं के जीवन में इन आधारभूि चदव्य गुणों ंका धमप आिरण के रूप में अभ्यास करना िाचहए। धमप केवल िास्त्रीय चक्रया और चवचध नहीं ंहै। धमप इसके परे है। धमप हमारे अक्तस्तत्व की सबसे गहरी िालक िक्ति है। यहाँ हम केवल भौचिक और धरिी के प्राणी नहीं ंहैं. बक्ति चदव्यिा के सुफुक्तल्लंग हैं। हम चनत्य चदव्य अक्तस्तत्व रूपी सागर पर लहरों ंकी भाँचि हैं।

हमारे अक्तस्तत्व की इस अन्तरिम गहराई में हम आध्याक्तत्मक प्रकृचि के हैं। इस गहराई में हम चनचश्चि प्रयत्न करिे हैं, हम अपने-आपको अपने अक्तस्तत्व के चदव्य स्रोि के साथ पुनीः एक बार जोडने के चलए सिि प्रयत्न करिे हैं। यह धमप का सिा सार है। धमो का अक्तस्तत्व और कायप मनुष्य और पररमात्मा के मध्य पुनीः एक सजीव सम्बि स्थाचपि करना है। **परमिाा के साथ हमारा शवसृ्मि सम्बन्ध पुनः थथाशपि करवा धमण कासार है।**

*****

ज्ञान और कमप-कमप अपररहायप है

ज्ञान का मागप पूणपिीः अपररहायप िथा परमावश्यक है। ज्ञान का अभाव ही समस्त दुीःखों ंका मूल कारण है। आत्मा की अनश्वरिा को न समझना ही सभी आसक्तियों,ं दुीःखों ंऔर भ्राक्तन्तयों ंका कारण है। ज्ञान के चबना आपका समूपूणप जीवन पूणपि अव्यवक्तस्थि हो जायेगा िथा आपकी दिा अत्यन्त दयनीय हो जायेगी।

सम्यक् ज्ञानाजणन िथा सम्यक् कमण-सम्पादन परस्पर शवरोधी नहीं ंहैं। ये दोनों ंवसुिुिः एक-दूसरे को सहयोग प्रदान करिे हैं। ज्ञान को कमप का अनुपूरक बनना िाचहए िथा समस्त कमों को ज्ञान से पूणप होना िाचहए।

ज्ञान पर आधाररि कमप िथा कमोनुमुखी ज्ञान श्रीमद्भगवद्गीिा के चद्विीय अध्याय का सन्देि और साधना है। यचद आप अपने अज्ञान से मुि हुए चबना ही कमप में प्रवृत्त होंगें, िो नष्ट् हो जायेंगे। आप कष्टों ंको ही आमंचत्रि करेंगे। और सैद्धाक्तन्तक ज्ञान प्राप्त करके यचद आप सम्यक् कमप की उपेक्षा करेंगे, िब आपका क्रमचवकास रुक जायेगा। कमप मानव को पूणपिा की ओर ले जाने वाली भगवान् द्वारा चनचमपि एक व्यवस्था है। कमप में मानव के सामूचहक िथा वैयक्तिक क्रमचवकास के आन्तररक गचिचवज्ञान के ित्त्व संघचटि होिे हैं।

एक पुरानी चकन्िु बहुि चववेकपूणप कहावि है, चजसका अथप 'आराम हराम है।' कमप चकसी वस्िु को पैना करने के चलए सान से धार लगाने के समान है। ज्ञान को कमप में पररणि करने पर ही अनुभूचि बनिा है। ज्ञान व्यवहार में लाने के चलए ही होिा है। और इसचलए यचद आप चक्रया-प्रचिचक्रया के िक्र में फँसना नहीं ंिाहिे, िो आपको यह िथ्य भलीभाँचि हृदयंगम कर लेना होगा चक ज्ञान के चलए कमप उिना ही आवश्यक है चजिना सम्यक् कमप के चलए ज्ञान आवश्यक है। कमप के बीि में रहिे हुए भी यचद आप कमप से बाँधना नहीं ंिाहिे िो ज्ञान ही इसका एकमात्र उपाय है, मागप है।

अिः सांख्ययोग और कमपयोग परस्पर चवरोधी नहीं ंहैं। वे एक-दूसरे को समथपन प्रदान करिे हैं। ज्ञानपूणप कमप द्वारा ज्ञान के पूणपिम प्रस्फुटन की चदिा में होने वाले जीवात्मा के उत्तरोत्तर क्रमचवकास की प्रचक्रया के ही दो पहलू हैं ये सांख्ययोग िथा कमपयोग। अिः जो योगी अपने जीवन में सांख्ययोग और कमपयोग-दोनों ंका इस प्रकार समन्वय कर लेिा है, वह ही वास्तव में दक्ष योगी है। वही अपने आध्याक्तत्मक जीवन में सफलिा प्राप्त करेगा।

ऐसा ही योगी-चजसने अपने सामान्य लौचकक कमों को आत्मा का एक िीसरा आयाम प्रदान करके उत्कृष्ट् आध्याक्तत्मक कायपकलापों ंमें रूपान्तररि कर चलया है-जानिा है चक स्वयं जीवन को मोक्ष की प्रचक्रया बनाने की कला िथा चवज्ञान क्या है। चकसी प्रचवचध का अभ्यास करिे समय समस्त मानचसक वृचत्तयों ंका दमन योग कहलािा है। यही योग कमपिील व्यक्ति के चलए **'योगः कमणसु कौिलम्'** (कमों में कुिलिा ही योग है) बन जािा है। आप इस बोध के साथ कायप करिे हैं चक िीनों ंगुण अपने-अपने धमप के अनुसार व्यवहार कर रहे हैं, जबचक मैं-जो चत्रगुणािीि आत्मित्त्व हूँ-वास्तव में चनक्तिय हूँ। मैं समस्त चक्रयाकलापों ंका मूक, अनासि िथा अप्रभाचवि द्रष्टा हूँ। मुझे कमप कैसे बाँध सकिा है? चकन्िु में चनक्तिय द्रष्टा नहीं ंहूँ। अपने समस्त अगों ंिथा समस्त चविारों ंपर मैं अपने ज्ञान का प्रकाि छोड़िा हूँ। िब ज्ञान से प्रकाचिि हो कर वे कमप में प्रवृत्त हो जािे हैं।

कमप अपररहायपहै

गीिा-उपदेि के चद्विीय िरण में हमारे समक्ष अन्य अकाय सत्यकोप्रस्िुिचकयागयाहै "आप िाहे जो करें, आप कमप को टाल नहीं ंसकिे, क्योंचक आप प्रकृचिकेअंिहैंऔरप्रकृचि में रजोगुण अत्यचधक मात्रा में होिा है। वह आपसे कमप करा ही लेगी।आपइससेबिनहीं ं

सकिे। िाहे आप सोधे, 'मैं कोई कायप नहीं ंकर रहा, िाहे आप प्रकट रूप में िुपिाप बैठे रहे, िब भी सहयो प्रचक्रयाएँ चनरन्तर आपकी स्वयं की िरीर-संरिना के अन्दर िल रही हिोी हैं। कोचिकाएँ पर कर समाप्त हिोी रहिी हैं और नयी कोचिकाएँ चनचमपि हिोी रहिी है। रि आपकी धमचनयों ंऔर चिराओं ंमें प्रवाचहि हिोा रहिा है। आपका हृदय इस रि को पम्प करिा रहिा है और फेफडे इसे िुद्ध करने के चलए िाजा आक्सीजन दिे रहिे हैं। िरीर के समस्त अंग-चजगर, गुरदे, मूत्रिाय, आमिाय आचद सचक्रयिापूवपक अपना- अपना कायप करने में लगे हुए हैं। चबना कमप के आप जीचवि भी नहीं ंरह सकिे।

"जब आप समझिे हैं चक आप कुछ नहीं ंकर रहे हैं, िब भी आप श्वास ले रहे हिो हैं। श्वास लेना भी एक कमप है। जब आप समझिे हैं चक आप कोई भी कमप नहीं ंकर रहे हैं, िब भी आपका मन सैकडों ंिोिों सोिने में, सैकडों ंबािों याद करने में, सैकडों ंयोजनाएँ बनाने में और सैकडों ंकल्पनाएँ करने में व्यस्त रहिा है। आप कैसे कह करें सकिे हैं चक आप कमप नहीं ंकर रहे हैं? आप अनेक प्रकार ज्ञान के कायप कर रहे हिो हैं। जब आपको अपने किपव्य-कमप दे। ुद्धि के एक भाग के रूप में चकसी कायप में प्रवृत्त होना हिोा है, िब आप कमप करना अस्वीकार कर दिे हैं। यह या िो चदव्य िथा ईश्वरोनुमुखी बन जायें। इस प्रकार अपने मूखपिा है या चफर चमथ्यािार है। अिः इस िथ्य को ठीक अन्त करण को ज्ञानाचम द्वारा िुद्ध करके ज्ञानपूणप कमप में से समझ लें-जब िक आप इस प्रकृचि के लोक में हैं, प्रवृत्त हो जायें। समस्त कायों को बुक्तद्धमत्ता से िथा आप कमप का पररहार नहीं ंकर सकिे। इसचलए कौिलपूवपक करें और आन्तररक रूप से अनासि रहिे मूखपिापूणप कमप करने की अपेक्षा बुक्तद्धमत्ता से कमप करना हुए कमप के बिनकारी प्रवाह से ऊपर उठ आयें। अच्छा है।"

प्रकृचि में इच्छा–िक्ति, चक्रया–िक्ति और ज्ञान–िक्ति है। यचद ज्ञान की उपेक्षा कर दी जािी है और इच्छा (काम) ही आपकी चक्रया (कजप) की प्ेरेरक िक्ति बन जािी है, िब आपको दुख उठाने पडिे हैं। िब आप अनेक प्रकार की त्रुचटयों ंकरिे हुए कमप-सम्पादन करिे हैं। जब आप ज्ञान से अपनी इच्छा को िुद्ध कर लेिे है, िब आपकी चक्रया मोक्षदाचयनी िक्ति बन जािी है।

कमप-पुरुषाथप कभी भी अवांछनीय नहीं ंहोिा। 'योगवाचसष्ठ' में ब्रह्मचषप बचसस द्वारा मयापदापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को चदये गये चवपुल उपदेिों ंसे अन्तििः ज्ञान (चजससे कमप के सम्यक मागप का बोध प्राप्त होिा है) की सहायिा लेिे हुए सम्यक् कमप-पुरुषाथप करिे की श्ेरेष्ठिा चसद्ध होिी है।

"अिः हे अजुपन कमप में प्रवृत्त हो जाओ, चकन्तु मूखपिापूवपक नहीं।ं अनासि रहिे हुए, पूणपि जागरूक रहिे हुए िथा सब वसुतुओं ंको जानिे हुए बुक्तद्धमिापूवपक कमप करो, िथाचप उनसे भ्रान्त न होओ।" इस भूलोक में अपने कमों को करिे हुए िथा भगवत्साक्षात्कार के परम लक्ष्य की ओर अग्रसर होिे हुए प्रत्ेयेक जीवात्मा के चलए यह है भगवद्गीिा का सन्ेदिे।

कमप िो आपको इच्छा अथवा अचनच्छापूवपक करना ही है; चकन्तु यचद आप ज्ञान की सहायिा लेिे हुए बुक्तद्धमत्तापूवपक कमप नहीं ंकरिे, िो आप कमप-बिन में आबद्ध हो जायेंगे। अिः अपने भीिर के ज्ञान को प्रकट करें और इस ज्ञान की सहायिा से कमप में प्रवृि हो जायें। ज्ञान आपकी इच्छाओं ंको िुद्ध करके उन्ें धाचमपक बना दें। िुद्ध इच्छाएँ ईश्वर-साक्षात्कार के मागप में

बाधकनहीं ंहोंी। आपकी समस्त इच्छाएँ धाचमपक, आध्यात्क्तमक, चदवर् िथा ईश्श्वरोन्मुखीबनजायें। इसप्रकारअपने अन्िःकरण को ज्ञानाचि द्वारा िुिद्ध करके ज्ञानपूणप कमप में प्रवृत्िहोजायें। समस्िक्रियोको बुक्तद्धमत्िा से िथा कौिलपूवपक करें और आन्िररक रूप से अनासक्िरिहेहुए कमपकेबन्धनकारी प्रवाह से ऊपर उठ जायें ।

*****

योग िथा वेदान्त

अपने पुरािन िथा उज्वल भूिकाल से चवरासि के रूप में हमें दो बहुमूल्य चनचधयाँ प्राप्त हुई हैं-योग िथा वेदान्त। **वेदान्त है शदव्य परम ित्त्व का शदव्य ज्ञान। योग है वह शवज्ञान शजसकी सहायिा से हम उस शदव्य ज्ञान के साथ िािन सम्बन्ध थथाशपि करिे हैं, उस ज्ञान की अनुभूशि करिे हैं िथा उस ज्ञान का साक्षात्कार करिे हैं।**

इन दोनों ं(योग िथा वेदान्त) का सारि–त्त्व वेदान्त है। की यह उद्घोषणा है चक **ित्त्विः आप शदव्य हैं;** आप मानव नहीं ंहैं, सीचमि नहीं ंहैं, अपूणप नहीं ंहैं। **शदव्यिा ही आपकी यथाथथिा है।** आपका मानवीय स्वभाव आपकी पहिान में जोडा गया एक अस्थायी घटक है-यद्यचप यह अचद्विीय, अप्रचिम िथा अत्यन्त मूल्यवान घटक है।

शदव्यिा सवणव्यापी है। यह सवणत्र है। यह समस्त नाम-रूपों ंमें शछपी हुई है। यह समस्त प्राशियों ंका कें-शबनदु है। इस धरिी पर जो हमारा घर है-हमारे साचथयों ंके रूप में अगचणि प्राणी हैं जो हमारे साथ-साथ जी रहे हैं। हमारी संख्या की अपेक्षा उनकी संख्या बहुि अचधक है; परन्िु उनकी क्तस्थचियाँ (status) चचचडयों,ं कृचमयों,ं सरीसृपों ं(रेंगने वाले कीडों)ं, कीटों,ं मछचलयों,ं पिुओं ंके रूप में उस रिनाििि– से चवहीन हैं चजसकी सहायिा से वे अपनी िाक्तत्त्वक चदव्यिा का साक्षात्कार करने में सक्षम हो सकिे हैं। दूसरी ओर, मानव-क्तस्थचि की चवचिष्टिा यह है चक वह आत्म- साक्षात्कार करने अथवा आत्मज्ञान प्राप्त करने के चलए आवश्यक उपकरणों ंसे सम्पन्न है। इसका कारण यह है चक इस क्तस्थचि में चिन्तन करने, अनुभव करने, िकप करने िथा आत्म-साक्षात्कार के लक्ष्य की ओर उन्मुख उद्देश्यपूणप कमप करने की दुलपभ क्षमिाएँ हैं।

मानव ईश्वर का ही प्रशिरूप है। इस कारि उसमें पहले से ही भगवदीय सारित्त्व या भगवदीय स्वभाव, भगवदीय क्षमिाएँ, भगवदीय सौन्दयण, भगवदीय उत्कृष्टिा, भगवदीय पूिणिा और भगवदीय अखण्डिा पाये जािे हैं। मानव का यह अनोखापन है। उसमें स्रष्टा- जो सवपि, सवपिक्तिमान् िथा ब्रह्माण्डीय सत्ता और चवश्वात्मा है-का प्रचिरूप है।

अिः मानव में पायी जाने वाली िाक्तत्त्वक चदव्यिा िािना की एक प्राप्य अथवा अनुभव-गम्य क्तस्थचि है। इस क्तस्थि को उपलब्ध करने के चलए मानव को पयापप्त साधन दे चदये गये हैं। उपयुपि क्षमिाओं ंका उपयोग सही चदिा में, व्यवक्तस्थि ढंग से िथा सवोि क्तस्थचि को उपलब्ध करने के उद्देश्य से इन क्षमिाओं ंका चवचनयोग करने के चलए आवश्यक सम्पूणप ज्ञान के साथ चकया जाने वाला उपयोग- इसी से सम्बक्तिि है योगिास्त्र ।

अिः वेदान्त का सार है-**आप शदव्य है; आप अनन्त, अशवनािी ि◌था पूिणशिपूण हैं; आप सच्चिदानन्द आिा हैं।** आपकी सत्ता है, इस कारण आप सि् हैं। आपमें अपनी सत्ता की एक ज्योचिमपय ि◌था देदीप्यमान जागरूकिा है। आप जानिे हैं चक **आपकी सत्ता है। मेरी सत्ता है-इस ि◌ थ्य की ि◌िना आपमें है। इस कारि आप शिि् हैं।** बाह्य रूप से जो आप चदखलायी
पडिे हैं, वह आप नहीं ◌ं हैं। बाह्य रूप से दृचष्टगोिर आपकी सत्ता नाम-रूप के अचिररि और कुछ नहीं ◌ं है। नाम-रूप-जो एक अवास्तचवक ि◌था प्राचिभाचसक व्यक्ति का पररिय दिे हैं ि◌था जो
अस्थायी, सदा पररविपनिील आवरण है-के पीछे, परे ि◌था अन्दर एक ज्योचिमपय ि◌िना के
काक्तन्तमय कि के रूप में आपकी सत्ता है। इस पचवत्र क्तस्थचि में आप उन अपूणप अनुभवों ◌ं से
मुि हैं जो इस ि◌रीररक ि◌था मनोवैज्ञाचनक ि◌िना से सम्बक्तिि हिो हैं। **आप भय, ि◌ोक,
शिन्ताओं,◌ं पीडाओं,◌ं वेदनाओं,◌ं बन्धनों ◌ंि◌था भ्राच्चन्तयों ◌ंसे भी पूिणिः मुि हैं। आप एक
अशवकुषि, िसि, शिरथथायी प्रसन्निा एवं ि◌ाच्चन्तपूिण ि◌था प्रिान्त परमानन्द की च्चथथशि में हैं। यही आपका
वास्तशवक स्वरूप है। सच्चिदानन्द ही आपका वास्तशवक स्वरूप है। इसका
साक्षात्कार करें और मुि हो जायें।** इस ज्ञान को प्राप्त करें और मुि हो जायें। यह वेदान्त है।
आपकी चदव्यिा वेदान्त का सार है। इस चदव्यिा की िसि जागरूकिा-आत्म- चिन्तन-ही वेदान्त का व्यवहार-पक्ष है।

**योग का सार यह है शक आपको इस आन्तररक शदव्यिा-जो आपकी सत्ता का स्रोि
थिा उद्गम, सवणव्यापी आिा, ब्रह्म, अपररविणनीिल अन्त- रिा है-के शनरन्तर सम्पकण में
रहना है। परम शदव्य ि◌त्त्व का िसि शनरन्तर स्मरि एवं उसके साथ अटूट, जीवन्त ि◌था
िनि सम्बन्ध योग है।** चवचभन्न साधनों ◌ंकी सहायिा से इस क्तस्थचि को प्राप्त करना भी योग है।

**पूज्य स्वामी शिवानन्द जी महाराज की शदव्य जीवन की अवधारिा में वेदान्त का
भाविाक पक्ष और योग का व्यवहार-पक्ष सच्चम्मशलि हैं। अपनी शदव्यिा के प्रशि जागरूक
रहिे हुए जीवन िव्यिी करें।** अपनी चदव्यिा के ब्रह्माण्डीय स्रोि, अपने चदव्य उद्गम, अपने
िाश्विि चदव्य आधार और अपने चदल्य धाम के चनरन्तर, चनकट सम्पकप में रहिे हुए प्रत्येक क्षण
और प्रत्येक श्वास का जागरूकिापूवपक उपयोग करिे हुए चजयें।

योग ि◌था वेदान्त, सेवा, भक्ति, ध्यान ि◌था आत्म-साक्षात्कार पर आधाररि चदव्य जीवन के
दो संघटक हैं। आपके चलए वेदान्त की स्पष्ट् उद्घोषणा है-**"अहमिाा शनराकारः सवणव्यापी
स्वभाविः "** (मैं स्वभाविीः चनराकार ि◌था सवपव्यापी आत्मा हूँ) । "इक्तियों ◌ंि◌था मन से परे मैं
ज्योचिमपय प्रज्ञा ि◌िना का साररत्त्व हूँ" यह ज्ञान आपको वेदान्त प्रदान करिा है और आपसे यह
अपेक्षा करिा है चक आप इसे व्यवहार में लायें। और, **योग है परम शदव्य ि◌त्त्व के साथ
अशवच्चच्छन्न ि◌िन ि◌था उद्देश्यपूिण सम्पकण एवं िसि वधणमान सम्बन्ध ।**

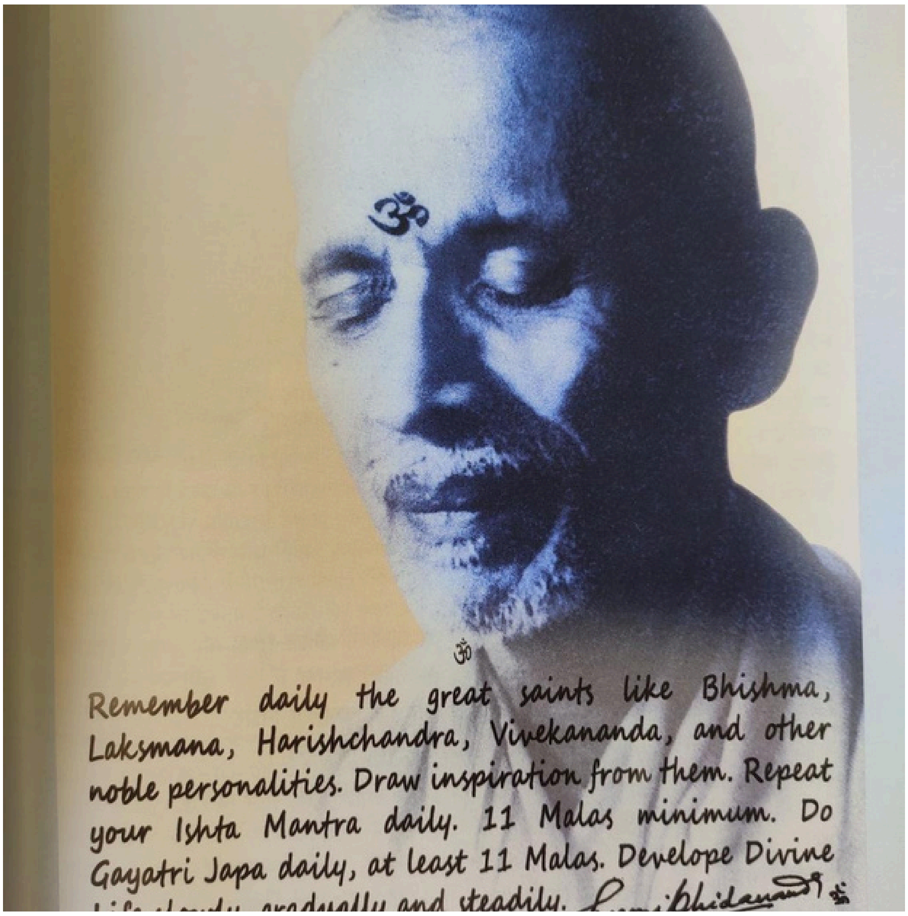
राधारमण कहो

चजस दिे में चजस विेमेंचजस हालमेंरहो।
राधारमण राधारमणराधारमण कहो।।

चजस काम में चजस धाममेंचजसगााँवमेंरहो।
राधारमण राधारमणराधारमणकहो।।

चजस संग में चजस रंगमेंचजसढंगमेंरहो।।
राधारमण राधारमणराधारमणकहो।।

चजस योग में चजस भोगमेंचजसरोगमेंरहो।
राधारमण राधारमणराधारमणकहो।।





करुिक शिदानन्द

ॐ

नयन-अनुकम्पा दृचष्ट् से जग ि–ाप से झुलसे प्राणी में ि ि ील-सुखद
नवजीवन का संिार है करिा **यह करुिक शिदानन्द** ।
नयन-वात्सल्य ि चिवन से दीनों ंकी देख दीन दिा वत्सलिा-चनझपर
चनझपररि है करिा दीनिा-हरण यह **दीनबनुधु शिदानन्द ।**
नयन-दया दृचष्ट्-वृचष्ट् से रोचगयों–दुी:त्तखयों ंके रोग-दुी:ख का कर चनवारण
सुख ि–ात्तन्त प्रदान है करिा यह **दयाशसनुधु शिदानन्द** ।
नयन ि–र्ी पर दचलिों–दररद्रों, ं अचनकेिों–अनाचश्रिों, ं असहायों–अनाथों, ं
परि िों–पीचडिों ंको सस्नेह-ममत्व से ि ात्तन्त-आनन्दपूणप चवश्राम
है करिा **गुिकि यह अनाथ-नाथ शिदानन्द ।**

भगवद्गीिा का दिपन

भगवद्गीिा का दिपन उपचनषदों ंके दिपन से चभन्न नहीं ंहै। एक दृचष्ट् से यह उससे एक कदम आगे ही है। भगवद्गीिा दिपन ने उपचनषद्-दिपन को वनों ंमें रहने वाले ऋचष-मुचनयों ंके और आश्रमों ंमें रहने वाले ि पत्तस्वयों ंि था संन्याचसयों ंके बीि से उठा कर सांसाररक जीवन में, व्यवहार-जगि् में और गृहस्थों ंके घरों ंमें एक प्रमुख स्थान दे चदया है। इस प्रकार गीिा

व्यावहाररक उपचनषद्-दिपन बन गयी है। उपचनषचदक प्रज्ञा का व्यावहाररक रूप हमें गीिा में देखने को चमलिा है। **गीिा उपशनषदों ं के आदेशों ंि था सन्देशों ं का व्यवहार- पक्ष ही है।** गीिा का उद्देश्य हमें यह चसखाना है चक उपचनषदों ंको सिमु कैसे व्यवहार में लाया जा सकिा है और कैसे उन्हें **दैशनक जीवन का आधार बनाया जा सकिा है।**

श्रीमद्भगवद्गीिा का दिपन मुख्यिीः इस धरिी पर प्रवास करने वाले जीवात्मा की उन त्तस्थचियों ं का चनरूपण करिा है, जो जीवन के अपररहायप अंग के रूप में उत्पन्न चवक्षोभकारी समस्याओं ंकेबीचनचमपिहोिीरहिीहैंथिाजोइसजगि्-प्रपंमेंपे्रमिथाघृणा,रुचिथा अरुचि और राग िथा देवेष के द्वनद्वों ं से, श्रेय िथा प्रेय, भावना िथा किपव्य और कमप-अपेचक्षि कमप-के बिी होने वाले आन्तररक संघषप से िथा धमप-संकट से सम्बत्तिि रहिी हैं।

पररत्तस्थचियों ं की अवि यथाथपिाओं ं का ज्ञान प्रदान करके यह व्यक्ति को आवश्यक िक्ति प्रदान करिा है। अपने अपयापप्त ज्ञान के िथा सम्यक् पररप्रेक्ष्य के अभाव के कारण व्यक्ति पररत्तस्थचि के बाह्य रूप को ही वास्तचवक मान लेिा है िथा उसमें चनचहि ित्त्वों ं का चवश्लेषण नहीं ं कर पािा,नहीउसके सारित्त्वकोसमझनेकाप्रयासकरिाहै।इसप्रकारवहजीवनकाएक ऐसा मागपअपनालेिाहैजोउसके अपनेिथासंसारके कल्याणके चवपरीिहोिाहै।

गीिा हमारे अन्तीःकरण, मन, हृदय िथा बुत्तद्ध को सम्यक् चववेकनचक्ति िथा समुचचि बोध के प्रकाि से पररपूररि करके हमें ऐसे संघषों िथा अन्तद्वपनद्वों ं को उत्पन्न करने वाले मोह-भ्रम से मुि करिी है। जब मनुष्य पररत्तस्थचि को ठीक से समझने और वस्तुत्तस्थचि को स्पष्टिीः देखने लगिा है, िब वह उनके सारित्त्व को (उनके बाह्य रूप को नहीं)ं भली प्रकार समझने की क्षमिा अचजपि कर लेिा है। गीिा यह चकस प्रकार करिी है?

गीिा का दिपन अनुभूि सत्य की उद्घोषणा मात्र नहीं ं है। यह मात्र कुछ रहस्यों ं का उद्घाटननहीं ंहै।इससंसारमें मानवकोअपनीजीवन-यात्रासम्पन्नकरने में चजनचवचभन्न त्तस्थचियों,ं समस्याओं ं िथा संघषों का सामना करना पडिा है, उनसे सम्बत्तिि मागपचनदेिन प्रदान करने वाले िथ्यों ं को गीिा में िाचकपक ढंग से आरम्भ से अन्त िक प्रस्तुि चकया गया है। गीिा में ियों ं की प्रस्तुचि िाचकपक है। इसके प्रत्येक अध्याय में चवचिष्ट् चवचार-चबनदुओं ं से सम्बत्तिि चिक्षा दी गयी है। यह चिक्षक बन कर चिक्षा प्रदान करिी है। गीिा मानो कक्षा में पढ़ाया जाने वाला पाठ है जैसे-जैसे चवद्याथी चिक्षक से प्रश्न करिा जािा है और िंकाएँ रखिा जािा है, वैसे-वैसे चिक्षक जचटल चवचार- चबनदुओं ं को स्पष्ट् करिे हुए उसके सभी प्रश्नों ं का उत्तर देिा जािा है।

अिीः गीिा का दिपन जीवात्मा को त्रुचटपूणप बोध िथा सम्भ्रचमि मनीःत्तस्थचि की दिा से चनकाल कर सम्यक् -स्पष्ट् बोध िथा सम्भ्रम-मुि मनीःत्तस्थचि की स्थिर दिा में ले जाने की एक िैचक्षक प्रचक्रया है। चिक्षक चवद्याथी को चिक्षक की आँखों ं से देखने के योग्य बनािा है जब चक इससे पूवप वह (चवद्याथी) अपनी ही आँखों ं से देखने का प्रयास करिा था।

***

नूिन िुभारम्भ

दैवी सम्पद् का अजणन करें :आसुरी सम्पद् का उनूमूलन करें

अन्तमपन में दो चवरोधी ित्त्वों ंका स्थान नहीं।ं मन में द्वनद्व नहीं ंहोना ािचहए। यचद ऐसा है िो इसका उच्छेदन करना होगा। ऐसा करना भी साधना का एक अंग ही है। जो चदव्य नहीं,ं जो हमारे आन्तररक ािश्वि स्वरूप का चवरोधी ित्त्व है बडी सावधानीपूवपक उसकी खोज करनी है, उसे ढूँढ़ पाना है और चफर उसे उखाड फेंकना है। यह साधना का एक आवश्यक पक्ष है। यचद यह नहीं ंचकया गया, और आप मल-कूडा-करकट को संचिि करने का प्रयास करेंगे िो यह उसी प्रकार होगा जैसे कक्ष के कोनों–चकनारों ंऔर कालीन के नीि फिप पर भरी धूल को हटाये चबना सजावट करना केवल बाहरी सजावट होगी। स्वामी चववेकानन्द कहा करिे थे- "यचद हृदय में आध्याक्तत्मकिा का समावेि नहीं,ं हृदय में नैचिक सौन्दयप नहीं,ं यचद अन्तस में दैवी सम्पदा नहीं,ं समग्र चदव्य गुण नहीं ंहैं, िो जीवन एक सुसक्तज्जि-अलंकृि िव िुल्य होगा।" वह कहिे थे- "सुसक्तज्जि िव।" जब अन्त्येचष्ट् के चलए िव ले जाया जािा है, कैसे सुन्दर ढंग से सजािे हैं, बचढ़या से बचढ़या चसि, मखमल के वस्त्र् िालिे हैं, उस पर ढेरों ंपुष्प, साथ ही इत्र चछडकिे हैं; क्ोंचक उसकी दुगपि को रोकना है। िटकीले-भडकीले वस्त्ों ंसे- जरी, चसि मखमल से िव आवृि होिा है; चजस पर असंख्य पुष्प िढ़ाये जािे हैं िथा सुगक्ति चहिाथप अगरबत्ती-धूप जलायी जािी है। परन्तु उस समय इन सब आच्छादनों ंके नीि होिा क्ा है? कुछ नहीं,ं केवल अक्तस्थिमपमय दुगपियुि सडा हुआ मृि िरीर अथाप् िव। स्वामी चववेकानन्द कहिे थे- "इस प्रकार की साज-सज्जा एक िव को सजाने के िुल्य है।" बाहर से भव्य दृचष्ट्गि होिी है; पर भीिर कुछ नहीं ंहोिा।

इसचलए एक साधक को बडा ििेि, सावधान, सिकप रहना ािचहए चक चकसी भी हालि में ऐसी क्तस्थचि। को चटकने न दे, प्रभावी न होने दे। इसके चवपरीि यचद कोई बाहर से अचि सुन्दर सुसक्तज्जि नहीं ंहै िो कोई बाि नहीं;ं चकनु्त आत्मा के सौन्दयप से (अपना) अन्तस पररपूररि होना ािचहए। ईश्वर परायणिा िथा पावन चदव्यिा से अन्तस ओि-प्रोि होना ािचहए। अन्तमपन परम ज्योचि से पररपूणप हो, प्रकािमान हो। चदव्यिा से, चदव्य प्रकाि से ज्योचिि होना ािचहए। इसके चवपरीि कुछ भी हो, अथाप् अचदव्यिा, अनाध्याक्तत्मकिा का मूलोच्छेदन कर देना ािचहए। श्रीमद्भगवद्गीिा के सोलहवें अध्यायानुसार अपेक्षा की जािी है चक दैवी सम्पदा का अजपन करें, आसुरी सम्पदा का उनूमूलन। यह साधना ही चित्तिुक्तद्ध की आन्तररक साधना कहलािी है। अिः यही सिी साधना है। इसचलए प्रत्येक मागप या पथ-जैसे ज्ञानयोग, भक्तियोग, राजयोग, जपयोग अथवा कमपयोग आचद सभी सदा-सवपदा कुछ अपररहायप सकारात्मक चदव्य गुणों ंके अजपन और चवकास हेिु साधना को अत्यावश्यक अचभचहि करिे हैं। सभी योगमागप इसी पर बल देिे हैं। अवगुणों–दुगुपणों ंकी सूिी वचणपि करिे हैं चजनें् चनकाल फेंकना है-

शत्रशवधं नरकस्येदं द्वारं नािनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ।।

(गीिा : १६-२१)

काम, क्रोध और लोभ-ये िीन प्रकार के नरकके द्वार हैं, अथाप् उसको अधोगचिमेंले जाने वाले हैं। अिएव िीनों ंको त्याग देना ािचहए।

कामः क्रोधश्च लोभश्च देहे शिष्ठच्चन्त ि स्कराः।
ज्ञानरत्नापहाराय ि स्मिा् जाग्रि जाग्रि।।

आचद ि ंकरािायप जी ने अपने 'वैराग्य चिचिम' में बिाया है चक काम, क्रोध, लोभ रूपी ििर हमारे ि रीर के भीिर वास करिे हैं। ि रीर में रहिे हुए ज्ञान रूपी हीरे मोिी ि ुरा लेिे हैं। इसचलए जागो! जागो ! सजग हो जाओ। ित्पर हो जाओ।

व्यास भगवान् का उद्बोधन है-

मुच्चिशमच्छशस ि च्चत्ता शवषयान् शवषवि्त्यज।
ब्रह्मियणमशहंसा ि सत्यं पीयूषवि् भज।।

“यचद आप मोक्षाचभलाषी हैं ि ो ऐच्छिक चवषयों ंको चवष सम जान उनका पररत्याग कर दें िथा ब्रह्मियप, अचहंसा, सत्य रूपी अमृि का सेवन करें अथापि् ि ीनों ंका अनुपालन करें।"

इस प्रकार प्रािीनकाल से वे हमारा ध्यान इस चवषय पर संकेच्छिि करने का प्रयास करिे रहे और प्रबोचधि करने का प्रयत्न करिे रहे-

"ि ुम चदव्य हो! केवल चदव्यिा ही ि ुम्हारे अन्तस में संच्छस्थि रहे। ि ुम्हारे मूल वास्तचवक सहज स्वरूप के चवरुद्ध हो जो उसे कभी भीिर स्थान न दो। सावधान रहो। जाग्रि रहो। ित्पर रहो। भीिर झाँको। आत्मावलोकन करो। मनन-चविार का प्रयास करो। बुच्छद्धमत्ता से उन सबका उन्मूलन करो जो ि ुम्हारे वास्तचवक स्वरूप- चदव्यिा को आच्छाचदि करें।"

इस प्रकार अपना जीवन चदव्यिा से यापन करें। केवल ि भी आपका जीवन सिा, चवश्वसनीय, ि ुद्ध, पचवत्र, यथाथप एवं सत्यिा से पूणप होगा। चफर कोई और प्रचिद्वन्द्व या प्रचि चवरोध नहीं ंहोगा। अनावश्यक का, पररहायप चवरोधों ंका सामना करने में आन्तररक बल एवं आध्याच्छत्मक ि च्छि चवनष्ट् नहीं ंहोगी। इन बािों ंके संघषप के प्रयास में नकारात्मक प्रचक्रया द्वारा ि च्छि नष्ट् न करें ि ो ि च्छि का बिाव ही होगा।

इसचलए पूवपज कहा करिे थे-"चववेकी बनो। अपनी आन्तररक ि च्छि का अपव्यय मि करो। इसे पररहायप नकारात्मक प्रचक्रया में व्यय मि होने दो। इसे सकारात्मक-रिनात्मक प्रचक्रया में लगाओ, ि ाचक ि ुम्हारी सम्पूणप ऊजाप ि च्छि, आध्याच्छत्मक ि च्छि ििैः ऊध्वपगामी हो चदव्योन्मुख रहे।"

इस प्रकार चदव्यिापूणप जीवन जीयें। अन्तस में चदव्य बनें। यह समझें और जानें चक आप चदव्य हैं। अपने जीवन को चदव्य बनायें। मनसा वािा, कमपणा चदव्य बनें। चविारों ंमें, वाणी में, कमों में, सबमें चदव्यिा का गुण भरें। चदव्य जीवन यापन आपका जन्म चसद्ध अचधकार है। चदव्य जीवन ही आपका वास्तचवक जीवन है। चदव्य जीवन आपकी अन्तरात्मा की सहज स्वाभाचवक अचभव्यच्छि है। ऐसा होने दें। जीवन को ऐसा बनने दें। साधना को इसी रूप में समझें अथापि् जो आप हैं उसी की अचभव्यच्छि होने दें। अिैः मैं पुनैः दोहरािा हूँ नववषप में चदव्यिा के सद्गुण को ही जीवन का मूल चसद्धान्त मूल रूप से बनाये रखें। 'चदव्यिा' ि ब् को अपने हृदय से

गम्भीरिपूवपकपूणपियासमझें, जानें और मानें। आपके मन में चदव्यिा सदैव प्रदीप्त रहे। पग-पग परसिस्मरणकरिरहें- "मैं चदव्य हाँ। मेरा पररवेि चदव्य होना िाचहए। मुझसे सम्बक्तिि सब चदव्यहोनिााचहए।चदव्यिा ही मेरा वास्तचवक सत्य स्वरूप है। चदव्यिा ही मेरे जीवन की चवचिष्टिा होनिीाचहए।मेराआदिप, मेरा लक्ष्य चदव्यिा ही हो। चदव्यिा की ही चदिा में मेरा जीवन उनुमुख हो,अग्रसररहे।"चदव्यिा। हम ईश्वर के अंि हैं, ईश्वर पररपूणपिीः पूणपिम चदव्य है। अिीः हम भी पररपूणपचदव्यहैं।इसीसंदिनिा का आपके जीवन पर प्रभुत्व रहे- प्रमुखिा रहे। आपका ऐसा ही आदिप वषप बने।

***

स्वकमों का अध्यिीकरि करो

स्वकमो को आध्याच्चिक बनाओ। शदव्य जीवन यिव्यिी करने के शलए अपने सभी अध्ययन, विन, क्रीडा आशद को प्रभु के अपणि कर दो। अनुभव करो शक समूपूिण जगि् में वही व्यिा है। आपकी सन्तान भगवान् की ही अशभव्यच्चि है, ऐसा अनुभव करो। ऐसे आभ्यन्तर आध्याच्चिक भाव से मानविा की सेवा करो। िब आपकी सभी दैशनक शक्रयाएँ आध्याच्चिक अभ्यास में रूपान्तररि हो जायेंगी। वे योग में पररिि हो जायेंगी।

प्रत्याहप अपने चनत्य कमों के साथ-साथ ही आपको यह आन्तररक सम्पकप, चदव्य स्रोि के साथ-प्राथपना, आराधना और एकान्त ध्यान द्वारा योग स्थाचपि चकये रखना है। यह आपका प्रथम किपव्य है। चकसी भी कारण से इसकी उपेक्षा नहीं ंकरनी िाचहए। प्रािीः ब्राह्ममुहिप में जागो और ध्यान का अभ्यास करो। कचिपय योग-मुद्राओं ंका अभ्यास करो–रीर की उपेक्षा मि करो। थोडा प्राणायाम भी करो। धमपग्रन्थों ंका अध्ययन करो। यह आभ्यन्तर मौन और ध्यान सवापचधक महत्त्वपूणप है। आध्याक्तत्मक अभ्यास हेिु प्रभािकाल ही महत्त्वपूणप है। प्रािीः एवं सायं, धूचलवेला में कुछ समय के चलए भी ध्यानाभ्यास अिीव महत्त्वपूणप है।

चविार की पृष्ठभूचम (मानचसक जप), भगवद् चिन्तन का अभ्यास करो। सावधान-इसकी उपेक्षा नहीं ंकरना। अपने चदव्य आदिप का चिन्तन स्वरूप बनो। प्रत्येक व्यक्ति की चकसी-न-चकसी चविार की पृष्ठभूचम होिी है; चकनुिु प्रायीः यह लौचकक, जघन्य (कुक्तत्सि) अथवा भौचिक होिी है। एक वकील की मानचसक चविारधारा श्रावक, न्याय-सभा अथवा न्याय के चनयमों ंआचद से पूणप होगी। एक चिचकत्सक के चविारों ंकी पृष्ठभूचम अस्पिाल, इनजैक्शन, रोगी, औषचध, ििु आचद से पररपूणप होगी। दादी माँ अपने पौत्र एवं पुत्रों ंका ध्यान करेगी। चदव्य जीवन के अभ्यासी के चविारों ं की पृष्ठभूचम चदव्य प्राक्तप्त के गररमामय आदिप भगवान्, भद्रिापूणप जीवन और चदव्य नाम से युि होनी िाचहए। चदव्य गुणों ंका आरोपण करो। चनषेधात्मक गुणों ंका चनराकरण करो। चवश्व के प्रचि, सबके प्रचि अपने मानचसक भावों ंको पररवचिपि करो। अपने अमूल्य समय का एक क्षण भी व्यथप न गाँवाओ। भद्र जीवन, प्रभु, चदव्य चिन्तन के आदिप का चिन्तन और किपन करो। भगवान् के चलए जीवन यापन करो। अपने चनत्य कमों के समय प्रत्येक व्यक्ति िक चजससे भी आप चमलें, चदव्य सनेदि का प्रसारण करो। चकसी चमत्र को चमलने पर इधर-उधर की व्यथप की बािें करने की अपेक्षा उससे प्रश्न करो चक इन चदनों ंवह ध्यान की कौन-सी चवचध का अभ्यास कर रहा है अथवा कौन-से नवीनिम आध्याक्तत्मक साचहत्य का अध्ययन कर रहा है। यही आपका वािापलाप होना

ाचिहए। आपके सम्बि में प्रत्येक वसुतु भद्र और चदव्य हो, उत्कृष्ट् हो। वृथालाप त्याग दो। उपन्यास पढ़ना छोड दो। वृथालाप और उपन्यास आपको मानचसक िाक्तन्त प्रदान नहीं ंकरेंगे। वे आपके मानचसक सनुतुलन को चबगाडिे हैं। आपके मक्तस्तष्क को अनावश्यक, दुीःखद, लौचकक चविारों ंसे भर दिे हैं। इनकी अपेक्षा अपने मक्तस्तष्क को चदव्य चविारों ंसे पररपूणप करो। आपकी अन्तरात्मा चदव्य िेज से उद्दीप्त हो उठे। इस पर पचवत्रिा व्याप्त हो जाये।

सवपदा स्मरण रखो चक यह संसार दुीःख, पीडा, जरा और मृत्युमय है और आपका सवपप्रथम किपव्य िक्र को पूणप करना भगवद्-साक्षात्कार करना, आत्मानुभूचि करना है। केवल इसी में आप परम िाक्तन्त, िाश्वि आनन्द, चनत्य ज्योचि को प्राप्त कर सकिे हैं। कमर कसो । स्वयं को इस चदव्य जीवन में ढालने के चलए उद्यि हो जाओ। व्यावहाररक चजज्ञासु बनो। आप अमरत्व प्राप्त करेंगे। आप परम िाक्तन्त एवं चनत्यानन्द का उपभोग करेंगे, इसमें लेिमात्र भी सन्देह नहीं।ं

आपके सवप कृत्यों ंमें, उज्वल भचवष्य में, सवपसम्पन्निा और परम चदव्यानन्द िथा परम पद में भगवान्आप पर आरोग्यिा, दीघापयु, िाक्तन्त, समृक्तद्ध, परम चदव्य आनन्द एवं परम पद की वृचष्ट् करें!

संक्षेप में शदव्य जीवन के मूल ित्त्व

साथउपसंहारमेंगुरुदेव ने चदव्य जीवन, चदव्य वास औरउनसद्गुणों ंकासमाविेचकयाहैचजनें् मनुष्य को चदव्य जीवन के स्तम्भ स्वरूप स्वयं में अंकुररिकरनिााचहए।

मूलित्त्वहैं-चदव्यजीवनके:स्वाथपिा, सेवाभाव, प्रेम (मानव-प्रेम और ईश्वर-प्रेम),चनयचमिध्यान,आभ्यन्तरजीवनऔर अन्तिीः परमात्मा का साक्षात्कार। अिएव चदव्य जीवन के सम्बि में गुरुदेव गािे हैं:

सेवा, प्रेम, दान, पशवत्रिा, ध्यान, साक्षात्कार ।
भले बनो, भला करो, दयालु बनो।
खोजो, 'मैं कौन हूँ', आत्मज्ञान करो और मोक्ष पाओ ।।
सेवा, प्रेम, दान, पशवत्रिा, ध्यान, साक्षात्कार ।
भले बनो, भला करो, दयालु बनो।

संक्षेप में यह आपके चलए चदव्य जीवन है। इसी में आवागमन के िक्र, इस सांसाररक बन्धन से मुक्ति का उपाय, अद्भुि सवप रोग-हर औषचध और सवप चिचकत्सा है। चकन्तु जब आप औषध ग्रहण करिे हैं, िो आहार के सम्बि में आपको कचिपय चनयमों ंका भी पालन करना होिा है और ये हैं आहार के अष्ट्ादि चनयम :

प्रसन्निा, शनर्भयिा, शनरशभमानिा,
शवमलिा, सरलिा, सत्यवाशदिा,
समशित्तिा, च्चथथरिा, िालीनिा,
र्धैयिा, नम्रिा व संर्यमिा,

(अखण्डिा) पूिणिा, आयणिा, उदाििा, दयालुिा, उदारिा, पुण्यिीलिा ।। इन सबका अभ्यास जो शनत्य करिा, अशिरे ही प्रिा करिा अमरिा ।।
ब्रह्म ही है केवल शनत्य सत्ता,
अमुक नाम स्वरूप ि ि है शमथ्या सत्ता।
धाम होगा आपका आत्यच्चन्तक शनत्यिा,
देखोगे आप शभन्निा में स्वयं एकिा;
शवद्यालय में इस ज्ञान की है दुलणभिा, 'आरण्य संथथान' में ही है सुलभिा ।।

इन चदव्य गुणों ंका चनत्य अभ्यास करो। वे आपके जीवन को चदव्य बनाने में सहायक होंगें। वे आपके आभ्यन्तर आध्याक्तत्मक जीवन का आधार होंगें; क्ोंचंक चबना गुणों ंके आपका जीवन िुष्क है, गुणों ंके चबना आपका जीवन चनरथणक है और आपकी चदव्य प्रकृचि को क्रीडा हेिु उपयुि क्षेत्र प्रदान नहीं ंकर सकिा। दृढ़ संकल्प िथा ईश्वर और उसकी िक्ति में सहायिाथण पूणण चनष्ठा द्वारा जीवन को, सवण चनषेधात्मक पक्षों ंपर चवजय प्राप्त कर एवं समूपूणण व्यक्तित्व को, सवणगुणों ंका क्रीडा-स्थल बनाने पर ही आप चनत्यात्मा में चदव्य ज्योचि के प्रकाि और (आपके द्वारा) इसके प्रसरण की पूणण आिा कर सकिे हैं। ऐसा चदव्य जीवन यापन करो। स्वयं को इन गुणों ंकी प्रचिमूचिण बनाओ। अपनी चनम्न प्रकृचि को पूणणिया संयि करके स्वयं को अन्तरात्मा में केक्तिि चदव्यिा के िेजपुंज के प्रवाह हेिु स्रोि और साधन-रूप बनाओ। ऐसा है चदव्य जीवन!

ईश्वर करे, आप चदव्य हों! ं चदव्यिा आपको प्रेररि करे और आपके सवणकमों में आपका पथ-प्रदिणन करे! आपका समस्त जीवन चदव्य जीवन का अलौचकक और उज्ज्वल दृष्टान्त हो! यही आपसे मेरी चवनिी है। यही आपसे आकांक्षा है। मेरे चप्रय चमत्रो, चदव्यिापूणण हो कर जीवन यापन करो। चनज चदव्य प्रकृचि को चवसृमृि करके चिन्ता के भ्रम-जाल में स्वयं को चनचक्षप्त करके नहीं ं चजओ। अपनी चदव्य प्रकृचि को प्रचिपाचदि करो और परमात्मा के उपवन में चवस्मय-चवमुग्ध करने वाले पुष्प, चदव्य सौन्दयण को चबखेरिे हुए सुन्दर, मनोहर कुसुम, चदव्य सुरचभ, आध्याक्तत्मक सुरचभ बनो!

भगवान् आप सबको आिीवाणद दें! आपकी अन्तरात्मा आपको प्रेररि करे! गुरुदेव चिवानन्द जी आप पर अपने आिीष की वृचष्ट् करें ! भूि और विणमान के पूवी और पाश्चात्य सन्त आपको आश्रय प्रदान करें और आपको चदव्य गौरवमयी प्रकृचि के साक्षात्कार की ओर अग्रसर करें!

मेरे चप्रय साधको, आपके मध्य रह कर आप सबमें अदृश्य रूप से व्यचष्ट् रूप से चवद्यमान परमात्मा को इन

बिों ंद्वारा पूजा अचपणि करने का आपने मुझे सौभाग्य प्रदान चकया, इसके चलए मैं पुनीः आपका आभारी हाँ। सदा संगचठि रहो। संगचठि रह कर संगचठि रूप से चविार करो, संगचठि हो कर साधना करो, संगठन में कमण करो और संगचठि हो कर कमणक्षेत्र की ओर कूि करो। अनुभव करो चक आप एक हैं और इस एकिा और चमत्र भाव द्वारा आपके सम्पकण में आने वाले सभी जनों ं को अचनवणिनीय आिीष प्राप्त हों ं!

प्रभुकरे, आप चदव्यिा के महान् कि बनें! असंख्य जनों ंके चलए आध्याक्तत्मक जाग्रचिके महान्किबनें! प्रीचि, समन्वय, एकिा के कि एवं भ्रिृ भाव िथा ऐक् भाव के ज्वलन्त दृष्टान्तबनें!आने वाले वषों में आप चदव्य जीवन के आनन्द को समस्त चवश्व में सम्प्रसाररि करें!

आज गुरु चनवास से पैदल ही आने पर गणेि कुटीर के पास से हिो हुए अस्पिाल के मुख्य द्वार से गुजर रहा थािा एक स्वच्छिा कमपिारी को झिाू लगािो, सफाई करिे देखा िो मन में चविार आया और स्वयं से मैंने कहा- "यह कोई साधारण बाि नहीं,ं इसमें अवश्य कुछ चविेष ित्पियप चनचहि है। अभी छह भी नहीं ंबजे और वह सवेरे सवेरे जागा, िैयार हुआ, कपडे पहने, कायपस्थल पर पहुाँिा और अपने चनचदपष्ट्कमप (स्वच्छिा) में व्यस्त हो गया। उसका चनवास स्थान भी अन्यत्र है, घर से यहााँ पहुाँिने में चकिना फासला भी िय चकया होगा।" मैंने सोिा "वस्तुिुः इसी में यह सत्य सचन्नचहि है चक व्यक्ति को अपने चदवस का िुभारम्भ प्रािुः बेला से ही अपनी स्वच्छिा, चनमपलिा, पचवत्रिा, चविुक्तद्धकरण की प्रचक्रया द्वारा कर देना िाचहए। साधक का जीवन कैसा होना िाचहए, आध्याक्तत्मक जीवन कैसा होना िाचहए? उसके चलए यह एक संकेि चनदेि है। यह साधक के जीवन का यथाथ्य प्रस्तुिीकरण है। प्रािुःकाल जल्दी उठे, भगवचिन्तन, भगवद्नामोच्चारण से अपने िन को चनमपल, मन को पचवत्र, चित्त को चविुद्ध करे।"

-स्वामी शिदानन्द

भच्चि-प्रभु को शप्रय

िाश्विि सत्य के प्रचि श्रद्धा के साथ नमन! वे जो अनाचद, अनन्त, असीम, अपररविपनिील, िाश्विि, सवपव्याप्त, अन्तयापमी, अन्तचनपचहि सत्य हैं, वे ही जगि् के स्रोि, आधार, संसार के परम पालनकिाप, असीम और सवपव्यापक हैं; इसीचलए वे सवपत्र चवद्यमान हैं। िुम्हारे भीिर चनवास करिे हैं; इसचलए िुमसे भी अचधक िुम्हारे चनकट हैं। वह सत्ता चजसमें िुम रहिे हो, िलिे-चफरिे हो और अपने-आपको जीचवि रख पािे हो, वे िुम्हारे िरीर-मक्तन्दर में, हृदयस्थ हैं। इसीचलए िुम्हारी प्रत्येक चक्रया दैवी चक्रया ही है।

मन की इस आन्तररक वेदी पर इस वषप िुम अपने िरीर-मक्तन्दर में सिाई, सत्य भाव, चनष्कपटिा, स्वामी-भक्ति, समपपण, चनष्कपट मन, स्पष्ट्वाचदिा, सरलिा के पुष्पों ंको िढ़ा कर ईश्वर की पूजा करो। जीवन की सारी कुचटलिा, छल-कपट, दुरंगी–िाल से रचहि हो कर पूजा

करो। पचवत्रिा, दया भाव और सरलिा के पुष्प िढ़ा कर पूजा करो। इक्तियों ं को संयचमि करके जीवनमें**आत्म-संयम के पुष् िढ़ा कर पूजा करो।**

यह ऐसे पुष्प हैं जो िुम्हारे िरीर-मक्तन्दर में क्तस्थि, मन के परम पावन गभप गृह में चनवचसि सत्ता को अचिचप्रय हैं। उन्हें अपनी पूजा के चलए बहुमूल्य पदाथप नहीं ं िाचहए। वे अगचणि लोकों ं के अचधपचि हैं। वे सबके स्वामी हैं। िुम उन्हें दे ही क्या सकिे हो? ऐसा कुछ है ही नहीं ं जो उनकानहो।भक्तिहीप्रभुकोचप्रयहै।

पर िुम्हारा अहंकार िुम्हारा अपना है, मन िुम्हारी सम्पचत्त है, िुम्हारा जीवन िुम्हारे चलए है। यचदअपनेमन,अपनेअहंकोअपनेजीवन-पुष्पके रूपमेंउनके िरणों ंमेंअचपपिकरिे हो, िबचनचश्चिरूपसेउनकीकृपाकासंिािुिम्हारेभीिररहोगा।जबिुमउन्हेंसिाई,क्षमा, सरलिा, चनष्कपटिा के पुष्प अचपपि करोगे, जहाँ कुचटलिा, कपट, चद्वचवध भाव, मानवीय िुराई नहीं ं होगी, िभी उन्हें अच्छा लगेगा। िुम उन्हें उसी से प्रसन्न कर सकिे हो।

यह सारे अवगुण आध्याक्तत्मक आदिों की दृचष्ट से सन्त और बुक्तद्धमान् व्यक्ति के चलए चिरस्कार योग्य हैं। ये सारे साधन केवल कुचटल, धूिप, बेईमान और प्रवंिकों ं के चलए हैं। चजन्होंने अपने जीवन का उिआदिप ईश्वर को माना है, इन दुगुपणों ं को अपना कर वे संन्यासी, साधक और ईश्वर के भि नहीं ं बन सकिे। इन घृचणि साधनों ं से आध्याक्तत्मक व्यक्ति की प्रचिष्ठा नहीं ं हो सकिी।

यचद आत्म-चवश्लेषण, आत्म-परीक्षण और प्राथपना द्वारा इन अवगुणों ं को दूर नहीं ं चकया जािा, िो ये िुम्हारे आध्याक्तत्मक जीवन में बाधा बनेंगे। इस पथ पर आगे बढ़ने से रुक जाओगे। यचद िुम चदव्यिा प्राक्तप्त की प्रगचि का प्रयास नहीं ं करिे, िो अपना आध्याक्तत्मक जीवन दस, बीस या पिास साल िक भी यापन करने पर िुम वहीं-के-वहीं ं रहोगे। अपूणप सांसाररकिा की ओर बढ़िे हुए िुम्हारे िरण अपनी मानवीय दुबपलिाओं ं और अवगुणों ं के कारण िगमगा गये हैं। रास्ता भटक जाना ही आध्याक्तत्मक जीवन की दु:खद घटना है।

हमारी वैचदक जीवन-पद्धचि के आधार पर हमारी पूरी चदनियाप धमप के आधार पर िलिी है। िुम जो-कुछ भी हो, चजस पररक्तस्थचि में भी हो, िुम्हें एक चनचश्चि धमप का पालन करना होगा। िुम्हारी वास्तचवक पहिान देवत्व की है, वह ज्ञान िुम्हें गुरु ने ही चदया है। िुम जो हो, उसके अनुरूप िुम्हें व्यवहार करना िाचहए। अपनी वास्तचवक पहिान को अपने जीवन में प्रकट करने के चलए िुम्हें चदव्य जीवन िीिा करना होगा; चदव्य चिन्तन, चदव्य विन और चदव्य व्यवहार करना होगा।यहीिुम्हाराधमपहै।**िुम्हारी बाह्याशभव्यचि अन्तरशभव्यचि से शभन्न न हो।**

***

राधा-त्त्व

जगन्माता, परमाराध्या श्रीराधा के श्रीचरणों में प्रणति। इनकी प्राकट्य-स्थली, श्री बरसानाधाम, वृन्दावन सन्निकट है। **श्रीकृष्ण-प्रेम की साक्षात् मूर्ति हैं श्रीराधा।**

श्रीकृष्ण-प्रेम का सारभूत तत्त्व है महाभाव। इसी महाभाव का साकार विग्रह हैं श्रीराधा। श्रीराधा-कृष्ण की परस्पर रसकेलि अलौकिक है। सर्वस्व समर्पित माधुर्यभाव की पराकाष्ठा महाभाव की अनुभूति दास्य, वात्सल्य आदि अन्य भावों द्वारा नहीं की जा सकती। केवल सखियाँ ही इस रसानुभूति की अधिकारिणी हैं। **श्रीकृष्ण लीला रस का पूर्ण आस्वादन केवल सखियाँ ही करती हैं-अथवा श्रीकृष्ण-आराधक वे रसिक भी जो गोपी भाव- भावित हैं।**

सखियों का श्रीकृष्ण के साथ रमण स्वसुख के लिए नहीं है। श्रीराधा-माधुर्य-रस विहार के विधान हेतु सखियाँ सेवा तत्पर रहती हैं। इसी में उनकी हार्दिक तुष्टि है। श्रीकृष्ण-प्रेम-वांछा-कल्पतरु की कल्पलता हैं श्रीराधा। सखी वृन्द उस कल्पलता की फूल-पत्तियाँ हैं। श्रीकृष्ण की रस-क्रीडा से श्रीराधा-रूपी कल्पलता को यदि रसामृत प्राप्त होता है, तो पुष्प-पल्लव-रूपी सखियों को उस रस की प्राप्ति स्वयमेव हो जाती है, बल्कि उनको लाख गुणा अधिक परितृप्ति मिलती है। श्रीकृष्ण आलिंगन पाने को सखियाँ अपने लिए इतनी उतावली नहीं, जितनी श्रीराधा-कृष्ण की प्रेमालिंगनबद्ध छवि निहारने को। विविध लीलाएँ रच कर वे श्रीकृष्ण को श्रीराधा के समीप भेजने में प्रयत्नशील रहती हैं। इसी लीला में उन्हें स्व-सुख की अपेक्षा कई गुणा अधिक दिव्य सुख की प्राप्ति होती है। **सखियों का पारस्परिक निश्छल, विशुद्ध प्रेम ही श्रीकृष्ण-रास रस की अभिवृद्धि करता है। भगवान् श्रीकृष्ण भी इसी प्रेम से रीझते हैं। गोपी-प्रेम काम-वासना रहित है।** इन्द्रियतृप्ति लौकिक प्रेम है। इसी का पूर्णरूपेण त्याग किया है सखियों ने। श्रीकृष्ण-रमण के लिए उनमें स्वसुख की कामना लेशमात्र भी न थी। वे श्रीकृष्ण का चिन्मय प्रेमालिंगन तक भी श्रीकृष्णतृप्ति के लिए स्वीकार करती हैं, न कि स्वसुख कामना हेतु।

आप पूजा तथा ध्यानाभ्यास चाहे कितना ही क्यों न करें, **गोपीभाव से रिझाये बिना श्रीकृष्ण आह्लादित नहीं होते।** श्रीलक्ष्मी महारानी ने वैकुण्ठाधीश्वर की इतनी कठिन आराधना की, परन्तु वह भी श्रीकृष्ण को रिझाने हेतु व्रज में गोपी-रूप देह प्राप्त न कर सकीं।

श्रीराधा आराध्या देवी हैं। वे दीप्तिमयी है, सुन्दरता की घनीभूत राशि हैं। आनन्दकन्द श्रीकृष्ण-रस-केलि-कुंज की अधीश्वरी हैं। प्रत्येक वस्तु में उन्हें श्रीकृष्ण छवि के ही दर्शन होते हैं। श्रीकृष्ण अद्वितीय प्रेमास्पद हैं। वस्तुतः श्रीराधा- कृष्ण एक ही हैं। श्रीराधा श्रीकृष्ण अभिन्न हैं। श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति का नाम ही राधा है। श्रीकृष्ण-प्रिया श्रीराधा जी का जीवन है श्रीकृष्ण- सुख। श्रीकृष्ण की प्रत्येक मनोकामनापूर्ति ही **उनकी आराधना है। यही आराधना ही उनके अस्तित्व का आधार है।** इसलिए पुराणों ने उन्हें **'कृष्णमयी'** की संज्ञा से अभिहित किया है। उनके रोम-रोम से श्रीकृष्ण-प्रेम की वृष्टि होती है। **अन्तर्बाह्य कृष्ण ही कृष्ण।** श्रीकृष्ण ने अपने वशीकरण सौन्दर्य से सबको विमोहित कर रखा है। **पर श्रीराधा के चुम्बकीय प्रेमाकर्षण ने श्रीकृष्ण को वशीभूत किया हुआ है। इसलिए वह दिव्य प्रेम की अधिष्ठात्री हैं। समस्त पूजनीय देवताओं तथा देवियों की भी परम आराध्या हैं श्रीराधा।** वे जगन्माता हैं, जगद्धात्री हैं। षैश्वर्यपूर्णभगवान् श्रीकृष्ण की अथवा वैकुण्ठ लक्ष्मी की एकमात्र अधीश्वरी श्रीराधा हैं। वे श्रीकृष्ण की दिव्यशक्तियों की सर्वोपरि शक्ति हैं, अनन्त शक्ति स्वरूपा हैं। वे सौन्दर्य की जननी हैं, मूर्तिभूतलावण्य ही हैं। लक्ष्मी आदि देवियाँ उन्हीं के राशि-राशि सौन्दर्य के अंशांश सौन्दर्य से विभूषित होसौन्दर्यमयी है।

भगवान् श्रीकृष्ण आनन्दकन्द हैं। आनन्द का आश्रय और स्रोत ये ही हैं। ये ही चदव्यानन्द सुधा चपला कर अमरत्व प्रदान करिे हैं। इक्तिय-जन्य सुख चवष के समान है जो रोग और मृत्यु को आमक्ति करिा है। **भगवान् की शनज शवशिष्ट अन्तरंग िच्चि को स्वरूप िच्चि की संज्ञा भी दी जािी है। यही िच्चि भगवान् श्रीकृष्ण और उनके अनन्य प्रेमी भिों ंको शदव्य आनन्द प्रदान करिी है। इसे ही आह्लाशदनी िच्चि कहा गया है। आह्लाशदनी िच्चि का सारभूि ित्त्व है प्रेम अथाणि् श्रीकृष्ण के प्रशि शनःस्वाथण स्वसुख शवरशहि प्रेम। यही स्वसुख रशहि कृष्णसुख पररपूररि प्रेम ही शिन्मय आनन्द-रस है और इसी रस की घनीभूि मूशिण हैं श्रीराधा।**

श्रीराधा महाभाव की साकार प्रशिमा हैं। श्रीराचधका का व्युत्पचत्तमूलक अचभप्राय है आराधक अथवा भि । श्रीराधा श्रीकृष्ण की आराध्या हैं (जैसा चक राधा नाम से स्पष्ट है)। श्रीराधा श्रीकृष्ण की हृदयेश्वरी हैं। वैकुण्ठ-लोक की समस्त लक्ष्मी श्रीराधा की चवलास मूचिपयाँ हैं। द्वारकाधीश की राचनयाँ उनकी छायामात्र हैं। वृन्दावन की गोचपयाँ श्रीराधा की अंस्विरूपा हैं। श्रीकृष्ण के आनन्द की अचभवृक्तद्ध के योगदान में श्रीराधा अपने सूक्ष्म स्वरूप गोचपयों ंके रूप से सिि संलि हैं। **श्रीकृष्ण का आह्लाद श्रीराधा हैं।** श्रीराधा श्रीकृष्ण की मनमोचहनी हैं, **उनकी प्राणिच्चि हैं। श्रीराधा ही श्रीकृष्ण की सवणस्व हैं। ब्रजसुन्दररयों ंकी सम्राज्ञी हैं श्रीराधा।** समस्त चदव्य सुषमा िथा लावण्य की चिरोमचण श्रीराधा हैं। जैसे अचि िथा उसकी दाचहका िक्ति, चहमकण व उनकी िीिलिा, पुष्प व उसकी सुगक्ति अचभन्न हैं-वैसे ही श्रीराधा श्रीकृष्ण अचभन्न है, एक हैं। **श्रीकृष्ण-प्रेम-माधुयण और सुकोमलिा से शनशमणि हैं श्रीराधा का श्रीशवग्रह। श्रीराधा महाभाव का अन्तशनणशहि सूक्ष्मरूप ही श्रीकृष्ण-प्रेम है।** श्रीकृष्ण-चमलन की उत्कट लालसा का प्रिीक है श्रीराधा का नीलाम्बर। उनकी मधुर प्रभामयी मुस्कान ही श्रीकृष्ण-आरिी उिारने हेिु कपूपर है। उनकी मनमोहक चवचिष्टिाएँ ही पुष्प-मालायें हैं। उनकी भाव-चेष्टाएँ ही उनके अवयव िथा अलंकार हैं। भगवान् कृष्ण का मधुर नाम िथा उनके मधुर गुण श्रीराधा के कणपभूषण हैं। श्रीराधा की मधुर वाणी से श्रीकृष्ण के सुमधुर नाम िथा लीला-गुणगान की सहज धारा प्रवाचहि होिी है। **अनन्य-प्रेम-रसामृि से वे श्रीकृष्ण को पररिृि करिी हैं।**

भच्चि की पराकाष्ठा ही माधुयण भाव है। अनन्य प्रेम के अथाह वेग में आराध्य-आराधक एकाकार हो जािे हैं। शनत्य संयोग की यही च्चथशि राधा-प्रेम है। माधुयप भाव में भि और भगवान् का अन्तरंग सम्बि स्थाचपि हो जािा है। इसमें काम वासना की गि भी नहीं ंहै। इक्तिय-जन्य सुख का िो यहाँ प्रवेि ही नहीं ंहै। **माधुयण-भाव की शनमणलिा, पशवत्रिा िथा शविुद्धिा को समझना कामुक व्यच्चियों ंकी कल्पना से भी परे है,** क्ोंचक उनका मन चवषय-वासनाओं ंसे भरपूर है। िरुणावस्था प्राप्त बेटा अपनी जननी के प्रचि जो पचवत्र प्रेम-भाव रखिा है, उसी चनमपल पचवत्र प्रेम को दृचष्ट में रख गोपी-प्रेम की चविुद्धिा की कल्पना की जा सकिी है। इक्तियिृक्तप्त की कामना से चबलकुल अछूिा प्रेम। क्ा एक युवा पुत्र अपनी जननी के प्रचि कामवासना की कल्पना कर सकिा है? कदाचप नहीं।ं सूफी सन्त ईश्वरीय उपासना माधुयप-भाव द्वारा ही करिे हैं। **कशव जयदेव रशचि 'गीि-गोशवन्द' का काव्य भी माधुयण रस आप्लाशवि है।**

सूफी सन्त रस-भीनी चजस भाषा का प्रयोग करिे हैं, उसके अथाह-असीम आनन्द से सांसाररक लोग वंचिि हैं। उसको हृदयंगम करना सांसाररक लोगों ंकी समझ से परे है। अनन्य प्रेम का वह सुमधुर रस िो श्रीराधा, गोचपयाँ, मीरा, िुकाराम, नारद िथा हाचफज सरीखे प्रेम-भिों ं के रोम-रोम को चसंचिि चकये हैं। अिः **प्रेमेशमयों ंकी गूढ़ भाषा िो ये सब प्रेमी भि ही समझ सकिे हैं।**

आनन्दघन की आह्लाचदनी िक्ति श्रीराधा की जय हो! देवकी-अंक-धन-श्रीकृष्ण की जय हो! योचगयों ंके परम सत्य, भिों ंके परमाश्रय व जीवन-सवपस्व, यिोदा िथा नन्द के लडिे लाल श्रीकृष्ण की सदा जय हो! लाचडली लाल की जय हो! आप पर उनकी अहैिुकी कृपावृचष्ट् अनवरि होिी रहे !

जय श्री राधे जय नन्दनन्दन ।
जय जय गोपी जन-मन-रंजन ।।

सार-रूप में

"कृष्णसुतु भगवान् स्वयम्" आह्लाचदनी िक्ति **"आिा िु राशधका िस्य"** श्रीराधा के नाम से सभी पररचिि हैं। पर **राधा-ित्त्व से भी सभी सुपररचिि हो जायें-ऐसा प्रयास गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का रहा।**

राधा-प्रेम का मूचिपमन्त रूप वे स्वयं रहे और चनज को चवश्व-सेवा के चलए चवसचजपि कर चदया। कृष्ण-प्रेम उनमें छलक पडिा था। उनके कुटीर में प्रचिचष्ठि **श्रीकृष्ण भगवान् का मुरलीमनोहर स्वरूप दिणनीय है। शविुद्ध प्रेम, शनष्काम सेवा, सवाणि-समपणि, सवणस्य त्याग-ये ही िो हैं राधा-प्रेम के सोपान जो कृष्ण-प्रेममय बना दिे हैं।** भगवान् कृष्ण कोई सामान्य नायक नहीं। श्रीराधा कोई सामान्य नारी (नाचयका) नहीं। गोपी कोई सामान्य स्त्री नहीं। वंिी कोई सामान्य जड वसुतु नहीं।

चवश्व-िक्तन्त की चवकट समस्या का समाधान श्रीराधा-प्रेम में सचन्नचहि है; वह है-स्व-सुख कामना की संकुचिि पररचध से बाहर चनकल कर पर-सुख को ही स्व-सुख मानना । आज के घोर कचलकाल में सामान्य जनिा को श्रीराधा-प्रेम के चवराट् रूप को हृदयंगम करना है, जो चक संकीणप न हो कर सवाांगीण है, सीचमि न हो कर असीचमि है, व्यक्तिगि न हो कर वैचश्वक है।

श्रीराधा के िीन रूप मुख्य हैं-रस-रूपा अथापि् माधुयप भाव की एकमात्र अधीश्वरी हैं रासेश्वरी श्रीराधा-जो भाव-साम्राज्य की एकछत्र सम्राज्ञी हैं, भाव-उपासना की परमोच्च चिखर हैं।

चविुद्ध प्रेम की, त्याग की, िपस्या की साकार मूचिप 'चवयोचगनी राधा' उनका दूसरा रूप है- चजसके द्वारा वह चविुद्ध प्रेम-पथ पचथक की पथ-प्रदचिपका एवं आदिप हैं। वह आत्म-बचलदान एवं एकांगी प्रेम, वह सीमाहीन त्याग कल्पना से भी परे हैं। जगि् में आज राधा अपने इस रूप में अणु-अणु में व्याप्त हैं।

महाऐश्वयपिाचलनी, लीलामयी, जगज्जननी उनका िीसरा रूप है। वे मूल प्रकृचि हैं। **वे आद्या िक्ति हैं।** यह समस्त **ब्रह्माण्ड उनकी लीला है।**

रसेश्वरी रासेश्वरी भावभावेश्वरी रक्ष माम्।
परमेश्वरी सवेश्वरी मोक्षेश्वरी पाशह माम् ।।

इस प्राथपना के साथ मिोश्वरी के िरणों ंमें भावपूणप नमस्कार! पे्रममय प्रणाम! **उनका कृपा कटाक्ष पाना दुरूह नहीं,ं केवल िाशहए बाल-सुलभ शनश्छलिा जो शवकार रशहि होिी है- अपने-पराये की भावना से कोसों ंदूर। जय श्री राधे।**

महाचिवराचत्र
२६-२-८७

स्वामी चिदानन्द
अध्यक्ष
चदव्य जीवन संघ, ऋचषकेि

शवजयादिमी

महान् लक्ष्य िथा उसकी उपलच्चि

(भगवान् का मािृरूप)

विामिृस्यच्चन्दशन पादपंकजे
शनवेशििाा कथमन्यशदच्छशि।
च्चथथिेऽरशवन्देे मकरन्दशनभणर
मधुव्रिो नेक्षुरसं शह वीक्षिे।।2

आज मािा जी के चवजय-चदवस का महोत्सव है। इस चवजय-चदवस पर समस्त देव प्रसन्न होिे हैं िथा समस्त मानव-जाचि आनन्दाचिरेक में मि होिी है; क्ोंचक उन्ें यह परमोत्कृष्ट् आश्वासन प्राप्त हुआ है चक वे यचद चवपद् और आपद् में पड कर सहायिाथप माँ की ओर मुडेंगे, िो माँ उन्ें िक्ति और साहाय्य अवश्य प्रदान करेंगी; क्ोंचक जो चवपचत्त में पड कर माँ के चदव्य िरणों ंमें िरणापन्न होिा है, माँ उसकी रक्षा करिी हैं। मािा जी अनन्त िक्ति का आधार महािक्ति हैं। अिः उनके सम्मुख जािे ही हमारी चनबपलिा चिरोचहि हो जािी है। समस्त अमंगल, अज्ञान िथा मोह की िक्ति के ऊपर महि् जय-लाभ का कायप सम्पन्न होिा है और मािा जी के साथ चवजयोत्सव का आनन्द मनािे हैं। **शवजयादिमी साधक के शवश्वास, िच्चि िथा साहस-प्राच्चि का परम शदवस है।**

इस चदवस को सभी साधकों ंिथा भगवान् की खोज में रि भिों ंको महािक्ति िथा साहस प्राप्त होिा है। इसका कारण यह है चक माँ ने उनके चदव्य भाव के पूणापधार रूप में प्रकाचिि होने के मागप में अन्तराय-रूप में आने वाली **आसुरी िच्चि को ध्वंस कर परब्रह्म के धाम के प्रवेि-द्वार को उद्घाशटि कर शदया है। आज के परम पशवत्र शदवस पर मािा जी की आराधना महामाया के परम शविुद्ध शवद्या-स्वरूप का पूजन है।** आज िक नवरात्र के चदनों ंमें मानव-व्यवहार के इस दृश्य जगि् में प्रकट हुए मािा जी के चवचवध रूपों ंकी उपासना हमने की; चकन्तु चवजयादिमी के चदन से मािा जी के चवद्या और अचवद्या-रूपी बाह्य स्वरूपों ंके परे

---

2 िरण कमल से चनःसृि अमृि में प्रचवष्ट् चजसकी आत्मा। कैसे भजे अन्य थल को जब लगन लगी हो िुझमें माँ।।
ज्यों ंपराग में लीन भ्रमर हो, कमल मध्य में क्तस्थि माँ। मधुर ईख-रस क्ोंकर िाहे, िखकर भक्ति-अचमय रस माँ।

परिात्ति के चविुद्ध चवद्या माया के मुखारचवन्द का हम दिपन करिे हैं। इस रूप का दिपन करना स्वयं परब्रह्म की अगाध िथा अिल गहराइयों ंका दिपन करना है।
कारण, हमने इस पूजा के प्रारम्भ में यह कहा था चक माँ परब्रह्म के अचिररि अन्य कुछ भी नहीं ंहैं। वह परब्रह्म ही मािा जी हैं। अिएव, अपने चविुद्ध चवद्या माया रूप में वह स्वयं परब्रह्म हैं। इसी से आज इस परम महान् िथा मंगलकारी चवजयादिमी के चदवस पर माँ के उस अतुयुञ्चल दीत्तप्तमान् चवद्या-रूप को, आत्मज्ञान- प्रकािक रूप को हम प्रणाम करिे हैं।

आज के शदन शनम्न-भाव का शकसी भी रूप में अच्चस्तत्व नहीं ंहै। शकसी प्रकार की आसुरी सम्पशत्त नहीं ंरह गयी है। कुिुद्र वृशत्त का कोई शिह् अविेष नहीं ंरहा है। अन्धकार पूिण रूप से ध्वंस हो गया है। इसका पूिण शिरोभाव हो गया है। वहाँ एकमात्र माँ का साम्राज्य व्याि है। माँइससमयअसीमचिद्दनहैं।माँकेइसिेजोमयस्वरूप की उपासना उस परब्रह्म की श्रेष्ठउपासनामेंअपनेकोचवसजपनकरनाहै।इसभााँचिअबहम उस परब्रह्म की पूजा िथा उपासनाआरम्भकरिेहैजहााँपहुाँकिरजन्म-मृतुयुकादुष्ट्क्रिसमाप्त हो जािा है। यही वह पश्चिािाकिथादुीःखमेंप्रत्याविपन नहीं ंहोिा। हम उस चलएप्राप्तकरलेिेहैंजोचकसमस्तिोकों,ं समस्त कष्टों ंिथा मोहों ंसे परेहै।यहसाधक,चजज्ञासुिथासमस्तमानवकािरमलक्ष्यहै।वास्तव में एकमात्र इस सविो ध्येयकीउपलत्तब्धकेचलएहीहमेंइसजगि्मेंयहमानव-जन्मप्राप्त हुआ है। संसार के अन्य पदाथोंकेप्राप्त्यथपअपनीभाग-दौडभ्रामकएवंचनरथपकहै।इसअमूल्य जन्म का एकमात्र अिय, उद्देश्य िथा लक्ष्य परब्रह्म का साक्षात्कार करना है।

िाश्विप्रकािकाधामहैजहााँजानेके परमधामकोसदाके

गुरु : परब्रह्म की थथूल मूशिण

मािा जी स्वयं गुरु के रूप में प्रकट होिी हैं, इस गुप्त रहस्य का ज्ञान साधक को परमात्मा अथवा मािा सरस्विी की कृपा से ही होिा है।

चिष्यकेचलएगुरुमािाजीकीचवद्यामायािथाचवद्यािात्तिकाप्रत्यक्षप्राकयहै। साधककेचलएसद्गुरुमािाजीकाहीस्वरूपहै।साधकनेचजसआध्यात्तत्मकव्यत्तिकोअपने मागपदिपकिथागुरुके रूपमेंस्वीकारचकयाहै,वहउसके चलएभगविीमािाजीकासाक्षाि् साकारस्वरूपहै,ऐसाउसेपूणपिमभावसेमानननािाचहए।मािाजीकीइसभावनाकेआधार के ऊपरहीसाधककेआध्यात्तत्मकजीवनकाप्रासादत्तस्थिहोिाहै।चहनदू-संसूकृचिकासमूपूणप त्त्वि-ज्ञानइसप्रकारकीभावनापरहीचनभपरकरिाहै।यहएकअपूवपभावनाहैचजसकीसमिा संसार की चकसी भी अन्य संसूकृ चि में नहीं ं चमलिी।

सद्गुरुकेव्यत्तित्वमेंपरब्रह्मकादिपनहीसाधककीआध्यात्तत्मकखोजकीसफलिाका मूलआधारहै।इसप्रकारसाधक-वगपनेचजसव्यत्तिचविेषकििरणमेंजाकरउसेअपने हृदयकेअन्तरिमप्रकोष्ठमेंअपनेआध्यात्तत्मकमागप-दिपककेरूपमेंस्वीकारचकयाहै,उसके चलएवहीसद्गुरुसाक्षाि्परात्तिकास्वरूपहै।वहब्रह्माहै,वहचवष्णुहै,वहमहेश्वरहै,वह ित्तिहैऔरवहीस्वयंअक्षरपरब्रह्महै।िाश्विसत्ताकीखोजमेंसद्भावपूवपकित्परचकसीभी साधककोइससत्यकोएकक्षणकेचलएभीदृचष्ट्सेओझलनहीं ंहोनेदेनािाचहए,नचवलग करना िाचहए और न उसे चवसूमृि ही करना िाचहए।

गुरुब्रणह्मा गुरुशवणषु्णुगुणरुदेवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म िस्मै श्रीगुरवेनमः।।3

महान् धमणिास्त्रों ंका सारित्त्व

आज चवजय के गौरवपूणप चदवस पर चवजयी चवद्या-माया-स्वरूपा भगवीि मािा जी की हम जो आराधना कर रहे हैं, वह सद्गुरु के आध्यात्त्मक व्यक्तित्व में िथा उसके द्वारा प्रकट हो रहे सवोपरर परब्रह्म की ही पूजा है। हमने चवचवध प्रकार से मािा जी की आराधना की है। आज हमने धमपग्रन्थों ंके पाठ द्वारा चवद्यारम्भ से चविेषकर मािा जी के वाङ्मय स्वरूप की आराधना करने का प्रयत्न चकया है। गीिा, ब्रह्मसूत्र, भागवि, रामायण इत्याचद श्रेष्ठ धमपिास्त् मािा जी के वाङ्मय-स्वरूप हैं।

धमपिास्त्ों ंके पाठ से मािा जी के वाङ्मय स्वरूप की आराधना चकस प्रकार होिी है, इस चवषय में यहााँ कुछ िब् कहना अप्रासांचगक न होगा। हम देख िुके हैं चक स्वाध्याय साधक के चलए एक चवचिष्ट प्रकार की प्रचक्रया है; परन्तु यह जीवन का व्यावहाररक मागप भी है। स्वाध्याय हमारी आकांक्षाओं, ं हमारे आदिों िथा हमारे दैचनक जीवन के व्यवहारों ंका सुन्दर चनमापण करिा है। अिएव गीिा, ब्रह्मसूत्र, भागवि, रामायण िथा महाभारि जैसे धमपग्रन्थ हमारे आध्यात्त्मक जीवन में श्रेष्ठ मागप-दिपन प्रदान करिे हैं।

भगवद्गीिा के द्वारा मािा जी क्या सार प्रदान करिी हैं? भगवद्गीिा द्वारा मािा जी का एक ही आदिे है और वह है त्याग। गीिा का अथण है त्याग। गीिा त्याग का रहस्य समझाने वाला धमणग्रन्थ है। गीिा कहिी है शक इस व्यावहाररक जगि् से सम्बद्ध समू्पूण पदाथों का त्याग करना, अपने किृणत्व-अशभमान, अहंिा और ममिा का त्याग करना िथा समू्पूण शवश्व भगवान् का शवराट् स्वरूप है और हमारे सभी कमण उस शवराट् की पूजा हैं, ऐसी दृढ़ भावना रखना ही परम ित्त्व के साक्षात्कार का एक मागण है। अनासच्चि और त्याग- ये दो गीिा के परम आदिे हैं।

भागवि में हमें सकारात्मक पक्ष का दिपन होिा है। इस दृश्य जगि् का त्याग करो। नश्वर जगि् के सभी पदाथों के प्रचि मन का मोह दूर करो िथा परमात्मा के प्रचि परम प्रेम रखो। **भागवि का समू्पूण सने्दि 'प्रेम' िब्द में समाशहि है। यह प्रेम भगवत्प्रेम है। यह िुद्ध प्रेम का प्रोज्वल सारित्त्व है, भगवान् के प्रशि रशि है। गीिा पूण अनासच्चि का उपदिे देिी है, पर भागवि भगवद्रशि में पूण हृदय से अनुरि होने को कहिा है।**

महाभारि 'धमण' के आदिण पर अटल बने रहने को कहिा है। उसका उपदिे है शक जीवन का बशलदान दे कर भी धमण के शसद्धान्तों ंसे शवचशलि नहीं ंहोना िाशहए। धमण पर ही शटके रहो। धमण से ही अन्तःकरि िथा जीवन शनमणल बनिे हैं, पशवत्र बनिे हैं।

---

3 गुरु ब्रह्मा है गुरु चवषु्णुहैऔर महेश्वरहै गुरुदेव। अिः दण्डवि् प्रणाम गुरुदेव को परब्रह्म साक्षाि् गुरुदेव ।।

मानव-जीवन के सभी क्षेत्रों ंमें धमप का आिरण कैसे िक् हिा है, यह **रामायि में बिाया गया है। रामायि का ग्रन् हमारे समक्ष एक आदिण धाशमणक व्यच्चि के ठोस िथा व्यावहाररक जीवन का उदाहरि प्रस्तुि करिा है। यह एक आदिण पशि, आदिण पुत्र, आदिण भ्रािा, आदिण सेवक, आदिण शजज्ञासु िथा आदिण राजा का प्रशिमान प्रस्तुि करिा है। मनुष्य जीवन के शभन्न-शभन्न क्षेत्रों ंके आदिों का सिा दिणन रामायि के शदव्य पात्रों ंके द्वारा हमें कराया गया है। यशद मनुष्य ईश्वर के प्रशि प्रेम शवकशसि करने के साथ-साथ धाशमणक जीवन यापन करना िाहिा है, िो उसे अपने जीवन के शवशवध क्षेत्रों ंमें क्ा करना िाशहए, इसका प्रशिरूप रामायि में शदया गया है।** रामायण में वचणपि प्रसंगों ंसे चिक्षा ले कर मनुष्य परम धाचमपक जीवन यापन के अनुकूल अपने जीवन को ढाल सकिा है।

ब्रह्मसूत्र में इन सभी का मूलभूि कारि दिाणया गया है। मनुष्य-जीवन का िरम लक्ष्य क्ा है, उसे इसमें बिलाया गया है। **यह कहिा है-"अशवनािी परम ित्त्व िाश्वि आनन्द की प्राच्चि ही जीवन का ध्येय है और ये सभी पदाथण इस ध्येय की प्राच्चि के शलए साधन हैं। इन सब साधनों ंसे परम धाम की प्राच्चि होिी है, जहाँ पहुँि कर दुःख िथा मृत्यु से संकुल इस संसार में पुनः नहीं ंआना पडिा।"** ब्रह्मसूत्र का अक्तन्तम मन्तव्य यह है चक धमप, त्याग िथा भक्ति-मागप से एक बार परब्रह्म की प्राक्तप्त कर लेने के पश्चाि् 'न पुनरावृचि' अथापि् जीव पुनीः वापस नहीं ंआिा। वह सदा-सवपदा के चलए असीम िेिना, अचवनािी सत्ता, िाश्वि आनन्द िथा चिरन्तन िाक्तन्त में अवक्तस्थि हो जािा है।

यही ध्येय है। **'यद्गत्वा न शनविणन्ते िद्धाम परमं मम'** ऐसा भगवान् गीिा में कहिे हैं। इस परम धाम में पहुाँि कर मनुष्य पुनीः इस संसार में वापस नहीं ंआिा।

यही परम पररपूणपिा का स्वरूप है। **'यो वै भूमा ित्सुखम्।'** यह भूमा ही इस जगि् में मनुष्य का ध्येय है। चजसके जान लेने पर अन्य कुछ जान लेने को िेष नहीं ंरहिा- **'यच्चस्मन् ज्ञािे सवणशमदं शवज्ञािं भवशि।"**[4]

चजसको प्राप्त कर लेने पर अन्य कोई प्राप्तव्य नहीं ंरहिा- **'यं लब्ध्वा िापरं लाभं मन्यिे नाशधकं ििः।5**

चजसकी प्राक्तप्त िथा अनन्त उपभोग के चलए हम यहााँ चनरन्तर प्रयास कर रहे हैं, ऐसी अलौचकक क्तस्थचि की मचहमा का, उसके परम ऐश्वयप का वणपन है। इस भााँचि वे हमें ध्येय िथा आदिप दोनों ंही प्रदान करिे हैं। **आत्म-साक्षात्कार हमारा ध्येय है। इनके साधन हैं गीिा में वशणणि त्याग, भागवि में बिायी गयी भच्चि, महाभारि का धमण िथा रामायि का आदिण जीवन।**

मनुष्य-जीवन का लक्ष्य िथा उद्देश्य िथा उनकी प्राक्तप्त के साधनों ंका स्पष्ट िथा गम्भीर रूपइनश्रेष्ठ धमपग्रन्थों ंमें से जानने को चमलिा है। यचद कोई साधक इन साधनों ंद्वारा ध्येय के प्राप्त्यथपप्रयास करने में ित्पर हो, िो उसके चलए व्यावहाररक सूिना भी प्राप्त होिी है।

---

4 जान कर चफर जानना रहिा न कुछ भी िेष है।

5 प्राप्त कर चजसको चक कुछ पाना न रहिा िेष है।।

शवजयादिमी प्राथणना

परमा मिाा भगविी की नवरात्र के नौ चदन की आराधना के अन्त में आने वाले **इस शवजयादिमी के महोत्सव में हम उनसे प्राथणना करें शक वह हमारे हृदय में बुच्चद्ध िथा सूमृशि-रूप में प्रकट हों।** हम सब मिाा जी से प्राथपना करें चक वह सूमृचि-रूप में इन महान् सत्यों को हमारे हृदय में सदा सजीव बनाये रखें चजन पर हमारा समूपूणप जीवन आधारिरि हो और चजसके आधार पर हमारे समस्त जीवन का गठन हो िथा इन महान् सत्यों को हम जीवन में िररिाथप करें; क्ोंचंक उनकी 'भ्राक्तन्ति–क्ति' िथा 'मायाि–क्ति' इिनी रहस्यमयी हैं चक हम इन सत्यों से सुपररचिि हैं, हम उनके चवषय में बारम्बार सुनिे हैं. और इससे हम उन्हें स्मरण रखने का प्रयास करें, िो भी न जाने कैसे एक पल में वह हमें चवसूमृि करा दिी हैं और इस वैषचयक जगि् की इन बाह्य वस्तुओं का ही बोध करािी हैं। हमारी िेिना के ऊपर मिाा जी का यह आवरण पडिे ही एक क्षण में ही इन महान् सत्यों को हम भूल जािे हैं। हम क्षचणक आनन्द प्रदान करने वाले पदार्थों में ही िन्मय बन जािे हैं और बाह्य जगि् के नाम-रूपों में बंध जािे हैं। अिः हम बार-बार प्राथपना करें- **"हे माँ! शवद्या-स्वरूप में हमारे पास प्रकट हों। िुम्हारे शवद्या-स्वरूप से हमारी िेिना प्रकाशिि हो।"**

अिः हमें करबद्ध िथा निमस्तक हो कर प्राथपना करनी िाचहए- **"हे माँ! िुम अपने िेजोमय स्वरूप से मुझमें प्रकट होओ और अपने अशवद्या माया-स्वरूप से मेरी रक्षा करो।"** मिाा जी प्रसन्न होंगी, वह िुष्ट होंगी और अपने िेजोमय नेत्रों से हमें देखेंगी, हमारे सामने मन्द क्तस्मि करेंगी। िब हमारी समस्त भ्राक्तन्त, समूपूणप दुःख, समग्र अंधकार का अन्त होगा और **हम मिाा जी के सच्चिदानन्द परब्रह्म-स्वरूप का दिणन पायेंगे।**

इन नौ चदनों में मिाा जी की चवचवध प्रकार से पूजा की गयी। आराधना में भजन, कीिपन, नृत्य, अलंकार, पूजा इत्याचद थे िथा पूजा के अंग के रूप में मिाा जी द्वारा प्रदान की हुई वाणी से उनकी 'वाक्शक्ति' के स्वरूप का हमने पूजन चकया व हमने िब्दों द्वारा उनकी आराधना करने का प्रयास चकया। इस चवजयादिमी के पचवत्र चदवस पर मिाा जी के िरण-कमलों में ये अल्प िब्द अचपपि कर प्राथपना करिे हैं-**"हे माँ, यह अल्प भी स्वीकार करो। िू प्रेम है। िू करुणा है। िू प्रकाश है। िू मुच्चि है। यह सब कहने का क्ा िात्पयण है? इिना ही कहना पयाणि होगा शक हे माँ, िू माँ है। अिः माँ-रूप में िुम्हारे िरणों में अशपणि प्रेम की यह भेंट स्वीकार करो और हम पर अपनी कृपा की वृशष्ट करो। हमारी ओर मुस्कानपूणण दृशष्टपाि कर अपनी अशवद्या माया का अन्धकार शवदूरिर कर दो। हमारे गुरुदेव के शदव्य िरणों में रहने वाले सभी साधकों को अज्ञान रूपी िेजोमय प्रकाश िथा सच्चिदानन्द का अक्षय सुख प्रदान करो।**

श्री राम की सवणव्यापकिा का गीि

ॐ श्री राम जय राम जय जय राम ॐ श्री
राम जय राम जय जय राम

पृथ्वी जल अक्तप्त वायु आकाश में हैं राम
हृदय मन प्राण और इक्तियों में है राम

श्वास रि नाडीऔरमक्तस्तष्कमेंहैंराम
बि् भाव चविारऔरकमपहैराम।।(श्रीराम)

भिीर राम बाहर राम सामने हैं राम।
ऊपर निी राम आगे-पीछे हैं राम
दायें राम बायें राम सवपत्र हैं राम
व्यापक राम चवभु राम पूणप हैं राम ।। (श्री राम...)

सि् हैं राम चिि् हैं राम आनन्द हैं राम
ित्तिन्त हैं राम िक्ति हैं राम ज्योचि हैं राम
पे्रम हैं राम दया है राम सौन्दयप है राम
आनन्द हैं राम प्रसन्निा है राम पचवत्रिा है राम।। (श्री राम...)

आश्रय हैं राम, सांत्वना राम, गचि राम साक्षी है राम
मिाा चपिा चमत्र बंिु गुरु हैं राम
मूल आधार स्रोि आदिप के ि लक्ष्य है राम। राम
सृचष्टकिाप पालनकिाप संहारकिाप मुक्तिदािा हैं राम ।।
(श्री राम...)

रिम लक्ष्य मानव का के वल एक हैं राम
श्रद्धा पे्रम उपासना से वरेण्य हैं राम
समचपपि भाव भक्ति से चमलिे हैं राम
अिपन वन्दन प्राथपना कीिपन से प्राप्य हैं राम ।। (श्री राम...)

श्री राम जय राम जय जय राम
श्रीरामजयरामजय जयराम।।(श्री राम...)

कोई भी अपररहायण नहीं!

कभी जब लगे आपको, महत्त्वपूणप हैं आप बहुि,
कभी जब आपका अहं हो अपने चिखर पर;
कभी जब समझने लगे चक सवपश्रेष्ठ हैं आप यहााँ,
कभी जब लगे आपको चक यहााँ से जाना आपका-

छोड जाएगा एक भरा न जा सकने वाला खालीपन।
बि ऐसा करें..... और देखें....
कैसे िूर करिा है यह आपका अचभमान;

एक बिपन लें और भर लें उसे पानी से
कलाई िक िुबा दें इसमें हाथ अपना;

चफर बाहर चनकालें, और गड्ढा चदखाई दे चजिना,
वह माप है चक खलेगा चकिना जाना आपका;

प्रवि करि वि ि◌ाहे चजिनी हलिल दें मिा,
चजिना ि◌ाहे पानी को दें उछाल....
चकनुतु रुकें, क्षण एक ही में देखेंगे आप,
कैसे यह चदखने लगा है पहले ही जैसा।

दिा है चिक्षा यह उदाहरण महान्,
करें! चजिना भी श्रेष्ठिम कर सकि हैं आप;
कर लें घमण्ड स्वयं पर भी, पर रखें याद,
नहीं ◌ंहै कोई भी इस संसार में अपररहायप!

अनूशदि

महामन्त्र

हरे राम हरे रामरामरामहरेहरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्णकृष्णकृष्णहरेहरे

नारी पुत्री संस्कार प्रदात्री

आज के वैज्ञाचनक इस बाि से पूणपिि: सहमि हैं चक जन्म के एक वषप पूवप से ही बि्िे का चिक्षण प्रारम्भ हो जाना ि◌ाचहए। **इसशलए हमारे पूवणजों ◌ंने गशभणिी मािा के वािावरि को मंगलमय बनाने का सुझाव शदया है शजसके शलए शपिा का सशक्रय सहयोग अपेशक्षि होिा है।** मािा-चपिा इस बाि का पूणपिया ज्ञान रखें और ध्यान करें चक अपनी सन्तान के भचवष्य चनमापण का बीजारोपण करने के चलए यह स्वचणपम सुअवसर है। **ऐसे समय का पूरा-पूरा सदुपयोग करें। सिररत्रि को आधार बना कर भावी सन्तशि के जीवन-शनमाणि हेिु सङ्ग्रन्थों ◌ंका अध्ययन करें। ि◌ुभ शिन्तन ही करें। सद्विाणएँ ही सुनें।**

बालक प्रह्लाद की उत्कृशष्ट की भच्चि के पीछे उन सदुपदेिों ◌ंका प्रभाव था जो उसकी (गशभणिी) मािा दैत्येश्वरी कयाधू को देवशषण नारद द्वारा सुनाये गये थे। वीर अशभमन्यु की कथा से भला कौन पररशिि न होगा? जब वह अपनी जननी सुभद्रा की कोख में ही था िब (शपिा) अजुणन अपनी सहधशमणिी सुभद्रा को रिकौिल सम्बन्धी अनेक कथा-वािाणएँ सुनाया करिे थे। उनमें से एक कथा ि◌क्रव्यूह-भेदन की भी थी। ि◌क्रव्यूह में प्रवि करने का रहस्य ि◌ो उस गभणथथ बालक (अशभमन्यु) ने इिनै ध्यान से सुना था शक ज्यों ◌ंका त्यों ◌ंउसे करके भी शदखा शदया।

मैं[6] अपनी ही व्यच्चिगि बाि कहूँ। मैं जो आज हूँ, उसके शलए महत्त्वपूिण कारि मेरी माँ हैं। सबसे बडी (पुत्र) सन्तान होने के कारि मेरी माँ मुझसे बहुि प्रेम करिी थीं।◌ं मुझे िी अपनी मिामयी माँ के शबना नीदं नहीं ◌ंआिी थी। मैं उनके कण्ठ से शलपट कर गीि गाने ि◌था कहाशनयाँ कहने के शलए उनसे अनुनय-शवनय शकया करिा था। वह भच्चिभाव से

6 मैंअथापिश्रीस्वामीचिदानन्दजीमहराज

सन्त रैदास और मीराबाई आशद के भजन गािीं; ं उत्तराखण्ड के सन्त-महिाओं ंकी प्ेरेरिाप्रद गाथाएूँ सुनिीं। ं सिो समय माूँ के द्वारा सुनायी गयी इन कथाओं ंसे ही ईश्वर-भच्चि के सुसंस्कार मैंने प्रा शकये।

आप सब एक साधारण नारी नहीं ंहैं। भारिीय नारी हैं। **भारिीयिा का आदिण है-सन्नारी और सन्नारी का आदिण है पशवत्रिा िथा मािृत्व का आदिण ।** इसचलए आपका व्यक्तित्व और व्यवहार भारिीय संसृ्कचि का जीवन्त प्रिीक होना िाचहए। यही सही ढंग है मािृ-भूचम, भारि-भूचम, जन्म-भूचम की उपासना का। भारि जड भूचम नहीं, ं यह जाग्रि िेिना है। इस िेिना को आपको ही जीचवि रखना है। **आपका परम सौभाग्य है शक आप भारि मािा की सन्तान हैं।** आपके द्वारा मानविा को मागप-दिपन चमलिा रहना िाचहए।

आप मािाएूँ ही िो अपनी सन्तान की प्रथम गुरु हैं। आपको ही उनकी प्रथम प्रशिशक्षका होने का दाशयत्व वहन करना है।

आपका प्रधान व्यक्तित्व मािृत्व का है। पत्नी िो आप मात्र एक ही पुरुष (पचि) के चलए हैं- अचि देविा की साक्षी में। आपका भाव सदा यह होना िाचहए चक आप मानव की मािा है; जगि् की जननी हैं। आपको एक सुमािा होने का उत्तरदाचयत्व चनभाना है। एक सुमािा अपने कोमल करों ंसे पालना झुलािे समय स्मरण रखिी है चक वह सन्तचि के भावी जीवन-चनमापण की नीवं को सुदृढ़ से सुदृढ़िर बनाने में प्रयत्निील है।

मानविा की मािा होने के नािे मानव का भैिव आपकी गोद में है। इस प्रकार समग्र शवश्व का भशवष्य आपके हाथ में है। मािाओं ंको िाशहए शक वे गभाणवथथा से ही, बिों ं की िैिावावथथा से ही जीवन का परम उद्देश्य- शवश्व बनु्धत्व, वसुधैव कुटुम्बकम्, शवश्व िाच्चन्त एवं शवश्व-कल्याि का पाठ पढ़ायें। यह सब आप ही के द्वारा सम्भव है।

चजन पररवारों ंमें सन्तानों ंको मािाओं ंका चनदेिन, चपिाओं ंका संरक्षण व्यक्तिगि रूप से चमलिा रहिा है। अथापि् जो मािा-चपिा अपने दाचयत्व को भली प्रकार समझिे हैं और सन्तानों ंके प्रत्येक चक्रया-कलाप का चनरीक्षण करिे हुए उन्ें युक्तिपूवपक प्ेरमपूवपक यथोचिि प्रचिक्षण देिे हैं **ऐसे ही आदिण पररवारों ंमें राष्ट्र शनमाणि की आधारशिलाएूँ रखी जािी हैं। इस िथ्य से प्रमाशिि होिा है शक पररवार राष्ट्र की पौधिाला है।**

चवदेियात्रा-काल में श्री स्वामी जी की पोप पाल षष्ठ सेसप्ेरम भेंट

१९ फरवरी १९६९ को पोप पाल षष्ठ िथा स्वामी जी की एक अधप ऄिसकीय भेंट हुई वेचटकन चसचट में। पोप इस भारिीय सन्त को देखिे ही प्रेम से इिना भर गये चक उन्होंने परम धमापध्यक्षीय प्राचधकार की प्राचयक औपिाररकिाओं ं को अलग रख कर उनके हाथों ं को पकड चलया िथा उन्हें भाव-प्रवणिा के साथ चिष्टािार का आदान-प्रदान करिे हुए देर िक पकडे रखा। उन्होंने स्वामी जी का अचभवादन भारिीय रीचि से चकया िथा स्वामी जी ने उसके प्रत्युत्तर में पाश्चात्य लोकािार के अनुसार गुरुदेव चिवानन्द के नाम में घुटने टेक कर उनका अचभवादन चकया। पोप ने चिवानन्द का नाम सुनिे ही सस्नेह गुनगुनाया: "मैंने आपके गुरुदेव के प्रिस्त आध्याचत्मक कायप के चवषय में सुना है। मैं आपके गुरुदेव के आध्याचत्मक कायप को बहुि महत्त्व देिा हाँ।" स्वामी जी ने पोप के प्रचि अपने प्रेम िथा सम्मान के प्रिीक-रूप में गुरुदेव की पुस्तक 'Bliss Divine' (चब्लस चिवाइन) उन्हें भेंट की। पोप ने भेंट को बडी ही प्रसन्निा से स्वीकार चकया और ऄिा दी चक वह उसे रुचिपूवपक पढ़ेंगे। वािापलाप-काल में उन्होंने बार-बार कहा: "मैं भारि को प्रेम करिा हाँ। मैं भारि को प्रेम करिा हाँ" िथा वािाप के एक िरण में कहा: "भारि अलौचकक देि है। मैं एक बार पुनीः भारि जाने की उत्सुकिा से प्रिीक्षा कर रहा हाँ।" उन्होंने कहा चक वह उन लोगों ं की प्रिंसा करिे हैं जो सत्य का साक्षात्कार कर लेने पर प्रेम-धमप के सुसमािार का प्रिार करने के चलए बाहर चनकल ऄिे हैं। स्वामी जी ने पोप को चदव्य जीवन संघ के प्रचिचनचध के रूप में ित्त्िेन्त, प्रेम िथा आध्याचत्मकिा के आदिों के प्रिार करने के अपने लक्ष्य के चवषय में अवगि कराया और उनसे ऄिीवापद माँगा। पोप ने स्वामी जी को ऄिीवापद चदया और उनके पचवत्र लक्ष्य में उनकी सफलिा की कामना की। स्वामी जी ने अपने सुझावों ं का िैयार चकया हुआ प्रारूप उन्हें चदया चजसमें कै थोचलक िीिप के ित्त्वावधान में रोम में सवपधमप-सम्मेलन आयोचजि करने के चलए पोप से अनुरोध चकया गया था। उन्होंने पोप को यह भी सुझाव चदया चक धाचमपक एकिा का सन्देि पहुाँिाने के चलए उन्हें एक चवश्व-यात्रा आरम्भ करनी िाचहए। पोप ने सुझाव का प्रेमपूवपक स्वागि चकया और कहा: "मैं उसे ध्यानपूवपक देखूाँगा।" उन्होंने उनके प्रेम के प्रचिदान में स्वामी जी को एक स्मारक पदक प्रदान चकया। वहााँ पर जो कचिपय व्यचक्त उपचस्थि थे, उन्हें स्पष्ट हो गया चक ख्रीस्त जगि् के परमधमापध्यक्ष स्वामी जी के आध्याचत्मक व्यचक्तत्व से अत्यचधक प्रभाचवि थे।

िच्चिन्त और आनन्द के एकमात्र स्रोि-भगवान्

आनन्दमय आत्मस्वरूप, परमचपिा परमात्मा की चदव्य अमर सन्तान!

कूजन्तं राम रामेशि मधुरं मधुराक्षरम्।
आरूह्य कशििाखां वन्दे वाल्मीशककोशकलम्।।

यहश्लोकपरम सौभाग्यिाली ऋचष वाल्मीचक के सम्बि में कहा गया है चक कचविा रूपी िाखापरबैठकरसुमधुर कण्ठ से मधुराक्षर राम-राम का उिारण करने बाले वाल्मीचक रूपी कोयलकोमेरानमस्कार।

यही श्लोक सन्त ुिलसीदास के चलए भी पररपूणपिया सही कहा जा सकिा है चजन्ोंनें अपनी मधुर लेखनीसेराम-नामकीमचहमाऔरराम-भक्तिकेमाधुयपको,अपनीसुन्दरअुिलनीय महाप्रख्याि महाकाव्य 'रामिररिमानस' के माध्यम से भारिवषप की सौभाग्यिाली जनिा िक पहुाँिाया। आप जानिे हैं चक सन्त ुिलसीदास प्रख्याि होने के पूवप कै से थे? इसी प्रकार वाल्मीचक, महचषप होने के पूवप कै से थे? क्ा थे? आप जानिे हैं चक वे एक संसारी की िरह प्रपंि में, मोह- ममिा के पाि में फंसे रहे। जब उन पर भगवत्कृपा हुई िो एक क्षण में उनके जीवन में क्राक्तन्तकारी पररविपन हो गया। ुिलसीदास जी को अपनी पत्नी द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ चजनके प्रचि ुिलसीदास जी की अत्यचधक आसक्ति थी। इसीचलए कहा है चक माया अचवद्या माया हो कर जीवात्मा को बन्धन में िालिी है चकन्तु वही माया जब चवद्या माया के रूप में प्रकट होिी है िो मोक्षदाचयनी, भगविी, अनुग्रहस्वरूपा बन जािी है। सन्त ुिलसीदास जी के जीवन में यह बाि प्रत्यक्ष प्रमाचणि है।

इस पररविपन के बाद सन्त ुिलसीदास चववेकी हो गये, अनासि बन गये और उनके चलए प्रपंि में रस नहीं रहा। मात्र इिना ही नहीं हुआ अचपिु जब उनमें जागृचि आयी, उनके जीवन में जमीन-आसमान का अन्तर आ गया। सब प्रपंि छोड कर परमाथप साधना में लग गये, महावैरागी हो गये और भगवान् के परम भि बन गये। उनके हृदय में प्रभु-दिपन की िीव्र आकांक्षा उत्पन्न हो गयी। चकस प्रकार प्रभु के दिपन हों, राि-चदन यही लौ उनके भीिर लगी रही। प्रभुप्रेमी बन करके उन्ोंनें अपना सम्पूणप जीवन प्रभु की खोज में लगा चदया। वे कहिे-"प्रभु दिपन कहााँ होगा ? कैसेहोगा?कौनहमेंमागपचदखायेगा?"

"शबन लाठी के शनकला अन्धा, राह कोई बिा दे रे!"औरअन्तमेंप्रभुदिपनहुआ, बाहर भी हुआ और भीिर भी हुआ।

कोई कहे वह है वृन्दावन में, कोई कहे है वन में।
लेशकन अन्त में देख सका, मैं उसको अपने मन में ।।

ुिलसीदास जी को रामकृपा प्राक्तप्त का रहस्य िथा प्रभु राम के दिपन प्राक्तप्त का रहस्य स्वयं साक्षाि् आंजनेय स्वामी ने बिाया। आप सभी यह जानिे हैं चक आंजनेय स्वामी अथापि् हनुमान् जी के चवषय में कहा जािा है चक जहााँ राम कथा होिी है, वहााँ भवन में जब कोई भी नहीं आया हो अथापि् सबसे पहले वे ही आिे हैं और कथा समाक्तप्त पर सभी श्रोिागणों के जाने के बाद अथापि् सबके आक्तखर में वे जािे हैं। यचद आप में सच्ची लगन व दृचष्ट हो िो आप हनुमान् जी के दिपन कर सकिे हैं। ुिलसीदास जी को इस बाि में पूणप चवश्वास था। वे कोई बुद्धू नहीं थे, पढ़े-चलखे थे, चवद्वान् थे, कचव और चित्रकार थे और युवा भी थे। चफर भी उनके हृदय में श्रद्धा और दृढ़ चवश्वास था और इसी श्रद्धा और चवश्वास के कारण उन्ोंनें इस बाि को पररपूणप रूपेण ग्रहण करके चनश्चय चकया चक मैं हनुमान् जी के दिपन करूाँगा। उन्ें चवश्वास था चक राम कथा प्रारम्भ होने के पूवप सबसे पहले आने वाले और सबसे अन्त में जाने वाले हनुमान् जी ही होंगें, चफर िाहे वह चकसी भी स्वरूप में हों। उन्ोंनें इस बाि का भावाथप चलया, माचमपक गूढाथप चलया। केवल स्थूलाथप नहीं चलया चक हनुमान् जी पूाँछ धारी कपीश्वर के रूप में ही आयेंगे। पहले दो-िीन चदन मात्र स्थूलाथप लेने के कारण उन्ोंनें समझा चक हनुमान् जी नहीं आये, क्ोंचक जो श्रोिागण आये हैं वे हम जैसे मानव ही हैं! चकन्तु चफर सोिा चक इस बाि में अवश्य कुछ ममप है। मैंने भूल की है।

इस बिा में मात्र इिना संकेि है चक सबसे पहले आने वाले और अन्त में जाने वाले हनुमान् जी हैं। इसीचलए आज मैं खाली भवन में बैठ कर देखूँगा चक कौन सबसे पहले आिा है और सबके
आक्तखर में जािा है। उन्होंने एक वृद्ध ब्राह्मण को सबसे पहले बैठे हुए देखा, उन्हें चवश्वास हो गया
और िुलसीदास जी ने उनके िरण पकड चलये। इस प्रकार बाि का माचमपक अथप लेने और पूणप श्रद्धा व चवश्वास के कारण िुलसीदास को हनुमान् जी के दिपन हुए।

कचलयुग में इस प्रकार की श्रद्धा और चवश्वास बहुि कम है-इसे अंधचवश्वास समझा जािा
है। हम नहीं जानिे हैं चक जो सूक्ष्म है, अदृश्य है, अव्यि है, वह अचधक सत्य है। जो दृश्य,
स्थूल और व्यि है, जो पहले नहीं रहा है, कुछ समय पूवप चजसका उद्भव हुआ है और कुछ
समय बाद िला जायेगा-वह असत्य है, निावान् है। इसीचलए कहा गया है- "Unseen is
real." अथाप्ि् अदृश्य ही सत्य है।

सन्त िुलसीदास ने संस्कृि भाषा की 'वाल्मीचक रामायण' को जन-जन िक पहुँिाने के
चलए इसे अवधी भाषा में कचविा रूप में चलखा। उनकी इस रिना पर वाराणसी के संस्कृिज्ञ
पक्तण्डिों ने टीका-चटप्पणी करिे हुए कहा चक यह पचवत्र रामायण सवपसाधारण के कान में नहीं
पडनी िाचहए। साधारण भाषा में चलखे जाने से यह पचवत्र ग्रन्थ अशुद्ध हो गया है-यह केवल
संस्कृि में चलखा जाना िाचहए। उन्होंने कहा चक इस चवषय में चनणपय वाराणसी के चवश्वनाथ मक्तन्दर
में होना िाचहए। पाण्डुचलचप मक्तन्दर में रख दी गयी। पूरी सभा बैठी और सन्त िुलसीदास भी बैठे।
िभी यह अद्भुि िमत्कार हुआ। पहले िो आँधी उठी, अंधकार छा गया। इसके बाद एक ही
क्षण में महान् प्रकाि हुआ, मक्तन्दर की सभी घक्तण्टयाँ स्वीः बजने लगीं, हनुमान् जी प्रकट हुए।
सभी ने देखा चक पाण्डुचलचप के ऊपर चत्रिूल की नोक से 'राम-राम' चलखा हुआ था। भगवान् ने
अपना पररपूणप आिीवापद और अनुग्रह देिे हुए कहा चक मैं इसको स्वीकार करिा हूँ। इसके बाद
पक्तण्डिों का अहंकार नम्रिा में पररवचिपि हो गया। उन्होंने िुलसीदास जी से कहा चक हम धन्य हुए
चक आपने ऐसा ग्रन्थ चदया है जो साक्षाि् भगवि् अनुग्रह को प्रमाचणि करिा है। **इसमें
मयाणदापुरुषोत्तम प्रभु श्री राम की शदव्य अविार लीला के साथ-साथ धमण, अथण, काम िथा
मोक्ष इन िारों पुरुषाथों की प्राच्चि का उपदेि भी है। इसके उत्तर भाग में काकभुिुण्डी व
गरुड के संवाद द्वारा शजिना ज्ञान दान शकया गया है वह अवणणनीय है।**

भगवान् राम अपने भिों की इच्छा पूरी करने के चलए पुनीः द्वापर युग में कृ ष्ण अविार ले
कर आिे हैं।वेहमेंयहीकहिेहैंचकइसमायाकीरिनामें,इसप्रपंिमेंहमअपने
पूवपजन्मकृि कमों के अनुसार सुख-दुीःख भोगने के चलए आये हैं; चकन्तु भगवान् ने हमें यहाँ
कमपफल भोगिे-भोगिे साधना करके मोक्ष प्राक्तप्त के चलए भेजा है। कमपफलप्राक्तप्त के चलए कमपफल
का भोग अचनवायप है; लेचकन मोक्षप्राक्तप्त के चलए जो साधना करनी है, वह हमारे अपने संकल्प
पर चनभपर है। इसको कहिे हैं सत्संकल्प, िुभेच्छा। यह िो प्रभु ने हमारे हाथ में सौंपा है उन्होंने
इसके चलए पररपूणप सामग्री दी है। हमें चविार िक्ति दी है, अनेक ग्रन्थों द्वारा ज्ञान का ऐश्वयप चदया
है, समय-समय पर हमें िेिावनी दी है चक-

अशनत्यमसुखं लोकशममं प्राप्य भजस्व माम्

(गीिा : ९-३३)

भगवान् कहिे हैं-हे मानव! यह अचनत्य प्रपंहै यहाँ सभी पदाथप, सब नाम रूप निावान् हैं, नश्वर हैं। भाष्यकार भगवान् आचद िंकरािायप अपने 'चववेक िूडामचण' नामक ग्रन्थ में कहिे हैं
चक जो भी देखा जािा है वह क्षचणक है, वह निावान् है। **"यद् दृश्यं िद् नश्यम्।"** पााँि ज्ञानेक्तियों ंके द्वारा जो भी हम अनुभव करिे हैं-वह निावान् है। केवल मात्र एक अचवनािी ित्त्व है-उसे प्रभु कहो, परब्रह्म कहो, आत्मा कहो या कुछ भी न कहो। उपचनषदों ंमें भी इिना कहा
है। उॐ ित्सि् न इदम्। ित्सि् यद् िद् बुक्तद्धमगाह्यिीक्तियम्। **वही सत्य है** यह नहीं। **वह सत्य, िाश्वि, अशवनािी ित्त्व इक्तियों ंसे परे है। उसी िाश्वि, अशवनािी, पररपूण ब्रह्म की अनुभूशि के द्वारा िाश्वि िाक्तन्त प्रिा होगी िथा शदव्य अविणनीय आनन्द प्रिा होगा। िाश्वि िाक्तन्त और आनन्द पररपूण ब्रह्म में है,** इस क्षचणक दृश्य संसार में नहीं ंहै।

अशनत्यमसुखं लोकशममं प्राप्य भजस्व माम्।

(गीिा : ९-३३)

भगवान् श्रीकृ ष्ण कहिे हैं चक मेरा भजन करने से िुम्हारा जन्म सफल होगा। प्रभु ऐसा क्ों ं कहिे हैं? 'मेरा भजन' का अथप क्ा है? यचद हम िाश्वि, अचनत्य वस्तु के पीछे जायेंगे िो उनके द्वारा हमें जो अनुभव प्राप्त होगा-वह भी क्षचणक व निावान् होगा। निावान् वस्तु के आधार पर जो अनुभव होिा है वह भी निावान् ही होिा है। इसी प्रकार चनत्य ित्त्व, िाश्वि ित्त्व से प्राप्त अनुभूचि भी चनत्य होगी, िाश्वि होगी और वह कभी नहीं ं चमटेगी। इसी अनुभूचि की प्राक्तप्त की आवश्यकिा है।

भगवान् को परम लक्ष्य मान कर यचद हम अपना समूपूणप जीवन साधना व भगवि्-भजन में लगा दें िो हम इस जीवन नामक खेल में जीि प्राप्त कर लेंगे। परमाथप की साधना का जीवन ही वास्तचवक है। यही िुलसीदास जी का विन है और यही पूणापविार जगद्गुरु श्रीकृ ष्ण का विन है। चजिने ग्रन्थ हैं चजिने सन्त हैं सबका,यही कहना है चक –

"In God Alone You Can Ultimately Find Heppiness.'

भगवान् ही आनन्द के स्रोि हैं, अन्यत्र कहीं ं सुख और आनन्द नहीं ं है।

जीवन के अक्तन्तम िरण संन्यास आश्रम में प्रवेि करने वाला व्यक्ति 'चवरज होम' नामक वह अनुष्ठान करिा है चजसके द्वारा संन्यास का वास्तचवक, अथप-ग्रहण सम्भव है।
पूवापश्रमों ंकी मोहग्रस्त एवं अहंकार-युि िेिना का आत्यक्तन्तक उच्छेद और सवपत्याग की प्रोज्ज्वल अचि में इच्छा, आसक्ति का भस्मीकरण ही सन्यास है। िारीररक िेिना की पररसमाक्तप्त िथा एक सवपथा नवीन एवं मचहमामयी िेिना के अभ्युदय को ही संन्यास कहिे

हैं। 'चवरज' होम' में संन्यासी की इक्तियों ंएवं उसके िरीर, मन, प्राण िथा अहंकार की आहुचि दे दी जािी है और ित्पश्चाि् वह अपने आपको िरीर और मन से पृथक् अमर आत्मा समझने लगिा है। त्याग का यह उिम रूप है। संन्यास में सवपत्याग की भावना चनचहि है।

संन्यास के वास्तचवक अथप िथा उसकी यधाथप गररमा को उन सन्तों ंके जीवन के सूक्ष्म एवं सजग चनरीक्षण द्वारा समझा जा सकिा है जो संन्यास में चनचहि उिम िथा उत्कृष्टिम ित्त्वों ंके जीवन्त प्रिीक हैं। ये लोग वास्तचवक संन्यास के मूिप रूप होिे हैं। चनचश्चि ही गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज वास्तचवक संन्यास के महानिम उदाहरण हैं। उनका प्रत्येक कायप वास्तचवक संन्यास का प्रोज्ज्वल उद्घाटन-किाप है।

-स्वामी शिदानन्द

छात्र, आध्याच्चिक साशहत्य और शिवानन्द

चवद्याचथपयों ंका नव-चनमापिा

प्रश् : चिवानन्द साचहत्य चवद्याचथपयों के चविार-पररष्कार में कहााँ िक सहायक हो सकिा है?

उत्तर : आध्याक्तत्मक साचहत्य चवद्याथी मात्र का ही नहीं,ं वरन् प्रत्येक व्यक्ति का सहायक एवं प्रेरक होिा है। िरीर की भााँचि मक्तस्तष्क को भी आहार की आवश्यकिा होिी है। यचद पिु को पिुिाला में ही सुन्दर िारा क्तखलाया जाये, िो वह गन्दी वसुतु िुगने के चलए बाहर नहीं ं जायेगा। इसी प्रकार यचद मन को उिचविार-रूपी खाद्य-पदाथप, जो चक आध्याक्तत्मक साचहत्य में प्रिुरिा से उपलब्ध है, प्राप्त हो जाये िो उसकी रुचि गन्दे और िुच्छ साचहत्य में न रहेगी।

चफर भी आप इस बाि को ध्यान में रखें चक यद्यचप आध्याक्तत्मक साचहत्य सदा ही सहायक हुआ करिा है; चकन्तु एक व्यक्ति उससे चकिना लाभाक्तन्वि होिा है, यह उस व्यक्ति की क्षमिा

पर चनभपर है। आपको भी उसी सीमा िक लाभ प्राप्त होगा जहााँ िक चक आपके नैचिक िररत्र का स्तर होगा, आध्यात्त्मक चवषय में आपकी चजिनी रुचि होगी और ग्रन्थ िथा उसके लेखक के प्रचि आपकी चजिनी श्रद्धा होगी। जो बाि समस्त आध्यात्त्मक साचहत्य के चलए सामान्य रूप से सत्य है,

वह चिवानन्दसाचहत्यपरभीरराथपहोिीहै।इसकेसाथहीचिवानन्दसाचहत्यमेंपाचपयों ंिथा नात्स्तकों ं को भी पररवचिपि करने की अपनी चविेषिा है और इसका प्रमुख कारण है लेखक की

चदव्य िक्ति। स्वामी जी का अभ्याह्वान बहुि ही प्रभाविाली है। उनकी लेखनिैली बहुि ही सरल

है। वे पाठक को सीधे सम्बोचधि करिे हैं और इस भााँचि अपने चदव्य उद्बोधक सन्देिों ं द्वारा उसके हृदय को स्पिप कर लेिे हैं। वे मचलनिा एवं दूषणों ं पर चवजय प्राप्त करने िथा चदव्य बनने के

व्यावहाररक उपाय एवं साधन बिलािे हैं। वे आपमें धैयप, आिा एवं प्रेरणा का संिार करिे हैं। वे छात्रों ं में उनके चवकास-स्तर के अनुरूप बाि करिे हैं और उनके एक परम चमत्र और चहिैषी के रूप में उन्हें सत्परामिप देिे हैं। वे उन्हें प्रोत्साचहि करने िथा उनमें नयी आिा एवं श्रेयेष्ठवाद का संिार करने के चलए सदा सीधा मागप अपनािे हैं। दोषारोपण िो वे कदाचिि् ही करिे हैं। इसचलए उनकी पुस्तकें नवयुवकों ं के चलए रोिक िथा उनके चविार और िररत्र के पररष्कार के चलए प्रभाविाली होिी हैं।

महाशवद्यालयों ंमें आध्याच्त्िक साशहत्य

प्रश्न् : क्या स्वामी जी की पुस्तकें महाचवद्यालय की पाठ्य पुस्तक के रूप में कहीं ंपर चनधापररि की गयी हैं ?

उत्तर : हााँ, िीनपुस्तकें:'चहन्दू धमप' (AllAboutHinduism), 'चवश्वके धमप' (World Religions) िथा 'वेदान्त सार' (Essence of Vedanta) कैलीफोचनपया के चवद्याचथपयों ंकीपाठ्यपुस्तकें हैं।दचक्षणभारिके महाचवद्यालयमें'जीवनमेंसफलिाके रहस्य' (SureWaysforSuccessinLifeandGodRealisation)पाठ्यपुस्तकके रूप में स्वीकृिकीगयीहै।मुझेयहदेखकरप्रसन्निाहोगीचकगुरुदेवकीपुस्तकें औरअचधक पाठिालाओं ंकेपाठ्यक्रमों ंमेंचनधापररिकीजायें;क्योंचकउनकीकृचियााँउद्बोधकऔरमानवको देवबनानेवालीहैं।यहसिहैचकआजकलचवद्याथीईश्वर-चवषयकलेखों ंकीअपेक्षाकहाचनयााँ अचधकपसन्द करिे हैं। इस पर स्वामी जीने 'आध्यात्त्मक कहाचनयााँ' (Spiritual Stories), 'दािपचनक कहाचनयााँ' (Philosophical Stories) िथा 'चदव्य कथायें' (DivineStories)आचदपुस्तकेंचलखीहैं।इन्हेंबालकऔरबाचलकाएाँबहुिहीपसन्दकरिे हैं। हमारी छात्र ,आध्यात्त्मकसाचहत्यऔरचिवानन्दचिक्षा-संस्थाओं ंके पाठ्यक्रमों ंमेंयेपुस्तकें रखने योग्य हैं।

आधुशनक शवद्याशथपयों ंके शलए पुस्तकें

प्रश्न् :आधुचनक कालेजों ं के चवद्याचथपयों ंके चलए होनी आप गुरु महाराज की कौन-सी पुस्तकों ंकाअचभस्ताव करिे हैं।

उत्तर : मैं ि ो यही कहाँगा चक कालेज के चवद्याचथपयों ंको स्वामी जी की पुस्तकें अचधक से अचधक पढ़नी ाचहए। चिवानन्द साचहत्य उन् भय, क्रोधाचद दुगुपणों ंपर चवजय प्राप्त करने, दृढ़ मनोबल को चवकचसि करने ि था जीवन के यथाथप उद्देश्य को समझने में सहायक होगा। वैसे ि ो गुरुदेव ने लगभग ३०० पुस्तकें चलखी हैं। चजनमें से चवद्याचथपयों ंको कम-से-कम चनम्नांचकि पुस्तकें पढ़ने का प्रयास करना ि ाचहए। इनमें बालक और बाचलकाओं ंके चलए स्वामी जी के उपदिों ंका सार है।

१. जीवन में सफलिा के रहस्य और भगवत्साक्षात्कार
२. चवद्याथी जीवन में सफलिा
३. ब्रह्मियप साधना
४. नैचिक चिक्षा
५. मन और उसका चनग्रह
६. आध्याक्तत्मक पुनरुत्थान
७. पे्ररेक सनेिदे
८. सद्गुणों ंके अजपन और दुगुपणों ंके चनवारण केउपाय
९. क्रोध पर चवजय
१०. भय पर चवजय
११. प्राथचमक चिचकत्सा
१२. आध्याक्तत्मक चिक्षावली
१३. चिवानन्द उपदिामृिम्
१४. चवद्याचथपयों ंके चलए भगवद्गीिा
१५. भगवद्गीिा की नैचिक चिक्षा
१६. चवश्वि–ाक्तन्त
१७. चवश्व के धमप
१८. आिरणीय उपदिे

ाप्रत्येकक चवद्याथीकेपासइनपुस्तकों ाचहए। ि ेष पुस्तकें सामूचहक अध्ययन के चलए रखीजासकिीहैं।चवद्याचथपयों ंकोअध्ययन-कक्षस्थाचपि करना ि ाचहए। ऐसे अध्ययन कक्षों ं को ि ाचहए,चकवेचकसीपुस्तकालयसेएकपुस्तकचनकाललायें और अपनी पाठिाला की दैचनक बैठकों ंमेंक्रचमकरूपसेउसेपढ़ेंऔरइसभाँाचिउसपुस्तक को समाप्त कर ि ालें। ि त्पश्चाि् दूसरीपुस्तकप्रारम्भकीजासकिीहै।इसभाँाचिअपनेकालेज-जीवन के एक या दो वषप में वे अपनीचवश्वचवद्यालयकीचिक्षाकेसाथ-साथइसप्रकारकेआध्याक्तत्मक अध्ययन से अपने को प्रिुर ज्ञान-सम्पन्न बना सकिे हैं।

उपदि-सम्बन्धी एक आवश्यक प्रश्

प्रश् : चवद्याचथपयों ंके चलए गुरुदेव के उपदिों ंका सार क्ा है?

उत्तर : यद्यचप मैं चवद्याचथपयों ंि था युवकों ंके चलए गुरुदेव के उपदिों ंका सम्भविया सारणीकरण नहीं ंकर सकूाँगा, चकन्तु मैं आपको उनकी मुख्य-मुख्य चिक्षाओं ंको बिलाने का अवश्यमेव प्रयत्न करूाँगा।

(क) चवद्याचथपयों ंका सवपप्रथम किपव्य अपना अध्ययन होना िाचहए।

(ख) उनें् अपने मािा-चपिा, चिक्षक िथा अपने से बडों ंका सम्मान करना िाचहए।

(ग) उनें् कुसंगचि से बहुि दूर रहना िाचहए; क्योंचक मनुष्य अपने चमत्रों ंके अनुरूप ही बन जािा है। कुसंगचि में रहने की अपेक्षा एकान्त सेवन श्ेरेयस्कर है।

(घ) चवद्याचथपयों ंको आत्म-संयम का अभ्यास करना िाचहए, आत्म-अनुिासन रखना िाचहए और आत्म-चवश्वास प्रकट करना िाचहए। ये सद्गुण न केवल उनके कालेज-जीवन में ही लाभदायक होंगें, वरन् उसके पश्चाि् भी जीवन के प्रत्ेयेक क्ेषेत्र में उनें् फलप्रद होंगें।

(ङ) चवद्याचथपयों ंको िाचहए चक वे सरल जीवन व्यिीि करें और अपनी उत्ृकृष्ट् राष्ट्रीय एवं सांस्ृकृचिक परम्पराओं ंका यथाविि् पालन करें। दूसरों ंकी नकल करना छोड दें। यह चकिने खेद की बाि है चक हमारे छात्रगण अपने पूवपजों ंसे प्राप्त अपनी भव्य संस्ृकृचि की उपेक्षा कर पाश्चात्य फैिन और जीवनयापन को अपना रहे हैं।

(ि) चवद्याचथपयों ंको िाचहए चक वे चनधपन, बीमार और असहाय लोगों ंकी सेवा करें। इससे उनमें चनष्कामिा, दया, सहनिीलिा आचद सद्गुणों ंका चवकास होगा और प्रौढ़ होने पर वे अपने देि के सुयोग्य नागररक बन सकेंगे।

(छ) चवद्याचथपयों ंको चनयचमि िथा समयचनष्ठ होना िाचहए। युवावस्था अत्यन्त मूल्यवान् है, इसे यों ंही नष्ट् नहीं ंकरना िाचहए।

(ज) चवद्याचथपयों ंको अपने स्वास्थ्य की ओर चविेष ध्यान देना िाचहए। इसके चलए उनें् िाचहए चक वे सात्त्विक आहार का सेवन करें, आसन और व्यायाम करें िथा खेल में सक्तम्मचलि हों। ं युवा छात्र और छात्राओं ंके चलए खेल का मैदान उिना ही आवश्यक है चजिना चक अध्ययन-कक्ष। 'काम के समय काम करो, खेल के समय खेलो; क्योंचक आनन्द और सुख का यही मागप है।' चवद्याचथपयों ंको नैचिक िुद्धिा और ब्रह्मियप में संक्तस्थि होना िाचहए।

(झ) छात्रों ंको सदा भगवान् का स्मरण करना िाचहए। उनें् चनत्य प्राथपना करनी िाचहए। प्रत्ेयेक कायप को आरम्भ और समाप्त करिे समय भगवान् को स्मरण करना िाचहए।

इससे ऐसा भाव न बना लीचजए चक स्वामी जी चवद्याचथपयों ंके प्रचि बहुि ही कठोर हैं। मैंने यहााँ जो कुछ कहा है, वह प्रायीः अन्य लोगों ंपर भी लागू होिा है। स्वामी जी यचद कभी भी पक्ष लेिे हैं िो नवयुवकों ंका ही। उनके प्रचि अत्यचधक प्ेरेम के कारण िथा उनके कल्याण के चविार से ही वे उनें् ये सम्मचि देिे हैं। अिीः उनकी चिक्षाओं ंका अक्षरिीः पालन करना आपके चलए सवपथा उचिि ही है।

स्वामी जी द्वारा रचिि 'अठारह सद्गुणों ंका गीि' कण्ठस्थ कर लीचजए। युवकों ंके चलए उनके उपदेिों ंका सार अल्प िब्दों ंमें ही उपलब्ध हो जायेगा।

शिवानन्द और शवश्व–ाच्चन्त

प्रश् : क्ा गुरुदेव ने अपने ग्रन्थों ंमें चवश्व–ात्तन्त पर भी कुछ प्रकाि िाला है? स्वामी जी! चिवानन्द साचहत्य ने चवश्व िात्तन्त के संस्थापन कायप में कहाँ िक योगदान चदया है?

उत्तर :हाँ,गुरुदेवनेचवश्व–ात्तन्तऔरराष्ट्रों ंकीमैत्रीकाकेवलअपनेग्रन्थों ंमेंवणपनही नहीं ं चकया है, वरन् इस चवषय पर एक बृहदाकार पुस्तक ही चलख िाली है। पुस्तक का नाम ही 'चवश्व–ात्तन्त' है। स्वामी जी ऐसी अनेकों ं संस्थाओं ं के चनरन्तर सम्पकप में रहे हैं चजनका कायप ही चवश्व–ात्तन्त स्थापन में सहयोग देना है। स्वामी जी इन संस्थाओं ं को अपना असाम्प्रदाचयक साचहत्य चनमूपल्य भेजिे रहिे हैं और साथ ही चविेष अवसरों ं पर अपना पे्ररणादायी सने्दि भी भेजिे हैं। इस भााँचि उनका िात्तन्त-संदेि चवश्व भर में प्रसाररि होिा है।

आध्यात्तत्मकिा और चदव्य जीवन पर आधाररि स्वामी जी का िात्तन्त, पे्रम िथा एकिा का सने्दि यूरोप, जापान िथा उन देिों ं में चविेष सराहना प्राप्त कर िुका है चजनें् गि चवश्व युद्ध में भारी क्षचि उठानी पडी थी। अपने साचहत्य द्वारा लोगों ं को प्रभाचवि करने के अचिररि वे कभी-कभी उनें् एक सामान्य मंच पर एकचत्रि करिे हैं चजससे चक उनके पारस्पररक ििथिोिो से इसकी थिा इसी प्रकार की अन्य समस्याओं ं का समाधान खोजा जा सके । श्री स्वामी चिवानन्द जी के सभी उपदेि अचहंसा, भ्रािृत्व भावना, चवश्व-पे्रम, चनष्काम सेवा, करुणा, भलाई और क्षमा के आदिप पर चनरन्तरबलदेिेहैं।वेओजपूणपिब्दों ंमेंधाचमपकजीवन,समिाऔरअत्तखलमानवजाचिमें सहयोग के आदिप का समथपन करिे हैं। इसी भााँचि उनके उपदेि िात्तन्त और सद्भावना का मागप प्रिस्त करिे हैं।

शवद्याशथणयों ंको उपदेि

आप मािृभूचम के भचवष्य की आिा हैं। आप कल के नागररक हैं। आपको हमेिा जीवन के लक्ष्य के चवषय में सिकप रहना िाचहए िथा उसे प्राप्त करने के चलए जीना िाचहए। **जीवन का लक्ष्य है-सभी प्रकार के दु:खों ंसे मुच्चि अथाणि् कैवल्-च्चथथशि अथवा जन्म-मृत्ुयु के िक्र से मुच्चि। सुसंयशमि जीवन यापन करें। आध्याच्चिक उन्नशि का आधार है नैशिक बल ।** नैचिक संस्कृचि आध्यात्तत्मक साधना का अंग है। ब्रह्मियप व्रि रखें। प्रािीनकाल में बहुि से ऋचष-मुचनयों ंने ब्रह्मियप पालन करने से अमरत्व प्राप्त चकया। ब्रह्मियप ही नयी स्फूचिप, बल, सजीविा, जीवन में सफलिा िथा अन्तिः परम िात्तन्त का स्रोि है। ब्रह्मियप प्राण–त्ति है। प्राण–त्ति की रक्षा करने हेिु चविेष सावधानी रखें। ब्रह्मियप से सुन्दर स्वास्थ्य, आन्तररक िात्तन्त, मन की िात्तन्त िथा दीघापयु प्राप्त होिी है। यह मत्तस्तष्क िथा नाडी–ि्ि को स्फूचिप देिा है और मानचसक िथा िारीररक ित्ति का संिय करने में सहायिा प्रदान करिा है। इससे ित्ति िथा साहस की वृत्तद्ध होिी है। जीवन के दैचनक संघषों में यह कचठनाइयों ंको झेलने की सामथ्यप प्रदान करिा है। एक पूणप ब्रह्मिारी ज्ञानदेव की िरह पूरे चवश्व को चहला सकिा है िथा प्रकृचि और पंित्त्वों ंपर चनयिण स्थाचपि कर सकिा है।

वेदों ंिथा मन्त्र–च्चि में शवश्वास करें। शनत्य ध्यान का अभ्यास करें। साच्चत्त्वक भोजन लें। अशधक न खायें। अपनी त्रुशटयों ंके शलए पश्चात्ताप करें। अपने दोषों ंको से्वच्छा से स्वीकार

करें। झूठे बहाने बना कर या झूठ बोल कर अपने दोषों ंको कभी भी न शछपायें। प्रकृचि के चनयमों ंका पालन करें। चनत्य पयापप्त िारीररक व्यायाम करें। चनचश्चि समय पर अपने चनचश्चि किपव्य-कमों को करें, 'सादा जीवन, उिचविार' अपनायें। िुच्छ नकल का पररत्याग करें। बुरी संगचि से प्राप्त बुरे संस्कारों ंको पूणपिः धो दें। उपचनषद्, ब्रह्मसूत्र, योगवाचसष्ठ िथा िास्त्रों ंका स्वाध्याय करें। इन्हीं ंग्रन्थों ंके स्वाध्याय से आपको सिा सुख िथा िाक्तन्त चमलेगी। पाश्चात्य दािपचनकों ं ने यह घोषणा की है-**"हम जन्म िथा धमण से ईसाई हैं, लेशकन हमें मन की िाच्चन्त िथा आिा का सुख पूवण के द्रष्टाओं ंके उपशनषदों ंमें ही शमलिा है।" सबके साथ मैत्री-भाव से शविरि करें। सबको प्यार करें। सबकी सेवा करें। अपने में अनुकूलनिीलिा िथा शनथस्वाथण सेवा शवकशसि करें। अथक सेवा से दूसरों ंके हृदय में प्रवेि करें। यही अद्वैि एकिा की वास्तशवक प्राच्चि है।**

*****

रित्र ही िच्चि है

रित्र ही िक्ति है। िररत्रहीनिा व्यावहाररक दृचष्ट् से मृत्यु ही है। **कमण से िररत्र बनिा है। रित्र सेइच्छा–च्चि बनिी है।**

गुणवान् व्यक्तियों ंका आभूषण िररत्र है। स्त्री का वास्तचवक आभूषण िथा सुरक्षा िररत्र ही है।

आपके चविार िथा कायप आपके िररत्र और भचवष्य का चनमापण करिे हैं। जैसा आप सोिेंगे, वैसे ही आप बनेंगे। यचद आप श्रेष्ठ चविारों ंका चिन्तन करेंगे िो आप श्रेष्ठ बनेंगे िथा आपमें अच्छे िररत्र का चवकास होगा। यचद आप बुरा सोिेंगे िो आपका जन्म बुरे िररत्र के साथ होगा, आपमें बुरा िररत्र पैदा होगा। यह प्रकृचि का अकाय चनयम है। इसी क्षण से अपने चिन्तन का िरीका िथा मानचसक दृचष्ट्कोण बदल िालें। सम्यक् चिन्तन चवकचसि करें। िुद्ध सात्त्विक इच्छा रखें। चविारों ंके रूपान्तरण से आपका जीवन रूपान्तररि हो जायेगा।

अच्छे कमप करें। मन में चदव्य िथा उदात्त चविारों ंको प्रश्रय दें और अपने िररत्र का चनमापण करें। एकमात्र यही िुद्ध पचवत्र इच्छा रखें चक आप जन्म-मृत्यु के िक्र से मुक्ति पा जायें। घृणा को आमूल नष्ट् कर दें। प्रेम और करुणा की आभा फैलायें। केवल िुद्ध प्रेम ही घृणा िथा िुरिा पर चवजयी हो सकिा है। इस चवश्व में सिा प्रेम ही एकमात्र सबसे महान् एकिाकारी िथा मोिक िक्ति है। सभी वस्तुओं ंमें आत्मा की उपक्तस्थचि का अनुभव करें।

आपका िररत्र आपके मन द्वारा पोचषि चविारों ंकी िथा अपने आदिों के मानचसक चित्रों ं की गुणवत्ता पर चनभपर है। यचद आपके चविार चनकृष्ट् हैं िो आपका िररत्र खराब होगा। यचद आपके मन में श्रेष्ट् चविार और उदात्त आदिों के पचवत्र चित्र हैं िो आपका िररत्र महान् होगा।

आपका व्यक्तित्व ि ुम्बक की िरह आकषपक बन जायेगा। आप आनन्द, िक्ति िथा िाक्तन्त के कि-चबनदु हो जायेंगे। यचद आप अपने अन्दर चदव्य चविारों ं को चवकचसि करने का अभ्यास करें िो सभीचनम्नचविारधीरे-धीरेस्वी:नष्टहोजायेंगे।चजसप्रकारसूयपके समक्षअंिकारनहीं ंचटक सकिा, उसी प्रकार चदव्य चविारों ं के समक्ष बुरे चबिार नहीं ं चटक सकिे। चवद्यालयों ं में नैचिक चिक्षा के प्रचिक्षण से अचधक महत्त्वपूणप है बिों ं का घर में प्रचिक्षण। यचद माँ-बाप अपने बिों ं के िररत्र के चवकास का ध्यान रखिे हैं िो नैचिक चिक्षा का प्रभाव उपजाऊ भूचम में अच्छे बीज बोने की िरह होगा। जब बिे युवावस्था में प्रवेि करेंगे िब वे आदिप मानव बनेंगे।

मािा-चपिा ही एकमात्र अपने बिों ं के िररत्र के चलए उत्तरदायी हैं। यचद मािा-चपिा धाचमपक नहीं ं हैं िो उनके बिे भी धाचमपक नहीं ं होंगे । अिः मािा-चपिाओं ं का यह परम किपव्य है चक वे अपने बिों ं को बाल्यावस्था में धाचमपक प्रचिक्षण प्रदान करें! उन्हें स्वयं चदव्य जीवन व्यिीि करना िाचहए। जब बाल्यावस्था में धाचमपक संस्कार िाले जािे हैं िो उनकी जडें बहुि गहरी होिी है िथावेपुक्तष्पिऔरपल्लचविहोकरयुवावस्थामेंफलदेिेहैं।

सद्गुण से बढ़ कर कोई भी धमप नहीं ं है। सद्गुण से ही िाक्तन्त चमलिी है। सद्गुण समृक्तद्ध िथाजीवनसेभीबढ़करहै।**सद्गुि ही आनन्द का द्वार है।** अिः सदैवगुणवान्बनें।सद्गुण आपके जीवन का मुख्य आधार हो!

****

गुरु अमरिील है

इंग्लैण्ड के राष्टि में एक महान् परम्परा है चक 'चसंहासन कभी ररि नहीं ंरहेगा दि कभी भी चबना राजा के नहीं ंरह सकिा।' मरणासन्न राजा के अक्तन्तम श्वास लिे ही ििुरन्त
उत्तराचधकारी को राजा बना चदया जािा है और घोषणा की जािी है-"राजा की मृत्युु हो गयी है।
राजा की दीघापयु हो!" यह अयुिाभास लगिा है, पर नहीं ं: राजा की मृत्युु हो गयी है, पर राजा अनुपक्तस्थि नहीं ंहै, क्ोंचंक उत्तराचधकारी ने उस राज्य के राजा के रूप में स्थान पा चलया
है।

इस घोषणा पर चविार करो, "राजा की मृत्युु हो गयी है, राजा की दीघापयु हो।" जब
लौचकक व्यवस्था में राजा एक क्षण के चलए भी अनुपक्तस्थि नहीं ंरहिा, िो क्ा आध्याक्तत्मक क्षेत्र में
इस प्रकार का अभाव रह सकिा है? क्ा उनकी उपक्तस्थचि की खोज होिी है? क्ा हम इस सोि
के चलए हैं चक हम चबना गुरु के हैं, गुरु का देहावसान हो गया है? गुरु था और अब नहीं ंहै?
क्ा हम इंग्लैण्ड की सकारात्मक परम्परा से चकसी प्रकार कम है? क्ा लौचकक िि एक पग
आगे है और हम एक पग पीछे हैं? यह चिन्तन हास्यास्पद है चक ऐसा भी हो सकिा है।

गुरु कभी गिप्राण नहीं ंहो सकिे; क्ोंचंक वह अपने चिष्यों ंके माध्यम से जीिे हैं। वह
इसीचलए इिना जीवन्त हैं चक वह अपने आदिों, अपने चविार, दृचष्ट-प्रवृचत्त और धमपबुक्तद्ध के रूप
में अपने चिष्यों ंके माध्यम से अपना जीवन व्यिीि करिे हैं। जीवन के लक्ष्यों ंऔर उद्देश्यों ंको
पाने के चलए चनरन्तर अथक पररश्रम करिे रह कर चिष्य अपने गुरु को जीचवि रखिे हैं। मोमबत्ती
का िमकिा हुआ प्रकाि दूसरी मोमबत्ती को प्रकाि देने पर उसका प्रकाि कभी कम नहीं ंहोिा।
यह स्वयं बुझ कर कभी दूसरी मोमबत्ती के माध्यम से पूणप प्रकाि के साथ प्रकाचिि रहिी है।

इसका ध्यानपूवपक मनन करो। िुम ही वह व्यक्ति हो चजसके माध्यम से गुरु जीचवि हैं। यह
गौरव की बाि है। िुम्हें यह सुचवधा चमली है। यह एक बडे सौभाग्य की बाि है। यह एक
उत्तरदाचयत्व भी है; यह एक किपव्य है; यह एक सत्य है चजसे समझ कर उसे सदा मन में
रखना है- "मुझे उसी प्रकार का जीवन-चनवापह करना िाचहए, जैसी गुरु ने मुझे चिक्षा दी थी।
मुझे उसी प्रकार का जीवन जीना िाचहए, जैसा मेरे गुरु जीिे थे।" पर...

चकसी भी िरह से 'लेचकन' िो सदा रहिा ही है। िुम अपनी पहली घोषणा को चफर से
'लेचकन' नहीं ंकर सकिे; लेचकन गुरुदेव ने वस्तुिुः स्वयं अनेकों ंबार कहा है-"जो मैंने चकया है,
उसे मि करो; पर जैसा मैं कहिा हूँ, वैसा करो। जो मैं िुमसे कहिा हूँ, वैसा करो। मैंने िुम्हें
कुछ चनदेि चदये हैं, उनका पालन करो। मेरी नकल करने की आवश्यकिा नहीं ंहै। िुम मेरी
समानिा कर सकिे हो। िुम मेरे स्वभाव के अनुरूप अपना स्वभाव, िररत्र, मेरे- जैसी उदात्त
आदिप चदनियाप, मेरे-जैसा आध्याक्तत्मक व्यक्तित्व बना सकिे हो। पर मेरी नकल मि करो। स्पधाप
करो। चजज्ञासा करो।"

नकल करना और स्पधाप करना, यह दो िब्द हैं। प्रत्येक चिष्य को इन दोनों ंके बीि के
भेद को समझ लेना िाचहए। िंकरािायप ने अपने चसर पर अपने कपडे को एक प्रकार से रखा था।
आज बहुि से व्यक्ति उस प्रकार से अपने चसर पर कपडा रख कर उनकी नकल करिे हैं। इसे
चिष्यत्व नहीं ंकहिे, इसे आध्याक्तत्मक समानिा नहीं ंकह सकिे; उन्होंने अपनी पुस्तक
'चववेकिूडामचण' और 'आत्मबोध' चलखिे समय ऐसा नहीं ंसोिा होगा चक वह उसे इस रूप में

लेंगे। उन्होंनें पहनावे की नकल करने के चलए नहीं ंचलखा होगा। यचद इस रूप में गुरु के समान रहने का चनश्चय करेंगे, ि ो आपको बुरी ि रह से असफल होना पडेगा।

गुरु ि ुम्हारे हृदय में शनवास करि हैं, उनका उदात्त आिीवाणद, उनकी आध्याच्त्िक शिक्षाओं ंकी गूँज ि ुम्हें अपने भीिर आध्याच्त्िक शवकास के रूप में करनी ि ाशहए। उनके ररत्र और आिरि की उदात्तिा ि ुम्हारे मन में बसनी ि ाशहए। उनका शदव्य स्वभाव ि था जैसा शदव्य जीवन उन्होंनें शजया है, वैसे ही ि ुम्हें रहने के शलए अपना मन बनाना ि ाशहए। ि ुम्हें देख कर ही ि ुम्हारे गुरु के देवत्व की पहिान हो जाये, ऐसा जीवन व्यिीि करना ि ाशहए। गुरुदेव ने इसीशलए कहा है-"मैंने ि ुमसे

जो-कुछ कहा है, वह करो। वह मि करो जो मैं करिा था; क्योंशक मैं उसे दूसरे स्तर से करिा था।" गुरुदेव ने यह भी कहा था- "आदर करने की अपेक्षा आज्ञा-पालन अच्छा 31 ^ 11 इसी प्रकार यशद शिष्य अनुकरि और स्पधाण दोनों ंके भेद को जानिा है, ि था उसे उत्साह के साथ अनुकरि और आज्ञा-पालन करना ि ाशहए, ि ब गुरु का देहावसान कभी नहीं ंहोगा। जब ि क आप सब उनके जैसे सि संघषपरि, सदा अपने चविारों,ं ि ब्दों ंऔर कायों से उनकी चिक्षाओं ंके साररत्त्व को ग्रहण करके चदव्य जीवन के पथ पर ि लने के चलए त्पिर हैं, ि ब ि क गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी जीचवि रहेंगे।

कौन कह सकिा है शक स्वामी शिवानन्द जी थे और अब नहीं ंहैं। वह हैं ि था सदा रहेंगे। क्यों?ं क्योंशक आप सभी उनका प्रशिशनशधत्व कर रहे हैं, उनका प्रकाि अब आपका प्रकाि है; उनका उत्तम पक्ष, उनका शदव्य जीवन सभी कुछ अब आपका अंग है। इसशलए वह शजस प्रकार से रहिे थे, उसी स्वरूप को उनके शिष्य, सैकडों–सहस्रों ंव्यच्त्ियों ंको उस प्रकार से रहने की प्रेरिा दे रहे हैं।

यह एक बहुि बडी सुचवधा है। यह एक महान् गुरु-सेवा है। आप भी इसी प्रकार से स्वयं को व्यस्त रखें। ईश्वर करे, आप हर ि रण पर चववेक के साथ उत्साहपूवपक उनका अनुकरण करिे रहें। ऐसा न हो चक उनकी नकल करिे हुए कहीं ंमागप से भटक न जायें।

यचद इंग्लैण्ड के चलए राजा नहीं ंमर सकिा, ि ो **आध्याच्त्िक संसार में गुरु भी कभी नहीं ंमर सकिा। गुरु अमरिीय है। शिष्य गुरु के प्रकाि को सुरशक्षि रखिा है। गुरु की प्रेरिा, ज्ञान की शिक्षाएँ अनन्त काल ि क मानव-समाज के सभी मनुष्यों ंमें पूरी ि रह से गुरु को उपच्स्थि रखेंगी।**

गुरुअपने प्रत्येक चिष्य केमाध्यमसेप्रकाचिहोकरजीचविरहिे हैं। इसीचलए आप सभीस्वामीचिवानन्द जी के आदिपऔरचदव्यजीवनकेजीचविप्रकािहैं। ईश्वर करे, परमेश्वर औरगुरुदेवकी कृपा और आिीवापदसेआपबडेप्रभाविालीढंगसेपूणपिया सफलिा के साथ सारीमानवजाचि के कल्याणाथप ऐसाकरनेमेंसफलहों !ं

* ** *

गुरुदेव ने हमें क्ा शिक्षा दी!

चवचभन्न गुरु आ कर चभन्न-चभन्न प्रकार की प्रणाचलयााँ बिाो और पथ दिचि हैं। कोई कीिपन का मागप बिाो हैं, कोई िक्तिपा करिे हैं, कुछ कुण्डचलनीयोग, कई अन्य आत्म-संयम, प्राथपना, उपासना, स्वाध्याय और ध्यान के पारम्पररक पथ दिापिे हैं। अब हमारे समक्ष प्रश्न हो सकिा है-"हमारे चलए गुरुदेव कौन-सा मागप बिलािे हैं और हमें उनके जीवन िथा उनके ऊजापस्पद व्यक्तित्व को चकस भााँचि अपने व्यक्तिगि जीवन में अचभव्यि करना िाचहए?"

इस चवषय में गुरुदेव ने अत्यन्त स्पष्ट् रूप से हमारे चलए एक चनचश्चि मागप प्रस्तुि चकया है। उन्ोंनें कहा- **"आप शदव्य हैं; अिः जो आप हैं, वही रहें। अपनी शदव्यिा के प्रशि जागरूक रहें और शदव्यिापूवपक जीवन शजयें। आपका मूल स्रोि शदव्य है; अिः शदव्यानुभूशि को ही अपना परम लक्ष्य बनायें। जहाँ से आप आये हैं, उसी को शनशश्चि रूप से आपने पुनः प्राि करना है। यह आपका प्रारि है और यही आपकी महान् अच्चन्तम पररशशि भी है।"**

अिः उन्ोंनें 'चदव्य' और 'चदव्यिा' िब्ों पर बल चदया। चनचश्चि रूप से आप चदव्य हैं। अक्तस्थ-मांस का चपंजरा नहीं हैं आप। यह अिुद्ध, िंिल, पररविपनिील और अक्तस्थर मन भी आप नहीं हैं। न ही आप यह सीचमि, कभी युक्तिसंगि और कभी अयुक्तिसंगि हो जाने वाली अचवश्वसनीय बुक्तद्ध हैं। आप िरीर, मन और बुक्तद्ध से परे, परम चपिा परमात्मा की सन्तान, समस्त अिकार से परे ज्योचियों की परम ज्योचि की एक प्रकाि-चकरण, सि्-चिि्-आनन्द-स्वरूप परम िान्ति के असीम सागर की एक िरंग हैं। आप परमात्मा का एक अंि हैं। चदव्यिा आपका जन्मचसद्ध अचधकार है। यह जीवन उसी चदव्यिा की जागरूकिा और उसकी अनुभूचि प्राप्त करने का एक सुअवसर है। अिः चदव्य जीवन चजयें। चदव्यिा आपका लक्ष्य है। चदव्यिा आपकी मूल प्रकृचि है। चदव्यिा से आपका जीवन भर जाना िाचहए। अिः अपने जीवन को चदव्य बनायें।

इसके चलए उन्ोंनें अत्यन्त स्पष्ट् चनदेि चदया है, आगे बढ़ने के चलए चनचश्चि मागप बिाया है और उन्ोंनें इसके सारित्त्व के रूप में अपने सने्दि के केंद्रीय भाव को िीन सूत्रों के रूप में

जीवन में उिर लेने के चलए बिा चदया-समूपूणप प्राणी-वगप के प्रचि चवश्व-प्रेम िथा दया; काया-विाा-मनसा सत्यिा; और दैचनक जीवन में उदात्त, उिि िथा िुद्ध िररत्र और व्यवहार।

उन्होंनें हमें इन चनयमों ंका पालन करने के चलए कहा। ये चवश्व के समस्त धमपग्रन्थों ंकी चिक्षा का सारित्त्व हैं। ईश्वर के सभी पीर, पैगम्बरों ंऔर मसीहाओं ंके उपदेिों ंका भी यही सार है। अिः ये िीनों ंधमप का आधार, वेदान्त का आधार, योग का आधार, आध्यात्त्मकिा का आधार और ईश्वरानुभूचि का आधार बनिे हैं। जो कुछ गुरुदेव ने कहा, उसके सम्बि में उन्हें कोई िंका नहीं ंथी और जैसा वे िाहिे थे चक हमें होना िाचहए, वह बि कर उन्होंनें हमें भी चकसी दुचवधा में नहीं ंछोडा।

ये िीन सूत्र उन्होंनें बनाये -अशहंसा, सत्य और पशवत्रिा, जो शक शदव्य जीवन संघ के सदस्य के शलए पूवाणपेशक्षि हैं। उन्होंनें यह भी शसखाया शक हमें हृदय, बुच्चद्ध और हाथों ंका समिियाक और सुव्यवथथिाक शवकास अपने दैशनक जीवन के प्रत्येक कायण में, अपनी भावनाओं ंमें और अपने आन्तररक अनुिासन में करना िाशहए। वे िाहिे थे शक हम इसके साथ-साथ सेवापरायणिा की भावना, ईश्वर के प्रशि श्रद्धा और शवश्वास, इच्चिय-संयम, ध्यान के शलए मन की एकाग्रिा और शनयन्त्रण िथा दाशणशनक शजज्ञासा हेिु जागरूकिा और सिकणिा को शवकशसि करें।

इस प्रकार यह एक जीवन्त आध्यात्त्मक िक्ति है, चजसे प्रचिचष्ठि करके वे हमारे चलए छोड गये हैं।इसिक्तिकेरूपमेंवसुििुः वेहीकायपकररहेहैं।चदव्यजीवनयापनकेइसआलोक के रूपमेंवेहीकायपिीलहैं।जोव्यक्तिइनचनयमों ंकाअनुसरणकरिाहै,वहगुरुकीही उपासना करिा है और वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। इसमें कु छ भी िंका नहीं ं है। या िो अभी ही अथवा कु छ समय पा कर भचवष्य में चनश्चय ही वह अपने लक्ष्य को अवश्य पा लेगा।

इस प्रकार 'चिवानन्द जीवन पद्धचि' से जीवन यापन करने का रहस्य है चदव्यिा। प्रत्येक क्षेत्र में,प्रत्येकवसुिुमें,समस्तजीवनमेंपूणपरूपेणचदव्यिा।और,यहजाननेके चलएसभी धमपग्रन्थों ं का ज्ञान प्राप्त करना होगा चक चदव्यिा की पररभाषा क्या है, और चदव्यिा के अथप क्या हैं, चदव्यिाकेप्रचिकूलक्या-क्याहै?हमारेजीवनकोउदात्तबनानेकेचलए,हमेंईश्वरकीओर ले जानेकेचलएऔरहमेंअपनाजीवनपरमआनन्दसेचवभूचषिकरनेकेचलएयहएकमात्रसूत्र- चदव्यिा- ही पयापप्त है।

यह है जो पूज्य गुरुदेव ने हमें चदया है और जो हमने उनसे ग्रहण चकया है। यही वह सूत्र है चजससेहमाराजीवनऔरजीवनयापनकाहमाराढंगसम्पन्नहोनािाचहए।उनकेआह्वानका हमारा यही उत्तर होगा और हमारे चिष्यत्व का प्रमाण भी। यही चिक्षा देने के चलए वे आये थे। यह हमारी पैिृक सम्पदा है। अपने इस उत्तराचधकार को हमने प्राप्त करना है। आओ, हम सब अपने इस उत्तराचधकार को प्राप्त करें और उस चदव्यिा से प्रकाचिि हो जायें जो हम वास्तव में हैं!

प्रभु-कृपा और गुरु के आिीवापद िभी लाभप्रद होिे हैं यचद आपके अपने सिे और गहन प्रयत्न द्वारा उनका अनुसरण हो। जो आवश्यक है, वह हम क्यों ंनहीं ंकरें?

केवल उसएकआवश्यककायपचजसकेचलएहमयहााँआयेहुएहैं-कोछोडकरअन्य
दजपनों ः चवचचभन्न कायों में हम व्यस्त रहिे हैं। इसीचलए ईश्वर साक्षात्कार लुप्तप्राय हो गया है।

जो आवश्यक है, वह हमें करना ही पडेगा। ईश्वर की कृपा है, यह मैं आपको
चवश्वास चदलाि हााँ। यहााँ आपमें से प्रत्येक के जीवन में ईश्वर की कृपा पयापप्त मात्रा में है।
यह मैं बलपूवपक चनभीकिा से कहिा हााँ। पूणप चवश्वास के साथ मैं इस सत्य का समथपन
करिा हााँ चक आप आिीवापचदि हैं। आपके जीवन में प्रभु की चदव्य कृ पा अपार मात्रा में है
और गुरुदेव का वरदहस्त, उनकी दयापूणप दृचष्ट् आप पर है; इसमें कुछ भी सन्देह नहीं ः
है। अब िेष आप पर है चक आप उस अनुकम्पा और आिीवापद की चवद्यमानिा को
पहिानें और जो आवश्यक है, वह करें।

-स्वामी शिदानन्द

बीस महत्त्वपूण आध्याच्चिक शनयम

आराध्य एवं श्रद्धेय श्री गुरुदेव के समक्ष हम प्रािःकाल की इस िान्त बेला में प्राथपना और
ध्यान के चलए एकचत्रि हुए हैं। पूज्य गुरुदेव के िरणकमलों ःमें मेरी सचवनय प्राथपना है चक ये
चजज्ञासु आत्माएाँ, चजन्होंने ईश्वर की चदव्य अनुकम्पा से िथा आप जैसे ज्ञानी गुरुओं ःके आिीवापद से
िथा पूवप में चकये गये सकारात्मक िुभ कमों के फलस्वरूप आध्याक्तत्मक जीवन में प्रवेि चकया है,
वे इस अद्भुि सौभाग्य का पूणपरूप से लाभ उठायें। यह बेकार न जाये। यह व्यथप न जाये, वे
इस अमूल्य बाि से अनचभज्ञ न रह जायें। उपररि िीन ित्त्वों ःसे युि होने के कारण, लाखों ःमें
से कुछ भाग्यिाली आत्माएाँ ऐसा जीवन धारण करिी हैं जहााँ वे अच्छाई को ग्रहण करिी हैं, जहााँ
वे ऐसी वस्तु की खोज करिी हैं जो उन्हें परमानन्द की उच्च अवस्था में ले जाये, िाहे वह
आकषपक नहीं ःलगिा हो और िाहे वह सुखद प्रिीि न होिा हो। इसचलए इस मागप को कुछ
भाग्यिाली आत्माएाँ ही िुनिी हैं। गुरुदेव! मेरा यह चवश्वास है चक हम इस समय ऐसी चवलक्षण
आत्माओं ःकी सभा में बैठे हैं, चजनको उनके िुभ कमप उत्तराखण्ड में, पचवत्र मााँ गंगा के िट
पर, ऋचषयों ःके क्षेत्र चहमालय में और आपके पावन आश्रम की पचवत्र भूचम पर ले आये हैं, आप
उनके आन्तररक ज्ञान को, उनके चववेक को, चविार िक्ति को, उनकी सही दृचष्ट् को जाग्रि
कीचजए चजससे वे वस्तुओं ःको सही रूप में देखें और जो अमूल्य है उसके मूल्य को जानें और
इस प्रकार अपने जीवन को श्रेष्ठ िथा धन्य बनाएाँ।

हम चविार करें चक हमारे महान् गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने हमें क्या करने
को कहा है; उन्होंने हमें क्या करने के चलए चनदेि चदये हैं; हमारे जीवन का ढंग, हमारा
व्यवहार िथा हमारे कायप कैसे होने िाचहए? सम्भविः चकसी अन्य गुरु की िुलना में उनके पास
कहने को बहुि कुछ था। यहााँ िक चक उनके जीवनकाल में ही उन्होंने आधुचनक जगि् को अपनी
प्रज्ञायुि चिक्षाएाँ दीं।ः हम चवचिष्ट् अथों में उनकी चिक्षाओं ःके उत्तराचधकारी हैं क्योंचक हम उनके

आध्यात्तत्मक आन्दोलन िथा उनकी आध्यात्तत्मक संस्था चदव्य जीवन संघ (Divine Life Society) से सम्बत्तिि हैं। सम्भविीः इस अथप में हम चवचिष्ट् हैं।

अनेक आधुचनक सन्त-महात्माओं ंजैसे अरचवन्द घोष, श्री रमण महचषप, स्वामी रामदास, आनन्दमयी माँ, अवधूि चनत्यानन्द, मुिानन्द बाबा, मलयाला स्वामी जी चजन्ोंनें बीसवीं ंिाब्दी में भारि को सुिोचभि चकया है, समूपूणप चवश्व ने उनकी प्रज्ञायुि चिक्षाओं ंको चवरासि में प्राप्त चकया है। उन्ोंनें कायप चकया िथा उन्ोंनें अपने सन्देि की घोषणा समूपूणप चवश्व में की। लोगों ंके उस समूह के चलए, चजन्ोंनें अपने आपको इनमें चकसी एक महान् सन्त-महात्मा के साथ सम्बद्ध चकया है उनके चलए इनकी चिक्षाएँ एक चविेष चवरासि बन जािी है। रामकृष्ण चमिन के समस्त भि, सदस्य, ब्रह्मचारी, संन्यासी चजन्ोंनें इस चमिन के अध्यक्ष से दीक्षा ली है, स्वाभाचवक रूप से उनकी चिक्षाओं ंके चविेष उत्तराचधकारी बन जािे हैं। चिरूवन्नामलाई के रमण महचषप के भि स्वाभाचवक रूप से उनकी चिक्षाओं ंके चविेष उत्तराचधकारी बन जािे हैं और उनका इन चिक्षाओं ं के प्रचि एक चविेष दाचयत्व हो जािा है। इसी प्रकार भाग्य अथवा ऋणानुबि-सम्बि अथवा पूवप-जन्म-कमप- सम्बि के कारण हमारा स्वामी चिवानन्द जी महाराज से, जो एक सन्त, गुरु व आध्यात्तत्मक पथ-प्रदिपक हैं, उनसे एक चविेष, सीधा व व्यत्तिगि सम्बि स्थाचपि हो गया है और वे हमारे जीवन का एक अंग बन गये हैं। वे हमारे जीवन का चकिना अंग बन गये हैं यह हमें दैचनक व्यवहार में प्रदचिपि करना होगा। वे हमारे जीवन का कहाँ िक भाग बन गये हैं यह न केवल हमारे उनके प्रचि भाव िथा भावात्मक सम्बि के द्वारा प्रदचिपि करना होगा जो चनीःसन्देह इसका अंग है, बत्ति हमें अपने मन, चविारों,ं चववेक ित्ति के प्रयोग के ढंग को भी रूपान्तररि करके प्रदचिपि करना होगा। उन्ोंनें हमें चविार और चववेक के चलए पयापप्त सामग्री दी है।

जो लोग श्री अरचवन्द घोष के अनुयायी हैं वे मनिीिी योग (Supramental Yoga) पर चिन्तन, चविार, मनन व अनुसिान करिे हैं। जो लोग रमण महचषप से सम्बत्तिि हैं, वे चिन्तन, मनन व चनचदध्यासन करिे हैं और सीधे चविार मागप द्वारा अन्वेषण करिे हैं-'मैं कौन हाँ।' जो लोग चकसी अन्य महात्मा से सम्बत्तिि हैं, वे उनके द्वारा बिाये गये मागप पर िलिे हैं। जो लोग चनसगपदत्ता, महचषप महेि योगी, मुिानन्द बाबा से सम्बत्तिि हैं, वे चसद्ध-योग के मागप पर िलिे हैं, ॐ नमीः चिवाय का जप करिे हैं और ित्तिपाि में चवश्वास करिे हैं। िैिन्य महाप्रभु के गौड सम्प्रदाय के अनुयायी संकीिपनयोग को अपनािे हैं, उन्ोंनें इसे चविेषरूप से चवरासि में प्राप्त चकया है क्ोंचक वे महान् सन्त िैिन्य महाप्रभु के अनुयायी हैं। वे दूसरों ंको भी ऐसा करने के चलए कहिे हैं। परन्तु पहले वे स्वयं इसका अनुकरण करिे हैं, इसचलए वे दूसरों ंमें भी इसका प्रिार करिे हैं। वे चकसी को चववि नहीं ंकरिे। वे प्रिार करिे हैं क्ोंचक सबको प्रेरणा देना उनका किपव्य है। वे यह भी जानिे हैं चक दूसरे भी अपने गुरु के बिाये हुए मागप पर िलेंगे।

हमें चवरासि में भत्ति, ध्यान और आत्म-ज्ञान के िीन मुख्य मागों का समन्वय प्राप्त हुआ है जो चक िीनों ंका एक सुन्दर समूपूणप समन्वय है। एक सुव्यवत्तस्थि सत्तम्मश्रण है। इसचलए हमें चविार का प्रयोग करना होगा। इसके साथ गुरुदेव ने हमें व्यवत्तस्थि ढंग से महत्त्वपूणप आध्यात्तत्मक चनयम भी चदये हैं। यह उनकी चवचिष्ट् देन है। उन्ोंनें कहा, 'आपको अपना दैचनक जीवन इस आदिप के अनुरूप ढालना है। आप प्रािीःकाल जल्दी उचठए, थोडा सा ध्यान कीचजए, थोडा सा जप कीचजए, थोडा सा कीिपन कीचजए। प्रचिचदन प्रािीःकाल थोडी देर आसन व प्राणायाम कीचजए, उसके पश्चाि् चदनियाप प्रारम्भ कीचजए।' यह उनकी चवचिष्टिा है चक उन्ोंनें हमको पूणप, त्रुचटरचहि, चनचश्चि, स्पष्ट् चनदेि चदये हैं चजसमें कोई सत्तन्दग्धिा नहीं ंहै। इसमें दैचनक कायपक्रम स्पष्ट्रूप से

चदया गया है, दिपया गया है। यचद हम, जो चक चवचिष्ट्रप से उनकी चिक्षाओं ंके उत्तराचधकारी हैं और जो उनके जीवनकाल में उनसे सीधे व व्यक्तिगि रूप से सम्बक्तिि रहे हैं, यचद उनकी चिक्षाओं ंके अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न या कम से कम कचठन प्रयास नहीं ंकरेंगे, िो चफर कौन करेगा? हम चकसी अन्य से यह आिा क्ों ंकरें चक वह करेगा?

आपको श्री अरचवन्द घोष के अनुयाचययों ंसे यह आिा नहीं ंकरनी िाचहए चक वे बीस आध्यात्तत्मकचनयमों ंको व्यवहार में लायेंगे। आपको श्री रमण महचषप के अनुयाचययों ंसे यह आिा नहीं ंकरनीिाचहए चक वे साधना ित्त्व को व्यवहार में लायेंगे, परन्तु हम से यह आिा की जािी है चकहमउनको व्यवहार में लायेंगे। वे भी आपसे यह आिा नहीं ंकरिे चक आप चसद्ध-योग अथवाक्तिपा को आिरण में लाएँ, क्ोंचंक गुरु परम्परा की यह पद्धचि है। इसचलए कहा जािा है,

सदाशिव समारम्भां िंकरािायण मध्यमाम्।
अस्मद् आिायण पयणन्तां वन्दे गुरु-परम्पराम्।।

(मैं गुरु परम्परा की इस लम्बी पंक्ति को प्रणाम करिा हाँ चजसका उदय स्वयं भगवान् किर से हुआ और चजसके मध्य में आचदिंकरािायप थे और विपमान में अपने गुरु को प्रणाम करिा हाँ जो चक मेरे चलए इस आध्यात्तत्मक परम्परा के विपमान प्रचिचनचध हैं।) इस प्रकार हमारा एक चविेष उत्तरदाचयत्व है, एक चविेष अचधकार है, हमारे चलए यह बडे सौभाग्य और आनन्द का चवषय है। मैं आपके समक्ष परमात्मा जो हमारा पालन करने वाले हैं, हमारी रक्षा करने वाले हैं और हमारे सब कुछ हैं उनके साथ सीधे सम्बि के बारे में आपकी त्तस्थचि का वास्तचवक वणपन कर रहा हाँ। उन्ोंनें हमारे जीवन को भौचिक स्तर, मानचसक स्तर, बौत्तद्धक स्तर, नैचिक स्तर, आिार सम्बिी स्तर और आध्यात्तत्मक स्तर पर बनाये रखा है। उन्ोंनें हमारे चलए क्ा नहीं ं चकया है? इसचलए उनके साथ हमारा गहरा सम्बि है।

गुरुदेव ने कहा है, 'मैंने अपनी इिनी सारी पुस्तकों ं में जो कु छ भी चलखा है, वह सब मैंने बीस महत्त्वपूणप आध्यात्तत्मक चनयमों ं में चलख चदया है।' ये चनयम आप सबके चलए हैं जो इस समय यहााँ उपत्तस्थि हैं। सम्भविः आपने इन चनयमों ं को कभी भी इस प्रकार अपना नहीं ं समझा। हमने हमेिा इसे दूसरों ं को बााँटने का प्रयास चकया परन्तु स्वयं इनको नहीं ं अपनाया। जब भी कोई दिपक आिा है हम िुरन्त उन्ें बीस आध्यात्तत्मक चनयमों ं की एक प्रचि देना िाहिे हैं और कहिे हैं, 'इसे फ्रेम कराके रखें िथा इसे प्रचिचदन पढ़ें।' परन्तु हमने सम्भविः इसे कभी व्यक्तिगिरूप से नहीं ं सोिा चक यह मेरे चलए भी हैं। कभी नहीं ं करने से िो चवलम्ब से करना श्रेष्ठ है। क्ों ं न गुरुदेव के बीस आध्यात्तत्मक चनयम मुझे व्यक्तिगि रूप से अपनाने िाचहए। यह जो उन्ोंनें मेरे चलए चवरासि में छोडा है वह उन व्यावहाररक उपदेिों ं का सार है जो उनके द्वारा इस बीसवीं ं ििाब्दी में समस्तचवश्वकोचदयेगये।उनके द्वाराचनयमों ंके िीनमहत्त्वपूणपसमूहयाचन-

(१) सप्त साधन चवद्या अथाि् साधना ित्त्व, (२) चवश्व-प्राथपना, (३) बीस महत्त्वपूणप आध्यात्तत्मक चनयम चदये गये।

उन्ोंनें ये सब आपके चलए छोडे हैं, मेरे चलए छोडे हैं, हम सबके चलए छोडे हैं िथा ये हम में से प्रत्येकके चलएछोडेहैं।यचदआपअपनेकोइसप्रकारबीसआध्यात्तत्मकचनयमों ंसे

जोडनेकाप्रयासकरेंऔरप्रचिचदनउसकेचवषयमेंसोिसिम्भवीः आपके जीवन में एक नया प्रकाि, एकनयाज्ञानऔरउसकेप्रचिएकनयाभावआजायेगाचकउन्होंने यह मेरे चलए छोडा है, उन्होंनेयहचकसीऔरकेचलएनहीं छोडाबक्तियहमेरेचलएहीछोडा है। इस भाव के साथआगेबढ़ोऔरबीसमहत्त्वपूणपआध्यात्मकचनयमों कागहनचिन्तनकरो, िब आप अपने बारे में िथा आध्यात्मक जीवन के बारे में बहुि कु छ समझ लेंगे।

अभ्यास (Practice)

दत्तात्रेयभगवान्नेबीसगुरुओं ंकाउल्लेखचकयाहैचजनसेउन्होंनेकुछसीखापरन्तु उन्होंने उनका सम्बोधन प्राणी कह कर नहीं ं चकया। उन्होंने कहा, 'मैंने ये बािें इन समस्त गुरुओं ं से सीखीहैं, आजमैंजोकुछहाँउनकेकारणहाँ, हेयदुवंिकेराजा! आपजोकुछभीमुझ में देखकरआश्चयपकररहेहैंवहइसचलएहैक्योंचकमैंनेजोकुछसीखाउसकोअपनेजीवनमें उिारा। जो मैंने इन गुरुओं ं से ग्रहण चकया और समझा, मैंने उसका अपने जीवन में समावेि चकया िथा मैं वैसा बन गया जैसा मैंने देखा और सीखा। पृथ्वी, वायु, आकाि, जल, अचग्न, िंि, सूयप, कबूिर, अजगर, सागर, पिंग, हाथी, मधुमक्खी, मधु चनकालने वाला, चहरन, मछली, चपंगला वेश्या, कु रर पक्षी, बालक, कु मारी कन्या, बाण बनाने वाला, साँप, मकडी िथा भृगकीट, प्रत्येक वस्तु जो मेरे सामने आयी और चजससे मैं कु छ ज्ञान प्राप्त कर सका था, मैंने उससे सीखा, ग्रहण चकया और उसे व्यवहार में लाया। मैं उस व्यवहार से ही बना हाँ।' यह अवधूि दत्तात्रेय ने यदुवंि के राजा को स्पष्ट चकया।

अिः यह अभ्यास ही है चजसके द्वारा पूणपिा की पराकाष्ठा को प्राप्त चकया जा सका है, न चकपूणपिाप्राप्तकरनेकीचवचधके ढेरसारेज्ञानसे। थोडेसेज्ञानकोअचधकसेअचधक अभ्यास से युि करने से सम्भवीः बहुि कुछ प्राप्त चकया जा सका है। चनम्न जाचि के कबीर जैसे व्यक्ति जो चक एक जुलाहा था; जो कोई उपदेि प्राप्त नहीं ं कर सका; उन्हें मागप भी मालूम नहीं ं था; जैसे िैसे उन्होंने एक िब्द प्राप्त कर चलया, वह भी छल से और वह िब्द भी गुरु रामानन्द के मुखारचवन्द से आकक्तस्मक आश्चयप के क्षण में चनकला था। यह 'राम' के नाम का अभ्यास ही है चजसने उन्हें एक महान् वेदान्ती और भि एकसाथ बना चदया। वह कबीर दास बन गये चजनके भजनों ं का अनुवाद विपमान में अनेक भाषाओं ं में चकया गया है। थोडा सा ज्ञान जो उन्होंने प्राप्त चकया उसके अभ्यास से उन्हें महान् अनुभूचि प्राप्त हुई और वह ज्ञान से पररपूणप हो गये। इस परा-चवद्या के प्राप्त होने के कारण उनके भजन ज्ञान से पररपूणप हैं।

अभ्यास यह सांकेचिक िब्द (Keyword) जगद्गुरु भगवान् श्री कृष्ण ने अपने गीिा ज्ञान उपदेि में चवपरीि पररक्तस्थचियों ं और आकषपणों ं चजससे आप इस संसार में चघरे हुए हैं, उन पर चवजय पाने के चलए िथा लक्ष्य प्राप्त करने के चलए चदया है। अभ्यास- यह एक सांकेचिक िब्द है। उन्होंने कहा, 'कु छ भी असम्भव नहीं ं है। जहाँ अभ्यास है वहाँ यह सम्भव है।' जहाँ अभ्यास नहीं ं है वहाँ हर िीज कचठन हो सकिी है, हर िीज असम्भव भी हो सकिी है। मैं परामिप देिा हाँ चक आप इस नयी भावना को अपनायें और बीस महत्त्वपूणप आध्यात्मक चनयमों ं का अभ्यास करें और देखें चक वे आपको क्या देिे हैं।

बीस महत्त्वपूण आध्याच्चिक शनयम

१. ब्राह्ममुहिण-जागरि-चनत्यप्रचि प्रािीः िार बजे उचठए। यह ब्राह्ममुहिप ईश्वर के ध्यान के चलए बहुि अनुकूल है।

२. आसन-पद्मासन, चसद्धासन अथवा सुखासन पर जप िथा ध्यान के चलए आधे घण्े के चलए पूवप अथवा उत्तर चदिा की ओर मुख करके बैठ जाइए। ध्यान के समय को िनैः िनैः िीन घण्े िक बढ़ाइए। ब्रह्मियप िथा स्वास्थ्य के चलए िीषापसन अथवा सवाांगासन कीचजए। हलके िारीररक व्यायाम (जैसे टहलना आचद) चनयचमि रूप से कीचजए। बीस बार प्राणायाम कीचजए।

३. **जप-**अपनी रुचि या प्रकृचि के अनुसार चकसी भी मि (**जैसे 'ॐ', 'ॐ नमो नारायिाय', 'ॐ नमः शिवाय', 'ॐ नमो भगविे वासुदेवाय', 'ॐ श्री िरविभवाय नमः', 'सीिाराम', 'श्री राम', 'हरर ॐ'** या गायत्री) का १०८ से २१,६०० बार प्रचिचदन जप कीचजए (मालाओं ंकी संख्या १ और २०० के बीि)।

४. आहार-संयम-िुद्ध साक्तत्त्वक आहार लीचजए। चमिप, इमली, लहसुन, प्याज, खट्टे पदाथप, िेल, सरसों ंिथा हींगं का त्याग कीचजए। चमिाहार कीचजए। आवश्यकिा से अचधक खा कर पेट पर बोझ न िाचलए। वषप में एक या दो बार एक पखवाडे के चलए उस वस्तु का पररत्याग कीचजए चजसे मन सबसे अचधक पसन्द करिा है। सादा भोजन कीचजए। दूध िथा फल एकाग्रिा में सहायक होिे हैं। भोजन को जीवन-चनवापह के चलए औषचध के समान लीचजए। भोग के चलए भोजन करना पाप है। एक माह के चलए नमक िथा िीनी का पररत्याग कीचजए। चबना िटनी िथा अिार के केवल िावल, रोटी िथा दाल पर ही चनवापह करने की क्षमिा आपमें होनी िाचहए। दाल के चलए और अचधक नमक िथा िाय, काफी और दूध के चलए और अचधक िीनी न माँचगए।

५. ध्यान-कक्ष-ध्यान कक्ष अलग होना िाचहए। उसे िाले-कुंजी से बन्द रक्तखए।

६. दान-प्रचिमाह अथवा प्रचिचदन यथािक्ति चनयचमि रूप से दान दीचजए अथवा एक रुपये में दस पैसे के चहसाब से दान दीचजए।

७. स्वाध्याय-गीिा, रामायण, भागवि, चवष्णुसहस्रनाम, आचदत्यहृदय, उपचनषद्, योगवाचसष्ठ, बाइचबल, जेन्द-अवस्ता, कुरान आचद का आधा घण्े िक चनत्य स्वाध्याय कीचजए िथा िुद्ध चविार रक्तखए।

८. ब्रह्मियण- बहुि ही सावधानीपूवपक वीयप की रक्षा कीचजए। वीयप चवभूचि है। वीयप ही समूपूणप िक्ति है। वीयप ही सम्पचत्त है। वीयप जीवन, चविार िथा बुक्तद्ध का सार है।

९. स्तोत्र-पाठ-प्राथपना के कुछ श्लोकों ंअथवा स्तोत्रों ंको याद कर लीचजए। जप अथवा ध्यान आरम्भ करने से पहले उनका पाठ कीचजए। इससे मन िीघ्र ही समुन्नि हो जायेगा।

१०. सत्संग-चनरन्तर सत्संग कीचजए। कुसंगचि, धूम्रपान, मांस, िराब आचद का पूणपिीः त्याग कीचजए। बुरी आदिों ंमें न फैचसए।

११. व्रि-एकादिी को उपवास कीचजए या केवल दूध िथा फल पर चनवापह कीचजए।

१२. जप-माला-जप-माला को अपने गले में पहचनए अथवा जेब में रक्तखए। राचत्र में इसे चिकये के निी रक्तखए।

१३. मौन-व्रि-चनत्यप्रचि कुछ घण्टों ◌ं के चलए मौन-व्रि कीचजए।

१४. विाी-संयम-प्रत्येक पररक्तस्थचि में सत्य बोचलए। थोडा बोचलए। मधुर बोचलए।

१५. अपररग्रह-अपनी आवश्यकिाओं ◌ं को कम कीचजए। यचद आपके पास ि◌ार कमीजें हैं, िो इनकी संख्या ि◌ीन या दो कर दीचजए। सुखी ि◌था सन्तुष्ट् जीवन चबिाइए। अनावश्यक चिन्ताएँ त्याचगए। सादा जीवन व्यिीि कीचजए ि◌था उच्च चविार रक्तखए।

१६. शहंसा-पररहार-कभी भी चकसी को ि◌ोट न पहुँिाइए (अचहंसा परमो धमपी:)। क्रोध को प्रेम, क्षमा ि◌था दया से चनयक्तिि कीचजए।

१७. आेि-शनभणररा-सेवकों ◌ं पर चनभपर न रचहए। आत्म-चनभपरिा सवोत्तम गुण है।

१८. आध्याच्चिक ि◌ायरी-सोने से पहले चदन-भर की अपनी गलचियों ◌ं पर चविार कीचजए। आत्म-चवश्लेषण कीचजए। दैचनक आध्याक्तत्मक ि◌ायरी ि◌था आत्म-सुधार रचजस्टर रक्तखए। भूिकाल की गलचियों ◌ं का चिन्तन न कीचजए।

१९. किणव्य-पालन- याद रक्तखए, मृत्यु हर क्षण आपकी प्रिीक्षा कर रही है। अपने किपव्यों ◌ं का पालन करने में न ि◌ूचकए। सदािारी बचनए।

२०. ईश-शिन्तन-प्राि: उठिे ही ि◌था सोने से पहले ईश्वर का चिन्तन कीचजए। ईश्वर को पूणप आत्मापपणकीचजए।

यहसमस्तआध्याक्तत्मक साधनों ◌ं का सार है। इससे आप मोक्ष प्राप्त करेंगे। इन चनयमों ◌ं का दृढ़िापूवपकपालनकरना ि◌ाचहए। अपने मन को ढील न दीचजए

आध्याच्चिक शनयम पढ़ना प्रारम्भ करने की शवशध

अक्तन्तम चनयम सबसे पहले पढ़ना प्रारम्भ करें अथापि् बीसवें चनयम के पश्चाि् चदया गया भाग। अक्तन्तम ि◌ेिावनी जो गुरुदेव ने इन महत्त्वपूणप आध्याक्तत्मक चनयमों ◌ं के चबल्कुल अन्त में दी है, उस पर पूणप ध्यान दीचजए। यह अक्तन्तम ि◌ेिावनी उनके चलए बहुि मूल्यवान्, सहायक ि◌था लाभप्रद होगी जो अपना सवोि आध्याक्तत्मक कल्याण ि◌ाहिे हैं। यचद इस अक्तन्तम चनदेश की ओर ध्यान न चदया जाये ि◌ो बीस महत्त्वपूणप आध्याक्तत्मक चनयम अनुपयोगी होंगें और चकसी के चलए भी लाभदायक नहीं ◌ं होंगें।

अक्तन्तम ि◌ेिावनी को पहले पढ़ने का कारण यह है चक मानव-मन में अत्यन्त असावधान रहने की प्रवृचत्त होिी है। असावधानिा- यह मन के नकारात्मक गुणों ◌ं में से एक है-इसचलए मन को ढील मि दो क्योंचक 'मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो' मनुष्य के चलए केवल मन ही बन्धन ि◌था मोक्ष का भी कारण है और यचद

'यशद मोकृंषं इच्छशस िैि–ा **शवषयान् शवषवि् त्यज।**
ब्रह्मियण अशहंसा ि **सत्ंयं पीयूषवद् भज ।।**

'आप मोक्ष िाहिे हैं िो चवषयों ंके सुख और भोग को चवष के समान त्याग दें िथा िीन सविो गुणों–ब्रह्मियप, अचहंसा और सत्य को अमरत्व प्रदान करने वाली जीवनदायी सुधा के रूप में स्वीकार करें।' अब हम देखें व अध्ययन करें चक अक्तन्तम िािवनी का सही अचभप्राय क्ा है।

यह सब आध्याच्चिक साधनाओं ंका सार है। इससे आप मोक्ष प्रिा करेंगे। इन समस्त आध्याच्चिक शनयमों ंका दृढ़िा पूवणक पालन करना िाशहए। अपने मन को ढील न दीशजए।

इससे प्रारम्भ करें, पहले इसे पढ़ें और उसके पश्चाि् प्रथम चनयम पर आ जायें। यह आज के चलए पयापप्त है। कल पुनीः बीसवें चनयम के पश्चाि् जो उपदिे है उसे पढ़ें और चफर दूसरे चनयम को देखें। िीसरे चदन पुनीः बीसवें चनयम के पश्चाि् चदये गये उपदिे को पढ़ें और चफर िीसरे चनयम को देखें। िौथे चदन पुनीः बीसवें चनयम के पश्चाि् चदये गये उपदिे को पढ़ें और चफर िौथे चनयम को देखें। इस प्रकार क्रमवार एक-एक करके बीस महत्त्वपूणप चनयमों ंपर चविेषरूप से अपना ध्यान केक्तिि करें।

प्रत्ेयेक चनयम पर लगभग पिह चमनट ध्यान करें, उसके साथ अपना चविेष सम्बि जोडें। जब आप परिान न हों ंया जब आप फुरसि में हों ंिब पिह चमचनट इस प्रकार िि्वि्यी करें और इस पर चिन्तन करें।

बीस आध्याक्तत्मक चनयमों ंका अध्ययन पूणप करने के पश्चाि् (अथापि् बीस चदन के पश्चाि्), प्रथम चनयम से प्रारम्भ करके उन पर पुनीः चिन्तन करें, आधा घण्टा अथवा ४५ चमचनट िक इन बीस चनयमों ंपर ध्यान करें। अब आपके मन की आँख के समक्ष ये चनयम स्वणप अक्षरों ंमें िमकिे हुए चदखायी देने िाचहए। उन पर मन को केक्तिि (धारणा) करें। उन पर ध्यान करें और देखें, वह आपके चलए क्ा करिे हैं, चफर उनको अपने दैचनक जीवन में उिारने के चलए उपाय सोिें। अपनी योग्यिा और क्षमिा की पररचध व क्ेषेत्र के अनुसार स्वामी चिवानन्द जी के बीस महत्त्वपूणप आध्याक्तत्मक चनयमों ंका साकार रूप, जीिा-जागिा व सचक्रय मूिप रूप बनें। में आपको पराक्रम चदखाने के चलए नहीं ंकह रहा। उपलक्तब्ध का प्रदिपन करने के चलए नहीं ंकह रहा। मैं आपको महाभारि में भीष्म जैसी आश्चयपजनक दृढ़ प्रचिज्ञा के चलए नहीं ंकह रहा चजससे आकाि में चबजली िमकने लगी और गजपना होने लगी, धरिी चहली और सब ओर आँधी िलने लगी और लोग काँपने लगे। मैं आपको प्रदिपन योग्य पराक्रम चदखाने के चलए नहीं ंकह रहा परन्तु में आपसे यह अवश्य आिा करिा हूँ और िाहिा हूँ चक आप इसे िीव्र उत्साह से करें। आप इसे दृढ़ चनश्चय िथा गम्भीरिा से करें, जो चक सम्भविीः आपने अभी िक अपने जीवन में नहीं ंचकया है। **मैं आपसे यह अवश्य आिा करिा हूँ शक आप इस अभ्यास से शजसकी रूपरेखा मैंने आपके सविो लाभ, परम कल्ाण, आध्याच्चिक जीवन में पूिण सफलिा और आपकी स्वयं की कीशिण के शलए दी है, अपनी अन्तशनणशहि आन्तररक िच्चि को जगा देंगे।**

अब मैं आपको शनश्चय पूवणक कह सकिा हूँ शक गुरुदेव ने शनरथणक ही इस वाक् का उल्ेलेख नहीं ंशकया शक 'यह आपको मोक्ष की ओर ले जायेगा।' उन्ोंनें इसे इसशलए कहा है

क्योंशंक उन्हें पूरा शवश्वास है शक यशद आप उन सबका पालन करेंगे ि◌ो ये आपको मोक्ष की ओर ले जायेंगे। आप अपने को बीस महत्त्वपूिण आध्याच्त्मक शनयमों ◌ंका सजीव व्यावहाररक मूिणरूप बनायें ि◌ब मोक्ष आपकी हथेली पर आँवले की भाँशि होगा। आप मोक्ष अपने शलए सुशनशश्चि कर लें। आप इस जीवन में ही अपने शलए मोक्ष प्रा करने के शलए आश्वस्त हो जायें।

ईश्वर आप पर कृपा करें और आपकोइसयोग्यबनायें चजससे आप इन चनयमों ◌ंको अपने दैचनकजीवन में उिार सकें। गुरुदेव के आिीवापदसेआपको सफलिा प्राप्त हो।

* * * *

शवश्व-प्राथणना

– प्रि ि◌ा गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज प्रदत्त अशद्विीय देन –

सद्गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी कृि 'चवश्व-प्राथपना' परम चप्रय है उनके भिों ◌ंएवं प्रिंसकों ◌ंको। यह सम्प्रदाय-चनरपेक्ष, सवपजनानुकूल प्राथपना है। इसमें ि◌ास्त्ोपदेिों ◌ंका सारित्त्व एवं भगवत्साक्षात्कार- चनचमत्त आध्याक्त्मक साधना की प्रचवचध सचन्नचहि है। प्रायीः हम चनत्य-पाठ में इसकी महत्ता से अनचभज्ञ एवं वास्तचवक लाभ-प्राक्प्त से वंचिि रह जािे हैं, कारण चक यह सूत्र-रूप में चवरचिि है। यचद एकमात्र इसका ही श्रद्धा, भक्ति ि◌था समझ से चनत्य-पाठ चकया जाये, ि◌ो यही हमें लक्ष्य ि◌क पहुँचा सकिी है। ऐसा माहात्म्य है इस चवश्व-प्राथपना का। यह प्राथपना प्रत्येक स्त्ी-पुरुष, युवा-वृद्ध, पौवापत्य-पाश्चात्य, उत्तरी दचक्षणी समस्त व्यक्तियों ◌ंके चलए उपयुि है।

चवश्व-प्राथपना इस प्रकार है:

शवश्वप्राथणना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
िुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
िुम सवपव्यापक, सवपिक्तिमान् और सवपज्ञ हो।
िुम सक्तिदानन्दधन हो।
िुम सबके अन्तवापसी हो।

हमेंउदारिा,समदचिपिाऔरमनकासमत्वप्रदानकरो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृ ि◌ाथप करो।
हमें आध्याक्त्मक अन्तीः ि◌क्ति का वर दो,
चजससेहमवासनाओं ◌ंकादमनकरमनोजयकोप्राप्तहों।◌ं

हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रचहि हों।ं

हमारा हृदयचदव्यगुणों ंसेपररपूररिकरो।

हमसबनाम-रूपों ंमेंुम्हिारादिपनकरें।
ुम्हिारीअिपनाके हीरूपमेंइननाम-रूपों ंकी सेवा करें।
सदा िुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा िुम्हारी ही मचहमा का गान करें।
ुम्हिाराहीकचलकल्मषहारीनामहमारेअधर-पुट पर हो।
सदा हम िुममें ही चनवास करें।

चनत्य अचवनािी ित्त्व की ओर प्रयाण ही जीवन-यात्रा है। जीवन स्विः ही प्रगाििील है चनत्यानुभूचि की ओर। जीवन स्वयमेव एक पद्धचि और एक गचि है, जो प्रचिचदन आपको पूणपत्व की ओर अग्रसर करिी है, चजसकी प्राक्तप्त आपका जन्मचसद्ध अचधकार है।

यह सन्देि है उनका चजनकी हम आराधना करिे हैं, चजनको हम गुरुदेव' कह कर पुकारिे हैं, चजन्होंने इस चदव्य पथ का प्रचिचनचधत्व चकया था। गुरुदेव ने इस चवश्व-प्राथपना को समस्त चदव्यिा से ओिप्रोि कर मूचिपमन्त चकया। परम पावन सारित्त्व, उि जीवन, आध्याक्तत्मक जीवन, चदव्य जीवन, पूणपिा की ओर गाििील जीवन, ज्ञानमय जीवन, आत्म-प्रकािन के जीवन से पररपूणप है यह चवश्व-प्राथपना। अचदव्यिा की उपेक्षा करिी हुई यह प्राथपना हमें चदव्यिा की ओर ले जािी है।

धन्य हैं वे, शजनका गुरुदेव से प्रत्यक्ष सम्पकण रहा है। धन्य हैं वे शजन्होंने उनके साक्षाि् दिणन शकये हैं। धन्य हैं वे शजनका हृदय उनके ज्ञानमय सदुपदेिों ंके प्रकाि से प्रकाशिि हुआ है।

आइए ! हम सब गुरुदेव-चवरचिि 'चवश्व-प्राथपना' का मनोयोग से पारायण करें। यह प्राथपना आपके चलए सदुपदेि-सूत्र बने। यह आपके भावी जीवन की चनत्य-चमत्र एवं मागपदचिपका बने। यह आपके हृदयस्थ भावनाओं ंएवं चविारों ंका जीवन में सचक्रय रूप से अचभव्यि वाणी एवं चक्रयाकलापों ंका मापक यंि बने। स्वजीवन का चनष्पक्ष चवश्लेषण करने के हेिु यह प्राथपना मापक यंि, मानक एवं कसौटी बने। अिः स्वजीवन एवं स्वचक्रयाकलापों ंका परीक्षण करने की कसौटी के रूप में सद्गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी द्वारा प्रदत्त इस प्राथपना को चिरोधायप करें।

इस प्राथणना का मनन कीशजए, शिन्तन कीशजए। इसे अपना शनत्य-सहिर बनाइए। इसमें आप सद्गुरु शिवानन्द जी के दिणन करेंगे। इसमें योग-वेदान्त का सारित्त्व सचन्नचहि पायेंगे। यह प्राथपना चनश्छयिः िुभािीष, मंगलकामना एवं चदव्य सन्देि से पररपूणप है। सभी धमों का सारित्त्व यही है चक सभी प्राचणयों ंमें चदव्यिा का वास है। यही िथ्य, यही में स्वीकृचि, यही जागृचि, यही आत्मज्ञान जी चक सभा की ओर उन्मुख करेगा। यह आपको दैवी सम्पदा से सम्पन्न कर देदीप्य पथ की ओर गाििील करेगा। आपके स्वभाव को चदव्यिा में रूपान्तररि करेगा। फलिः आप पर प्रभु कृपा का वषपण होगा।

योग-वेदान्त का प्रत्येक पक्ष, आचद, मध्य, अन्त, मूलाधार, प्रगचि और िरमोत्कषप (पराकाष्ठा) आचद सभी इस आश्चयपमयी प्राथपना में सचन्नचहि है। गुरुदेव कचथि चदव्य जीवन के चसद्धान्त (चिक्षा) को अपूवप रूप में प्रस्तुि करिी है यह प्राथपना ।

इस महान् आत्मा, सरल जीवन के आदिप, चवश्वात्मक जीवन के गुरु, कृपालु एवं दयालु सद्गुरु श्रीमद्भगवद्गीिा में वचणपि 'सवपभूि चहिेरिी:' के अनुसार सवपप्राचणयों ंके चहि में रि गुरुदेव के प्रचि आप अपनी हाचदपक प्राथपना िथा कृिज्ञिा ज्ञापन हेिु यहाँ एकचत्रि हुए हैं। गुरुदेव की आराधना करिे हुए उनके साथ अपने आध्याक्तत्मक जीवन का नवीकरण कीचजए-इस प्राथपना को, इस चवश्व-प्राथपना को आप हृदयंगम कीचजए।

गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी चवरचिि 'चवश्व-प्राथपना' समचपपि करिा हूँ आप सबके चहिाथप प्रसन्निा, समृक्तद्ध एवं सफलिा-प्राक्तप्त के चनत्यसूत्र, चनश्चयात्मक सूत्र के रूप में। समस्त िास्त्ों ंका श्रेष्ठिम सारित्त्व, समग्र महान् सन्तों ंएवं चववेकी जनों ंके उपदेि सक्तम्मचलि हैं इस अनुपम प्राथपना में। इसे अपनी प्राण-वायु समचझए।

चप्रय चमत्र! प्राथपनानुसार जीवन यापन करने का ित्परिा से अभ्यास कीचजए। इसका दूर-सुदूर प्रिार-प्रसार कीचजए। यह प्राथपना अमूल्य है। इसकी प्रत्येक पंक्ति स्वणप के िैल से अचधक बहुमूल्य है। मैं आप सबसे चनवेदन करिा हूँ चक इसका पारायण (पाठ) कीचजए। इसे मुचद्रि करवाइए और सबमें चनमूपल्य (चनी:िुल्क) चविररि कीचजए। इसे कागज के एक ओर मुचद्रि करवाइए िाचक अचभलचषि जन (अचभलाषी) इसे फ्रेम करवा सकें। अपनी मािृभाषा में इसे अनूचदि कीचजए। इसे समािार पत्रों,ं साप्ताचहक एवं माचसक पत्र-पचत्रकाओं ंमें प्रकाचिि करवाइए। चवद्यालयों ंएवं चवश्वचवद्यालयों,ं क्लबों ंिथा संघों ंमें इसका प्रिार कीचजए।

यह प्राथपना समग्र चवश्व के कल्याण के चलए है। यह सम्प्रदायािीि है। यचद आप िाहें, िो इसे बडे आकार के बचढ़या कागज पर मुचद्रि करवा कर इसका नाम मात्र का मूल्य रख सकिे हैं। यचद आप अकेले मुचद्रि करवाने में असमथप हैं, िो कुछ चमत्र सक्तम्मचलि रूप से १००० प्रचियाँ मुचद्रि करवाने की व्यवस्था कर सकिे हैं।

संसार की संरचक्षका यह प्राथपना घर-घर पहुँिाइए। समूिे चवश्व में इसका प्रिार-प्रसार कररए। इसमें सचन्नचहि सदुपदेिों ंसे अपने बिों ंको पररचिि कराइए। प्रािी:काल इसका पारायण कीचजए। प्रत्येक नव-वषप को प्राथपना-वषप के रूप में मनाइए। इससे महान् सद्भावना चनी:सृि होगी।

पुण्यिीलगुरुदेवस्वामीचिवानन्द जी का यह चवलक्षण उपहार चिरोधायप कर इसका संरक्षण कीचजये।यहप्राथपनाआपकेगृहकोसौभाग्यमय बनायेगी। यह आपको पूणपत्व की ओर ले जायेगी। यह चदव्यपथकीपथ-सन्दचिपकाहै।

आपचदव्यहै,अि:चदव्यजीवन यापन कीचजए। ईश्वर में चनवास कीचजए। ईश्वरीय प्रकाि में चविरणकीचजए।

* * *

परात्पर िक पहुँशिए

–श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज-

हे िाश्वि, सवाािीपी, परम चदव्य सत्ता, आपको श्रद्धापूवपक नमन करिे हैं! आप, जो मन-वाणी से परे हैं, मनुष्य की चविारिक्ति, िकपिक्ति, कल्पनािक्ति और चववेकिक्ति से परे हैं; आप, जो ऐसी अवणपनीय, अकथनीय सत्ता हैं, चजसे के वल चनज आत्मा की गहराई में अनुभव ही चकया जा सकिा है; और चजसे के वल वही अनुभव कर सकिे हैं चजन पर आप कृ पा करके स्वयं को प्रकट करने के चलए िुनिे हैं। आपकी चदव्य कृ पा-वृचष्ट् इस हम सब पर हो!

हमारे उन परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज को श्रद्धापूणप प्रणाम है, चजन्होंने हमें उस सवाािीपी का ज्ञान, आत्मज्ञान अथवा परमात्म ज्ञान, परम सत्ता का ज्ञान प्रदान चकया। उनकी गुरु कृ पा और आिीवापद हम सब पर चनरन्तर रहें!

हे साधक वृन्द! सदैव सवाािीपी िक पहुँचिए! अपनी विपमान आध्याक्तत्मक उपलक्तब्धयों, आध्याक्तत्मक उन्नचि अथवा प्राक्तप्त से सन्तुष्ट् न रहें! लगे रहें! सदैव ऊपर की ओर बढ़िे रहें! अपनी अब िक की प्राक्तप्त, सफलिा, िेिना के स्तर, उन्नचि और अनुभूचि की अवस्था से भी आिीि िक पहुँिने का प्रयास करिे रहें। इसी में आिीि अनुभव प्राप्त करने का रहस्य चछपा हुआ है।

हमारे स्थूल, सूक्ष्म और कारण िीनों िरीरों से आिीि सूक्ष्म अचि-भौचिक परम ित्त्व है। वही वास्तचवक है चजसको पाना है। वही चनचध है, अमूल्य रत्न है, आपके भीिर के स्वगप का साम्राज्य है। पंिकोषों से भी परे कोई है जो दृश्य कोष और अदृश्य कोषों से आिीि है। यह परम कोष नहीं, अचि कोष है; बक्ति यह कोई कोष है ही नहीं, सभी कोष इससे पीछे छूट जािे हैं। इन पंिकोषों को पीछे छोडकर उसे प्राप्त करें जो इनसे आिीि है।

जाग्रि, स्वप्न और गहन सुषुक्तप्त की अवस्था से परे कु छ है वही है जो इन िीनों अवस्थाओं का द्रष्ट्ा है। उसको खोजने का, जानने का और अन्वेषण करने का प्रयास करें। इसी ज्ञान में परम िैिन्य का िथा िेिना की उन िीनों अवस्थाओं से आिीि जाने का रहस्य चनचहि है जो चक सामान्य मनुष्य के अनुभव की पहुँि के भीिर है।

असंख्य, चवचवध नाम-रूपों और वस्तु-पदाथों के मानव जगि् में, इस बाह्य जगि् और सुदूर अन्तररक्ष में सूयप, िन्द्रमा, चसिारों से आिीि, सूक्ष्मदिी और दूरदिी से देखे जा सकने वाले समस्त नक्षत्रों इत्याचद सबसे परे पृथ्वी, जल, वायु, अचि और आकाि के पंिित्त्वों से चनचमपि समस्त दृश्य जगि् से आिीि जो परम ित्त्व है-उसे जानने का, उस िक पहुँिने का प्रयास करें। इसी में मोक्ष का रहस्य चनचहि है।

द्रष्ट्व्य के परे अदृश्य है। कहा गया है चक 'द्रष्ट्व्य ही चवश्वसनीय है'; चकनुतु 'अदृश्य वास्तचवकिा' इस दृश्य से कहीं ं अचधक सत्य है-मानव-जगि् के सीचमि व्यावहाररक सत्य से कहीं ं अचधक चवश्वसनीय है। अिीः दृश्य से परे जायें और सूक्ष्म अदृश्य परम सत्ता को जानने का प्रयत्न करें। वही ऐसा एक चवचिष्ट् ज्ञान और कला है जो आपको दृश्य से परे अदृश्य के साम्राज्य िक ले जाने योग्य बना देगा।

अिीः सदा उस परम सत्ता को जानें जो सवाापिी है। सदैव उसी के चजज्ञासु बनें जो सामान्य अनुभव से ऊपर है, जो उस सबसे परे है जो हमें यहााँ जानने में आिा है। उस अदृश्य, अज्ञेय, अलक्ष्य और सवाापिी परम ित्त्व के चजज्ञासु रहें। जो सबसे परे है, परात्पर है, वहीं ं िक पहुाँचे। उसी की खोज में लगे रहें। उस सवाापिी परमात्मा की अनुभूचि की सदा कामना करें। स्वयं से भीपरेजाकरउससवाापिीपरमप्रभुिककीउडानभरें।

****

'वास्तशवक धमण'

(१९९३ की पाशलणयामेंट ऑफ़ वर्ल्ण ररशलजि (शवश्व-धमों की सभा) के प्रशिशनशधयों ं को सादर प्रिाम और सप्रेम िुभकामनाओं ंसशहि स्वामी शिदानन्द, शदव्य जीवन संघ, ऋशषकेि, भारि।)

सम्माननीय चमत्रो,

चजसप्रकारपरमात्मािकपहुाँचने के चलए मानव-स्वभाव के अनुसार अलग-अलग बहुि से योगहैं,उसीप्रकारआजइससंसार में चजिनी भी धाचमपक पद्धचियााँ चवद्यमान हैं, सभी उसी एक परमसत्तािकपहुाँचनेकेचवचवधमागप हैं जो लोकािीि है और चजसे अपनी सीचमि इक्तियों ंऔर मन,बुक्तद्धइत्याचदअन्तीःकरणिुष्ट्य के सीचमि घेरे में समेट कर मापा नहीं ंजा सकिा। उसे संस्कृिभाषामें'परा'कहागयाहै, चजसका अथप है जो पर से भी परे अथापि् परात्पर है।

धमप बहिु से हैं और सभी समान रूप से प्रभाविाली, प्रमाचणक और वैध है, इसचलए
सबको समान रूप से सम्मान, समान रूप से मान्यिा और एक जैसा प्ेरम देना िाचहए; सभी को
हृदय में समान रूप से साँजोये रखना िाचहए, केवल सभी को सहन करना मात्र ही काफी नहीं ं
है। कहिे िो हैं 'धाचमपक सहनिीलिा' अथवा परस्पर 'अन्तरधाचमपक सहनिीलिा'। चकन्तुु
सहनिील िब्द में से अन्य दूसरे को भी रहने देने की आज्ञा देने की कृ पालिुा करने के भाव की
सी गिंिआिी है।स्वयंकेअचिररिदूसरेकीभीमान्यिाअथवावैधिाकोसहनकरलेनेकी
कृ पालिुा चदखाने मात्र का पुट है इसमें। यह ऐसा िब्द है चजससे धीरे-धीरे ढीला कर चदया जाना,
अथवा छोड ही चदया जाना िाचहए। क्ोंचंक प्रश्न के वल दूसरे के दृचष्टकोण को सहन करने का ही
नहीं ं है बक्ति दूसरे के दृचष्टकोण को उसी की दृचष्ट से समझने का है। आप चजससे सहमि नहीं ं
हैं, उसके चविार या भाव को यचद उसी की दृचष्ट से देख सकें िो आप समझ जायेंगे चक वह
व्यक्ति उसे अमुक ढंग से क्ों ं देख रहा है।

"ये यथा माम् प्रपद्यन्ेते, िांस्तथैव भजाम्यहम् "-जोमुझेचजसप्रकारभजिेहैं,मैंभी
उनको उसी प्रकार प्राप्त होिा हाँ (गीिा: ४-११)। चवश्व के समस्त धमों के प्रचि कै से भाव को ले कर िलना िाचहए
उसके चलए यह सूत्र अथवा आदिप वाक् सवोत्ृक ष्ट है। सभी धमप देखने में एक-
दूसरे से चभन्न प्रिीि होिे हैं, चकन्तुु सार ित्त्व सब का एक ही है। सब धमों की अचभन्निा एक िो
इस रूप से है चक सभी का अक्तस्तत्व एक ही लक्ष्य-एक ही महान् आध्याक्तत्मक लक्ष्य को पूणप करने
के चलए है। और वह लक्ष्य है रेचलगेअर, अथाप्ि् आपको पुनी: अपने मूल स्रोि-परम ित्त्व से
जोडना।

आप आरम्भ में अपने स्रोि-परमात्मा से संयुि, उससे जुडे हुए थे। चकन्तुु अब वह सम्बि
ढीला पडगयाहै,यहबिननहीं,ंसम्बिहै,जोचकवांचछिहै,जोचकहोनािाचहए।यह
आवश्यक है, एक अचनवायप वस्ुतु है यह। यह सम्बि ढीला हो िुका है, या कहें चक जैसा यह
था, वैसाअबनहीं ंहै,टूटिुकाहै।देखाजायेिोऐसानकभीथाऔरनहीहोसकिाहैचक
यह सम्बिढीलाहोयाटूटगयाहो।यहिोइसचलएलगिाहैक्ोंचंकआपनेआध्याक्तत्मक
जागरूकिा को खो चदया है और यह समझने लग गये हैं चक आप कुछ और हैं, कोई अन्य
अनाध्याक्तत्मक, भौचिक, िारीररक, स्थूल, या लौचकक हैं।

इस चनम्निििा के कारण, हीनिििा के कारण आप अपने मूल-स्रोि, उस परमात्मा
और आपके बीि के वास्तचवक सम्बि को, असली संयोजन को अनुभव नहीं ं कर पा रहे हैं।
चकन्तुु धमपग्रन्थ बार-बार उद्घोचषि करिे हैं चक कभी भी परस्पर चवभाजन है ही नहीं।ं यह असम्भव
है, क्ोंचंक 'वह' आपके भीिर सदैव आपके अन्तरिम में अपने आत्मित्त्व के रूप में चवद्यमान
है। और आप 'उनमें' हैं। क्ों?ं क्ोंचंक आप और कहीं ं हो ही नहीं ं सकिे, क्ोंचंक वह अनन्त है
अिी: सब जगह पर है, सवपव्यापक है।

यह केवल इसचलए ही नहीं ं है चक वह आपके अक्तस्तत्व का कारण है, इसचलए भी है
क्ोंचंक आपमेंऔरउसपरमित्त्व,परमात्मामेंसारित्त्वसेभीअचभन्निाहै।हमारेप्रािीनसन्त
मनीचषयों ं ने, चजन्ोंनें अपनी अध्यात्मििा की गहनिम अनुभूचियों ं में अपने भीिर साक्षात्कार
चकया, उन्ोंनेंकहाचकवहपरमात्माएकमेवअचद्विीयहै।केवलमात्रएकवहीहै।एकमात्रवही

ाश्चि सत्ता है। उन्होंनें अनुभव चकया **"एकमेव अशद्वीयं ब्रह्म" "नेह नानाच्चस्त"** अन्य दूसरा कुछ नहीं ंहै।

अिीः **"सवं खच्चल्वदं ब्रह्म"** यह सब कुछ वास्तव में ब्रह्म ही है, एक िथ्य है। इसे समझना होगा। यही सत्य था। और क्योंचंक वह परम सत्ता या परम ित्त्व अथवा परमात्मा एकमेव और अचद्वीय है, इसचलए जो चवचवधिा हमें चदखायी दििी है, यह भी चनचश्च रूप से, सार रूप में वह एक परमात्मा ही होगी।

हमारे घरों ंमें बहुि सी अलग-अलग वस्तुएँ हिोी हैं, जैसे िादरें, चसरहाने के चलहाफ़, मेज़पोि, कुिे, िौचलये, रूमाल, झाडन इत्याचद। लेचकन जो इससे थोडा भीिर देखिा है, िो उसे पिा हिोा है चक सभी सूि के बने हैं, भले ही देखने में चभन्न-चभन्न चदखायी दिे हैं, चभन्न-चभन्न आकार, रंग और रूप लगिे हैं चकन्तु हैं सूि अथाि् कपास के ही। चकसी मचहला ने भले ही हार, कडे, कुण्डल इत्याचद चकिनी ही प्रकार के आभूषण पहने हों।ं हम भले ही उनके अनेक रूपों ंमें चवचवध प्रकार के सौन्दयप को देखें चकन्तु स्वणपकार की दृचष्ट् सबमें एक ही वस्तु-स्वणप को देखिी है। कुम्हार की दुकान में अनेक प्रकार के, अनेक आकारों ंके बरिन हम देखिे हैं, चकन्तु कुम्भकार जानिा है चक उन सबमें एक ही वस्तु है-चिकनी चमट्टी।

अिीः चजस प्रकार चवचभन्न प्रकार के वस्त् एक ही वस्तु, सूि के बने हिो हैं, जैसे चवचवध प्रकार के आभूषणों ंमें वास्तचवक वस्तु स्वणप ही हिोी है, और जैसे िरहि–रह के चमट्टी के बरिनों ं में मुख्य वस्तु चमट्टी ही है, ठीक इसी प्रकार असंख्य चवचवध नाम-रूपों ंसे भरपूर इस चवश्व में, सार ित्त्व में एक ही परम ित्त्व है जो यह सब चवचवधिाएँ बन कर प्रकट हो रहा है। इसचलए अनेक रूपों ंमें चदखायी देना उस परम ित्त्व की अचद्वीयिा को अमान्य नहीं ंकरिा। एकमात्र वही अचद्वीय, अन्य चकसी की भी सम्भावना से रचहि, सवपत्र पररव्याप्त है।

मानव-सृचष्ट् में, मनुष्य समाज में सभी धमप, मानव को उसके मूल-स्रोि िक पुनीः ले जाने के चलए ही सत्ता में आये हैं, और वाचपस ले जाने के चलए ही नहीं ंबक्कि पुनीः जोडने के चलए, पक्का सम्बद्ध करने के चलए हैं। कैसे? या िो अपने हृदय के प्रेम के द्वारा; भक्ति, प्राथपना, उपासना, स्तुचिगान, मचहमागान के द्वारा; अथवा बुक्तद्ध के सूक्ष्म चवश्लेषण द्वारा चनरन्तर उसके स्मरण, मनन, उसके चवषय में जानने खोजने के द्वारा; अथवा सभी चबखरी हुई मानचसक िक्तियों ं की चकरणों ंको एकचत्रि करके, चफर उस केक्तिि मन को एकमेव परम अचद्वीय चदव्य सत्ता पर क्तस्थर करके, अन्य समस्त चविारों ंका बचहष्कार करके ध्यान के द्वारा; अथवा उस सवपव्यापक सत्ता की सवपत्र चवद्यमानिा को अनुभव करिे हुए, उसे अभी और यहीं ंउपक्तस्थि मानिे हुए अपना समस्त जीवन, समूपूणप प्रेम और सारे चविारों ंका एक सिि प्रवाह उस परम सत्य की ओर ले जािे हुए, समस्त मानव मात्र में, पिु-पचक्षयों ंमें, कीट-पिंगों ंमें, पेड-पौधों ंमें, सृचष्ट् के समस्त जड ििेन में उसी सत्ता का स्वरूप देखिे हुए स्वयं को उसका सेवक बना लेने के द्वारा।

वैचदक धमप के सन्दभप में भी यह जो चवचभन्न पहुँमािगप हैं, योग के मागप हैं- एक भावना के द्वारा, एक चवविेना के द्वारा, एक एकाग्रिा के द्वारा, एक सचक्रय सेवा के द्वारा- यह सब देखने में चभन्न-चभन्न प्रिीि हिो हुए भी वास्तव में एक ही माने जािे हैं। सभी उस एक की ओर ही ले कर जािे हैं। इसी प्रकार आज इस चवश्व में चजिनी भी धमप प्रणाचलयाँ हैं, सभी उस एक

परम ित्त्व की उपासना की ओर ले जािी हैं, जो एकमेव अचद्वीय है, जो सवपसम, एक रूप और अचभन्न है, भले ही उसको सहस्रों ंचभन्न-चभन्न नामों ंसे बुलािो रहें!
समस्त धाचमपक पद्धचियााँ अन्तीः उसी एकमेव, परम ित्त्व, अचद्वीय परम सत्ता की ओर, उसके चनकटिम ले जाने की प्रचक्रयाएाँ हैं, जो असंख्य कोचट ब्रह्माण्डों ंका स्रष्टा उनका उद्गम स्रोि है। सभी धमप उसी एक की चदिा की ओर बढ़िो हैं और सबका मात्र एक ही उदे्देश्य है-व्यक्ति को, हर एक मनुष्य मात्र को उस परम सत्ता के सीधे सम्पकप में लाना और स्थाई सम्बि स्थाचपि करवाना। लक्ष्य सबका यही है; उदे्देश्य एक ही है। इसके साधन चभन्न-चभन्न हो सकिे हैं, चकनुत्तु मागप एक ही ओर जािा है, उस परम लक्ष्य की ओर, ईश्-अनुभूचि की ओर। आप इसे अल्लाह-अनुभूचि कहें, भगवदिपन कहें, चनवापण प्राक्तप्त कहें, ब्रह्मसाक्षात्कार कहें, यहोवा प्राक्तप्त कहें। कोई भी नाम रख लें; यह आपके अक्तस्तत्व के मूल स्रोि की, अनुभविािी परम सत्ता की अनुभूचि है। समस्त सृचष्ट्यों ंके मूल परम स्रोि की अनुभूचि ही है।

इसी को समझने की आवश्यकिा है। इसी को पे्रेम पूवपक समझाने की आवश्यकिा है। दृढ़ चवश्वास के साथ, पक्की धारणा के साथ यह सभी लोगों ंको समझाने की आवश्यकिा है। और यह जो चवद्वज्जन हैं, जो चवचभन्न धमों के परररक्षक है, उनका मानव के प्रचि, भगवान् के प्रचि और स्वयं अपने प्रचि भी यह बडा भारी उत्तरदाचयत्व है। सविो किपव्य है यह उनका चक वे इस भेद-भावना का प्रिार न करें, चक हम एक दूसरे से चभत्र हैं, बक्ति उस आन्तररक और वास्तचवक एकत्व को उद्घोचषि करें जो चक इस मानव जाचि का यथाथप, और एकमात्र यही यथाथप सत्य है। केवल िभी मानविा धीरे-धीरे एक होगी।

सभी धमों के परमाध्यक्षों ंको इकट्ठा होना िाचहए। उन्ें चनचश्चि रूप से यह मान लेना िाचहए चक वैश्व-मानविा के चलए अब एक नया अध्याय आरम्भ होने जा रहा है, और यह भी समझ लेना िाचहए चक उसमें धमप अब िक जो भूचमका चनभा रहा था अब वह नहीं,ं उससे चभन्न भूचमका उसने चनभानी है। उसे चवश्व के चवगि धाचमपक इचिहास की भूलों ंको सुधारना होगा। इन सभी मूखपिाओं ंऔर पापों ंको सुधारना पडेगा। धमों ने धमप के नाम पर सवापचधक पाप चकये हैं। हम सभी को घुटनों ंके बल बैठ कर, अपने हृदयों ंको उन्नि करके, हाथ जोड कर भगवान् के समु्मुख पश्चात्ताप में रि हुए कहना होगा चक धमप अब िक गलिी पर था। धमप मानविा को गलि रासे्ते पर ले कर जािा रहा है। धमप ने मानविा को धमप के नाम पर अधमी बनाया है।

धमण िो पे्रेम है। सब कहीं ंऔर सबमें एक जीवन्त सत्य के रूप में परमािा की उपच्चथथशि को पहिानना धमण है। और प्रते्येक व्यच्चि, वसुतु और पदाथण के, अथाणि् जडि-िेिन सबके प्रशि पे्रेम के द्वारा इसी सत्य पर बल देना और इसी सत्य को अशभव्यि करने वाला जीवन जीना यह वास्तशवक धमण है।

और जब िक धमप, वैसा नहीं ं बन जािा जैसा उसे होना िाचहए, िब िक मानविा का भाग्य संघषप और चवरोध, घृणा और दे्वेष, आपसी फू ट और असंगचियों ं से पूणप रहेगा। इससे के वल दुीःख ही चमल सकिे हैं, प्रसन्निा नहीं,ं िाक्तन्त नहीं,ं समृक्तद्ध नहीं।ं धमप को अब चनचश्चि रूप से एक अलग, एक चभन्न भूचमका चनभानी होगी, यही भूचमका, वास्तचवक भूचमका है। अब िक इसने अपनी चदिा खोयी हुई थी, यह अपने स्थान से भटका हुआ था, अपने पथ से हट गया था यह!

जहााँ अन्य प्रत्ेयेक वसुतु ईश्वर की सृचष्ट् में चवचभन्निा प्रमाचणि करिी है, वहााँ धमप एक ऐसा थ्यि है चजससे इसके एकत्व को उद्घोचषि करने की अपेक्षा की जािी है। हम एक दूसरे से अचभन्न हैं। हम उस एक ही परम सत्ता की सन्तान हैं। वसुिुिः हम एक ही हैं, चकनुिु यह अत्यन्त ीिनीय बाि है चक अब िक धमप चवश्व में मानव-मानव में एकत्व स्थाचपि करने के उदे्देश्य में पूणपिया असफल हुआ है। यह गलि धारणाओं ंपर बल दिा रहा है, पररविपनील ित्त्वों ंपर बल दिा रहा है। बल िो आत्मा पर चदया जाना िाचहए; रूप-आकारों ंपर नहीं!ं रूप-आकार, अन्तचनपचहि आत्मा की वास्तचवक एकिा पर प्रभाव नहीं ंिाल सकिे।

अिः धमप को अब चनचश्चि रूप से यह समझ लेना िाचहए चक मानव-इचिहास में धमप अब िक गलिी पर था। धरिी पर इसने अपना वास्तचवक उदे्देश्य पूरा नहीं ंचकया। यह अत्यचधक दुिःख-कष्ट् पहुाँिाने का कारण बना रहा है। इसे अपनी त्रुचट को पहिान कर, उसे सही करना िाचहए और चनश्चय करना िाचहए चक एक नया अध्याय आरम्भ करना है चजसमें इसकी भूचमका चभन्न है। हमें एकीकिापओं ंकी भूचमका चनभानी होगी।

गलिी को सुधारने में कभी भी इिनी देर नहीं ंहोिी चक उसे सुधारा न जा सके। वास्तचवक धमप का पुनरुत्थान चकया जाना िाचहए, सि धमप का, जो चक एक ही है, पुनरुत्थान चकया जाना िाचहए। **धमण अनेक नहीं ंहैं। एक ही धमण है, मानव को पुनः भगवान् की ओर ले जाने का पथ, जीव का वैश्व सत्ता की ओर ऊध्वणगमन, मनुष्य को प्रपंि से पुनः एक बार अपने शदव्य स्रोि, अपने असली धाम से जोडना।** और अब एकचत्रि हुए धाचमपक अगुआओं ंको गम्भीरिा पूवपक उस गलिी का सुधार करने में जुट जाना िाचहए जो अब िक चदिा भ्राक्तन्त के कारण होिी रही है िथा एकत्व के उद्घोषक, समरसिा के उद्घोषक की नयी भूचमका को चनभाना िाचहए।

अिः सब धमों की सत्ता इसीचलए है चक वह मनुष्य की आत्मा को इसकी वास्तचवक चदव्य क्तस्थचि, ईश्वरीय क्तस्थचि िक ऊपर उठाएाँ िाचक मनुष्य का स्वभाव प्ेरेम, दया, करुणा, पचवत्रिा, उदात्तिा, सौन्दयप, िुद्धिा और पावनिा आचद दैवी गुणों ंसे भरपूर हो जाये। मानव का हृदय, इन उदात्त दैवी गुणों–ंजैसे चनिःस्वाथपिा, एकिा, सहानुभूचििीलिा और सेवा भाव इत्याचद के चनवास के चलए ही है। और इनका होना ही वास्तचवक धमप है। परमात्मा की सिी सन्तान बनना, उसकी सृचष्ट् का सिा द्रष्ट्ा बनना ही धाचमपक व्यक्ति होना है।

हम परमात्मा के प्रचिचनचध हैं, अिः हमारे जीवनों ंमें से उस परमात्मा की पररपूणपिा, सवपश्ेरेष्ठिा, सारे संसार को चदखायी देनी िाचहए। केवल िभी इक्कीसवीं ंििाब्दी की मानविा में नये युग का प्रभाि हो सकिा है। धमप एकिा लाने वाली एक बडी िाकि बन सकिा है, और इसे चनचश्चि रूप से यह बनना िाचहए। िब हम कह सकिे हैं चक भगवान् ने मनुष्य से वास्तव में कुछ कहा है और अब पुनिः धमप, मानव-समाज में अपने सही स्थान पर आया है, और अब इसने अपना उदे्देश्य पूणप चकया है, मानविा में एकत्व लाने की महान् भूचमका, उदात्त भूचमका इसने चनभाई है, मनुष्य को अपने वास्तचवक आध्याक्तत्मक स्वभाव के प्रचि जागरूक चकया है। क्ोंचक **वास्तव में िो सबके भीिर वही एक जैसी परमात्मा की ज्योशि का शनवास है जो शक सबकी अपनी िाश्वि सिी पहिान है।**

****

आप शदव्य ज्योशि हैं

उज्ज्वल चदव्यात्मा, कोई दीप चकसी आवरण के नीी ढके जाने के चलए नहीं ंजलाया जािा। दीप का उद्देश्य या प्रयोजन अपने िारों ंओर प्रकाि फैलाना और अँिेरे को समाप्त करके कण-कण को आलोचकि करना हािा है। यह सब ओर फैल कर अपनी आभा से दीक्तप्तमान् हािा रहिा है।

यहााँ जो कुछ भी ज्योचिमपय है, वह अंिकार से परे ज्योचियों ंकी परम ज्योचि से ही प्रकािमान है, और आप लोग उसी महान् ज्योचि की चकरणें हैं। दीक्तप्तमान् होना आपका जन्मचसद्ध अचधकार है और प्रकाि आपका चनत्य स्वरूप है।

चफर भी हम प्राथपना करिे हैं-"िमसो मा ज्योशिगणमय" (मुझे अंिकार से प्रकाि की ओर ले िलो)। हम यह भी कहिे हैं **"शधयो यो नः प्रिोदयाि्"** (वह मेरी बुक्तद्ध को प्रदीप्त करें)। यह चवरोधाभास और असंगचि क्यों?ं आप-जो ज्योचिषां ज्योचिः हैं, आप जो चदव्य िथा आध्याक्तत्मक प्रभा के ज्योचिमपय किे हैं, ईश्वर से स्वयं को अंिकार से प्रकाि की ओर ले जाने की प्राथपना क्यों ं करिे हैं? यह िमस् कहााँ से आ गया है?

यचद आप '**िमसो मा ज्योशिगणमय**' प्राथपना करिे हैं िो इसका कारण यह नहीं ंहै चक आपके भीिर अंिकार छाया हुआ है। आप ज्योचि के चलए यािना नहीं ंकर रहे हैं; क्योंचक आप स्वयं ज्योचि हैं। "मैं प्रकाि में हाँ, प्रकाि मुझमें है, और मैं स्वयं प्रकाि ही हाँ।" यही एक मात्र सत्य है। बाकी सब, कुछ नहीं ंहै।

महान् मनीचषयों ंद्वारा इस िथ्य की चसक्तद्ध की जा िुकी है चक आपके चविारों ंके ऊपर जाने की सीमा आकाि िक है। अिः आप उस अंिकार को त्याग दीचजए, जो वास्तव में आपमें नहीं ंहै पर प्रिीि हािा है चक है। इस अंिकार के चलए एक चविेष िब्- 'आवरण' का प्रयोग

चकया गया है। अिः आपकी प्राथपना में उसको हटाने की माँग की गयी है, जो आपके जन्मचसद्ध अचधकार-आपके प्रकाि को ढके रखिा है।

और इस अँिेरे को हटाने के चलए इस प्राथपना का कमों द्वारा अनुसरण करना अचि आवश्यक है। इस कमप को योग और साधना कहिे हैं। अंिकार को हटाने िथा प्रकाि को चफर से प्राप्तकरनेकेचलएचकयागयाप्रयत्नहीधमप-चवज्ञानहै।यहआपकासविोकिपव्यहै।

आप चनत्य गहन रुचि िथा अत्यचधक उत्साह के साथ इसे करने में लगे रहें और अपने जीवन को उत्साह से पूणप एक रोमांकि अचभयान में बदल दें। आपका ध्यान हर समय उस परम प्राप्तव्य पर लगा रहे। "मैं समस्त अंिकारों ं से परे ज्योचियों ं की परम ज्योचि हाँ। प्रकाि पर मेरा जन्मचसद्ध अचधकार है और प्रकाि मेरी सहज अवस्था है। अपने आप के साथ-साथ दूसरे लोगों ं को भी देदीप्यमान् करना और अंिकार को हटाना मेरे जीवन का प्रयोजन है" आपको इन िब्दों ं में चनचहि अथों का अनुभव हो और ईश्वर आपके इस मचहमामय अचभयान में आपकी सहायिा करें!

* * * *

परमाध्यक्ष स्वामी जी का पत्र :

(१९९७)

'शदव्य जीवन' के पाठकों ंिथा 'शदव्य जीवन संघ' के सदस्यों ंकी सेवा में

सौभाग्यिाली अमर आत्मन् ! चप्रय
साधको िथा चजज्ञासुओ!

परम चपिा परमात्मा की चदव्य कृपा एवं आराधनीय और चप्रय सद्गुरु स्वामी चिवानन्द जी महाराज का प्रेरेमािीष सदा-सवपदा आप पर रहे! अपने दिे की स्विंत्रिा-प्राक्तप्त की स्वचणपम जयन्ती के चविेष मांगचलक समारोह के उपलक्ष्य में मैं अपनी भ्रािृत्व-भाव-भीनी िुभकामनाएँ आप सबको इस पत्र के माध्यम से भेज रहा हाँ। यह स्वणप जयन्ती चब्रचटि भारि के स्वाधीन घोचषि होने की अथापि् स्विंत्र भारि की है जो वस्तुिीः भारिवषप के नाम से अचभचहि है। चनीःसन्देह दिे-भर में कई चविेष कायपक्रम आयोचजि चकये जा रहे हैं- केवल स्वाधीनिा चदवस मनाने हेिु नहीं, ं अचपिु स्वणप जयन्ती के चवचिष्ट् समारोह को एक चवचिष्ट् रूप देने के चलए। ये समस्त चविेष आयोजन केंद्रीय सरकार के चनदेिन में ही सम्पन्न होंगें। ऐसी ही आिा है।

यह स्वणप जयन्ती दिे की सरकार के चलए ही ऐचिहाचसक युगान्तरकारी घटना नहीं ंहै; बक्ति मािृभूचम भारि मािा की प्रते्येक सन्तान के चलए भी उिनी ही महान् घटना है। हर दिे-भि नागररक के चलए यह स्विंत्रिा-चदवस महत्त्वपूणप चदवस है। इसी प्रकार 'चदव्य जीवन' के प्रते्येक पाठक एवं 'चदव्य जीवन संघ' के प्रते्येक सदस्य के चलए भी इसकी उिनी महत्ता है। यह बाह्य जगि् के व्यावसाचयक, सामाचजक आचद सांसाररक कायपकलापों ंमें रि जीवन यापन करने वाले नागररकों ंके चलए ही नहीं, ं अचपिु आप सब पाठकों ंएवं चदव्य जीवन संघ के सदस्यों ंके चलए भी महत्त्वपूणप है, जो योग-वेदान्त एवं ध्यानाभ्यास द्वारा आध्याक्तत्मक साधनामय जीवन व्यिीि कर रहे हैं। राष्ट्र की इस अचि-चविेष घटना का सम्भविया आपके चलए िो और भी अचधक महत्त्व है अपेक्षाकृि ऐचहक जीवन व्यिीि करने वाले अगचणि नागररकों ंके।

जरा सोचिए, आज आप जो कुछ भी हैं, चजस आध्याक्तत्मकिा को आप प्रदचिपि करिे हैं, जो साधना अभ्यास आप करिे हैं, चजस भी धाचमपक आदिप, सदािार, परोपकार का पालन जीवन में आप करिे हैं; ये सब इसचलए सम्भव हो पाया है चक आपने इस पुण्य-भूचम, मािृभूचम में जन्म चलया है। आप जो भी हैं अपने राष्ट्र के गौरवमय इचिहास की ही छचव हैं। आध्याक्तत्मक चजज्ञासु, साधक अथवा मुमुकुषु और योगी के रूप में आप जो साधनाभ्यास कर रहे हैं, वह सब आपको अपने दिे भारि से सांसृ्कचिक एवं आध्याक्तत्मक चवरासि के रूप में प्राप्त हुआ है। इसी िथ्य को दृचष्ट्गि रखिे हुए आप सोचिए चक अगर आपका जन्म भारि में न हुआ होिा, चजसकी संसृ्कचि सनािन है, िो आप भी बाकी दिेों ंके उन साधारण नागररकों ंकी ही िरह होिे चजनकी संसृ्कचि का जन्म इस धरा पर बहुि बाद में हुआ। क्ा अब आपको स्पष्ट् हो गया चक आपका वैचिष्ट्य क्ा है? आप आध्याक्तत्मक सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप वंिज हैं उस आध्याक्तत्मकिा के जो संसार को अचि-पुरािन सभ्यिा और सनािन संसृ्कचि से प्राप्त हुई है। आप उस अपूवप, अनोखी आध्याक्तत्मकिा के भागीदार हैं चजसकी गहन गम्भीरिा दिे के जन-जीवन में समायी हुई है, जो अखण्ड-अबाध रूप से गचििील है, चजसकी धारा सिि रूप से प्रवाचहि है। भले ही दिे के इचिहास में राजनैचिक-सामाचजक चकिने भारी पररविपन आये हों, ं चकिने की उलट-फेर हुए हों, ं परन्तु संसृ्कचि की गचि, आध्याक्तत्मकिा के प्रभाव की गचि चनरन्तर प्रवाचहि रही है। इस प्रकार

आज आप नैचिक, सांस्कृचिक िथा आध्याक्तत्मक रूप से जो भी हैं वह एक भारीय नागररक होने के निो ही हैं; क्योंचक आपकी मािृभूचम भारि है।

ज्योचिमपयचदव्यआत्माओ!चदव्यजीवनकेमेरेचप्रयसहभाचगयो!उपयुपिपथ्यों ंसेप्रेरणा प्राप्तकरआपगम्भीरिापूवपकसोचिए,चविारकीचजएचकइसपचवत्रएवंआनन्ददायीस्वणपजयन्ती केउपलक्ष्यमेंइसराष्ट्रीयपवपकोबहुमूल्यिथासमृद्धबनानेमेंआपकेसहयोगकारूपक्ा होगा?सहयोगस्वचणपमजयन्तीकीबाह्यिोभाबढ़ानेमात्रके चलएहीनहीं,ंअचपिुउसके महत्त्व कीस्थायीअचभवृक्तद्धकेचलएहो,चजसकापररणामभीठोसहो।प्रथमिः:किपव्यिोआपकाएक भारीयनागररकहोनेकेनािेहीहै।प्रमुखिः:एकआध्याक्तत्मकव्यक्तिकेनािे,सद्गुरुदेवस्वामी चिवानन्दजीमहाराजकेचदव्यजीवनकेपाररवाररकसदस्यहोनेकेनािेआपकाउत्तरदाचयत्वऔर अचधकबढ़जािाहै;क्योंचकगुरुदेवस्वामीचिवानन्दजीकाहृदयराष्ट्र-प्रेमसेओि-प्रोिथा चजसके पररणाम-रूपमें,उनकीस्व-रचिचिरिनाप्रस्तुिहै,िीषपकहै-'भारिमािा'।इसकी प्रत्येक पंक्ति में भारि मािा के प्रचि गुरुदेव के हृदय का प्रेम झलकिा है।

भारि मािा

भारि मािा पर रहे ईि का मंगलमय आिीवापद चविेष
हमारा गौरविाली पावन चहन्द देि।
उि अध्यात्म-संस्कृचि-सम्पन्न ऋचष, योगी, सन्त-महात्माओं ंका देि।
भगवत्साक्षात्कार ही जीवन-उद्देश्य, भारि ही केवल ऐसा देि।
ऋचष-मुचन-योचगयों ंसे भरपूर केवल भारि देि ।।

भारि ने जन्म चदया किुल राजनीचिज्ञों,ं िक्तििाली सम्म्राटों ंको,
ऋचष-मुचनयों,ं सन्त-महात्माओं,ं योचगयों,ं कचवयों ंऔर िूरवीरों ंको।
युचधचष्ठर, अजुपन, वाल्मीचक, चवश्वाचमत्र से कमपवीरों ंको,
व्यास, वचसष्ठ, िंकर को, भगवान् राम और कृष्ण अविारों ंको ।।

भारिभूचम है धमप-भूचम, जहााँ जन-साधारण करिा अभ्यास यम-चनयम का,
यह पुण्य भूचम, जहााँ प्रवाचहि होिी चसंधु और गंगा-यमुना ।
यह है िान्त भूचम, सचहष्णु, उदार धमापवलक्तम्बयों ंकी
रहे सिि कृपा-वृचष्ट इस पर परमात्मा की,
जय हो भारि की, जय चहन्द देि की।।

बने एकिा-प्रेम और किपव्यपरायण भारिमािा की सन्तान,
ईश्वर उन्हें स्वास्थ्य, दीघापयु, िाक्तन्त व समृक्तद्ध करे प्रदान।
बनाये भगवान् उन्हें साहसी, वीर, किपव्यचनष्ठ, चदव्य और गुणवान्।
भरे उनके हृदय में चनश्छल िुद्ध भावना देि-भक्ति की महान् ।।
हो भारि का यि समग्र चवश्व में व्याप्त।
भारि की गौरवमयी सभ्यिा-संस्कृचि का फैले िहााँ और चदव्य प्रकाि।

शवश्व-बनुधुत्व की भावना गुरुदेव के शदल-शदमाग में समायी हुई थी। उनका प्रेम समिू शवश्व से था। शवश्व-प्रेमी होने के नािे भारि से िो उन्हें अथाह प्रेम था; क्योंशक यह उन्हें स्पष्ट ज्ञाि था शक शवश्व-िान्न्त, शवश्व-कल्याण, शवश्व-सामंजस्य, मानव-एकिा को बनाये रखने में भारिीय सभ्यिा-संस्कृशि और आध्यान्त्मकिा ही का शवलक्षि सहयोग है। गुरुदेव ने अनुभव शकया शक भारि की आध्यान्त्मक जीवन-िैली और मानविा की शदव्यिा का मानव जाशि के भशवष्य शनमाशण में शविेष प्रभाव है। समिू शवश्व के मानव-पररवार के कल्याण और सुरक्षा हेिु भारिवषण को शवशिष्ट भूशमका शनभानी है। वे भारि और शवश्व के अटूट आन्तररक सम्बन्ध िथा भारि के नव-जागरि एवं शवश्व-पुनरुत्थान के अन्तशनणशहि सम्बन्ध को भली-भाँशि जानिे थे।
अब पुनीः उस सन्दभप पर लौटिे हैं जहाँ मैंने गुरुदेव-रचिि कचविा को उद्धृि चकया था। स्वाधीन भारि की अर्धशिाब्दी का यह महत्त्वपूणप अवसर है। यह चविारणीय चवषय है चक चदव्य जीवन के अनुयाचययों का चिरस्थायी योगदान क्या होना िाचहए, चजससे भारि के प्रचि आपके सहज स्वाभाचवक प्रेम का साकार रूप में प्रकटीकरण हो? आपकी मािृभूचम भारिवषप के नाम से अचभचहि है। चनीःसन्देह आपकी ित्काचलक एवं स्वीःप्रसूि प्रचिचक्रया यही होगी चक राष्ट्रीय आिार संचहिा के चनष्ठापूवपक पूणपरूपेण पालन द्वारा भारि के आदिप नागररक चसद्ध होने की प्रचिज्ञा करें। यह राष्ट्रीय आिार संचहिा (THE DIVINE LIFE) पचत्रका में चपछले कई माह से लगािार छप रही है और चजसकी महत्ता पर मैंने इसके जून अंक में चवस्िृि प्रकाि भी डाला था। स्वाभाचवक है चक मेरे प्रश्न का यही उत्तर होगा चक देि के कोने-कोने में 'राष्ट्रीय आिार संचहिा' का प्रिार-प्रसार चकया जाये। अन्य प्रान्तीय भाषाओं में अनुवाद का चविार भी आपको सूझेगा। वस्िुिीः यह सब िो चकया जा िुका है। चदव्य दीवन संघ की बहत्तर िाखाओं के सचक्रय सदस्यों को लघु पुस्स्तका (पाकेट बुक) के रूप में राष्ट्रीय आिार संचहिा को भेज कर देि के लगभग सभी प्रान्तों में पहुँिा चदया गया है। क्षेत्रीय प्रादेचिक भाषाओं में इसके अनुवाद का कायप िो कुछ वषप पूवप हो गया था, चजसका चविरण समूपूणप भारि में चकया जा रहा है; चकन्िु यह मुख्यिया चदव्य जीवन के सत्संचगयों में ही चविररि हो पाया। चवचभन्न वगों, चवचवध भागों िक इसे पहुँिाने का कायप िो अभी िेष है चजसकी आज चनिान्त आवश्यकिा है। यह उत्तरदाचयत्व अब आपको ही चनभाना है। पत्रकारों का, सभी स्थानीय अचधकाररयों का प्रोत्साहन, समथपन एवं सचक्रय सहयोग अपेचक्षि है। ग्राम पंिायि के मुस्खया से ले कर प्रान्त के मुख्यमंत्री िथा उनसे सम्बस्न्धि अन्य मस्न्त्रयों को भी राष्ट्रीय आिार संचहिा से अवगि कराना है। स्काउट-प्रचिक्षण-चिचवर, युवा क्लब, युवा संस्थाओं एवं सांस्कृचिक संस्थानों द्वारा युवाओं की िस्क्ि को भी इसमें लगाया जाना िाचहए। अगर अगस्त माह के अन्त िक सम्भव न हो पाये िो इस वषप के अन्त िक िो अवश्य ही यह कायप सम्पन्न हो जाना िाचहए चक एक भी भारिीय नागररक ऐसा न हो चजसे राष्ट्रीय आिार संचहिा का पूणप ज्ञान न हो। यह चनचवपवाद सत्य है चक राष्ट्र का सुधार प्रत्येक नागररक के सुधार में ही चनचहि है। एक साधारण सामान्य नागररक को ही नहीं, बस्ल्क जन-नेिाओं एवं प्रिासचनक अचधकाररयों को भी राष्ट्रीय आिार संचहिा के अक्षरिीः पालन द्वारा जीवन में पररविपन लाने की आवश्यकिा है।

ये सब उचिि है, अचनवायप है, अचि-उत्तम है; चकन्िु इससे और अचधक महत्त्वपूणप कायप अभी बाकी है। चवगि स्वचणपम इचिहास को पुनीः प्रचिचष्ठि करना है चजसे चपछले पिास वषों में एक के बाद एक सत्तारूढ़ अचधकाररयों में दूरदचिपिा के अभाव और ऐचिहाचसक गौरव की अवहेलना के कारण खोया जा िुका है। मूलभूि मान्यिाओं एवं प्रिासचनक आदिों की प्राथचमकिा को समझने में वे असफल रहे। उनमें राष्ट्रचपिा गांधी जी द्वारा स्थाचपि आदिों, महान् चसद्धान्तों के प्रचि चवश्वास का चनिान्त अभाव था। भारि की स्विन्त्रिा के चलए गांधी जी ने आजीवन अचहंसा, सत्याग्रह-आन्दोलन िलाये रखा जो मानव-इचिहास में अभूिपूवप, अचद्विीय घटना मानी जािी है। स्विन्त्रिा-

प्राचध के अभी ६ महीने भी पूणप नहीं ◌ंहुए थे चक राष्ट्र के चलए उन्होंने अपने प्राणों ◌ंिक का बचलदान कर चदया। र्िस्विा का मूल्य उन्होंने अपने प्राणोत्सगप द्वारा िुकाया। आचथपक, सामाचजक,
नैचिक, राजनैचिक, वैयक्तिक एवं सामूचहक िौर से समिू राष्ट्रीय जीवन में एक नये युग को प्रचिस्थाचपि चकया था। विपमान भारि की पुकार है, अचनवायप माँग है इस युग को पुनजीचवि करने की।

अपने नेिाओं ◌ंद्वारा २ अक्टूबर िथा ३० जनवरी के कायपक्रमों ◌ंका आयोजन; बापू, गािी जी के नाम से सडक, मुहल्ले एवं नगरों ◌ंके नामकरण, सावपजचनक स्थानों ◌ंमें गािी जी की मूचिप स्थापना और अनावरण, नोटों ◌ंपर गािी जी की मुखाकृचि अंचकि करने में ही अपने किपव्य की इचिश्री मान कर चमथ्या सम्मान का ही पररिय दिे हैं। ऐसे में जन-कल्याण िो कुछ हो न पाया। पररणाम स्वरूप सामान्य भारिवासी दुःख ही झेलिे रह गये। मािृभूचम के प्रत्येक नागररक के हृदय में गािी जी उन महान् आदिों, चसद्धान्तों ◌ंएवं मान्यिाओं ◌ंको चबठाना िाहिे थे चजनके चलए वे जीए और मरे; चकन्तु राष्ट्र ने उनके प्रचि उपेक्षा-दृचष्ट रखी, अवज्ञा चदखायी। उनके आदिों में प्रमुख स्थान था-दररद्रनारायण की सेवा और जनकल्याण का। साथ-साथ जाचि, वणप और धमप की असमानिा को दूर कर मानव मात्र में प्रेम और बन्धुत्व की भावना उत्पन्न करने की अपररहायप आवश्यकिा उन्होंने समझी। पचवत्र लक्ष्य को पचवत्र साधनों ◌ंद्वारा प्राप्त करने की उनमें िीव्र आकांक्षा थी। अचहंसा, सत्य, ब्रह्मियप (मनसा वािा-कमपणा पचवत्रिा), चनजी एवं सावपजचनक जीवन में सदािार के पालन को उन्होंने सवोपरर स्थान चदया। इन सब आदिों के वह मूचिपमन्त रूप थे; बक्ति इनसे भी बढ़ कर थे। अपने आदिों की पूचिप उन्होंने पूणप चनभपयिा और साहस से की चजसका स्रोि था भगवन्नाम में उनकी अचिग चनष्ठा और दृढ़ चवश्वास। चनत्य दैचनक प्राथपना द्वारा वह भगवान् से चनरन्तर अपना सम्बन्ध बनाये रखिे थे। जीवन की अत्यन्त चवकट पररक्तस्थचियों ◌ंका सामना एवं दुजेय बाधाओं ◌ंको पार करने में वह धमपग्रन्थों ◌ंके ज्ञानोपदेि से मागपदिपन प्राप्त करिे थे।

मानव-लक्ष्य की पूचिप हेिु चनजी जीवनिैली का आदिप जो उन्होंने हमारे सम्मुख प्रस्तुि चकया उसके प्रचि आस्था न चदखािे हुए जो अवहेलना और अवज्ञा हमारे द्वारा हुई उस भूल को सुधारने का उचिि अवसर आ पहुँिा है। पन्दरह अगस्त का चदवस ही इसके चलए समुपयुि एवं समुचिि अवसर है चक गािीवादी आदिों-सामाचजक व धाचमपक समानिा के प्रचि पुनसपमपपण करें। चनःस्वाथपिा का चसद्धान्त, अचहंसा-सत्य का चनजी एवं सावपजचनक जीवन में चनष्ठापूवपक पालन करें। उिादिों का पालन कर जीवन में उसके प्रकटीकरण के चलए प्रत्येक अवसर का लाभ उठायें। इसी में भारि के नवोदय की सम्भावना है। १५ अगस्त से आरम्भ होने वाला आगामी ५० वषों की अवचध का समय स्वचणपम युग चसद्ध हो सके, इसी में भारि का भाग्य सुरचक्षि है। ऐसा नवचनचमपि भारि नवजीवन में जागृचि पैदा कर नवजीवन का सन्देि लाये और गौरव एवं भाग्योदय के चलए अग्रसर हो। भारि की आत्मा उचत्तचष्ठ और जागृचि का सन्देि सुने और अपने वास्तचवक स्वरूप का पररिय अपने ज्योचिमपय आदिप मानव-जीवन से दे सके।

महान् गुरु एवं उत्प्रेरक स्वामी चववेकानन्द िथा परम पूजनीय गुरुदेव के सजीव प्रेरणादायी चविारों ◌ंको उद्धृि चकये चबना चवषय का उपसंहार अधूरा ही रहेगा। स्वामी चववेकानन्द जगि् के जाने-माने देिभिों ◌ंमें से थे। मािृभूचम भारि के प्रचि उनके उद्गार सुनने योग्य हैं।

"क्या भारि चनष्प्राण हो जायेगा? अगर भारि की आत्मा चनष्प्राण हो गयी िो समिू चवश्व से आध्याक्तत्मकिा चवनष्ट हो जायेगी। समस्त नैचिक मूल्यों ◌ंका चवलोप हो जायेगा। आदिपवाद लुप्त-प्राय हो जायेगा और चवचभन्न देवी-देविाओं ◌ंकी पूजा के रूप में भोग-चवलास का साम्राज्य छा जायेगा,

पनपने लगेगा। धन स्वीकार करने वाले पुजारी-पुरोचहिों ं का बोलबाला हो जायेगा। चवचवध धमापनुष्ठानों ं की प्रचिस्पधाप के द्वारा ढोंगं का ढोल पीटा जायेगा। मानव-आत्मा का हनन होने लगेगा। ऐसा
कदाचप न होने देना िाचहए। क्ा सिमिु भारि की आत्मा मृिप्राय-सी हो जायेगी? क्ा भारि मािा की पुकार व्यथप जायेगी? नैचिकिा, पचवत्रिा और आध्यात्क्तमकिा की प्रिीक सत्य सनािन
भारि मािा, यह भारि भूचम ऋचषयों ंकी भूचम है, अविारों ंकी भूचम है जहााँ अब भी अनेकों ं
भगवद्स्वरूप महान् आत्माएाँ चवद्यमान हैं। इस चविाल चवश्व के नगर-नगर, िगर िगर, वन-उपवन
अथापि् कोने-कोने में दीपक ले कर ढूाँढ़ने पर भी भारि में जन्मे सन्त-महात्मा नहीं ंचमलेंगे।"

"समूपूणप जगि् मािृभूचम भारि का चिरऋणी है।"

"भारि के उत्थान का आधार आिबल है न शक िारीररक बल, िात्न्त और प्रेम की ध्वजा फहराने में है न शक शवनाि की लाल झण्डी शदखाने में। भारि की छशव जो मैं स्पष्ट् देख रहा हूँ शक भारि मािा पुनः जाग उठी है। पुनजीशवि हो कर वह पहले की अपेक्षा और अशधक दमकिे गौरव एवं शनखार से शसंहासन पर िोभायमान है। संसार भर में उसके द्वारा सुख-िात्न्त का उद्घोष हो।"

"मेरे भारिीय बिुओ! सब चमल कर जी-जान से जुट जायें। अब प्रमाद का समय नहीं ं
है। भावी भारि का चनमापण हमारे हाथों ंमें है जो आज के चनणपयात्मक ठोस कदम पर चनभपर करिा
है। भारि मािा किार दृचष्ट् से हमारी ओर िाक रही है। उसकी दृचष्ट् हम पर चटकी है। वह स्वयं
मूक है। उठें, जागें और दिपन करें प्रफुत्क्तल्लि रूप में िाश्विि चसंहासन पर चवराचजि भारि मािा
के। हमारी यह भारि भूचम पहले से भी अचधक गौरवमयी हो उठी है।"

(पृष्ठ ७८,८३, ८९; 'चववेकानन्दा-चहज्ञ काल टू द नेिन'; अद्वैि आश्रम, कलकत्ता)

अन्तिः मैं आपका ध्यान पूजनीय गुरुदेव के उस लेख की ओर आकचषपि करिा हाँ जो
अाँगरेजी पचत्रका 'द चिवाइन लाइफ' के अगस्त अंक के पृष्ठ १७ और १८ में 'स्पीररिुअल
इत्क्तण्डया' िीषपक से छपा है। आद्योपान्त उसे ध्यानपूवपक पचढ़ए। भारिवषप की महत्ता को भली-भााँचि
जाचनए-समचझए चक आपकी मािृभूचम का आपके जीवन में सवोपरर स्थान होना िाचहए। इस स्वणप
जयन्ती के अवसर पर सिे और आदिप नागररक के रूप में भारि के प्रचि अपनी सेवाएाँ सभी
सम्भव रूपों ंमें अचपपि कीचजए।

आपके सवपकल्याण, सुख-समृत्क्तद्ध, लौचकक एवं आध्यात्क्तमक जीवन के साफल्य की सादर-सप्रेम

िुभकामनाओं-सचहि ।

ॐ िात्न्त्! ॐ िात्क्तन्त!

अगस्त १९९७

गुरुदेव-आचश्रि
स्वामी चिदानन्द
सही
(स्वामी चिदानन्द)

नववषण-सने्दि

(२००३)

ॐॐॐ

ॐश्रीगणिीय नमीः। ॐश्री गुरुभ्यो नमीः। ॐश्री चवश्वनाथाय नमीः!

गुरुब्रणह्मा गुरुशवणषु्णगुणरुदेवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षिा् परब्रह्म िसै्मै श्रीगुरवेनमः।।

मैंपरब्रह्म परमेश्वर रूप अपने आध्याक्तत्मक अिायप सद्गुरुदेव को भक्तिपूवपक नमन करिा हाँ, वन्दनकरिा हाँ, साष्टांग प्रचणपाि करिा हाँ, जो अक्तखल चवश्व और अनन्तकोचट ब्रह्माण्डों ंके सृचष्टकिापब्रह्मा, पालनकिाप चवषु्णु एवं संहारकिाप महेश्वर हैं।

उज्ज्वल अमर आत्मन् । ज्योचिमपय ईश्वर की चप्रय सन्तान!

इसधराधामकेचनवासीसमस्तबिुवगप!समू्िचवश्वकेमानवबिुओ! आपके द्वारा स्वामी चिदानन्दकोनववषपके चलएचनवेदनचकयागयाहै।नववषपसने्दिसन्२००३ ए. िी. सचन्नकट है, कुछचदनहीषहैं,आज२७चदसम्बरहै,केवलिारचदनहीषहैं, पााँिवें चदन होगा- नूिनवषप का िुभागमन; १ जनवरी २००३।

पहले भी कई बार नववषप-सने्दि देने का मुझसे अनुरोध चकया जािा रहा है, िदनुसार मैंने सने्दि चदया भी। इस चिषय पर कुछ नवीन नहीं। ं बोलने-कहने को भी नया नहीं; ं परन्तु श्रोिागण अवश्य नये हो सकिे हैं और पाठकगण भी नये हो सकिे हैं। ५० वषप पूवप जो मैंने सने्दि चदया, उस पीढ़ी का स्थान नयी पीढ़ी ने ले चलया। इसचलए उस दृचष्टकोण से यह सने्दि सदा नया है, चनत्य नवीन है; क्ोंचक जो अब सुनेंगे अचधकिर नये हैं, पहले वाले नहीं। ं

आपसे मेरा प्रथम आग्रह है, मेरा सवपप्रथम प्रबोधन है--नववषप का िुभारम्भ आप अपने अन्तीःस्तल से, सिे मन से गम्भीरिापूवपक भगवान् से प्राथपना-यािना करिे हुए करें चक यह नया साल आपके जीवन काल का एक आदिप वषप चसद्ध हो, चजसके स्वचणपम ३६५ चदवस आदिप िथा चदव्यिापूणप चिव्यिी हों ंअथापि् चजसका एक-एक चदन मनसा-वािा-कमपणा चिष्टिा, पचवत्रिा, दयालुिा, करुणा और सत्यपरायणिा से चजया जाये। आपके दैचनक जीवन यापन की िैली सवपभूि चहिाथप हो। आने वाले आगामी वषप का प्रत्येक चदन पर चहि, पर-उपकार में बीिे, दूसरों ंके चलए हषपप्रद हो। आपका पर-चहि चिन्तन केवल मानव बिु वगप िक ही सीचमि न रह कर आपके आसपास के जगि् सभी जीव-जन्तुओं, ं सभी पेड-पौधों ंऔर िर-अिर, यहाँ िक चक धरिी की घास के चलए भी हो। ये सब भी आपके ही पररवार के अंग हैं। मात्र कुछ चदनों ंके चलए ही नहीं, ं अचपिु १ जनवरी २००३ से ३१ चदसम्बर २००३ िक चदनानुचदन इस दयालु वृचत्त का अनुपालन होना िाचहए।

सन् २००२ के अक्तन्तम चदवस ३१ चदसम्बर को सोिे समय िथा सन् २००३ की १ जनवरी को जागिे हुए यह दृढ़ चनश्चय करें, स्वयं से प्रचिज्ञा करें-"नववषप २००३ को चपछले वषप से िारगुना अचधक उपयोगी, महत्त्वपूणप, अचधक सुन्दर, बोधप्रद और आदिप बनाना है। पुरािन वषप की अपेक्षा नूिन वषप बेहिर हो। आगामी वषप, बीिे हुए वषप से अचधक माहात्म्यपूणप हो।" इस धारणा को दृढ़ से दृढ़िर करिे जाइए। समय चनकाल कर गि वषप का पुनरावलोकन करें। केवल अपनी अच्छाइओं ं का नहीं, ं बुराइयों ंका भी, केवल अपने गुणों ंका नहीं, ं अवगुणों ंका भी, केवल अपनी चविेषिाओं ंका नहीं, ं अपनी त्रुचटयों–कमजोरियों ंका भी चनष्पक्ष भाव से पुनचवपिार करें। िाचक अन्तरावलोकन द्वारा आप गि वषप का सामान्य पररिय प्राप्त कर सकें। अपनी कचमयों ंको दूर करने की ठान लें। अपने में सुधार लाने का पक्का चनश्चय कर लें। कोई मानव अपने में पूणप नहीं। ं केवल परमात्मा ही पररपूणप है। अपनी छोटी से छोटी गलचियों ंको भी सुधारें और ध्यान रखें चक नये साल में वह दुबारा न होने पायें। चपछले वषप से चिक्षा ग्रहण करें, उस अनुभव के आधार पर नववषप को अचधक अच्छा, अचधक उपादेय बनायें।

आपका प्रत्येक प्रयास प्रगचि की ओर हो। केवल मानब जगि् का ही नहीं, ं अचपिु पृथ्वी-िल पर रहने वाले सभी पर लागू होने वाला व्यापक चसद्धान्त चवकासोन्मुखी होने का है। चनम्न से उि की ओर, उि से उििर, उििर से उििम की ओर अग्रसर होने का है, जब िक चक पररपूणपिा की प्राक्तप्त नहीं ंहो जािी। इसी का नाम ऊर्ध्वीकरण है। अिएव मानव-जीवन का अथप है-उत्थान के पथ पर अग्रसर होिे रहना। इसे कभी चवस्मृि न करें। हमेिा ध्यान रखें चक आप जो कुछ सोििे हैं, जो कुछ बोलिे हैं, वाणी से चजन िब्दों ंका प्रयोग करिे हैं, जो भी चक्रया आप करिे हैं, चजस कमप में आप रि हैं, वह पूणपिा की ओर अचभमुख हो! उन सबके पीछे जो लक्ष्य हो, वह प्रगचि-पथ में सहायक हो। मानव होने के नािे आपका जीवन बौक्तद्धक ज्ञान सम्पन्न होना िाचहए। आपके चविार, आपकी वाणी, आपके कमप चवचिष्ट हों। ं सोद्देश्यपूणप जीवन के चवकास की प्रचक्रया में प्रभु-प्रदत्त इस बुक्तद्ध का पूरा-पूरा प्रयोग करें। इस सूक्ति को सदैव स्मरण रखें-"मानव

जीवन का अथप है (चवकास के चसद्धान्त के अनुसार) - पूणपिा की ओर अग्रसरण ।" चवकास अथापि् आरोहण! जीवन से अचभप्राय है-पररपूणपिा। क्योंचक जीव परमात्मा का ही अंि है। परमात्मा पररपूणप है, इसचलए आपका जीवन-लक्ष्य भी पररपूणपिा की प्राक्तप्त होना िाचहए। पररपूणपिा और चदव्यिा आपमें अन्तचहपि हैं। उस प्रच्छन्न िक्ति को अचभव्यि करना है। जो अप्रकट है, उसे सचक्रय गत्यात्मक रूप से प्रकट करना है।

समूपूणप मानव-जाचि से ऐक् का भाव स्थाचपि करें। आप अक्तखल चवश्व के नागररक बनें। आप ऐसा सोिें-"इस पृथ्वी पर वास करने वाला प्रत्येक व्यक्ति मेरा अपना भाई-बहन है।" सब एक हैं। भ्रातृत्व को अपने जीवन का मूल आधार बनाये रखें। दूसरों से चमले कटु अनुभवों को भूलि जायें। चविाल हृदय बनें। दूसरों की गलचियों को भुला कर महान् बनें, उदार बनें। मानव में अपूणपिा िो सदैव रहेगी ही; आप सोिें- "एक चदन उसमें सुधार आयेगा। उसकी भी प्रगचि होगी।" ऐसा चविार रखिे हुए इन छोटी-मोटी गलचियों को भूलि जायें और उदार चित्त बनें, क्षमािील बनें, प्रेमचमल बनें और मैत्रीपूणप व्यवहार करिे हुए सिे अथों में मानव बनें। इसके चवपरीि भावों को हृदय में स्थान न दें।

समस्त चवश्व के चलए, समग्र मानव जाचि के चलए, ऑचियो कैसेट के श्रोिाओं के चलए, वीचियो कैसेट द्वारा दिपकों के चलए मेरा यही सन्देि है। आपका जीवन चदव्यिापूणप होना िाचहए। अिएव आपके भावों, चविारों, आपके कमों में चदव्यिा का ही सिि-प्रिीचि प्रकटीकरण हो। आप जहााँ भी जायें, िहााँओर के पररवेि में चदव्यिा का ही संिार हो। चदव्य बनें। चदव्य होने के नािे आपका जीवन भी चदव्य हो।

हमारे परम चप्रय, परम आराधनीय, जीवन-पथ-प्रदिपक, दिपचनक, परम चहि-चिन्तक, हमारे बहु परम पावन गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज द्वारा मानव जाचि को चदये गये सन्देि-उपदेि का आधारभूि मूल चसद्धान्त है-चदव्यिा! चदव्यिा! चदव्यिा! मैं उन्हीं के सदुपदेिों की पुनरावृचत्त करिा हाँ। कारण चक अक्तखल चवश्व को गुरुदेव-प्रदत्त सन्देि से बढ़ कर सवोपरर सन्देि और कोई नहीं हो सकिा। सबमें व्याप्त चदव्यिा की अनुभूचि करें। आत्मैक् स्थाचपि करें। भाई–िारे की भावना को बनाये रखें। अपने चभन्न अक्तस्तत्व को प्रधानिा मि दें। मैत्री भाव को प्राथचमकिा दें। महान् िाक् मुचन िथागि बुद्ध ने कहा था- "प्रत्येक जीव के प्रचि दयालु बनें, करुणैक बनें।" चजसे उन्होंने 'मैत्ता' नाम चदया। इसी को उन्होंने 'कारुण्य मैत्ता' भी कहा अथापि् करुणापूणप मैत्री की संज्ञा दी।

श्रीमद्भगवद्गीिा के द्वादि अध्याय का ध्यानपूवपक स्वाध्याय करें, चिन्तन-मनन करें। चविेषकर अक्तन्तम आठ श्लोकों के अथप को हृदयंगम करें। भक्तियोग नामक इस चविेष अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण अजुपन से कहिे हैं- "हे अजुपन! सुनो मेरे भिों के लक्षण। मेरे प्रिक्त समचपपि, भक्तिपूणप हृदय से अपने को मेरा भि कहने वाले का बोलना, उठना-बैठना, बाि करना साधारण नहीं होिा। उसका आिार-चविार-व्यवहार, उसका स्वभाव चवलक्षण होिा है।" चफर आगे कहा- "मेरे ये सब उपदेि चविेष हैं, दुलपभ हैं।" और भगवान् कृष्ण ने अध्याय के अक्तन्तम आठ श्लोकों में दी गयी सारगचभपि चिक्षाओं को 'अमृिाष्टक' नाम चदया। उस संचक्षप्त अंि 'चिक्षामृि' का प्रचिचदन पारायण करें। इसका पारायण आपने अपनी ही भाषा में करना है। यह सब भाषाओं में उपलब्ध है-इटैचलयन, अाँगरेजी, जमपन, स्पैचनि इत्याचद। यह बहुि ही संचक्षप्त अंि है। इसका अध्ययन चनरन्तर करिे

रहें। भगवद्गीिा का यह द्वादि अध्याय छोटा ही है। एकादि अध्याय में भगवान् अपने चवश्व-रूप का दिपन अजुपन को करिे हैं। उसके पश्चाि् है यह अध्याय। अजुपन द्वारा आग्रह करने पर ही भगवान् श्रीकृष्ण ने चवचिष्ट् ज्ञानोपदेि चदया। अजुपन ने गीिोपदेि ध्यानपूवपक सुने। वह िो अचभभूि हो गया। चवक्तस्मि हो गया। हिप्रभ हो अजुपन ने उन सदुपदेिों ं को साररूप में कहने की चविेष प्राथपना की। िब भगवान् श्रीकृष्ण ने बारहवें अध्याय में उनका संचक्षप्त सार बिलाया। नाजीरथ के महान् सन्त ईसा जीसस के आदेिों ं को भी पढ़ें। चजनका जन्म बैिलेहम, पालनपोषण नाजीरथ क्षेत्र में, अन्तिः जीवन-बचलदान चदया जेरुसेलम में। धमपरायणिा, चदव्यिा की प्रचिमूचिप महान् सन्तों ं की सचिक्षाओं ं को सदैव याद रखना िा चहए। इस सन्तात्मा की चिक्षाएँ िा र ग्रन्थों ं में संग्रहिि हैं। उनके अनन्यअनुयाचययों ं केनामहैं-लूका,माकप,मैथ्यूऔरजान।

इस सन्देि में भगवान् कृ ष्ण िथा सन्त-महात्माओं ं के उपदेिात्मक िब्दों ं को यहाँ उद्धृि चकया गया है। आपमें से प्रत्येक को इसे नववषप-उपहार-रूप में ग्रहण करना िाचहए। गौस्पल का अध्ययन करें। भगवद्गीिा के बारहवें अध्याय का चनत्य पारायण करें और जीवन को उत्कृष्ट् एवं महान् बनायें। अपनी चदव्यिा का कभी चवस्मरण न करें। अनन्तिा, चदव्य संगीिमय, परमानन्द, सि्-चिि्-आनन्द के महासागर की आप एक िरंग हैं। परमात्मा असीम है, िाश्वि है, अनाचद-अनन्त सक्तिदानन्दसागरहै।उसीसागरकीआपएकबूँदहैं।सागरकीबूँदहोनेसेआपभी सि्-चिि्-आनन्द ही हैं। यही आपका वास्तचवक स्वरूप है। आपके इस नश्वर िरीर के अन्दर चवद्यमान आपका आत्मा अनश्वर है, जो दृश्यमान नहीं ं है; परन्तु वही चदव्यात्मा आपकी असली पहिान है। आपके जीवन का मूलभूि आधार चदव्यिा है। आपका जीवन इसी परमिम सत्य की अचभव्यक्ति की प्रचक्रया स्वरूप हो। सन् २००३ की प्रथम जनवरी के चलए आप सबके चहिाथप यही सद्बोधन-सन्देि है। चदये गये इस सुअवसर के चलए धन्यवाद।

परम चपिा परमात्मा िथा गुरुदेव की कृपा अनुग्रह वषपण आप सब पर सदा-सवपदा हो !

ॐ पूणपमदीः पूणपचमदं पूणाि् पूणपमुदच्यिे। पूणपस्य पूणपमादाय पूणपमेवावचिष्यिे ।।

ॐ िाक्तन्तीः िाक्तन्तीः िाक्तन्तीः!

-स्वामी शिदानन्द

त्त्विमशस

(गुरुपूशिणमा-सन्देि जुलाई २००३)

उज्ज्वल अमर आिन्, मानव स्वरूप में शदव्यिा!

इस स्वामी को बुलाया गया है, और स्वामी का चविार भी १५ चमनट केवल दिपन के चलए आने का ही था। यह सभा चकसी प्रविन के चलए अथवा विीपन या भाषण के उद्देश्य से नहीं ंकी गयी है। 'स्वामी जी यहाँ केवल दिपन के चलए आ रहे हैं।' इसे चकसी भी ढंग से कह सकिे हैं- स्वामी जी यहाँ केवल आप सबके दिपन करने के चलए आ रहे है, क्योंचक आप सब कुछ समय के चलए नाम रूपों ंमें आबद्ध चदव्यिाएँ ही हैं, यह जो आपके मानवीय नाम रूप है, यह आपकी असचलयि नहीं ंहै। आपकी असचलयि इससे परे है, चजसे न आँख देख सकिी है, न कान सुन

सकिे हैं, न वाणी उसका वणपन कर सकिी है, न नाक उसे सूंघ सकिी है और न ही हाथ उसको स्पिप कर सकिे हैं, वह इन सबसे िीि है। और वह है क्ा? उसे कहिे हैं िीरत्रय
चवलक्षण, पंिीिकोिी, अवस्थात्रय साक्षी, केवल चनराकार, चनगुपण सक्तिदानन्द स्वरूप, एकमेव
अचद्विीय परब्रह्म। आनन्द स्वरूप, चिि् स्वरूप और सदा-सवपदा है, अनाचद अनन्त है। कालत्रय में
उसका अभाव-भिू, भचवष्य, विपमान में उसका अभाव कदाचप नहीं, कभी भी नहीं, इससे सदा-
सवपदा वह है। उसको कहिे हैं सि्, इसचलए सि् सदा, सवपदा है। चिि्, अथापि् जड के रूप में
नहीं है, पत्थर के रूप में या लकडी के रूप में वह कोई जड वसुिु नहीं है। वह िैिन्य स्वरूप
है जो सब देखने वाला, सब जानने वाला-ज्ञान स्वरूप है, इसचलए वह चिि् है। और सक्तिदानन्द परब्रह्म असीचमि, अगाध आनन्द का सागर है, इसचलए वह आनन्द स्वरूप है। जो भी उसको प्राप्त कर लेिा है, वह हमेिा हाँसिा ही... हाँसिा hat g ... हाँसिा ही रहिा है। यचद उससे
पूछें चक दुीःख क्ा है, िो वह कहिा है, "दुीःख क्ा है मैं नहीं जानिा। अरे, कोई बोलिा है संसार दुीःखमय है, लेचकन मैं नहीं जानिा। मैं िो एक ही िीज़ को जानिा हाँ-वह केवल अचमचश्रि
िीिः आनन्द है। परब्रह्म का दूसरा नाम है आनन्द। गुरु महाराज गािे थे, "आनन्दोऽहम्
आनन्दोऽहम् आनन्दम् ब्रह्मानन्दम्" वह आनन्द केवल ब्रह्म में है। "आनन्दोऽहम् आनन्दोऽहम्
आनन्दम् ब्रह्मानन्दम्। सिरिर पररपूणप चिवोऽहम्" ये चिव िंकर भगवान् 7 overline 51 , चिव अथापि् मंगलमय, कल्याणप्रद, "सहजानन्दस्वरूप चिवोऽहम्, सिरिर पररपूणप चिवोऽहम् सदा सहजानन्दस्वरूप चिवोऽहम् आनन्दोऽहम् आनन्दोऽहम् आनन्दम् ब्रह्मानन्दम्" यह आप गुरु महाराज
के 'इिपाइररंग सौंग्ंस एण्ड कीिपन' में प्राप्त करेंगे 'सौंग्ंस ऑफ़ आनन्दा (आनन्द के गीि) !
अिीः आप सब आनन्द स्वरूप हैं। दुीःख चमथ्या है, दुीःख क्षचणक है, और उस दुीःख का अनुभव
भी 'आप' नहीं कर रहे हैं, आपके अन्िीःकरणिुष्टय की भूचमका में यह दुीःख-सुख, ये सब
हैं, 'आप' िो उससे परे हैं। अन्िीःकरणिुष्टय के केवल साक्षी हैं। अन्िीःकरणिुष्टय की जो
कुछ अवस्था है, वह आपकी अवस्था नहीं। दुीःख आपके चनकट नहीं आ सकिा। जैसे अचि के
चनकट कोई िीज़ आयेगी िो भस्म हो जायेगी। दुीःख आपके पास आयेगा िो दुीःख जल कर भस्म
हो जायेगा। दुीःख का नाम-चनिान नहीं रहेगा। आप ऐसे आनन्द स्वरूप है।

आप सब यहााँ एकचत्रि हैं साधना सप्ताह के चलए, जो कल से प्रारम्भ होगा और साि
चदनों के चलए सम्पन्न होगा, प्रचिपदा से सप्तमी िक। अष्टमी नागा है। अष्टमी के चदन कुछ
कायपक्रम नहीं। उस चदन मौन रह कर आत्मचनरीक्षण करना है, जो कुछ आपने साधना सप्ताह में
सुना है, जो कुछ स्वाध्याय चकया है, श्रवण चकया है, उस पर मौन रह कर मनन करना है। और
उस चदन लक्षािपना के चलए जा कर चबल्वपत्ता, फूल संग्रह के चलए लेिे हैं।

१९६३ में गुरु पूचणपमा से ९ वें चदन गुरुदेव ने अपनी लोक-लीला का संवरण करके, जहााँ
से आये थे, पुनीः वाचपस वहीं जाने का चनश्चय कर चलया। अिीः हम प्रत्येक गुरुपूचणपमा का ९ वााँ
चदन उनके आरोहण का चदवस िाश्वि में आरोहण, चदव्यिा में आरोहण का चदवस मनािे हैं। और
िब िक यह पण्डाल साधना के चलए उपयोग चकया जायेगा।

और आप साधना चकसे कहिे हैं? साधना िब्द के माने क्ा हैं? साधना िब्द के माने हैं,
जो पुरुषाथप चकसी साध्य वसुिु की प्राक्तप्त के चलए चकया जािा है, उसको साधना कहिे हैं।
आध्याक्तत्मक जीवन चबिाने वाले जो साधक वृन्द हैं, उनकी वांचछि साध्य-वसुिु क्ा है? क्ा प्राप्त
करना िाहिे हैं? क्ा वे पैसा िाहिे हैं, यि या पदवी िाहिे हैं, अचधकार िाहिे हैं, सत्ता िाहिे

हैं, पूरे जगि् में अपने को बडा चदखाना, या लोग कहें चक अमुक व्यक्ति सबसे बडा है, ऐसा िाहिे हैं? वे िो ऐसा कुछ भी नहीं ंिाहिे, क्ोंचक यह सब िो चपंजरा है, यह सब जाल है, इसे जाििा कहिे हैं। इसमें पकडा गया िो, **"पुनरशप जननं पुनरशप मरिं, पुनरशप जननी जठरे यिनम्, इह संसारे बहुदुस्तारे कृपयाऽपारे पाशह मुरारे।"** ऐसा कह कर जगद्गुरु आचद किंरािायप अपनी 'द्वादिमञ्जररकास्तोत्रम्' में भजगोचवन्दम् में कहिे हैं, इस िक्कर में बार-बार नहीं ंआना है-

मूढ़ जहीशह धनागमिृष्णां कुरु सद्बुच्च ंदं्ध मनशस शविृष्णाम्।
यल्लभसे शनजकमोपात्तं शवत्तं िेन शवनोदय शित्तम् ।।

जो कुछभीहमेंप्राप्तहोजािाहैहमउसीमेंसदाप्रसन्नरहिेहैं।अिः बुक्तद्धिीलव्यक्ति की साध्य-वसुतुक्ाहै?एकचववेकिील,जागरूकव्यक्तिकहिाहै,"मैंकोईभीअस्थायीवसुतु नहीं ं िाहिा, िुच्छ क्षचणक वसुतु मैं नहीं ं िाहिा, अपूणप वसुतु मैं नहीं ं िाहिा। मैं वह िाहिा हूँ जो पररपूणप है, चनत्य चनरन्तर और अपररविपनीय है। पररविपन हो जाने वाली, कभी मीठी, कभी कडवी हो जानेवालीनहीं!ंयहमुझेनहीं ंिाचहए।"इसकाअथपहैवहिाहिाहै,'सवपदुःखचनवृचत्त परमानन्द प्राक्तप्त।' यही मोक्ष है, सदा के चलए दुःख, कष्ट्, पीडा से छुटकारा पा कर परम अनन्त अक्षय सुख पा लेना। इसे कहिे हैं-कै वल्य मोक्ष साम्राज्य। यह सविो अवस्था है, और ऐसी अवस्थाप्राप्तकरलेनेपर**"यद्गत्वा न शनविणन्ते िद्धाम परमम् मम।"**उसपरमपदकोप्राप्तहो कर मनुष्य लौट कर संसार में नहीं ं आिा। और वह परम ज्योचि स्वरूप है, उस स्वयं प्रकाि परम पद को न सूयप प्रकाचिि कर सकिा है, न िन्द्रमा और न ही अचि, वही मेरा परम धाम है िथा

'न ित्र सूयो भाचि न िन्द्रिारकं नेमा चवद्युिो भांचि कुिोऽयमचिः ।
िमेव भान्तमनुभाचि सवां िस्य भासा सवपचमदं चवभाचि।। '
-कठोपचनषद् - २ - ३ - १५

वह पूणप प्रकाि स्वरूप है, पूणप आनन्द स्वरूप है, िैिन्य प्रकाि है, उसी के प्रकाि से सब प्रकाचिि है, इस पण्डाल का यह सारा प्रकाि भी !

अिः आगामी साि चदनों ंमें आप इसी चवषय पर और बहुि कुछ श्रवण करेंगे। इसचलए सही समय पर आयें, एक ही स्थान पर बैठें, प्रथम चदवस जहाँ बैठ गये, सािों ंचदन उसी जगह पर बैठें। जैसे बन्दर एक िाखा से दूसरी िाखा पर कूदिा रहिा है, ऐसे अपना स्थान न बदलिे रहें। क्तस्थर रहें, चनश्चल रहें और गुरुदेव कहा करिे थे, 'दत्तचित्त हो कर श्रवण करो, सुनना है िो पूरा मन वहीं ंदे कर, और अन्य कहीं ंभी जाने न देिे हुए अचवचक्षप्त दत्तचित्त ! ऐसा गहन श्रवण होना िाचहए िाचक अचधक-से-अचधक लाभ उठा सकें। चजिना ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सकिे हैं, उिना लाभाक्तन्वि हो कर आप सबको धन्य बन जाना िाचहए। यही दास की प्राथपना भगवि् िरण में, गुरु िरण में और सब सन्तों ंके िरणों ंमें है-समथप रामदास, नामदेव, ज्ञानदेव, िैिन्य महाप्रभु और जो जो भी, चजिने भी हैं, भारिवषप िो योचगयों ंका, सन्त जनों ंका राष्ट्र है- उन सबसे यही प्राथपना करिा है आप लोगों ंके वास्ते ये दासानुदास, चजसको गुरु भगवान् स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने चिदानन्द का नाम चदया। आज से बहुि साल पहले इसी चदन-१९४९ गुरुपूचणपमा को, इस िरीर को चिदानन्द नाम दे कर आिीवापचद चकया िाचक यह सेवक कभी

अपनेवास्तचवकस्वरूपकोनभूलेक्ोंचंकइसनामकेउिारणमात्र से ही मैं कभी भूल नहीं ं सकिा,मुझेहमेिायहीचविारआयेगा,"मैंचचि्स्वरूपतऔरआनन्द स्वरूप हाँ।" और कुछ लोगसोिाकरिेथेऔरकहिेभीथेचकजबगुरुदेवएकभजनचविेष गािे िो, ओह! गुरुदेव अपनेचिेलेकेबारेमेंगारहेहैं।परन्तुवेअपनेचिेलेकेबारेमेंनहीं ंगािे थे, वे िो अपनी ही लहर में गाया करिे थे-

शिदानन्द शिदानन्द शिदानन्द हूँ,
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूँ।
शनजानन्द शनजानन्द शनजानन्द हूँ।
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूँ।
अजरानन्द अमरानन्द अिलानन्द हूँ

अजरानन्द-जरा, वृद्धावस्था रचहि, अमरानन्द-मृतुयु रचहि, अिलानन्द- गचि रचहि; मैं सदा पूणप हाँ, पूणप वसुतु चहल नहीं ंसकिी क्ोंचंक सब जगह िो वह पहले से ही है, िो चहल कर जायेगी कहाँ, जहाँ जाना है, वहाँ िो पहले ही व्याप्त है क्ोंचंक वह पररपूणप है।

अजरानन्द अमरानन्द अिलानन्द हूँ
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूँ।
शिदानन्द शिदानन्द शिदानन्द हूँ,
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूँ।

इसके दो पद और भी हैं, लेचकन इिना ही बहुि है, क्ोंचंक मैंने ज्यादा से ज्यादा १५ चमनट बोलने को कहा था, इन्ोंनें कहा था चक पंचलि में सारे लोग नहीं ंआ सकिे, आधे-आधे करके दो बार बैठेंगे इसचलए आप दोनों ंको बराबर समय दें। मैंने कहा ठीक है मैं दोनों ंको १५ - १५ चमनट दूँगा। अब इसचलए दोनों ंचमला कर आधा घण्ा बन जािा है। और वह आधा घण्ा हो ही िुका है।

इसचलए मैं आप सबके चलए परम आनन्द की िुभकामनाएँ करिा हाँ। मैं सवपिक्तिमान् भगवान् से प्राथपना करिा हाँ, प्रत्यक्ष भगवान् श्री स्वामी चिवानन्द जी जो यहाँ भी चवद्यमान हैं और उिर स्तर पर भी चवद्यमान हैं, उन दोनों ंको प्राथपना करिा हाँ, सबसे यािना करिा हाँ चक वे अपनी चदव्य कृपा की वृचष्ट् और ियचनि आिीवापदों ंकी वृचष्ट् आप सब पर करें और आपको परम आनन्द प्रदान करें, परमानन्द, समृक्तद्ध, प्रसन्निा, उत्तम स्वास्थ्य यहाँ पर भी और अन्तिः िरीर त्यागने पर कैवल्य मोक्ष, वह भी यहीं ंपर ही, चफर कभी दूर भचवष्य में नहीं,ं चकसी दूसरे जन्म में नहीं,ं इसी जन्म में कैवल्य मोक्ष प्रदान करें। यह मेरी चवनिी प्राथपना है। बारम्बार, िीन बार, बार-बार यही प्राथपना है। हरर ॐ।

करुणाप्रेम मेरे साथ चमल कर एक गीि गाया करिे थे, वह इस प्रकार था-बार-बार भगवान् में प्रसन्न रहो। हमेिा रहो, बार-बार प्रसन्न रहो, प्रसन्न रहो, प्रसन्न रहो, प्रसन्न रहो, बार-बार प्रसन्न रहो। इसका अथप है, यह जान लेना चक आप भगवान् की सन्तान हैं, यह अस्थायी, नािवान् िरीर, चजसका इस नश्वर संसार में जन्म हुआ है, यह एक चदन जायेगा,

समाप्तहोजायेगा यह एक चदन। यह निावान् अस्थायी पंभिौचिक िरीर आपको लौचकक मिाा-चपिाद्वाराचमला हुआ है, लेचकन यह अदृश्य, अनश्वरहै-

न जायिे चम्रयिे वा कदाचिन्नायं भूत्वा भचविा वा न भूयीः।
अजो चनत्यीः िाश्विोऽयं पुराणो न हन्यिे हन्यमाने िरीरे।।

(गीिा : २-२०)

थिा

नैनं चछन्दन्त्ति िस्त्राचण नैनं दहचि पावकीः।
न िैनं क्लेदयन्त्यापो न िोषयचि मारुिीः।।

(गीिा : २-२३)

हड्डी, रि, मांस के इस भौचिक चपंजरे के भिीर यह जो अमर अचवनािी ित्त्व है, वह िुम हो, ओ श्वेिकेिु ित्त्वमचस, हमारे प्रािीन ऋचषयों ने यह अवणपनीय, अपररविपनीय िाश्विि सत्य उद्घोचषि चकया।

यही कहिे हुए मैं चवराम लेिा हाँ, अब दूसरे चदन कल प्रािीः से आपको पूरा एक सप्ताह इसी मंि से सम्बोचधि करेंगे। आप वास्तव में भाग्यिाली हैं, जो इस कचलयुग में, इस भोगवाद के युग में, जहााँ लोग िुच्छ भोग पदाथों के पीछे भागने में लगे हुए हैं-आपको यह श्रवण करने को प्राप्तव्य है। अिीः आप अत्यन्त भाग्यिाली हैं। मैं आपको िुभकामनाएाँ देिा हाँ। मैं अल्प मात्रा में इिना ही कहिा हाँ।

भगवान् का आिीवापद आप सब पर हो।

ॐ ॐ ॐ
कायेन वािा मनसेचन्द्रयैवाप
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृ िेीः स्वभावाि् ।
करोचम यद्यि् सकलं परस्मै
नारायणायेचि समपपयाचम।
श्रीमन्नारायणायेचि समपपयाचम ।।
नाहं किाप हररीः किापत्वत्पूजाकमपाचखलम्।
यद्यि् कमप करोचम िित्सकलंभवाराधनम्।।

हरर ॐित्सि्।

स्वामी चिदानन्द

*****

शिवानन्द सत्संग भवन का उद्घाटन-भाषि गुरुपूशिणमा पर

(जुलाई २००६)

श्रीस्वामी चिवानन्द सत्संग भवन का उद्घाटन करिे समय परम पावन परमाध्यक्ष श्री स्वामी चिदानन्दजीमहाराज के श्रीमुख से चनी:सिृ भाषण से पूवप-

नवचनचमपि स्वामी चिवानन्द सत्संग भवन बाहर भिीर से नव दुल्हन की भााँचि सजा हुआ था। पुष्प सज्जा सबका मन मोह रही थी, िारों ंओर का वाािावरण सुगक्तिि और मोहक हो रहा था। चिवानन्द सत्संग भवन अकथनीय आनन्द और अनुभूचि भाव से ओि-प्रोि था। भवन के भिीर और बाहर िििुचदपक्, दिपनों ंके चलए लालाचयि, उत्कक्तण्ठि खडे, अपनी सुध-बुध खोये, दूर-सुदूर से आये भि जन अपने आराध्य देव श्री स्वामी जी महाराज के आगमन से स्वयं को धन्य धन्य कर रहे थे। लगभग िार वषों की अवचध के पश्चाि् श्री स्वामी जी महाराज के दिपन कर अनेक भि जनों ंके िेहरों ंपर सहज प्रवाचहि होिे आनन्दाशुरुओं ंको देखा जा सकिा था।

श्री स्वामी जी महाराज िाक्तन्त और आनन्द चवकीणप करिे हुए चिवानन्द सत्संग भवन में प्रचवष्ट् हुए। आनन्द स्वरूप श्री स्वामी जी महाराज प्रसन्न एवं आनक्तन्दि थे। प्रवेि करने पर श्री स्वामी जी महाराज मन्द-मनोहारी िाल से मंचिर पहुाँिे। ििुपरान्त परम पूज्य परमाराध्य गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के चविाल चित्ताकषपक चित्र िथा श्रीगुरुदेव-पादुकाओं ंको सश्रद्धा निमस्तक प्रणाम करिे हुए पुष्पांजचल अचपपि की। चफर अवसरोचिि चविेष आसन पर चवराजमान हुए। परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने कहा- "गुरु भगवान् प्रत्येक िुभ कायप को प्रारम्भ करने से पूवप 'जय गणेि' कीिपन चकया करिे थे। मैं भी कायपक्रम का िुभारम्भ 'जय गणेि' कीिपन से करूंगा। कीिपन के पश्चाि् कुछ विनामिृ पान करिे हुए इस िुभावसर पर चविेष रूप से िैयार चकये गये 'गुरुदेव महाराज के चित्र' एवं आध्याक्तत्मक साचहत्य का चवमोिन चकया।

'श्री स्वामी चिवानन्द सत्संग भवन' (स्वामी चिवानन्द आचिटोररयम) का उद्घाटन करिे हुए उद्घाटन भाषण में परम श्रद्धेय श्री स्वामी जी महाराज ने कहा :

"हम सब यहााँ पर इस आचिटोररयम का उद्घाटन करने के चलए एकचत्रि हुए हैं जो चक हमारे बहुि से उद्देश्यों ंऔर कायों की पूचिप करेगा। इसका उद्घाटन गुरुदेव की पादुकाओं ंके पूजन, पादुकाओं ंको पुष्प-माला अपपण िथा कपूपर आरिी के द्वारा चकया गया है। गुरुदेव की पादुकाएाँ गुरुदेव का प्रचिचनचधत्व करिी हैं। मेरी प्राथपना है चक श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज की गुरु-कृपा हम सब पर हो िथा पुनीि भारिवषप के सब सन्तों, ं महात्माओं, ं औपचनषचदक काल के सन्तों ंजैसे याज्ञवल्क्य, जनक, सुलभा, मैत्रेयी इत्याचद के आिीवापद हमारे इस सत्संग भवन पर हों। ं बाद के युग के सन्तों ंजैसे गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज, रमण महचषप, श्री श्री मााँ आनन्दमयी, अरचवन्द घोष िथा उनकी चिष्या 'मदर' के आिीवापद भी हमारे इस भवन पर हों। ं इन िब्दों ंके साथ मैं इस भवन को उद्घाचटि करिा हाँ।"

त्पिश्चात् अपने श्री गुरुपूचणपमा सन्देि के द्वारा वन्दनीय श्री स्वामी जी महाराज ने उपक्तस्थि श्रद्धालु जनसमूह का प्ेरेरणाप्रद चदव्य वाणी से प्रबोधन करिे हुए कहा चक वे चदव्यिा की ओर उन्मुख जीवन चजयें।

स्वामी चिदानन्द
प्ेरेचज़िेंट
द चिवाइन लाइफ सोसायटी

परमाध्यक्ष स्वामी जी महाराज का गुरुपूशिणमा आिीवाणद-सन्देि

(जुलाई २००६)

सौभाग्यिाली अमर आत्मन् !

गुरुपूचणपमा के अवसर पर गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज की कृपा आप सबके ऊपर हो! वह आपको दीघप जीवन, स्वास्थ्य, समृक्तद्ध, सफलिा, िाक्तन्त िथा परमानन्द प्रदान करें! बह आपको इसी जीवन में भगवत्प्राक्तप्त हेिु साधना करने की क्षमिा भी प्रदान करें-कौन जाने, हमें दोबारा मानव-जन्म चमले या न चमले! केवल भगवान् हो जानिे हैं चक हमारे कमापनुसार हमारा अगला जन्म चकस योचन में होगा। अभी से साधना में रि हो जायें। गुरुदेव सदैव कहा करिे थे- "जो करना है, उसे अभी करो-'िी . आई . एन . (िू इट नाउ)।"

अिः अपने घर-पररवार के काम-काज करिे हुए, व्यवसाय के उत्तरदाचयत्वों ंका चनवापह करिे हुए कायप-स्थल, दुकान आचद पर जाने से पूवप ही ध्यान, जप िथा अन्तचनपरीक्षण के चलए एक या दो घण्े का समय अवश्य चनकालें। यही मेरा गुरुपूचणपमा आिीवापद है। अपने सारे काम-काज गुरु-आराधना, इि-आराधना के रूप में करें। बाह्य दृचष्् से काम िाहे जैसा चदखलायी पडे, उसका आन्तररक स्वरूप आराधनामय होना िाचहए। कमप पूजा है। अपने कमों को भगवान् को अचपपि कर दें। कमप का एक दूसरा पक्ष भी है। कमपयोग के रूप में यह हृदय को िुद्ध करिा है। िुद्धि हृदय में ही भक्ति का उदय हेािा है-अिुद्ध हृदय में नहीं।ं भक्ति-भाव के उदय होने पर इष्देव या गुरु-मि पर मन को एकाग्र करें। भक्ति आपको एकाग्रचित्त होने की क्षमिा प्रदान करिी है। एकाग्रचित्त हो कर ही आप यह अनुभव कर पािे हैं-'मैं यह पंिभूि-चनचमपि अधम िरीर नहीं ंहाँ। एकाग्रचित्त होने की यह दिा जब और अचधक गहन हो जािी है, िब साधक सिमु िरीर का और िथाकचथि पंिभूिों ंका भी अचिक्रमण कर जािा है।

मध्याह्न में एक घण्े िक साधनाभ्यास करें। सायंकालीन भोजन के पश्चात् समािार-पत्र न पढ़ें िथा पररवार के सदस्यों ंके साथ इधर-उधर का चनरथपक और अनावश्यक वािापलाप न करें। िैया पर बैठ जायें। गुरु द्वारा बिायी गयी चवचध के अनुसार ध्यान करें। यह आपके ध्यान का िृिीय सत्र

होगा। इसके बाद सो जायें। सिो समय आपका अक्तन्तम चविार चनद्रा की अवचध में अकुषुण्ण बना रहिा है। यह चविार जागने के समय आपका पहला चविार हिोा है अथापि् जागने पर यही चविार
सबसे पहले मन में उठिा है। यह मेरा गुरुपूचणपमा सनेदि् है।
भारि के समस्त आधुचनक िथा प्रिाीनकालीन साधु-सन्तों ंकी कृपा और आिीवापद आपको
प्राप्त हिो रहें! वे आपको समृक्तद्ध, सत्यचनष्ठा िथा सिररत्रिा के सद्गुण प्रदान करें! हरर ॐ
िित्सि्!

स्वामी चिदानन्द
प्रेेचजिेंट द चिवाइन लाइफ
सोसायटी

नव-वषप २००७ के चलए सनेदि्

ज्योचिमपय चदव्य आत्मन् !

वषप २००६ को चवदा देने िथा वषप २००७ में प्रवेि करने की इस महत्त्वपूणप वेला में आप
सब िथा समूपूणप मानविा पर अपनी कृपा की वषाप करिे रहने के चलए मैं ऊध्वपगामी दृचष्ट् िथा उठे
हुए हाथों ंकी मुद्रा में सवपिक्तिमान् परमात्मा िथा परम पूज्य गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज
से प्राथपना करिा हाँ।
अपने सभी कायों में आप सफलिा प्राप्त करें! आप अचे्छे स्वास्थ्य, दीघप जीवन, प्रसन्निा
िथा समृक्तद्ध को प्राप्त हो! परमात्मा का नाम सदैव आपके अधर-पुटों ंपर हो! आप सदा उनके
िसि मानचसक स्मरण में लीन रहें! आप सदा-प्रचि चदन, प्रचि घण्े, प्रचि चमनट, नहीं ंिौबीस
घण्ों ंके प्रत्येक सेकण्ड उनके प्रचि अपने बोध-प्रवाह को अकुषुण्ण रखिे हुए जीवन िव्यिी करें!
परमात्मा से मानव-जीवन का उपहार प्राप्त करके यचद हमने अस्थायी सुखों ंकी खोज करिे
हुए ही अपनी इहलीला समाप्त कर दी, िो हमारा अमूल्य जीवन व्यथप ही गया। अिः वषप २००६
या भिूकाल की गलचियों ंको हम न दोहरायें। पूज्य गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज के
बहुमूल्य उपदेिों ंको जीवन में उिारिे हुए आगे ही बढ़िे रहें। यह उस प्रसन्निा की कुंजी है,
चजसकी खोज में हम सभी रि हैं।
सरल भाषा में व्यि अपने सरल सनेदिों ंके रूप में पूज्य गुरुदेव ने यह कुंजी हमारे हाथों ं
में पकडा दी है। बीस महत्त्वपूणप आध्याक्तत्मक चनयम, साधना–ित्त्व िथा चवश्व-प्राथपना के माध्यम से
उन्ोंने वेदान्त और उपचनषदों ंका सार प्रस्तुिु कर चदया है। लेचकन इससे पूवप उन्ोंने 'भले बनो,
भला करो', 'दयालु बनो' ित्पश्चाि् सेवा, प्रेेम, दान, पचवत्रिा, ध्यान िथा साक्षात्कार के सनेदिों ं
के माध्यम से अपने उपदेिों ंका प्रारम्भ चकया।
नव-वषप में प्रवेि करने के इस अवसर पर मेरा यह सनेदि् आपके चलए है।
प्रिाीन कालीन प्रज्ञा-सम्पचत्त हमारे भावी जीवन को समृद्ध बनाये ! परमात्मा िथा पूज्य
गुरुदेव की कृपा आप सब पर बनी रहे!

आदर, प्रेेममयी िुभकामनाओं ंिथा ॐ सचहि,

१-१-२००७

स्वामी चिदानन्द
प्रेेचजिेंट

द चिवाइन लाइफ सोसायटी

गुरुपूशिणमा-सनेदि

(२००७)

कम ही लोग यह बिा जानिे हैं चक जैसे सूयप में प्रकिा है, चसिारों ंमें प्रकिा है, ऐसे िििमा में चबलकुल भी प्रकिा नहीं ंहै। बहुि से चसिारे िो बहुि ही बडे हैं, इिने बडे चक हमारी धरिी के सामने फुटबाल के आकार के बराबर होंगें और हमारी धरिी उनके सामने मटर के दाने चजिनी, राई के दाने या छोटी-सी काली चमिप चजिनी होगी। िििमा में भले ही अपना प्रकिा नहीं ं
है, िो भी उसमें पराविपकि–क्ति (वापस लौटाने की िक्ति) है। िििमा जब पृथ्वी का िक्कर लगा रहा होिा है, िो बीि में एक समय ऐसा आिा है जब सूयप का पूरा प्रकिा िििमा पर पडिा है। और जब सूयप का पूणप प्रकिा िििमा पर पडिा है, िो उसे हम पूचणपमा चदवस कहिे
हैं। क्योंचक िििमा में 'पराविपकि–क्ति' है, इसचलए जब सूयप का पूणप प्रकिा पूचणपमा की राि को
उस पर पडिा है, िो वह पूणप-प्रकाििि िििमा, पूरा-का-पूरा प्रकिा वापस लौटा देिा है।
चबलकुल इसी िरह, चिष्य का अपने गुरु के साथ सम्बन्ध है। जब चिष्य अपने गुरु के समस्त चनदेि, सारे आदेि उपदेि ग्रहण कर लेिा है और चफर उनके अनुसार िलने के प्रयत्न में लग जािा है, िि-प्रचििि– उन पर िलने लगिा है, िब चफर गुरु उसके चलए सूयप हो जािा है और
चिष्य पूचणपमा का िााँद! क्योंचक चिष्य वही अचभव्यि करिा है जो उसने गुरु से प्राप्त चकया होिा
है। ईश्वर-साक्षात्कार प्राप्त व्यक्ति की अवस्था िो बहुि ऊपर की है; अिः ईश्वरानुभूचि उसे सभी
देवी-देविाओं ंसे ऊपर उठा देिी है। ऐसा केवल चहनदू धमप में ही नहीं, ं बौद्ध और जैन धमप में भी
माना गया है। चिब्बिी बौद्ध मि में िो पूणप प्रकिा प्राप्त गुरु हवा में उड सकिे हैं। चकनिुु चिष्य
वही ग्रहण करिा है जो उसकी इच्छा होिी है। अपनी क्षमिा से अचधक वह ग्रहण नहीं ंकर
सकिा। चकनिुु चजिना भी वह अपनी क्षमिानुसार लेिा है, उिना ही उसके चलए पयापप्त होिा है। उसकी आध्याक्तत्मक उन्नचि के चलए, उसकी साधना, स्वाध्याय, ध्यान और धारणा के चलए पयापप्त
होिा है। उसने अपने गुरु से चजिना प्राप्त कर चलया है, चजिने चनदेि ले चलये हैं, वही उसे इस
जीवन में ही भगवद्-साक्षात्कार करवा देंगे, यचद वह उन ग्रहण चकये हुए आदेिों ंपर, ज्ञानोपदेिों ं
पर िि-प्रचििि– िलेगा िो! इसीचलए, इसी सत्य को अनुभव करने के चलए प्रचि वषप गुरुपूचणपमा
का पावन चदन आिा है। चिष्य पूचणपमा का पूणप िििमा है जो गुरु के ज्ञानोपदेिों ंके प्रकिा को
पूणपिया अचभव्यि करिा है। इसी सत्य को बार-बार याद चदलाने के चलए प्रत्येक वषप, हर बारह
महीनों ंके बाद हम यह पचवत्र त्योहार मनािे हैं। इसी सत्य का स्मरण चदलाने के चलए गुरुपूचणपमा
आिी है। गुरु के उपदेिों ंको और गुरु–त्त्व को स्मरण कराने के चलए यह आिी है। गुरुपूचणपमा
के चदन चिष्य को चनचश्चि रूप से गुरु के साथ अपने सम्बन्धों, ं आध्याक्तत्मक सम्बन्धों ंके बारे में
गहन चिन्तन करना िाचहए। यही मेरा गुरुपूचणपमा के चलए सनदेि है।

स्वामी चिदानन्द
प्रेचजिेंट द चिवाइन लाइफ सोसायटी

नववषण-सनेदि

(२००८)

भगवान् सदा आपके साथ रहें! पुराना वषप २००७ बिी गया। बक्तद्धपि ज्ञान-अनुभव के साथ हम नये वषप में प्रविे कर रहे हैं। इस ज्ञान-अनुभव को हमने गि वषप के सभी ३६५ चदनों ंमें अचजपि चकया है। प्रत्येक चदवस हमें जो अनुभव हुए हैं, उनसे हमें कुछ नयी बािें सीखने को चमली हैं। इसी प्रकार नये वषप के ३६६ चदनों ंमें भी आपके ज्ञान-अनुभव में वृक्तद्ध होगी। इस कारण हम अपेक्षाकृि अचधक बुक्तद्धमान् बनेंगे िथा अपने और दूसरों ंको लाभाक्तन्वि कर सकेंगे।

हमें इस संसार में भेजने वाले भगवान् की दृचष्ट् में आपका जीवन सकारात्मक क्रमचवकास की एक प्रचक्रया है। मनुष्य (जो एकमात्र ऐसा प्राणी है चजसके पास मन और चविारने की िक्ति हैं) के क्रमचवकास और सवाांगीण चवकास से सम्बक्तिि भगवान् का चवधान सुचनचश्चि है। लौचकक जीवन का उद्देश्य यही है चक प्रत्येक व्यक्ति को पूणपिा प्राप्त करने का अवसर चमले।

यह धरिी पूणपिा प्राप्त करने हेिु एक चवद्यालय के समान है। भगवान् की चदव्य पूणपिा हमारे अन्दर पहले से है, परन्तु यह अप्रकट रूप में है। अिः आप इसे चवसूमि कर सकिे हैं। आपादमस्तक यह िरीर भगवान् के चनवास करने हेिु एक चदव्य प्रासाद है। हमारे वक्षस्थल के दाचहनी ओर क्तस्थि आध्याक्तत्मक हृदय भगवान् का चसंहासन है (आध्याक्तत्मक हृदय भौचिक िरीर को िुद्धि रि प्रदान करने वाला हृदय नहीं ंहै)। इसी कारण भगवान् को अन्तयापमी अथापि् वह जो आध्याक्तत्मक हृदय में चनवास करे-कहा जािा है। आप अपनी उस चदव्य पूणपिा को क्रमिः प्रसुफुचटि (unfold) करें िथा उसे अपने दैचनक जीवन के कायपकलापों ंमें प्रकचटि होने दें। प्रत्येक चदवस आपको कुछ नवीन बाि सीखनी है और इस प्रचक्रया को आगे बढ़ाना है िाचक अन्तिः आप आध्याक्तत्मक और नैचिक दृचष्ट् से पूणप मानव बन जायें। गि वषप के सभी ३६५ चदनों ंमें आपने जो-जो पाठ पढ़े हैं, उन्हें आपको वषप २००८ के ३६६ चदनों ंमें व्यावहाररक रूप प्रदान करना है। पूणपिा िक पहुँचने हेिु क्रमचवकास की प्रचक्रया में िरीर-मन-बुक्तद्ध-सभी को चवकासोन्मुख होना िाचहए।

भगवान् ने आपको इस संसार में इसचलए नहीं ंभेजा है चक आप जडवि् गचिहीन बने रहें और आपमें पररविपन या चवकास न हो या आपके िरीर बुक्तद्ध सदा एक ही अवस्था में रहें। पूणपिा के चबनदु पर पहुँचने िक आपका क्रमचवकास होिा रहे-भगवान् का चवधान यही है। िरीर, मन, बुक्तद्ध और चवनािी िरीर के अन्दर चवद्यमान अचवनािी आत्मा-सभी को पूणपिा के गन्तव्य िक पहुँचना है।

इस सन्दभप में श्रीमद्भगवद्गीिा के समान कोई दूसरा भारिीय धमपग्रन्थ नहीं ंहै। इस धमपग्रन्थ में अपने सखा अजुपन को सन्देहों ंिथा सम्भ्राक्तन्त की मनोदिा से उबारने के पश्चाि् कमपभूचम पर ले आ कर उसे चनचश्चििा की चदिा में अग्रसर करिे हुए भगवान् कृष्ण ने चवकास और पूणपिा के सभी पक्षों ंकी समूपूणप प्रचक्रया प्रस्तुि की है।

भगवद्गीिा में भगवान् कृष्ण अजुपन से कहिे हैं चक िरीर, मन और बुक्तद्ध दोष-मुि नहीं ं हैं िथा उनके कायपकलाप सीमाओं ंसे चघरे हुए हैं। मनुष्य को पूणपिा की क्तस्थचि में लाने के चलए (चजसमें अचि, वायु, जल, िस्त् आचद आत्मा को प्रभाचवि नहीं ंकरिे) अनश्वर आत्मा का क्रमचवकास हो रहा है। इस क्रमचवकास से िरीर, मन और बुक्तद्ध सकारात्मक रूप से प्रभाचवि हो रहे हैं। व्यक्ति को सन्देहों ंसे ऊपर उठ कर श्रद्धा-चवश्वास िक पहुँचना िाचहए और चवनािी

अक्तस्तत्व के बोध की कारा से अपने को मुि करके अचवनािी सत्ता के बोध-क्षेत्र में प्रवेि करना िाचहए। मानव इस बोध को अचजपि करने और चनभपय होने के चलए ही उत्पन्न हुआ है। भगवद्गीिा
में वचणपि इन सत्यों से चथयोसोचफकल सोसायटी की िा. ऐनी बेसेंट अत्यचधक प्रभाचवि थीं और दूसरों को गीिोपदेि का पालन करने के चलए प्रोत्साचहि करिी थीं।

अपने नववषप के इस सन्देि के माध्यम से मैं यह कहना िाहिा हूँ चक आप इस बाि को समझें चक िरीर और आत्मा की चभन्निा समझ कर अनश्वरिा के चबन्दु पर पहुँिने िक जीवन का उद्देश्य चवकासात्मक है। िरीर जन्म लेिा है िथा मृत्यु को प्राप्त होिा है। िरीर की मृत्यु अवश्यम्भावी है। पूरे संसार, प्रत्येक देि िथा प्रत्येक चदिा में ईसाइयों और मुसलमानों के चलए कचब्रस्तान हैं। िरीर रूपी घर में अचवनािी अनश्वर आत्मा चनवास करिी है। आपकी आत्मा और सक्तिदानन्द आत्मा (ब्रह्म) एक ही हैं। अिः आध्याक्तत्मक साक्षात्कार 'अहं ब्रह्माक्तस्म' का अनुभव है। इस संसार में िरीर आिे-जािे रहिे हैं, परन्तु िरीरों को प्राणाक्तन्वि करने वाला अचवनािी ित्त्व आत्मा ही है जो आपके अन्दर चनवास करिा है।

समस्त पाठकों के चलए यह मेरा नववषप सन्देि है। इस मूलभूि सत्य पर अपने जीवन को आधाररि करके उन्मुि और चनभपय हो जाना िाचहए।

इस सन्देि को समझ कर इसी क्षण से आप इसे जीवन में उिारने लगें-इस हेिु भगवान् और गुरुदेव की कृपा आप पर बनी रहे!

वषप २००८ आपके चलए सौभाग्यिाली और प्रगामी चसद्ध हो!

स्वामी चिदानन्द
प्रेचसिेंट द चिवाइन लाइफ सोसायटी

"कामना आपको चभखारी बनािी है। कामना चनधपनिा है। कामना अपयापप्तिा की भावना है। जब आप कामना करने लगिे हैं, उसी क्षण आप चभखारी बन जािे हैं। एक करोडपचि जो सदैव एक करोड और प्राप्त करने की कामना करिा है, वास्तव में चभखारी ही है। एक कुली जो चदन में पिास रुपये कमािा है और अपनी आय से सन्तुष्ट् रहिा है, वह करोडपचि से कहीं अचधक अच्छा है; क्ोंचक वह अपयापप्तिा की पीडाजनक भावना से मुि है।"

-स्वामी शिदानन्द

राष्ट्रीय आिार-संशहिा

(भारि के नागररकोंके शलए)

१. देिभक्ति- आपके चलए देि का सवोच्च महत्त्व होना िाचहए। देि का कल्याण आपका अपना कल्याण है। अिः अपने देि भारि के चलए अपना जीवन िक अचपपि कर देने के चलए सदा

से्वेच्छा से ि ैयार रहें। अपने बालकों ंि था पाररवाररक सदस्यों ंके चलए मन में दिपे्रेम, दिभक्ति, दिसेवा ि था सह-नागररकों ंकी सेवा की भावनाएँ बैठायें।

२. **किणव्य-** आपका प्रमुख ि था सवोपरर किपव्य भगवान् ि था धमपरायणिा के प्रचि है। धमपरायण जीवन यापन आपकी अपने राष्ट्र के प्रचि सवापचधक महीि सेवा होगी।

३. **िररत्र–ररत्र-** सवापचधक महान् सम्पचत्त है। एक चवकार-रचहि ि था िररत्रवान् नागररक आपके राष्ट्र की महत्तम पररसम्पचत्त है। िररत्र अपररहायप ि था प्राणाधार-रूप है। अिएव सिररत्रिा को सविो प्राथचमकिा दी जानी िाचहए। इसी से हमारे राष्ट्र का कल्याण ि था इसका भावी स्थाचयत्व चनभपर है।

४. **स्वास्थ्य-** स्वास्थ्य सफलिा का आधार है। स्वास्थ्य सम्पचत्त है। िररत्र के बाद यही सवापचधक महान् राष्ट्रीय पररसम्पचत्त है। एक नागररक के रूप में राष्ट्र के प्रचि हमारा मुख्य किपव्य है–ररत्र-चनमापण ि था स्वास्थ्य-रक्षा।

५. **सदािार-** द्यूिक्रीडा, मद्यपान, मादक द्रव्य-सेवन, धूम्रपान ि था िामूबूल-सेवन के दुव्यपसनों ंका संगचठि हो कर उनूमूलन करें। उत्क्रोि-ग्रहण, भ्रष्ट्ािार, स्वाथपरिा, अनैचिकिा, बेईमानी ि था दुरािरण की बुराइयों ंका उनूमूलन करें। अपने राष्ट्र के प्रचि चनष्ठाहीनिा अपराध ि था अक्षम्य पाप है।

६. **सावणजशनक सम्पशत्त-** नागररको ! हम सावपजचनक सम्पचत्त के अचभरक्षक हैं। हम राष्ट्र की सम्पचत्त को चवकृि न करें, उसका दुरुपयोग न करें, उसकी िोरी न करें या उसे नष्ट् न करें। हम पे्रेमपूवपक ि था सावधानी से उसे सुरचक्षि रखें। हम अपने दिे को स्वच्छ रखें। यह हमारा पुनीि किपव्य है।

७. **एक ही पररवार-** सभी नागररक हमारे भाई हैं। इस भ्रािृत्व का अनुभव करें। हम परस्पर पे्रेम करें ि था संगचठि रहें; क्योंचक हम एक ही पररवार हैं।

सभी धमों८ प्रन्थ**र्ीमण्ं**ि था मिों ंके प्रचि समान श्रद्धाभाव रखें। अपने मि के अनुयाचययों ंको हम अपने ही भाई मान कर पे्रेम करें। दूसरों ंसे हम वैसा ही व्यवहार करें, जैसा हम उनसे अपने चलए अपेक्षा रखिे हैं।

९. **अवैर-** सभी प्रकार की चहंसा ि था घृणा से बि कर रहे; क्योंचक ये राष्ट्र के चनमपल नाम पर कलंक है। ये आत्मा का हनन करिे हैं ि था राष्ट्र के कल्याण और चवकास के चलए अत्यन्त घािक हैं। ये हमारे राष्ट्र के आदिप के सवपथा प्रचिकूल हैं।

१०. **शमिव्यय-** सादा जीवन ि था उि चविार को अपनायें। अपव्ययी न बनें। अपव्यय का पररहारकरें।चमिव्यचयिा का अभ्यास करें। जो कुछ हमारे पास है, उसमें उन सह-नागररकों ंको सहभागीबनायें,चजन्हें उसकी आवश्यकिा है। यह एक राष्ट्रीय सद्गुण है, चजसकी आवश्यकिा भारि को है।

११. कानून- कानून के िासन का आदर करें िथा सामाचजक न्याय को बनाये रखें। हमारे कल्याण का िथा उत्तम भारिोन्मुख सुव्यवक्तस्थि चवकास का आश्वासन इसी में चनचहि है।

१२. अशहंसा- अचहंसा सविो सद्गुण है- 'अचहंसा परमो धमपीः ।' करुणा एक चदव्य गुण है। पिुओं ंकी सुरक्षा करना हमारा पुनीि किपव्य है। यह भारि दे की चवचिष्ट् चिक्षा है। हम प्रत्येक जीव के प्रचि अनुकम्पािील हों।ं इस प्रकार हम सिे भारिीय होने का पररिय दें। दैचनक जीवन में हम दयालुिा, करुणा िथा भलाई का मूिप रूप बनने का प्रयास करें।

१३. इकोलाजी (पाररच्चथथशिकी) - मानव िथा प्रकृचि अपृथक्करणीय हैं। मानव िथा उसके प्राकृचिक वािावरण (पयापवरण) में अन्योन्य सम्बि है िथा वे परस्पर चनभपर हैं। प्रकृचि की प्रत्येक वसुतु का हमारी सुरक्षा िथा हमारे पोषण में योगदान है। अिः हम प्राकृचिक पयापवरण की सुरक्षा करें। पाररक्तस्थचिक सनुतुलन बनाये रखने में सहयोग देना हमारा किपव्य है। हमारे सुरचक्षि जीवन िथा परम कल्याण के चलए यह अपररहायप है। सावपजचनक स्थानों ंको िथा दे के वायु एवं जल को प्रदूचषि करना राष्ट्रीय अपराध है। भूिकाल में की गयी अपनी गलचियों ंको हमें सुधारना िाचहए।

१४. एकिा- दे के लोग चजिना ही अचधक संगचठि होंगें, वे उिना ही अचधक बाधाओं–ं चवपचत्तयों ंका सामना करने में सक्षम होंगें। संघटन िक्ति है, चवघटन पिन है। विपमान भारि पर यह िथ्य चविेष रूप से लागू होिा है। अिः हम अपने समस्त देिवाचसयों ंके साथ अन्तरंग सामंजस्य बनाये रखें िथा उनके साथ सद्भावनापूवपक रहें। अपने दे के प्रचि प्रेम का अथप है अपने देिवाचसयों ंके प्रचि प्रेम। यह अपनी मािृभूचम के प्रचि भारि के नागररकों ंकी अमूल्य सेवा होगी।

१५. शिक्षा- भारि की महान् संसृकृचि िथा उसके गौरवपूणप आदिों, उतृकृष्ट् मूल्यों ंएवं जीवन-चसद्धान्तों ंका ज्ञान प्रदान करना चिक्षा की प्रचक्रया में समाचवष्ट् होना िाचहए। युवाओं ंऔर चवद्याचथपयों ंके जीवन की गुणवत्ता में संवधपन िथा संवृक्तद्ध की ओर चिक्षा को उनुमुख होना िाचहए।

इस भाँचि आप एक सिे नागररक के रूप में दीक्तप्तमान हों ंिथा अपने जीवन जीने के ढंग और आिरण के द्वारा ही सवोत्तम रूप से अपने दे की सेवा करें।

-दे के प्रेमीजन

हे अमृि पुत्रो! हे स्विि भारि के चप्रय नागररको !! उठो, जागो और अध्यात्म त्त्वि की इस लावण्यमयी उषा को देखो। चवश्व के िुभ्र भाल रूपी आकाि पर "चदव्य जीवन" का यह प्रािपी सूयप चकस प्रकार अपने पूवप रूप को प्रकट कर रहा है। योग और वेदान्त के प्रिान्त पथ से अपररसीम िाक्तन्त और आनन्द के लक्ष्य की ओर बढ़ो। अध्यात्म त्त्वि को समझो, चित्तिुक्तद्ध को लाओ, अपने स्वभाव को िारु बनाओ, दानिील बनो और चदव्यत्व की प्राक्तप्त करो। ऋचष-मुचनयों ंकी कृचियों ंका मनन करो और उनसे प्रेरणा लो। िुम जैसे भोजन खाना नहीं ंभूलिे, वैसे ही इनका मनन भी न भूलो। इस अभ्यास को

जीवन का प्रमुख किपव्य बन जाने दो। यह िुम्हारे जीवन में िाक्तन्त, आनन्द और चित्त की समाचहि अवस्था का जनक बनेगा। यह िुम्हारे जीवन में आत्म-साक्षात्कार को अविरिरि
करके िुम्हारे चनचमत्त उतूकृष्ट् चनचध के रूप में प्रकट होगा।

िुम सबों ंके चलए िाक्तन्त और आनन्द का द्वार उनुमुि हो!

-स्वामी शिदानन्द

अमृिाष्ट्क

स्वाध्याय श्रीमद्भगवद्गीिा मनन करें द्वादि अध्याय का ध्यानपूवपक चविेषकरअक्तन्तमआठश्लोकों ं केअथपकोहृदयंगमकरें।भक्तियोग नामक इस चविेष अध्याय में भगवान्श्रीकृष्णअजुपनसेकहिेहैं-"हेअजुपन!सुनोमेरेभिों ंके लक्षण। मेरे प्रचि समचपपि, भक्तिपूणपहृदयसेअपनेकोमेराभिकहनेवालेकाबोलना, उठना-बैठना, बाि करना साधारणनहीं ंहोिा।उसकाआिार,चविार,व्यवहारिथास्वभाव चवलक्षण होिा है।" चफर आगे कहा-"मेरेयेसबउपदेिचविेषहैं,दुलपभहैं1^**और भगवान् कृष्ण ने अध्याय के अक्तन्तमआठश्लोकों ंमेंदीगयीसारगचभपचिक्षाओं ंको'अमृिाष्ट्क' नाम चदया। इस 'अमृिाष्ट्क' का प्रचिचदन पारायण करें।

"अमृिाष्ट्क"
(श्रीमद्भगवद्गीिा के अध्याय १२ के श्लोक १३ से २०)

ऐसे हैं भि मुझे प्यारे, बिला शदया कृष्णमुरारी ने।
गीिा द्वारा अमृि सबको, शपलवा शदया कृष्णमुरारी ने ।।

श्री भगवानुवाि :

अद्वेष्टा सवपभूिानां मैत्रः करुण एव ि।
शनमपमो शनरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१३॥

हो द्वेष रचहि सब जीवों ंमें, हो मैत्र, करुण, चनमपमचनरहम्।
सुख-दुीःख में सम और क्षमिील, बिला चदया कृष्णमुरारीने॥१॥

सन्तुष्टः सििं योगी यिात्मा दृढशनश्चयः ।
मय्यशपपिमनोबुद्धियो मद्भिः स मे शप्रयः ॥१४॥

सन्तुष्ट् सदा ध्यानी योगी, मन-इक्तियचजि् दृढ़ चनश्चय हो।

मुझ में अचपपि हो मन बुक्तद्ध, बिला चदया कृष्णमुरारी ने ॥२॥

यस्मान्नोशद्वजिे लोको लोकान्नोशद्वजिे ि यः।
हषाणमषणभयोदे्वगैमुणिो यः स ि मे शप्रयः ॥१५॥
चजससे जनिा उचद्वम न हो, जनिा से जो उचद्वन न हो।
हो हषप-रोष-भय-मुि सदा, बिला चदया कृष्णमुरारी ने ॥३॥

अनपेक्षः िुशिदणक्ष उदासीनो गिव्यथः ।
सवाणरम्भपररत्यागी यो मद्भिः स मे शप्रयः ॥ १६॥

अनपेक्ष, दक्ष, िुचि उदासीन, हो व्यथा-हीन, चनद्वपनद्व सदा।
हो सवापरम्भ पररत्यागी, बिला चदया कृष्णमुरारी ने ।४।

यो न हुष्यशि न दे्वशष्ट् न िोशि न कांक्षशि ।
िुभािुभपररत्यागी भक्तिमान्यः स मे शप्रयः ॥१७॥

सुख में न हषप, दुीःख में न दे्वष, नहीं ंिोक, न हो इच्छा कोई।
िुभ अिुभ कमप का फल त्यागी, बिला चदया कृष्णमुरारी ने ॥५॥

समः ित्रौ ि शमत्रेि ि िथा मानापमानयोः ।
िीिोष्णसुखदुःखेषु समः संगशववशजणिः ॥१८॥

सम ित्रु चमत्र, अपमान मान, िीिोष्ण दुीःख सुख में सम हो।
हो अनासि सब चवषयों ंमें, बिला चदया कृष्णमुरारी ने ॥६॥

िुल्यशनन्दास्तुशिमौनी सन्तुष्टो येन केनशिि् ।
अशनकेिः च्थथरमशिभणक्तिमान्मे शप्रयो नरः ।।१९।।

चनन्दा स्तुचि में हो सम, मौनी, सन्तुष्ट, चमले जो कुछ उसमें।
दृढ़ मचि हो, गृह-ममिा-त्यागी, बिला चदया कृष्णमुरारी ने ॥७॥

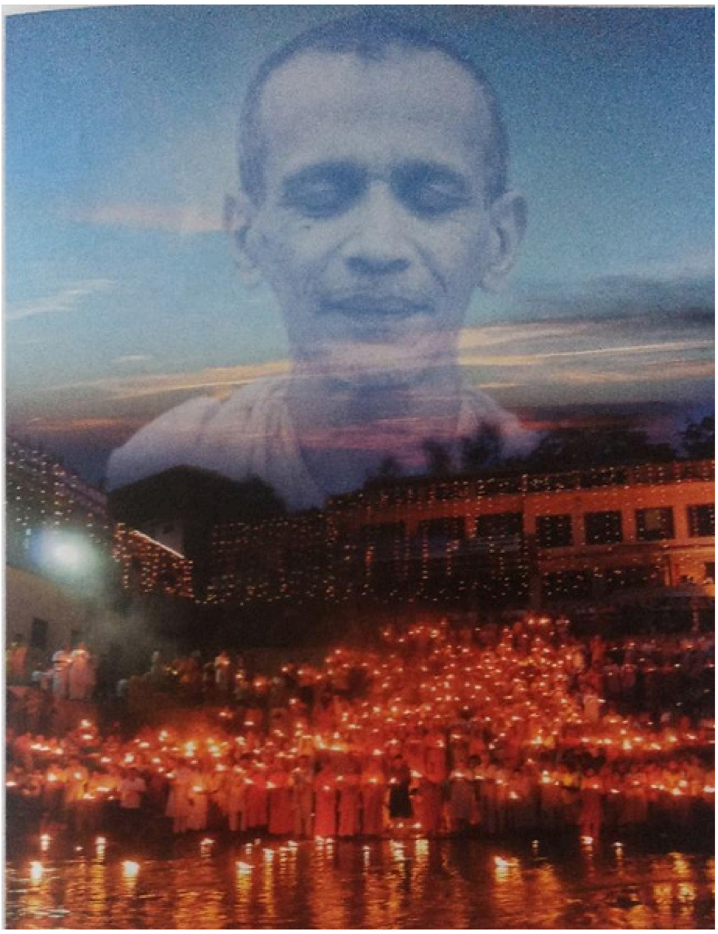
ये िु धर्म्याणमृिशमदं यथोिं पयुणपासिे ।
श्रद्दधाना मत्परमा भिास्तेऽिीव मे शप्रयाः ॥२०॥

श्रद्धायुि इस धमापमृि को, जो जन मत्पर हो पान करें।
अचि ही चप्रय हैं वे भि मुझे, बिला चदया कृष्णमुरारी ने ॥८ ॥

-गंगािरि 'िील' **न्दिौसी**

चवश्व-यात्रा काल में

श्री स्वामी चिदानन्द महाराज जी के जोहिाबगप पहुाँनिे पर एक बहुि ही ममपस्पिी घटना हुई। सामान्यिया चिवानन्द किौल्या के नाम से चवख्यिा स्वामी जी की एक उत्कट भि मिाा रोज़ कागन बहुि चदन पहले से मृत्युिुर्–र्या् पर थीं।ं मूच्र्छावस्था में जाने से पूवप उन्ोंनें महाराजश्री के अक्तन्तम दिपन के चलए प्राथपना की थी, परन्तु यह मानना कचठन था चक उनकी इच्छा की पूचिप हो सकेगी। चकन्तु चनश्चय ही उनकी प्राथपना सुन ली गयी। सहानुभूचििील स्वामी जी, जो भिों ंके हृदय को जानिे हैं और उनका उत्तर दिे हैं, उनके प्राण त्यागने से पहले उनके पाश्वप में थे। उनकी िर्या् के पास पहुाँनिे के पश्चिा् उन्ोंनें कुछ समय िक प्राथपना की और उस भाग्यिाचलनी मचहला को उनें् अपनी िर्या् के पास देखने के चलए कुछ क्षणों ंके चलए पुनीः िेिना प्राप्त हो गयी। **उन्ोंनें स्पष्ट् रूप से 'हरर ॐ'कहकरस्वामी जी को हाथ जोड कर नमस्कार शकया और इस भगवत्स्मररिथाशदव्यगुरु के दिणन के साथ उन्ोंनें अपना मत्यण िरीर छोड शदया। शनश्चयहीवहभाग्यिाशलनी थीं,ं क्ोंशंक उनका अच्चन्तम संस्कार भी महाराजश्री की उपच्चथथशिसेपशवत्रहोगया।**



ाृिय प्रकिा

ॐ

ज्योचिथ्योचि स्वामी चिदानन्द

ब्रह्मज्योचि चिवानन्द-आत्मज्योचिहिुम,
ज्योचियोचि चिदानन्द-स्वयंज्योचिहिुम।
परम परात्पर पररपूणपज्योचिहिुम,
बाह्याभ्यन्तर प्रत्यक् ज्योचिहिुम।।
ज्योचिथ्योचि कोबारम्बारप्रणाम



भावपूण श्रद्धांजशलयाँ
ॐ

'मुरझिो ◌ो हैं सुमन, पर उसकी
सुरचभ रहिी ◌िहुँ ओर व्याप्त ।
।

चवनष्ट् हिाे है ◌िरीर, परनुतु
आि-सुरशभ है अमर एवं ◌ाश्वि ।।'
- स्वामी चिवानन्द

आत्म-सुरचभ चिदानन्द ◌िारु की,
फैली दि-चवदि ◌िहुँ ओर

चहय-पात्र में भर श्रद्धा-सुमन,
बाँटे यत्र–त्र, दूर-सुदूर ।।

अचपपि करें श्रद्धांजचल ।
गुरुदेव दीदार दीवाने को ।
चिवानन्द भि परवाने को ।
'सवणभूशहिे रिाः' मस्ताने को ।।

पावन-सूमृचि में

एक महान् देदीप्यमान शसिारे का पावन आख्यान
परम आराधनीय परम पूज्य श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज

वह महान् देदीप्यमान, उज्ज्वल चसिारा, जो समूपूणप चवश्व-भर में लाखों– करोडों ं लोगों ं द्वारा श्रद्धा-भक्ति सचहि पूजा जािा था, आज सिरीर हमारे बिी नहीं ं रहा, चकनुतु हम सबके हृदय मक्तन्दरों ं में उन्होंनें सदा के चलए एक वन्दनीय स्थान बना चलया है।

जीवन के अक्तन्तम समय िक चदव्य जीवन संघ के आध्याक्तत्मक गुरु और परमाध्यक्ष के रूप में चकसप्रकारसमस्तकायपभारसिकपिपूवपकदेखिरहे,यहसभीकेचलएअत्यन्तआश्चयपजनक था। स्वामीजीमहाराजअभी,२४चसिम्बरकोअपना९२वााँवषपपूणपकरनेवालेथेचकहमारे परमाध्यक्ष परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की गुरुवार, २८ अगस्त को राचत्र के ८ बज कर११चमनटपरमहासमाचधहोगयी।हमउन्हें,चजनकाहमारे पूज्यगुरुदेवश्रीस्वामी चिवानन्द जी महाराज की दृचष्ट् में भी अत्यन्त ऊाँिा स्थान था, को अत्यन्त चवनम्रिा और आदरपूवपक अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजचल समचपपि करिे हैं।

'चदव्य जीवन' पचत्रका के मई २००२ के अंक में परम पूज्य स्वामी जी महाराज की जो अक्तन्तम इच्छाप्रकाचििहुईथी,उसीकाअक्षरिःपालनचकयागया।

परम पूज्य स्वामी जी महाराज के पावन पाचथपव िरीर को पुष्पहारों ं से सुसक्तज्जि लकडी के चसंहासन पर बैठा कर अधपराचत्र १२ बजे िाक्तन्त चनवास, देहरादून से ला कर आश्रम मुख्यालय में परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के समाचध-मक्तन्दर में िीन घण्े अथापि् प्रािः ३ बजे िक रखा गया था चजससे चक आश्रमवासी भि अक्तन्तम दिपन और अपने श्रद्धा-सुमन समचपपि कर लें। इस पूरे समय में महामि-संकीिपन, जो चक गुरुदेव और स्वामी जी महाराज दोनों ं को ही अत्यन्त चप्रय था, का चनरन्तर गान चकया जािा रहा।

प्रािः ३ बजे, कपूपर आरिी करने के बाद पूज्य स्वामी जी के िरीर को महामि, 'ॐ नमः चिवाय', 'ॐ नमो भगविे चिवानन्दाय' और 'श्री राम जय राम जय जय राम' इत्याचद नाम संकीिपन गान करिे हुए िोभा यात्रा के रूप में भगविी मााँ गंगा की ओर ले जाया गया। यह िोभा यात्रा 'भजन हॉल' और 'श्री चवश्वनाथ मक्तन्दर' के सामने रुकिे हुए आश्रम की पररक्रमा करके 'चिवानन्द आकप' की ओर जाने वाली मुख्य सडक पर गयी और वहााँ से 'गुरु चनवास' और 'गुरुदेव कुटीर' के सामने से होिी हुई लगभग ४.३० पर मााँ गंगा के 'श्री चवश्वनाथ घाट' पर पहुाँि गयी।

यहााँ पर गंगाजल और दूध के साथ वैचदक मिों ं और जो उन्हें चविेष रूप से चप्रय थे, उन पुरुषसूिऔरनारायणसूिके उिस्वरमेंगानके साथअचभषेकचकयागया।उसके उपरान्त परम्पराचि चवचध से नये वस्त् समपपण िथा भस्म, के सर, िन्दन और कु मुकु म से चिलक शंगार चकया गया।

उनके चनदेंशों ंका अक्षरीः पालन करिे हुए ििरीर को गंगा माँ को समचपपि करने से पहले
७ बार 'ॐ नमो भगविे चिवानन्दाय', ५ बार महामंि, ५ बार महामृत्युंजय मंि और १६ बार प्रणव मंि का उच्चारण चकया गया। इस बाि का चविेष रूप से ध्यान रखा गया चक 'चिदानन्द
जी महाराज की जय' का उच्चारण न चकया जाय, क्योंचक ऐसा करने के चलए उन्होंने हमें चविेष
रूप से रोका हुआ था।

इसके पश्चाि् पुष्पों ंसे सुसक्तज्जि उनके पावन ििरीर को अचि सुन्दर सजायी गयी नौका में
ले जाया गया। मध्य धारा में धीमी गचि से जािी हुई नौका की इस अक्तन्तम यात्रा की ओर भक्तों ं
का समूह एकटक दृचष्ट् से देख रहा था और माँ गंगा अपने चप्रय पुत्र की देह को आचलंगन करने
के चलए बाहें फैलाये आिुर दृचष्ट् से चनहार रही थी। जब पावन देह को गंगा में छोडा गया िो
ऊपर 'चिवानन्द झूला' पर खडे हुए भक्तों ंने पुष्प वषाप की।

चजससे आजीवन अपने देह-मन को सदा मन, वाणी और कमों से परम पुनीि बनाये
रखा'उसके चलए ऐसी अक्तन्तम चवदाई हो िो इसमें क्या आश्चयप!

षोडषी आराधना

दिगम्बायप सम्प्रदाय के संन्यासी की महासमाचध के उपरान्त षोडषी मनायी जाने की परम्परा
के अनुसार, महासमाचध और षोडषी के बीि के १५ चदनों ंमें चवचवध कायपक्रम आयोचजि चकये गये।
प्रचिचदन प्रािः का आरम्भ मंि-श्लोक और प्राथपना िथा ध्यान से होिा और उसके उपरान्त
प्रभािफेरी चनकाली जािी थी। प्रत्येक कायपक्रम के पीछे एक चविेष ही भक्ति और आध्याक्तत्मकिा से
ओि-प्रोि भावना छलकिी थी। चसिम्बर के प्रथम सप्ताह में राजकोट के पूज्य श्री धवलनारायण
िास्त्रीजी जी द्वारा श्रीमद्भागवि ज्ञान यज्ञ चकया गया। अगले चदन, एक चदवसीय अखण्ड पारायण
िुलसीकृि 'श्री राम चररि मानस' का हुआ। गीिा यज्ञ, महारुद्राचभषेक और होम, चण्डी यज्ञ,
षोडषी हवन िथा भजन-कीिपन होिा रहा। प्रचिचदन सूकूल के बच्चों,ं साधुओं,ं कुष्ठ रोचगयों,ं चनधपन
लोगों ंऔर पिु-पचक्षयों ंको भोजन प्रसाद बाँटा जािा रहा।

११ चसिम्बर २००८ को एक चविेष चदव्य यात्रा चनकाली गयी जो आश्रम से दोपहर लगभग
२ बजे प्रारम्भ हुई। यात्रा में बहुि से चविेष रूप से सजाये गये वाहन थे चजनमें परम पूज्य गुरुदेव
िथा परम पूज्य स्वामी जी महाराज के चविाल चित्र मनोहर पुष्पों ंसे अलंकृि करके रखे हुए थे।
'ॐ नमो भगविे चिवानन्दाय', 'ॐ नमो नारायणाय', 'ॐ नमीः चिवाय', 'श्री राम जय राम
जय जय राम' िथा महामंि का गान करिे हुए यात्रा आगे बढ़ी। मागप में मुचनकीरेिी और
ऋचषकेि के लोग भी यात्रा में सक्तम्मचलि हो गये। बहुि से लोग मन हो कर नृत्य करिे हुए भी
चल रहे थे। रास्ते में आने वाले सभी आश्रमों ंऔर संस्थाओं ंके माननीय लोगों ंने अपने द्वार पर
पहुँचने पर यात्रा की चविेष पूजा-आरिी की और प्रसाद बाँटा। अनेक स्थानों ंपर लोगों ंने सम्पूर्ण
यात्रा पर पुष्प वषाप भी की। यात्रा में लगभग २००० से अचधक भक्त जन रहे होंगे और यह यात्रा
आश्रम से आरम्भ हो कर धीमी गचि से ऋचषकेि नगर में प्रवेि करिी हुई भरि मक्तन्दर से हो
कर पुनीः आश्रम लौटी। यह यात्रा पूरे रास्ते में चविेष ज्ञान-प्रसाद के रूप में पुक्तस्तकाएँ िथा फल
और चमठाइयों ंका प्रसाद आस-पास के लोगों ंमें चविररि करिी हुई िल रही थी। चवचवध आश्रमों ं
और संस्थाओं ंके अचिररि अन्य भि व्यापाररयों ंने यात्रा के सारे मागप को अत्यन्त सुन्दर द्वारों ं

और झण्डों ंद्वारा सजाया था जो उनके चदव्य जीवन संघ की इन दो महान् चवभूचियों–ंगुरुदेव और स्वामी जी महाराज के प्रचि गहन पे्रम और श्रद्धा को अचभव्यि करिा था।

१२ चसिम्बर २००८ को मुख्य िर्षिी कायपक्रम चदवस पर यह आध्यात्क्तमक महोत्सव अपने रिम चबनदु पर पहुाँ गिया था। चदवस का प्रारम्भ प्रािः ५ से ६ बजे िक ब्राह्ममुहिप के ध्यान-प्राथपना सत्र और उसके उपरान्त प्रभािफेरी से हुआ।

पावन समाचध मक्तन्दर में ८ बजे चविेष महाचभषेक हुआ चजसमें आश्रम के समस्त वररष्ठ स्वामी जी सक्तम्मचलि हुए। इसके बाद सभी नव-चनचमपि 'चिवानन्द सत्संग भवन' (चिवानन्द आचिटोररयम) में गये जो भााँचि-भााँचि के के -गुच्छों ंसे िथा परम पूज्य स्वामी जी महाराज के चविालकाय चित्रों ंसे समुचिि रूप से सुसक्तज्जि चकया गया था। मुख्य कायपक्रम का प्रारम्भ परम पूज्य गुरुदेव के पावन पादुका पूजन से हुआ। उसके बाद ९.३० से ११.३० ब्रह्मलीन परम पूज्य स्वामी जी महाराज को श्रद्धांजचल समपपण का कायपक्रम िला।

इस अवसर पर कैलास आश्रम के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी चदव्यानन्द सरस्विी जी महाराज, परमाथप चनकेिन (ऋचषकेि) के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी असंगानन्द जी महाराज, गरीबदास आश्रम (हररद्वार) के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी श्यामसुन्दर िास्त्री जी महाराज, साधना सदन (हररद्वार) के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी चवश्वात्मानन्द पुरी जी महाराज, भारि मािा मक्तन्दर (हररद्वार) के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी सत्यचमत्रानन्द चगरर जी महाराज, साधना के आश्श्रम (िोमेट, देहरादून) के परम पूज्य श्री िािस्वामी जी महाराज, लक्ष्मणझूला के चनकट लक्ष्मण कुटीर के परम पूज्य अवधूि सन्त लक्ष्मण दास जी महाराज, चबहार स्कूल ऑफ योगा (मुंगेर, चबहार) के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी चनरंजनानन्द जी महाराज िथा आनन्द आश्रम, कांजनगढ़, केरल के परम पूज्य श्री स्वामी मुिानन्द जी महाराज ने श्रद्धांजचल समचपपि की। इनके अचिररि अन्य कई संस्थानों ंजैसे चिन्मय चमिन, श्री श्री आनन्दमयी मााँ मठ, रामकृष्ण मठ, गीिा भवन, बाबा काली कमली वाला क्षेत्र इत्याचद से भी सन्त और िि अपनी संस्थाओं ंकी ओर से श्रद्धांजचल समचपपि करने के चलए आये हुए थे। प्रत्येक िि ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजचल में परम पूज्य स्वामी जी महाराज को प्राचणमात्र के प्रचि गहन पे्रम और करुणा पूणप भावना, उनकी उिाि चवनम्रिा िथा उनके द्युचिमान आध्यात्क्तमक व्यक्तित्व की िथा अन्य अनेक दैवी गुणों ंकी भूरर-भूरर प्रिंसा की।

बाद में, १६ महात्माओं ंकी आरिी पूजा करके उन्हें पुष्पहार पहनाये गये िथा १६ चवचवध प्रकार के व्यंजनों ंसे युि चविेष भोजन, दचक्षणा िथा अन्य उपहार भेंट चदये गये।

इसके अचिररि ऋचषकेि, हररद्वार िथा अन्य चनकटविी स्थानों ंसे ३००० साधुओं ंको भोजन, दचक्षणा, कम्बल और कमण्डलु चदये गये। उस चदन दस सहस्र से अचधक लोगों ंको भण्डारा क्तखलाया गया।

सायंकाल में नौका-संकीिपन िथा उसके उपरान्त चविेष गंगा-पूजन 'श्री चवश्वनाथ घाट' पर हुआ चजसमेंसहस्रों ंकी संख्या में दीपक गंगा जी में छोडे गये।

राचत्र-सत्संग में दैचनक कायपक्रमों ंके अचिररि चविेष भजन-सत्र हुआ िथा पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के जीवन और कायों पर एक छायाचित्र भी चदखाया गया। आरिी और चविेष प्रसाद चविरण सचहि कायपक्रम सम्पन्न हुआ।

भगवान् श्री चवश्वनाथ िथा परम पूज्य गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज िथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की अपार कृपा से पूज्य स्वामी जी महाराज की षिी आराधना का यह आध्याक्तत्मक महोत्सव अत्यन्त भव्य रूप से सम्पन्न हुआ।

-द शिवाइन लाइफ सोसायटी

अनुभिू ...

गुरुवार, २८ अगस्त २००८, मध्यराचत्र - ध्यानमुद्रा आसीन ज्योचिमपय स्वरूप आराध्य देव श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को देहरादून से ला कर श्री स्वामी चिवानन्द समाचध मक्तन्दर, चिवानन्द आश्रम, ऋचषकेि में चवराजे गये िो चदव्य काक्तन्त से दीप्त मुखमण्डल एवं चवभाचसि काया से चछटकिी आलोक चकरणों ंसे-गुरु भगवान् के चनत्य प्रकाि से एकाकार हो-वहााँ का आलोक चद्वगुचणि हो उठा। प्रेमीभिों ंने उन्हें मनभावन ढंग से वस्त्रालंकारों–मोचियों ंकी मालाओं ंसे अलंकृि कर सादर, सश्रद्धा सजल नयनों ंसे पुष्पांजचल अचपपि की। ये सब हैं अकथ्य अचनवपिनीय।

सखी! कैसे कहूँ मोहे कहि न आवै-
नैना देखें पर वे हैं नशहं रसना (शजह्वा),
सो वै नैना कछु बोल न पावैं।
रसना कह सकै पर वाके है नशहं नैना
सो शबन देखे रसना कछु कहि न पावै।
सच्चख! कैसे कहूँ मोहे कहि न आवै ।....

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नगर पररक्रमा श्री चवश्वनाथ घाट पहुाँिी। पावन अचभषेकोपरान्त श्री चवश्वनाथ घाट से जैसे ही सबके सवपस्व पुण्यिील स्वामी चिदानन्द-चवराचजि पुष्पसक्तज्जि नौका-यान गंगा की मध्य धारा में पहुाँिी, चिवानन्दझूला आकाि से सौरचभि सुमनों ंकी झडी लग गयी। इधर माँ गंगा-अपने नैचष्ठक ब्रह्मिारी, चजिेक्तिय, अहंिा-मिािून्य, अनासि, लोकोपकारी, कृपालु दयालु, इष्ट्समचपपि, गुरुिीथपचनष्ठ, सेवा, प्रेम, त्याग, भक्ति, ज्ञान-वैराग्य, िपोचनष्ठ, सवपगुणसम्पन्न, गुरुप्रेमरसभीने, चदव्यप्रेममूचिप-चबछुडे चप्रयवत्स को चमलने चहिाथप हो उठी अधीर-

पुण्य सशलला ब्रह्मद्रवमयी गंगा मैया हो उत्कंशठि
आगे ह बढ़ी िरलिरंग उमंग भरै शहय सों–

करन कू सत्कार औ' हाशदणक अशभनन्दन परमपुनीी प्रेमसों ं
भगवान् गुरुदेव स्वामी शिवानन्द शप्रयिम शिष्यभगवतुपुरुष-

'अन्तराणष्ट्रीय शदव्य जीवन संघ', 'कोहनूर' 'अध्यिा-ज्ञान-ज्योशि' स्वशप्रय
सपिू को, वात्सल् से्नेह सो बाँूहें हूँ फैलाये कल-कल ध्वशन
जय-जयकार से शकया आशलंगनबद्ध त्वरा सों ं

परम पावन शदव्य पे्रम ममिामय अंक में भरशलयो ब्रह्मशनशध स्वरूप को
शदव्य परमपावन सवणमनभावन प्यारे -न्यारे शिदानन्द को ।।

'शिदानन्द हूँ,' 'अमरानन्द हूँ' ये सहज ही आजीवन समझाया हम सबको,
िुम्हारी ही करुिैक कृपा साँू पायेंगे शिदानन्द-सच्चिदानन्द स्वरूप को।।

–सं.ि .

'ब्रह्मशवद् ब्रह्मैव भवशि'

– महामण्डलेश्वर श्री स्वामी शदव्यानन्द सरस्विी जी महाराज –

"ब्रह्मशवद् ब्रह्मैव भवशि।" शुरुचि कहिी है-ब्रह्म का साक्षात्कार जो करिाहैवहब्रह्महीहो जािा है। उसका कुल, पूवपज, उसका चिष्य समुदाय ब्रह्मचवद् गुरु के प्रचिसमचपपिहोब्रह्मज्ञान प्राप्त करिा है।

"ि**स्मादिाज्ञं हिाणयेद् भूशिकामः।"** (मुण्डक उपचनषद् ३-१-१०)

शुरुचि कहिी है जो ब्रह्म ित्त्व जानिा है वह पूजनीय है-

"उपासिे पुरुषं ये ह्यकामास्िे ते िुक्रमेिदशिविणच्चन्त धीराः।"(मुण्डकउपचनषद्3-2-2)

जो चनष्काम हो करके उपासना करिे हैं वे जन्म-मृत्यु संसार से मुि हो जािे हैं।

चवदेह मुक्ति को प्राप्त श्री स्वामी चिदानन्द जी सवपप्रथम ब्रह्म ही थे, ब्रह्म ही हैं। उनके चवषय में क्या कहा जाये? उनके स्वरूप को स्पिप करने के चलए कोई िब् नहीं।ं वह ब्रह्म हैं। ब्रह्म चकसी िब् का वाच्य नहीं।ं ॐ ित्सि्।

-कैलास आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

जीवनु्मि महापुरुष

-महामण्डलेश्वर श्री स्वामी असंगानन्द जी महाराज-

उत्तराखण्ड की चविेष पावन चवभूचि श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से हमारा पररिय बहिु पुराना िभी से है जब से सन् १९४५ से परम श्रद्धेय श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज का
सम्बि परमाथप चनकेिन से रहा। स्वामी जी की चवद्विा को िो हम प्रारम्भ से ही देखिे आ रहे हैं।

शु्रुचि कहिी है-

"िथा चवद्वान् नामरूपाद् चवमुिः ।

परात्परं पुरुषमुपैचि चदव्यम्।" (मुण्डक उपचनषद् 3 -?-6

चवद्वान कौन है? यहााँ पर केवल िब्दों को जानने वाला ही चवद्वान् नहीं। चवद्वान् वह है जो जल में रहिे हुए जल के ऊपर रहिा है। नाम-रूप आचद जल है। लोगों को लगिा है वह सब कर रहा है, कायपरि है, चकन्तुिु वह कुछ करिा नहीं। द्वनद्व में रहिे हुए वह अचलप्त रहिा है। नाना रूप जगि् में वह जो कर रहा है ऐसे जैसे कुछ नहीं कर रहा। ऐसे जीवनुमुि महापुरुष थे हमारे स्वामी चिदानन्द जी। मैं समझिा हाँ वे ित्त्वज्ञान स्वरूप, अिजििुरु कृपा-चसिु एक आदिप महात्मा के रूप में चसद्ध हुए। अन्त िक उनका जीवन सभी के चलए प्ेरेरणादायक रहा। चिवानन्द आश्रम में आने वाले समस्त भि जन स्वामी जी महाराज के चलए असीम श्रद्धा रखिे हैं।

परमाथण शनकेिन, पो. स्वगाणश्रम पौडी-गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

ििीि : वाक्- श्रद्धांजशलयााँ प्रारम्भ।

गुरु-िीथणशनष्ठ

-महामण्डलेश्वर िा. स्वामी श्यामसुन्दरदास जी िास्त्री-

एम. ए., सांख्ययोगवेदान्तिााचायप, साचहत्यायुवेदााचायप, बी. आई. एम. एस.

ब्रह्मलीनप्रािःस्मरणीयस्वनामधन्यश्रीस्वामी चिदानन्द जी को भावभीनी श्रद्धांजचल अचपपि करिे हुएउनमहान्गुरुओं काभीस्मरणकरिा हाँ चजनकी कृपा से ऐसे महापुरुष चमले। संसृ्कि श्लोकों कीरिनाद्वाराइसपरम्पराकोप्रसुतुकरिा हाँ-

जगद्गुरु आचद िंकरााचायप, सवपश्री चनम्बाकााचायप, मध्वााचायप, वल्लभााचायप, गोस्वामी िुलसीदास व सूरदास को प्रणाम करिा हाँ।

उत्तर चदिा में देविा स्वरूप 'चहमालय' नामक रमणीय भू भाग है। उसमें प्रमुख द्वार के रूप में प्रचसद्ध एवं पावन िपोवन िीथप ऋचषकेि चवराजमान है।

जहाँ रम्य, कल्याणकारी स्वामी चिवानन्द आश्रम है। **साक्षाि् महादेव स्वरूप योशगश्रेष्ठ स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने यह आश्रम संथथाशपि शकया।**

भारि भारिी संस्कृचि के रक्षक स्वामी चिवानन्द महाराज के यि की जयकार है। उत्तर भारि व दचक्षण भारि की संस्कृचि को जोडने वाले यह त्यागात्मा देविा स्वरूप हैं।

गीिा, उपशनषद्, ब्रह्मसूत्र के उद्घोषक एवं नाना प्रकार की भाषाओं ंके शवद्वान्, अध्यािशवद्या के जाज्वल्मान दीपक स्वामी शिवानन्द गुरुदेव की जय हो।

स्वामी शिवानन्द जी महाराज के श्रेष्ठ कृपापात्र शिष्य स्वामी शिदानन्द जी महाराज गुरुिीथणशनष्ठ, सरल स्वभाव, शवनि और अपने भिों ंके संरक्षक रहे हैं।

योग के द्वारा, मधुरवािी िथा िारीररक िुच्चद्ध के द्वारा गोवंि और मिृवृन्द की सेवा में ित्पर रहे।

दि-शवदि में अध्याि िास्त्र, सदािार-शनष्ठा व शवश्व-बन्धुत्व का संदि स्वामी शिदानन्द जी महाराज अनवरि करिे रहे।

सत्यम्, शिवम् द्वारा इस मन्त्र की शिक्षा दि हुए शिक्षा िथा शिशकत्सा से जनिा की सेवा, बाल-वृद्ध, रोग-ग्रस्त बन्धुओं ंकी सेवा में ित्पर रहने वाले श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज की जय हो।

उनकी पावन िीथी के पवप पर मेरी उनके िरण कमलों ंमें श्रद्धांजचल समचपपि है। वे मुचनकीरिी, चिवानन्दझूला 'चदव्य जीवन संघ' में सुिोचभि हों।ं

सवण प्राशियों ंमें दयाभाव, ब्रह्मशवद्या में शनष्ठा, शनःस्पृह स्वामी जी की जय हो।

श्री साधु गरीबदासीय सेवाश्रमटरस्ट
मायापुर, हररद्वार (उत्तराखण्ड)

संस्कृि श्लोकों ंके भावाथप को सार रूप में यहाँ प्रस्तुि चकया गया है।

ब्रह्मशवद्या-मूशिण

-महामण्डलेश्वर श्री स्वामी शवश्वािानन्द पुरी जी महाराज-

वेदों ंके अनुसार मनुष्य-जीवन की सफलिा ब्रह्म का आत्मरूप से अनुभव करने से होिी है। मनुष्य-जीवन का प्रथम लक्ष्य है-ब्रह्म का आत्मरूप से साक्षात्कार करना।

"सशमत्पाशिः श्रोशत्रयं ब्रह्मशनष्ठम्।" (मुण्डक उपचनषद् : १-२-१२)

इस शु्रुचि के आदेि का पालन करिे हुए परम श्रदे्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी ने अपने सद्गुरुदेव प्रािः स्मरणीय श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज से ब्रह्मचवद्या प्राप्त कर ली थी। ब्रह्म और िास्त्र् की दृचष्ट् में चजसने ब्रह्मचवद्या प्राप्त कर ली उसका कोई कुछ भी किपव्य-कमप िेष नहीं ं रहिा। गीिा कहिी है-

"एिद्बुद्ध्वा बुच्चद्धमानस्यात्कृिकृत्यश्च भारि ।" (गीिा : १५-२०)

उसका सारा किपव्य, आिार-व्यवहार सब सम्पन्न हो गया।

िास्त्र् कहिा है-

"न बुच्चद्धभेदं जनयेदज्ञानां कमणसंशगनाम्।"(गीिा:३-२६)

िो गीिा के इस आदेि-विन का पालन करिे हुए ब्रह्मलीन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने अपने व्यक्तिगि जीवन में कोई किपव्य-कमप िेष न रहने पर भी अपने गुरुदेव की आज्ञानुसार इस चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष पद पर रहिे हुए केवल भारि के ही नहीं,ं चवश्व के अनेक राष्ट्रों ं में रहने वाले ित्त्व-चजज्ञासुओं ं की ित्त्व-चजज्ञासा िान्त करने के चलए भारि के अनेकप्रान्तों ंमेंथािदे-चवदिेमेंअपनेगुरुदेवकीचिक्षाओं ंका,ब्रह्मचवद्याकाखूबप्रिार-प्रसार चकया।

चवद्वान् होिे हुए भी महाराजश्री बडे सरल और चवनम्र रहे। एक प्रकार से वे सरलिा-चवनम्रिा की प्रचिमूचिप ही थे। उनका जीवन सादगीपूणप बडा साक्तत्त्वक था। जीवन में चदखिे थे वे एक साधारण व्यक्ति की ही िरह। उनकी सरलिा और महान् व्यक्तित्व के साचन्नध्य में जो भी आया अनायास ही प्रभाचवि हो जािा था। आकचषपि हो जािा था। उस व्यक्ति के हृदय को एक प्रकार से छू जािाथाउनकाउज्ज्वलव्यक्तित्व।

ऐसे महाराजश्री समाज के प्रत्येक वगप के व्यक्ति के उत्थान के चलए, लौचकक-पारलौचकक जीवन में सुधार के चलए सदैव कायपरि रहे। इस उद्देश्य से उनका जीवन-चसद्धान्त रहा, उसी के
अनुरूप उनका दया-सहानुभूचि पूणप व्यवहार रहा।

साधना सदन, हररद्वार (उत्तराखण्ड)

सवे भवन्तु सुक्तखनीःसवेसन्तुचनरामयीः।
सवे भद्राचण पश्यन्तुमाकचश्चद्दुीःखभाग्भवेि् ।।

आधुशनक युग के ऋशष

-श्री ि्ि स्वामी उदासीन –

यहााँउपक्तस्थिचदव्यजीवनसंघकेपूज्यसन्तगण,चवचभन्नआश्रमों–मठों ़ सेपधारे हुए परम पूज्यमहामण्डलेश्वरमहाराजवसन्तगणकिरणों ़मेंमेराप्रणामिथायहााँपधारेहुए भि जन व अन्य सभी को सप्रेम हरर ॐ।

आजहमसबयहााँब्रह्मलीनपरमपूज्यस्वामीचिदानन्दजीमहाराजकेषिोिी संस्कार चदवसपरउन्हेंअपनीश्रद्धांजचलअचपपिकरनेहेिुएकचत्रिहुएहैं।परमपूज्यमहाराज जी एक बोधवान् महापुरुष थे। ऐसे सन्तों ़ के बारे में गुरुवाणी कहिी है-

"सन्त मुए क्ा रोइये ज्यों ़अपने घर जाए।
रोइये सिाक बापडे जो हाटे हाट शबकाए।।"

उन्होंनें **आधुशनक युग के ऋशष** के रूप में अपनी त्याग, िपस्या, चदव्य प्ेरम व चनी:स्वाथप सेवा के गुणों ंसे आध्यात्क्त्मकिा का सिा और व्यावहाररक सन्ेदि जगि् के समक्ष सामने रखा और अगचणि लोगों ंको प्रभाचवि चकया। उन्होंनें कई दिकों ंिक परम पूज्य स्वामी चिवानन्द जी महाराज द्वारा स्थाचपि चदव्य जीवन संघ के अध्यक्ष के रूप में सेवा की िथा इसे सक्षम निृत्व प्रदान चकया। उनकी उपक्तस्थचि मात्र िाक्तन्त और चदव्यिा चवकीणप करिी थी। अचिय चवनम्रिा उनका अनूठा गुण था। सन् १९९९ में हमारे साधना कि आश्रम को भी उन्होंनें अपनी पद-रज से पचवत्र चकया था। उनकी मधुर सूमृचि को मेरे अनेकों ंप्रणाम।

प्रभु से प्राथपना है चक चदव्य जीवन संघ एवं हम सब पर उनकी कृपा सदा बनी रहे िथा यह संस्था पहले की ही िरह समाज में सिी आध्यात्क्त्मकिा, चदव्य प्ेरम व चनी:स्वाथप सेवा का प्रसार करिी रहे।

पुनी: पूज्यपाद सभी सन्तों,ं साधुओं ंके पचवत्र िरणों ंमें अनेक प्रणाम।

साधना कि आश्रम,
ग्रामि्ुमेट (बाडवाला),
िकिघर – ओिौक आश्रम, देहरादून (उत्तराखण्ड)

सवापत्मक भाव-भाचवि

–श्री स्वामी ध्यानानन्द जी महाराज-

परमाध्यक्ष श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के सत्संग लाभ के मुझे कु छ ही सुअवसर चमले। उन सुअवसरों ं के प्रत्येक पल में उनके उस अगाध चनष्काम प्ेरम-प्रवाह के नैरन्तयप से मैं मोचहि हुआ हाँ। उनके उस प्ेरम में एक ऐसा सवापत्मक भाव था जो चक सदा आनन्द की अनुभूचि प्रदान करिा था।

आज परम पूज्य चिदानन्द जी महाराज हमारे साथ एक हो गये हैं। यचद हम आँखें मूँद कर अन्तरमेंझााँकेिोमुझेपूराचवश्वासहैचकवहीं ंसेउनकाआिीवापदवकृपा-दृचष्ट्प्राप्तहोगी।

चिन्मय चमिन व चविेषिया अपने गुरु श्री स्वामी िेजोमयानन्द जी महाराज की ओर से मैं परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के पादपद्मों ं में श्रद्धांजचल अचपपि करिा हाँ। हररी: ॐ!

पिोवन कुटी, शिन्मय शमिन,
उत्तरकािी (उत्तराखण्ड)

शदव्य अमर आिा

– श्री स्वामी लक्ष्मिदास अवधिू जी महाराज –

'िृणादचप सुनीिन' की साकार मूचिप, महान् चवभूचि श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से सन् १९४८, लगभग इकसठ वषप पूवप से मेरा घचनष्ठ सम्बि रहा है। इनसे अचधक चवनम्र पुरुष मैंने कोई और नहीं ंदेखा। 'चनमापनमोहा चजिसंगदोषा...' श्रीमद्भगवद्गीिा के ये विन उन पर पूणपिया चरिाथप होिे हैं।

श्री गुरु नानकदेव जी ने भी कहा है-

अपने को जो जानें नीिा,
सोई गचनयें सबसे ऊँिा।

स्वामी जी के जीवन में यह सब घटा था। इिनी नम्रिा! मेरे पास वे खुद आया करिे थे। जब आश्रम में आिे िो पहले सेवकों ंको नमस्कार करिे। पाकिाला में मािाओं ंको मधुर वाणी से 'मािेश्वरी', 'अन्नपूणेश्वरी' इत्याचद िब्दों ंसे सम्बोचधि करके पुकारिे थे। उन्हें िो 'सवां खक्तल्वदं ब्रह्म', 'वासुदेवं सवां इचि' दृचष्ट प्राप्त थी। 'चसया राम मय सब जग जानी' इत्याचद ये सब कहना िो आसान है लेचकन इसे जीना? स्वामी जी महाराज में िो ये सब पूरी िरह से देखा। कथनी-करनी में कोई अन्तर नहीं ंथा। उन्होंने िो इसी प्रकार का जीवन जी कर चदखाया। एक बार स्वामी रामिीथप जी की पुस्तक में पढ़ा था-

आप ही राम है िू, मुफ्त में बदनाम हूँ मैं।
मुँह से कह 'राम हूँ मैं', 'राम हूँ मैं' ।।

शदन हूँ मैं, राि हूँ मैं, सुबह हूँ मैं, िाम हूँ मैं।
मुँह से कह 'राम हूँ मैं', 'राम हूँ मैं', 'राम हूँ मैं ।।'

वे जब भी कभी हमारे पास आिे, हम गले चमलिे थे। वे सदा भजन बोलिे। उनकी चदव्य वाणी अब भी हमारे कानों ंमें गूँजिी है -

शजस हाल में, शजस देि में, शजस वेष में रहो,
राधारमि, राधारमि, राधारमि कहो ।...

और कभी अलमस्ती में गा उठिे-

शिदानन्द, शिदानन्द, शिदानन्द हूँ।
हर हाल में अलमस्त सच्चिदानन्द हूँ।।...

ये केवल उनकी वाणी ही नहीं ंजीवन में सब व्यवहार में लाये। इन्हीं ंभावों ंसे युि कुछ पंक्तियाँ उन्हें उदूप में सुनािा-

पूरे हैं वही मदण जो हर हाल में खुि हैं!
खाने को शदया कम िो उसी कम में खुि हैं।।

ग़म शदया यार ने ि◌ो ग़म में रहे खिु
दुख-ददण में, आफि में, जंजाल में रहे खिु ।।
पूरे वही हैं मदण जो हर हाल में खिु हैं।।

ग़र खाट चबछाने को चमली ि◌ो खाट पर सोए, बाज़ार में जा कर बाट में सोए, टाट चबछाने को चमला, टाट पे सोए। पूरे वही हैं मदप जो हर हाल में खिु हैं।।

एक चदन मैं सायंकालीन सत्संग में पहुाँ गया। स्वामी जी मुझे देख कर बडे प्रसन्न हुए! बोले- "सन्त के आने से आज 'सोने में सुहागा' पड गया, 'िन्दन में इत्र'।" क्ा मीठी भाषा थी। उनकी वाणी से फूल झडिे थे। मैं निीज। इिना पडा-चलखा नहीं; चफर भी इिना आदर! पुरानी चिट्ठी खोल के देखीं ि◌ो रोना आ गया। मुझे सम्बोधन करके 'कोचट-कोचट प्रणाम' चलखिे। और अपने-आपको को चलखिे- 'िरण रज', 'धूचल कण'। इिनी चवनम्रिा ! उनको छोटे-बडे का कुछ था ही नहीं। उनकी दृचष्ट् ब्रह्ममय थी। सबमें भगवान् के ही दिपन करिे थे।

हमारी सिी श्रद्धांजचल यही है चक उनके विनों पर िल कर हम अपना जीवन सफल बनायें। अन्त में उनके िरण-कमलों में कोचट-कोचट नमन करिे हुए उन चदव्य अमर आत्मा से यही वरदान मााँगिे हैं-

चिदानन्द जी महाराज, मुझे अपने जैसा बना दो जी।
मुझे झुकना नहीं आिा, मुझे झुकना चसखा दो जी।।

श्री लक्ष्मि कुटीर, पो. लक्ष्मिझूला
(ि**पोवन)**
ऋशषकेि, उत्तराखण्ड

अखण्ड सच्चिदानन्द-प्ेरम स्वरूप पुरी जी महाराज-

–श्री स्वामी मेधानन्द

ब्रह्मलीन स्वनामधन्य श्रीमत्स्वामी चिदानन्द जी महाराज बहुि दयालु थे, आप सभी लोग जानिे हैं। वेदों में कहा गया है- **"ब्रह्मशवद् ब्रह्मैव भवशि।"** जो ब्रह्म को जानिा है, वह ब्रह्म ही हो जािा है। उनके अन्दर न अचभमान रहिा है, न उनके अन्दर कोई अहंकार। श्री स्वामी जी के अन्दर यह मैंने स्पष्ट् रूप से देखा। स्वामी जी बहुि ही सरल और उदार प्रकृचि के थे। अन्तरापष्ट्रीय प्रचसक्तद्ध प्राप्त महाराजश्री साधारण से साधारण भि को, महात्मा को बडे ही प्ेरम से चमलिे थे। मैं जब कभी उनसे चमलने जािा ि◌ो अपना आसन छोड मेरे साथ ही बैठ जािे; मैं संकोि में पड जािा ि◌ो वे कहिे-"सभी ि◌ो परमात्मा हैं; आपके अन्दर भी ि◌ो वही परमात्मा है, मैं आपके साथ निीं बैठूाँ ि◌ो क्ा आपचत्त हैं?" उनका जीवन सरलिा, चनरहंकाररिा और चनरचभमानिा से पररपूणप था। उनका कोई एक गुण भी हम अपने जीवन में उिारेंगे ि◌ो हमारा जीवन धन्य-धन्य हो जायेगा।

अखण्ड सक्तिदानन्द ही प्ेरम स्वरूप महाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी के रूप में हम सबको सत्प्रेरणादेने के चलए, अमृि ित्त्व देने के चलए आये थे। हम उनको सादर वंदन करिे हैं।

कोषाध्यक्ष, श्री कैलास आश्रम
ऋशषकि, उत्तराखण्ड

करुिामयी कृपा

–श्री स्वामी मुिानन्द जी महाराज-

|| ॐश्री || राम जय राम जय जय राम|| राम जय
ॐश्री || राम जय जय राम|| राम जय राम जय
ॐश्री जय राम||

इससभाकक्ष में प्रवेि करिे ही परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के इन चवराट् चित्रों ंकोदेखकर उनके जाज्वल्य स्वरूप का चदग्दिपन हािेा है और चकिनी सृमृचियाँ जग उठिी हैं।

श्री स्वामी जी महाराज परम पूज्य पापा (स्वामी रामदास जी) के समय से ही आनन्द आश्रम (केरल) से सम्बक्तििे रहे। ियद सन् १९३० में जब वे श्रीधर राव नाम से जाने जािे थे। परम पूज्या कृष्णाबाई मािा जी के समय में भी प्रचिवषप कुछ समय आनन्द आश्रम में सत्संग में व्यिीि करिे थे िथा हमें उनके सत्संग का लाभ चमलिा था।

सन् १९६४ के अक्तन्तम चदनों ंमें िेन्नई में उनके दिपनों ंका सुअवसर चमला। चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष पद पर आसीन होने के पश्चाि् वे पहली बार िेन्नई आये थे। उन्होंनें सम्मेलन में पहुँििे ही, सबको आश्चयपचकि करिे हुए, उपक्तस्थि समस्त जन-समूह को साष्टांग प्रचणपाि चकया। ित्पश्चाि् अपने प्रविन का प्रारम्भ 'उज्ज्वल अमर आत्मन् !' इन चदव्य िब्दों ंसे चकया। आज ४५ वषप बाद भी वह सब प्रत्यक्ष है। ऐसा आनन्दोत्तेजक व्याख्यान हमें कहीं ंसुनने को नहीं ंचमला।

सन् १९६९-७० में हम अपनी चनयचमि यात्रा पर चिवानन्द आश्रम दिपनाथप पहुँिे। हम सभी चवश्वनाथ मक्तन्दर के पास बैठे थे। अिानक स्वामी जी महाराज वहाँ पधारे। हमारी ओर देख कर पूछा- 'आप कहाँ से आये हैं?' मैंने कहा-'मैं केरल से हूँ।' उन्होंनें चफर पूछा- 'कब आये आप?' उत्तर था- 'कुछ चदन पूवप।' वे बोले- 'लौटने से पहले मुझे चमल लेना।' यह पूछने पर 'कब आयें?' उन्होंनें कहा- 'कल दस बजे।'

अगले चदन हम दिपनाथप पहुँिे। वहाँ पर १०x१० या १०x१२ का कमरा। अन्दर कोई फनीिर नहीं ंथा। एक कोने में पुस्तकों ंसे चघरे हुए श्री स्वामी जी महाराज कायपरि थे।

स्वामी जी ने पूछा- 'आप कहाँ से हैं?'
मैंने कहा-'केरल से।'

स्वामी जी- 'केरल के चकस प्रान्त से?'

मैंने कहा- 'कन्चनागढ़' (कन्नगढ़)?

स्वामी जी - 'आप आनन्द आश्रम गये हैं?

मैंने कहा- 'हाँ जी।'

स्वामी जी- 'क्ा आपने मिाा जी का दिपन चकया है?'

मैंने कहा- 'हाँ जी।'

स्वामी जी-'िब आप यहाँ क्ों ंआये हैं?'

मैं िो एकदम स्तक्तम्भि हो गया। िब पीछे से चकसी अन्य भि ने कहा- 'हम यहाँ चनयचमि यात्रा के चलए आवे हैं।' िब उन्ोंनें कहा- 'मुझे प्रसन्निा है चक आप आनन्द आश्रम जािे हैं।'

सन् १९८९ में जब स्वामी जी आनन्द आश्रम आये िो मैं वहीं ंथा। सत्संग के बाद सब दिपनाथी िले गये िो मुझे देख कर कहा- 'क्ा आपने इस स्थान को अपना घर बना चलया है?' मैंने कहा- 'हाँ जी।'

ऐसे हिो हैं सन्त। न ही कोई महत्त्वपूणप है, न ही कोई गौण है। हम जो िास्त् में पढ़िे हैं, वे उसी के मूिपरूप हैं।

हम अपनी माचसक पचत्रका 'व्हीजन' में हर बार श्री स्वामी जी महाराज का विव्य छापने का प्रयास करिे हैं। उनके सभी लेख हीरे हैं, चकन्तु दो लेख मेरी सूमृचि में घर कर गये हैं। एक है- 'गुरु अमरणिील है।' वे अपने चिष्यों ंके चविार, दिपन, सदािरण व दृचष्टकोण के रूप में जीचवि हैं। और वे कहिे हैं- "आपको देख कर जगि् को मालूम होना िाचहए चक आपके गुरु कौन हैं।" यह एक गौरव की बाि है। परन्तु साथ ही एक महि् चजम्मेदारी भी। चकसी भी चविार या कायप को करिे समय हमें चविार करना िाचहए चक क्ा हमारे गुरु इसे मान्यिा देंगे ? प्रत्येक क्षण सावधानी से ऐसा चविार करना होगा।

दूसरा है- 'ईश्वर की दृचष्ट में आप अप्रचिम हैं।' उन्ोंनें कहा है- 'ईश्वर की योजना को कायापक्तन्वि करने हेिु सभी की महत्त्वपूणप भूचमका है। अिः सभी पचवत्र और चविेष हैं। कोई भी गौण या हीन नहीं ंहै। चजिने लोग उिनी राहें (ईश्वर की ओर जाने की)। यथाथपिः जब हमारी आध्याक्तत्मक िीव्रिा कम होने लगिी है िो यही याद चदलािा है-आप अप्रचिम हैं। आपको अपने लक्ष्य-मागप पर स्वयं ही िलना है।' परम पूज्य पापा भी यही कहिे हैं- 'आप अनोखे हैं।' आप अपने अनोखे िरीके से ईश्वर के सन्मागप पर िचलए।

परम पूज्य स्वामी जी की महासमाचध के समय से उनके संस्मरणों ंको याद करिे हैं। एक बार वे आनन्द आश्रम में समाचध मक्तन्दर की ओर बढ़ रहे थे। कोई व्यक्ति अनजाने में एक पौधे की पचत्तयों ंके अग्रभाग को िोडिा जा रहा था। वहाँ रुक कर स्वामी जी ने उन सब टूटी पचत्तयों ं को एकचत्रि चकया। उनके चलए कोई भी कायप छोटा नहीं।ं उन्ोंनें जो-कुछ हमारे साथ बाँटा है,

हम उसके चलए आभारी हैं। हम उनसे प्राथपना करि हैं चक उनके आिीवापद से हम िीघ्रिापूवपक अपने आध्याक्तत्मक लक्ष्य िक पहुँिें। हररी: ॐ!

आनन्द आश्रम, कन्नगढ़, केरल

अपना जीवन ऐसा बनाना िाचहए चजससे दूसरों को प्रसन्निा चमल सके, दूसरों को लाभ हो सके िथा दूसरों की सहायिा हो सके। यचद ऐसा सम्भव न हो, िो उससे कम-से-कम दूसरों के कष्टों को, दुी:खों को िो चकसी प्रकार कम चकया ही जा सकिा है। ऐसा ही जीवन, वास्तव में जीवन है। यही हमारा धमप है।

-स्वामी शिदानन्द

सि्-िशि्-आनन्द रूप

–श्री स्वामी शनरंजनानन्द सरस्विी जी महाराज-

चिदानन्द चिदानन्द चिदानन्द हाँ।
हर हाल में अलमस्त सक्तिदानन्द हाँ।।

अजरानन्द, अमरानन्द, अिलानन्दहाँ।
हर हाल में अलमस्त सक्तिदानन्दहाँ।।
चनभपय और चनचश्चन्त चिद्घनानन्दहाँ।
कैवल्य, केवल, कूटस्थ आनन्दहाँ।।
चिदानन्द, चिदानन्द...

अपने गुरु स्वामी सत्यानन्द जी के साथ िालीस वषप पूवप आठ वषप की अवस्था में मैं यहाँ चिवानन्द आश्रम आया था। गुरुदेव कुटीर में सायंकालीन सत्संग में परम गुरु श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के इस 'चिदानन्द भजन' को श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के श्रीमुख से सुना था चजसे अभी हम सबने गाया है। मैं सिोि हाँ जो प्रारम्भ से ही अपने आपको **'सि्-िशि्-आनन्द'** रूप में भूल िुका है, पूणपिया रम िुका है; उसको भला क्ा श्रद्धांजचल अचपपि की जाये?

उन्ोंने संकल्प चलया था सद्गुरुदेव चिवानन्द जी के चसद्धान्तों को जीवन में आत्मसाि् करके मानव जाचि को चदव्यिा का बोध कराने का। हमारे चलए उन्ें श्रद्धांजचल देने का सवपश्रेष्ठ िरीका यही है चक अपने-आपको भूलें, ऐसे महात्मा के, ऐसे चसद्ध पुरुष के, ऐसे सन्त के स्वभाव को एवं उनके चविारों को अपने जीवन में आत्मसाि् करें; उनके चनदेििं आदेिों का पालनकरकेउनकेचदखायेसत्मागपपरिलें।हरर:ॐित्सि्!

परमाध्यक्ष, शबहार सूकूल ऑफ योग
मुंगेर, शबहार

उदारहृदयी

– श्री स्वामी हररओमानन्द जी महाराज-

अपने पररव्राजक जीवन के प्रारक्तम्भक चदनों ंमें मैं यहाँ चिवानन्द आश्रम आया। समाचध मक्तन्दर में दिपनाथप पहुाँिा। राचत्र सत्संग िल रहा था। हॉल खिाखि भरा था। भीर प्रवि करना अचि दुष्कर था। इसचलए मैंने बाहर से ही प्रणाम चकया, और कमरे में लौट आया।

अगले चदन प्रािःकाल ही मुझे उत्तरकािी जाना था। अिः श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के दिपनों ंसे वंचिि रहा। प्रस्थान करने ही वाला था चक उसी समय चकसी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुलने पर उसने दो पैकेट मेरे हाथ में चदये। एक में काजू था और दूसरे में थी दचक्षणा । दचक्षणा भी इिनी चक व्यक्ति उत्तरकािी िक पहुाँि जाये-उससे एक पैसा अचधक नहीं।ं

जैसा चक कहा जािा है-"यचद आपके पास अचधक पैसा होगा िो आपकी आदिें खराब हो जायेंगी।"

आप जानिे हैं उस काजू का क्ा हुआ ? उस काजू ने मुझको आज इस रूप में आपके सम्मुख चबठा चदया है।

उपरान्त मैं गंगोत्री की गुफा में गया। वहाँ मैंने ब्रह्म कमल (जो चविेष मांगचलक सुगक्ति से भरपूर होिे हैं और १८०० फुट की ऊाँिाई पर पाये जािे हैं) इकट्ठे करके अपने परम पूज्य गुरु महाराज श्री स्वामी चवष्णुदेवानन्द जी महाराज को कनिल भेज चदये।

इसके िीन वषप पश्चाि् पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज वहाँ गये और दोनों ंगुरुबन्धु परस्पर चमले। वे दोनों ंचवचभन्न चवषयों ंपर काफी देर िक चविार-चवचनमय करिे रहे। ित्पश्चाि् गुरु महाराज स्वामी चवष्णुदेवानन्द जी महाराज ने उन्हीं ंब्रह्मकमलों ंका हार परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को सप्रेम अचपपि चकया।

इस प्रकार हम सब परस्पर सम्बक्तन्धि हैं। महान् आत्मा श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की करुणामयी कृपा सवपदा हम सब पर बरसिी रहे िाचक हम िाक्तन्त, आनन्द से आप्लाचवि हों ंव सुख, स्वास्थ्य, दीघापयु िथा आध्याक्तत्मक उन्नचि से समृद्ध हों।ं

-श्री स्वामी शवष्णुदेवानन्द आश्रम उत्तरकािी (उत्तराखण्ड)

सवपरूप परम पुरुष

-श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज-

चिदानन्द सागर की एक िरंग अब िक प्रकट रूप में रही। ब्रह्मलीन होने पर उस भाव-सागर में ही लीन हो कर वह सवपरूप हो गयी। सोलह चदवसीय जो यह कायपक्रम हुआ इसमें हर रोज, हर क्षण, प्रचि पल हमारे चदल में सवपरूप वही **परम पुरुष** बैठा है, यही सबने अनुभव चकया। चिवानन्द आश्रम में धूल से ले कर पत्ते, कीट-पिंगे, कुत्ते, बन्दर, पिु-पक्षी सबमें,

आश्रम-वाचसयों ं एवं भि जनों ं का ि◌ो कहना ही क्ा? सबके अन्दर केवल एक ही भाव समाया हुआ अनुभवचकया-'चिदानन्द!''चिदानन्द!''चिदानन्द!'सबचिदानन्दरूपहीहोगये।

उन महान् चवभूचि के गौरव का, उनके गुणों ं का वणपन ि◌ो चकया ही नहीं ं जा सकिा। वे िि अवणपनीयहैं।यहााँउपक्तस्थिहरव्यक्तिकामनश्रीस्वामीजीकेप्रचिभावसेपररपूणपिी:ओि-प्रोि है।अगरसभीअपनेभावअचभव्यिकरें,ि◌ोउनकागुणगानचलचपबद्धकरस्टोरकरनेके चलए ऐसेदससभागार(आचिटोररयम)भिीायदकमरहेंगे।

मैं व्यक्तिगि रूप से उनके साथ जुडा हुआ था। कहााँ ि◌क कहा जाये? कैसे कहा जाये? वाणी अल्प है। उनको ििि स्मरण करना ही हमारी उनके प्रचि श्रद्धांजचल है। वे चजिना पहले हमारे साथ थे, ि◌रीर त्याग करके अब उससे भी ज्यादा हमारे समीप हैं। हमारे साथ हमेिा थे, हमेिा साथ हैं।

शदव्य जीवन संघ ि◌ाखा,
उत्तरकािी उत्तराखण्ड

'जीि-जागिे परमािा का हस्ताक्षर

–श्री स्वामी शिदानन्द मुशन जी महाराज-

कहिे हैं बदलिा है जमाना अक्सर;
पर सन्त वे हैं जो जमाने को बदल दिेहैं।

ऐसेमहान्सन्तहैंपूज्यस्वामीचिदानन्द जी, चजनका जीवन गंगा के समान पचवत्र और चहमालयकीऊाँचाइयों ंके समानऊाँचाहै।एकिा और चवनम्रिा के मूचिपमान् स्वरूप हैं स्वामी चिदानन्द जी।

भारिइसचलएमहान्नहीं ंचकउसकेपास काश्मीर की घाचटयााँ और मुंबई की ि◌ौपाचटयााँ हैं-भारिइसचलए,महान्हैचकउसके पासपरम पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज, पूज्यश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज हैं।

क्ाथीचिदानन्दस्वामीजीकीमहानिा! ज्ञान की ऊाँचाइयों ंपर पहुाँि कर भी एक कुष्ठ रोगी केद्वारपरमाथाटेकेचमलेंगे।कमप-भक्ति जहााँ ि◌ीषापसन करिे हों,ं ज्ञान जहााँ ि◌ीषापसन

करिा हो.... उनका नाम है- चिदानन्द जी। **जीि-जागिे उन परमात्मा का हस्ताक्षर हैं-** चिदानन्द जी।

भक्ति का, ज्ञान का, कमप का सार है-झुकना।

झुकिा िो वह है शजसमें जान होिी है।
नहीं िो मुदे की पहिान होिी है।।

ये िो वह सन्त हैं चजन्होंनें दुचनया को चहलाया नहीं बक्ति चहलिे हुओं को पकडा है, आश्रय-अवलम्ब प्रदान चकया है।

कौन कहिा है शक मौि आयेगी और
मैं मर जाऊँगा।
मैं िो दररया हूँ, सागर में उिर जाऊँगा ।।

श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज गंगा-सागर हैं और गंगा हैं-स्वामी चिदानन्द जी। स्वामी जी का महाप्रयाण है स्वामी चिदानन्द-गंगा जा कर श्री स्वामी चिवानन्द-सागर में चवलीन हो गंगा-सागर हो गयी।

परमाथण शनकेिन, पो.
स्वगाणश्रम पौडी-गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

साधक को साधना के प्रचि सदा सजग िथा जागृि रहना िाचहए। िचनक सी भूल साधक की समस्त साधना, उसकी जीवन भर की कमाई पल मात्र में समूल नष्ट् कर सकिी है।

- स्वामी शिदानन्द

'ज्ञानयोगिपोशनष्ठं,प्रिमाशम शिदानन्दम्'

–श्री स्वामी शनमणलानन्दशगरर जी महाराज –

पुण्यात्मा महापुरुष श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के दिपन हमने सन् १९६६ में हजारी बाग में श्री श्री माँ आनन्दमयी आश्रम में संयम-सप्ताह में चकये थे। महात्मा कभी मरि नहीं।ं वे मर कर एक नया जीवन हमारे सामने खडा कर दि हैं। इस प्रकार वह मर कर अमर हो जिो हैं। इनकी सूमृचि, इनका सदिरण, इनका सिररत्र एक चविाल 'लाइट हाउस' की िरह हमारे सामने रहिा है। महात्मा का कहीं ं जाना नहीं,ं कहीं ं आना नहीं।ं चनत्य चनरन्तर ये हमारे हृदय में रहि हैं। हमें इसी भावना को दृढ़ करना है।

सन् १९६६ से अब िक उनके साथ मेरा सम्पकप बराबर बना रहा। बडे प्यारे ढंग से, बडे सिररत्र ढंग से, बडी िालीनिा से वे आिीवापद चदया करि थे। श्री श्री माँ के जन्मोत्सव और संयम-सप्ताह में महाराजश्री को अनेक बार चिलकर्िदन-माला-अपपण करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसे उत्सवों ं में उनको देखे चबना भिों ं की िृक्तप्त ही नहीं ं हिोी थी।

श्री स्वामी जी महाराज इिनै बडे महात्मा हो कर श्री श्री माँ के सामने साष्टांग दण्डवि् करि थे। ऐसा पचवत्र आत्मा कहाँ चमलेगा? आजकल कचलयुग में ऐसा सहज, सरल सन्त चमलना बहिु कचठन है। उन्होंने त्याग और िपस्या के आदिप अपने पुनिी आिरण-व्यवहार से चदखाये। उनका व्यक्तित्व महान् था, चदव्य था। िेजोमय बदन, उज्वल हासयिु मुख, ज्ञान-योगचनष्ठ, पिोचनष्ठ स्वामी जी को िििीः प्रणाम। अपने भाव इस श्लोक के माध्यम से व्यि करिा हाँ-

सदा हासोज्वलमुखं िेजपुंज कलेवरं।
ज्ञानयोगिपोशनष्ठं प्रिमाशम शिदानन्दम्।।

उपाध्यक्ष , श्रीश्री माँ आनन्दमयी आश्रम
पो. धौल िनिा, अल्मोडा-२६३८८१

संन्यास िैयप पर आधारिि है। संन्यास के कुरुक्षेत्र का वास्तचवक धनुधपर वह है जो जीवन को उसके यथाथप में ग्रहण करिा है, जो संसार की अथपहीनिा से सुपररचिि हो कर चवषयासक्ति के दृढ़ बिनों ंसे ऊपर उठ गया है और जो जीवन के उस मोड पर आ

खडा हुआ है, जहााँ िीव्रिम संघषप से जूझना है। कहना न होगा यह िीव्रिम संघषप स्वयं अपने ही चनम्निर आत्मा के चवरुद्ध है। 'मैं िरीर हाँ', 'मैं मन हाँ', 'मैं बलवान् हाँ', 'मैं सुन्दर िथा बुक्तद्धमान् हाँ', सामान्य जन की िािेना को आच्छाचदि करने वाले इस प्रकार के मन्तव्य िथा अध्यास के अवसादन एवं इनके स्थान पर इस महिी िािेना के प्रचिष्ठापन जैसा दुष्कर कमप इस संसार में अन्य कोई भी नहीं ंहै चक 'मैं यह िरीर नहीं ंहाँ', 'मैं यह मन नहीं ंहाँ', 'मैं सक्तिदानन्द आत्मा हाँ' और 'मैं अगचणि िक्तियों ंका स्वामी, जन्म-मरण का अचिक्रमणकारी, असीम और सवपगि ित्त्व हाँ।' यही है यथाथप िौयप।

-स्वामी शिदानन्द

'न भूिो न भशवष्यशि'

– श्री स्वामी शिवशिदानन्द जी महाराज –

'शिदानन्देन कृष्णेन प्रोिा स्वमुखिोऽजुणनम् ' . . .

श्रीचिदानन्द कृष्ण गीिा उपदेि के माध्यम से अजुपन को बोले थे-

मत्कमणकृि् मत्परमो मद्भिः संगवशजणिः
शनवैरः सवणभूिेषु यः स मामेशि पाण्डव ।।

(भगवद्गीिा : 88/64)

सद्गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज के आदिों को सामने रख कर उनके कायपको, चमिन को अपनािे हुए उनके सामने योग्यिम-महानिम चिष्य स्वामी चिदानन्द जी महाराजने

चदखा चदया-मत्कमप क्ा है? गुरुदेव को कैसे सविो परम सत्ता मानना िाचहए, कैसे भजन करना है? िरराथप रूप में 'संगवचजपि' हो कर 'चनवैर' हो कर चदखाया। एकमात्र अनन्य गुरु-भक्ति का प्रमाण चदखाया, साधक को चवश्व-प्रेम का, गुरुदेव का आदिप चदखाया। उनकी प्रकट लीला पूरी हो गयी, अब अप्रकट लीला का ुभािरम्भ हुआ है।

हमारी श्रद्धांजचल यही है- हम उनसे प्राथपना करिे 8-^ 4 3pi ^ 4 कृपा करें चजससे चक हम आप जैसे -भक्ति-योग-पालन करने वाले हों।ं जैसे आप गुरुदेव के अनन्य, परम चप्रय चिष्य रहे, उस आदिप पर हम सब िलें। गीिा का चनिोड एकादि अध्याय का उपयुपि अक्तन्तम श्लोक के आदिप पर िल कर अपने जीवन को चदव्य बनायें। आप जैसे अचद्विीय सवोत्तम, परम चिष्य **'न भूिो न भशवष्यशि।'**

शदव्य जीवन संघ िाखा, उडीसा

ॐ

भगवद्गीिा व्यावहाररक साधना के उन सभी महत्त्वपूणप पक्षों ंका चववेिन करिी है जो चक अपरोक्षानुभूचि के औपचनषचदक ज्ञान के साक्षात्कार िक ले जािे हैं। साधक को इनका अनुसरण करना िाचहए और गीिा की व्यावहाररक साधना को अपने हृदय में प्रचिचष्ठि करना िाचहए। साधक को सद्गुरु के रूप में प्रकट भगवान् के प्रचि चवनम्र आत्म-समपपण की क्तस्थचि में चनरन्तर रहना है और यचद वह इस प्रकार रहिा है और पूणप वैराग्य के साथ अपनी साधना करिा है िो चफर यचद उसके समक्ष श्रेय और प्रेय का चवकल्प प्रस्तुि चकया जािा है, िब वह प्रत्येक बार प्रेय को अस्वीकार कर श्रेय को ही िुनिा है, िो िभी उसकी साधना फलप्रद होिी है; पर अक्तन्तम सफलिा िो भगवान् के ही हाथों ंमें है। आप सभी गीिोपचदष्ट् जीवन यापन कर परमानन्द को प्राप्त करें।

-स्वामी शिदानन्द

अहंशून्य सन्त

।। श्री स्वाशमनारायिो शवजयिे ।।

पूज्यवर सन्तिूडामचण स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने का समिाार प्राप्त हुआ। वास्तव में इस धरिी पर वे साधुिा एवं अध्यात्म का मूचिपमन्त स्वरूप थे। उनकी अचि पचवत्र आत्मा के चनगपमन से अध्यात्म जगि् का एक महान् सूयप अस्त हुआ है। न केवल अनुयायी चिष्यवृन्द को, अचपिु पूरे जगि् को उनके चदव्य अक्तस्तत्व की आपूचिप कभी नहीं ं हो पायेगी। वे अपने कार्यों द्वारा, अपने चसद्धान्तों ं द्वारा, अपने पचवत्रिम चिष्यमण्डल द्वारा स्वयं को प्रचिभाचसि करिे रहेंगे, यह चनचवपवाद सत्य है। अपने जीवन एवं उपदेिों ं द्वारा उन्होंने जो प्रेरणा दी है, आने वालेयुगों ंिकअनन्तमुमुकुषुओं ंकोअध्यात्मकेप्रकािकीओरगचििीलकरिीरहेगी।

हमें अनेक बार उनके आिीवापद लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनकी अहूंन्यि सन्त-प्रचिभा को चनकट से देख कर उनके सन्तत्व एवं चदव्यानन्द का अनुभव हमें प्रसन्निा से भर देिा था। वे प्रेम एवं चवनम्रिा की मूचिप थे।

अध्यात्म-पथ के एक महारथी की चिर-चवदाई ने वास्तव में पूरे भारि को स्तब्ध कर चदया है।

हमभगवान् स्वाचमनारायण के िरणों ंमें प्राथपना करिे हैं चक वे अपनी गुरु भक्ति िथा अपनीसाधुिाद्वारा हमारे बीि चिरकाल िक चवद्यमान रहें, िाचक हम प्रचिपल उनके कल्याणकारी व्यक्तित्वकेसौरभ का अनुभव करिे रहे। स्वामी जी महाराज की सूमृचियों ंके साथ,

हृदयपूवपक **जय स्वाशमनारायि ।**

स्नेहाधीन, िास्त्री नारायि स्वरूपदास (प्रमुख स्वामी जी महाराज), बीोसनवासी
श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वाशमनारायि संथथा, िाहीबाग रिे, अहमदाबाद-३८०००४ (गुजरिा)

सेवाश्रम के सहायक

चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष, पूजनीय श्रीमि् स्वामी चिदानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के बारे में जान

कर एकाएक चवश्वास नहीं ंहुआ। परन्तु परम चपिा परमेश्वर के द्वारा संिाचलि इस जीवन-क्रि का यह कटु सत्य **उसकी** इच्छा मान कर-हमें न िाहिे हुए भी स्वीकार करना ही पडिा है।

पूजनीय श्रीमि् स्वामी चिदानन्द जी महाराज का रामकृष्ण चमिन से चविेष अनुराग था एवं मठों ंके अध्यक्षों ंसे सदैव ही उनका सम्पकप हेिा रहिा था।

पूजनीय स्वामी जी महाराज का इस सेवाश्रम से सदैव ही चविेष लगाव रहा और समय-समय पर इस सेवाश्रम की आचथपक सहायिा करिे रहे; चजससे इस सेवाश्रम को उत्तराखण्ड के ही

नहीं ◌अचपिु दि के अन्य प्रान्तों ◌से आने वाले साधु-सन्तों,◌ गरीबों ◌एवं लिाार मरीज़ों ◌को चनी:ुिु
चिचकत्सा सहायिा उपलब्ध कराने में बहिु ही बल चमला।

अिौ: मेरी एवं इस सेवाश्रम के सभी सन्त गणों ◌की उस परमचपिा परमेश्वर से यही प्राथपना है चक 'चदव्य जीवन संघ' को उनके द्वारा प्रदत्त मागप-दचिपिा पर अग्रसर होने की ◌िक्ति दें।

स्वामी शनत्युिधानन्द, सशिव, रामकृष्ण शमिन सेवाश्रम, पो. कनखल, हररद्वार

पत्रों ◌द्वारा भावपूणप श्रद्धांजचलयाँ प्रारम्भ।

शवद्वि् शवभूशि

अिायप स्वामी चिवानन्दो चवजयिेराम्

भारि शवभूशि सन्तोमहान्तः ब्रह्मशि सुलीनः महशषणवयणः
स्वामी शिदानन्द ब्रह्मस्वरूपः ◌िरियोमे श्रद्धांजशलः स्यिा्।

चवश्व-चवख्यिा चदव्य जीवन संघ संस्था के संस्थापक सन्त-चिरोमचण योचगराजपूज्यपादस्वामी चिवानन्द जी महाराज के कृपा-पात्र सुयोग्य चिष्य, ◌िपस्त्याग-प्रचिमूचिप, समाजसेवीस्वामीचिदानन्द जी महाराज अपने पंभौचिक ◌िरीर का पररत्याग कर, अपने सक्तिदानन्द स्वरूपब्रह्ममेंलीनहो गये हैं। वे महान् गुरुिथप-चनष्ठ, परोपकारी महापुरुष थे। वे सरलिा, नम्रिाकीप्रचिमूचिप,हम सबके प्ेरेरणास्रोि भी थे। ष्िदिपन भारि साधु समाज के अखाडों,◌ आश्रमों ◌के सन्तों–महन्तों,◌ महामण्डलेश्वरों ◌के भी वे प्रचिचनचध गौरव partial i एवं अध्यात्मवाद भारिीयधमप-संसृ्कचिके परम प्रिारक, चवद्वि् चवभूचि थे। चजनके अभाव की क्षचिपूचिप सवपथा असम्भवहै।वेसदाचिर-स्मरणीय रहेंगे।

'नरदेही नारायण ही' के आदिप को अपना कर उन्होंने कुष्ठ रोचगयों ◌की सेवा में भी ◌िन-मन-धन से अपने को समचपपि रखा। उनके पावन ◌िरण-चिह्नों ◌पर हम ◌िल सकें, यही उनके प्रचि सिी श्रद्धांजचल होगी।

महामण्डलेश्वर ◌िा. स्वामी श्यामसुन्दरदास ◌िास्त्री अध्यक्ष, अच्चखल भारिीय गरीबदासी साधु महापररषद्, हररद्वार, वररष्ठ सशिव, भारि साधु समाज, ◌िाखा हररद्वार

अमूल् सहयोग-प्रदिा

चदनांक २९ अगस्त, २००८ को परम पूज्य श्रदे्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, परमाध्यक्ष, द चिवाइन लाइफ सोसायटी, चिवानन्दनगर, जो बाबा काली कमली वाला पंिायि क्ेषेत्र

की प्रबिकाररणी सचमचि के सम्माननीय सदस्य िले आ रहे हैं, उनके महाप्रयाण पर श्री बाबा जी महाराज की गद्दी पर एक िोक-सभा का आयोजन हुआ, चजसमें क्षेत्र के प्रबिक वगप एवं समस्त
कमपिारी गण के अलावा सन्त-महात्मा गण भी उपक्तस्थि थे। उपक्तस्थि महानुभावों ने पूज्य महाराजश्री
के महाप्रस्थान पर गहरा िोक व्यि चकया।

पूज्य महाराजश्री लम्बे समय से बाबा काली कमली वाला पंचायि क्षेत्र की सेवा करिे आ
रहे थे। पूज्य महाराजश्री ने इस संस्था को जो अमूल्य सहयोग प्रदान चकया वह क्षेत्र के इचिहास में
चिरस्मरणीय रहेगा। पूज्य महाराजश्री के कायपकाल में जो कायप हुए हैं उनसे उनकी कीचिप सदैव
अमर रहेगी।

कृिे बाबा काली कमली वाला पंचायि क्षेत्र के समस्त कमपिारी एवं उपक्तस्थि सज्जन

धमि कंसल, प्रबन्धक
बाबा काली कमली वाला
पंचायि क्षेत्र, क्षेत्र रोि, ऋशषकेि

परम िील सन्त

परम िील सन्त पूज्य स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज ब्रह्मलीन हुए हैं, यह समािार प्राप्त होिे ही एक सम्यग् त्यागी, संन्यास की सिी पररभाषा रूप महापुरुष को निमस्तक हुआ।

चिवानन्द आश्रम, ऋचषकेि में िीन वषप क्रम से श्रीमद्भागवि, श्री रामचररि मानस
और पूज्य स्वामी चिवानन्द जी महाराज के िाब्दी महोत्सव में पुनः एक बार श्रीमद्भागवि जी के
माध्यम से सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। उस समय पूज्य स्वामी जी का स्नेह, धैयप, िप-
त्याग, ज्ञान, चवरक्ति, व्यवहार की िालीनिा आचद अनेक गुणों का दिपन करके प्रभाचवि हुआ।
वह अनुभव मेरे जीवन की चनचध है।

हम समग्र 'सांदीपचन' पररवार-पोरबन्दर, पूज्य स्वामी जी को अपने श्रद्धा सुमन समचपपि
करिे हुए उस चदव्य िेना के प्रचि निमस्तक है।

रमि भाई ओझा
सांदीपशन शवद्याशनकेिन, महशषण सांदीपशन
मागण
रांधावाव, पोरबन्दर (गुजराि)

हमारे मागणदिणक

पूज्यपाद स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने की सूिना पा कर श्री दिपन
महाचवद्यालय टरस्ट पररवार को अत्यचधक आक्तत्मक वेदना हुई है। ब्रह्मलीन स्वामी श्री चिदानन्द जी

महाराज कई वर्षों िक श्री दिपन महाचवद्यालय के अध्यक्ष रहे िथा चवद्यालय को उनकी कृपा की छत्रछाया प्राप्त होिी रही।

चवद्यालय पररवार 'चदव्य जीवन संघ', चिवानन्द आश्रम-पररवार से आिा करिा है चक उनका आत्मीय भाव भी चवद्यालय के प्रचि पूज्य स्वामी जी की ही िरह बना रहेगा। ब्रह्मलीन स्वामी श्री चिदानन्द जी द्वारा स्थाचपि आदिप सदैव हमारा मागपदिपन करिे रहेंगे िथा उनकी कृपापूणप छत्रछाया सदैव हम पर बनी रहे।

भावपूणप श्रद्धांजचल अचपपि करिे हुए-

अध्यक्ष-गोपालिाायण िास्त्री
प्रबन्धक संजय िास्त्री
एवं श्री दिपन महाशवद्यालय टरस्ट और शवद्यालय
पररवार मुशन की रेिी, पो. शिवानन्दनगर (शटहरी गढ़वाल),
ऋशषकेि

आलोकमय जीवन

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की महासमाचध का समािार भाई श्री श्यामलाल (कलकत्ता) के द्वारा प्राप्त हुआ। पूज्य महाराजश्री जैसा श्रेष्ठ व्यक्तित्व का धरिी पर जन्म, ईश्वर की हम सब पर बडी अनुकम्पा है।

हम यह सोि कर अपने को धन्य मानिे हैं िथा गौरवाक्तन्वि हैं चक हमारे पूज्य दादा जी स्वामी श्री हररिरणानन्द जी महाराज (बरसाना) परम पूज्य श्री महाराजश्री के गुरुभाई एवं परमचप्रय साथी-चमत्र थे। इसी कारण उन्हीं ंके माध्यम से महाराजश्री की कृपा हम सबको भी प्राप्त थी। अनेक बार उनके दिपन एवं सत्संग का लाभ चमला।

श्री राधा महारानी के बरसाना धाम में चनवाचसि पूज्य स्वामी हररिरणानन्द जी सरस्विी को भू-समाचध उन्हीं ंकी इच्छा के अनुसार पूज्य महाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी द्वारा ही प्रदान की गयी।

महाराजश्री के महाप्रयाण से हम सब अब उनके दिपन िो नहीं ंकर सकेंगे परन्तु उनका िप एवं जीवन का प्रकाि हमें सदा आलोचकि करिा रहेगा।

परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज की सूमृचियों ंको कोचट-कोचट प्रणाम।

कुंजशबहारी, लिाली प्रसाद, राजेिकुमार
शवजय मेटल इंस्टिरीज, १२३/४३२,
फैक्टरी एररया, कानपुर

शत्रीीगुीी

महान् चवगिसूपृही, चजिात्मा, सन्त-चिरोमचण, जीवनु्मिु, अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक, अनन्त श्री चवभूचषि 'चदव्य जीवन संघ, ऋचषकेि' के परमाध्यक्ष श्री श्री १००८ श्री परम पूज्य सद्गुरुदेव स्वामी चिदानन्द जी महाराज चदनांक २८-८-०८ को अपने नश्वर िरीर से चवमुि हो अपने चिष्यों, भिों और अनुयाचययों को चवलखिे छोड कर अपने आत्मित्त्व को चनत्य ब्रह्मित्त्व में चवलीन करके उस िाश्वि परम पद को प्राप्त हो गये जहाँ पहुँच कर चफर संसार में जन्म-मृत्यु के िक्कर में नहीं आना पडिा। परम पूज्य सद्गुरुदेव स्वामी जी सदैव ब्रह्मानन्द में सराबोर रहिे। वे साक्षाि् ज्ञानमूचिप, गगन सदृि, द्वन्द्विािी, ित्त्वमस्याचद के लक्ष्यों को प्राप्त करने वाले चजज्ञासु, चत्रगुणािीि इत्याचद लक्षणों से चवभूचषि ऐसे सद्गुरुदेव थे। उनकी अध्यक्षिा में आराध्य सद्गुरुदेव परम पूज्य स्वामी चिवानन्द जी महाराज द्वारा स्थाचपि अन्तरापष्ट्रीय संस्था "चदव्य जीवन संघ" ने सभी क्षेत्रों के ईश्वरीय कायों में उत्तरोत्तर वृक्तद्ध की है।

"चदव्य जीवन संघ खुरजा िाखा" िथा "श्री गोपाल संकीिपन मण्डल" के सभी सदस्यों की यह िोक सभा प्राथपना करिी है चक हमारे सद्गुरुदेव परम पूज्य स्वामी जी महाराज अपने चिष्यों, भिों, सेवकों िथा अनुयाचययों पर अपने आिीवापद और सत्कृपा की वषाप सदैव करिे रहें।

लक्ष्मी गौम, अध्यक्ष, शदव्य जीवन संघ खुरजा िाखा मधुवन, खुरजा (उत्तर प्रदेि)

सत्प्रेरक स्वामी जी

चदव्य जीवन संघ, ऋचषकेि (हररद्वार) के परम पूज्य िपस्वी स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज ब्रह्मलीन हुए, इस समािार से हमें सन्तों को बडा दुःख पहुँिा।

ब्रह्मलीन परम पूज्य स्वामी श्री चिवानन्द जी महाराज ने चदव्य जीवन संघ को साकार चकया, चवकास चकया और आश्रम के माध्यम से लोकोपयोगी कायप चकये।

ब्रह्मलीन परम पूज्य स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज ने उसी परम्परा का चनवापह चकया। भारिीय धमप, संस्कृचि, मानवािा के चलए आपने चवश्व में पररभ्रमण चकया।

आपका सन्त-जीवन प्रेरणादायी, चनमपल और सबको मागपदिपन कराने वाला रहा। चदव्य जीवन संघ की कई िाखाएँ उपदेि-ध्यान-योग के कायपक्रम से िथा आध्याक्तत्मक साचहत्य के माध्यम से, जन-जीवन को सत्प्रेरणा दे रही है।

श्री श्री माँ आनन्दमयी का श्री सन्तराम मक्तन्दर, नीिाद में संयम सप्ताह सम्पन्न हुआ था। उस अवसर पर अनेक चवद्वान् सन्त मण्डली में आप यहाँ पधारे थे, आपके सदुपदेि से भिवृन्द लाभाक्तन्वि हुआ था। उसका स्मरण सदा रहेगा।

ॐनमो नारायणाय !

रामदास
महंि, श्री सन्तराम मच्चन्दर
नीिआद (गुजरिा)

अिीवाणद व स्नेह सदा स्मरणीय रहेगा

परम पूज्य स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज (परमाध्यक्ष, चदव्य जीवन संघ, चिवानन्द आश्रम) के ब्रह्मलीन होने पर ज्योचि चवकलांग चवद्यालय पररवार हाचदपक ोक व्यि करिा है। श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने से चवद्यालय को जो क्षचि हुई है उसे पूरा नहीं चकया जा सकिा है। चवद्यालय पररवार उनके अिीवापद व स्नेह को हमेिा याद करिा रहेगा।

समस्त शवद्यालय पररवार ज्योशि शवेष शवद्यालय ऋशषकेि

अध्यात्म-जगि् के प्रेरक

परमपूज्यस्वामीचिदानन्दजीमहाराजकीमहासमाचधके बारे मेंजानकरहमसभी चिचकि रह गये।

परमपूज्यस्वामीजीमहाराजनेचिवानन्दआश्रमिथाअध्यात्म-जगि्कीलम्बेसमय िक"मनसा-वािा-कमपणा"सेवाकी।अध्यात्म-जगि्सदैवउनकाऋणीरहेगा।उनकीबहुिसी पुस्तकेंचदव्यजीवनसंघद्वाराप्रकाचििहुईहैं।सभीकृचियाँप्रेरणाथाआनन्दकीस्रोिहैं। 'BLISSISWITHIN'उनकीसवपश्रेष्ठदेनहै,चजससेसमूपूणपअध्यात्म-जगि्प्रेरणापािारहेगा। स्वामी जी "आत्मा की अमरिा" के बारे में बार-बार कहा करिे थे-

अजो शनत्यः िाश्विोऽयं पुराणो-
न हन्यिे हन्यमाने िरीरे ।।

(भगवद्गीिा : २/२०)

अथापि् यह आत्मा अजन्मा, चनत्य, िाश्वि िथा पुरािन है, िरीर के नाि होने पर यह नाि नहीं होिा है।

परम पूज्य स्वामी जी महाराज आज भौचिक रूप से हमारे बीि नहीं हैं परन्तु उनके चदव्य उपदेिों द्वारा साधकों-भिों िथा उनके चप्रय जनों का उनसे "चदव्य गहनिम सम्बन्ध" हमेिा रहेगा क्योंचक सद्गुरु का चनवास उनके उपदेिों में है। उन्हीं के िब्दों में-

"जब हम गुरु के उपदेिों के अनुसार जीवन जीिे हैं िो हमारा गुरु के साथ गहनिम सम्बन्ध होिा है।" परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज हमेिा हमारे साथ हैं। उनका चनवास उनके उपदेिों में, अनुभवों िथा अपरोक्ष-अनुभूचि में है।

हमारा सभी का, "िपोचनष्ठ, ब्रह्मचनष्ठ, सत्यचनष्ठ िथा सत्यमूचिप" परम पूजनीय स्वामी चिदानन्द जी महाराज को, कोचट-कोचट प्रणाम।

उनकी पुण्य सृमृचियों ंमें िूबे -पररवार के सभी सदस्य एवं चमत्र गण

िी. सी. मेहरु सीशन. शिवी. एकाउंट्स आफीसर (ररटायिण) जमालपुर, लुशधयाना

कृपालु सन्त

महायोगी स्वामी चिदानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने की खबर चमली। हमारे चवद्यालय पर उनकी चविेष कृपा थी। यहाँ अध्यापक गण व चवद्यालय के छात्र-छात्राओं ंने ईश्वर से मौन रूप में सश्रद्धा प्राथपना की।

मदिे िमाण-कमला िमाण
ऋशष वैली एकिमी, िास्त्री नगर, ऋशषकेि

हमारे इष्ट्देव

हमारे प्रािीःस्मरणीय इष्ट्देव, चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष परम सन्त स्वामी चिदानन्द सरस्विी महाराज के अन्तधापन हो जाने से हम आँखें फाड-फाड कर देख रहे हैं चक हमारे स्वामी जी सदा-सदा के चलए आँखों ंसे ओझल हो गये।

जैसे पानी का बहाव गंगा के बाँधों ंको िोड कर जल में रहने वाले मछली आचद जीवों ंको वहीं ंछोड कर आगे

लि दिा है वैसे ही हमसे नािा िोड कर हमारे सब्र का बाँध िोड कर श्री स्वामी चिदानन्द सरस्विी जी िल चदये।

हमें इसी बाि का िोक है चक प्रािीःकाल भोर में ही आप गंगा जी की लहरों ंमें चवलीन हो गये; हम अक्तन्तम दिपन भी नहीं ंकर पाये। इसका अफसोस हमें आजीवन सालिा रहेगा।

स्वजनों ंको देखिे ही हमारा दुीःख उमड आिा है; जैसे नचदयाँ गमी में सूयप की चकरणों ं को अपना जल चपला कर चछछली हो जािी हैं; वषाप का जल आने पर उन्हीं ंनचदयों ंमें चफर बाढ़ आ जािी है।

आपके चवयोग में चदव्य जीवन संघ के उत्तराचधकारी एवं समस्त स्वामी गण, चदव्य जीवन संघ को श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज व स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चदव्य कायपकलापों ंसे हमेिा हरा-भरा रखेंगे। हमारा िन, मन, धन का सहयोग चदव्य जीवन संघ के साथ सदा-सवपदा सुलभ रहेगा। ॐ िाक्तन्तीः ॐ िाक्तन्तीः ॐ िाक्तन्तीः

िा. लक्ष्मीन्द िाखी वैशदक िोध संथथान पररवार कण्वाश्रम, ऋशषकेि/कोटद्वार

अध्यिा-पथ-प्रदिणक

परम पूजनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की महासमाचध का समिाार प्राप्त हुआ। यद्यचप उनका भौचिक िरीर आज हमारे मध्य नहीं ंहै, परनुतु उनकी सूमृचि हम सभी के हृदय में सदैव बनी रहेगी, और हम सभी उनके द्वारा बिाये गये आध्यात्तत्मक मागप का अनुसरण करिे रहेंगे। यही हम सबकी उनके प्रचि सिी अशुरुपूररि श्रद्धांजचल होगी।

आिा शवष्ट, प्रधानािायाण श्री सत्य साई सूकूल िपोवन, शजला शटहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

पोमूशिण

पूज्यपाद गुरुदेव श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के अन्तधापन होने से उनके प्रत्यक्ष दिपन से हम बंचिि हो गये। िपोमूचिप पूज्यपाद चिदानन्द जी महाराज का चनत्य प्रसन्न व्यक्तित्व उनकी प्रभुस्वरूप में लयलीनिा को अचभव्यि करिा था।

िाखिसम्मि जीवनिैली, सवप जन के प्रचि चनीःस्वाथप प्रेम, गुरु-भक्ति, जीवन-साफल्य का बोध देिी उनकी प्रेरेरिि परावाणी और उनके द्वारा हुए सेवा कायों के माध्यम से हमें उन्नि जीवन के चदिा-चनदेि प्राप्त होिे रहेंगे। स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज की चदव्यिा का प्रभाव अध्यात्म-मागप के साधकों ंके हृदय पर छाया रहेगा।

पूज्यपाद स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज ने बरसों ंपूवप 'हररधाम, सोखिा' को अपने श्रीिरणों ंसे पावन चकया था। ऋचषकेि की यात्राओं ंके दौरान भी उनके दिपन का अवसर प्राप्त हुआ था। पूज्यपाद स्वामी जी ने अध्यात्म-मागप के साधकों ंके चलए एक आदिप का चनमापण चकया है। उनके चदव्य आिीवापद हम सभी पर बरसिे रहें, ऐसी प्रभु से प्राथपना है।

सेवक साधु हररप्रसाद स्वामी योगी शिवाइन सोसायटी
हररधाम, पो. सोखिा, जनपद विोदरा, गुजराि

अपूरीय क्षशि

परम श्रद्धेय स्वामी चिदानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने से आध्यात्तत्मक एवं सामाचजक जगि् में अपूरणीय क्षचि हुई है, चजसकी पूचिप करना असम्भव है।

गम्भीर शसंह मेवाड, सशिव एवं जनसम्पकण अशधकारी

अिो प्रकिा आश्रम, गिरिमािा पीठ, मायाकुण्ड, ऋशषकिे

जन-जन के शहिैषी

प्रािः स्मरणीय, अनन्त चवभूचि, परम पूज्य सन्त स्वामी श्री श्री चिदानन्द जी सरस्विी महाराज के महाचनवापण का समािार पा कर मन अत्यन्त क्लान्त हुआ।... ईश्वर के इस चनयम को प्रत्येक मनुष्य को स्वीकार करना ही पडिा है।

परम पूज्य के जन-चहिैषी कायों एवं सदुपदेिों का हम दिां भी आत्मसाि् कर जीवन में उपयोग कर सकें िो यही सबसे बडी श्रद्धांजचल उन महापुरुष के प्रचि होगी।

जीवन में मात्र एक बार उनसे चमल कर आिीवापद लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था;... चसर पर उनके आिीष - स्पिप का अलौचकक एहसास आज भी मुझे रोमांचिि करिा है।

िचमिि िमाण, शित्रकार कलांगन, ज्वालापुर (हररद्वार)

अपार कृपा के स्वरूप

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ब्रह्मलीन हो गये-जान कर मन को आक्रान्ि हुई। हमारे पररवार पर उनकी अपार कृपा थी। उन्होंने हमारे एक प्रचिष्ठान में "हररद्वार चप्रंचटंग एण्ड एलाइड इन्डस्टरीज" की फाउन्डेिन लगभग ३० वषों पूवप रखी थी जो अब "चिवानन्द पेपर कन्वरचटंग इंस्टिरीज" के नाम से िल रही है िथा बडे स्वामी जी, परम पूज्य श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के नाम से कापी व स्टेिनरी का उत्पादन कर रही है।

मैं अपने पररवार की ओर से परम पूज्य स्वामी जी को िरणवन्दना व श्रद्धासुमन अचपपि करिा हूँ।

अवधेि भागणव, भागणव ब्रदसण, हररद्वार

सन्तों के शप्रय

पूज्य गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज एवं सन्तों के चप्रय परम श्रद्धेय सन्त चिरोमचण श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के महासमाचध का समािार सुन कर हम सब उनकी अक्तन्तम चवदाई से दुःखी हैं। पूज्य स्वामी जी का, िा. श्री चिवानन्द अध्वयुप जी (वीर नगर, सौराष्ट्र) जब थे, िब दिपन-वाणी लाभ चमला था। सन् १९५५ में बडे स्वामी जी महाराज भी थे। ४० चदन चिवानन्द आश्रम, ऋचषकेि में उस समय की स्वामी चिदानन्द जी के साथ की सूमृचि याद आिी है। पूज्य स्वामी जी की समाचध पर हमारा ॐ नमो नारायणाय ।

मनसुख भाई स्वामी, धाशमणक पत्रकार

भाशटयावाड-पाटन (उत्तर गुजरिा)

श्रीमद्भगवद्गीिा में वेदों ्के ज्ञान का सारित्त्व पाया जािा है। चजसने गीिा को जान चलया, उसने वेदों ्के सारित्त्व को भी जान चलया। हमें भगवद्गीिा का ज्ञान प्राप्त करना ाचहिए; क्ोंचंक िब हम आत्मज्ञान प्राप्त कर लेंगे िथा यह भी जान लेंगे चक दैवी आदेिों ् का पालन करने का सङ्कल्प ले कर भगवचदच्छा का आदर करिे हुए चकस प्रकार आत्मचवश्वास समाप्त हो जाने की उदासी और नैराश्य की क़्स्थचियों ्का सामना चकया जा सकिा है। िब हम अपनी आसक्तियों,् चवभ्रमों ्और चनरुत्साह पर चवजय प्राप्त करके आत्म-संस्कार िथा आत्म-संयम के कायों में रि हो जाने की कला भी सीख लेंगे।

-स्वामी शिदानन्द

दीनबनुधु

चवश्वचवख्याि सन्त, त्याग व िपस्या के प्रिीक, चिवानन्द आश्रम, ऋचषकेि के परमाध्यक्ष पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज का ब्रह्मलीन होना, आध्याक्तत्मक समाज की अपूरणीय क्षचि है। पूज्यवर स्वामी जी सादगी एवं गुरु-समपपण की मूचिप, अपने गुरुदेव पूज्यवर श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के चदव्य सन्देि-सदुपदेि के प्रिाराथप दे़ि-चवदेि में भ्रमण करिे रहे। दीनों,् गरीबों,् कुष्ठ रोचगयों ्की सेवा-सुशूरूषा में चनरन्तर लगे रहे। पदचलप्सा से चनरन्तर दूर रहे। वे चवनम्रिा की प्रचिमूचिप थे।

भारिीय जनिा पाटी, लक्ष्मणझूला, स्वगापश्रम मण्डल की ओर से उनके श्री िरणों ्में चवनम्र श्रद्धांजचल।

भानुशमत्र िमाण मण्डल अध्यक्ष लक्ष्मिझूला, स्वगाणश्रम मण्डल

पीशडि मानविा के सेवक

परमपूज्यस्वामी चिदानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने का समािार ज्ञाि हुआ। परम पूज्यश्रीस्वामीचिवानन्द जी महाराज के पश्चाि् परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज चदव्य जीवनसंघकेसाधक-साचधकाओं ्का चजस िरह संबल बने िथा उनके द्वारा सौंपें गये दाचयत्व का चनवपहनचकयावहवास्तव में अभूिपूवप ही था।

पूज्य स्वामी जी महाराज ने आश्रम के अस्पिाल में दीन-दुीःखी, अनेक वृद्ध जनों, ं साधु-सन्तों ंिथा पीचडि मानविा की जो सेवा की उससे समूपूणप मानव जाचि उनकी ऋणी है।

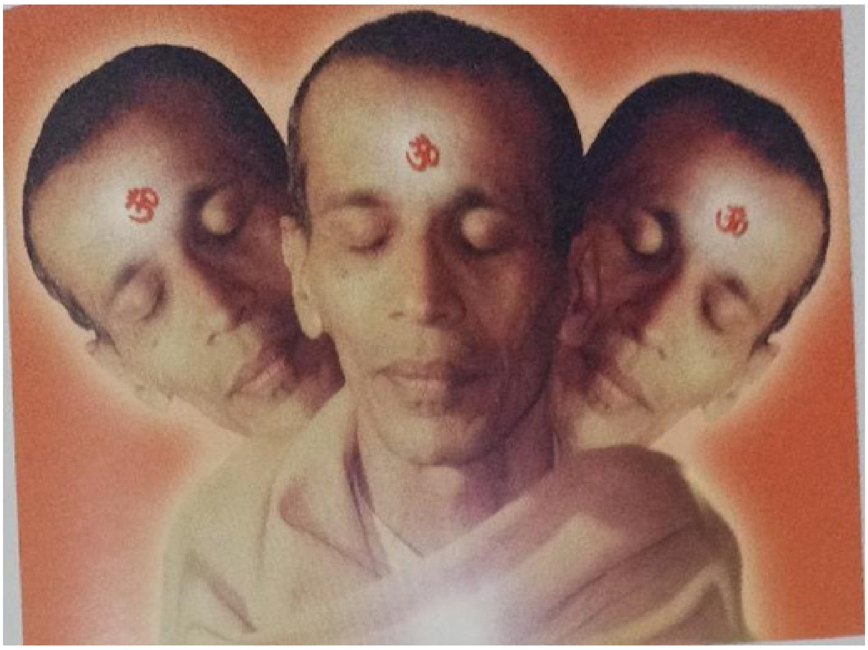
आज समूपूणप चवश्व को परम पूज्य स्वामी जी महाराज के चविार दिपन की चनिान्त आवश्यकिा है।

अभय उपाध्याय द्वारा. श्री िूरवीर शसंह िौहान शनगम रिो, सेलाकुई देहरादून

ॐ नमः शिदानन्दायगुरवेसच्चिदानन्दमूणये।
शनष्प्रपंिाय िान्तायशमरालम्बाय िेजसे।।

ॐ

स्वामी चिदानन्द जी महाराज जो कुछ भी कहिे थे, उसे पहले अपने जीवन में उिारिे थे। एक सज्जन ने स्वामी जी के चवषय में ठीक ही कहा था, "यह यचि अपनी
मान्यिाओं ंका प्रिार करने के बजाय उन्हें अपने जीवन में उिारना अचधक पसन्द करिा
है।" िभी स्वामी जी की वाणी में इिनी ओजक्तस्विा थी। उनकी वाणी हृदय के अन्तीःस्थल
को स्पिप करिी थी। उनके अनुभवचसद्ध ओजस्वी उपदेिों ंसे लोगों ंके जीवन में क्राक्तन्तकारी
पररविपन आिा था और चदव्य जीवन की प्राक्तप्त सहजिा से होिी थी।



ुिथिप प्रकिा

ॐ

मेरा सि्- िशि्-आनन्द रूप

मेरा सि्-चिि्-आनन्दरूप,कोई-कोईजानेरे ,
दैि्वै विन कामैंहाँस्रष्टा,मन-वाणीकामैंहाँद्रष्टा।
मैं हाँ साचक्षस्वरूप,कोई-कोईजानेरे...।।१।।

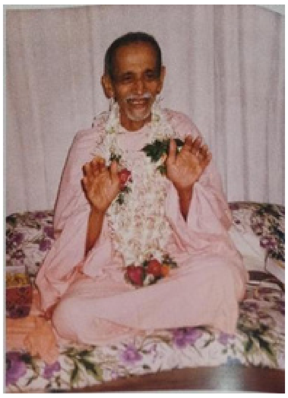
पंकोिष से मैं हाँ न्यारा, िीन अवस्थाओं ं से भी न्यारा।
अनुभव चसद्ध अनूप, कोई-कोई जाने रे... ।।२।।

सूयप ि में िजहैमेरा,अचिमेंभीओजहैमेरा।
मैं अदैि्विस्वरूप,कोई-कोईजानेरे...।।३।।

जन्म-मरण मेरे धमप नहीं ं हैं, पाप-पुण्य मेरे कमप नहीं ं हैं।
अज चनलेपरूप,कोई-कोईजानेरे...।।४।।

िीनि लोक का मैं हाँ स्वामी,घट-घटव्यापीअन्तयापमी।
ज्यों ंमाला में सिू, कोई-कोईजानेरे...।।५।।

सत्संगी चनजरूपपचहिानो,जीव-ब्रह्मकाभेदनमानो।
ू हैं ब्रह्मस्वरूप, कोई-कोई जाने रे...।।६।।



संर्ि ◌ंकी अनुभूशियाँ और भिों ◌ंके भावोद्गार

ॐ

संर्ि ◌ंने अचभव्यि की हैं स्व-अनुभूचियाँ,
यह कहा चक वह है अचभव्यक्ति-र्िंअौ ।

भिों ◌ंके भावोद्गार चहय में उमड-घुमड रहे
पर प्रवाचहि होने का पथ नचहं वो पा रहे|

'ब्रह्म ही है एकमेव सि्, सब नाम-रूप हैं चमथ्या, असि् ।
चकनुतु पा सकिे हैं आप वह अमरिा गुरु-अनुकम्पा में, गुरु-अिीवापद में
।'

- स्वामी शिवानन्द

मेरी सुखद अनुभूशियाँ

– परम पावन श्री स्वामी शवमलानन्द जी महाराज, परमाध्यक्ष –

चकसी सन्त या दिव्य-मानव के सम्बि में कुछ समझ सकि हैं। दिव्य-मानव को समझने के चलए व्यचक को उसी की ऊँचाई िक पहुँचना पांढ़ेगा, केवल िभी वह उसे समझ सकिा है।
स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चवषय में कुछ चलखना सरल नहीं ंहै। गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज के अपने बिों ंमें स्वामी चवदानन्द जन्म से ही चसद्ध थे। केवल गुरुदेव उन्हें समन सके
थे। मेरा सौभाग्य है चक मुझे लगभग ५० वषप उनके साथ, उनके साचनध्य में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ; अिः मेरे उनके सम्बि में जो चविार हैं उन्हें आपके साथ बाँटने का मैं चवनम्र प्रयास
करूँगा। १९५३ में, जब मेरा उससे पररिय भी नहीं ंथा, मुझे उनकी महानिा देखने का अवसर चमला। यहाँ में श्रद्धेय स्वामी चिदानन्द जी महाराज िथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के प्रथम दिपन की घटना का वणपन करना िाहूँगा।

मैं चदसम्बर १९५३ में हररद्वार पहुँिा। मेरे चलए सब-कुछ नया था। मौसम, भोजन, लोग, भाषा और बािावरण-वास्तव में सबसे ही पूरी िरह अपररचिि था। चहमालय की ओर आने से पहले मैंने सुना हुआ था चक वह ऐसी गुहाओं ंसे भरपूर है चजनमें साधु महात्मा रहिे हैं जो गहन िपस्या में लीन रहिे हैं, और केवल कन्द-मूल और फलों ंपर ही जीवन यापन करिे हैं। चहमालय पवपि के सम्बि में मेरी ऐसी ही धारणा थी।

चहमालय में घूमने के बाद मुझे अिानक ही एक मानव-चनचमपि गुहा चमल गयी जो आश्रम के चनकट ही थी। यह भगवान् से प्राप्त हुआ ऐसा उपहार था जो वषाप और िीव्र हवाओं ंसे मेरी रक्षा करने वाला था। भगवान् का धन्यवाद करिे हुए मैंने इसमें रहना आरम्भ कर चदया। उन चदनों ं आश्रम में आवास की सुचवधा बहुि ही आय एटा।

आश्रम में पहुँचने के श्री आश्रम के महासचिव थे। १९५३ में प्रथम दिपन के समय ही मुझे आभास हुआ चक वे दिव्य-मानव है। उसी चदन स्वामी जी कृपापूवपक आश्रम-कायापलय में ले गये और वहाँ परम पूज्य सदगुरदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज से पररिय करवाया।

सद्गुरुदेव ने मेरी ओर घूम कर देखा और बोले, यहीं ंरही और चिदानन्द जी की सेवा करो। आपको सब सब-कुछ प्राप्त हो जायेगा। मैंने उन विनों ंको चनभाया और उनके जीवन के अक्तन्तम चदवस िक उनके पास रहा।
लगभग ५० वषप िक में पूज्य स्वामी जी महाराज के साथ रहा और इस दीघपकालीन अवचध के अन्तगपि मैंने देखा चक उन्होंने न केवल मुझे ही प्रभाचवि करके पररवचिपि चकया है, बक्ति बहुि ही कम समय में समस्त भारिवषप के और चवश्व भर के लोगों ंको भी प्रभाचवि करके रूपान्तररि कर चदया है। इिने दीघपकाल के चनकट सम्पकप में रहिे हुए मैंने हर क्षण ऐसा ही अनुभव चकया है।

सद्गुरुदेव ने हमसे यह बाि बहुि बार कही है चक स्वामी चिदानन्द जी जन्मजाि चसद्ध है। अपनी आरक्तम्भक अवस्था में ही वे महान् प्रचिभा सम्पन्न थे। क्योंचक वह अत्यचधक चवनम्र थे और उनकी जीवन-प्रणाली सरल थी, अिः यह सबको सहज-सुलभ थे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ वह अत्यन्त सहजिा से और अपनत्व से चमलिे थे। उनके चलए कोई भी पराया नहीं ंथा।

गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज की चवचिष्ट चिष्य-मण्डली में से स्वामी जी एक चवलक्षण िथा अचद्वीय चवभूचि हैं। वे वास्तचवक अथों में एक सन्त थे। सन्तत्व का पूरा मूल्य िुकाये

चबना सन्त बनना सम्भव नहीं ़है। और वह मूल्य क्ा है? मूल्य है कठोर िपस्या! ऐसा भी समय हिोा था जब खाने को कुछ भी नहीं ़हिोा था, गमप कपडे नहीं ़और कडाके की सदी; और उसके ऊपर कठोर िपस्या। इन सबका स्वामी जी ने आश्रम में अपने आरक्तम्भक चदनों ़में सामना चकया। वे चवद्वान् थे। उनकी यह चवद्वत्ता केवल लौचकक चवद्या िक सीचमि नहीं ़ थी। लौचकक चवद्याएँ िो दूसरे स्थान पर थीं;़ बक्ति लौचकक चवद्याओं ़ को भी उन्ोंनें आध्याक्तत्मकिा में पररवचिपि कर
चदया। उनके प्रविन प्ेरेरणाप्रद और प्रबोधक थे िथा गहन चवद्वत्ता से ओि-प्रोि थे।

स्वामी जी महाराज स्वयं को अत्यचधक व्यस्त रखिे थे। अपने जीवन का एक क्षण उन्ोंनें व्यथप नहीं ़गँवाया। स्वामी जी सदैव दूसरों ़की सेवा में लगे रहे। गुरुदेव की चिक्षाओं ़को उन्ोंनें यथावि् अपने जीवन में उिार चलया था। यही कारण है चक वह गुरुदेव चिवानन्द के ज्ञान के दीपक का प्रकाि चवश्व के हर कोने िक ले जा सके। हर स्थान पर उन्ोंनें सहस्रों ़को प्ेरेररि चकया। बहुि बार गुरुदेव उन्ें अपने स्थान पर बोलने के चलए भेज देिे थे, और हर बार ही लोग उन्ें ऐसा पररपूणप प्रचिचनचध भेजने के चलए धन्यवाद के पत्र चलखा करिे थे। जहााँ-जहााँ भी वह गये, प्रत्ेयेक स्थान पर लोगों ़ने एकमि से उन्ें एक सन्त के रूप में ही स्वीकार चकया।

उन्ोंनें अपना सारा जीवन मानविा की, और चविेष रूप से कष्ट-पीचडि मानविा की सेवा में लगा चदया। चजस समय देि में कुष्ठरोचगयों ़को अत्यचधक घृचणि और त्याज्य माना जािा था, उस समय उन्ोंनें उत्तराखण्ड में अकथनीय सेवा की। बेघरबार कुष्ठरोचगयों ़के चलए आवासीय सुचवधा िथा 'चिवानन्द होम' की अवधारणा िथा उसकी संस्थापना का सूत्रपाि उन्ोंनें ही चकया। कोई भी रोगग्रस्त, लािार अथवा पीचडि व्यक्ति उनकी चविेष दयादृचष्ट् का पात्र था।

गुरुदेव की 'चवश्व-प्राथपना' की वह जीवन्त प्रचिमूचिप थे। उन्ोंनें हर स्थान पर और सबमें भगवान् को ही देखा। दूसरों ़की सेवा करिे समय वह उनमें भगवान् के दिपन करिे थे।

जो श्री रामकृष्ण परमहंस के चलए स्वामी चववेकानन्द जी थे, वही स्वामी जी सद्गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज के चलए थे।

सद्गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज िथा स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आिीवापद आप सभी पाठकों ़पर हों!़

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

ॐ

श्री स्वामी चिदानन्द जी अपने चदव्य स्वरूप में चनत्य चनवास करिे है िथा समूपूणप चवश्व को उसी ित्त्व से आवृि देखिे हैं। उनका जीवन इस सत्य पर आधाररि है चक यह समस्त जगि् ईश्वर से व्याप्त है। अपने प्रत्ेयेक कमप द्वारा वह मानव जाचि को यह चिक्षा देिे हैं चक यह संसार भगवान् का ही प्रकटीकरण है िथा चदव्य ित्त्व से ओिप्रोि है। यही वह रहस्य है चजसे वह अपने आिरण िथा उपदेि द्वारा प्रकट करिे हैं।

एक आदिण गुरु

परम पावन स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज,

–

उपाध्यक्ष/न्यासी-

महाभारि की कहानी पढ़ने के बाद मुझे पिा िला चक पाण्डव अपने जीवन के अक्तन्तम चदनों ंमें चहमालय पर िले गये थे, वहााँ से उन्होंनें स्वगापरोहण चकया। मेरे मन में चविार आया चक क्ा मैं चहमालय नहीं ंजा सकिा। जा सकिा हााँ, वहााँ पहुाँिने पर मैं स्वगप में जा सकूाँगा। उस 'देवभूचम' के दिपन करूाँगा िथा वहााँ देविा, योगी, सन्त और ऋचष-मुचनयों–महात्माओं ंके दिपन करूाँगा! चकसी को भी बिाये चबना, रास्ते में कुछ भी खाये-चपये चबना, मद्रास से िार चदनों ंकी रेलगाडी की यात्रा करके देहली और चफर ऋचषकेि से्टिन पर पहुाँिा। मेरा चविार था चक यहीं ंसे चहमालय पवपि िुरू हो जािा है। चकन्तु जैसी मैंने कल्पना की थी, वैसे न िो चहमाच्छाचदि पवप-चिखर चदखायी चदये न ही वनिरों ंसे भरपूर सघन वनों ंके कहीं ंदिपन हुए! चफर मुझे एक स्वामी चिवानन्द जी का ध्यान आया जो चक चहमालय के एक सुप्रचसद्ध योगी-सन्त हैं और ऋचषकेि में ही रहिे हैं, चजनके पास मेरा एक चमत्र, सेना की नौकरी छोड कर, संन्यास ले कर उन्हीं ंके पास चिवानन्द आश्रम में रह रहा है। ऋचषकेि के से्टिन मास्टर से मैंने चिवानन्द आश्रम पहुाँिने का मागप पूछा।

गुरुदेव कुटीर के एकदम सामने अचिचथगृह था, वहााँ मुझे स्वामी दयानन्द जी चमले, उन्होंनें बिाया चक मेरे चमत्र के नाम वाला कोई व्यक्ति आश्रम में नहीं ंहै; और उन्होंनें मुझे इिनी लम्बी दचक्षण भारि से यहााँ िक की यात्रा करके आने के कारण कुछ चदन यहीं ंरुकने के चलए कहा। अिः मैंने दस चदन रुकने का चविार बना चलया। अपराह्न में मेरा पररिय परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज और परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से करवाया गया। स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज मेरी स्वगप की और चहमालय की कल्पना सुन कर हाँसे और उन्होंनें मुझे यहीं ंरुक कर पत्र-व्यवहार के कायप में उनकी सहायिा करने को कहा।

समय िीघ्रिा से बीिने लगा। आश्रम में मेरे आवास के सम्बि में कई कचठनाइयााँ आयीं।ं परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने मेरी अत्यचधक सहायिा की, चनदेि चदये और गंगािट पर ही चनवास करने का आदेि चदया; क्ोंचक आध्याक्तत्मक उन्नचि के चलए, उनके अनुसार, यह आदिप स्थान था। सेवा के साथ-साथ, मैंने साधना के एक अंग के रूप में, गुरुदेव की पुस्तकें पढ़नी आरम्भ कर दीं।ं िब मुझे अपनी योग-साधना में कुछ समस्याओं ंका अनुभव हुआ और मुझे व्यक्तिगि चनदेि प्राप्त करने िथा चकसी वररष्ठ स्वामी जी से बाि करने की

आवश्यकिा अनुभव हुई। श्रद्धेया श्री स्वामी हृदयानन्द मािा जी, जो चिवानन्द आश्रम में उन चदनों ‌ाक्टिर मािा जी के नाम से जानी जािी थी, भगवद्गीिा पर प्रविन चदया करिी थीं।‌ मैं भगवद्गीिा पढ़िा था ‌िथा उनसे बहुि से प्रश्न पूछा करिा था।

मैंने पूज्य मािा जी को अपनी ‌िंकाएँ बिायी ‌िथा यह भी बिाया चक योग-साधना में कई प्रश्न भी पूछने हैं, अिः मुझे चकसी अनुभवी वररष्ठ स्वामी जी से व्यक्तिगि रूप में चनदेिन लेने की आवश्यकिा अनुभव हो रही है। ‌ाक्टर मािा जी ने पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज से मेरे सम्बि में बाि करके मेरे संियों ‌ंका समाधान करने के चलए कुछ समय चनकालने की प्राथपना की। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने कृपापूवपक प्रत्येक रचववार की सायं ७.३० से ८.३० ‌िक का मुझे समय दे चदया। मैंने गुरुदेव की पुस्तक 'साइंस ऑफ प्राणायाम' (प्राणायाम का चवज्ञान) पढ़ी थी और स्वयं ही उसके अनुसार घण्टों ‌ं‌िक प्राणायाम और ध्यान के चलए बैठिा था; चकन्तु ऐसा करने से मुझे कई समस्याओं ‌ंका सामना करना पड रहा था। मैंने अपनी आध्याक्तत्मक समस्याएँ स्वामी जी महाराज को बिायी ‌िो उन्होंने अत्यन्त धैयपूवपक, ध्यान से, मानो उनकी अपनी ही समस्याएँ हों,‌ं ऐसे सुना और एक-एक करके सबके समाधान के चलए चनदेिन चदये। स्वामी जी ने कहा चक मुझे आध्याक्तत्मक पथ पर ‌िंकारचहि उन्नचि करने के चलए 'पााँि ग' का पालन अवश्य करिे रहना िाचहए, वह हैं-गीिा का चनयचमि अध्ययन, गंगा का दिपन, प्रािः-सायं चनयमपूवपक गायत्री मंि का जप, गोचवन्द पर ध्यान और पााँिवााँ गुरु-सेवा। स्वामी जी ने बल देिे हुए कहा चक साधक के जीवन में छठे 'ग' अथापि् गप्पबाजी के चलए कोई स्थान नहीं ‌ंहै। मैं अत्यन्त चनयमपूवपक स्वामी जी के चनदेिनों ‌ंका पालन करिा था ‌िथा प्रत्येक सप्ताह गि सप्ताह बिायी बािों ‌ंको दोहरािा था।

स्वामी जी महाराज ने कहा चक साधक को अपने जीवन में सदैव राम-भि हनुमान् के उदात्त गुणों ‌ंको आदिप मान कर ‌िलना ‌ाचहए और उन्हें अपने जीवन में उिारने का प्रयास करिे रहना ‌ाचहए। स्वामी जी ने मुझे बाल्मीचक रामायण, महाभारि, भगवद्गीिा, चववेकिूड़ामचण ‌िथा पिंजल योगसूत्रों ‌ंके थोडे-थोडे अंिों ‌ंका चनत्य स्वाध्याय करने ‌िथा उन पर मनन करिे हुए सदैव सकारात्मक चिन्तन करने का उपदेि चदया, चजससे चक मन को अन्य चकसी भी नकारात्मक चविार का चिन्तन करने का समय ही न चमले। सन् १९६६ में स्वामी जी ने कुछ ‌ियचनि अन्तेवाचसयों ‌ंके समूह को पढ़ाना आरम्भ चकया था और उस कक्षा में भाग लेने की मुझे भी आज्ञा चमल गयी थी। स्वामी जी 'द इम्मीटेिन ऑफ़ क्राइस्ट' (थॉमस ए. कैक्तम्पस चवरचिि) पुस्तक पढ़ा करिे थे। उसमें से कई अंिों ‌ंकी व्याख्या करिे हुए स्वामी जी महाराज ने बिाया चक कैसे व्यक्ति इन्हें अपने दैचनक जीवन में लागू कर सकिा है।

१९७३ में 'लाल बहादुर ‌िास्त्री नेिनल एकेिमी ऑफ एिचमचनस्टेरिन, गवनपमेंट ऑफ इंचिया, मसूरी' से एक प्राथपना-पत्र, वहााँ योग-प्रचिक्षक भेजने के चलए आया। स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ने मुझे वह पत्र पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज को देने और उसका उत्तर ले कर आने के चलए भेजा। मुझे पिा नहीं ‌ंथा; चकन्तु उन्होंने पहले ही कोकणी भाषा में परस्पर बाि कर ली थी और मेरे आश्चयप का चठकाना नहीं ‌ंरहा जब पत्र ले कर पहुाँिने पर स्वामी जी महाराज ने मुझे मसूरी जाने के चलए कहा।

मैंने प्रथम गेिरे के पदाचधकारी प्रचिक्षाचथपयों ‌ंको योग प्रचिक्षण देने की अपनी अक्षमिा और संकोि जिलाया ‌िो स्वामी जी ने मुझे एक सप्ताह ‌िक स्वयं प्रचिक्षण चदया, योगासनों ‌ंऔर प्राणायामों ‌ंका क्रम चसखाया, स्वयं मुझे साि ले कर मसूरी गये, वहााँ के चनदेिक ‌िथा बाकी

सदस्यों ं से मेरा पररिय करवाया। उन सबने स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चनदिेन में चदव्य जीवन संघ मुख्यालय में अभ्यास में लाये जाने वाली गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी की योगासन और प्राणायाम पद्धचि के वैज्ञाचनक, सरल और चवचधवि् प्रचिक्षण की भूरर-भूरर प्रिंसा की।

स्वामी जी द्वारा चनदेचिि मेरी यह एल. बी. एस. एन. ए. ए., मसूरी में योग-प्रचिक्षण की सेवा लगभग िीन दिकों ं िक िली। सभी पदाचधकारी प्रचिक्षाचथपयों ं के लाभ के चलए चकये जाने वाले प्रत्ेयेक इस कोसप के चवदाई समारोह पर निेनल एकिोमी हर वषप चवदाई-भाषण के चलए चकसी वररष्ठ स्वामी जी को बुलाया करिी थी। इन अफसर प्रचिक्षाचथपयों ं ने लौटने पर अपने दैचनक जीवन में योगाभ्यास करने के चलए योगासनों ं पर पुस्तक की माँग की; अिः मैंने स्वामी जी महाराज से उनकी आज्ञा चमलने पर एक पुस्तक मुचद्रि करवाने की िथा उस पुस्तक के चलए स्वामी जी महाराज से योगासनों ं और प्राणायामों ं की चवचभन्न मुद्राओं ं के चित्रों ं की प्राथपना की। स्वामी जी के चनदिेानुसार मैंने 'प्ैरैक्क्टकल गाइि टू योगा' (योग-सन्दचिपका) िीषपक से पुस्तक का संकलन चकया। यह पुस्तक बहुि से दिेों ं में योग के चजज्ञासुओं ं के चलए १६ से अचधक भाषाओं ं में अनूचदि हुई। स्वामी जी महाराज ने कहा था चक इस एल. बी. एस. एन. ए. ए., मसूरी में योग के कोसप का संिलिन करना, वास्तव में गुरुदेव के नाम और चिक्षाओं ं के प्रिार-प्रसार हिुे अत्क्खल भारि की। अनेक यात्राओं ं के समान है; क्ोंचंक इसमें भाग लेने वाले अफसर-प्रचिक्षाथी दिे के चवचभन्न भागों ं से आिे हैं और सरकारी चवभागों ं में उि पदों ं पर चनयुि हािे हैं। आश्रम में में जब भी हािा, िब स्वामी जी महाराज के पास, गुरु चनवास में भारिीय पत्र-व्यवहार के कायप में सहायिा करिा था।

फरवरी १९७९ में स्वामी जी ने एक चदन चनकट आश्रम के एक साधु को अके ले में चमलने के चलए गुरु चनवास में समय चदया था। प्रािः जब मैं गुरु चनवास गया िो स्वामी जी ने मुझे उस व्यक्ति से बाि करके उसका पूरा चववरण जानने के चलए कहा। वह व्यक्ति स्वामी जी से २५ फरवरी, चिवराचत्र को संन्यास-दीक्षा लेना िथा गंगाि–ट पर साधना करना चाहिा था। जब मैंने स्वामी जी को यह बिाया िो उन्ोंनें कहा- "मैं चकसी को भी संन्यास, दीक्षा नहीं ं दूंगा।" िब मैंने स्वामी को बिाया चक गि कई वषों से मैं जब निेनल एकिोमी जािा हाँ िो मैं रामकृष्ण

सांसूकृचिककि,हैदराबादके परमाध्यक्षपरमपूज्यश्रीस्वामीरंगनाथानन्दजीमहाराजके दिपन

करने भी जािा हाँ। गि वषप पूज्य स्वामी रंगनाथानन्द जी ने मुझे पूछा चक मैं कब से चिवानन्द आश्रम में हाँ और मेरी आयु चकिनी है, आचद-आचद। मेरा उत्तर सुन कर वह कहने लगे-"आश्चयप हैचकिौदहवषपकेदीघपकालिकचिवानन्दआश्रममेंऔरवररष्ठस्वाचमयों ंकीसेवामेंरहनेपर भी िुम्हें अभी िक संन्यास आश्रम में दीचक्षि नहीं ं चकया गया है। चनश्चय ही इसमें िुम्हारी ओर से अथवा अचधकारी-वगप की ओर से कुछ-न-कुछ कमी रही होगी। अगली बार जब मैं यहाँ मसूरी आऊाँ गा िब िक िुम्हें स्वामी हो जाना िाचहए!" यह सुनिे ही स्वामी जी ने मेरी ओर देखा और बोले- "हााँ, स्वामी रंगनाथानन्द जी ने ठीक ही कहा है। अब िुम स्वामी कृ ष्णानन्द जी महाराज के पास जाओ और उन्ें कहो चक इस चिवराचत्र के चदन िुम्हें संन्यास-परम्परा में दीचक्षि चकया जायेगा। उनसे प्राथपना करना चक पत्क्ण्ड जी आचद की व्यवस्था करवा दें।" जब मैंने जा कर पूज्य श्री स्वामी कृ ष्णानन्द जी महाराज को यह सन्ेदि चदया िो उन्ोंनें प्रसन्निापूवपक कहा- "आज के चदन का यह बहुि िुभ समािार है, बधाई हो! मुझे बहुि प्रसन्निा हुई है। श्री स्वामी जी महाराज से कहो चक और भी कु छ प्राथपना-पत्र आये हुए हैं संन्यास-दीक्षा के चलए।" िब स्वामी जी महाराज उन सभी दसों ं प्राचथपयों ं को २५ फरवरी १९७९ को संन्यास-परम्परा में दीचक्षि करने को मान गये।

दोनों ंस्वामी जी महाराज ने नव दीचक्षि संन्याचसयों ंको उपदिे दिे हुए कहा- "चकसी भी प्रकार के 'अचभमान' को त्याग दें।" पावन ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीिा में कहा गया है चक 'मैं' की भ्राक्तन्तपूणप प्रवृचत्त को त्याग दो, 'दृश्य जगि्' और 'परमात्मा' के सम्बि में भ्राक्तन्तपूणप धारणा को त्याग दो। गीिा के अठारह अध्यायों ंको िीन भागों ंमें चवभि चकया गया है, प्रत्येक चवभाग में छह-छह अध्याय आिे हैं।

प्रथम से छठे अध्याय िक का वगप 'मैं' सम्बिी भ्राक्तन्तपूणप धारणा को त्यागने की चिक्षा दिेा है, सािवें से १२ में अध्याय िक का चद्विीय वगप 'दृश्य जगि्' सम्बिी गलि धारणा को त्यागने की चिक्षा दिेा है िथा १३ वे से १८ वें अध्याय िक का िृिीय वगप 'परमात्मा' सम्बिी भ्राक्तन्तपूणप धारणा को त्याग देने का उपदिे दिेा है। **भगवद्गीिा की शिक्षाओं ंका सारित्त्व एक िब्द में इस प्रकार है, 'गीिा' िब्द का उच्चारण बार-बार करें, इसकी ध्वशन 'त्यागी' िब्द जैसी प्रिीि होगी। इसका अथण है- 'त्यागी वास्तव में वही है शजसने समू्पणण जीवन के प्रशि भ्राच्चन्तपूणण धारणाओं ंका त्याग कर शदया है।'** परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज त्यागी थे। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने गुरुदेव के श्रीचरणों ंका अनुसरण चकया और 'त्याग' का आदिप उदाहरण बन कर जीवन चजया-चकसी वसु्त या व्यक्ति से आसक्ति नहीं,ं रोगी, चनधपन और जरूरिमन्दों ंकी सहायिा करने को सदा ित्पर, अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में आध्याक्तत्मक चजज्ञासुओं ंको मागप चनदेिन देने को सदैव ित्पर! अपने गुरुदेव िथा चदव्य जीवन संघ के प्रचि पूणप समचपपि भाव उनमें प्रत्यक्ष दृचष्टगोचर होिा है। हम सब पर उनके आिीवापद हो, यही मेरी हाचदपक प्राथपना है।

चदव्य जीवन संघ मुख्यालय
चिवानन्द आश्रम, ऋचषकेि (उत्तराखण्ड)

साधक को काम क्रोध लोभ , , मोह, ईष्याप, द्वेष आचद आसुरी प्रवृचत्तयों ंका त्याग करके सेवा त्याग दान प्रेम क्षमा , , चवनम्रिा आचद गुण रूपी दैवी सम्पदा के अजपन का प्रयत्न करिे रहना चाचहए।

-स्वामी शिदानन्द

शनःस्वाथणिा एवं समपणि की प्रशिमूशिण

-परम पावन श्री स्वामी शनशलणिानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष-

जो सभी चनष्ठावान् और सिै भिों ंि था चिष्यों ंके हृदयों ंमें आध्याक्तत्मक रूप से सदैव उपक्तस्थि हैं ऐसे परम आराध्य गुरुमहाराज स्वामी चिदानन्द जी महाराज के पावन िरणों ंमें मेरे चवनम्र साष्टांग प्रणाम ि था नमस्कार। हमारे परम पूज्य स्वामी जी महाराज, अधप िािब्दी से भी अचधक पथदिपक-प्रकाि स्तम्भ थे। जब वे, वषप १९६३ के, माह अगस्त के चदनांक १८ को न्यासी-मण्डल (बोिप ऑफ टरस्टीज़) द्वारा परमाध्यक्ष के पद पर ि यचनि हुए ि ब उन्होंने स्व-मन्तव्य व्यि चकया- "दाचयत्व चलया गया है। उसे साँभालना ही होगा।" और उन्होंने परमाध्यक्ष के पद का उत्तरदाचयत्व अपने अक्तन्तम श्वास-२८ अगस्त २००८ पयपन्त श्रेष्ठ रूप से वहन चकया।

अपने गुरु स्वामी चिवानन्द जी के प्रचि उनकी भक्ति उदाहरण स्वरूप और सविो थी एवं गुरु, गुरु-चमिन ि था गुरु-संस्था के प्रचि उनका समपपण असाधारण और समूपूणप था। वषप १९४३ में वे चिवानन्द आश्रम में आये ि ब से प्रसंगोचिि अथवा जब-जब चकसी कायपूचिप के चलए उन्हें कहा गया ि ब-ि ब उन्होंने गुरु-सेवा सम्पन्न की। उनकी दृचष्ट में चमिन की सेवा गुरु-सेवा ही है और उन्होंने उसे सिी पूजा के रूप में सम्पन्न चकया। वषप १९४८ से वे संस्था के वषों पयपन्त महासचिव के रूप में रहे और उन्हें जब परमाध्यक्ष पद सौंपा गया ि ब उन्होंने कहा- "गुरुदेव की आत्मा के प्रचि मेरी एकमात्र प्राथपना है चक वे मुझे सिी सेवा करने का, किपव्यपरायणिा ि था यथाथप रूप से जीवन िव्यिी करने हेिु सामथ्यप दें। उनकी कृपा से इस दास में चवनम्रिा, स्वभाविीः चनीःस्वाथपिा एवं समपपण भाव चटके रहें।" स्वामी जी के जीवन ि था कायप इस सत्य की साक्षी देि हैं चक उनकी प्राथपना स्वीकार हुई।

चदव्य जीवन संघ के न्यास (टरस्ट) के और चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष के रूप में उन्होंने न्याचसयों ंके मण्डल (बोिप ऑफ टरस्टीज) की एवं बोिप ऑफ मैनेजमेन्ट (प्रबिन बोिप) की सभाओं ंकी (चमचटंग्स) की अध्यक्षिा की और सब गचिचवचधयों ंका चनरीक्षण करके उनका मागपदिपन चकया। रोज-बरोज के कामकाज के अचिररि उन्होंने वषप १९८७ में स्वामी चिवानन्द जी महाराज के जन्म िािब्दी महोत्सव ि था इस प्रकार के अन्य चविेष और महत्त्वपूणप उत्सवों ंका आरम्भ भी चकया एवं अध्यक्षिा भी की। उनके आिीवापद और सहायिा से उडीसा राज्य में पूरी के समीप बाचलगुआली आश्रम (चिदानन्द हचमपटेज िाक्तन्त आश्रम) की स्थापना हुई। मुख्यालय का यह प्रथम और एकमेव चवभाग है ि था आध्याक्तत्मक साधना केि के रूप में सहस्रों ंभिों ंको प्रेरणा देिा है।

उन्हेंगुरुदेवनेवषप१९५९मेंपचश्चमकेदेिों ंमेंभेजाऔरउसीसमयसेउनकीमुलाकािें थिा दिपनहेिुअक्तखलचवश्वमेंसेप्राथपनाऔरअनुनयचवनयकीवषापप्रवाचहिहुई।परमाध्यक्षहोने के पश्चाि्स्वामीजीकोप्रायीःथिाकईबारलम्बीयात्राएँकरनीपडीं।ंइनयात्राओं ंकेकारणउन्हें गुरु-बोध(ज्ञान)प्रसाररिकरनेकेिथाअनेकचजज्ञासुऔरसिेभिों ंकीसेवाहेिुसुअवसर प्राप्त हुए।स्वामीजीबहुसंख्यकलोगों ंकोआध्याक्तत्मकपथमेंलाये।वेभारिीयिथाचवदेिीसहस्रों ं भिों ंकेगुरु,आध्याक्तत्मकपथप्रदिपकऔरउपदेिकथे।उन्होंनेअनेकानेकसाधना-चिचवरों ंएवं योग-कैम्पों ंकापररिालनचकया।उन्होंनेव्यक्तिगिमागपदिपनचदयािथाभिों ंकीसांसाररक समस्याओं,ंआवश्यकिाओं ंऔरकचठनाइयों ंचवषयकचविार-चवचनमयकरनेमेंचहिचकिाहटका अनुभवनहीं ंचकया।मानव-जाचिकेसांसृकृचिकऔरआध्याक्तत्मकअभ्युदयहेिुउनसेसम्पन्नसेवा अपररचमिहै।उन्होंनेलोगों ंकोदूसरों ंकी,गुरुदेवकेचमिनकीऔरस्वयंकीआध्याक्तत्मकउन्नचि हेिु प्रेरररिचकया।

स्वामी जी का पूणप जीवन पथ का प्रकिा था। उनके समकालीन सन्तों ंमें वे महानिम सन्तों ंमें से एक माने जिो हैं। पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द जी ने उन्हें श्रीमद्भगवद्गीिा में वचणपि
'क्तस्थिप्रज्ञ' व्यक्ति का जीवन्त दृष्टान्त कहा है। उनकी करुणा, असीम दयालुिा, अन्य का भला
करना, उनकी मदद करने की जन्मजिा प्रकृचि द्वारा उन्होंनें अपने जीवन-व्यवहार के दृष्टान्त से चसखाया। उन्होंनें हमें अचवराम और चनरन्तर सूमृचि चदलायी चक जीवन-ध्येय ईश्वरानुभूचि है। हमारा
जन्मजिा स्वभाव परमानन्द और केवल परमानन्द ही है एवं चनी:स्वाथप सेवा, साधना िथा मनन द्वारा
हम जो पूवपिी: ही हैं, इससे पििै होना हमारा सवपप्रथम किपव्य है।

अपनी यात्राओं ंके दौरान स्वामी जी ने भारि के समस्त राज्यों ंकी मुलाकाि ली, चदव्य
जीवन संघ की सवापचधक िाखाओं ंसे सम्पकप चकया िथा सहजिा से अबाध चमले। उडीसा के भिों ं
की पुनी: पुनी: और सचन्नष्ठ प्राथपनाओं ंके फलस्वरूप वषप १९६६ में अक्तखल उडीसा राज्य की प्रथम
चदव्य जीवन संघ की पररषद् के प्रमुख के रूप में उनकी मुलाकाि से ले कर स्वामी जी ५८
वि-अथापि् बहुसंख्य बार उडीसा में गये। पररणामिी: इस राज्य में चदव्य जीवन संघ की नीवं
पििक्तिाली रूप से िालिै हुए िाखा-सदस्यिा वृक्तद्धगि हो कर ५८००० से अचधक हुई। अन्य राज्यों ं
पर भी उनकी यात्राओं ंका प्रभाव समान हुआ।

स्वामी जी की चवदेि यात्राओं ंमें सब खण्ड िथा एचिया, यूरोप, उत्तर िथा दचक्षण
अमेररका, अफ्रीका और दी; आस्टेरचलया के अनेक देि आवृत्त हुए और उस प्रचक्रया में चदव्य
जीवन संघ का चवश्वव्यापी चवस्तार हुआ िथा अचधक देिों ंके अचधक-से-अचधक लोग गुरुदेव स्वामी
चिवानन्द जी का चदव्य जीवन का सन्देि और संघ के मूल्यों ंको समझ पाये।

स्वामी जी ने सम्बक्तिि िाखाओं ंद्वारा आयोचजि अक्तखल भारि चदव्य जीवन पररषदों ंमें िथा
राज्य-स्तर की पररषदों ंमें उपक्तस्थचि दी िथा उनकी अध्यक्षिा की। मुम्बई और कटक में आयोचजि
दो वैचश्वक अन्तरापष्ट्रीय पररषदें उनकी संकल्पना-उनका सजपन थी और उनमें चवश्व में से चदव्य जीवन
संघ के अनेक सहस्र भिों ंको एकचत्रि चकया। वे चदव्य जीवन संघ की ओर से अनेक राष्ट्रीय और
अन्तरापष्ट्रीय पररषदों ंमें प्रचिभागी हुए। इन पररषदों ंके साथ-साथ वे 'पालचमन्टस् ऑफ रीलीचजयि
एण्ड पीस' में प्रचिभागी हुए, चजनमें वषप १९९३ में चिकागो में सम्पन्न 'वर्ल्प पालचमन्ट ऑफ
रीलीचजयि' भी समाचवष्ट् है। यह पालीमेन्ट, वहाँ पर ही वषप १८९३ में सम्पन्न प्रथम पालीमेन्ट
ऑफ रीलीचजयि" की ििाब्दी का सौमाचिह्न था। उसमें महान् स्वामी चववेकानन्द जी ने इिनी
अचवस्मरणीय और अचमट छाप लगायी थी चक भारि का सनािन ज्ञान पचश्चम में चवस्तरने लगा। वषप
१९९३ की पालचमन्ट में स्वामी जी ने चहनदूत्व का प्रचिचनचधत्व करने वाले समस्त उपक्तस्थि सदस्यों ं
सह-अध्यक्ष चनयुि होने का सम्मान पाया।

स्वामी जी के चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष के कायप चवचभन्न धाचमपक संस्थाओं ंके साथ
घचनष्ठ सम्पकप की चवकास वृक्तद्ध भी समाचवष्ट् है। उनमें से कुछ संस्थाओं ंके उल्लेख में उन्होंनें श्री
श्री माँ आनन्दमयी के आश्रमों ंमें अनेक संयम-सप्ताहों ंकी अध्यक्षिा की िथा मागपदिपन चदया;
उन्होंनें बीस वषों पयपन्त स्वामी ओमकार जी के िाक्तन्त आश्रम के परमाध्यक्ष का पद भी साँभाला
थि स्वामी ओमकार जी की जयन्ती के अवसर पर आश्रम की हर वषप भेंट की; पापा रामदास के
आनन्दाश्रम के साथ उन्होंनें चनकट का सम्पकप रखा और उनके अनेक कायपक्रमों ंमें उपक्तस्थचि वे
स्वामी नारायण जी के संस्था के अनेक उत्सवों–समारोहों ंमें प्रचिभागी हुए। हर जगह स्वामी जी का

एक महान् आध्यात्मिक सन्त के रूप में अचभवादन-स्वागि हुआ िथा चविष मान्यिा चमली। उनके उज्वल और कात्मन्तमय व्यक्तित्व ने उपत्मस्थि सब लोगों ंपर कृपा-वषाप

उनकी प्रत्यक्ष पहल, प्ेरणा और समथपन के फलस्वरूप जनसेवा हेिु 'स्वामी चिवानन्द' के नाम से कुछ महत्त्वपूणप संस्थाओं ंकी स्थापना हुई। इस प्रकार गुरुदेव के पावन जन्म-स्थान, चिमलनािु के पट्टामिाई में 'स्वामी चिवानन्द सेन्ेटनरी िरटेबल अस्पिाल'; उडीसा में भुवनेश्वर में, खण्डचगरर में, 'स्वामी चिवानन्द सेन्ेटनरी बॉयज़ स्कूल'; चदल्ली में 'स्वामी चिवानन्द मेमोररयल इक्तिट्यूट ऑफ आटपस् एण्ड क्रॉफ्टस' इत्याचद संस्थाओं ंकी स्थापना हुई। स्वामी जी ने बहुि वषों िक इन संस्थाओं ंके अध्यक्ष के रूप में कायप चकया।

इस प्रकार परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के कररश्माई (िमत्काररक), गत्मििील िथा सचक्रय प्रबिन ने एक गहरी और िाश्विि छाप छोडी है। चदव्य जीवन संघ अनेकचवध प्रदेिों ंकी दृचष्ट् से और िाखाओं,ं भिों ंऔर अनुयाचययों ंकी संख्या में अत्यचधक चवस्तृि हुआ है। गुरुदेव का उपदेि िथा संघ के आदिप मानव जाचि के बहुसंख्य वगों िक पहुँिे हैं। संघ का आचथपक दृचष्ट् से भी महान् उत्कषप हुआ है।

यह सब परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के, अपने नाजुक स्वास्थ्य, सुचवधा अथवा आराम की चबलकुल भी परवाह न करिे हुए, पूणप प्रत्यक्ष व्यावहाररक प्रयोग िथा सम्पूणप समपपण से चकये गये अचवरि और अथक कायप के कारण ही सम्भव हुआ है।

हमें उनकी कृपा की छत्र-छाया में आने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्ोंने जो सब चकया, वह हमारे चहि के चलए चकया। उन्ोंने इिनी सिाई और हृदयपूवपक कहा है **"मैं केवल िुम्हें राह शदखाने के शलए आया हूँ। वास्तशवक ध्येय, परमािा की ओर अग्रसर होना और आपका जीवन शदव्य बनाना, यही है।"**

परम पूज्य गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को मेरे नम्र प्रणाम! सवपिक्तिमान् प्रभु, गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज िथा परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के हम सब पर सदैव कृपािीष हो।

हररी: ॐ िि् सि्!

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

करुिावरुिालयम्

श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज

– परम पावनश्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज महासशिव –

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज इस पावन भारिभूचम के श्रेेष्ठिम, महानिम सन्तों ंमें से हैं। चकसी सन्त को जानना अथवा उसके सम्बि में कुछ कहना सरल नहीं ंहै; क्ोंचंक ािस्त्ों ंका कथन है **'ब्रह्मशवद् ब्रह्मैव भवशि'** ब्रह्म को जानना ब्रह्म हो जाना है। ािख यह भी कहिे हैं चक ब्रह्म समस्त ािस्त्ों ंसे ािीि है, **'यिो वािो शनविणन्ते, अप्राप्य मनसा सह-**जहााँ मन सचहि वाणी, वणपन करने में असमथप हो कर लौट जािी है। ािो भी सन्तों ंके जीवन ािरर पर असंख्य ग्रन्थ, श्लोक और ािास्त् हैं। एक ओर हम कहिे हैं चक भगवान् और साक्षात्कार प्राप्त सन्त वणपन से ािीि हैं, दूसरी ओर हम उनके सम्बि में इिना अचधक वणपन करिे हैं। इस चवरोधाभास की अत्यन्त सुन्दर ढंग से इस प्रकार व्याख्या की गयी है। ब्रह्म और महि् जन मन-बुक्तद्ध और वाणी से परे हैं, ािो भी जो मन से उन्ें पकडने अथाापि् समझने का प्रयास करिे हैं, मन से ािीि ािले जायेंगे और जो वाणी से वणपन करने का प्रयास करिे हैं, वह अपने मन और वाणी को पचवत्र कर लेिे हैं। अिः पूज्य स्वामी जी महाराज के चवषय में कुछ भी कहने, चलखने से विा और श्रोिा, लेखक और पाठक दोनों ंही स्वयं को ािुद्ध और उन्निि करेंगे।

वाल्मीचक रामायण में कोई व्यक्ति प्रश्न करिा है, "मैं आपके चलए क्ा कर सकिा हाँ?" दूसरा व्यक्ति उत्तर देिा है, **"मैत्रेेना ािकुषुः इक्षाश्वा-** मुझे प्रेेममयी दृचष्ट् से देक्तखए!" हम प्रचिचदन बहुि से लोगों ंसे चमलिे हैं। हम उन्ें भय, ािंका, उपेक्षा और कई बार प्रसन्निापूवपक देखिे हैं और हमारी दृचष्ट् हमारे मन के भाव उन ािक पहुाँािा देिी है। प्रेेमपूणप दृचष्ट् से देखना, मैत्री भाव से देखना अत्यन्त कचठन है। मैं जब भी पूज्य स्वामी जी महाराज से चमला, उनकी दृचष्ट् में मैंने सदैव ािुद्धि प्रेेम, स्नेेह, मैत्री भाव ही देखा है। और वह करुणापूररि दृचष्ट् हर एक को मिमुग्ध कर देिी थी। केवल करुणा-दृचष्ट् ही नहीं,ं अचपिु करुणावरुणालयम् करुणा का सागर! और जो भी स्वामी जी के साचन्नध्य में होिा, एक अभूिपूवप ािाक्तन्त अनुभव करिा। उसे ज्ञाि हो जािा था चक वह एक असाधारण चवभूचि के समक्ष है!

मैं एक अन्य घटना भी बिाना ािाहाँगा। स्वामी जी महाराज का एक गहन भि अपनी चवदेि यात्रा से वाचपस मुम्बई लौट कर स्वामी के दिपनाथप चमलने गया। उसने एकान्त में स्वामी जी से भेंट की, उनके ािरणों ंमें प्रणाम चकया और कुछेक ािुलसीदल स्वामी जी को समचपपि चकये, चजन्ें स्वामी जी ने अत्यन्त भावपूवपक ग्रहण चकया और अपने चिरोधायप चकया। कुछ समय प्राथपना करने के उपरान्त स्वामी जी ने चिष्य को इिना उत्तम उपहार लाने के चलए धन्यवाद चकया और चिष्य अत्यन्त प्रसन्न हो गया। ािब स्वामी जी ने पूछा चक यह चदव्योपहार कहााँ से एकचत्रि चकया है? चिष्य ने उत्तर चदया, "मैं अमुक व्यक्ति के घर ठहरा हाँ और उन्ोंने अपने घर में ािुलसी का पौधा लगाया हुआ है, वहीं ंसे मैंने यह सोि कर कुछ पत्ते ािोड चलए थे च चक इससे स्वामी जी महाराज को प्रसन्निा होगी।" स्वामी जी ने चसर चहलाया और कुछ क्षण रुक कर बोले, "ओजी, इस देि में धमपरायण लोग अपने घरों ंमें ािुलसी का पौधा लगािे हैं। उनके धाचमपक और आध्याक्तत्मक जीवन में इसका चविेष महत्वपूणप स्थान होिा है। वह इसे केबल जल से सींििे मात्र ही नहीं,ं बक्ति इसकी पूजा करिे हैं, मानो उनका इसके साथ दैवी सम्बि हो। यह पौधा उनके आन्तररक और बाह्य जीवन से सम्बि रखिा है। मैं यह जानना ािाहिा हाँ चक क्ा आपने पत्ते िोडने के चलए गृहस्वामी की अनुमचि ले ली थी।" चिष्य घबरा गया और उसका ािेहरा पीला पड गया, "क्षमा कीचजए स्वामी जी, क्षमा कीचजए, मैंने उनसे अनुमचि नहीं ंली, चकन्तु वाचपस जािे ही मैं उनसे क्षमायािना करूाँगा।" "ठीक है," स्वामी जी बोले, "देक्तखए, आप साधक हैं, इसचलए आपको सदैव सावधान रहना ािाचहए। आपको अपनी हर एक गचिचवचध और कायप के प्रचि

जागरूक होना िाचहए। यह जगि् भगवान् का चवराट् स्वरूप है। प्रत्येक वस्तु परमात्मा का अंग है, पौधे भी! इसचलए, पत्ते िोडने से पहले केवल गृहस्वामी से ही आज्ञा प्राप्त नहीं ंकरनी हिोी, बक्ति पौधे से भी अनुमचि माँगनी हिोी है।"

इस छोटी-सी घटना के द्वारा स्वामी जी महाराज ने यह चक यहाँ कुछ भी सीचमि और ि्स्वि नहीं ंहै। हम बिाया सब उस एकमेव परब्रह्म से जुडे हुए हैं। उस परमात्मा को ॐ चवश्वसै्मै नमीः !

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

ॐ

श्रीस्वामीचिदानन्दजीपद्मपत्रपरजल-चबनदुकीभाँचिरहिेहैं।वहसबकीसेवा करिेहैं,चकनुतुचकसीसेआसक्तिनहीं ंरखिेहैं।उनमेंसमदृचष्ट्है,सनुतुचलिमनहै।वह भगवान्मेंक्तस्थिहैं,अिीःभगवान्उनके चलएसब-कुछकरिेहैं।उनकीसभीप्रवृचत्तयाँ भगवान्की,उनके चवराट्स्वरूपमेंपूजाहीहैं।वेसूचिकरिीहैंचकवहनिोदुीःख से कुषुब्धहिोहैंऔरनसुखसेहचषपि।वहमानवमात्रपरसुख,िाक्तन्तिथाआनन्द चवकीणप करिे हैं। संक्षेप में कहें िो वह इस हाड-माँसमय िरीर में देविा हैं।

'शवरले महापुरुष'

–श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज –

परम कृ पालु परमात्मा की भारिवषप पर सदा अहैिुकी कृ पा रही है। अनाचद काल से आज पयपन्त अनेक महापुरुष इस पचवत्र भूचम पर अविररि हिो आये हैं और इस लोक के मानव-जीवन को समृद्ध करिे गये हैं। ऐसी महापुरुषों ं की परम्परा की अक्तन्तम कडी िथा भचवष्य में आने वाले युगों ं की प्रथम पंक्ति के आदिप महापुरुषों ं में से एक हमारे परम पूजनीय गुरुदेव ब्रह्मलीन स्वामी श्री चिदानन्दजीमहाराजथे।िास्त्रों ंनेजो-कुछहमकोचदयाहै,उसकासारहमकोस्वामीजी महाराज में प्राप्त हिोा था। भचवष्य के आध्यात्मिक चजज्ञासुओं ं और मुमुकुषुओं ं को भी अपना श्रेष्ठिम आदिप श्री स्वामी चिदानन्द जी में अवश्य प्राप्त हिोा रहेगा। हर एक महापुरुष की अपनी-अपनी चविेषिा हिोी है। परन्तु महापुरुषों ं में भी प्रािीन परम्परा का फल और अवापिीन परम्परा का बीज चजनके जीवन में संलि हो गया है ऐसे महापुरुष चवरले ही हिो हैं। ऐसे ही एक चवरले महापुरुष थे चदव्य जीवन संघ के पूवप परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज।

युगपुरुष स्वामी श्री चिदानन्द जी

स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज एक सि् पुरुष थे, यह सभी लोग मानिे हैं। यहााँ िक चक बडे-बडे चदग्गज पक्तण्डि और महामण्डलेश्वर भी उनका सि् पुरुष के रूप में सम्मान करिे थे। सभी सि् पुरुषों ं के हृदय समान ही हिो हैं; परन्तु हर एक की बुक्तद्ध और प्रचिभा चभन्न-चभन्न प्रकार की हिोिी है। चजस काल में चजस प्रकार की प्रचिभा की चविेष आवश्यकिा हिोिी है वैसी प्रचिभा सम्पन्न सि् पुरुष उस काल के युगपुरुष हो जािो हैं। सद्गुरुदेव स्वामी श्री चिवानन्द जी महाराज और गुरुदेव स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज अध्यात्म-जगि् के ऐसे युग-प्रविपक सि् पुरुष थे। सद्गुरुदेवश्रीस्वामीचिवानन्दजीके समानहीस्वामीश्रीचिदानन्दजीमहाराजकाजीवन असाधारण आध्याक्तत्मक िक्ति, अनन्त प्रेम, असीम करुणा, अथक सेवा और अचद्विीय ब्रह्मचवद्या से पररपूणप था।

सामान्य धमप-प्रिार अलग बाि है। सामान्य धमप बोध ऋचष और सि् पुरुष हमेिा दिे रहिे हैं। परन्तुप्रािीनवअवापिीनसमयकासमुचिसमन्वयकरके विपमानयुगकीमााँगके अनुसार उपदेि और आिरण करना, ये क्रान्तदिीं ं ही कर सकिे हैं। स्वामी श्री चिदानन्द जी ने अपने जीवन-कालमेंयहकरके चदखायाइिनाहीनहीं ंसमस्तचवश्वके,पूवपवपचश्चमके सभीलोगों ंके चलए एक सिा आध्याक्तत्मक आदिप स्थाचपि चकया। वैसे वे एक युगपुरुष थे। चवश्व के सभी धमों और सभी पैगम्बरों ं का सारभूि सन्देि, श्री स्वामी जी के जीवन और कथन में प्रचिचबक्तम्बि हिोिा रहिा था। इसचलए पूवप के लोग श्री स्वामी जी में भगवान् श्री राम और करुणासागर श्री बुद्ध भगवान् का दिपन करिे थे और पचश्चम के लोग ईसामसीह और सन्त फ्रांचसस का दिपन करिे थे।

स्वामी जी उपदेिक नहीं, ं सेवकथे

हमारे यहााँ कई महापुरुष हुए हैं। उनमें से बहुिों ंने लोगों ंको बहुि कुछ चसखाया और लोगों ंके जीवन में पररविपन चकया; परन्तु ये लोग सूयपनारायण के समान दूर रह कर प्रकाि दिे रहे। भगवान् सूयप नारायण नजदीक आके हमें कुछ नहीं ंदे सकिे, न िो हम उनके नजदीक जा कर कुछ पा सकिे हैं। वह हमारे गुरु बन सकिे हैं, सेवक नहीं।ं मुझे स्वामी आनन्द का एक प्रसंग याद आ रहा है। रामकृष्णमठ से दीचक्षि स्वामी आनन्द महात्मा गािी जी से प्रभाचवि हो कर गािी जी के पास गये और कहा चक मैं आपके साथ काम करना िाहिा हाँ। िब गािी जी ने कहा- "आप गेरुआ वस्त् उिार कर आइए; क्ोंचक इस वस्त् में आप सेवा नहीं ंकर पाओगे। लोग आपको सेवा नहीं ंकरने देंगे। इसके चवपरीि लोग आपकी सेवा करने लगेंगे।" स्वामी आनन्द ने वस्त्-पररविपन चकया। परन्तु हमारे गुरुदेव स्वामी श्री चिवानन्द जी महाराज और स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज, आचद गुरु श्री िंकरािायप जी की दिनामी साधु परम्परा के संन्यासी हिो हुए भी सभी के सामने आदिप कमपयोगी और मानव-जाचि के सिे सेवक होने का उत्कृष्ट् उदाहरण छोड गये हैं।

मैं सूयपनारायण देव की बाि कह रहा था, परन्तु वैसे भी महापुरुष हिो हैं जो करुणामय, दयालु और बत्सल हिो हैं। उनमें ज्ञान चछपा हुआ रहिा है और करुणा प्रकट हिोिी रहिी है। स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज ऐसे महापुरुष एवं सन्त थे। करुणा और वात्सल्य से प्रेररि हो कर, सभी में ईश्वर-दिपन करिे हुए जीवन के अन्त िक स्वामी जी महाराज समस्त मानव-जाचि की सेवा करिे रहे। सभी लोग स्वामी जी को अपना मानिे थे। चकसी को भी स्वामी जी से अलगाव अनुभव नहीं ंहिोिा था। सुखी-दुी:खी, गरीब-अमीर, ज्ञानी-अज्ञानी, रोगी-चनरोगी, छोटा-बडा, इिना ही नहीं ंिाहे व्यक्ति चकसी भी धमप का क्ों ंन हो, सभी लोग श्री स्वामी जी की

सचन्नचध में अपनापन खो कर िाक्तन्त, सुख और आनन्द का अनुभव करिे थे। व्यक्ति को स्थल-काल का ध्यान भी नहीं ंरहिा था। श्री स्वामी जी के साचन्नध्य में िमा की ििीलिा का अनुभव हिोा था, क्ोंचक स्वामी जी अपने को गुरु नहीं ंसेवक मानिे थे, वे सदैव कहा करिे थे चक मैं
सद्गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज का सेवक हाँ। आप सभी के गुरु भी चिवानन्द जी ही हैं।
श्री स्वामी जी सदैव साधारण आदमी की भूचमका में रह कर जगि् में व्यवहार करिे थे। सभी को, सभी प्रकार की समस्याओं ंका व्यावहाररक समाधान ििेे थे। अपने सभी चनजी कायों को छोड कर, छोटी-मोटी सभी की बािों ंमें रुचि ले कर उनका समाधान होने िक समय दिे थे।
कौन नहीं ंजानिा चक उन्ोंनें साधारण मनुष्यों,ं कुष्ठरोचगयों ंऔर पिु-पचक्षयों ंिक सभी जीवों ंके चलए क्ा-क्ा सेवाएँ नहीं ंकी हैं!

सत्य के आग्रही श्री स्वामी जी

श्रीस्वामीजीअत्यन्तचवनम्र, धैयपिील िथा सहनिील थे; परन्तु जीवन में चिष्टा, संयम औरसदािारकेआग्रहीथे।चवपरीि आिरण करने वालों ंके चलए वे सूयप समान थे। ऐसे लोगों ंको उनकािापसहनापडिाथा। असत्य और झूठ वे सहन नहीं ंकर पािे थे। उनका समग्र जीवन
मूल्यचनष्ठ रहा।

शवनम्रिा और शनरहंकार की मूशिण

स्वामी जी ने समूपूणप चवश्व का कई बार पररभ्रमण चकया था। चवश्व के कोने-कोने में उनके अनुयायी, भि और प्रेमी थे। सभी लोग उनको गुरु मानिे थे और स्वामी चिवानन्द जी महाराज के समान ही आदर करिे थे। परन्तु उन्ोंनें कभी भी गुरुपद स्वीकार नहीं ंचकया। स्वामी चिवानन्द जी के नाम से ही सभी को सभी प्रकार की दीक्षा दिे थे और कहिे थे चक, "स्वामी चिवानन्द जी आपके गुरु हैं, मैं नहीं।ं" अपने जीवन-कथन द्वारा आदिप चिष्य का उदाहरण सबके समक्ष सदैव रखिे थे। वे अपने जीवन में यही प्रयत्न करिे रहे चक अपने सद्गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी का स्थान व पद सदा अचद्विीय रहे। अपने देह-चवलय के बाद, अपना एक भी अविेष न रहे िाचक उससे कोई समाचध न बना सके इसी अपने को नामिेष करने के चविार से ही श्री स्वामी जी ने संस्था के सभी टरस्टी और भि एवं चिष्य-समुदाय को पहले से ही सूिना दे रखी थी चक, "मेरे देह-चवलय के पश्चाि् मेरी देह को श्री िंकरािायप दिनामी साधु परपम्परा के अनुसार एक साधारण साधु की भााँचि नदी में बहा देना। इिना ही नहीं,ं इस बारे में चकसी भी माध्यम से चकसी को भी सूिना या जानकारी मि देना। यह मेरी आज्ञा समझो िो आज्ञा है, आदिे समझो िो आदिे है।" और ििीः श्री स्वामी जी की इच्छा के अनुसार ही हुआ। ऐसे थे वे युग प्रविपक महापुरुष ! ऐसे थे हमारे परम पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री चिदानन्द जी महाराज!

उन्ीं ंके पचिपावन श्रीिरणों ंमें कोचट-कोचट वन्दन ।

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि
(उत्तराखण्ड)

मेरे शदव्य गुरु

– शब्रगेशियर (से वा–शनवृत्त) श्री एल. एन. सब्बरवाल –

िािहै हैं दो जहाँ खुदा की रज़ा
खुदा को भी िेरी रज़ा िाशहए!

(स्वामी रामििीथप)

खुदा का नूर मुशिणद में भला मालूमहोिाहै?
ये वो आईना है शजसमें खुदा खुद मालूमहोिा है।

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज जैसी चदव्य चवभूचि के सम्बि में कुछ चलखना और पूरी िरह से चलख सकना अत्यन्त कचठन ही नहीं ंअसम्भव ही है। इस िथ्य में दृढ़ चवश्वास होिे हुए भी मैं चलख रहा हाँ, हमारे परमाध्यक्ष श्रद्धेय श्री स्वामी चवमलानन्द जी महाराज की आज्ञा पालन करने के चलए। मैं भिों ंकी भावनाओं ंको आनन्द प्रदान करने वाली कुछ घटनाएँ बिाने का प्रयास करूँगा।

श्री स्वामी रामदास, कान्नगढ़, केरल के आनन्द आश्रम से दो युवक श्री स्वामी जी के दिपन के चलए 'िािक्तन्त चनवास, देहरादून' आये। उन्ोंने कहा, "हम इिनी दूर से श्री स्वामी जी से आिीवापद प्राप्त करने आये हैं, चक हमें भी वह उपलक्तब्ध प्राप्त हो सके जो स्वामी जी ने इस जीवन में कर ली है।" स्वामी जी ने उत्तर चदया चक उन्ोंने इस जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं ं चकया है। जब वह युवक िले गये िो स्वामी जी मुझसे बोले, "मैं जानिा हाँ, आप क्ा सोि रहे हैं। मुझे गुरुदेव ने बिाया था चक मैं चपछले जन्म में ही चसद्ध था।"

१९७६ में स्वामी रामिीथप आश्रम, देहरादून में श्री श्री आनन्दमयी माँ का जन्म-चदवस मनाया गया। माँ अपने जन्म-चदन पर १० से १४ घण्टे िक की समाचध में िली जाया करिी थीं।ं इस जन्म-चदवस पर भी वह ज्यों ंही मंचिर आयीं,ं उसी समय समाचध में लीन हो गयीं।ं माँ जब समाचधस्थ थीं,ं उस समय भव्य महापूजा िलिी रही। श्री स्वामी जी, श्री स्वामी माधवानन्द जी महाराज िथा हमारे आश्रम के कुछ अन्य स्वामी जी भी उस समय वहाँ उपक्तस्थि थे। अगले चदन प्रािः स्वामी जी को िाय परोसिे समय मैंने कहा, "कल रिा बडी चवचित्र बाि देखी चक माँ ज्यों ं ही मंचिर आ कर बैठीं,ं उसी समय गहन समाचध में िली गयीं।ं" स्वामी जी ने मेरे कथन में सुधार करिे हुए कहा, "नहीं,ं नहीं,ं गहन समाचध में जाने के चलए उन्ोंने कम-से-कम २० में ३० चमनट चलये थे।"

श्री स्वामी जी के साथ 'िािक्तन्त चनवास' के हाल में घूमिे समय एक बार मैंने कहा, "स्वामी जी, मां आध्याक्तत्मक जगि् की बहुि ऊँिी क्तस्थचि में पहुँिी हुई थी और बहुि ही कम व्यक्ति उन्ें पूरी िरह से समझ सकेथे। मेरा चविार है चक जो उन्ें पूरी िरह से समझ सके हों,ं उनमें से एक आप हैं। ठीक है न?" स्वामी जी ने कहा, "हाँ, यह ठीक है। यही नहीं,ं वह भी मुझे पूरी िरह समझिी थीं।ं"

स्वामी जी का समूपूणप सृचष्ट् के साथ एकात्मीकरण था। एक बार ग्रीष्म ऋिु में वे िीन चदन की यात्रा पर गये। वाचपस लौटने पर उनका ध्यान 'गुरु चनवास' में अपने कमरे के सामने पडे गमलों ंकी ओर गया जो पानी के अभाव में मुरझा गये थे। वे अपने स्नानागार में गये, पानी लाये और सभी पौधों ंको पानी चदया। स्वामी जी िीन चदनों ंिक चनराहार रहे, क्ोंचंक पौधे िीन चदन कि जल के चबना रहे थे।

एक चदन मैंने स्वामी जी से कहा, "स्वामी जी, आप जैसे पुत्र को जन्म देने से आपकी मािाश्री को मुक्ति प्राप्त हो गयी।" स्वामी जी ने प्रतुयुत्तर चदया, "आप यह कैसे जानिे हैं?" मैंने श्री स्वामी जी को भृगुसंचहिा, होचियार पुर जाने की याद चदलायी। वहाँ पक्तण्डि जी ने जन्मपत्री पढ़ कर सुनायी थी, जो इस प्रकार थी, "चिदानन्द स्वामी, जब आप इस स्थान पर आयेंगे िो नारायण भगवान् और मैं बहुि प्रसन्न होंगें। यहाँ जो भी आपके दिपन करेंगे, धन्य हो जायेंगे। जब आप दस वषप के हो जाओगे, िब आपकी मािा को मुक्ति प्राप्त हो जायेगी। आपने अपने चपछले जन्म में ही भगवान् श्री राम के दिपन प्राप्त कर चलये थे। उन्ोंनें अपने गुण आपको प्रदान करके अपनी कायप चसक्तद्ध के चलए यहाँ भेजा है। एक कायप उन्ोंनें आप पर छोड चदया है, वह है इस संसार से आपके जाने का समय।" यह पक्ष अगस्त २००८ में पयापम रूप से चसद्ध हो गया।
महासमाचध से कुछ चदन पूवप, जब उनके चनजी चिचकत्सक िा. रािे चगल्होत्रा, उन्ें चिचकत्सालय में स्थानान्तरण करने के चलए उनके पास आये िो उन्ोंनें कह चदया था, " मेरा िरीर वृद्ध हो ुका है। यह िरीर चकिनी देर िक िलेगा! इसकी अपनी सीमाएँ है। िाक्टर, यचद आप मेरी क्तस्थचि में होओ, िो क्ा आप ऐसे और रहना िाहोगे? मैं िैया-ग्रस्त है। जो-कुछ मैंने करना था, कर चलया है। चपछली बार जब मैं बीमार पडा था, िो आप मुझे अपने अस्पिाल में ले गये थे। अब मैं कहीं ंजाना नहीं ंिाहिा। मुझे जाना होगा िो या िो यहाँ चफर 'गुरु चनवास' में। सम्भविया यहीं, ं 'िाक्तन्त चनवास' में ही यह होगा। (उन्ोंनें चजस िैया पर लेटे हुए थे, उसकी ओर संकेि करिे हुए यह कहा)। मैं यहाँ 'िाक्तन्त चनवास' में रहँगा।" अपने िीनों ंचनजी सेवकों ं(स्वामी रिणागिानन्द, स्वामी गुरुप्रसादानन्द और स्वामी चित्स्वरूपानन्द) की ओर संकेि करिे हुए, बोले, "ये मेरे साथ देहरादून आये थे, ये सब वाचपस ऋचषकेि िले जायेंगे।"

जुलाई२००८ में एक बार मेरी धमपत्नी ने स्वामी जी से पूछा, आपका स्वास्थ्य कैसा है?" स्वामीजीनेकहा, "मैं कमप अपने सब प्रारब्ध कमों का भुगिान कर रहा हाँ। मेरे संचिि भस्म हो ुकेहैं।अबमेरा और जा रहा होगा। बि

इिना जज्ब कर लूँ िेरे हुस्न काशमलको
पुकार उठें िुझी को गुज़र जाऊँ जहाँहोकर।

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

मेरे प्यारे गुरुदेव, मेरे भगवान्!

–श्री सन्दीप गोस्वामी जी –

चकसी महान् चवभूचि के सम्बि में अपने अनुभव चलखना अत्यन्त कचठन ही नहीं, ं बक्ति असम्भव सा ही है। अनुभूचि िो सदैव हृदय से होिी है चजसे वाणी द्वारा अचभव्यि नहीं ंचकया जा सकिा। और कुछ बािें िो हृदय के इिने भीिर चछपा लेने वाली होिी हैं चजनके चवषय में चकसी अन्य से कहा जाना अत्यन्त कचठन है, यद्यचप हममें से बहुिों ंके ऐसे ही अनुभव रहे होंगें। मैं आश्रम में प्रथम बार १९७५ में उस समय आया जब चक मैं केवल १२ वषप का था, इस अवस्था में मैंने अपने प्यारे गुरुदेव के प्रथम दिपन चकये। उस समय चजस स्नेह और अपनत्व की वषाप गुरुदेव ने मुझ पर की, उसकी सूमृचि मेरे मानसपटल पर अभी िक अंचकि है, वही प्रेम उनका अन्त िक बना रहा। उसके एक वषप बाद १९७६ में, गुरुदेव की हीरक जयन्ती के अवसर पर मैं आश्रम में िीन मास रहा। मेरे अनुमान से इिने दीघप काल के चलए, उसके बाद आश्रम में कभी भी ठहरने का अवसर नहीं ंचमला। इस अवचध ने हमारे सम्बिों ंको एक प्रकार से दृढ़िा से जोड चदया और मुझ पर उनके प्रभाव में िथा उनके प्रचि मेरी भक्ति भावना में बहुि वृक्तद्ध हुई।

गुरुदेव ने अत्यन्त कृपालुिापूवपक मुझे अपनी सेवा के चलए अनेक सुअवसर प्रदान चकये। १९८४ में जब मलेचिया के स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज की महासमाचध हुई िब मैं प्रथम बार गुरुदेव के साथ यात्रा पर गया। गुरुदेव ने मुझे मलेचिया साथ िलने के चलए कहा। गुरुदेव के साथ प्रथम बार, और वह भी चवदेि यात्रा पर! दूसरी बार उडीसा में बरहमपुर चवश्वचवद्यालय के रजि जयन्ती कायपक्रम में भाग लेने के चलए भारि में ही यात्रा की। १९८६ में श्री सुन्दरम् जी अमेररकन एक्सप्रेस से सेवाचनवृत्त हुए थे। उस समय मैं िौमस कुक के साथ कायपरि था। उस समय गुरुदेव ने मुझे बहुि ही सम्माननीय सेवा दी-पूज्य गुरुदेव के समस्त यात्रा-क्रम का आयोजन िथा आरक्षण इत्याचद की सेवा। मैंने अत्यन्त हषप व आभार सचहि यह सेवा अपनाई और इसने हमारे प्रेम-बिन को दृढ़िम रूप दे चदया, क्ोंचक इससे हमारी फोन पर चनयचमि बाि होने लगी और इसी से मुझे गुरुदेव के बाल सुलभ सरल मधुर स्वभाव का पिा िला। छोटी-से-छोटी बाि भी अत्यन्त चवस्तारपूवपक बिाया करिे। परमाध्यक्ष और गुरु होने के नािे वे यात्रा-क्रम चनधापरण के चलए मुझे केवल स्थान और चिचथयों ंकी सूिना मात्र ही दे सकिे थे; चकन्तु नहीं, ं ऐसा उन्ोंने कभी नहीं ं चकया, बक्ति सचवस्तार बिािे चक चकसी चविेष स्थान पर अथवा व्यक्ति के घर पर जाना क्ों ं आवश्यक है। प्रत्येक सप्ताह गुरुदेव के साथ यात्रा-क्रम चनधापरण अथवा अन्य बािों ंके चलए आश्रम जाना मेरे कायपक्रम का एक चनयम बन गया था।

१९८७ में हमारे परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज की जन्मििाब्दी का महोत्सव आया। इसके साथ ही हमारे गुरुदेव की भारि के प्रत्येक कोने िथा चवदेिों ंकी यात्रा आरम्भ हो गयी। उनमें से बहुि सी यात्राओं ंमें मुझे साथ जाने का परम सौभाग्य और आनन्द प्राप्त हुआ। ऐसी ही एक यात्रा के दौरान एक चदन अिानक ही गुरुदेव ने मुझे बुला कर भारि लौट जाने के चलए कहा जब चक हमारी यह यात्रा पूरी नहीं ंहुई थी, हम बैंकाक में थे और अभी बहुि से स्थानों ंपर जाना िेष रहिा था। गुरुदेव ने जीनपीरे से मेरे वापसी चटकट का आरक्षण करवाने को कह चदया। ऐसा क्ों ंहुआ, इस पर मन-ही-मन आश्चयप करिे हुए प्रभु-इच्छा के सम्मुख चसर झुका कर अत्यन्त दुीःखी हृदय से मैं लौट आया। िार चदनों ंमें ही मुझे उत्तर चमल गया, जब मेरे चपिाजी को चदल का घािक दौरा पड गया। गुरुदेव की यही इच्छा थी चक ऐसे समय में मैं अपने

चपिाजी के चनकट होऊँ और अपने किपव्य को चनभाऊँ । इस प्रकार मेरे जीवन के प्रत्येक मोड पर गुरुदेव मेरे चनकट चजब्राल्टर की ि्टान बन कर खडे रहे। अिः जब मेरे मािा-चपिा ने गुरुदेव की आज्ञा और आिीवापद ले कर मेरा चववाह चनचश्चि चकया िब भी उस घडी को पावन और महान् बनािे हुए गुरुदेव आिीवापद देने के चलए पधारे।

चफर चदव्य-दिक का िुभारम्भ हुआ और इसके साथ ही गचिचवचधयों ं के सचक्रय रूप से बढ़ जाने के साथ-साथ चवश्व-भ्रमण में भी वृक्तद्ध हो गयी। इस समय के दौरान मैं पूरी िरह से आश्रम के कामों ं में व्यस्त हो गया और मैंने अपने सभी सहयोचगयों ं िथा पररवार के सदस्यों ं से कह चदया चक चकसी भी समय आवश्यकिा पडने पर मेरा अपने सभी कायप बीि में ही छोड कर आश्रम जाना हो सकिा है। मैंने उन्ें यह भी सूिना दे दी चक सम्भाविया में अन्तरापष्ट्रीय चवश्व धमप सम्मेलनों, ं एचियाई सम्मेलनों ं िथा अन्य बहुि से सम्मेलनों ं में भाग लेने के चलए स्वामी जी के साथ जाऊँ। इसके द्वारा मुझे गुरुदेव को वास्तचवक रूप में देख पाने का िथा उनके प्रचि गहन प्रेम और अपनत्व को सुदृढ़ करने का अवसर चमला जो चक कभी भी चफर पररवचिपि नहीं ं हुआ। अक्तन्तम बार गुरुदेव के साथ १९९८ में पाँि मास के चलए मलेचिया, हाँगकाँग, आस्टेरचलया, यूरोप, यू.के ., यू.एस.ए., अरजेन- चटना, उरुगुए, लेबनान और दुबई की यात्राओं ं का था। इस समय मुझे ऐसा उत्तरदाचयत्व सौंपं ा गया चजसने मुझे न के वल गुरुदेव से ही बक्ति संस्था से भी अचधक घचनष्ठिा से जोड चदया। गुरुदेव ने मुझे संस्था का न्यासी बनने के चलए कहा।

समय िीव्रिा से बीि गया और मुझे पिा ही नहीं ं िला चक १९७५ से जुडने वाले इस सम्बन्ध के ऊपर िीव्रिा से बीििे वर्षों ने चकस प्रकार घचनष्ठिा की परिें ं पर परिें िढ़ा दी हैं। अब स्वामी जी ही मेरे चलए सब-कुछ हो िुके थे-गुरु, परामिपदािा, दािपचनक और चनदेिक! लोग प्रायीः मुझसे पूछिे हैं, "गुरुदेव के साथ इिने दीघपकालीन सम्बन्धों ं के उनकी कौन-सी चविेषिाओं ं ने आपको सबसे अचधक प्रभाचवि चकया है?" उनमें से बहुि सी ऐसी हैं! उदाहरणाथप मैं पहले ही उनके बाल-सुलभ सरल स्वभाव के बारे में बिा िुका हाँ। अन्य अत्यचधक प्रभाचवि करने वाली उनकी चवनम्रिा और सादगी है। गुरुदेव की कृ पा से मुझे अन्य अनेकों ं संस्थाओं ं के अध्यक्षों ं को चनकट से देखने के अवसर भी चमले हैं। उनके िारों ओर एक चविेष हवा रहिी है जो उन्ें बडा और महत्त्वपूणप होने का बोध करािी रहिी है। वह इसी प्रयास में रहिे हैं चक उन्ें देखने-चमलने वाले भी उन्ें ऐसा ही समझें। और हमारे गुरुदेव इसके ठीक चवपरीि, अपनी महानिा को चछपाये रखने के प्रयास में रहे, आध्याक्तत्मक जगि् में भी और संसार में भी, जब चक वह चदव्य जीवन संघ जैसी सुप्रचसद्ध और महत्त्वपूणप संस्था के परमाध्यक्ष ही नहीं, ं इसको अत्यचधक चवसृि रूप देने वाले भी हैं। हम सबको गुरुदेव और उनकी इस महान् संस्था से सम्बक्तन्धि होने का गवप है। यह वास्तव में गुरुदेव की ही चवसृचि है और उनकी कमपभूचम भी है। चजस संस्था को उन्होंने ५० से अचधक वर्षों िक पोचषि और चवकचसि चकया है, वास्तव में वे उसी में और ठीक उसी के द्वारा चवद्यमान हैं।

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि
(उत्तराखण्ड)

ज्योशिर्थ्योशि स्वामी शिदानन्द !

– संन्याशसनी ििुष्य –

ब्रह्मज्योचि चिवानन्द-आत्म ज्योचि हो िुम,
ज्योचिथ्योचि चिदानन्द स्वयं ज्योचि हो िुम,
परम परात्पर, पररपूणप ज्योचि हो िुम;
बाह्याभ्यन्तर प्रत्यक् ज्योचि हो िुम।
ज्योशिज्योशि को प्रिाम बारम्बार, प्रशिपाि बारम्बार हो।

प्रिी प्रिीचि-प्रदीप्त प्रकाि िुम्हारा,
चदचदगन्त ज्योचि आलोक िुम्हारा;
अज्ञानािाकार-रचहि िजोराचि िहुँ ओर
व्याप्त सबमें सवपत्र ज्ञानालोक िुम्हारा।
अन्तज्योशि बशहज्योशिको प्रिाम बारम्बार, प्रशिपाि बारम्बार हो।

वि ज्योचि से चनत्य नूिन चदव्य कृपा-वषपण,
प्रेरेरि करिी मनन-मनोमंथन, 'चिदानन्द-चिन्तन',
सदा-सवपदा हम करें सवपस्व समपपण;
िभी हमारा चदव्य जीवन हो सानन्द सम्पन्न।
परात्पर ज्योशि को प्रिाम बारम्बार, प्रशिपाि बारम्बार हो।

मयापदा पुरुषोत्तम श्री राम के दीक्तप्तमान् प्रारूपहिुम,
गीिोपदेिक श्री कृष्ण के चनत्य नूिन लीलास्वरूपहिुम।
गौिम बुद्ध के करुणैक रूप, औ' संकीिपनरासमेंगौरांगहिुम
चवश्ववंद्य सद्गुरुदेव के अपूवप आदिप चिष्यत्वकेप्रचिरूपहिुम।
पररपूिण ज्योशि को प्रिाम बारम्बार, प्रशिपाि बारम्बार हो।

प्रस्थानत्रयी (उपचनषद्, गीिा, ब्रह्मसूत्र) के उत्तम सार हो िुम,
ब्रह्मित्त्व, ब्रह्मचवद्या, अष्टांग योग साकार हो िुम;
गीिा-रामायण-सङ्ग्रन्थों के साराचिसार हो िुम;
सनािन वैचदक धमापिरण के सुक्तस्थर आधार हो िुम।
ब्रह्म ज्योशि को प्रिाम बारम्बार, प्रशिपाि बारम्बार हो।
'आलोक-पुंज' के आलोक, 'ज्योचिपथ की ओर', '
नूिन िुभारम्भ' के प्रेरेरक हो िुम,
'जीवन स्रोि' के आचद स्रोि, 'गीिा ित्त्व दिपन' के ममपज्ञ हो िुम,
'मानविा से' 'मोक्ष सम्भव है' , चदखाया 'िोकिाकिी-पथ', 'मुक्ति पथ',
'मननीय सत्य', 'िाश्वि सन्देि' िुम्हारा- 'जाचगए अपने चदव्यत्व को पहिाचनए'।
ज्योशिज्योंशं को प्रिाम बारम्बार, प्रशिपाि बारम्बार हो ।।

'श्रीधाम', शदव्य जीवन संघ मुख्यालय

शिवानन्द आश्रम, ऋशषकि (उत्तराखण्ड)

वे हमें जाग्रि करि हैं!

– स्वामी ेजौमयानन्द सरस्वी जी महाराज-

(परम पूज्य श्री स्वामी ेिजोमयानन्द सरस्वी जी महाराज, परमाध्यक्ष, शवश्वव्यापक शिन्मयशमिन द्वारा गुरुदेव के पावन समाशध-मच्चन्दर में, शिवानन्द आश्रम, ऋशषकि परम पूज्य श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज को अशपणि श्रद्धा-सुमन)

ॐ श्री गुरुभ्यो नमीः ।

सवपप्रथम मैं ईश्वर से प्राथपना करि हाँ ेिथा परम पूजनीय और आराधनीय चिवानन्द जी महाराज और पश्चाि् स्वामी चिदानन्द जी महाराज को अपनी श्रद्धांजचल समचपपि करि हाँ। अत्र उपक्तस्थि हर एक को ेिथा सबको हररीः ॐ एवं ॐ नमो नारायणाय। थोडे चदन पूवप, आपने हमारे आदरणीय स्वामी चिदानन्द जी का र्षिोी समारोह आयोचजि चकया था। कुछेक सावपजचनक कायपक्रमों ं के कारण मैं आ नहीं ं सका, चकनुतु, ईश्वरकृ पा से आप सबके मध्य इस सायं-सत्संग में उपक्तस्थि रहने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है। मुझ पर अपने प्ेरम और से्नेह की वषाप करने के चलए मैं आप सबके आभार मानिा हाँ।

सन् १९७० में सान्दीपचन साधनालय में प्रचवष्ट् हुआ। सन् १९७४ में हम सब ब्रह्मिारी ऋचषके ेि आ कर आन्ध्र आश्रम में एक मास से अचधक रहे थे। उस समयावचध में हमें महात्माओं ं के दिपन का सुअवसर ेिथा सौभाग्य प्राप्त हुआ था। हम चिवानन्द आश्रम के दिपनाथप भी आये थे। बि मैं परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी का के वल प्रविन श्रवण कर सका, उनसे व्यक्तिगि चमलन या वैयक्तिक वािापलाप नहीं ं हुआ था।

मैं उनका अत्यन्त ऋणी हाँ कारण, जब हमारे परम पूज्य गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज सान चिआगो में उपिार के चलए भिी चकये गये थे ेिब हम सब वहाँ थे। स्वाभाचवकिीः हम सबउदासऔरदुीःखीथे।उससमयावचधमेंस्वामीजीमहाराजसंयोगसेवहीं ंथेऔरवे अस्पिाल में आये और उन्ोंनें सब चमिन-सदस्यों ं के साथ र्ाििीि की, उन सबको सानत्वना दी। कुछ समयपश्चाि्वेउसीवषपवाचिंगटनिी.सी.गये।

ििनक हम अपने स्वामी जी को खो बैठे, उनको महासमाचध प्राप्त हुई। उस समय हम सब युवा थे ेिथा कौन से धाचमपक संस्कार सम्पन्न करने थे, यह नहीं ं जानिे थे। चकनुतु स्वामी जी (परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज) वहाँ थे। वे वाचिंगटन िी. सी. में थे और मैंने उनसे टेचलफोन पर र्ाििीि की। उन्ोंनें मुझे सब समझाया कौन से धाचमपक संस्कार हैं, उनका कैसे प्रबि करना, चकस प्रकार (स्वामी चिन्मयानन्द जी का) भौचिक िरीर ध्यान मुद्रा में रखना और चकस प्रकार भौचिक िरीर भारि ले जाना।

मैं अनुभव करिा हाँ चक उनका मागपदिपन नहीं ंहोिा िो हम कैसे चदिान्ून्य होिे, कारण हम पूणपिया असहाय और चवचध-चवधान से अज्ञिा थे। िबसे मैं उन्हें स्वामी जी (ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज) के पद पर देखने लगा।

जो बाि मुझे सवापचधक चप्रय लगी, वह यह थी चक उन्होंने मुझे अपना आध्याक्त्मक भिीजा चनचदपष्ट् चकया। वे मेरा उस प्रकार से उल्लेख करिे थे, क्योंचक हमारे स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज उनके गुरुबन्धु थे। उनका चिष्य होने के नािे मैं उनके पुत्रसमान था। अिः वे मुझे अपना भिीजा कहिे थे। उस प्रकार ही मैं उन्हें अपना आध्याक्त्मक िाऊ कहिा रहा।

इसके अचिररि इन महात्माओं ंसे सम्बन्धिि रोचक बाि यह है चक उनके बाह्य व्यक्तित्व और स्वभाव चभन्न हैं। परन्तु, एक बाि में वे समान भूचमका और स्तर पर हैं। अपने स्वामी जी का हवाई अड्डे पर स्वागि करने जाना था, उसका मुझे स्मरण है। उनका सब-कुछ फौजी जैसा था- लगभग जनरल जैसा। वे त्वरा से बाहर आिे थे। मुझे याद है, एक बार मैं चकसी कायपक्रम के सम्बन्ध में स्वामी चिदानन्द जी महाराज का स्वागि करने गया था। अत्यन्त प्रिान्त! वे आये और हवाई अड्डे में बैठ गये। कोई उिावलापन नहीं।ं लोग आिे थे और उन्हें प्रणाम करिे थे। उन्होंने चकसी को भजन गाने को कहा, िारों ंओर बहुि से लोग एकचत्रि हुए थे ये सब िहल-पहल युि हवाई अड्डे पर! ऐसा पूणपिया चभन्न चित्र! पश्चाि् वे प्रस्थान के चलए धीरे से उठे। वे चभन्न-चभन्न भाषाएँ बोल सकिे थे। मेरी मािृभाषा मराठी है। इसचलए कभी-कभी वे मेरे साथ मराठी में भी बाि करिे थे।

इस प्रकार मेरी बहुि कम चकन्तु अचि सुन्दर, मधुर स्मृचियाँ हैं जो सवपदा प्रेरक हैं।

मैंने एक सन्देि प्रेचषि चकया था, चजसमें मैंने कहा था, **"स्वामी जी महात्माओं ंकी उस कक्षा के हैं शजनके दिणन से और शजनका सत्संग होने से व्यक्ति को ईश्वर के अक्स्तत्व में शवश्वास हो जायेगा िथा िपोमय सन्त सदृि जीवन की सम्भावना का प्रमाि शमल जायेगा।"** नाक्स्तकों ं के िथा आध्याक्त्मक जीवन के अननुभवी लोगों ं के मन में सदैव एक प्रश्न रहिा है-और वह प्रश्न है चक ये महात्मा लोग क्या करिे हैं? समाज िथा राष्ट्र में वे कौन सी भूचमका चनभािे हैं? उनका कायप क्या है? कारण, अनेक लोग मानिे हैं चक वे िो कुछ भी कमप न करके वहाँ मात्र बैठे रहिे हैं। चकन्तु जो महात्माओं ं के सम्पकप में आये हैं, केवल वे ही जानिे हैं चक वे क्या हैं! सबसे मुख्य और महत्त्वपूणप कायप जो वे करिे हैं, वह यह है चक वे हमें गहन अज्ञान-चनद्रा से जाग्रि करिे हैं। अपनी आत्मा के चवषय में हम गाढ़ चनद्रा में रहिे हैं। अन्य हर एक चवषय में हमारा ज्ञान अत्यचधक है, परन्तु स्व-चवषयक (आत्मा-चवषयक) हम कुछ भी नहीं ं जानिे। इसी कारण सवपप्रथम जो कायप वे करिे हैं, वह है-हमें जाग्रचि का आह्वान देिे हैं। वही सत्य उपचनषद् कहिे हैं-

"उशत्तष्ठि जाग्रि प्राप्य वराशन्नबोधि ।"

(कठोपचनषद् ३-१-१४)

(अरे अचवद्याग्रस्त लोगो! उठो , (अज्ञान-चनद्रा से) अनवरि जागो और श्रेष्ठ पुरुषों ंके समीपजाकरज्ञान प्राप्त करो।

वे कहिे हैं- उठो और जागो... वही सवापचधक महत्त्वपूणप कायप है जो वे करिे हैं।

कभी-कभी कोई हमें जगािा है िो उसके पश्चाि् हम नहीं ंजानिे चक हमें आगे क्ा करना है। वे हमें न िो मात्र जगािे हैं चकन्तु मागप भी चदखािे हैं। वही दूसरा कायप है जो वे करिे हैं और उस ध्येय-प्राक्तप्त पयपन्त हमारा पथदिपन करिे हैं। यह हमारा परम सौभाग्य है चक दीघपकाल पयपन्त यचद हमारे गुरु का साचन्नध्य हमें प्राप्त हुआ हो िो वह एक अद्भुि बाि है चक वे हमें ध्येय-प्राक्तप्त पयपन्त पहुाँचािे हैं। जो अन्य महत्त्वपूणप कायप वे करिे हैं वह यह है चक भगवन्नाम जपने की िथा ईश्वर के प्रचि प्रेमभाव रखने की उत्कृष्ट िृषा हमारे मन में उद्दीप्त करिे हैं। एक स्थान पर सन्त सूरदास जी कहिे हैं-

"सूरदास जाइये बशल िाके ,
जो हररजूं सीं ंप्रीशि बढ़ावै। "

जोहमारीप्रभुसेप्रीचिकोबढ़ायेउसके हमबचलहारी जाएाँ अथाचि्

वेकहिेहैंआपउसव्यक्तिमहात्माके रिणों ंमें अपना जीवन समचपपि कीचजए जो आपके हृदय में ईश्वर-प्रीचि उद्दीप्त करिे हैं।

यादरखना,ईश्वर-प्रेमचबनाहमारासम्पूणपजीवन िुष्क है। चजस प्रकार चभन्न-चभन्न ऋिुएाँ हैं चकन्तुयचदवषापनहींहोअकालपडेगा,सबस्थानों ंपर िुष्किा होगी।

गोस्वामीिुलसीदासकहिेहैं-ईश्वर-भक्तिवषाप-ऋिु समान है-

"वषाण रिु रघुपशि भगशि िुलसी साशल सुदास
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ।।"

-मानस बा. का. दो. १९

रामभक्ति वषाप ऋिु है, िुलसीदास जी कहिे हैं चक उत्तम सेवक गण धान हैं िथा 'राम' नाम के दो सुन्दर अक्षर 'रा' और 'म' (वषाप ऋिु) सावन-भादो के दो महीने हैं।

भावाथप यह है चक जब हम राम-नाम लेिे हैं और उसका जप करिे हैं िब राम-भक्ति का हमारे हृदय में उद्भव होिा है और वह भक्ति ही केवल हमें िृप्त करिी है। यही कायप है जो महात्मा करिे हैं।

महात्मा का कायप केवल वही है- यह प्रेम उत्पन्न करना, इस ज्ञान की चिक्षा देना और यह बाि उपचनषदों ंमें भी चनचदपष्ट की गयी है। इन महात्माओं ंके चवषय में उपचनषद् कहिा है-

"यं यं लोकं मनसा संचवभाचि
चविुद्धसत्त्वीः कामयिे यांश्च कामान् ।
िं िं लोकं जयिे िांश्च कामां-
स्तस्मादात्मज्ञं ह्यपयेद् भूचिकामीः ।।"

(मुण्डकोपचनषद्: ३-१-१०)

"वह चविुद्धचित्त आत्मवेत्ता मन में चजस-चजस लोक की भावना करिा है और चजन-चजन भोगों ं को िाहिा है वह उसी-उसी लोक और उन्हीं ं उन्हीं ं भोगों ं को प्राप्त कर लेिा है। इसचलए ऐश्वयप की इच्छा करने वाला पुरुष आत्मज्ञानी की पूजा करे।"

उनका सामथ्यप ऐसा है, मन इिना िुचिभूपि है चक चकसी के कल्याण-मंगल हेिु वे चजसकी भी मनोकामना करिे हैं, उनका वह संकल्प सत्य होिा है। अथापि् वह साकार होिा है। इसी कारण कहिे हैं चक कोई भी इस संसार में चकसी भी प्रकार की सुख-समृक्तद्ध का इच्छुक है िो उसे साक्षात्कारी व्यक्ति की उपासना करनी आवश्यक है। मानो चक कोई कहिा है चक मुझे भौचिक समृक्तद्धनहीं ंिाचहएिबवहकहिाहैचकआध्याक्तत्मकआत्मप्रकाि-प्रज्ञाहेिुभीमहात्माकी उपासना करनी िाचहए। उभय हेिु महात्मा को ही भजना िाचहए।

एक और बाि, उपचनषद् में कोई एक मंि है चजसमें कहा गया है-इस आत्मा को आप वेद अध्ययनद्वाराऔरप्रविनइत्याचदद्वारानहीं ंजानसकिे।

"यमेवैष वृणुिे िेन लभ्य . . . "

(कठोपचनषद् : १-२-२३)

"यह (साधक) चजस (आत्मा) का वरण करिा है, उस (आत्मा) से ही यह प्राप्त चकया जा सकिा है।"

यह आत्मा उसी के द्वारा प्राप्त हो सकिा है जो इस आत्मा की प्राक्तप्त के चलए इच्छुक है, आत्मा का समूपूणप वरण करिा है-उसकी प्राक्तप्त हेिु प्राथपना करिा है। इसचलए उत्तरदाचयत्व साधक के कंधों ंपर रखा गया है। चकन्तु अन्य अथपघटन भी है-उसको (चजस साधक को) ईश्वर ियचनि करिा है, वह व्यक्ति यह परम सत्य जान सकिा है। यद्यचप यह मंि मुण्डकोपचनषद् में भी है, जो आत्मसाक्षात्कारी महात्माओं ंकी महत्ता के सन्दभप में है। इस कारण िीसरा अथपघटन भी है। मात्र आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति और गुरु जब चिष्य का ियन करिा है िब वह व्यक्ति आत्मानुभूचि करिा है। इसचलएसभी िीनों ंअथपघटन अद्भुि हैं।

"यमेवैष वृणुिे िेन लभ्यः
िस्यैष आत्मा शववृणुिे िनुं स्वाम् ।।"

(कठोपचनषद् : १-२-२३)

ये सबकेवलउसीसन्दभप में कहरहाहूँ चकमैं स्वामीचिदानन्दजीमहाराजजैसे महात्माओं ं को चकस दृचष्टकोण से देखिा हूँ। वे महात्माओं ं के उस वगप अथवा श्रेणी में हैं, चजनका कायप अचि अद्भुि है और इस कायप के चलए हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

हम सन्त-संन्यासी-महात्मा की महासमाचध के अवसर पर 'मृत्यु' िब्द का कदाचप प्रयोग नहीं ं करिे, सि है न? कारण वे सदैव ब्रह्मस्वरूप हैं-वह िरीर में भी रहिे हैं और महासमाचध के पश्चाि्भीरहिेहैं।उपचनषद्मेंइसिरहवचणपिचकयागयाहैचक-

"गिाः कलाः पंिदि प्रचिष्ठा

देवाश्च सवे प्रशिदेविासु।
कमाणशि शवज्ञानमयश्च आिा
परेऽव्यये सवण एकीभवच्चन्त।।"

(मुण्डकोपचनषद् : ३-२-७)

"(प्राणाचद) पिह कलाएँ (देहारम्भक ित्त्व) अपने आश्रयों ्में क्तस्थि हो जािी हैं, (िकुषु आचद इक्तियों ्के अचधष्ठािा) समस्त देव गण अपने प्रचिदेविा (इत्याचद) में लीन हो जािे हैं िथा उसके (संचिाचद) कमप और चवज्ञानमय आत्मा आचद सबके सब पर, अव्यय देव में एकीभाव को प्राप्त हो जािे हैं।"

एक ही परमात्मा है चजनसे नाम-रूप युि सम्पूणप चवश्व का उद्भव हुआ है और वह सम्पूणप चवश्व पिंह कलाओं ्से चनचदपष्ट है जैसे:-प्राण, पंि महाभूि ित्त्व इक्तिय, िरीर, अन्न आचद-आचद। अब वे कहिे हैं जब आत्मानुभूि व्यक्ति इस देह का त्याग करिा है-चजसे महासमाचध कहिे हैं, िब क्या घचटि होिा है? जहाँ िक उस व्यक्ति का सम्बि है, उसकी सब कलाएँ और संचिाचद कमप इत्याचद परमात्मा में चवलीन हो जािे हैं। चकन्तु अब, देखो, एक उपचनषद् कहिा है चक कलाएँ सोलह है चकन्तु मुण्डकोपचनषद् में कहा गया है-

"गिाः कलाः पंिदि...'

पिह कलाएँ हैं। पिह कलाएँ परमात्मा में चवलीन होिी हैं। यहाँ प्रश्न उठिा है चक सोलहवीं ्कला का क्या होिा है? वह सोलहवीं ्कला, 'नाम' है-नाम का क्या होिा है अथाप्ि वह सोलहवी कला-नाम-संसार में रहिा है। अन्य सब चवलीन हो सकिी है चकन्तु एक कला यहाँ संसार में रहिी है और उसे नाम' कहिे हैं- 'नाम'। आप जानिे हैं चक भक्तिास्त्र् में कहा जािा है- "प्रभु से बडा प्रभु का नाम!" महात्मा का नाम स्वयं से भी महत्तम होिा है और वह नाम यहाँ रहिा है। वह नाम प्रेरणा देिा है। वह नाम पावनकारी है। वह नाम प्रेरक, प्रोत्साहक है। वे सब, जो इस ज्ञान के सिे-यथाथप- साधक हैं, वे इस नाम के सामथ्यप पर परमोि चिखर प्राप्त करिे हैं।

इस कारण, इन सब महापुरुषों ्का जीवन अत्यचधक चवचिष्ट है। उनका जीवन अनूठा होिा है। एक जगह मैंने पढ़ा था चक कोई एक व्यक्ति परमेश्वर को चमला। ईश्वर के साथ चमलन कैसे होिा है, यह जानने के चलए मैं उस व्यक्ति को चमलना िाहिा हाँ। जो भी हो, चकसी भी प्रकार, वह प्रभु को चमला और उसने ईश्वर को कुछ प्रश्न चकये। एक प्रश्न था, "मानव जाचि में कौन सी बाि सवापचधक चवस्मयजनक है?" चफर उस व्यक्ति ने प्रभु से पूछा, "हे प्रभु, ये मानव कुछ चवचित्र हैं। मुझे कौिूहल होिा है। उनकी कौन सी बाि आपको आश्चयपजनक लगिी है?" वे (प्रभु) कहिे हैं, "अनेक बािें मुझे चवस्मयपूणप लगिी है चकन्तु एक बाि यह है चक लोग जब इस जगि् में रहिे हैं िब वे इस प्रकार जीवन व्यिीि करिे हैं, जैसे उनकी मृत्यु कदाचप नहीं ्होगी और जब उनकी मृत्यु होिी है, वे इस प्रकार मृत्युिरण होिे हैं जैसे वे कभी जीवन्त नहीं ्थे। मानव चवषयक यही बाि मुझे आश्चयपूणप लगिी है।"

उनका जीवन अथपहीन होिा है, उनकी मृत्यु भी अथपहीन होिी है। परन्तु प्रज्ञावान् लोगों ्के जीवन अचि प्रिंसनीय, अद्भुि होिे हैं। एकदा, हमारे स्वामी जी ने कहा- "यचद आपका जन्म

हुआ है ि◌ो आपकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। चकन्तु जीवनावचध में कभी भी मरना नहीं ◌ंपरन्तु अपनी मृत्यु पश्चाि् भी जीवन्त रहो।" मृत्यु पश्चाि् भी आप जीचवि रहे हो।" इसी कारण यह कहा गया है–

"यच्चस्मन् जीवचि जीवच्चन्त बहवः सोऽत्र जीवचि।"

केवलउसीव्यक्तिकाजीवनसाथपकहैचजसकाजीवनलाखों ◌ंलोगों ◌ंकेचलएप्रेरणास्रोि बनिाहै।आपत्यागऔरसेवामयजीवनर्विीिकरो।सबमहात्माइसीप्रकारकेहैं।वेअचि सुन्दरढंगसेजीवनर्विीिकरिेहैं।उनकाजीवनसाथपकहोिाहैऔरवेअन्यकोप्रेररिकरिे हैं।वेदूसरों ◌ंकोजीवनअथपूणपएवंसफलिापूवपकर्विीिकरनेकीप्रेरणादेिेहैं।जबहमइस संसारसेचवदाहोंगेिोबसाथपर्किाथासुख-सन्तोषसेप्रयाणकरेंगे।पररपूणपिाकी,सन्तुचष्टकी भावनासेप्रयाणकरेंगे।वहीऔरउसीप्रकारकाजीवनमहात्माओं ◌ंकाहोिाहै।औरसभी महात्मािाहेदुचनयामेंचकसीभीस्थानमेंहों,◌ंवेहमारेपूणपआदर-सम्मानऔरआराधनाके अचधकारी हैं। मैं उन सबको नमन करिा हाँ। जैसे चक भगवान् ि◌ंकरािायप जी ने कहा है-

या इमे गुरु शवपूवणम् परावाक्म् प्रमििा:,
व्याख्यािा सवण वेदान्त: ि◌ाशन्नत्यम् ििप्रोस्म्याहम्।

(आचद ि◌ंकरािायप)

"मैं उन सब महान् गुरुओं–चजन्होंने आत्मज्ञान प्राण चकया है ि◌था उसकी चविद व्याख्या करके उसे प्रचिपाचदि चकया है उन्हें चनत्य प्रणाम करिा हाँ।"

मैं वही बाि यहााँ कह रहा हाँ। परम पूज्य स्वामी चिवानन्द जी महाराज ि◌था चजन्होंने हाल ही में महासमाचध ली है ऐसे हमारे स्वामी चिदानन्द जी महाराज को मेरी अचिचय सम्मानपूवपक श्रद्धांजचल। आप सब, चजन्होंने अपने मध्य होने का यह अवसर चदया उन सबका पुनीः पुनीः आभार मानिा हाँ। इन ि◌ब्दों ◌ंके साथ में अपने संचक्षप्त प्रविन का समापन करिा हाँ। प्रभु इससे प्रसन्न हों,◌ं सन्तुष्ट हों!◌ं

हररीः ॐ।

परमाध्यक्ष
शिन्मय शमिन, उत्तरकािी
(उत्तराखण्ड)

'साधुनां दिणनं पुण्यम्'

– महामण्डलेश्वर राजगुरु स्वामी शविोकानन्द भारिी जी महाराज

सवपप्रथम मैं यह उद्गार चलखे चबना आरम्भ नहीं ◌ंकर सकिा चक परम श्रद्धेय स्वामी चिदानन्दजीमहाराज पूज्यपाद स्वामी चिवानन्द जी महाराज की चवभूचियों ◌ंमें से प्रथम चवभूचि थे। यह इनविनों ◌ंसे स्पष्ट होिा है चक-

"शिदानन्द शिदानन्द शिदानन्द हूँ।"

-स्वामी चिवानन्द

यही संन्यास एवं वेदान्त का प्रचिपाचदि चवषय है। स्वामी चिवानन्द जी महाराज द्वारा संकक्तल्पि िथा संस्काररि चदव्य िब् बचहरंग अन्तरंग साधनों ंसचहि साध्य के सार को अपने में समाचहि चकया हुआ है। चदव्य िब् के सार के साथ अविरण हुआ है चिदानन्द िब् का। यह बि् ब्रह्म स्वरूप, ब्रह्म के साथ अचभन्न है। 'बिावीः चिव भिाश्व' के चसद्धान्त के अनुसार भौचिक िरीर से हमारा चमलन विपमान में हुआ है परन्तु किृोपासका के चसद्धान्त के अनुसार इस गुरु परम्परा में हम अनेक जन्मों ंसे गुरु िरणों ंमें आश्रय प्राप्त कर चदव्य जीवन की यात्रा करि आ रहे हैं।" "**अनेकजन्म- संशसद्धस्तिो याशि परां गशिम्।'** के अनुसार गुरुपरररवार का भी जन्मान्तरीय सम्बि हैिा है।

सन् १९९४ में जब पुष्पा मिाा जी से स्वामी जी के बीकानेर आगमन के समिाार चमले िो 'साधुनां दिपनं पुण्यम्' की अपेक्षा से मैंने बीकानेर से बाहर जाना स्थचगि चकया। पूज्यपाद स्वामी चिवानन्द जी महाराज का चमलनसार स्वभाव मुझे स्मरण था। स्वामी चिदानन्द जी महाराज से मुझे आिा थी चक पूज्य स्वामी चिवानन्द जी के ज्ञान के समान हो उनका ज्ञान और साधना होगी। वेदान्त चसद्धान्त भी कहिा है चक चिष्य गुरु स्वरूप को ही प्राप्त कर लेिा है। श्री राम भगवान् भी कहिे हैं चक

मम दरसन फल परम अनूपा।
जीव पाव शनज सहज स्वरूपा।।

(अरण्यकाण्ड ३५ दो. ५ िौ. रा. ि. मा.)

वेदान्त ग्रन्थों ंमें भी कहा गया है चक कमप, भक्ति और ज्ञान की प्रििीक गंगा-गंगासागर में चमलने के बाद प्रचिरूप हो जािी है। उसी िरह स्वामी चिदानन्द जी महाराज भी चिवानन्द स्वरूप ही हो िुके थे।

परम श्रद्धेय स्वामी चिदानन्द जी के बीकानेर आगमन से बीकानेर का सत्संगी समाज एवं सन्त समाज मुखर हो उठा। इससे भी अचधक स्वामी चिवानन्द जी महाराज के चिव संकल्प को बीकानेर में पुक्तष्पि पल्लचवि करने में मेरे गुरुदेव स्वामी सोमेश्वरानन्द जी महाराज का सहयोग सक्तम्मचलि रहा है। उन्हीं ंके कर कमलों ंसे बीकानेर चदव्य जीवन संघ का िुभारम्भ १९६२ में हुआ। बीकानेर वाचसयों ंके कल्याण के चलए इस कायप में श्रद्धेय मिाा जी स्वणपलिा अग्रवाल (ब्रह्मलीन चवष्णुिरणानन्द मिाा जी) का भी भगीरथ सहयोग रहा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव के इस चिव संकल्प के प्रचि मैं अपना किपव्य आजीवन पालन करिा रहूँगा। स्वामी चिदानन्द जी में पूवप और पचश्चम का सनुिुचलि समन्वय देख कर मुझे प्रेरणा चमली। श्री धनीनाथ पंमिक्तन्दर, बीकानेर पररसर में २४-३-९४ के चदन जब स्वामी जी महाराज ने प्रविन से पूवप संकिीपन चकया िो मैं उनकी चनष्ठा का पररिय पा गया। "चजस हाल में चजस दिे में चजस वेि में रहो, राधा-रमण राधा-रमण राधा-रमण कहो!" प्रकाण्ड पक्तण्डि िथा चवदिेों ंकी यात्रा चकये हुए स्वामी जी की मौचलकिा का इसी किीपन से पूणप पररिय हो गया। स्वामी जी की सहजिा और सरलिा से प्रविन में सनािन धमप की परम्परा स्पष्ट् झलकिी थी। बीकानेर के चवचभन्न धाचमपक स्थानों ंपर स्वामी जी के विनामृि से लाभाक्तन्वि होने का श्रेय गंगा सदृि पचवत्र हमारी साध्वी बचहन पुष्पा जी को जािा है। **"योजकः ित्र दुलपभः"** सदैव छाया की िरह पुष्पा बहन जी का अनुसरण करने वाली साध्वी वंदना बचहन की सेवा भी स्वामी जी के प्रसाद को प्रसाररि करने में प्रेरणा देने वाली रही है।

"वन्देे गुरु परम्पराम्" इस चसद्धान्त के प्रबल उपासक और समथपक स्वामी जी ने अपनी साधिुा से िथा चनमपल प्ेरम से हमारा मन आकचषपि चकया। महान् सन्त कल्पवृक्ष के समान हिोा है। गीिा में भगवान् ने परम्परा का ध्यान रखने का आग्रह चकया है- **"एवं परम्पराप्रािशममं राजषणयो शवदु:।"** (गीिा :४-२) कमप उपासना और ज्ञान के चवषय में भारीियों ंको कुछ अलग से सिोने, समझने और करने की आवश्यकिा नहीं ंहै। आवश्यकिा है िो कुछ मानने की। हम जान बहिु लिे हैं, लेचकन हम मानने में चपछड जिे हैं। कुछ लोग अपनी बुक्तद्ध का व्यायाम करिे हुए कहिे चफरिे हैं चक नया ज्ञान नयी क्राक्तन्त। भगवान् श्री कृष्ण गीिा में कहिे चक **"स एवायं मया िेऽद्य योग: प्रोि: पुरािन: ।"** (गीिा : ४-३) कृिज्ञिा के साथ परम्परा को िथा सत्य को स्वीकार करने वाला ही सही संन्यासी हिोा है। पूज्यपाद करपात्री जी महाराज कहा करिे थे चक वैचदक सनािन धमप के अनुसार वणापश्रम चनष्ठा से स्वयं का िथा दूसरों ंका कल्याण करना िाचहए।

पूरा प्रयत्न करना िाचहए लोगों ंको सनािन धमप से जोडने का, यचद ऐसा होवे नहीं ंिो अवैचदक व्यक्तिवाद और व्यक्तिपूजा के प्रवाह में बहने से स्वयं को बिाना िाचहए।

पूज्यपाद चिवानन्द जी महाराज की परम्परा की यह चविेषिा रही है चक आपने साधकों ंको सनािन धमप में समाचहि करिे हुए पाश्चात्य साधकों ंको सनािन धमप में ज्ञान एवं चवज्ञान के द्वारा समाचहि चकया।

स्वामी चिदानन्द जी महाराज के बीकानेर सत्संग का सवापचधक व्यावहाररक और पारमाचथपक लाभ मुझे हुआ है यह मैं सहज स्वीकार करिा हाँ। एक बार मैंने एक चभखारी को कहिे सुना चक "िू दस पैसा देगा िो वह दस लाख देगा।" यही घटना हमारे साथ भी हुई। हमने स्वामी जी के चलए चकया और सुना थोडा, लेचकन स्वामी जी ने सदैव के चलए हमें अपने प्ेरम में समाचहि कर चलया और जो चदया वह अनन्त ।

जयपुर िाखा द्वारा बसही में आयोचजि योग चिचवर श्रदे्धेय स्वामी चिदानन्द जी के साचन्नध्य में िथा मेरी अध्यक्षिा में सम्पन्न हुआ। चजस प्रकार गंगा, गौमुख से गंगासागर िक अचधक चवस्तार एवं सार सचहि साथपक है उसी प्रकार स्वामी जी का सत्संग बीकानेर से ब्रह्मसागर िक हमारे चलए साथपक हुआ है। जयपुर िाखा से स्वामी जी ने अपने अपरोक्ष संकल्प से मुझे सदा के चलए जोड चदया था। समूपूणप चिवानन्द चमिन के दरवाजे अनन्त की प्राक्तप्त के चलए खोल चदये। जयपुर िाखा के द्वारा आयोचजि मेरा िािुमापस मुझे जयपुर में एक आश्श्रम प्राप्त करा गया। जयपुर में अलग से आश्रम बनाने की इच्छा को जयपुर िाखा के साधकों ंकी सेवा ने चवराम दे चदया। यद्यचप में समय अभाव के कारण चमिन को समय नहीं ंदे पािा हाँ िथाचप मुझे साधकों ंसे और सन्तों ंसे जो सम्मान और प्ेरम चमला और चमलिा है वह श्रदे्धेय स्वामी चिदानन्द जी का कृपा प्रसाद ही है। वैसे ऐसे महान् आत्माओं ंकी कृपा प्राप्त करने के चलए सम्मान एवं अपमान का चविार नहीं ंहोना िाचहए। बीकानेर िाखा को बीकानेर के श्रद्धालुओं ंके सहयोग से पुक्तष्पि पल्लचवि करने के पुरुषाथप में संलग्र पुष्पाबचहन ने जब यदा कदा अपने श्रद्धा सुमन श्रदे्धेय महाराजश्री िक पहुाँिाने की सेवा मुझे सौंपी िो मुझे अपने पुण्यपाक का फल अनुभव हिो महसूस हुआ।

पूज्यपाद स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने चदव्य जीवन के चलए चदव्य दृचष्टदान का अचभयान समूपूणप चवश्व में िलाया। श्री भगवान् कृष्ण ने इस दान की ही परम्परा का गीिा में चविेष उलेल्ेख चकया है- **"शदव्ंयं ददाशम िे िकुषु: पश्य में योगमैश्वरम्।"** (गीिा ११-८) चदव्य जीवन संघ की

योजनामेंभीपूज्यपादस्वामीचिवानन्द जी महाराज का यह सत्य संकल्प चिदानन्दकीप्राक्तप्तके चलएचनचदध्यासनकेरूपमेंसाथपक है। स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने ि लसीदासजीकीभावना कोसाथपककरिेहुएसाध्यस्वरूप स्वामी चिवानन्द चदव्यानन्द की प्राक्तप्त के चलए,सफलअनुष्ठान काफलअपनेसाधकों ंकेचलएसावपजचनक चकया।

श्रीगुरु पद नख मशन गन ज्योिी।
सुशमरि शदव्य दृशष्ट् शहयें होिी ।।
(रामिररिमानस, बा.का. दो. नं. ५ की िी, नं.३)

चदव्य जीवन संघ के इस चदव्य अनुष्ठान में हमारे जीवर का समय सफल हो यह भावना सदैव बनी रहे। गि चसिम्बा ०८ में विपमान अध्यक्ष श्रदे्धेय स्वामी श्री चवमलानन्द जी को िाल ओढ़ाने पर मुझे गौरव का अनुभव हुआ। श्रद्धेय स्वामी चिदानन्द जी के चनवास का दिपन कर दृचष्ट् पचवत्र हुई। गुरुदेव का चनवास सदैव के चलए साधना कक्ष के रूप में चनचश्चि करना यह भावना चदव्य जीवन संघ की गुरुगररमा और गुरुभक्ति की प्रिीक है। चदव्य जीवन के माध्यम से पावपिी जी की िरह जय सक्तिदानन्द जगपावन का अनुसिान करिे हुए, हम चवमलानन्द में जीवन मुक्ति का आनन्द प्राप्त करिे हुए चदव्य जीवन की यात्रा पूरी करें, इसी चिवसंकल्प के साथ आत्मीयजनों ंके प्रचि आभार।

"सह नौ यिः सह नौ ब्रह्मविणसम्"
श्रद्धांजचल सचहि!

आिायण महामण्डलेश्वर राजगुरु
धरनीधर पंचमच्चन्दर, बीकानेर

शदव्य स्मृशि

–श्री स्वामी संशवि् सोमशगरर जी महाराज –

"ब्रह्मशवद् ब्रह्मैव भवशि" ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्म ही हो जािा है।

"न िस्य प्रािा उत्क्रामने्ते" - ब्रह्मचवि् जीवनु्मि महापुरुषों ंके प्राणों ंका उत्क्रमण नहीं ं होिा। प्रारब्ध समाप्त होिे ही उनका सूक्ष्म िरीर स्थूल िरीर से अलग हो कर िब्ाचद पंि- न्मात्राओं ंमें सदा के चलए चवलीन हो जािा है।

भारिीय संसृ्कचि में ऐसे ही ब्रह्मज्ञाचनयों ंकी अटूट परम्परा रही है। इसी अदै्वि गुरु-परम्परा में चिवाविार रूप से जगद्गुरु आिायप श्री िंकर का आचवभापव हुआ। उन्ोंने वैचदक धमप एवं संसृ्कचि का उद्धार कर उन्ें नूिन ओज प्रदान चकया। उनके द्वारा प्रवचिपि परमहंस संन्याचसयों ंकी परम्परा में थे-परम गुरु ब्रह्मलीन श्रीमि् स्वामी चिवानन्द सरस्विी जी महाराज। आपश्श्री ने संन्यास परम्परा को एक नब समृक्तद्ध प्रदान करिे हुए- 'चदव्य जीवन संघ की संस्थापना की। परमगुरु

महाराज जी ने समाज, राष्ट्र व मानविा की सवपचवध सेवा करिे हुए जन-जन को ज्ञानामृि का पान करवाया। पूज्य महाराजश्री की 'योगासन और ब्रह्मियप' चवषयक पुस्तक ने आज से लगभग ५५ वषप
पूवप मेरे चकिोर चित्त में अचन-बीज का वपन चकया। चदव्य जीवन संघ द्वारा प्रकाचिि अन्य पुस्तकों ं
को पढ़ कर पररषूकृि हो रहे मेरे युवा-मन को एक दृढ़ सम्बल उस समय चमला जब मुझे पिा लगा चक जोधपुर इंजीचनयर कॉलेज के प्रिाायप प्रोफेसर गिप भी पूज्य महाराजश्री के अनन्य भि
और चिष्य थे।

१९७१ में मेरे संन्यास लेने के पश्चाि् १९८६ के हररद्वार कुम्भ मेले में मुझे प्रथम बार पूज्य
महाराजश्री के सदृचिष्य, चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष पूज्य श्री चिदानन्द जी महाराज के प्रविन
सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके दिपन और प्रविन में बरसिे ज्ञानामृि से आत्मा गहराई िक
चसंचिि और आलोचकि हुई। "यस्य देवे पराभक्तीः यथा देवे िथा गुरीः" (श्वेिाश्विर उपचनषद्ीः ६-
२३) इस उक्ति के वे जीवन्त रूप थे। उनकी कृि देह-यचष्ट् में समचष्ट् चसमट-चसमट कर चफर
नव-नव चक्षचिजों ंिक आलोक चवकीणप करिी हुई फैलिी थी। उनकी मृदुल वात्सल्यमयी मुस्कान में
मानो माँ, नानी, दादी, भारिी व ब्रह्मस्वरूचपणी जगदम्बा की मुस्कान झलकिी थी। उनके उज्ज्वल
नयनों ंसे करुणामय आलोक चनरन्तर बरसिा रहिा था।

सन् १९९४ में बीकानेर के चदव्य जीवन संघ िाखा में पूज्य श्री का कायपक्रम था। मैं भी
उस कायपक्रम में आमंचत्रि था। मैंने सभा-कक्ष में प्रवेि चकया। पूज्य श्री मंिपर चवराचजि थे। ज्यों ं
ही मैं मंिपर िढ़ा पूज्यश्री ने बैठे-बैठे ही भूचम िक स्वयं को झुका कर मुझे प्रणाम चकया। मैंने
अचवलम्ब वहीं ंदण्डवि् प्रणाम करिे हुए कहा- आपने यह क्ा चकया! प्रणाम िो हमें करना है। वे
अिीवापदात्मक मुद्रा में चंकंचिि मुस्करा चदये।

कायपक्रम के पश्चाि् पूज्य श्री कार मैं बैठ कर रवाना हो रहे थे। मैंने उनका िरणस्पिप
चकया। पूज्य श्री ने कहा- "प्रभु की बडी कृ पा है "यह सुनकर मैं आलोचकि एवं आनक्तन्दि हुआ।
मैंने उनें् बीकानेर में मानव प्रबोधन प्रन्यास आश्श्रम एवं लालेश्वर महादेव मक्तन्दर, चिव बाडी में
पधारने की प्राथपना की। मेरी प्राथपना को स्वीकारिे हुए वे श्री लालेश्वर महादेव मक्तन्दर चिवबाडी
बीकानेर भी पधारे। गभपगृह प्रवेि से पूवप नन्दी के पास उन्ोंनें महादेव को दण्डवि प्रणाम चकया
और चफर अन्दर प्रचवष्ट् हो कर भावाचवष्ट् हो कर भगवान् का पूजन चकया। इस चदव्य दृश्य को
देख कर मैं व अन्य साधक िथा भिगण अचभभूि हो गये।

पूज्य श्री का एक बार बीकानेर आगमन हुआ। मैं स्वागिाथप से्टिन पर गया। एक भि ने
उनें् चमठाई का चिब्बा चदया। उन्ोंनें चिब्बा खोला और खडे-खडे आकाि की ओर उनुमुख हो
कर ग्रास मुद्रा द्वारा भगवान् को भोग लगाने लगे इसे देख कर मैं आश्चयप िचकि हुआ और मानस
में कौंधं गया गीिा का यह श्लोक :

"वासुदेवः सवणशमशि स महािा सुदुलणभः"

(गीिा : ७-१९)

पूज्य श्री एक बार दचक्षण भारि में प्रविन कर रहे थे। प्रविन पूवप आपने ॐ का उच्चारण
चकया। वािावरण गम्भीर हो गया िथा आस-पास के वृक्षों ंसे ॐ का नाम चनकलिे सुनाई देने
लगा।

वहचदव्य ज्योचि गुरु ज्योचि में लीन हुई।

ऐसेसद्गुरु को, सत्त्द्र्ष्य को, गुरु परम्परा को, भगवान् श्री दचक्षणामूचिप को कोचट-कोचट नमन है।

मानव प्रबोधन प्रन्यास आश्रम
लालेश्वर महादेव मच्चन्दर, शिवबाडी
बीकानेर (राजथथान)

मि-ग्रहण की चक्रया अत्यन्त पचवत्र कायप है। इसे मन बहलाव का साधन नहीं ंमानना िाचहए। दूसरों ंकी देखा-देखी दीक्षा लेना उचि नहीं ंहै। अपना मन त्तस्थर िाचहए।
थिा चनश्चय दृढ़ करने के पश्चि् ही गुरु की िरण में जाना

-स्वामी शिदानन्द

शिदानन्द मंगलम्

–श्री स्वामी भक्तिचप्रयानन्द मिाा जी –

चिदानन्दसद्गुरु सवापचधक चप्रय क्ा मेरे ही?
नहीं, ं नहीं, ं वे िो चप्रयिम भिमात्र के।

केवल चित्रदिपन से पहिाने मैंने सद्गुरु?
नहीं, ं नहीं, ं जन्मोजन्म से अपनायें आपको, हे सद्गुरु!

स्वीरमात्र में ही आप बसे थे हे, गुरो?
नहीं, ं नहीं, ं िित्क्षण हृदय और आत्मा में आपने सदैव वास चकया, हे गुरो।

दिपन के पूवप ही क्ा यह हाल था मेरा?
नहीं, ं नहीं, ं प्रत्यक्ष दिपन से गुरुभक्ति की स्वणपमुहर-प्राप्ता हुई मैं।

आपके चदव्याचिचदव्य प्रथम दिपन से ही मैं िृप्त हुई क्ा?
नहीं, ं नहीं, ं आपके श्रीचवग्रह की अचधकाचधक दिपनिृषािा हुई मैं।

वषप उन्नीस सौ अस्सी में, पावन स्कन्दषष्ठी को,
मेरी मिदीक्षा में भवदीय िरणस्पिप सम्भव था क्ा?

नहीं,ः नहीं,ः काषायवस्त्रावृत्त आपके नखाग्र भी दृश्यमान न थे।
थिाचप, मेरे समान अपात्र, दीन को क्ा चनरिा चकया आपने?
नहीं,ः नहीं,ः अपार करुणा से आपकी पावन गोद में मस्तक रखने चदया आपने हे कृपाचनधे।

दिा, मैं पुलचकिा, उल्लाचसिा मात्र हुई क्ा, हे प्रभो ?
नहीं,ः नहीं,ः पूणपिया िरणागिा और चिर-आश्वाचसिा हुई मैं, हे चवभो।

अखण्ड नाम-स्मरण, साधनालीनिा, ब्रह्मचनष्ठा,
दैवी सम्पद् का आपके सुदृढ़ उपदेि का पालन चकया क्ा मैंने?
नहीं,ः नहीं,ः यत्निीः भी अचि अल्प प्रयासी बन पायी मैं, हे नाथा !

मेरी चनष्फलिा का क्ा चिरस्कार चकया आपने, दीनानाथा?
नहीं,ः नहीं,ः धैयप दे कर साधनारि और आिावादी रखी, हे क्षमाभूषण!

गुरुदेवरचिि चवश्वप्राथपना-पठन में, आप ही मेरे लक्ष्य,
प्रभु हैं, अज्ञाि था क्ा आपसे?
नहीं,ः नहीं,ः मृदुिा से, स्वयं की अपेक्षा गुरुदेव को केन्द्रिि करने का
अंगुचलचनदेि चकया आपने!

आपकी भौचिक अचवद्यमानिा से मैं िथा अगचणि
भिगण चविचलि हैं क्ा, हे ईश्वर?
नहीं,ः नहीं,ः प्रेम-भक्ति-चनष्ठा-समपपण-श्वास-प्राणरूप आपकी
प्रचिक्षण चवद्यमानिा सेहम अचविचलि हैं, हे परमेश्वर।

आप केवल देव, देवाचधदेव, महादेव, ईष्टदेव, उपास्य,
ध्येय हो क्ा, हे युगपुरुष?
नहीं,ः नहीं,ः आप ही सवपस्व, चनयन्ता, चनरंजन, चनलेप,
गुणांजन, वासुदेव, आचदकारण हो, हे पुरुषोत्तम ।

प्राकय, लीला, चवसजपन ही आपका कायप क्ा? नहीं,ः
नहीं,ः क्षर-अक्षर, मूिप-अमूिप, एक-अनेक रूप का आचवष्कार ही आपका कायप,
हे आचदनारायण।

आपकी अचवरि कृपामृिवृचष्ट की मैं केवल िृषािप और याचििा
हूँ क्ा, मम नाथा?
नहीं,ः नहीं,ः अद्यपयपन्त सुप्राप्त से कृिकृत्य, अचधकाचधक
भक्तिप्राचथपिा और क्षमायाचििा हूँ मैं, हे जगन्नाथा।

गुरुभाव की यह उचमप ही क्ा गुरुभाव-उदचध है, हे देव?

नहीं,ं नहीं,ं अन्तरक्तस्थि अपार गुरुभाव-जलचध का यह एक चबनदु है, देवाचधदेव!

ॐ ॐ ॐ

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय, शिवानन्द आश्रम, ऋशषकि (उत्तराखण्ड)

एक परम शप्रय, अनमोल, पुराना पत्र

–श्री स्वामी ओिस्वरूपानन्द जी महाराज (शबल स्वामी) , सशिव –

लगभग चपछले पिास वषों से पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज के साथ मेरे सम्बिों ंके समय में, चनस्सने्देह बहुि से स्मरणीय सुअवसर हैं। िथाचप, उनकी अपेक्षा पूज्य स्वामी जी का एक पत्र आपके सामने रखना िाहूँगा, क्ोंचक मेरी चकसी भी िब्ाचभव्यक्ति की अपेक्षा उनका यह पत्र उनके बारे में अचधक बिा पायेगा। इससे उनकी चवनम्रिा, उनका गहन आध्याक्तत्मक ज्ञान िथा आध्याक्तत्मक साधकों ंऔर उनके पररवारों ंिक के चलए उनका गहरा अपनत्व प्रकट हिोा है। इससे यह भी स्पष्ट् हिोा है चक हमारी िरह वे भी जानिे थे चक कचठन आध्याक्तत्मक अवचधयों ंमें से चनकलना कैसा हिोा है।

यह पत्र १९६२ में, उनके चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष पद पर आसीन होने से लगभग एक वषप पहले चलखा गया था। प्रथम चवश्व यात्रा के पश्चाि् उन्ोंनें गुरुदेव से एक रमिा-साधु बन कर केवल भगवान् पर आचश्रि हो कर अचनचश्चिकालीन अवकाि माँगा था। इसी समय के दौरान यह पत्र चलखा गया था-

'आपको सम्भविया आश्चयप हुआ होगा (और चफर आश्चयप करना भी बन्द कर चदया होगा!) चक इस स्वामी की ओर से दो िब्ों ंिक का भी पूणप मौन क्ों ंसाध चलया गया है। मानवीय व्यवहार के सामान्य स्तर के अनुसार साधारण िब्ों ंमें कहा जाये िो इस 'कठोर मौन' के चलए मुझे आपसे भारी क्षमा याििा करनी िाचहए। कई बािों ंमें मैं बहुि ही चववि हूँ। मुझे स्वयं ही नहीं ंपिा चक वह क्ा है जो चजन कामों ंको मैं एक समय कर लेिा हूँ, वही चकसी दूसरे समय करने चबिुल ही असम्भव हो जािे हैं। जब िक मैं भारि पहुँिा नहीं ंथा, यहाँ िक चक चनरन्तर यात्रा के समय में भी, मैं समय चनकाल कर आप सब अमरीकी साधक चमत्रों ंसे सम्पकप बनाये रख सका। जैसे ही भारि पहुँिा, सम्पकप बनाये रखना मेरे चलए एक संघषप बन गया और सारे प्रयत्न बेकार चसद्ध हुए।

'मैं २३ जनवरी को आश्रम पहुँि गया था, चकनु्तु दो मास िक एक भी पत्र को हाथ नहीं ं लगा सका। अप्रैल में मैं गुजराि की चदव्य जीवन संघ िाखा के चनमंत्रण पर वहाँ िला गया। मध्य मई िक वहीं ंके कायपक्रमों ंमें व्यस्त रहा और १३ मई को दचक्षण भारि की िीथपयात्रा पर िला गया। उसी चदन से मैंने कुछेक साधकों ंको बीि-बीि में रुकने वाले स्थानों ंपर (माँगे हुए टाइप-राइटरों ंसे) पत्र चलखने आरम्भ कर चदये हैं। इसी क्रम में आपकी बारी अब आई है। चकनु्तु मौन के इस समय में भी मैंने आपको चवसृ्मि नहीं ंचकया है, बक्ति बहुि बार चिन्तन में और मेरी प्राथपनाओं ंमें आप मेरे साथ रहे हैं; हाँ, आप, आपका पररवार और आपकी िरह ही परमात्मा की खोज में लगे हुए आपके साथी साधक भी! बारम्बार मैं उस परमात्मा से याििा करिा रहा हूँ चक

आपको सदैव 'प्रकिा' में रखें और आपकी अन्तरात्मा की कुषुधा को उनकी कृपा और प्ेरम द्वारा प्रतुयुत्तर चमले!

'आध्यात्त्मक आकांक्षा और खोज से चवहीन जीवन भी कोई जीवन है? यह ि्ुष्क, चनस्सार और खोखला है। वास्तव में ऐसा जीवन पूरी िरह से अथपहीन और सारहीन ही है। यह चनजीव िव की भााँचि है। जीवन का बाह्य रूप, घरेलु, सामाचजक िथा अन्य चक्रयायें भी हैं चकनुतु केवल यह एक ढााँिा मात्र ही हैं। भीिर की आध्यात्त्मक प्रगचि से रचहि यह "ढााँिा" एक ऐसे खाली मकान की भााँचि है चजसमें कोई र रहिा हो। वास्तव में जीना िो उस परमात्मा की आकांक्षा करना और उसे खोजना है; िथा उस चदव्य सत्ता को, साधना के द्वारा, भक्ति के, सेवा के द्वारा और जीवन के प्रचि आध्यात्त्मक दृचष्ट् रखने द्वारा-स्वयं में से प्रकचटि करना है।

'मिाप में श्री वासुदेव नारायण जी आश्रम में आये दे और मुझे भी कुछ देर के चलए चमले थे। मैंने उन्ें बिाया चक कैसे जब से मैं भारि लौटा हाँ, चकसी को भी पत्र नहीं ंचलख पाया। उन्ोंनें कहा, "कृपया कम से कम चबल को अवश्य चलख दें। उन्ोंनें अपने एक पत्र में मुझे आपके इस मौन के बारे में चलखा था, चबल की उपेक्षा न करें। चनचश्चि रूप से आपको ऐसा उसके साथ नहीं ंकरना िाचहए।" मैंने उन्ें बिाया चक उस समय मेरी त्तस्थचि, बत्ति मेरी अवस्था बहुि चवचित्र थी और यह भी कहा चक मैं प्रयत्न करूाँगा चलखने का। क्ा मैं परमात्मा के बालकों ं की अकारण ही उपेक्षा कर सकिा था? उस समय मैंने जो कुछ उनसे कहा था, वह इस समय कर पाया हाँ। भगवान् की इच्छा के आगे हम केवल मस्तक ही झुका सकिे हैं। चपछले सप्ताह मैंने श्रीमिी किोा को चलखा है। अभी िक स्वामी चवषुणु और स्वामी राधा को भी नहीं ंचलख सका, न ही आपके मौन्ेटेवीचियो साथी श्री उलररि हाटपसूकूह को और न आपके योरपीय साथी, िा. वाल्टर क्ेलेमेंट को। यह नकारात्मक सूिी िो असीम है। मैं अपने चलए ईश्वरेच्छा की प्रिीक्षा में हाँ। आध्यात्त्मक जगि् में यह त्तस्थचि कठोरिम में से है। िो भी यह उिनी ही अचनवायप भी है। जब कि प्रकिा की झलक नहीं ंचदखाई दे जािी िब िक व्यक्ति को इसमें से गुजरना ही पडिा है। चकनुतु दुीःखदायी बाि िो यह है चक प्रकिा-दान भी चनयत्ति सीचमि मात्रा में प्राप्त होिा है, मात्र केवल एक कदम भर आगे िक देखने के चलए ही। जबचक मानव की धैयपहीन प्रकृचि िाहिी है चक एक ही झटके में प्रकिा की पूणप प्रात्तप्त हो जाये चजससे िरम लक्ष्य िक का पूणप पथ प्रकाचिि हो कर जगमगा उठे! चकनुतु 'वह' क्ा इसकी चिन्ता करिे हैं? 'वह' िो अपने ही ढंग से िलिे हैं! अिीः व्यक्ति को अंधकार में ही संघषप करना पडिा है, और अंधकार ही केवल आगे चदखाई पडिा है। िो भी (ईश्वर की दया से) व्यक्ति को यह पिा होिा है उस अंधेरे में भी वह चनचश्चि रूप से हैं और वास्तव में अंधकार भी 'वही' हैं। ऐसा ज्ञान न हो िो अंधकारपूणप यह एक राचत्र व्यिीि करनी भी सम्भव न हो।

'नवम्बर में आपके पास से अिौ समय जो एक छोटी सी पुरानी पुत्तस्तका आपके चलए छोड कर आया था, उसमें से क्ा आपने उन 'फैनलोन के पत्रों' ं को पढ़ा? उरुगुए के रास्ेते में लन्दन से मैंने वह पुत्तस्तका ली थी और इसे देखिे ही मेरे मन में आया था चक मैं यह आपको दूाँगा, िभी से इसे साथ-साथ चलये घूमिा रहा और जब सामान बहुि अचधक बढ़ना ि्ुरू हो गया िब यह आपको भेज दी।

'मुझे पूणप चवश्वास है चक आप और आपके सारे पररवार में सब कुिल-मंगल से होंगें, बेवी का स्वास्थ्य और बिों ंकी चवकास-कालीन समस्याएाँ और काम-काज इत्याचद सभी कुछ ठीक

लि रहा होगा। भगवान् आपको सदा सही चदिा चदखिो रहें, और आनन्द, िाक्तन्त और िक्ति प्रदान करें। अब और कुछ मेरे कहने के चलए नहीं ंहै; जो-कुछ कहना था, वह उसी समय सब कह चदया था जब आप मुझे हवाई अड्े िक गाडी में छोडने के चलए आये थे। **आध्याच्चिक आकांक्षाओं ंको शदखावट या घोषिा करके प्रमाशिि करने की आवश्यकिा नहीं ंहोिी। इसको जीना होिा है और प्रशिक्षि, शनरन्तर अबाशधि रूप से जीना होिा है। यह सरल है। यह इच्छाओं ंके जीवन के प्रशि मर जाना और केवल मात्र परमािा के प्ेरम में जीना है।**

'इच्छाओं ंके प्रचि मर जाना ही वास्तव में जीना है। क्ोंचंक आध्यात्त्मक साधक के चलए इच्छाएँ वास्तव में मृतुयु हैं। आत्मा में जीने का अथप है, सब इच्छाओं ंको मार देना। इच्छाओं ंसे रचहि होना, यह जीवन के प्रचि किपव्यों ंको

नकारना नहीं ंहै। चकसी उद्देश्य पूचिप की इच्छा के चबना आप किपव्य समझ कर कायप करिे हैं। व्यक्ति इसमें ििर ििेना के द्वारा कमप करिा है, अथापि् इस कमप के द्वारा अपने मोक्ष के चलए कायपरि रहिा है। इच्छा-रचहि कमप बााँधिा नहीं ंहै। समूपूणप व्यक्तित्व में केवल एक ही इच्छा व्याप्त रहनी िाचहए- **परमािा को प्रा करने की इच्छा!** परम ित्त्व को जानने की इच्छा- ुभेच्छा करें ! इस ुभेच्छा का स्वागि करें और इसे सैंजोए रखें। इसे अपने सुरचक्षि कोष, अपने अन्तर में रखें। वास्तचवक आध्यात्त्मक जीवन केवल अभ्यासों ंया प्रचक्रयाओं ंकी दीघप शृंृखला नहीं ं प्रतुयुि 'बनना' या कुछ 'होना' है। चकनुतु िो भी कुछ अभ्यास या साधनाएँ हमें इस बनने या होने के स्तर िक पहुाँिने के चलए सहायिा करिी हैं। आकांक्षा करें, बनें और अभ्यास करें- यह िीनों ंचमल कर एक बनिा है।

'पुनीः मैं आपको चलख पाऊाँगा या नहीं,ं यह कोई नहीं ंजानिा। मैं स्वयं यह स्वीकार करिा हाँ चक इस समय में भी इस चवषय में कुछ नहीं ंजानिा। जब भी ऐसा हो सका मैं प्रयास करूाँगा। और चबल, यह बाि जान लें चक अब पावन गुरुदेव की कृपा आप पर पूणपरूप से है। मि भी हर ओर से आपकी देखभाल कर रहा है। यही आपके पथ का प्रकाि है, उस परम सत्य के आन्तररक ऊध्वपगमन में मेरी प्राथपनाएँ आपके साथ हैं। भगवान् सदैव आपके साथ हैं। गहन प्ेरम, ुभ कामनाएाँ- आपके चलए और आपके उन चप्रयजनों ंके चलए, जो भगवान् ने इस समय उनके चवकास के चलए अस्थाई रूप से आपको सौंपें हुए हैं- भेजिे हुए, अब समाप्त करिा हाँ। ॐ नमीः चिवाय!'

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम
ऋशषके
(उत्तराखण्ड)

आनन्दोऽहं आनन्दोऽहंआनन्ंदं ब्रह्मानन्दम्।
आनन्दोऽहं आनन्दोऽहंआनन्ंदं ब्रह्मानन्दम्।।

प्ेरम और करुिा के प्ेरेरक
स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज

–श्री –

सवपशक्तिमान् परम चपिा परमात्मा इस धरिी पर समय-समय पर अपने सने्दि-वाहक दूिों ं के रूप में महान् सन्त-महात्माओं ंको भेजा करिे हैं, चजससे चक वे सांसाररक आकषपणों ंकी प्रगाढ़ चनद्रा में सोये लोगों ंको जगा दें और उन्ें मनुष्य-जीवन के वास्तचवक लक्ष्य के सम्बि में बिा दें चजसके चलए उन्ें यह मानव-िरीर प्रदान चकया गया है। ऐसे ही महान् सन्त हैं हमारे परम पूज्य गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज जो चक अपने सन्त-स्वभाव और आध्यात्मिक उपलक्तब्धयों ं के कारण चवश्व चवख्याि ही नहीं,ं चवश्व-वन्दनीय भी हैं। स्वामी जी एक ऐसे आदिप सन्त और योगी हैं, चजनका बिपन से ले कर अन्त िक का समूपूणप जीवन चवचवध क्ेषेत्रों ंमें प्राणी मात्र की भलाई के प्रचि समचपपि रहा है। परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने उनके ३९ वें जन्म-चदवस के िुभ अवसर पर उनकी आध्यात्मिक उपलक्तब्धयों ंको देखिे हुए उन्ें 'अध्यात्म ज्ञान ज्योचि' की उपाचध से चवभूचषि करिे हुए कहा - "स्वामी जी जीवन-मुि सन्त हैं, उनका यह अक्तन्तम जन्म है।" उन्ोंनें यह भी कहा - "स्वामी चिदानन्द जी का जन्म-चदन मनाना भगवान् की पूजा है।"

चदव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव और चफर परमाध्यक्ष के पद पर रहिे हुए स्वामी जी महाराज ने भारि के समस्त राज्यों ंिथा चवचभन्न देिों ंका भ्रमण चकया। उन्ोंनें महान् गुरुओं ं की आध्यात्मिक धरोहर को लोगों ंमें बााँटिे हुए उन्ें जीवन के परम लक्ष्य – ईश्वर-प्राक्तप्त के प्रचि जागरूक ही नहीं ंचकया, प्रत्युि उसको प्राप्त करने के चलए चनदेि भी चदये। स्वामी जी ने िारीररक और मानचसक रूप से दुःखों ंऔर कष्टों ंसे चघरी मानव जाचि को उनके कष्टों ंसे मुि होने के चलए प्ेरेम, िाक्तन्त, सत्य, पचवत्रिा और परस्पर भ्रािृत्व-भावना का सने्दि चदया।

सौभाग्यवि मेरा चदव्य जीवन संघ (द चिवाइन लाइफ सोसायटी) के साथ १९६६ में उसकी राजा पाकप, जयपुर िाखा के माध्यम से सम्पकप हो गया। प्रारम्भ में मेरी चजज्ञासा योगासन सीखने की थी। जब मैंने ितत्कालीन जयपुर चदव्य जीवन संघ िाखा के सचिव आदरणीय श्री ईश्वरदास मल्होत्रा जी से योगासन सीखने आरम्भ चकये, िो मुझे उन्ोंनें गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के अनमोल आध्यात्मिक साचहत्य और िाखा के साप्ताचहक सत्संग की भी जानकारी दी िथा सत्संग में आने के चलए आमंत्रिि चकया। िाखा द्वारा संचालिि पुस्तकालय में से गुरुदेव द्वारा चलक्तखि 'जीवन में सफलिा का रहस्य िथा आत्मदिपन', 'मन-उसका रहस्य व चनग्रह' िथा 'साधना' पुस्तकें एक-एक करके लीं।ं गुरुदेव की पुस्तकें पढ़ कर मैं अत्यचधक प्रभाचवि हुआ, मुझे बहुि अचधक प्ेरेरणा चमली और मैंने िाखा के साप्ताचहक सत्संग में जाना आरम्भ कर चदया, िाखा का सचक्रय सदस्य बन गया िथा चिवानन्द आश्रम, ऋचषकेि भी दिपन करने िथा आध्यात्मिक मागपदिपन प्राप्त करने गया। भाग्यवि १९६७ में परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज जब जयपुर पधारे, िो उनके दिपन करके कृिाथप हो गया। बाद में अनेक बार मैंने

साधना-सप्ताह में भाग चलया िथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज व आश्रम के अन्य वररष्ठ स्वामीचजयों ंके भी सम्पकप में आया। १९७३ में जब परम पूज्य स्वामी जी चिदानन्द जी महाराज राजा पाकप, , जयपुर िाखा में पधारे, िब उनके रहने का प्रबि िाखा भवन के चबलकुल सामने एक नव-चनचमपि भवन में चकया गया था।
उस अवसर पर स्वामी जी महाराज ने कुछेक भिों ंको मि-दीक्षा देने की स्वीकृचि दी थी। दुभापग्यवि मैं फामप नहीं ंभर सका था, अिः मेरा नाम उन भिों ंकी सूिी में नहीं ंथा, चकनु्त दीक्षा के समय मैं वहीं ंउपक्तस्थि था। श्री जी. एन. बोधा जी, चजन्ें उसी समय मि-दीक्षा चमली
थी और िाखा के भी एक सचक्रय अचधकारी थे, ने मेरे चलए भी प्राथपना कर दी चजसकी स्वामी जी ने अत्यन्त कृपापूवपक स्वीकृचि दे दी और मेरी भी उसी चदन वहीं ंमि-दीक्षा हो गायी। मैं िो उसकी स्वप्न में भी कल्पना नहीं ंकर सकिा था। अिः मेरे आनन्द का पारावार नहीं ंथा िथा स्वामी
जी महाराज की दयालुिा के समक्ष मैं निमस्तक था। एक उद्धरण में ठीक ही कहा गया है माँगो! चमलेगा। खोजो! पाओगे।

स्वामी जी महाराज के करुणा और दयापूणप हृदय के द्वारा दुःखी प्राचणयों ंके ऊपर चविेष कृपा-वृचष्ट् के कुछ और उदाहरण हाचदपक कृिज्ञिा व्यि करने और सदा प्रेरणा प्राप्त करने के चलए वणपन कर रहा हाँ चजससे परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के अनमोल मि 'भले बनो, भला करो' को हम अपने जीवन में उिारने का सिि प्रयास करिे हुए दीन-दुःक्तखयों ं की चनःस्वाथप सेवा करिे रहें चजससे हमें आत्म-िुक्तद्ध और जीवन के परम लक्ष्य-भगवद्- साक्षात्कार में सहायिा चमले।

१. मेरी मािा जी, जो चक गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी के प्रचि गहन भक्ति-भाव रखिी थीं,ं मधुमेह, हृदय रोग िथा नेत्र रोगों ंसे ग्रस्त थीं।ं यह लगभग मई-जून १९७६ की घटना है चक उन्ें अिानक रिचिचत्तिा (bleeding under the skin) का रोग हो गया चजससे त्विा के नीिे से रि प्रवाचहि होने लगा, साथ ही श्वेि रि कोषाणु भी बनने बन्द हो गये। आये चदन नया रि चदया जािा रहने के बाद भी श्वेि रि-कण बढ़ने का नाम नहीं ंले रहे थे। हमारे पररवार के सब सदस्यों ंका रि एक ही ब्लि ग्रुप का होने के कारण रि-उपलक्तब्ध की कोई समस्या नहीं ंथी। उत्तम कोचट के िाक्टरों ंिथा चवभाग के िाक्टर-अध्यक्ष की देख-भाल में चिचकत्सा होने पर भी हालि चबगडिी जा रही थी। ऐसी क्तस्थचि में उनके चनकट, पररवार के िीन व्यक्तियों ं के अचिररि और चकसी को जाने की आज्ञा नहीं ंथी, क्ोंचक संक्रमण का भी भय था। उनके जीवन का अक्तन्तम समय आ िुका था, क्ोंचक एक चदन दोपहर २ बजे के लगभग िाक्टरों ंने हमें अपने नजदीकी सम्बक्तियों ंको बुला लेने के चलए कह चदया। हम गुरुदेव से प्राथपना करने के साथ-साथ अपना किपव्य चनभािे रहे। चकनु्त न जाने कैसे वह चदन चनकल गया और वह मािा जी के प्राण उस चदन नहीं ंगये, बक्ति उनकी दिा में सुधार होना िुरू हो गया। धीरे-धीरे वह पूणपिया स्वस्थ हो गई और उसके पश्चाि् लगभग सोलह वषप िक सुमराकल जीवन चजया। अस्पिाल महारण सोलह वषप िक सुवफल चजस चदन उनके जीवन का अक्तन्तम समय में मुझे बिाया चक चदन दोपहर को, "जब िुम भोजन करने गये थे िब स्वामी चिदानन्द जी महाराज आये थे और उसी कुसी पर बैठ गये चजस पर िुम बैठे हो। उन्ोंने मुझे आिीवापद चदया और प्रसाद भी चदया जो मैने उसी समय खा चलया। उन्ोंने मेरे माथे पर हाथ रखिे हुए कहा चक आप चबलकुल ठीक हो जायेंगी। ऐसा दो चदन लगािार हुआ।" मैंने उन्ें कहा चक आपने सपना देखा होगा, क्ोंचक स्वामी जी िो जयपुर में नहीं ंहै; चकनु्त उन्ोंने उत्तर चदया चक "नहीं,ं मैं जाग रही थी और मैंने उनका चदया

प्रसाद भी खाया है।" यहाँ यह बिाना महत्त्वपूणप होगा चक उनके हृदय में स्वामी जी के प्रचि अगाध श्रद्धा और पूणप चवश्वास था और वह जप भी बहुि चकया करिी थीं।ं बाद में जब स्वामी जी
महाराज जयपुर आबे और मैंने उन्हें सारी बाि बिाई, िो उन्होंने कहा चक यह सब भगवान् की कृपा है। ठीक कहा गया है श्रद्धावान् के चलए भगवान् दूर नहीं ंहैं।

स्वामी जी महाराज अत्यन्त कृपापूवपक हमारे घर आये और हमें आशीवापद िथा मेरी मािा जी को गुरु-मन्त्र भी प्रदान चकया।

२. चदव्य जीवन संघ, राजा पाकप शाखा ने १९९० में श्री चवष्णु महायज्ञ करने का चनणपय चलया। उस अवसर पर परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का भी कायपक्रम रखा था। चवष्णु महायज्ञ के चलए बहुि धनराचश की आवश्यकिा थी, अिः धन एकचत्र करने के चलए चार सदस्यों ंकी चवशेष सचमचि बनायी गयी गयी चजसमें श्री ओम प्रकाश बग्गा जी, श्री एन. के. धवन जी, श्री खैरािी लाल जी कचटयाल िथा श्री वेदप्रकाश ग्रोवर (स्वामी योगवेदान्तानन्द) थे। आवश्यक धन एकचत्र कर चलया गया, परन्तु दुभापग्यवश श्री ओम प्रकाश बग्गा जी कायपक्रम से लगभग दो चदन पूवप असह्य पीठ ददप से शैयाग्रस्त हो गये। बह करवट िक बदल पाने में असमथप थे। उन्होंने मुझसे कहा चक स्वामी चिदानन्द जी महाराज जैसे महान् सन्त के दशपन अवश्य करना चाहेंगे। अिः उन्होंने मुझे स्वामी जी महाराज को उनके घर चरण डालने और आशीवापद देने की प्राथपना करने का अनुरोध चकया। स्वामी जी महाराज के जयपुर पधारने पर जब मैंने उनसे प्राथपना की, िो उन्होंने उसी समय स्वीकृचि दे दी। अगले चदन प्रािःकाल हम स्वामी जी के साथ बग्गा जी के घर गये। उनकी दशा इिनी खराब थी चक वह उठ पाने और चहलने िक से चववश थे। लेटे हुए ही उन्होंने स्वामी जी को प्रणाम चकया और कहा चक उनकी अस्वस्थिा के कारण वह सायंकालीन कायपक्रम में भाग नहीं ंले सकेंगे। स्वामी जी ने उत्तर चदया, "जैसी भगवान् की इच्छा होगी, वैसा ही होगा।" बहाँ उस समय उनके घर-पररवार के लोगों,ं सम्बक्तियों,ं शाखा-सदस्यों ंऔर उनके पडोचसयों ंसचहि लगभग २५ लोग होंगें। स्वामी जी ने प्राथपना की और ित्पश्चात् सबको प्रसाद चदया। उस चदन सायंकाल सत्संग में यह देख कर हम सभी आश्चयपचचकि रह गये चक श्री बग्गा जी प्रसन्न मुख से वहाँ श्रोिाओं ंमें बैठे हुए थे। जब स्वामी जी सत्संग हाल में प्रचवष्ट हुए िो उन्होंने दण्डवि् प्रणाम करिे हुए स्वामी जी को धन्यवाद चदया। प्राथपना से बहुि कुछ सम्भव है! कोई भी सीमा नहीं।ं 'वो ही सवपश्रेष्ठ प्राथपना करिा है चजसके हृदय में सवपश्रेष्ठ प्रेम है।' इस घटना के वषों बीि जाने के बाद भी जब कभी हम परस्पर चमलिे हैं, िो वह हर बार सबसे पहले इसी अद्भुि और चमत्कारपूणप घटना का सबके है; सामने वणपन अवश्य करिे हैं और यह वाक् कहिे हैं-"उस चदन िो स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने कमाल कर चदया।"

३. एक अन्य घटना उसी समय के चदव्य जीवन संघ शाखा के कोषाध्यक्ष स्वगीय श्री एस. एन. महरा जी की है जो मेरे परम चमत्रों ंमें थे। श्री महरा जी शुद्ध और दयालु हृदय के, सेवापरायण, भि और भद्र पुरुष थे। डाक-िार चवभाग में वे वररष्ठ एकाउंट्स आचफसर थे। उनमें स्वामी जी के प्रचि गहन श्रद्धा और चवश्वास था। दुभापग्यवश उन्हें िम्बाकू खाने का दुव्यपसन था चजसके फलस्वरूप वे गले के कैंसर रोग से ग्रचसि हो गये। कुछ समय िक जयपुर में के सबसे बडे एस. एम. एस. अस्पिाल में उनका उपचार चलिा रहा और उन्हें कीमोथैरापी दी जािी थी। १९८७ में जब परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज जयपुर पधारे िब श्री महरा जी स्वामी जी से उनके चनवास-स्थल पर अलग से चमलने गये, अपनी रुग्णस्थचि बिाई और आशीवापद की याचना की। स्वामी जी ने उनके चलए प्राथपना की और वे गुरुदेव के आशीवापद से पूणपिया स्वस्थ हो गये

थिा उन्ें और अचधक कीमोथेरापी आचद की आवश्यकिा नहीं ंपडी। स्वामी जी ने उन्ें कहा, "भचवष्य में कभी भी िम्बाकू का सेवन मि करना।" कुछ समय पश्चाि् उन्ें िम्बाकू खाने की िीव्र इच्छा भडक उठी चजससे वे रोक न सके और यह सोि कर चक अब िो वह काफी समय से पूरी रिह ठीक हैं, उन्ोंनें चफर से िम्बाकू खा चलया। बस चफर क्ा था, पुनीः उसी रोग ने उन्ें ऐसा घेर चलया चक मिाप, १९८८ में उनका देहान्त हो गया। प्रायीः कैंसर के रोचगयों ंको अत्यचधक पीडा सहनी पडिी है, चकन्तु उनके साथ ऐसी अद्भुि क्तस्थचि देखी गयी चक अन्त समय िक उन्ें ऐसा कष्ट् नहीं ंझेलना पडा और उनके िरीर का अन्त िान्त अवस्था में हुआ। चलखने वाले ने चलख चदया लेख! चलख कर आगे बढ़ गया। होनहार हो कर ही रहिी है। प्रभु का नाम बडा है।

४. जनवरी १९९० में महाचवद्यालय से सेवाचनवृत्त होने पश्चाि् परम पूज्य गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने मुझे कहा था चक उनके मन में मेरे चलए कोई सेवा चकन्तु जब िक मेरी वृद्धा मािा जी जीचवि हैं, िब िक मुझे उनकी भली-भााँचि देख-भाल करनी िाचहए। जून १९९२ में मेरी मािा जी का देहान्त हो गया। उसके पश्चाि् मैं चवचभन्न िीथप स्थलों ंकी यात्रा पर िला गया। मिाप, १९९४ में स्वामी जी महाराज चदव्य जीवन संघ की बीकानेर िाखा में पधारे, िो मैं कुछ अन्य भिों ंके साथ उनके दिपन-आिीवापद पाने के चलए वहााँ िला गया। वहााँ स्वामी जी ने अपने चवश्राम स्थल पर बुला कर कहा- "अब आप कॉलेज की सेवा और मािा जी की देख-भाल से चनवृत्त हो गये हैं, अब आपके चलए आश्रम मुख्यालय में योग-वेदान्त फॉरेस्ट एकेडेमी में सेवा है। वह बन्द पडी है। उसे आपने पुनीः आरम्भ करना है।" यह सुनिे ही मैं भय-ग्रस्त हो गया। इसके दो कारण थे-पहला िो यह चक मुझे योग और वेदान्त के चवषय में कोई गहन ज्ञान नहीं ंथा। दूसरा, एकेडेमी िलाने के चलए स्वामीचजयों ंसे कैसे परस्पर िािीि आचद करनी िाचहए। इसके बारे में भी मैं कुछ नहीं ंजानिा था। अपना यह भय मैंने स्वामी जी महाराज को उसी समय बिाया। धैयपूवपक मेरी बाि सुनने के पश्चाि् स्वामी जी ने कहा, "मैं जानिा हााँ चक आप यह कर सकिे हैं।" स्वामी जी के िब् सुनिे ही मेरे मन से भव िुरन्त रफूक्कर हो गया और उसका स्थान उत्साह और आत्म-चवश्वास ने ले चलया। ित्काल मैंने उत्तर चदया चक "यचद स्वामी जी महाराज आश्वस्त हैं चक मैं यह कर सकिा हााँ िो मैं एकेडेमी में सेवा करने को िैयार हााँ।" स्वामी जी महाराज के चनदेिन में मई १९९४ में मैंने एकेडेमी में सेवा आरम्भ कर दी और िभी से अभी िक चपछले लगभग १५ वर्षों से चनरन्तर सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। चसिम्बर-अक्टूबर, १९९४ में हमने १८ वें योग-वेदान्त कोसप से आरम्भ चकया था और अब मािप-अप्रैल, २००९ में ६१ वााँ कोसप िल रहा है। यह परम पूज्य गुरुदेव और स्वामी जी महाराज की कृपा और आिीवापद है। सि िो यह है चक करने-कराने वाले वे स्वयं हैं, हमें सौभाग्यवि अपने यंत्र के रूप में िुना है। इसचलए हम सदा-सदा के चलए उनके आभारी हैं।

भगवान् और महान् गुरुओं ंकी कृपा अद्भुि और रहस्यमयी ढंग से बरसा करिी है। एकेडेमी की सेवा ने मुझे आध्याक्तत्मक पथ पर उन्नि होने के स्वचणपम सुअवसर प्रदान चकये हैं, क्ोंचक यहााँ मुझे महान् सन्तों ंके दिपन करने, उनके प्रविन सुनने और आध्याक्तत्मक पथ पर उनके चनदेिन प्राप्त करने का सौभाग्य चमलिा रहिा है। उदाहरणाथप, गुरु महाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने एकेडेमी में आने के पश्चाि् कहा था, "यचद चवपरीि पररक्तस्थचियााँ आयें िो उनके सम्मुख िट्टान की िरह खडे रहना और ईमानदारी िथा समचपपि भाव से गुरुदेव के िरणों ंमें सेवा करिे रहना।" उनकी यह आज्ञा मैंने सदा चिरोधायप रखी। कुछ एक चवपरीि पररक्तस्थचियााँ आईं और िली गईं; स्वामी जी के चनदेि को मैंने सदा याद रखा िथा अचिग खडा रहा, चजससे चवपरीि

पररक्तस्थचियाँ अनुकूल बनिी गईं और उनकी कृपा मुझ पर भााँचि सदा बरसिी रही। आश्रम में रहिे हुए मुझे गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज की प्रचसद्ध उक्तियों, ं "िोट को सहन करो, अपमान को सहन करो-यह सबसे उिकोचट की साधना है" "यह भी बिी जायेगा" (This will also passaway) इत्याचद को अभ्यास में लाने के सुअवसर चमलिे रहे। अपने दैचनक जीवन में मैं इन पर अभ्यास करने का प्रयत्न करिा रहिा हाँ और इससे मुझे िाक्तन्त चमलिी है। थिाचप अभी अध्यात्म-पथ की दीघप यात्रा िेष रहिी है। गुरुदेव की कृपा से एकिोमी की सेवा ने मेरे चलए अभ्यास करने के चलए अच्छा क्षेत्र उपलब्ध करवा चदया है।
स्वामी परम पूज्य गुरुदेव की ही भााँचि श्रद्धेय गुरु महाराजश्री चिदानन्द जी महाराज अध्यात्म-ज्ञान के प्रिार-प्रसार में गहन रुचि रखिे थे। ३ जुलाई १९४८ को जब योग-वेदान्त फारेस्ट युनीवचसपटी (अब एकिोमी) की स्थापना हुई िो परम पूज्य गुरुदेव ने स्वामी जी महाराज को इसके उप-कुलपचि िथा योग के प्रोफेसर के पद पर चनयुि चकया। चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष होने के निे अत्यचधक व्यस्त चदनियाप होने पर भी स्वामी जी महाराज जब भी आश्रम मुख्यालय में हिे ििे इस बाि का चविेष ध्यान रखिे चक प्रत्येक योग-वेदान्त कोसप में प्रायीः ८-१० चदन चवचभन्न चवषयों ंपर प्रविन देिे थे। चवद्याथी उनके दिपनों ंद्वारा और उनके प्रविनों ंद्वारा अत्यन्त प्रेरणा प्राप्त करिे थे िथा लाभाक्तन्वि हिे थे, क्योंचक स्वामी जी के प्रविन सरल अंगरेजी भाषा में हिे थे िथा चवषय का भूचमका सचहि चवस्तृि वणपन करिे थे। वे चवद्याचथपयों ंके प्रश्नों ंका सदा ही स्वागि करिे थे िथा उनके संियों ंका सहषप चनवारण करिे थे। प्रायीः वे अपने बहुमूल्य समय में से एकिोमी के उद्घाटन और समापन समारोहों ंकी िोभा बढ़ाने के चलए िथा चवद्याचथपयों ंका मागपदिपन करने के चलए समय चनकाल चलया करिे थे। िथा एकिोमी भली-भााँचि िलिी रहे इसमें भी स्वामी जी गहन रुचि रखिे थे।

परम पूज्य गुरुदेव िथा परम पूज्य गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज जैसे महान् सन्त देह त्याग देिे हैं, चकन्तु वे सदा अमर रहिे हैं। वे िो सवपव्यापक परमात्मा की सिे चजज्ञासु साधकों ंको चनदेिन और आिीवापद देने के चलए सदैव ित्पर रहिे हैं। इसका मैंने अपने जीवन में अनुभव चकया है। इसीचलए मैं इस सुअवसर पर परम पूज्य गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के िरणों ंमें गहन हाचदपक धन्यवाद अचपपि करने से स्वयं को रोकने में असमथप पा रहा हाँ, क्योंचक वे मेरी आध्याक्तत्मक पथ की साधना और योग-वेदान्त एकिोमी की सेवा में सदैव ठोस आधार और रक्षक बने रहे हैं। जब कभी एकिोमी सम्बिी चकसी प्रस्ताव को ले कर मैं उनके पास जािा था, वे उसी समय उसे स्वीकृचि प्रदान कर देिे थे, क्योंचक उन्हें यह चवश्वास हो गया था चक मैं उनके पास अनुचिि प्रस्ताव ले कर नहीं ंजाऊाँगा िथा उनमें व्यक्ति को अन्दर-बाहर से िुरन्त परखने की िक्ति थी। स्वामी जी महाराज की सहायिा, चनदेिन, प्रोत्साहन और कृपा के चबना मेरे चलए, विपमान क्तस्थचि िक पहुाँि पाना सम्भव नहीं ंथा। मुझे पूणप चवश्वास है चक जीवन के परम लक्ष्य की प्राक्तप्त के चलए भी यह कृपा सदा-सदा के चलए इस सेवक पर बनी रहेगी।

इस चवनम्र भेंट को अपपण करिे हुए आइए हम परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की अनमोल चिक्षाओं ंका स्मरण करें िथा इन चिक्षाओं ंके प्रचि जागरूक रहने का प्रयत्न करें-

"आप उस परम चपिा परमात्मा की चप्रय सन्तान हैं, चदव्यिा की एक चकरण हैं, पररपूणप िुद्धि िैिन्य- भगवान् के अनन्त सागर की िैिन्यरूपी एक लहर हैं। आप एक चवलक्षण अनमोल रत्न है, एक चदव्य हीरा हैं। अपने जीवन की चदव्यिा, पचवत्रिा, सत्यिा, दया, चनीःस्वाथपिा और उत्साहपूणप सेवा-भाव, भगवद्-प्रेम, चनयचमि ध्यान िथा साक्षात्कार से उद्भाचसि होने दें। अपने

दि और समस्त मानवा के चलए आप वरदान चसद्ध हों।ः गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज का आिीवापद आप सब पर हो।"

हररी: ॐ ि्ः सि्।

रशजस्टरार, योग-वेदान्त फारेस्ट एकिोमी
शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

स्वामी शिदानन्द कौन थे?

– श्री स्वामी शित्स्वरूपानन्द जी महाराज, सशिव-

स्वामी शिदानन्द थे नहीं ः**शनत्य दीच्चिमान् हैं,** कारण चक आत्मा अचवनािी है। संसार में असंख्य मनुष्य उत्पन्न हो िुके हैं, उत्पन्न हो रहे हैं और िब िक उत्पन्न होिे रहेंगे, जब िक संसार एक चदन स्वयं ही चवनष्ट् नहीं ःहो जािा। जो सिे अथों में जीवन यापन करिे हैं और अपने सत्कमों के माध्यम से अपना प्रभाव जमा जािे हैं केवल वही इचिहास बन जािे हैं चजससे केवल समकालीन जन ही नहीं ःबक्ति आने वाली पीचढ़याँ भी उनके जीवन, व्यक्तित्व और उपदेिों ःसे प्ेरेरणा पािी हैं। िेष सामान्य लोग जन्म लेिे हैं, थोडे समय िक जीिे हैं और अपने पीछे चकसी भी प्रकार का सूमृचिचिह्न छोडे चबना ही अन्तिः इस संसार से िले जािे हैं।

सूयप प्रचिचदन सन्ध्या के समय दूर चक्षचिज में अस्त होिा चदखायी देिा है, पर वास्तव में ऐसा नहीं ःहै। सूयप कभी अस्त नहीं ःहोिा, जबचक अस्त होिा जान पडिा है। यह अपने पररक्रमा पथ पर प्रकाि चवकीणप-रि िौबीस घण्े गचिमान रहिा है। अिः प्रकाि सदा ही रहिा है। यह प्रकाि कभी गुल (बुझिा) नहीं ःहोिा। सूयप जो चक्षचिज में अस्त होिा जान पडिा है उसका वही प्रकाि िािमा में प्रचिचबक्तम्बि होिा है। गगन में स्वामी चिदानन्द एक ऐसा चनत्य प्रकाििि नक्षत्र है जो सत्यान्वेषी साधकों ःका पथ-प्रदिपन कर उनको चनश्चयिः िाश्वि आनन्द, िाश्वि िाक्तन्त के उस चनत्य जीवन की ओर अग्रसर करिा है चजसे प्राप्त करने के उपरान्त और कुछ प्राप्त करना िेष नहीं ःरह जािा।

व्यक्ति के जन्म से अथाप् पालने से कब्र िक के जीवन का यचद ध्यानपूवपक अवलोकन चकया जाये िो हम जान पायेंगे चक जो कुछ भी कहा जािा है वह **'था'** और '**होगा'** अथाप् **भूिकाल** और **भशवष्य काल,** इस रूप में सम्बोचधि चकया जािा है। कोई भी विपमान को सम्बोचधि नहीं ःकरिा, इसकी पूणपिया उपेक्षा कर देिा है। जबचक यही मूलाधार है, और हम इसे ही भूल जािे हैं। मनुष्य यही भूल पीढ़ी दर पीढ़ी, जन्म-जन्मान्तर िक करिा िला जािा है। वह नहीं ःसमझ पािा चक 'विपमान' ही यहाँ सभी वस्तुओं ःका, अथाप् दृश्य (भौचिक) और अदृश्य (आध्याक्तत्मक) का केिचबन्दु है। अदृश्य को िमपिक्षुओं ःसे नहीं ःदेखा जा सकिा; चकन्तु उसकी अनुभूचि की जा सकिी है; परन्तु अनुभूचि की अचभव्यक्ति चकसी भी भाषा में नहीं ःकी जा सकिी, क्योंचक अचि प्रािीनकाल से ही अनुभूचि की अचभव्यक्ति करने में भाषा असमथप चसद्ध हुई है। अनुभूचियों ःका वणपन सदैव ही अपूणप रहा है, जब कभी उनके कथन का प्रयास चकया गया िभी

थिाकचथिमानदण्डभाषाचविारसमे्प्रेषणमेंअसफलचसद्धहुईहै।केवलवहीसत्यहै...उसे भाषाकेमाध्यमसेसमझनाऔरउसकीअनुभूचिस्वयंकोहोनिाथाइसेइसीमाध्यम(भाषा) द्वारावचणपिचकयाजाना-येदोनों ंपरस्परएक-दूसरेसेकोसों ंदूरहैं-अथापि्इसकीअचभव्यक्ति असम्भव है।

यहभीकहागयाहैचककेवलवहीभगवान्कोसवपव्यापीदेखसकिाहैचजसनेस्वयं भगवद्दिपनचकयाहो।केवलवहीचदव्यआत्माकेदिपनकरसकिाहै,चजसनेसंसारकोसंसार के रूपमेंनदेखकरिुद्धात्मारूपमेंदेखाहो।हमसभीजानिेहैंचकआत्माअमरहै।आत्मा सदा-सवपदाहै,चनत्यचवद्यमानहै,औरअनन्तहै।स्वामीचिदानन्द,ऐसिाथ्य-सत्यहैं,चजसको समक्षअपनेसत्यस्वरूप वही जानसकिेहैंचजनकिायनअहैिुकीकृपाद्वारास्वयंकरउनके को व्यिकरउसकीअनुभूचिकरिी

"सोई जानइ जेशह देहु जनाई।"

-अयोध्या कां. दो. १२६ ौ.२

("वही आपको जानिा है चजसे आप जना दिे हैं।")

अिः अन्तरपहस्य न ो भूिकाल में, न ही भचवष्य काल में चनचहि है, यह ो **'यहीं'** ं और **'अभी'** **'विणमान'** में ही चनचहि है।

स्वामी चिदानन्द जी महाराज का सबको **'उज्ज्वल अिान्** सम्बोधन करना, यह उनका स्वानुभिू प्रत्यक्ष बोध है, मात्र िब्जाल, कथन व उिारणमात्र नहीं।ं चदव्य ही चदव्यिा की अनुभूचि कर सकिा है। आत्मा ही आत्मा की

अनुभूचिकरसकिाहै।**'स्वामी शिदानन्द' 'थे','हैं,**औरआगामीअचवस्मरणीयसमय कि सदा-सवपदा**रहेंगे;**क्योंचंकआकािमेंयहचनत्यआलोचकिनक्षत्रपूणपिाप्राक्तप्तकेआकांक्षी साधकों ं का पिि मागप-दिपन करिा रहेगा। पहले ही कहा जा िुका है चक आत्मा चनत्य है। ईसाई धमप में कहा गया है चक चपिा, पुत्र और पचवत्र आत्मा एक ही हैं; चकनु्त सनािन धमप इसे चभन्न दृचष्कोण से वचणपि करिा है, यथा-अद्वैि, द्वैि, चवचिष्टाद्वैि इत्याचद। इसी प्रकार, भगवान् ने अपनी प्रचिकृ चि ही मनुष्य रूप में उत्पन्न की है जो पूणप है। यह भी कहा गया है चक मनुष्य ने अपना प्रचिरूप भगवान् में उद्भिु चकया है। यह भी सि है चक केवल मानव-जीवन में ही इस पूणपिाकीप्राक्तप्तकीजासकिीहै,औरमनुष्यभगवान्बनजािाहै-**मानव माधव बन जािा है।** केवल िुद्धात्मा ही इस पूणपिा को प्राप्त करिे हैं। केबल चवनम्र ही उन्नि व प्रोन्नि हिे हैं, और उनें चनश्चयिः ही पूणपिा की प्राक्तप्त होिी है। इस पूणपिा की प्राक्तप्त के उपरान्त मानव मानव नहीं ं रहिा, वह िुद्ध िैन्य हिा है, और यही िुद्ध िैन्य ही भगवान् है। अिः मनुष्य यचद इिनी महान्ऊाँिाइयों ंकेचिखरिकउठजायेऔरभगवान्सेएकात्मिाकीअनुभूचिकरलेिा वह स्वयंहीभगवान्होजािाहैअथापि्**नर से नारायि हो जािा है।**महान्आश्चयपजनक कारणयचदउसेलगिाहैचकउसमेंअभी ऊाँिाइयों ंकीप्राक्तप्तके बादभी**अशिय शवनम्रिा**के अभाव है; चकनु्त अन्तिः यह अभाव की भावना भी िभी चिरोचहि हो जािी है जब वह भौचिक कलेवर छोड दिेा है, िब होिी है यही पूणपिा की िुद्धावस्था।

यचद स्वामी चिदानन्द का अल्प िब्दों ंमें चित्रण करें िो यह कह सकि हैं- **यह सि् चिि् आनन्द (सच्चिदानन्द घन) स्वरूप हैं। गुरुदेव शनशदणष्ट 'शदव्य जीवन' की प्रशिज्ञात्रय, यथा- सत्य, अशहंसा, ब्रह्मियण का जीवन्त स्वरूप हैं यह। यशद कोई बाि या बडा बुजुगण उन्हें देखिा है िो उसकी यही सहज अशभव्यच्चि है, "यह शकिने पशवत्र हैं, शकिने ज्योशिमणय हैं!"**
इस सेवक का कथन है- "वह स्वयं ही पशवत्रिा हैं।" "वह प्रकािों ंके प्रकाि है।"

स्वामी शिदानन्द सत्य हैं और िुद्ध िैिन्य हैं। चजस क्षण आप इनके वणपन का प्रयास करेंगे, असफलिा ही हाथ लगेगी। क्योंचक अनुभूचि की अचभव्यक्ति चकसी भी भाषा में नहीं ंहो सकिी। स्वामी चिदानन्द कौन हैं? इसकी व्याख्या करना व्यथप ही है। साक्षात्कार प्राप्त सन्त अथवा अनुभूचि प्राप्त महात्मा गण (यचद वे िाहें िो) के चलए यह सरल है चक साधक को ऊँिाइयों ंके सचन्नकट अक्तन्तम छोर िक पहुँिा दें, परन्तु इस िरम सीमा से साधक को अगाध आनन्द-सागर में अक्तन्तम छलाँग हिु अपने अन्तस्थ गुरु पर चनभपर होना है। अिः आवश्यक है चक इस अक्तन्तम छलाँग द्वारा आपको परम आनन्द में चनमि होना है, और यह परम आनन्द है स्वामी चिदानन्द ।

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

श्रीगुरु िव स्मरि में

– श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज-

ॐ नमः शिवानन्दाय गुरवे शिदानन्दायमूिणये।
शनष्प्रपंिाय िान्ताय शनरालम्बाय िेजसे।।
शनत्यं िुद्धं शनराभासं शनराकारं शनरंजनम्।
शनत्यं बोधं शिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्।।

यह सेवक आश्रम में सत्ताइस वषों से चनवास कर रहा है। मुझे सभी भि गण 'समाचध-मक्तन्दर' के मुख्य पुजारी के रूप में जानिे हैं। गुरु महाराज जी के सभी आध्याक्तत्मक कायपक्रम, िाहे सायंकालीन सत्संग हो या प्रािःकालीन ध्यान-कक्ष जो चक समाचध-मक्तन्दर में हुआ करिे थे, उनमें मुख्य सेवक होने के कारण इस सेवक को महाराज जी के समुमुख बैठने का सुअवसर प्राप्त होिा था और महाराज जी की सेवा करने का सुअवसर भी प्राप्त होिा था।

श्री महाराज जी की समाचध के ठीक एक मास पूवप यह सेवक उनके दिपन करने गया था। मेरे साथ परम पूज्य श्री स्वामी चवमलानन्द जी (विपमान अध्यक्ष), स्वामी योगस्वरूपानन्द जी (उपाध्यक्ष), स्वामी पद्मनाभानन्द जी, स्वामी भक्तिभावानन्द जी, गोपी जी िथा गुरुमहाराज जी के समस्त सेवक गण 'िाक्तन्त आश्रम, देहरादून' में उपक्तस्थि थे। मुझे गुरुमहाराज जी ने उस समय ऐसा आिीवापद चदया, चजसको मैं कभी भूल नहीं ं सकिा। श्री गुरुमहाराज ने अपने श्रीमुख से दो बार कहा "वैकुण्ठानन्द और हमारा बहुि पुराना सम्बि है, क्या पिा चकिने जन्म होंगें ? बह जानें।"

बहशन मे व्यिीाशन जन्माशन िव िाजुणन।
ान्यिहं वेद सवाणशि न तं्वं वेत्थ परन्तप।।

गिीा : ४/५

श्री महाराज जी के चवषय में अनेक सन्तों ंने कहा है चक-"स्वामी चिदानन्द जी जीवनु्मि हैं।" श्री गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने स्वयं घोषणा की है चक-"स्वामी चिदानन्द जी जीवनु्मि हैं, उनका यह अक्तन्तम जन्म है।" उनके चवषय में इससे अचधक क्ा कहा जा सकिा है।

श्री महाराज जी साक्षाि् भगवान् नारायण महाचवषु्णु थे। वह अपनी लीला समू्पूणप करके पंभौचिक िरीर को त्याग कर अपने चनत्य िाश्वि धाम को िले गये जहााँ से वह पहले आये थे। परनु्तु श्री महाराज जी अपने भिों ंके हृदय में आज भी पूवपवि् चवराजमान हैं। साधक, भि जब-जब उन्ें पुकारेंगे, वह भिों ंका मागपदिपन करिे हुए िथा मनोकामनाओं ंकी पूचिप करिे हुए अपना मंगलमय आिीवापद प्रदान करेंगे। श्री गुरुमहाराज जी का हृदय इिना पचवत्र था चक साधक स्वयं त्तर्खंि िले आिे थे।

"पशवत्राणां पशवत्र यो मंगलानां ि मंगलम्" की प्रचिमूचिप श्री महाराज जी थे। उनका दिपन करनेसेसाधक को कृत्य-कृत्यिा का अनुभव हिोा था। आध्याक्तत्मक िक्ति प्राप्त हिोी थी, मन प्रसन्निासेभर जािा था। धैयप और िाक्तन्त का अनुभव हिोा था।

यस्य दिणन मात्रेि मनसः स्याि प्रसन्निा,
स्वयं भूयिाि् धृशि िाच्चन्तः सः भवेि् परम गुरुः।

श्रीमहाराज के स्मरण करने मात्र से साधक का हृदय स्विीः पचवत्र हो जायेगा िथा मन की िीलािसमाप्तहो जायेगी। ज्ञान स्वयं उत्पन्न हो जायेगा। जीवन का अक्तन्तम लक्ष्य (भगवत्प्राक्तप्त) भी प्राप्तहोजायेगा।

यस्य स्मरि मात्रेि ज्ञान उत्पद्यिे स्वयं,
स एव सवण सम्पशिः : िस्मिाि् पूजयेि् गुरुम्।।

इससेवक का मन गुरुमहाराज जी के कुछ िमत्कार देखना िाहिा था। समयआनेपर कईिमत्कारस्वयं देखने को चमले और जानकारी भी चमली। उन्ीं ंअनेकों ंमें एक उदाहरणप्रसु्तुि करिाहाँचकमहाराज जी की बाि इि देविा भी मान जािे थे। जैसे-एक बार श्री महाराजजीने

समाचध-मक्तन्दर के सायंकालीन सतं्संग में कहा चक कल सबेरे वषाप समाप्त हो जायेगी, जबचक उस समय वषाप का बाहुल्य था जो प्राििः आठ बजे िक िलिा रहा। आठ बजे वषाप स्वयं रुक गयी। चवश्वनाथ मक्तन्दर के प्रांगण में आयोचजि कायपक्रम में भिों ंको कोई असुचवधा न हो, इसचलए महाराज जी ने सायंकाल ही यह बाि कह चदये थे।

इिने प्रभाविाली व्यक्तित्व के धनी थे हमारे गुरु महाराज जी।

जयचिवानन्द, जय चिदानन्द !
ॐशक्तिन्ती: िाक्तन्ती: िाक्तन्ती:

सेवक, समाशध मच्चन्दर
शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

ॐ

एक बार स्वामी जी गुणूर रेलवे से्टिन पर थे। बहुि बडी संख्या में भिों ंने उन्
घेर रखा था। जब गाडी िलने को हुई िो वह उस चिब्बे में िढ़ गये जहााँ उनके चलए
ाचियका आरचक्षि थी। जब गाडी िलने लगी िो उन्ोंनें प्लेटफामप पर एक वृद्ध मचहला को चवलाप करिे देखा। वह िोक कर रही थी चक वह अपना सामान बाहर नहीं ंला सकी। स्वामी जी ने िुरन्त ही अपनी टोली के एक सदस्य को जंजीर खींिने के चलए कहा। गाडी
रुक गयी। वृद्ध मचहला ने अपना बोररया-चबस्तर एकत्र कर चलया और प्लेटफामप से प्रस्थान
कर गयी। उसे यह पिा न िला चक गाडी कैसे रुकी थी। स्वामी जी चिब्बे के द्वार पर
खडे थे और जब गािप इस चवषय में पूछिाछ करने के चलए पहुाँिा िो उन्ोंनें गािप को
करबद्ध हो बुलाया और कहा- "कृपया मुझे क्षमा करें। उस वृद्ध मचहला की चविििा देख
कर मैंने ही जंजीर खींिने का आदेि चदया था।" **उस कायण शवशिष्ट् से कहीं ंअशधक शिक्षाप्रद थी उस अल्प समय में उनके व्यवहार की समूपूणिा-अकृशत्रमिा शनष्कपटिा, शिष्ट्िा िथा दूसरों ंके प्रशि संवेदनिीलिा। स्वामी जी के शलए यह समग्र शवश्व एक शविाल पररवार है जहााँ प्रत्येक व्यच्चि अपने पररसर के सभी अन्य व्यच्चियों ंके शलए उत्तरदायी है।**

गुरु शिदानन्द स्वामी

–श्री स्वामी ब्रह्मस्वरूपानन्द जी महाराज-

द्वयपादपद्म प्रणमाचम अहं, हृद प्रेम भावगामी गुरु चिदानन्द स्वामी।।
गुरु सुचनए चवनिी, हम कुचटल कुमचि, कैसे हों ंिव अनुगामी।।
गुरु शिदानन्द स्वामी ।।

ॐ

कचलकाल कुचटल अंचधयारा, मदग्रस्त सकल संसारा ।

ुमि आद्य जीव पर करुणा, करर लीन् मनुज अविारा ||
ुमि चदव्य कमप, और चदव्य धमप के ज्ञान, दात्र स्वामी ||

गुरु शिदानन्द स्वामी ||

ॐ

िि ि सद्ग्रन्थ प्रकिो,उपचनषद वेद संभाषे|
अचि सहज सौम्य मृदु सुन्दर,चप्रयज्ञान-गंग-उदचध भाषे|
हम जीव अधम, ुिम पुरुषोत्तम,ुिम ब्रह्म प्ेरेमधामी ||

गुरु शिदानन्द स्वामी ||

ॐ

ऋचषकेि गंगा िटवासी, रचवज्ञानप्रिण्डप्रकािी|
नर वपु लीला सुचवलासी, ुिमस्वयंब्रह्मसंन्यासी ||
हम चनि मचलन, अचि दीन-हीन,चनिचनम्नमागपगामी ||

गुरु शिदानन्द स्वामी ||

ॐ

अचि धन्य धन्य िव चिन्तन, िवकथन स्मरण िव पूजन|
पररपठन श्रवण, सम्भाषण–वचदव्य विन पररपालन|
गुरु हे महान्, करो िक्ति दान-हम बनें मोक्षकामी ||

गुरु शिदानन्द स्वामी ||

ॐ

गुरुनाथ सुबुक्तद्ध चनयन्ता,परब्रह्मिुद्ध भगवन्ता |
ब्रह्मा चवष्णु चिवरूपा,गुरुश्रेेष्ठचिरोमचण सन्ता|
कहे ब्रह्मस्वरूप, गुरुराज,भूप,चिनिव पद प्रणमाचम ||

गुरु शिदानन्द स्वामी ||
ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

श्री जगन्नाथ महाप्रभु का साक्षाि् स्वरूप हैं गुरुमहाराज श्री स्वामी शिदानन्द जी

–श्री स्वामी गुरुप्रसादानन्द जी महाराज –

गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज इस सेवक के चलए साक्षाि् जगन्नाथ महाप्रभुही है| जब यह सेवक िढ़ वषप का बालक था िो एक भयंकर रोग से ग्रस्त हो गया| मिाा-चपिाके अनेक उपिार कराने के उपरान्त भी यह बालक रोगमुि न हो पाया| अिः चनरािा हो मिाा-चपिा

ने अन्तीः भगवान् श्री जगन्नाथ महाप्रभु के श्रीरणों ं में समचपपि कर चदया िथा प्राथपना की चक, "इस बालक पर आप कृ पा करें। यचद बालक जीचवि रहे िो आपकी सेवा में रहे, नहीं ं िो हमारी सेवा करे। जैसे आपकी कृ पा ।" बालक 'महाप्रभु जी' की कृ पादृचष्ट् से िनैीः िनैीः स्वस्थ हो गया। िैंबीस वषप की अवस्था हो गयी। इस अवचध में भगवान् की पूजा व साधु-महात्माओं ं के प्रचि श्रद्धा-चवश्वास बढ़िा गया। श्री नामिाायप बाया बाबा के दिपन चकये थे। पूटापिी साई बाबा, योगी श्री अरचवन्द,ठाकुरश्रीरामकृष्णपरमहंस,मााँिारदादेवी,स्वामीचववेकानन्दकीजानकारीथी।परन्तु गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी के नाम से अनचभज्ञ था।

सन् १९८४ में कटक, उडीसा में पक्तण्डि श्री सदाचिव रथ िमाप के द्वारा एक 'अक्तखल भारिीय श्री जगन्नाथ महाप्रभु समे्मेलन' हुआ था। पक्तण्डि जी एक चवद्वान् एवं चवश्व में 'जगन्नाथ महाप्रभु' की संसृ्कचि के प्रिारक थे। यह जगन्नाथ महाप्रभु और श्री स्वामी चिदानन्द जी में कोई अन्तर न देख 'दोनों ं एक ही हैं' ऐसा मानिे थे। जब भी वह गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी के दिपन करिे, िो भरी सभा में भावचवह्वल हो कर 'चिदानन्द महाप्रभु की जय-जयकार करिे। मेरे चमत्र से मुझे मालूम हुआ चक हमारे वासगृह के सचन्नकट ही समे्मेलन है। हम दोनों ं वहााँ जा कर पीछे बैठ गये। मंि आमक्तिि आसनासीन सन्त-महात्माओं ं व गणमान्य व्यक्तियों ं से सुिोचभि हो रहा था, यथा : जगद्गुरु िंकरािायप जी महाराज, महामण्डलेश्वर महाराज, महन्त महाराज, गजपचि महाराज (पुरी नरेि) वचिष्ठ वरेण्य सन्त-महात्मा आचद। अन्त में गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, चवनय, करुणा एवं सरलिा की प्रत्यक्ष मूचिप व िपोमय िेजोमय स्वरूप चदव्य महात्मा मुख्य अचिचथ के रूप में सबको प्रणाम करिे हुए मंि पर पहुाँिे और यथोचिि आसन पर चवराजमान हुए। सादर, सश्रद्धा माल्यापपण हुआ।

भिजनों ं ने गुरुमहाराज की आरिी उिारी। गुरुमहाराज आदेिानुसार सब महात्माओं ं की आरिी उिारी गयी। गुरुमहाराज से आिीवपिन चहिाथप सानुरोध प्राथपना की गयी। गुरुमहाराज ने अपने प्रविन का िुभारम्भ 'ॐ' (प्रणव) के उिारण से चकया। गुंजायमान 'ॐ' की ध्वचन पीछे बैठे इस सेवक के अन्तस्तल में प्रचवष्ट् हो सहज ही प्रसु्फचटि हो उठी इस भाव रूप में, 'प्रभु, आप ही मेरे गुरुदेव हैं। आप मुझे अपना िरणाश्रयी बना लेने की अहैिुकी कृपा कररए।' गुरुमहाराज के प्रविन की समाक्तप्त िथा वासगृह पहुाँिने िक अनुपिा चनरन्तर होिा रहा। गुरुमहाराज अपने स्थान को लौट गये। इधर, राि भर अचनद्रा रही, िरसिा रहा-आप कहााँ रहिे हैं? क्ा नाम है? कै से पहुाँि पाऊाँ आपके पास, कु छ जानकारी नहीं।ं 'श्री जगन्नाथ महाप्रभु जी' ने साक्षाि् गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी के रूप में दिपन दे कर अकारण कृपा की इस सेवकपर।**चिपन में 'श्री जगन्नाथ महाप्रभु' के श्रीिरणों ंमें समशपणि**इसजीवको'श्री जगन्नाथमहाप्रभु सवपधमप समे्मेलन' में 'गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी' के रूप में दिपन दे कर मुझे िरणाश्रयी बना चलया। अिीः 'गुरु महाराज और श्री जगन्नाथ महाप्रभु एक हैं-अचभन्न हैं। God and Guru is one गोचवन्द (भगवान) और गुरु एक हैं।

गुरु सवणव्यापीहैं :-

दूसरे चदन प्रािीः ही 'श्री जगन्नाथ महाप्रभु समे्मेलन' की पचवत्र स्थली के दिपन कर प्रणाम चनवेदन चकये। पश्चाि् 'श्री जगन्नाथ महाप्रभु जी' के इक्कीस या बाईस प्रकार के चवलक्षण शृंगार दिपन की छचव चनहारी। ित्पश्चाि् 'चदव्य जीवन संघ' का पुस्तकालय देख आनक्तन्दि हुआ। पााँि-छह

पुस्तकें खरीदीं;ं उन पर गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के नाम पढ़े िथा पत्ता 'चिवानन्द आश्श्रम, चहमालय' अंचकि था, चजसके संस्थापक ब्रह्मलीन सद्गुरु श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज थे। ये सब जान मनमयूर नाि उठा।

पुस्तक पर पढ़ कर सद्गुरु' का अथप जानने की इच्छा हुई। अढ़ाई मास पयपन्त पूछिाछ करने पर सबने अपनी चवविा जिलाई। वासगृह के बगल के कमरे में रहने वाले एक सज्जन ने मुझे 'सद्गुरु स्वामी चनगमानन्द सरस्विी' की जीवनी चवषयक एक पुस्तक दी। चजसके प्रथम भाग में स्वामी चनगमानन्द जी की जीवनी का वणपन है, चद्विीय भाग में सद्गुरु का ही पूणपरूपेण बोधमय, रोिक व प्रभावी वणपन था। दूसरे चदन प्रािीःकाल बस से १२५ चक. मी. यात्रा करनी थी। सीट क्तखडकी की ओर चमल गयी। 'सद्गुरु' के स्वाध्याय में मैं िल्लीन हो गया। सब सुचध भूल गया। हालांचक बस में कोलाहल था, कैसेट बज रहे थे। पुस्तक में वचणपि सद्गुरु स्वरूप में मैं चनमन हो गया-सद्गुरु ही ब्रह्मा-चवष्णु-महेि हैं, िैंिीस करोड देविा की साक्षाि् चवभूचि हैं, वह सवपव्यापक हैं, कण-कण में उसकी चवद्यमानिा है िथा स्थावर-जंगम में उसकी सत्ता चवराजमान है। दिपन, स्पिप और सम्भाषण द्वारा िरण में ले लेिे हैं और लक्ष्य प्राक्तप्त का मागप दििे हैं।

यह सेवक जय गणेि कीिपन, गुरुस्तोत्र और देवी माँ के स्तोत्र पाठ करिा हुआ सद्गुरु स्वरूप का ही हृदय-पटल पर स्वरूप-दिपन, चिन्तन करिा हुआ, सब-कु छ भूल गया। िन्मयिा में मैंने अपने को अनन्त आकाि के ऊपर खडा देखा। िारों ं ओर िून्य ही िून्य था। एक चदिा से ज्योचिमपय आलोक रक्तिम सूयप की िरह उदीयमान दृचष्टगोिर हुआ। उसके मध्य गुरुमहाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के श्रीपादयुगल के दिपन हुए; उसके बाद िनैीः िनैीः चदव्य सवाांग देह का अिीवापद-मुद्रा में आचवभापव अवलोकन चकया। ित्पश्चाि् देखा चक गुरुमहाराज मधुर मन्थर गचि से मेरी ओर आ रहे हैं और यह सेवक अनन्त आकाि की ओर उत्सुकिा से सानन्द बढ़ रहा है। सक्तम्मलन हुआ, निमस्तक हो गुरुमहाराज के चदव्य स्वरूप को प्रचणपाि चकया िो एक अिीवापदात्मक ज्योचि का चसर पर प्रत्यक्ष अनुभव चकया। अद्भुि व अपूवप अनुभूचि हुई सविो क्तस्थचि की।जबचसरउठायािोवेअन्तधापन...अनन्तआकािभीचिरोचहि।मैंभीआकािपर नहीं।ं भाव-समाचध में गुरुभगवान् के चदव्य दिपन करने के बाद अपने को इस इहलोक में कोलाहलपूणप बस में उसी क्तस्थचि में बैठे देखा िो ममापहि हुआ जो अवणपनीय है। हृदय िडपिा रहा।आँखों ंसेअचवरलप्रेमानुप्रवाचहिहोिारहे।चफरमनस्वयंहीसन्तुष्टहुआचकगुरुभगवान्ने इस प्रकार अनन्त में ज्योचिमपय मण्डल में अपने 'सि् चिि् आनन्द' के प्रत्यक्ष दिपन दे कर यह सुचनचश्चि कर चदया चक मुझे अपना साक्षाि् िरणाश्रय देंगे वह भी अपनी अहैिुकी कृ पा से ही। यह चदव्य अनुभव 'श्री जगन्नाथ महाप्रभु सम्मेलन' (कटक) के िीन मास पश्चाि् हुआ। कृपा-कृपा! मेरा अहोभाग्य। सद्गुरु सवपत्र चवद्यमान है, सवपव्यापी है यह भी अचवलम्ब प्रमाचणि कर चदया। धन्य है गुरुमहाराज, धन्य है यह सेवक ।

सद्गुरु अन्तयापमी हैं-

साधना सप्ताह राउरकेला, उडीसा में २९ चदसम्बर १९८६ को मि-दीक्षा दे कर गुरुमहाराज ने इस सेवक को कृिाथप चकया, मैं गद्गद् हो गया। हृदय में नव-प्रकाि का उदय हुआ। मैं गुरुदेव चलक्तखि पुस्तकों ंका अध्ययन करिा रहिा था। एक पुस्तक में चनदेि था चक प्रथमिीः मािा-चपिा को, अनन्तर सम्बक्तियों ंको, िदनन्तर सबको िुष्ट् करो, िब मेरी िरण में आओ। चनदेिानुसार यह सेवक दो वषप पयपन्त मािा-चपिा की सेवा के साथ-साथ अपनी साधना-

भजन भी सुिारु रूप से करिा रहा। इसके बाद कटक िाखा में कुछ मास सेवा दी। उपरान्त 'चिवानन्द िि वाचषपक बालक उिचवद्यालय, भुवनेश्वर में छह मास सेवा दी। सन् १९८७ में सरुदेव 'स्वामी चिवानन्द जी महाराज की जन्म िािब्दी महोत्सव' में सेवा देने का अलभ्य सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कटक के भिों की प्राथपना को स्वीकारिे हुए गुरुमहाराज २४ चसिम्बर १९८७ को वहााँ पधारे। उडीसा के स्वनामधन्य (सामाचजक पचत्रका के सम्पादक) पूज्य श्री राधानाथ रथ ने गुरुमहाराज को माल्यापपण चकया। भिों ने आरिी उिारी। गुरुमहाराज ने अपना भाषण प्रारम्भ चकया। गुरु महाराज ने कहा, "देखो! उडीसा के कालाहाक्तण्ड और कोरापुट क्षेत्र में दुचभपक्ष के कारण वहााँ के वासी अपना घर-बार छोड कर बाहर जा रहे हैं और इधर आपने मेरे जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में चमठाई, फल के टोकरे भर कर रखे हुए हैं। यचद आप मुझे जन्मचदन की सिमुि भेंट देना िाहिे हैं िो एक कमेटी का गठन कररए। फल, चमठाई ले जा कर उधर कुषुधा-पीचडि जनों को क्तखलाइए, उनके मुख पर मुस्कराहट लाइए। फूलमाला उन्हें धारण कराइए। उनकी सेवा कीचजए। यही मेरे प्रचि जन्मचदन की यथाथप में सिी और बचढ़या भेंट होगी। मैं कल वायुयान से प्रस्थान करने वाला हाँ, इससे पूवप यचद मुझे उपयुपि कायपक्रम को चक्रयाक्तन्वि करने की सूिना नहीं चमली िो मैं चफर कभी भी उडीसा नहीं आऊाँगा। गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी अपने जीवन-काल में सेवा करिे रहे। उनकी ३०० पुस्तकों में भी इसी सेवा की महत्ता पर चलक्तखि रूप में भी बारम्बार बल चदया गया। यह सेवक भी २५ वषप से यही करिा और यही कहिा आ रहा है।" पररणामिः दो-िार और भिों के साथ यह सेवक (मैं) भी सेवा हेिु वहााँ जाने के चलए िैयार हो गया। गुरुमहाराज को प्रस्थान से पूवप सूचिि कर चदया गया। अनेकानेक असुचवधाओं के होिे हुए भी सोत्साह, सानन्द सेवा देिे रहे। मैं मलेररया व अन्य दो-िीन बीमाररयों से ग्रस्त हो गया। गुरुकृपा से कुछ महसूस नहीं चकया। घोर वन में चवपरीि क्तस्थचियों में ३ साल सेवा करने के बाद सन् १९९० में गुरुमहाराज वहााँ पधारे। छह पहाड, िीन नचदयााँ पार कर २२/२३ चक. मी. िल कर, सब प्रकार की असुचवधा कचठनाइयााँ झेल कर वन में आचदवासी भि जनों को दिपन देने, उनकी दिा देखने, उन पर कृपा करने सोल्लास वहााँ पहुाँिे। धन्य हैं गुरुमहाराज।

इस सेवक पर कृपा करके अपने साथ वहााँ से गुरुचनवास' चिवानन्द आश्रम अपने साथ ले आये। 'गुरुमहाराज की दया व करुणा के फलस्वरूप उनकी सेवा का सुअवसर चमला व सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुमहाराज सवेरे पााँि बजे से राचत्र िेढ़ बजे िक कायपरि रहिे थे। यह सन् १९९० िब का है िब गुरुमहाराज िारीररक रूप से सचक्रय व स्वस्थ थे। उनकी कायपप्रणाली साधारण सन्त की िरह न हो कर असाधारण थी। वह जीवन्मुि व भगवत्साक्षात्कार प्राप्त उिकोचट के योगी थे। उनके प्रत्येक कायप में पररपूणपिा थी (इस सेवक सचहि वहााँ कुल आठ सेवक थे)। गुरुमहाराज की चनजी सेवा (खाद्य-पेय आचद की) में एक सीचनयर ब्रह्मिारी (सेवक) थे। मैं उनके साथ सहकमी-सहयोगी रूप में सेवा करिा था। सीचनयर सेवक प्रािः से सायं िक सेवा करिे। राचत्र-सेवा का सौभाग्य मुझे चमला। कभी समय चमलने पर दोनों में चविार-चवचनमय होिा िो मैं उससे यही कहिा, 'गुरुसेवा ही भगवान् की सेवा।' संयि रचहि हो कर िुम सेवा करो।

ग्रीष्म ऋिु में गुरुमहाराज, मुम्बई से भिों द्वारा भेजे गये अलफानसो आम का रस कैन्डिेड चमि के साथ दोपहर के समय भोजन में लेिे थे। एक चदन दोपहर के भोजन की िैयारी सुढंग से कर दी। एक बडी प्लेट में िीन आम के साथ छुरी भी रख दी (आम काटने के चलए)। गुरुमहाराज भोजन-प्रसाद पाने के चलए यथास्थान चनयि आसन पर चवराजे। सीचनयर सेवक

से गुरुमहाराज ने कहा, "ओ जी-आम वाली प्लेट मेरे पास लाओ।" एक आम को उठाया, चनदे चदया चक इस आम को चकिन में ले जा कर ऊपर से गोलाकार थोडा सा काट कर बाकी आम
के टुकडे करके गुरुचनवास में सबको एक-एक टुकडा दे कर मेरे पास आइए। चकिन में आ कर आम का ऊपर का भाग थोडा गोलाकार काट कर फेंक चदया। दो टुकडे काटने पर देखा चक
उसमें कीडे भरे पडे थे। मैं मदद कर रहा था। हम िचकि चक अब क्या करें। सेवक ने आम को
स्टिचबनमेंफेंकनेके चलएकहा।**इस सेवक ने सीशनयर सेवक से कहा शक गुरुमहाराज अन्तयाणमी हैं।**पूछोकहनाचककीडेथेउसमें,फेंकचदया।गुरुप्रसादसाक्षीहै।कागुरुमहाराज के पासपहुँिे।
देखिेहीबोले,"आपनेआमएक-एकटुकडासबकोदेचदयाक्या?"उसनेधीमी
आवाज में कहा, "स्वामी जी।" स्वामी जी बोले, "हाँ जी।" चफर वह बोला, "स्वामी जी, आम
काटने पर देखा चक उसमें कीडे भरे थे िो हमने िस्टचबन में फें क चकया।" स्वामी जी थोडा उि
स्वर में बोले चक "आप सि नहीं ं कह रहे हैं, और चकसने देखा यह।" उसने कहा, "गुरुप्रसाद
वहाँ थे उस समय।" िब धीमे स्वर में गुरुमहाराज ने कहा, "मेरे सामने पास आ कर बैठो। मैं
जो-कुछ पूछूँ, ध्यानपूवपक सुनो और ध्यान से उत्तर दो।" स्वामी जी ने पूछा,' "प्लेट में चकिने आम थे?" उसने उत्तर चदया, "जी िीन।" स्वामी जी ने कहा- "साइज में, रंग में कोई फकप था
क्या या चकसी पर भी दाग था क्या?" वह बोला, "नहीं,ं स्वामी जी।" "िो चफर वहीं ं एक आम मैंने काटने को क्यों ं चदया?" वह िुप हो स्वामी जी की ओर देखने लगा। थोडी देर के चलए सन्नाटा छा गया। चफर स्वामी जी बोले- "हमने वहीं ं आम काटने को क्यों ं चदया?" ऐसे ही िीन- िार बार पूछा, "हमने वही आम काटने को क्यों ं चदया अभी आप समझ गये क्या?" वह सेवक
धीर, त्तस्थर, गम्भीर, भय-भाव से बोले, "हाँ जी, स्वामी महाराज।" स्वामी जी ने कहा, "अब
आप जा सकिे

बाहर चवचजटर हाल में आ गये। मैंने उससे कहा, "जो समझ में आ गया, वह थोडा हमें
भी बिाइए।" उसने कहा चक, "िीन आम में से चजस एक आम के अन्दर जो कीडा देख सकिे
हैं, जान सकिे हैं, वे हम सब लोगों ं के बारे में भी जानिे हैं। वे भूि, विपमान, भचवष्य् के
बारे में सब जानिे हैं। वे समयोचिि त्तस्थचि द्वारा, व्यवहार द्वारा, िथा धीरे-धीरे सेवा, प्रेम, दान
में प्रवृत्त कर लक्ष्य की ओर पहुँिाने के चलए कृपा करिे हैं। वे अन्तयापमी हैं।" पाँि साल के
साचन्नध्य के बाद आज गुरुमहाराज की 'चदव्य लीला' के माध्यम से ित्त्व को जानने से मैं धन्य-
धन्य हो गया। अिः गुरु अन्तयापमी हैं।

'या देवी सवणभूिेषु मािृरूपेि संच्चथथिा ' :-

प्रचिचदन की भाँचि गुरुमहाराज एक चदन राचत्र सत्संग समापन करके गुरुचनवास में १०.३०
बजे पहुँिे। उसी समय एक ब्रह्मिारी श्री कुंजापुरी माँ के दिपन करके आये थे। उन्होंने गुरुमहाराज
से कहा चक वह माँ के दिपनाथप कुंजापुरी गये थे। वहाँ के पुजारी ने आपको प्रणाम चनवेदन चकये हैं और माँ का चविेष पूजा-प्रसाद, फूलमाला व कुंकुम चदया है। ब्रह्मिारी जी ने गुरुमहाराज के ललाट पर कुंकुम लगाया, फूलहार धारण करवाया और हाथ में प्रसाद चदया और िरण स्पिप करके िले गये। इस सेवक ने यह सब दृश्य देख कर भावमय जगि् में गुरुमहाराज के साक्षाि् देवी माँ के रूप में दिपन करिे हुए सुतुचि की, 'या देचव सवपभूिेषु मािृरूपेण संत्तस्थिा' स्तोत्र पाठ कर दो बार मानचसक दण्डवि् प्रणाम चकया। पश्चाि् सेवक ने गुरुमहाराज का दुपट्टा िह करके
रखा। ित्पश्चाि् राचत्र भोजन प्रसाद की िैयारी की। गुरुमहाराज बाथरूम से आ कर आसन पर
चवराज गये। गुरुमहाराज राचत्र में कॅन्डिे सूप में िीनी, हारचलक्स, चमि और कॅन्डिे चमि

चमला कर केवल एक चगलास सूप लिे थे। मैं सब िीजें पकडाने में सहायिा करिा था।
गुरुमहाराज प्रथमिीः भगवान् को अचपपि करिे। ब्रह्मापपणम्, ब्रह्म हचव..., हररीः ॐ ित्सि्, ब्रह्मापपणमसुतु, ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय
स्वाहा, ॐ श्री कृष्णापपणमसुतु, सक्तिदानन्द भगवान् की जय, अन्नपूणाप मिाा की जय, सद्‌गुरु श्री
स्वामी चिवानन्द महाराज की जय, बोल गंगामिाा की जय, भागीरथी-मिोश्वरी-माँ जाह्नवी, नारायण-नारायण- नारायण नारायण, भोजन काले गोचवन्द नाम संकीिपन गोचवन्दा, गोचवन्दा,
गोचवन्दा। गुरुमहाराज ने सूपपान करना आरम्भ चकया। गुरुमहाराज का प्रत्येक कायप धीरे-धीरे क्तस्थर
गचि से हिोा था, एक चगलास मात्र लेने में ४५ चमनट लगिे थे। सब होने पर मैंने प्लाक्तस्टक कवर िह चकया।

पाटा यथा स्थान रख चदया। थाली आचद- फ्लास्क, सब सामान चकिन में ले आया। एक
चगलास में िीनभाग गरम पानी भर ढक कर विाबेचसन पर रख चदया। कुल्ले करने का बाद
गुरुमहाराज ने चगलास मुझे चदया। मैं चकिन में आ गया। देखा, िो बगल में गुरुमहाराज खडे हैं।
कहने लगे, सूप का, दूध का फ्लास्क एवं कॅन्िेडिे चमि दो। एक चगलास में सब वसुतुएँ क्रम
से िालिे गया, सस्नेह िम्मि से िीनी चमला दी। वह सूप का िैयार चगलास मेरे हाथ में दे कर
बोले (माँ की िरह) यह चकिन में आपको पीने के चलए दे रहा हाँ। इस प्रकार सेवक ने अपने
मन से जो प्राथपना की थी फलस्वरूप मिृस्वरूप को प्रकाचिि कर चदया- 'या देवी सवपभूिेषु
मिृरूपेण संक्तस्थिा।' वे भावग्राही हैं- 'भावग्राही जनादपन'। कायप-सेवा माध्यम से भी हृदयस्थ भाव
को ग्रहण कर लेिे हैं।

ज्योतिषामशप िज्योशिस्तमसः

अचश्वनमास के नवरात्र प्रारम्भ होने में दो चदन िेष १४ वषप से लगािार नवरात्र व्रि कर रहा
था, इस बार धारणा थी चक गुरुमहाराज के आिीवापद से उनके ही थे। यह साचन्नध्य में नवरात्र
करूँ। एक बार गुरुमहाराज बरामदे में (गुरुचनवास के) आये िो करबद्ध प्राथपना की। नवरात्र
प्रारम्भ होने में ही दो चदन िेष हैं अिीः नवरात्र व्रि करने के चलए इस सेवक को आिीवापद
दीचजए। गुरुमहाराज प्रसन्निा से बोले, "हर साधना के चलए मेरा आिीवापद हमेिा रहिा है। आप
नवरात्र जैसे करिे आ रहे हैं वैसे ही कररए, मेरा आिीवापद है।"

पाश्वप में खडे ब्रह्मिारी सत्यचजि से कहा चक साधना के चलए जो कुछ (फल, दूध आचद)
िाचहए, आप इनको गुरुचनवास से ले कर देिे रहना। आिीवापद से उत्साह चद्वगुचणि हो गया। व्रि
का चनयम था-प्रचिचदन ३ बजे (प्रभाि) गंगा जी में स्नान करना, कमरे में एकान्त में रहना,
मौनधारण करना, प्रचिचदन सचवचध सप्तििी का सम्पूणप पाठ करना, अखण्डदीप जलाना,
आसनप्राणायाम के साथ चत्रसंध्या करना, ३०० माला से ज्यादा जप करना, दूधफल का अल्प
सेवन, जमीन पर िटाई चबछा कर ियन करना। इस प्रकार एक राचत्र ढाई बजे से दूसरी राचत्र ९
बजे िक चनयमानुसार चनत्यचनयम करिे रहने से व्रि चनचवपघ्न सम्पन्न हुआ।

नवरात्रव्रि पूणप होने से पूवप हृदय में एक साक्तत्त्वक इच्छा थी चक नवम चदन गुरुमहाराज के
श्रीिरणों ंमें जा कर आरिी, पूजा-अिपना, भोग चनवेचदि करके ही व्रि को समचपपि करना है। जब
कि यह नहीं ंहोगा िब िक अन्नजल ग्रहण (व्रि का पारण) नहीं ंकरूँगा। सत्यचजि िो बराबर नौ
चदन िक प्रचिचदन फल-दूध देने आिे रहे। उसको 'एक कागज पर अपना भाव चलक्तखि रूप में
प्रकट कर' चदया चक गुरुमहाराज को देने की कृपा करें। नवम चदन व्रि की समाक्तप्त उपरान्त एक

थाली में एक सेव, फूलमाला, कुंकुम और आरिी सजा कर गुरुचनवास पहुाँिा। हाल में गुरुमहाराज के चित्र के समुमुख मीन बैठा रहा। सबको मालूम था चक पूजा, आरिी चकये चबना कुछ नहीं ं खावेगा। एक के बाद एक सेवक गुरुमहाराज को सूचिि करिे रहे। वे सुन कर भी मौन रहे। सबका मेरे प्रचि प्ेरमभाव था। ग्यारह, बारह, एक, दो बज गया। जब गुरुमहाराज कायप समाक्तप्त करके भोजन-प्रसाद पाने जाने लगे िो एक सेवक ने कहा- स्वामी जी गुरुप्रसाद ने आठ चदन दूध-फल का अल्पाहार चलया है, दो बज गये, चबना कुछ खाये दो।" बैठा है। गुरुमहाराज सुनिे ही िुरन्त हाल में आ गये।

उन्हौ ही कहा, "हाल में कोई नहीं ंरहेगा, पदाप लगा

सेवक गुरुमहाराज को साष्टांग प्रणाम कर घुटनों ंके बल खडा हुआ िो गुरुमहाराज ने कहा- "माँ का व्रि पूणप हुआ, अब आप जो करना िाहिे हैं सो कररए।"

सेवक ने भय और भक्ति के साथ 'ॐ' का उच्चारण चकया। स्तोत्र उच्चारण करिे हुए गुरुमहाराज के ललाट पर कुंकुम का चिलक लगाया। कंठ में फूलमाला पहनायी। लाल फूल िी पर और श्रीयुगल िरणारचवन्द पर अचपपि चकये िदनन्तर स्तोत्र के साथ आरिी करके िाक्तन्तपाठ चकया। साष्टांग दण्डवि् प्रणाम चकया।

गुरुमहाराज ने धीरे से पूछा, "चकिनी जप-माला प्रचिचदन करिे थे।" सेवक ने उत्तर चदया, "३६० माला से ज्यादा।" "और क्ा चकया?" बिाया, "प्रचिचदन पूणप सप्तिी का पाठ चकया।" गुरुमहाराज बोले, "बहुि अच्छा" (I am satisfied)। इसके उपरान्त स्वामी जी ने चनजी सेवकों ंको बुलाया। सब आये, सब प्रसन्न थे। गुरुमहाराज ने कहा इस सेवक का चदया हुआ यह सेव मेरे भोजन में मुझे देना। गुरुमहाराज अपने कक्ष में िले गये।

सेवक वहीं ं हाल में ही खडा ही था अभी, हठाि् सत्यचजि ब्रह्मिारी दोनों ं हाथों ं से इस सेवक को ऊपर उठा कर नािने लगा, बोलने लगा, "हमको चमल गया, हमको चमल गया, हमको चमल गया।" दूसरे सेवक भी माँ की और गुरुमहाराज की जय-जय करने लगे। सेवक ने आश्चयप से पूछा चक, "क्ा चमल गया?"

हषापचिरेक में सत्यचजि ब्रह्मिारी ने बिाया चक, "जब आप गुरुमहाराज की आरिी उिार रहे थे।पदेकीओटसेएकचकनारेपरमैंनेदेखाएकचवराट्ज्योचिमपयआलोक।आलोकइिना ज्योचिमय था चक आप और गुरुमहाराज चदखाई नहीं ं चदये। आलोक ही आलोक चदखायी चदया। यही कारण है चक मैं आनन्दाचभभूि हो नाि रहा हूँ। चमल गया, पिा चलया 'गुरुमहाराज ज्योचिमपय परब्रह्म हैं' जैसा चक िाखों ं में वचणपि है"-

ज्योचिषामचप िज्ज्योचिस्तमसः परमुच्यिे।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृचद सवपस्य चवचष्ठिम्।।

गीिा : १३/१७

चदव्य जीवन संघ मुख्यालय चशवानन्द आश्रम ऋचषकेि (उत्तराखण्ड)

श्री स्वामी जी के जन्मशदन

एक श्रद्धालु संन्याशसनी साशधका-

–

"अजो शनत्यः ाश्विोऽयं पुरािो न हन्यिे हन्यमाने िरीरे ॥"

"यह(आत्मा)अजन्मा,चनत्य, ाश्वि (और) पुरािन है, िरीर के नाि होने पर भी (यह)नािनहीं ंहोिाहै।"-श्रीमद्भगवद्गीिा : २-२०

चजसनेभीश्रीस्वामीचिदानन्द जी महाराज के जीिले प्रविन कभी भी सुने हैं, उस हर एककेकणों ंमेंयेिब्दगूूँजेंगे।यही सत्य है जो उन्ोंनें िररािथप करके चदखाया है और इसचलए वे बहुधाअचिसफलिापूवपकअपनेजन्मचदन-समारोह से दूर रहे। सामान्यिया वे आश्रम से दूर ही होिेथे;चकन्तुिुसभीभिउनकीजन्मिारीख से पररचिि थे, इस कारण जन्मचदन एक छोटे दायरे मेंमनायेगये।उनके िारजन्मचदन आश्रम में चविेष महोत्सव रूप में मनाये गये। ३९ वीं ं जन्मजयन्ती,५०वीं ंजन्मजयन्तीअथवा स्वणप (सुवणप) जयन्ती, ६० वीं ंजन्मजयन्ती अथवा हीरक जयन्तीिथा७५वीं ंजन्मजयन्तीअथवा अमृिमहोत्सव ।

३९ वाूँ जन्मशदन

गुरुदेव के अद्भुि चविारों ंमें से यह एक चविार था चक उनके अचि चप्रय चिष्य का जन्मचदन भव्य रूप से मनाया जाये। वह जन्मचदन चदनांक २४ चसिम्बर के स्थान पर २४ जून, १९५५ को मनाया जाये, चजससे वह गुरुदेव के स्वयं के जन्मचदन के अचि समीप न हो। वह एक असाधारण गुरु द्वारा, असाधारण चिष्य के चलए, असाधारण उत्सव था। वही एक अवसर था चक जब स्वामी जी का जन्मोत्सव यथाथप में मनाया गया: एक यिस्वी व्यक्ति के रूप में, एक सन्त के रूप में, एक कमप-ज्ञान-भक्तियोग के योगी के रूप में। उनके सब अगचणि गुणों ंकी प्रिंसा की गयी उनके करुणा, प्रेम; नम्रिा, चनी:स्वाथपिा, रोगमुक्ति चदलाने वाले उनके हाथ, सदैव सेवा-ित्परिा, चवश्वव्यापकिा, हृदयस्पिी प्रविन, प्रेरक कीिपन िथा भजन, ज्ञान िथा बोध और सबसे अचधक गुरुप्रचि आत्म-समपपण।

सवपप्रथम स्वयं गुरुदेव की ओर से सम्मान और भावांजचल अचपपि हुई, ित्पश्चाि् उनके गुरुभाइयों ंद्वारा प्रेमपूणप, प्रिंसक, उल्लासपूणप िथा कभी-कभी अचि चवनोदी पद्धचि से भावांजचल प्रवाचहिहुई। स्वामी जी को अचि चवनम्र भाव से वह सब स्वीकारना पडा। अन्त में, उन्ोंनें अपने चवरोधीभावों ंमें कहा "आप सबने इस चिदानन्द नाम के व्यक्ति का इिना अद्भुि वणपन चकया है चकमैंसोििा हूँ चक चकसी चदन उसे चमलना मुझे अच्छा लगेगा।"

५० वाूँ जन्मशदन अथवा स्विण जयन्ती महोत्सव

वषप१९६६ पयांिस्वामी जी ने चदव्य जीवन संघ की भारि की अनेक िाखाओं ंपंजाब, गुजराि,उडीसा, दचक्षण भारि, चबहार, मुंबई, मलेचिया आचद की यात्राएँ कई बार पूवप ही सम्पन्नकीथीिथा सब िाखाओं ंने स्वामी जी की स्वणप-जयन्ती हेिु, अचि प्रेम िथा पूज्य भाव

से, चविष उत्सव आयोचजि चकये थे। उन्ोंनें सहस्रों ं लोगों ं के मन जिी चलये थे िथा अपनी चदव्या द्वारा ईश्वर (परमात्मा) के चलए पे्रम जाग्रि चकया था। उन्ोंनें २४ चसिम्बर मुख्यालय में ििी चकया और इस प्रकार उनके गुरुभाइयों िथा गुरुबहनों ं को, चिष्यों ं और भिों ं को उनका ५० वााँ जन्मचदन मनाने का आनन्द लूटने चदया। सदा की रिह, स्वामी जी की रुचि उत्सव मनाने में नहीं ं
चकनु्तु सबको चनज वास्वचवक स्वरूप की सूमृचि हेिु जाग्रि करने में थी।

"चप्रय अमर आत्मन्!

जब चक मेरे अनेक आध्याक्तत्मक साचथयों ं ने मेरा जन्मचदन मनाना चनचश्चि चकया है िब इस प्रसंग पर मैं आपको इस बाि की सूमृचि चदलाना िाहिा हाँ चक वास्तचवक रूप से आप अजन्मा और अमर हैं। अपने सिे स्वरूप के परम सत्य का आज स्मरण करना िाचहए। अजन्मा को जन्मचदन कै सा? जन्म िो इस िरीर का ही होिा है। मैं यह िरीर नहीं ं हाँ। मैं यह बुक्तद्ध नहीं ं हाँ। अमर आत्मन् हाँ मैं! गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी यही चसखािे हैं। मैं चिदानन्द हाँ। वास्तव में मैं िैिन्यस्वरूप और आनन्द हाँ। और आप भी यही हैं। आप चिदानन्द हैं। आप सक्तिदानन्द हैं। आप िाश्वि, िुद्ध, पररपूणप प्रज्ञ, परमानन्द परम ित्त्व हैं। स्मरण करो, मनन करो, चिन्तन करो, ध्यान करो और साक्षात्कार पाओ। यह आपका सबसे महत्त्वपूणप किपव्य है। यही वास्तव में सवोत्तम और भव्याचिभव्य उत्सव है।"

६० वााँ जन्मशदन अथवा हीरक महोत्सव

यह एक दीघपकाल से आयोचजि उत्सव और आश्रम के इचिहास में महानिम उत्सव था। इस काप्रारम्भ१५चसिम्बरकोसाधना-चिचवरसेहुआ,चजसके पश्चाि्एकसांसूकृचिकऔर आध्याक्तत्मक पररषद् िथा चदनांक २३ और २४ चसिम्बर, १९७६ को परमाध्यक्ष स्वामी जी के हीरक महोत्सव से समापन हुआ। इस अवसर के महत्त्व िथा मांगल्य सूिक, समस्त भारि िथा चवश्व से, १५०० से अचधक प्रचिभागी एकचत्रि हुए थे। हररद्वार, ऋचषकेि िथा भारि के अन्य आश्रमों ं में से महान् सन्त, महामण्डलेश्वर, अपने आध्याक्तत्मक उत्कषप प्राप्त कराने वाले प्रविनों ं से स्वामी जी को सम्माचनि करने आये थे। कैलास-आश्रम के परम पूज्य स्वामी श्री हररहरीथप जी ने मांगचलक उद्घाटन प्रविन चदया। मलेचिया से स्वामी प्रणवानन्द जी और साउथ अफ्रीका से स्वामी िंकरानन्द जी आये थे। कचवयोगी श्री िुद्धानन्द भारिी जी ने गुरुदेव चवषयक प्रविन चदया और राचत्र-सत्संग में, दासाश्रम, बंगलूरु के सन्त पूज्य श्री हिवदास जी ने, इस प्रसंग पर, यु. एस. ए. से चविेष रूप से आये अपने चिष्यों ं के साथ, अपनी हररकथाओं ं से सबको प्रसन्न चकया। और सबके चलए बडे हषप का चवषय था चक श्री श्री आनन्दमयी मााँ ने अपनी पावन उपक्तस्थचि से इस भव्य महोत्सव को धन्य बनाया। हर जगह संगीि गूाँज रहा था और भव्य नगर-कीिपन सम्पन्न हुआ। सब भाषाओं ं में अनेक पुस्तकों ं का चवमोिन हुआ; एक चनी:िुि नेत्र-यज्ञ हुआ िथा सूचि योग-वेदान्त-फारेस्ट ऐकैडेमी की इमारि हेिु भूचम-पूजा सम्पन्न हुई।

षष्ट्यब्द-पूचिप हेिु समस्त वैचदक चवचधयों ंसे स्वामी चिदानन्द जी महाराज के पावन संस्कार सम्पन्न चकयेगयेिथा उस हेिु चविेष रूप से आये पक्तण्डिों ंद्वारा वेद-ििोंीर सचहि साि पचवत्र नचदयों ंएवंिीनमहासागरों ंके जल से स्नान कराया गया।

७५ वााँ जन्मशदन अथवा अमृि महोत्सव

इसअवसरपरस्वामीजीकेवलमात्रकुछचदवसीयसाधनिाथाआध्याक्तत्मकचिक्षाओं के कायपक्रमों सेसन्तुुष्ट्नहीं थे।उन्होंनें,एकपूणपदिककीमााँगकी।"१९९०-१९९९के इसदिक को एक'चदव्यदिक'बनाओ।"स्वामीजीमहाराजसमस्तचदव्यजीवनसंघकोईश्वर-जाग्रचि, भाईिारिाथासुसंवाचदिाकीभावनाओं सेनयीसहस्राब्दीमेंप्रविेिहेिुियारकरनािाहिेथे।

इसचलएमुख्यालय,भारििथाचवदेिकीसमस्तिाखाएाँ बीसवीं िाब्दीके इसअक्तन्तमदिक को एकचदव्यदिकबनाकरइक्कीसवीं िाब्दीमेंएकभव्यप्रवेिके चलएियारकरनेहेिु कायपरिथे।अनेकपररषदों, योग-चिचवरों, साधना-सप्ताहों िथाआध्याक्तत्मकचिचवरों काआयोजन चकयागया,बहुसंख्यपुस्तकेंप्रकाचििहुईऔरपुनीःप्रकाचििहुई,समाज-सेवा,चविेषरूपसेभारि केग्राम्य-चवस्तारों मेंअचधकसघनकीगयीऔरमेचिकलकैम्प्समेंकईगुनीबढ़ोिरीहुई।हरएक को प्रोत्साचहि, प्रेरेरणायुि और आिीवापचदि करने हेिु स्वामी जी ने भारि िथा चवश्व की यात्राओं कासिित्यरखा।चकन्तु,स्वामीजीकेवलमात्रिाखाओं कोकायपरिकरनानहीं िाहिेथेचकन्तु प्रत्येकव्यक्तिगिसाधकसेअपनाजीवनचदव्यजीवनबनानेहेिुचविेषप्रयासकरनािाहिेथे। उन्होंनेंइनदसवषोंमेंजप-अनुष्ठान,अथवास्वाध्याय-अनुष्ठान,चनचश्चिसमयावचधमेंचलक्तखिजप औरध्यानकरनेकेचलएएवंलोगों कीएकमण्डलीकोनाम-संकीिपन,अखण्डकीिपनअथवा नाम-सप्ताह की सम्पन्निा के सूिन चकये।

चिसम्बर १९९१ एक महान् और भव्य अवसर था और इिने सारे समचपपि चिष्यों और भिों नेउसकीसफलिाकेचलएप्रेमिथानैचष्ठकभक्तिसेकायपचकया!इसकािुभारम्भ६चिसम्बर कोभागविकथासेहुआ,साधना-सप्ताह,एकअन्तरापष्ट्रीयिथासांस्कृचिकपररषद्सेकायपरि रहाऔरचदनांक२४चिसम्बरकोचप्रयस्वामीजीके अिीमहोत्सवसेसमाप्तहुआ।उसके पश्चाि् मुख्यत्वे, स्वामी जी को आराम देने हेिु, पूणप रूप से कायपक्रमिून्य नहीं, चकन्तु हलके - फुलके आध्याक्तत्मक कायपक्रमों सहिि, चवचभन्न देिों से आयेहुएभिों के SpiritualLive-in'नामकचिचवरमसूरीमेंआयोचजिहुआ।स्वामीजी,नन्हेंहेैंनेकोका हाथ अपनेहाथमेंचलये,'मुझेजन्मचदनमुबारकहो'-'HappyBirthdaytome'-गािे-गािे पैदलहीहोटलमेंआये।

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि
(उत्तराखण्ड)

साक्षाि् करुिाशनशध परमािा

–श्री गुरुिरणाश्रयी संन्यासी सेवक-

चदसम्बर की राि थी। चहमालय की बफीली िोचटयों से हो कर गंगामैया के ठण्डे जल को छू कर बहने वाली िेज हवा पूरे ऋचषकेि को चठठुरा रही थी। आदमी िो क्या, पेड, पौधे, पत्ते िक ठण्डी हवा से कााँप रहे थे और उनसे हवा की सूाँ-सूाँ जैसी आवाज सुनायी दे रही थी। ऐसी राि में परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी चनजी सहायक को कुछ चिक्टेिन दे रहे थे। अन्तरापष्ट्रीय

संस्था के परमाध्यक्ष के नाे स्वामी जी का पूरा चदन अचि व्यस्त रहा करिा था और चिक्टेिन देने का काम रिा १०-१०१/२ बजे के बाद ही हो सकिा था। आज भी वैसा ही हुआ था।

-एक महत्त्वपूणप चवषय पर चिक्टेिन दिे-दिे अिानक स्वामी जी ने अपने सहायक से पूछा-

'आपको कुछ सुनायी दे रहा है?'

'हााँ स्वामी जी, बहुि िेज हवा की आवाज है।' 'नहीं,ं नहीं।ं इसके अलावा और कुछ... िायद कोई कुत्ता रो रहा है....

लेचकन ध्यान से सुनने पर भी जब कुछ सुनावी नहीं ंपडा, िब वे सहायक खुद िाल ओढ़ कर बाहर चनकला। गुरु चनवास की िारों ंओर देखा लेचकन उन्हें कुछ भी नहीं ंचदखाई चदया। न कुछ सुनने में आया। चसफप हवा की आवाज सूाँ... सूाँ... थरथरािी पेड और अक्तस्थयों ंको कंपाने वाली सदी..... 'कोई भी िो नहीं ंहै स्वामी जी; मुझे िो कुछ सुनायी नहीं ंदे रहा 31' अन्दर आ कर उन्होंने कहा।

'ऐसे कैसे हो सकिा है?' यह कहिे हुए स्वामी जी खुद जल्दी में बाहर चनकले। िेहरे पर परेिानी फैली हुई थी और बाहर चनकलने की इिनी जल्दी थी, चक न िो स्वामी जी ने जूिे पहने, न िाल ओढ़ी... बस... बदन पर सूिी वस्त्र पहने हुए उस सदी में स्वामी जी गुरु चनवास की एक बाजू में आ गये। आपके पीछे वे सहायक जूिे और िाल ले कर दौड रहे थे। स्वामी जी ने जमीन पर नीिे झुक कर एक सीमेंट की पाइप में झााँक कर कहा-'देखो, यहााँ छोटे कुत्ते के बच्चे और उनकी मााँ अटक गये हैं।'

हुआ यह था, चक P W D का एक चसमेंट का पाइप वहााँ पडा था। उसमें कुत्ते के िार चपल्ले थे चजन्होंने िायद अभी आाँख भी न खोली हो। उनके सामने कााँटों ंसे भरे सूखे पौधे, किरा, चमट्टी ऐसा बहुि कुछ था। और कााँटों ंके दूसरी ओर थी उन कुत्ते के बच्चों ंकी मााँ! बीि में बहुि सारे कााँटे होने के कारण मााँ की समझ में नहीं ंआ रहा था, चक बच्चों ंके पास कैसे पहुाँिा जाये..। बच्चे भूखे थे। सदी से कााँप रहे थे। और मााँ उनके पास जा नहीं ंपा रही थी। वह रो रही थी। उसकी आवाज इिनी इिनी कम थी, चक चकसी को भी सुनायी न दे। लेचकन स्वामी जी... आप िक िो गूंगे के चदल की आवाज भी पहुाँििी है। आत्मा की आवाज आपको सुनने में आिी है। आप िक उस बेबस मााँ की आवाज़ पहुाँि ही गयी।

चबना सोिे स्वामी जी पाइप में जाने लगे। सहायक ने कहा, 'स्वामी जी आप रुचकये। मैं देखिा हाँ।'

'यह समय बहस का नहीं ंहै। आप कैसे जा पायेंगे? मुझे ही जाना होगा।' स्वामी जी ने कहा। क्योंचक आपके सहायक अपने जरा से मोटापे के कारण पाइप में नहीं ंपहुाँि सकिे थे।

बदन पर कााँटों ंसे होने वाली खरोंि और सदी की िरफ चबलकुल ध्यान न दे कर स्वामी जी ने पौधे हटा कर बच्चों ंको उठाया और मााँ के पास रखा।

लेचकन जैसे भगवान् के प्यार की सीमा नहीं ंहोिी, स्वामी जी के प्यार की भी कोई सीमा नहीं।ं आपने उन कुत्ेते के चपल्लों ंकी और उनकी माँ की गुरु चनवास में ही एक अलग जगह पर रहने की पूरी व्यवस्था की। उन्ें सुबह, दोपहर, िाम िक िार समय पर खाना-दूध चमलने लगा। उनके चलए खास चबसुकुट माँगवाये गये। आश्रम के एक ब्रह्मिारी जी से उन कुत्तों ंकी देखभाल करने के चलए कहा।

वैसे उस ब्रह्मिारी को कुत्तों ंसे खास लगाव नहीं ंथा। (िायद इसीचलए उस पर यह चजम्मेदारी सौंपी होगी, चक वह सब सजीव-चनजीव प्राचणयों ंमें, वसुतुओं ंमें भगवान् को देखे।)

एक चदन जब स्वामी जी ने पूछा, 'कुत्तों ंको क्तखलाया?' िो घबरा कर उसने कहा, "हाँ!' सि िो यह था, चक उस चदन वह कुत्तों ंको क्तखलाना भूल गया था।

'झूठ!' स्वामी जी गरज कर बोले।

झूठ बोलने के चलए उसे िाँट कर स्वामी जी ने खुद कुत्तों ंको क्तखलाया िभी आप खाना खा सके।

भगवान् से की हुई मदद की हर प्राथपना... िाहे वह बेजुबान जानवर के चदल से भी की हुई हो...स्वामी जी िक पहुाँििी है।

शिवानन्द होम की िुरुआि

चिवानन्द आश्रम के धमापथप चिचकत्सालय के बहुि पास है-मुचन की रेिी का पोस्ट ऑचफस। एक चदन पोस्ट ऑचफस के पास एक आदमी मरा हुआ पाया गया। अपनी बीमारी का इलाज न होने के कारण उसकी मृिु हुई थी। जब परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज को यह पिा लिा, िब आप बहुि दुुःखी हुए।

'धमापथप अस्पिाल' के पास बीमारी का इलाज न होने के कारण मृिु? चफर क्ा मिलब है अस्पिालके पूरेइन्तज़ामका?वहसमयिोसोिनेकानहीं ंथा।इन्तजामकरनाथा,उस आदमी के अन्त्यसंस्कार का। उस चदन चकसी कारण से वाहन िालकों ं की हड़िाल थी। दुभापग्य से आश्श्रम की ऐमूब्यूलैंि खराब होने के कारण मैके चनक के पास पडी थी। लेचकन समस्या से स्वामी जी का क्ा वास्ता? आपने अपनी गाडी में उस आदमी के मृिक िरीर को रखा। अन्नपूणापगृह की लकचडयााँ दे दी और अन्त्यसंस्कार का इन्तजाम चकया। चसफप इन्तज़ाम करके आपने मन से यह बाि चनकाल नहीं ं दी। अन्त्यसंस्कार करके लोगों ं के वापस आने िक स्वामी जी ने मुाँह में पानी िकनहीं ंचलया।उसके बाददसचदनों ंिकचकसीसेभीचबनाबिायेस्वामीजीनेव्रिरखाथा।

चफर एक चदन स्वामी जी ने अस्पिाल के िाक्टरों ं को बुलाया। 'उस आदमी का क्ों ं नहीं ं उपिार हो सका?" आपने पूछा।

उस आदमी को अस्पिाल में चकसी ने दाक्तखल ही नहीं ंचकया था। यह एक बाि थी। दूसरी बाि यह भी थी, चक िॉक्टर उस मरीज को रखेिे भी िो कहााँ? कुछ संसगपजन्य बीमाररयााँ ऐसी होिी हैं चजनसे अस्पिाल के अन्य मरीजों ंकी हालि पर असर हो सकिा है।

स्वामी जी सोि रहे थे। अस्पिाल की सेवाओं ंकी कुछ सीमाएाँ हैं। दुचनया में बीमारी के अलावा और कई दुीःख है। संसगपजन्य, कभी ठीक न होने वाली बीमाररयााँ हैं ही, उनके साथ मानचसक असनुिुलन है। लोग बेसहारा होिे हैं। बूढ़े, बालक और औरिें ंको कई बार छोड चदया जािा है। क्ा कर सकिे हैं हम? परमात्मा के इस लािार, दयनीय रूप की पूजा कैसे करें हम?

चफर आपने संकल्प चकया, चिवानन्द होम का! एक ऐसा स्थान जहााँ बेसहारा लोगों ंको सहारा चमले। िरीर और मन की जरूरिें पूरी हों। ं दुीःख-ददप में भी जीने की आस क्तखल उठे और मौि भी आये, िो पूरे सुकून से। िाक्तन्त के साथ। लेप्रोसी कालोनी के पास ही 'चिवानन्द होम' का चनमापण हुआ।

सत्संग में स्वामी जी आवाहन कर रहे थे, चिवानन्द होम का काम साँभालने कोई जाये। लेचकन आश्रम के प्रसन्न, सुखद वािावरण से थोडा दूर, गुरुिरणों ंसे दूर... कौन जाना िाहेगा ?

स्वामी जी के चनजी सहायक जी ने देखा, कोई आगे नहीं ंबढ़ रहा है। िो चफर वे ही िैयार हुए। स्वामी जी ने कहा भी-'देखो, आपको इस काम के चलए कुछ त्याग करना पडेगा।'

'जी हााँ, स्वामी जी, मैं िैयार हाँ।'

और गुरुिरण के चनकट रहने का सुख त्याग कर उन्होंनें अपने-आपको गुरु के कायप के चलए समचपपि चकया।

कुछ बूढ़े... चजनको बेटों ंने कृिघ्निापूवपक त्याग चदया है और जो चजन्दगी से थके-हारे हैं... कुछ बिे... चजनको मााँ-बाप ने बेरहमी से छोड चदया है... और कुछ मानचसक बीमारी के मरीज... इनके साथ उनका जीवन िुरू हुआ। पहले िो यह कायप उन्होंनें अकेले ही संभाला था। यही उनकी गुरुसेवा थी; यही था िीथप!

चफर कुछ साल बाद वहााँ 'याचन' चमत्रा जी आ गयीं। ं हॉलैंिवासी याचन चमत्रा जी मदर टेरेसा के जीवन से प्रभाचवि थीं ंऔर कलकत्ता में रह कर लोगों ंकी सेवा करना िाहिी थीं। ं लेचकन चदल्ली के हवाई अड्डे पर कदम रखिे ही यहााँ की भीड, प्रदूषण से सामना हुआ और कलकत्ता जैसे महानगर में रहना मुमुक्ति नहीं.ं. ऐसा उन्हें लगा। चफर उनके साथ आये लोग जो चिवानन्द आश्रम के कायप से पररचिि थे, उन्होंनें कहा- "यहााँ आप सेवा भी कर सकोगी और िहर से दूर, िान्त वािावरण में रह सकोगी।'

'चिवानन्द होम' देखने के बाद वो यहीं ंकी हो गयीं। ं गंगा जी के हवाले चकये जाने वाले चकसीभीउम्र के मरीज या अनाथ अब गंगा जी में खुद को चमटाने से पहले चिवानन्द होम में आसरालेसकिे हैं। यह स्वामी चिदानन्द जी की करुणा का मूिप रूप है।

सख्त शिक्षक

आश्रम में आत्मज्ञान के चलए आये हुए ब्रह्मिारी पहले ो इिान ही हिो हैं। गुरुदेव की चिक्षा और खुद का आध्यात्क्तत्मक अिारण उन्हें हौले-हौले इिान से भगवान् बनिाा है। जाचहर है, चक साधना के ्रुिआिी समय में उनमें भी कुछ कचमयाँ रहिी होंगी।

ऐसे ही एक ब्रह्मिारी जी को आश्रम में आने वाले यािक चबलकुल भी पसन्द नहीं ंथे। आश्रम का ररवाज है, चक सुबह और िाम में जो भी खाना बनिा है उसमें से बिा हुआ खाना ुरन्ति बाहर आने वाले यािकों ंमें बााँट चदया जाये। इसीचलए हररोज दरवाजे पर बहुि सारे यािक किार में बैठे हुए चदखाई दिे हैं।

एक चदन चकसी यािक ने स्वामी चिदानन्द जी से कहा-'स्वामी जी, आज कल न जाने कौन से नये ब्रह्मिारी जी आये हैं, वे हमें बहुि गाचलयााँ दिे हैं। हमारा अपमान करिे हैं और इिना सा खाना गुस्ेसे में हमारे हाथ में थमा दिे हैं। चिवानन्द आश्रम में ऐसा कभी नहीं ंहुआ गुरुदेव! इस जगह से यह उम्मीद नहीं ंहै।'

स्वामी जी ्िुपिाप सुनिे रहे। चफर आपने कहा, 'िलो मेरे साथ।' अन्नपूणापगृह में जा कर बहुि सारा खाना अपने हाथों ंसे यािकों ंमें बााँट चदया।

दूसरे चदन वह ब्रह्मिारी रोज की िरह यािकों ंमें खाना बााँटने के चलए आया। हमेिा की िरह वह गुस्ेसे से अनापि-िनाप बोलिा रहा।

'न जाने कहााँ-कहााँ से ये चभखमंगे आिे हैं। आलसी! कुछ काम चकये चबना इन्हें चसफप खाना िाचहए ! लो! िलो! फूटो यहााँ से...'

आज िो किार में एक यािक ज्यादा ही था। उसने अपना वस्त्र पूरे माथे पर ले कर िेहरा भी छुपा चलया था। उसने अपने हाथ यािक की िरह आगे चकये हुए थे। उसके हाथ में थोडा सा ही खाना गुस्ेसे से थमा कर वह बोला, "ये एक और नया चभखारी! मुाँह क्ों ंढााँक चलया है औरिों ंजैसा... िरम नहीं ंआिी... कहााँ-कहााँ से िले आिे हैं। जैसे दामन ओढ़ा है माथे पर... हटाओ।" उस यािक ने माथे से अपना वस्त्र हटा चलया और ब्रह्मिारी जी के पैरों ंिले धरिी क्तखसक गयी। 'आसमान से चबजली चगर कर मैं नष्ट क्ों ंनहीं ंहोिा... यह धरिी फट कर मुझे चनगलिी क्ों ंनहीं.ं..' ऐसे ही कुछ भाव उसके मन में आ रहे थे और वह पत्थर के बुि जैसा खडा था।

चजस यािक को उसने 'एक और नया चभखारी' कहा था-वह थे परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्विी जी महाराज!

लौचकक दृचष्ट से चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष!

अलौचकक दृचष्ट से अनन्तकोचट ब्रह्माण्डनायक महाराजाचधराज सद्गुरु!'

वह िो स्वामी जी के पैरों ंपर चगर पडा। लेचकन चबलकुल गुस्सा न हुए हुए स्वामी जी ने उसे समझाया।

'मुझेदेख कर जो अहसास मन में हुआ, वही हर यिाक को देख कर होना ािचहए। आपने कहा।चफर उसे पररव्राजक के रूप में ििथापटन के चलए भेज चदया।

'कुछमहीने एक यिाक बन कर घूमो। चफर इनकी भावनाओं ंका अहसास िुम्हें होगा। चफर चकसीयिाक का अपमान नहीं ंकर पाओगे।'

यहीस्वामी जी की चिक्षा थी।

मैं बॉसहूँ

परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी ने अपने अत्तस्तत्व का कण-कण गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी के िरणों ंमें इस िरह समचपपि चकया था, जैसे आपका कुछ अलग अत्तस्तत्व ही नहीं।ं चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष बनने पर भी आपने खुद को गुरुदेव का सेवक ही समझा। गुरुदेव के महाचनवापण के बाद भी इस िरह आप समझिे रहे, चक गुरुदेव अपने कमरे में हैं और उनका चदया हुआ कायप मुझे पूरा िन-मन लगा कर करना है। अपने मन के इस 'सेवक भाव' को आपने जरा भी कम नहीं ंहोने चदया। **"आपके िब्दों ंमें, कृशियों ंमें, प्रविनों ंमें या लेखन में स्वाभाशवक सेवक-भाव की लीनिा महकिी है।"**

लेचकन कभी-कभी ऐसा व्यवहार करने के चलए व्यक्ति मजबूर हिोा है, जो उसका स्वभाव नहीं ंहै। स्वामी जी के साथ भी उस चदन ऐसा ही हुआ।

आश्रम के दो संन्याचसयों ं में कुछ बहस िल रही थी। चकसी समस्या पर बोलिे-बोलिे वे स्वामी जी के पास आये और आपके सामने ही बहस करने लगे। देखिे ही देखिे इस बहस ने झगडे का रूप ले चलया। िोनक एक महिाय ने पूछा- 'यहााँ बॉस कौन है?' 'मैं हााँ।' दूसरे ने जबाब चदया। 'नहीं,ं बॉस मैं हााँ।' पहले संन्यासी बोले। अब स्वामी जी ने समझाने की कोचिि की- 'देखो, यहााँ हम सब सेवक हैं। बॉस िो चसफप 'ये' हैं।' ऐसा कह कर आपने गुरुदेव की स्वीर की ओर अाँगुली से चनदेि चकया। जब दो बार ऐसा समझाने के बाद भी चकस्सा खिम नहीं ं हुआ, िब ऊाँ िी आवाज में स्वामी जी बोले-

"िुप। बॉस न आप हैं, न ही आप हैं। मैं बॉस हााँ।"

यह बाि समझना िायद आसान था। झगडा खिम हुआ।

मेरा सिा नाम

परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी को श्री गुलजारी लाल नन्दा जी ने कुरुक्षेत्र बुलाया। स्वामी जी के प्रविन का चवषय था-'मेसेज ऑफ भगवद्गीिा'। स्वामी जी के वहााँ पहुाँिने से पहले प्रविन-स्थल का इन्तजाम देखने स्वामी जी के चनजी सहायक और एक-दो लोग कुरुक्षेत्र पहुाँिे और अच्छा हुआ उन्होंनें पहले ही देख चलया। क्योंचक प्रविन का चवषय गलिी से चलखा था- 'मसाज ऑफ भगवद्गीिा ।

वहपूरा कायपक्रम 'मेसेज' के बदले 'मसाज' ही बना, क्ोंचंक उस मंपिर बहिु लोगों ं ने चसयासिकी िािप ही प्रारम्भ की। चफर भी स्वामी जी ने हमेिा की िरह प्यार से प्रविन में लोगों ंकोसम्बोचधि चकया। आपके प्रविन से वहााँ आये हुए चवद्याथी और युवावगप बहिु प्रभाचवि हुआ।

कायपक्रमसमापनकेबादसबचवद्याथीआकरस्वामीजीसेऑटोग्राफमााँगने लगे। स्वामी जी ने पूछा-

क्ामैंअपनानकलीनामचलखूाँ?याअसलीनामचलखूाँ?'बिेरेचवद्याथीउलझन में पडे। क्ास्वामीजीकाकोईनकलीनामहै?स्वामीजीनेकहा,"देखो,'चिदानन्द'यह मेरा असली नामभीनहीं ंहै,रूपभीनहीं।ंउसकेनिीजोमैं'ॐ'चलखिाहाँ,वहीमेराअसली नाम है। चसफपमेराहीनहीं,ंआपसबकाअसलीनामचसफपवहीहै।एक'ॐ'केअलावा बाकी सब झूठाहै।"

स्वामी जी का सन्देि

स्वामी जी के चनजी सहायक ने एक बार आपसे पूछा- 'स्वामी चिदानन्द जी का हमारे चलए मेसेज क्ा है? आपके िमाम जीवन से हमें क्ा सन्देि लेना िाचहए ?'

स्वामी जी ने यह सन्देि चदया-

"Be rooted in the divinity within you. That divinity is a centreofbliss. Be centred in that bliss."

अपनी अन्तचनपचहि चदव्यिा में दृढ़िा से क्तस्थि रहें। वही चदव्यिा आनन्द का केि है। 'उसी आनन्द में केक्तिि रहें।'

मददगार

हररद्वार में जब कुम्भमेला लगिा है, िब हररद्वार, ऋचषकेि, चिवानन्दनगर इस पूरे क्षेत्रमें रास्ते मरम्मि के चलए बन्द रहिे हैं। कोई वाहन िलाया नहीं ंजा सकिा। लोग पैदल ही आिे-जािे रहिे हैं।

ऐसे में एक चदन स्वामी जी को IAS ऑचफससप के चलए व्याख्यान देने जाना था। स्वामी जी भी अपने चनवास से व्याख्यान के स्थल िक पैदल ही जा रहे थे। आपके साथ कुछ और लोग भी थे।

रास्ते में स्वामी जी ने देखा, एक आदमी हाथगाडी पर बोररयााँ रख कर गाडी हाथ से ढके लिा हुआ आश्रम के बहिु सामने के रास्ते पर से गुजर रहा था। गाडी बोझ के कारण बहिु भारी थी। रास्ते में िढ़ाव था और आदमी बेिारा दुबला भी था, िायद अस्वस्थ भी! वह हााँफ रहा था। उसकी सााँस फू ली हुई थी। स्वामी जी ने यह देखा और झटसे आपने वह गाडी पकड ली। 'आप जरा रुक कर आराम कीचजए ऐसा उस आदमी से कह कर आप खुद गाडी ढके लने लगे।

आपके साथ जो लोग थे, वो ि◌ुरन्त आ कर खुद भी गाडी ढकेलने लगे। स्वामी जी ने पूछा- 'कहााँ जा रहा है यह रिन?' उस आदमी ने कहा- 'चिवानन्द आश्शश्रम!'

बि क्ा?

खुद स्वामी जी और उनके साथ कुछ लोग-गाडी ढकेलिे हुए आश्रम पहुाँि। ि◌ायद उस आदमी को पिा भी नहीं ◌ं था चक जो यह हाथगाडी ढकेल रहे हैं, वही चदव्य जीवन संघ के अध्यक्ष हैं।

स्वामी जी ने उस आदमी को अस्पिाल भेज कर उसकी पूरी जााँि करवायी। जरूरी दवाएाँ दी। खाने का सामान चदया और घर भेज चदया।

उस चदन बडे ऑचफससप को थोडा इन्तजार जरूर करना पडा होगा।

क्ोंचक एक गरीब आदमी की ि◌कलीफ उनसे ज्यादा मायने रखिी थी।

आप पररपूण हैं

हमहमेिा प्राथपना करिे हैं-

'इिना ि◌ो करना स्वामी जब प्राण ि◌न से शनकले
गोशवन्द नाम ले के ि◌ब प्राण ि◌न से शनकले
उस वि जल्दी आना, नहीं ◌ं श्याम भूल जाना...

वहपरमकरुणामयपरमात्मा हमें कभी नहीं ◌ं भूलिा है; न ही परमात्मा का मूिपरूप सद्गुरुहमेंकभीभूलिेहैं।चकसी भी हालि में वह हमेिा हमारे साथ रहिे हैं। ि◌ाहे हमें वो चदखाई नहीं ◌ं दें।

श्रीचवरमानीचकिनेसौभाग्यवान् ि◌ख्स थे, चजनके कचठन समय पर उनके सद्गुरुपरमपूज्यस्वामीचिदानन्द सरस्विी जी पूरे बारह घण्े उनके साथ थे। श्री चवरमानी जी कैंसर पीिडिथेऔरिायदउनके जीवन का यह आखरी दौर था।

स्वामी जी के चनजी सहायक जी को यह कुिूहल अवश्य था, चक स्वामी जी ने श्री चवरमानी जी से क्ा बाि की होगी? उनके पूछने के बाद स्वामी जी ने कहा, 'देखो, हर आधे घण्े बाद मुझे इस बाि की याद चदलािे रहना। मैं ि◌ुम्हें बिाऊाँगा।'

चदल्ली से स्वामी जी मुम्बई गये। वहााँ का काम चनपट कर चफर चवदेि जाने वाले थे। हर आधे घण्े बाद सहायक स्वामी जी से पूछिे रहे और स्वामी जी का काम खत्म ही नहीं ◌ं हो रहा

था। आक्तखर मुम्बई के हवाई अड्डे पर जब चफर आपकोयादचदलाई , बि स्वामी जी नेएक छोटे कागज़ के टुकडे पर कुछ चलखा और कहा- "मैंने यहबिाकी "

स्वामी जी ने यह चलखा था-

ॐ

Radiant Atman,

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

Loving pranams and prostrations to the Light within, 'THAT is your own SELF

Chidananda speaks to Chidananda-and what he has to say is 'YOU ARE PARIPURNA -The All Full. You lack nothing-want nothing and have ever been the Ever Full one'. "May you ever abide as yourself as you are now and always the Ever Free Atman.

Thy own Self,
Chidananda.

अशहंसा का मूिणरूप

मराठी भाषा में श्रीमद्भगवद्गिीा पर एक बहुि अच्छा ग्रन्थ सन्त ज्ञानेश्वर जी ने चलखा है, चजसका नाम है- 'ज्ञानेश्वरी।' उसमें कहा है-सन्त भूचम पर िलिे समय इस िरह हिे से कदम रखिे हैं, चक कदमों ंिले कोई सूक्ष्म जीव न आये और चहंसा न हो। सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव में भी उन्हें वही िैिन्य िीप्ि हिोा है, जो मनुष्यों ंमें है। परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी भी ऐसी अचहंसा का मूिपरूप थे।

गमी के चदनों ंमें िींचंटयाँ बाहर चनकलिी हैं। आश्रम में भी एक बार एक ब्रह्मिारी जी ने बहुि सारी िीचटयाँ देखीं।ं उन्होंने एक बाल्टी में पानी चलया और उन पर जोर से फेंका। सारी िीचटयाँ मर गयीं।ं यह देख कर स्वामी जी को बहुि दुुःख हुआ। आपने उस ब्रह्मिारी जी से कहा- "चफर कभी ऐसा मि करना।' और इिने सारे जीवों ंकी सूमृचि में स्वामी जी ने पिह चदन उपवास चकया।

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

सवपशुरुचिचिरो-रत्न-चवराचजि-पदामुबुजम् ।
वेदान्ताथपप्रविारं िस्मिा् समूपूजयेद्गुरुम्।।

भगवान् श्री स्वामी शिदानन्द परमहंस

– श्री स्वामी शववेकयुिानन्द सरस्विी जी महाराज-

देखा मैंने एक मानव को काषाय वेष में,
ध्यान पूवपक देखा, और
देखिा ही रह गया, उसकी िेजस्वी देह को।
चफर अन्तिपकुषुओं ंसे देखा,
बि मैं कह उठा-

"वाऽऽह।
यह िो नख-चिख-पयपन्त है-
चदव्य कात्तन्त से आभाचसि,
त्याग-वैराग्य की ज्वाला से चवभाचसि;
ईश्वर की अलौचकक आभा चजसे सहज स्विः ही प्राप्त है,
भला गेरुआ पररधान की इसे क्ा अपेक्षा?"
गौर चकया जब िेष्टाओं ंको, चक्रया-कलाप को,
देखा, हाव-भाव दीपि इसके हाथों ंको, सहज मंथर गचि को;
िि मैं बोल पडा-

"अरे। यह िो साक्षाि् परमात्मा ही
मानवीय रूप में चवचवध लीलाएँ हैं कर रहे;
हम समग्र जग-जीवों ंको
अपने वरद हस्त से आिीवापचदि करिे हुए स्वयं
परमेश्वर ही संसार में चवहार कर रहे ।"
दिनन्तर चमला जब सुअवसर
इनके मधुर संलाप-श्रवण का
बि गद्गद् हो मैंने कहा-

"अहा! यह िो साकार परमात्मा की ही
प्रेम वाणी है, जो कर रही
समू्पणप जगि् को गुंजायमान।"
जब इन्ें आत्मचवभोर हो भजन-कीिपन में मस्त देखा,
भाव शवह्वल हो मैं बोल उठा-

"है यह ईश्वर का अमर गीि।
परमेश्वर का ही िाश्वि संगीि।"
और पडी जब दृचष्ट इनकी मनोहारी चिवन पर
िि समझ में आया

"प्रत्यक्षीः प्रभु ही ो कर रहे हैं
सब पर चनज कृपा कटाक्ष।"
चनहारि चनहारि इस मानव-चवभूचि को,
हुआ शदव्य अनुभव-

"इस प्रापंचिक जगि् में रहि हुए
यह अपने चनयि किपव्य-कमों की पूचिप में,
दया-परोपकाररिा-सेवा में
अनथक रहि हैं संलि;
चकन्तु नहीं ंमानव साधारण यह
रोम, प्रचिरोम है इनका
कोचट-कोचट सूयप-प्रभा से प्रभाचसि।
सक्तिदानन्दघन स्वयं इस महामानव के रूप में
हुए हैं इस धरा पर अविररि ।
हैं ये परमहंस भगवान् हैं ये;
ये हैं-**भगवान् श्री स्वामी शिदानन्द परमहंस ।"**

सन् १९६९ में अजेन्टाइना, दचक्षण अमेररका में
इनसे मेरी प्रथम भेंट-दौरान
अद्भिु दिपन से हुई जैसी चदव्यानुभूचि,
चफर सन् १९७२ में भारि में िथा
सन् १९८० में वैनेजुला में पुनचमपलन होने पर, इनके
नयनाचभराम दिपन से हािी रही वैसी ही सुखद अनुभूचि;
मािृ भूचम भारि में सन् १९९२ में भी इनके
दुलपभ दिपन से अगाध आनन्द पूणप
वही स्वानुभूशि ।

दोहरािा हाँ पुनीः पुनीः
अपने अन्तरिम के भाव को-
देखा मैंने अन्तिुपकुषुओं ंसे
मानव वेष में अविररि
परमात्मा के इस िजोमय स्वरूप को
जैसा चदव्याचिचदव्य स्वरूप पहले था
वैसा ही है अब भी।
ऐसा मैं भाववेि में नहीं ंकह रहा
यह ो है मेरी आिानुभूशि की अशभव्यच्चि।

"ये हैं भगवान् श्री स्वामी चिदानन्द परमहंस।"
मैं इनको भगवान् ही मानिा आया हाँ,
अब भी भगवान् मानिा हाँ, और
रहेगा यह भाव सदैव ही।

दि में, चवदि में,
भारि ही नहीं, ं समग्र चवश्व में भी
िुचिदपक् व्याप्त है यह प्रकिा पुंज।
जय हो भगवान् स्वामी चिदानन्द की,
जय जयकार हो मधुराशिमधुर शिदानन्द शदव्य नाम की।।
हरर ॐ ित्सि्

(अनुवाद)

एक शिष्या के शलए गुरु के दृशष्टकिो से श्री स्वामी जी का व्यच्चित्व

– श्री स्वामी अमिृरूपानन्द मािा जी (सूजन मािा जी) –

पूज्यपाद श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से यद्यचप मैं ५० वषों से पररचिि हाँ िथा वषप १९८० के माह चदसम्बर से आश्रम की अने्तेवासी हाँ िथाचप स्वामी जी के साथ मेरा न्यूनिम सम्पकप रहा। चफर भी, गुरु की भूचमका से स्वामी जी का मुझ पर, मेरे पूणप जीवन पर जीवन पररविपनीय प्रभाव रहा। पााँि अत्यन्त महत्त्वपूणप घटनाएँ ऐसी हैं चजनकी अनुभूचि में आपको सक्तम्मचलि करने में मुझे हषप होगा, **क्ोंशंक उन घटनाओं ंसे स्वामी जी के गुरुपद का सामर्थ्ण िथा सुन्दरिा मुझे प्रदशिणि हुई।**

प्रथम : मैंने स्वामी जी के सबसे पहले दिपन अपनी दस वषप की आयु में वैनकुवर, कनेिा में चकये, मेरे मािा-चपिा हम बिों ंको उनके दिपन के चलए ले गये थे। मुझे उस मुलाकाि की बहुि कम स्मृचि है चकन्तु स्वामी जी वैनकुवर में िीन महीनों ंपयपन्त रहे उसी अवचध में स्वामी जी के सवापचधक महत्त्वपूणप उपदेिों ंमें से एक, चजसकी मुझे प्रिीचि हुई- चजसने मुझे कभी नहीं ंछोडा, वह है- **"ईश्वर ही केवल जीवन को अथणपूिण बनािा है।"**

शद्विीय : हममें से बहुिों ंका चविेषिः आश्रम- वाचसयों ंका-आश्रम के बाहर रहने वाले अनेक भिों ंकी अपेक्षा-स्वामी जी के साथ चनकट का चनजी सम्पकप कम था। हालााँचक, इसके बावजूद मैं स्वयं को स्वामी जी के बहुि चनकट होने का अनुभव करिी। यह भाव मैं, स्वामी जी के गुरु चवषयक प्राप्त बोध, ज्ञान की एक सीख से ही केवल समझा सकिी हाँ। और वह है : गुरु का बोध ही गुरुित्त्व है। स्वामी जी ने समाचध मक्तन्दर में प्रािः कालीन ध्यान-सत्र के पश्चाि् व्याख्यान देने प्रारम्भ चकये। मैंने सोिा चक उनके चदव्य इिने प्रेरक हैं चक हर एक को उस ज्ञान-प्राक्तप्त में सक्तम्मचलि करना िाचहए। इस प्रकार, प्रकिन हेिु-स्वामी जी के प्रािः- कालीन

विव्यों ंका प्रचिलेखन करना और मुद्रण हेि-उन्ें ियार करना प्रारम्भ चकया। चजस समय इस प्रयास का आरम्भ हुआ बि मैंने स्वप्न में भी कभी नहीं ंसोिा था चक इस सेवा का मेरी साधना पर
चकिना बडा प्रभाव होगा। इस सेवा के कारण ही मैंने अनुभव चकया चक स्वामी जी ने जो कहा,
वह सत्य था : **"गुरु का बोध ही गुरुि–त्त्व है।"**

िृिीय : स्वामी जी के उपदेिों ंमें चनमग्न हो जाने पर भी एक समय साधना में मैंने
अवरुद्ध हो जाना अनुभव चकया और कैसे आगे बढ़ना है यह मैं नहीं ंजान पायी। पूज्य स्वामी जी
को इस चवषयक ज्ञाि नहीं ंचकया था, चकन्तु अनपेचक्षि रूप से स्वामी जी ने मुझे प्रोत्साचहि करने
के चलए एक पाश्चात्य आध्याक्तत्मक चिक्षक के पास भेजा। यह बाि स्वामी जी ने मुझे बाद में
बिायी। आध्याक्तत्मक उपदेिों ंको नये िरीके से िथा नयी भाषा में-जो चक मेरी पाररवाररक पृष्ठभूचम
की थी-सुन कर मेरी अवरुद्ध राह ही केवल खुलन गयी चकन्तु पूवपिः प्राप्त चकये हुए उपदेिों ंकी
अचि गहरी समझ और बोध भी मुझे चदये। इस घटना से मैंने स्वामी जी के चविाल और उदार
हृदय की बहुि प्रिंसा, कद्र की क्ोंचक स्वामी जी अपने चिष्य के कल्याण हेिु इिने चिक्तन्ति हैं
चक उन्ोंने मुझे अन्य उपदेिक के पास भी भेजा।

िुथिण : वषप १९९६ की पूवप अवचध में स्वामी जी के साथ सम्पन्न मेरी आध्याक्तत्मक िीथपयात्रा
में, एक समय, मैंने उन्ें, गुरु के देहत्याग के पश्चाि् अन्य गुरु करने के चवषय में पूछा। स्वामी
जी ने मुझे कहा, **"आपको अन्य गुरु की आवश्यकिा नहीं।ं आप उपदेि जानिी हैं शक, "मैं
बि ही मुि हूँगी जब मैं, 'मैं' शमट जाऊँगी।"** आचधक् में स्वामी जी ने कहा चक गुरु का
बाह्य रूप, अपने चनजी स्वरूप की भव्यिा का अस्पष्ट, धुँधला रूप है। और इस बाि ने मुझे यह
सूचिि चकया चक स्वामी जी चकस कारण आश्श्रमवाचसयों ंके साथ व्यक्तिगि समय कम व्यिीि
करना िाहिे हैं। स्वामी जी कदाचि् हमें अन्तमुपखी हो कर चनज स्वरूप में एकाग्रिा द्वारा गुरु-
प्राक्तप्त के चलए कहिे हैं और गुरु के बाह्य रूप के प्रबल आकषपण से चविचलि न होने को कहिे
हैं। अहम् इिना जचटल और िालबाज है चक उसके चछपने के स्थानों ंकी ओर संकेि करने हेिु
चनचश्चि ही गुरु की आवश्यकिा है-स्वामी जी को ऐसी दलील देने की धृष्टिा मुझमें थी। हालाँचक
स्वामी जी ने अपना धैयप, अपनी सचहष्णुिा नहीं ंखोयी, िथाचप उन्ोंने मुझे दो बािें कहीं,ं चजन्ें मैं
कदाचप नहीं ंभूली: "जब िक आप सोिेंगी चक सुजन को मोक्ष चमलेगा, िब िक वह सम्भव नहीं ं
होगा।" स्वामी जी ने चफर उस वाक् को अचधक बल दे कर दुहराया। चफर स्वामी जी ने कहा:
"आप ये प्रश्न पूछ रही हैं, इससे ही चसद्ध होिा है चक आप चनज स्वरूप में चवश्वास नहीं ंकरिी।'

पंचम: मेरा एक अनुभव चजसे मैं कदाचप यथाथपिा से समझ नहीं ंपायी, उसे स्वामी जी को
बिाने का मुझे वषप १९९७ में अवसर चमला। मैं अपने कमरे में कुछ अत्यन्त साधारण सा कायप कर
रही थी। िब एकाएक मेरे मन में िीव्रिा से िीन चविार क्रमिः आये: "मैं मुि हाँ। यह कौन है
जो मुि है? मैं नहीं ंजानिी।" आश्चयपजनक रूप से स्वामी जी ित्काल बोल उठे, "यह (आत्मा)
ही वह (परमात्मा) है।" मेरा प्रचिभाव था, "परन्तु स्वामी जी आप िो सदा कोई महान् अक्तस्तत्व
(परमात्मा) के चवषय में बाि करिे हैं।" "वह िो केवल उन लोगों ंके चलए चजन्ोंने वह अनुभूचि
नहीं ंकी, जो आपने अनुभूचि की।"

स्वामी जी का यह प्रचिभाव ऐसा है चजसका मैं आज भी मनन कर रही हाँ। मैं वास्तव में
कौन हाँ इस चवषयक गहन अचभज्ञिा, अज्ञान बुक्तद्ध में आना अचि कचठन है। िब्ों ंकी चवसंगचि के
बावजूद भी मैंने सदैव सोिा, चक कोई गूढ़ रहस्यमय रीचि से मैं 'अनचभज्ञ' को जानने में समथप

हाँगी। जब चक मैंने कहा चक कौन मिु है, यह मैं नहीं ंजानिी। चफर भी स्वामी जी ने कहा, "यह ही सि् है-यह (आत्मा) ही वह (परमात्मा) है।"

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम, ऋशषकेि
(उत्तराखण्ड)

गुरुरेको जगत्सवांब्रह्मचवषुणुचिवात्मकम्।
गुर्वोः परिरं नात्तस्तिस्मात्संपूजयेद्गुरुम्।

एक सूमृशि

–श्री स्वामी दुगाणप्रसादानन्द जी महाराज –

वषप १९९६, जुलाई का महीना। जमिेदपुर चदव्य जीवन संघ िाखा के भिों ं द्वारा वषों से की जा रही प्राथपना का परम पूज्य गुरु महाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने यह कह कर उत्तर चदया चक वे अपनी पावन उपत्तस्थचि द्वारा २६ जनवरी १९९७ को जमिेदपुर चदव्य जीवन संघ िाखा को पुनीि करेंगे िथा भिों ं को आिीवपिन दे कर कृिाथप करेंगे। भिों ं के आनन्द की सीमा नहीं ं रही। िाखा ने िय चकया चक गुरु महाराज के आगमन के उपलक्ष्य में २४ जनवरी १९९७ से २६ जनवरी १९९७ िक िीन चदवसीय चदव्य जीवन सम्मेलन का आयोजन चकया जायेगा।

गणेि चिुथी के चदन िाखा के सदस्यों ं की पहली बैठक बुलायी गयी। सदस्यों ं ने कई दृचष्टकोणों ं से चविार-चवचनमय के बाद िय चकया चक लगभग साढ़े िीन लाख रुपयों ं की जरूरि है। कोषाध्यक्ष से िाखा की आचथपक त्तस्थचि के बारे में पूछा गया। उन्होंने कोई उत्तर नहीं ं चदया। पुनः उनसे पूछा गया िो वह रो पडे और बोले, "आप लोग साढ़े िीन लाख रुपयों ं की बाि कर रहे हैं, िाखा के पास िीन सौ रुपये भी नहीं ं हैं।" िारों ं ओर सन्नाटा छा गया। सब चनःिब्द थे। कोई चनणपय नहीं ं चलया जा सका। सभा समाप्त हो गयी।

करीब पिह चदन के बाद स्वामी रामस्वरूप जी ने फोन से सूिना दी चक गुरु महाराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं ं है, अिः उनकी जमिेदपुर यात्रा की व्यवस्था वायुयान द्वारा की जाये। यह एक अचिररि चवत्तीय बोझ था। वायुयान के चकराये के बारे में पूछिाछ करने पर यह ज्ञाि हुआ चक लगभग पिास हजार रुपयों ं का खिाप आयेगा। मूल खिप के अचिररि पिास हजार और! परन्तु भिों ं ने अपना हौसला नहीं ं खोया।

इसी दौरान पिा िला चक गुरु महाराज कलकत्ता आये हुए हैं। जमिेदपुर में होने वाले सम्मेलन के चलए गुरु महाराज का आिीवापद प्राप्त करने हेिु कुछ भि िुरन्त कलकत्ता के चलए िल पडे।गुरुमहाराजकाप्रािःकालीनध्यानसत्रचबडलामत्तन्दरमेंआयोचजिचकयागयाथा।

उसमें उपक्तस्थि रहने के उपरान्त अन्य भिों ंके साथ हम सभी मुख्य द्वार पर स्वामी जी के आगमन की प्रिीक्षा कर रहे थे। द्वार पर गुरु महाराज की दृचष्ट् हम पर पडी। उन्ोंनें पूछा, "क्ा
आप सब जमिेदपुर से आये हो?" हमने 'हााँ' भरी। स्वामी जी आगे बढ़े, हम उनके पीछे-पीछे िले। स्वामी जी ने पुनीः कहा, "मुझे बिाया गया है चक आप लोग मेरी जमिेदपुर यात्रा के चलए
वायुयान की व्यवस्था कर रहे हो।" हमने चवनम्रिापूवपक कहा, "जी, स्वामी जी!" स्वामी जी ने
आगे प्रश्न करके पूछा, "चकिना खिप पडेगा?" हमने कहा, "करीब पिास हजार।" स्वामी जी
आगे बढ़ने लगे और एकाएक रुक कर कहने लगे, "मैं आप लोगों ंको िालीस हजार दान दे रहा हाँ।" हम सब यह सुन कर स्तब्ध रह गये। कुछ कहिे नहीं ंबना। चफर स्वामी जी आगे बढ़े और
उनके पीछे हम भी। पुनीः स्वामी जी रुक कर ममिा-भरी मुस्कान के साथ कहने लगे, "ओ जी!
अब मेरा स्वास्थ्य ठीक है। मैं टेरन से ही जमिेदपुर जाना िाहाँगा। अिीः वायुयान की व्यवस्था न
करें।" यह कह कर वह अपनी गाडी की ओर बढ़ गये। हम आश्चयपचकि नजरों ंसे उन्ें देखिे
रहे। हमें आिीवापद दे कर स्वामी जी िल पडे।

अलौचकक िक्ति ले कर हम जमिेदपुर वापस आये। हमें यह दृढ़ चवश्वास हो गया था चक
इस चदव्य जीवन सम्मेलन के आयोजन का भार 'हम' नहीं ंबक्ति गुरु महाराज 'स्वयं' उठा रहे
हैं।

चिर-प्रिीचक्षि चदन २६ जनवरी १९९७ आ गया। अगचणि भिों ंसे पण्डाल खिाखि भरा
हुआ था। पूज्यपाद प्रािीःस्मरणीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज मंि पर चवराजमान थे। स्वामी जी
अपना चदव्य औरा (प्रभामण्डल) िारों ंओर चबखेरिे हुए उपक्तस्थि-अनुपक्तस्थि जमिेदपुर के सभी
भिों ंको अपने आिीवपिनों ंसे कृिाथप कर रहे थे। इस प्रकार सिवें अक्तखल चबहार चदव्य जीवन
सम्मेलन का समापन उनके प्रस्थान के साथ हो गया। वे एक-एक अचवस्मरणीय घटनाएँ हमारे
हृदय-पटल पर आज भी अंचकि हैं। सम्मेलन में उन्ोंनें जो चिक्षाप्रद, अनुकरणीय आिी- विन
प्रदान चकये, वे हमारे जीवन के आध्याक्तत्मक- पथ पर आलोक-पुंज ही नहीं ंबक्ति िाक्तन्त के दूि
भी बने रहे हैं।

परम चपिा परमेश्वर और गुरुदेव के आिीष हम पर सदा ही बने रहें, यही हमारी चवनम्र
प्राथपना है।

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम,
ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

वि कथामृिम् :जगन्नाथपुरी की एक घटना

–श्री स्वामी रामभिानन्द जी महाराज-

मन्नाथः श्रीजगन्नाथः मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।

ममिाा सवणाभ्रिाा िसै्मै श्रीगुरवे नमः ||

सन् १९९३ की बाि है। उन चदनों ं परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज जगन्नाथपुरी क्तस्थि चिदानन्द िाक्तन्त आश्रम, बाचलगुआली में रह रहे थे।

सत्संग कायपक्रम के साथ-साथ कुछ गुरुभाई लोगों ं का उपनयन संस्कार का कायपक्रम भी लि रहाथा।उसकायपक्रममेंस्वामीजीमहाराजके दिपनएवंसत्संगके चलएलगभगपााँहिजार से अचधकभिउपक्तस्थिथे।

सुबह के समय अपने चनवास स्थान चवश्राक्तन्त कुटीर से गुरु महाराज लगभग दि बजे पररभ्रमण के चलए चनकल रहे हैं। िारों ं िरफ भीड ही भीड। स्वामी जी महाराज के दिपन करने के चलए बडे-बडेभिलोगभीआयेहैं।उपिदस्थआफीसरऔरउडीसाकेबडे-बडेगणमान्य लोग भीआयेहैं।

उस प्रोग्राम के चलए एवं गुरु महाराज के दिपन करने के चलए चनकटस्थ गााँव के एक वृद्ध आये। उनकी वयस लगभग सत्तर साल की होगी। बाल सफे द हो गये थे। कपडे उिने अचे्छ नहीं ं थे। िंख फूं कने का काम करिे थे। बहुि भीड देख कर वह वृद्ध आदमी कु छ दूरी पर एक पेड के नीि बैठ गये और बैठ कर सोिने लगे चक इिनी भीड में क्ा मुझे सन्त भगवान् का दिपन चमल सकेगा? एक िो मैं सत्तर साल का वृद्ध, िरीर की दुबपलिा के कारण अन्दर नहीं ं जा पाऊाँ गा। सन्त भगवान् क्ा मेरी बाि सुनेंगे? ना, असम्भव है। क्ा करूाँ , कौन मेरी बाि सुनेगा, कौन ले जायेगा मुझे दिपन कराने के चलए? दिपन करने के चलए अन्तर में प्रबल व्याकुलिा आ रही है, आाँखें छलछला रही हैं।

आश्चयप होिा है उस घटना को याद करने से, जैसे चक उस िीव्र दिपनोत्सुक वृद्ध आदमी के अन्तर की बाि ने अन्तयापमी के हृदय को चविचलि कर चदया। हठाि् उस भीड को दो भाग करके गुरु महाराज उस अनजान वृद्ध आदमी के पास आ गये, जहााँ पर उनके आने की कोई सम्भावना नहीं ं थी। आ कर उस वृद्ध के चिर पर अपना वरदहस्त रख चदया।

चिकि हो गया वह वृद्ध आदमी उस चदव्य रूप को देख कर। भाषा नहीं ं बोलने के चलए। कण्ठरोध हो गया। रोम-रोम खडे हो गये। दोनों ं आाँखों ं से आाँसू बह रहे हैं। चसफप चिर नवा कर प्रणाम चकया और बोला चक मैं धन्य हो गया, धन्य हो गया। करुणामय गुरुदेव ने उस वृद्ध आदमी को कु छ प्रसाद दे कर चवदा चकया।

आश्चयप िचकि हो कर देख रहे थे उस दृश्य को उपक्तस्थि भि चक अन्तयापमी को अन्तर की गयी। जयजगन्नाथ!जयगुरुदेव!बाचवचदहो

शदव्य जीवन संघ मुख्यालय
शिवानन्द आश्रम,
ऋशषकेि (उत्तराखण्ड)

हरर-कथा कथा और सब व्यथाऔर वृथा। -स्वामी शिदानन्द

श्री शिदानन्दाष्ट्ोत्तरिनामावशलः

ि–ॉ. **देवकी कुट्टी मिाा जी**

१. ॐ श्री अनन्तगुणचवभूचषिाय नमीः
२.ॐश्रीअज्ञानहरणाय नमीः
३. ॐ श्री अवण्यपगुणोज्वलाय नमीः
४. ॐ श्री औिक्तियाय नमीः
५. ॐ श्री अक्षयप्रचिभाय नमीः
६. ॐ श्री आत्मानन्दाय नमीः
७. ॐ श्री आचश्रिवत्सलाय नमीः
८. ॐ श्री आनन्दचनमिचित्ताय नमीः
९. ॐ श्री उदारकीिपये नमीः
१०. ॐ श्री करुणावासाय नमीः
११. ॐ श्री करुणासागराय नमीः
१२. ॐ श्री कल्याणप्रकृ िाय नमीः
१३. ॐ श्री कु ष्ठरोगीीपचवनािाय नमीः
१४. ॐ श्री कृ पाचपयूषजलाय नमीः
१५. ॐ श्री गुरुपादाब्जचवहाररणे नमीः
१६. ॐ श्री गुणाकाराय नमीः
१७. ॐ श्री चजिक्रोधाय नमीः
१८. ॐ श्रिीत्त्वस्वरूपाय नमीः
१९. ॐ श्री दीनत्राणित्पराय नमीः
२०. ॐ श्री चदव्यमिूपये नमीः
२१. ॐ श्री दयावाररधये नमीः
२२. ॐ श्री धीरोदािाय नमीः
२३. ॐ श्री चनलेपाय नमीः
२४. ॐ श्री चनत्यचनमपलाय नमीः
२५. ॐ श्री चनरञ्जनाय नमीः
२६. ॐ श्री नीचिमिे नमीः
२७. ॐ श्री चनयिकल्याणाय नमीः
२८. ॐ श्री चनचवपकाराय नमीः
२९. ॐ श्री प्रणवस्वरूपाय नमीः
३०. ॐ श्री परमसाक्तत्त्वकाय नमीः

३१. ॐ श्री परात्पराय नमीः
३२. ॐ श्री पुण्यवधपनाय नमीः
३३. ॐ श्री पुण्यपुरुषाय नमीः
३४. ॐ श्री पावनस्वरूपाय नमीः
३५. ॐ श्री पुरुषोत्तमाय नमीः
३६. ॐ श्री परमज्योचिषे नमीः
३७. ॐ श्री चप्रयंवदाय नमीः
३८. ॐ श्री प्रीचिवधपनाय नमीः
३९. ॐ श्री परमपूज्याय नमीः
(ख) भिों ंके भावोद्गार िुरू।
४०. ॐ श्री ब्रह्मण्याय नमीः
४१. ॐ श्री भव्याय नमीः
४२. ॐ श्री भवबिनचवमोनाय नमीः
४३. ॐ श्री भयापहाय नमीः
४४. ॐ श्री भिोकचविनानाय नमीः
४५. ॐ श्री भविारणकारणाय नमीः
४६. ॐ श्री मोक्षदाय नमीः
४७. ॐ श्री मृदुभाषणाय नमीः
४८. ॐ श्री महाचनधये नमीः
४९. ॐ श्री चमचहराचधककाक्तन्तमि नमीः
५०. ॐ श्री महायोचगने नमीः
५१. ॐ श्री मान्याय नमीः
५२. ॐ श्री महामिये नमीः
५३. ॐ श्री महाद्युिये नमीः
५४. ॐ श्री यििीाय नमीः
५५. ॐ श्री यज्ञस्वरूचपणे नमीः
५६. ॐ श्री योगीश्वराय नमीः
५७. ॐ श्री वाक्तिने नमीः
५८. ॐ श्री वैद्यवररष्ठाय नमीः
५९. ॐ श्री विीरागाय नमीः
६०. ॐ श्री चवनयात्मने नमीः
६१. ॐ श्री विास्पिये नमीः
६२. ॐ श्री वरप्रदाय नमीः
६३. ॐ श्री विीकृिाक्तखलजगि नमीः
६४. ॐ श्री चवद्यारिाये नमीः
६५. ॐ श्री वैराग्यचविुद्धचित्ताय नमीः
६६. ॐ श्री िान्तस्वरूचपणे नमीः
६७. ॐ श्री चिवानन्दवात्सल्यभाजनाय नमीः
६८. ॐ श्री चिवानन्दस्वरूचपणे नमीः
६९. ॐ श्री चिष्टपूचजिाय नमीः

७०. ॐ श्री चिवाकाराय नमीः
७१. ॐ श्री िरणागिवत्सलाय नमीः
७२. ॐ श्री सवपगुणोपिेाय नमीः
७३. ॐ श्री सवपमङ्गलकिे नमीः
७४. ॐ श्री सवपकामदाय नमीः
७५. ॐ श्री सवपदुीःखिमनाय नमीः
७६. ॐ श्री त्तस्मिभाचषणे नमीः
७७. ॐ श्री सुमनसे नमीः
७८. ॐ श्री समूपूणपकामाय नमीः
७९. ॐ श्री स्थििीलाय नमीः
८०. ॐ श्री सवपदेचहिरण्याय नमीः
८१. ॐ श्री सवापत्मने नमीः
८२. ॐ श्री सौम्याय नमीः
८३. ॐ श्री सवप प्राचणसुहृदे नमीः
८४. ॐ श्री सवपभूिानुकत्तम्पने नमीः
८५. ॐ श्री संशिाभीष्ट्दायकाय नमीः
८६. ॐ श्री सनािनाय नमीः
८७. ॐ श्री सत्यस्वरूपाय नमीः
८८. ॐ श्री सवपचजिे नमीः
८९. ॐ श्री सवोत्तमाय नमीः
९०. ॐ श्री समस्तजनपूचजिाय नमीः
९१. ॐ श्री सद्गुरुिरणरिये नमीः
९२. ॐ श्री सत्यकीिपये नमीः
९३. ॐ श्री संन्याचसवयापय नमीः
९४. ॐ श्री स्वयंज्योतिषे नमीः
९५. ॐ श्री सुदीत्तप्तमिे नमीः
९६. ॐ श्री सवोपाचधचवचनमुपिाय नमीः
९७. ॐ श्री सत्तिदानन्दचवग्रहाय नमीः
९८. ॐ श्री संसाररोगचभषजे नमीः
९९. ॐ श्री सत्यव्रिाय नमीः
१००. ॐ श्री सुकीिपये नमीः
१०१. ॐ श्री सवपवेदचवदे नमीः
१०२. ॐ श्री सदािारिीलाय नमीः
१०३. ॐ श्री सवपज्ञाय नमीः
१०४. ॐ श्री हंसाय नमीः
१०५. ॐ श्री अचभवनद्याय नमीः
१०६. ॐ श्री परमेचष्ठने नमीः
१०७. ॐ श्री चिवानन्दहृदयकमलभृङ्गाय नमीः
१०८. ॐ श्री सद्गुरुचिदानन्दस्वाचमने नमीः

****

ॐ नमो भगविे जगन्नाथाय : "चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्"

ॐ श्री गुरवे नमः

– श्रीगजपचि महाराज चदव्यचसंहदेव जी (पुरीनरि) –

"शनत्य ि्ुद्धं शनराभासं शनराकारं शनरंजनम्।
शनत्य बोधं शिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्।।"

(गुरुगीिा: २६)

"गुरुचनत्यहै,ि्ुद्धहै,आभासरचहिहै,चनराकारहै,चनरंजनहै,चनत्यबोध(ज्ञान) स्वरूपहै,चिदानन्दस्वरूपहै,(चिदानन्दब्रह्महै)उसपरब्रह्मगुरुदेवकोमैंनमस्कार(प्रणाम) करिा हाँ।"

हमवणपनिीकावणपनकैसेकरसकिेहैं?अथवाअगाधकीगहराईकैसेमापसकिे हैं?अथाहकीथाहकैसेपासकिेहैं?जोसि्-चि्-आनन्द(सच्चिदानन्द)सेएकाकारहोचनत्य होगया;उसके चदव्यगुणों के अल्पांिदिपन,अवलोकनसेनहीं समझाजासकिाअथाप्िीचमि दृचष्टनहीउसेजानसकिीहैनहीव्यिकरसकिीहै।वस्िुिः यहीत्कस्थचिहमारीहैजबहम परमआराधनीय,परमचप्रयसद्गुरुदेवश्रीस्वामीचिदानन्दजीसरस्विीमहाराजकीमचहमा-गायन का प्रयत्न करिे हैं िो।

नौवषपपूवपपूज्यश्रीस्वामीजीमहाराजकीसंन्यासदीक्षाकीस्वणपजयन्तीके िुभावसरपर, मुम्बईमेंआयोचजिअन्तराप्ष्ट्रीयचदव्यजीवनसंघसम्मेलनके आयोजकों नेचवचभन्नसुअवसरों से सम्बत्न्धिपूज्यस्वामीजीमहाराजकेउिकोचटकेउत्कृष्टचित्रों एवंप्रबुद्धज्ञानमयकथनों युि एकचवलक्षणसंकलन'चिदानन्दहाँ'काप्रकािनचकयाथा।'चिदानन्दहाँ'कीप्रस्तावनामेंपूज्य स्वामी जी ने 'स्वामी चिदानन्द' का पररिय उन्हीं के िब्दों में इस प्रकार चदया है-

"मैं पूज्यपाद एवं चप्रयिम परम पावन परम आदरणीय गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज का चिष्य हाँ। उसी क्षण से (१९ मई १९४३ की अपराह्न बेला में पावन गुरुदेव के प्रथम दिपन से) आज इस क्षण िक मैं पावन गुरुदेव के श्री िरण-कमलों ंका ही केवल... सेवक रहा हाँ िथा अपनी पूणप सामथ्र्यापनुसार उनका ही आज्ञाकारी चिष्य रहा हाँ। चजस प्रकार के जीवन जीने की चिक्षा उन्ोंनें दी थी, उसी प्रकार का जीवन जीने की पूणप िेष्टा करिा रहा हाँ। जहााँ िक सम्भव हो सकिा है, मैं अनेकचवध उनकी सेवा के चलए प्रयत्नील रहिा हाँ। चवगि पिपन वषों से मैं जैसा हाँ, अब भी इस क्षण िक मैं वैसा ही एकरस हाँ िथा इस इहलौचकक जीवन के अक्तन्तम चदन िक भी... मैं चिष्य एवं सेवक के रूप में ही रहाँगा।"

पूज्य स्वामी जी महाराज के इन सब िब्ों ंके ही मूिप रूप हैं उनके सब चक्रया-कलाप। आराधनीय गुरुदेव परम पूज्य स्वामी चिवानन्द जी महाराज के िरणकमलों ंमें परम पूज्य स्वामी जी की आदिप दृष्टान्तात्मक भक्ति और सेवा के प्रिुर प्रमाण हैं ये िथा हम सबको सुचनचश्चि रूप से गुरु-भक्ति और गुरु-सेवा के िुिम आदिप दिापिे हैं।

चकनु्त क्ा पावन गुरुदेव ने स्वामी चिदानन्द को, अपने अनेक चिष्यों ंमें, सवोत्तम कहा होगा? बहुि समय पूवप सन् १९५४ में श्री स्वामी चिदानन्द जी के ३९ वें जन्मचदवस समारोह के िुभावसर पर पावन गुरुदेव ने स्वामी जी (चिदानन्द जी) को परम पावन उपाचध "अध्यात्म- ज्ञान-ज्योचि" से चवभूचषि चकया और कहा- **"पूवणजन्म में ही वह (स्वामी शिदानन्द) एक संन्यासी थे।"**

परम गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज ने एक अन्य सुअवसर पर और अचधक सुचनचश्चि एवं सुस्पष्ट् रूप से सुव्यि चकया चक-

"स्वामी शिदानन्द अपने पूवण जन्म में ही एक महान् योगी और सन्त थे। यह उनका अच्चन्तम जन्म है। शबदानन्द एक जीवनु्मि, एक महान् सन्त, एक आदिण योगी, एक पराभि और एक महान् मनीषी हैं। स्वामी शिदानन्द ये हैं और हैं इससे कहीं ंऔर अशधक। यह शमिन के कोहनूर हैं। शिदानन्द जी के प्रविन उनके सन्त हृदय के भावोद्गार हैं, अन्तज्ञाणन की अशभव्यच्चियााँ हैं। उनके प्रविन स्वणाणक्षरों ंमें मुशद्रि शकये जाने िाशहए।"

पावन गुरुदेव जी ने जो आदर-सम्मान अपने चिष्य को प्रदान चकया, वह चिवानन्द आश्रम में आश्रमवाचसयों ंको चदये गये भाषणों ंके एक भाषण की चनम्नांचकि अचभव्यक्ति से सुस्पष्ट्िया उद्घाचटि हो जािा है।

"आप सबको स्वामी शिदानन्द को गुरु मानना िाशहए। मैं भी अपने गुरु रूप में उनका आदर करिा हूँ। मैंने उनसे अनेक शिक्षाएँ ग्रहि की हैं। मैं उनसे प्रेम करिा हूँ। मैं उनकी पूजा करिा हूँ। उनका ज्ञान शवपुल है। और उनकी प्रज्ञा ईश्वरप्रेररि सहजानुभूि है। उनका िील स्वभाव अनुपम है। उनका हृदय अशि उदार है िथा करुिा िुल् हैं। आप सबको उनसे शिक्षा ग्रहि करनी िाशहए। िभी, केवल िभी आप उन्नि होंगें, पररवशधणि होंगें, और होंगें शवकशसि।"

जैसी उिकोचट की प्रिंसात्मक अचभव्यक्ति अपने चिष्य के प्रचि महान् गुरु स्वामी चिवानन्द जी ने की है-वस्तुतिुः ऐसे गुरु चवरले ही हिो हैं। यह आश्चयप की बाि नहीं ाहै। जब समय आया बि स्वामी चिवानन्द जी ने स्वयं द्वारा संस्थाचपि इस महान् आध्याक्तत्मक संस्था (चमिन) के संालिन हेिु स्वामी चिदानन्द का ही ियन चकया। उनकी (गुरुदेव की) महासमाचध के कुछ चदन पूवप स्वामी चिवानन्द जी के बिपन के चमत्र श्री कचव-योगी िुद्धानन्द भरचियार उनसे चमलने आये। उन्होंने पुण्यिील गुरुदेव से पूछा-

"स्वामी जी, कृपया मुझे बिलाइये चक अपने ग्रन्थों ाऔर भवनों ाके अचिररि आप मानव-समाज को कौन सी िाश्विि ररक्थ (उत्तराचधकार में दी जाने वाली सम्पदा) अपनी वसीयि में प्रदान करेंगे। क्या यह चदव्य जीवन संघ है? अथवा आपके द्वारा प्रचिचक्षि पचवत्र संन्यासी वृन्द है?" कुछ क्षणों ाकी गम्भीर चविारणा के उपरान्त, स्वामी जी ने उत्तर चदया, "चनचश्चि ही, चिदानन्द-वह जीवन्त ररक्थ है, जो मैं अपने पीछे चदव्य जीवन संघ (चमिन) के संालिन हेिु छोड कर जाऊँगा।"

वर्षों पहले से ही पूज्य स्वामी चिदानन्द जी की कृपामयी एवं पुण्यमयी उपक्तस्थचि ने, सबमें-भारिदेि के भीिर व बाहरी देिों ामें िथा वररष्ठ गुरुभाई से ले कर सामान्य साधक में-उिकोचट का मान-सम्मान, श्रद्धा व प्रिंसा के भाव जगा चदये थे। आराधनीय गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी के अचिररि सम्भविुः चकसी अन्य ने स्वामी चिदानन्द जी का इिनी सूक्ष्मिा, सचन्नकटिा और गहराई से ध्यानपूवपक अवलोकन नहीं ाचकया होगा जैसा चक उनके अपने आदरणीय गुरुभाई पूज्य स्वामी कृष्णानन्द सरस्विी महाराज जी-जो चिवानन्द-कोष के एक और िूडामचण है-ने चकया है। पूज्य स्वामी चिदानन्द जी की मंगलमयी 'हीरक जयन्ती के' िुभावसर पर सन् १९७६ में अपने एक लेख 'प्रिीि का प्रकाि' में अपने गुरुभाई के प्रचि चजन भावोद्गारों ाकी अचभव्यक्ति की है, वे हैं ये

"चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की मंगलमयी हीरक जयन्ती के िुभावसर पर कुछ भाव-चविारों ाको चलक्तखि स्वरूप देने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इससे वे सभी चजज्ञासु लाभाक्तन्वि होंगें, जो सत्य के उस स्वरूप को जानने के आकांक्षी हैं चक स्वामी जी महाराज एक प्रज्वचलि दीप की भााँचि दीक्तप्तमान् (िेजोमय) हिो हुए भी चकस प्रकार अपने चदव्य इस सुकोमल, कृि काया से सुधामयी िीिल चकरणें चवकीणप कर रहे हैं।"

"चनष्पक्ष, िटस्थ, चनरपेक्ष सम्यक् अध्ययन व चवश्लेषण के उपरान्त सिि और चवनम्र अचभमि से मुझे इस सत्य का चदग्दिपन हुआ है चक श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज इस लवणाकर धरिी के एक वास्तचवक महान् मधुराचिमधुर स्वरूप हैं। चकन्तु कैसे? कोई भी पूछ सकिा है। चवगि िीस वर्षों के सजग व सिि अवलोकन का ही सुखद चनष्कषप है यह। मुझे पूणपरूपेण चवचदि है चक संसार के चभन्न-चभन्न भागों ामें (देिों ामें) स्वामी जी के असंख्य भि, चिष्य, प्रिंसक और साधक-चिक्षाथी हैं चजन्होंने अपने-अपने ढंग से प्रेम-सेवाभावमय सुन्दर, सौम्य, प्रबुद्ध आदिप जो जीवन सबके चलए सुख प्रदायक है के चवषय में चलखा और कथन चकया है। चकन्तु उनको परखने एवं उनसे कुछ सीखने के चलए चजिना सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है, उत्तना कदाचिि् ही चकसी अन्य को प्राप्त हुआ होगा, क्योंचक उनके साथ मेरे जीवन का अचधकांि समय का सम्बन्ध बहुमुखी रहा है। हमारा परस्पर व्यक्तिगि, भ्रात्रीय (भ्रािृ-भाव सम्बन्धी), सामाचजक, औपिाररक (कायापलय सम्बन्ध) िथा आध्याक्तत्मक सम्बन्ध सब एक साथ ही रहे हैं।"

"स्वामी शिदानन्द जी महाराज न ही केवल सदा मेरे शमत्र, दिाणशनक और पथ-प्रदिणक रहे हैं प्रत्युयि अनेक पहलुओं ंसे वे मेरे गुरु भी हैं। श्रद्धास्पद गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी के पश्चाि् मैं इन्हीं ंको नमन-वन्दन करिा हूँ। वस्तुिः अपने जीवन का पूिण बोध (ज्ञान) मुझे दो अशवस्मरणीय स्रोिों ंसे प्रिा हुआ है, यथा-गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज और पूज्य श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज। जीवन के शदव्य लोकोत्तर पथ की शिक्षा मुझे श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज, और उसके अन्तशनणशहि पक्षों ंको मेरे शित्त में बैठाने का श्रेय ि श्री स्वामी जी (शिदानन्द जी) के आि-त्यागमय जीवन को ही जािा है ।"

पूज्य गुरुदेव स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चदव्य व्यक्तित्व सम्बिी बहुि कुछ कहा गया है िथा ग्रन्थ चलखे जा सकिे हैं; चकन्तु अचनवपिनीय (वणपिनािी) का वणपन करने में िब् अवश्यमेव असफल चसद्ध होंगे। **वे ियशनि व्यच्चि वास्तव में धन्य है। शजनको, प्रभुकृपा और अपने पूवणजन्म के संस्कारों ंके फलस्वरूप, गुरुदेव स्वामी शिदानन्द जी के पादपद्मों ंिक पहुँिने का दुलणभ सौभाग्य प्रिा हुआ है िथा सहज ही मुिहस्त (उदारिा) से बँटने वाले शदव्य अमृि के भागी बने हैं। ऐसे साधक के शलए परम लक्ष्य प्राच्चि की आध्याच्चिक यात्रा शनस्सन्देह सुरशक्षि एवं सुशनशश्चि है। एक शवदेशी शिष्य ने स्वामी जी से पूछा, "स्वामी जी क्या मैं भगवत्साक्षात्कार प्रिा कर सकूँगा?" स्वामी जी का उत्तर सुशनशश्चि और सुस्पष्ट था। उन्होंने कहा-**

"अपने आकांशक्षि गन्तव्य का रेलवे शटकट खरीद कर आप गन्तव्य थथान की ओर जाने वाली टेरन में बैठ जािे हैं। क्या कभी आपने सन्देह शकया शक टेरन गन्तव्य थथान िक आपको ले जायेगी या नहीं?ं उसी प्रकार यशद आपने एक बार शिदानन्द टेरन का आश्रय ले शलया है िो शवश्वास रच्चखए..... आप अपने शदव्य लक्ष्य (गन्तव्य) को प्रिा करेंगे ही।"

वे भाग्यिाली हैं जो 'चिदानन्द-टेरन' में बैठ गये हैं अथापि् िरणागि हो गये हैं। आवश्यक बाि यह है चक जब िक हम अपने गन्तव्य (परम लक्ष्य) िक नहीं ंपहुँिि िब िक हमें बैठे रहना है–रणागि रहना है। दूसरे िब्दों ंमें–ात्पयप यह है चक चिष्य को सदा चनश्शंक हो कर गुरुदेव के उपदेिों–आदेिों–चनदेिों ंका अनुपालन पूणपरूपेण करिे रहना है। िभी, केवल िभी, गुरुकृपा की दीक्तप्त-हमारे हृदय के चदव्य दीप को प्रदीप्त कर-सदा हमें प्रखरिा से दीक्तप्तमान् करिी रहेगी।

श्री श्री जगन्नाथ महाप्रभु और श्री सद्गुरुदेव की कृपा हम सबको चदव्य पथ पर आरूढ़ रहने के चलए उत्प्रेररि िथा हमारा पथ-प्रदचिपि करिी रहे।

'लोकाः समस्ताः सुच्चखनो भवन्तु !'

हररः ॐ ित्् सि्!

केवल सत्य ही हमें मुक्ति दे सकिा है। असत्य मोक्ष प्रदान नहीं ंकर सकिा। भ्राक्तन्तपूणप चिन्तन एक बिन है। मन गलि चिन्तन का चसंहासन है। हमें यह पिा नहीं ं

र्लिा; चकनु्तु वास्तचवकिा यही है। इसचलए आपके और उसअन्तचनपचहिपरमसत्ता-प्रभु (जो चक आपके चनकटिम से भी चनकट चवद्यमान है) के बीिमेंमूलबाधायहमनही
है। अिः चवनम्रिा और सरलिा पूवपक, सिे चवश्वास और पूणपश्रद्धासचहिथामनद्वारा
रचिि गलि धारणाओं ं(जो चक माया जचनि हैं) को एक ओरछोडकरहमेंभगवान्की
ओर बढ़ना िाचहए।

-स्वामी शिदानन्द

"गुरुःसाक्षाि् परब्रह्म िस्मैै श्रीगुरवे नमः"

– िॉ. श्यामसुन्दर पारिर जी महाराज –

परम पूज्य श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज के िरिों ंमें भाव-पुष्ांजशल

जब-जब धरा पर जीव अकृिाथप रहने लगिे हैं, िब प्रभु अपने अंिसे अचभभिू कर सन्तों ं
को कृिाथप करने हेिु धरा पर भेजिे हैं, जो मोह-चनिा में सोये जीवों ंको उचत्तष्ठ-जागृि का सन्देि
दे कर सावधान करिे हैं। अिः सन्त साक्षाि् प्रभु के कृपाचवग्रह हेिो हैं- "गुरुः साक्षाि् परब्रह्म
िस्मैै श्रीगुरवे नमः।"

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज उन्हीं ंभगवि् चवभूचियों ंमें से थे चजन्होंने कठोर
कचलकाल के कलुचषि प्राचणयों ंका कल्याण चकया िथा प्रभु मागप में प्रेररचि कर परलोक मागप प्रिस्त
चकया। वे जीव बडभागी हैं चजन्हें ऐसी चदव्यिम चवभूचि का साहियप प्राप्त हुआ। ऐसे बहुि कम
बडभागी हेिो हैं जो सन्तों ंके पांिभौचिक कलेवर में रहिे हुए उनकी चदव्यिा का दिपन कर सकें।
वास्तव ंमें वचणपि सन्तों ंकी पररभाषा में श्री स्वामी जी महाराज का समूपूणप जीवन पररलचक्षि होिा
है।

मुझ दास को श्री स्वामी जी महाराज के ९० dot a जन्म-चदवस पर बीकानेर आश्रम में
कथा कहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जहााँ उनके द्वारा चलखा हुआ कृपा-संदेि आिीवापद रूप में
प्राप्त हुआ था िथा चद्विीय अवसर श्री एस. आर. िमाप जी के माध्यम से उत्तरकािी में चमला
जहााँ श्री स्वामी जी महाराज ने िार फल अथप-धमप-काम-मोक्ष कह कर प्रदान चकये। मैं अपना
परम सौभाग्य मानिा हाँ चक उनकी प्रथम पुण्यचिचथ में भी मुझ दास को ऋचषकेि आश्रम में उनके
कृपाभाजक भिों ंके बीि में बैठ कर वाणी पचवत्र करने का अवसर चमला।

श्री स्वामी जी महाराज अपने चिन्मय देह से सवपदा कृपा-वृचष्ट करिे रहें, इस आिा का
अचभलाषी ।

३३४ ए, िैन्य शवहार कॉलोनी, फेस१
वृन्दावन-२८११२१
(उत्तर प्रदेि)

कुछ प्र्ेरक संस्मरि

ि–ॉ देवकी कुट्टी मिाा जी, शिवानन्द आश्रम-

आराध्य गुरुदेव श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज के समय की बाि है जब श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज लखनऊ आिे थे कृपालु गुरुदेव मेरे चलए कुछ पुस्तकों ंका ज्ञान-प्रसाद भेजिे थे। श्री स्वामी जी महाराज जहााँ ठहरिे थे वहीं ंसे मुझे ज्ञान-प्रसाद देने के चलए स्वयं साईचकल लिा कर आिे थे। इिने सरल, चनष्कपट, चवनम्र और मृदुल स्वभाव के थे श्री स्वामी जी!

परमाध्यक्ष पद पर आसीन होने के पश्चाि् भी उनके इस स्वभाव और व्यवहार में कोई अन्तर नहीं ंआया, यह है उनकी महानिा और गुरुिा ।

उनकी सरलिा और महानिा का एक और दृष्टान्त। एक बार लखनऊ में ही श्री स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज के प्रविन-श्रवण का मुझे सुअवसर चमला। श्रोिाओं ंमें से चकसी एक श्रोिा ने प्रविन सुनने के उपरान्त स्वामी जी से पूछा, "आज भी भारि में कोई सन्त है चजसने आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर चलया हो?" उन्होंने (स्वामी चिन्मयानन्द जी ने) चनी:संकोि िुरन्त चनश्चयात्मक रूप से कहा, "हााँ, स्वामी चिदानन्द जी महाराज।" मैं यह सुन कर अचिचय हचषि, प्रफुक्तल्लि और गौरवाक्तन्वि हुई। जब मैं श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को चमली िो मैंने उन्हें यह सब पूवोि बाि बिलायीं, ं िो स्वामी जी महाराज मुस्कराये और उन्होंने कहा, "सम्भविी: उनको (स्वामी चिन्मयानन्द जी को) अन्य साक्षात्कार-प्राप्त सन्तों ंका पिा नहीं ंहोगा जैसे-मााँ आनन्दमयी।" यह है श्री स्वामी जी महाराज की महानिा।

एक बार सन् १९७४ में श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज लखनऊ पधारे। मैं चवषाद एवं चिन्ता-ग्रस्त थी। स्वामी जी महाराज ने मेरी चिन्ता का कारण पूछा। मैंने कहा, "स्वामी जी, मेरे चपिा जी बहुि वृद्ध हो िुके हैं, यचद इन्हें कुछ हो गया िो मैं अकेली क्या और कैसे करूाँगी?" स्वामी जी ने कहा, "िुम चिन्ता मि करो, उनके अन्त समय में मैं िुम्हारे साथ रहाँगा।" दो–िीन महीने के बाद मेरे चपिा जी कोमा (पूणप मूर्छों ंकी अवस्था) में िले गये। उनकी िचबयि चदन पर चदन चबगडिी गयी। कोमा अवस्था में ही िार-पााँि महीने बाद में उनको आश्रम ले कर आ गयी। कोई सुधार नहीं ंहुआ उनकी हालि में। और एक चदन उनकी दिा इिनी चबगड गयी चक ऐसा मालूम पडा चक अक्तन्तम समय आ गया है।

उस समय श्री स्वामी जी महाराज चदल्ली में थे, उनको सन्देि चभजवा चदया गया। उन्होंने उत्तर चदया, "अपने चपिा से कहो चक भीष्मचपिामह की िरह 'िरिय्या' पर ही कुछ देर प्रिीक्षा करें।" उसके पश्चाि् चपिा जी की हालि में थोडा सुधार होने लगा। िीन–िार चदन बाद स्वामी जी

महाराजआश्रमलौटे।आकरउन्होंनेंमूद्धापवस्थामेंहीचपिाजीकोकुसीपरचबठाया।अपना
चदव्यकृपापूणपहाथउनकेचसरपररखा,उनसेबिाकीऔरउन्हेंपचवत्रगंगामैयाकादिपन
करवाया। स्वामी जी ने मुझे चपिा जी के सामने, उस अन्त समय में जाने से रोक चदया चक कहीं ं
उनकीमोहासक्तिमेरेप्रचिजाग्रिनहोजाये।अन्तिीःस्वामीजीनेअपनावरद,अभयहस्त
उनकेहृदयपररखा,कुछिमिोरणऔरजपचकया।इसप्रकारमेरेचपिाजीनेचबनाचकसी कष्टकेअपनेपाचथपविरीरकात्यागचकया।
स्वामीजीनेउनकीअथीकोकिाभीचदया।जब
मैंने कहा, "स्वामी जी, आप िो संन्यासी हैं।" स्वामी जी ने कहा, "आपके चपिा जी श्वेि वस्त्रों ं
मेंभीएकसंन्यासीहीथे।अन्तसमयमेंमेंरहाँगा।"स्वामीजीनेअपनेविनकोपूणपरूपेण
चनभाया चजसका वणपन िब्दों ं से परे है।

'परशहि सररस धरम नशहं भाई'

– श्री ओमप्रकिा जी, हररद्वार –

१९४३ में 'श्री चवश्वनाथ मक्तन्दर' के 'प्राण-प्रचिष्ठा महोत्सव' की िैयारी में सारे आश्रमवासी
चदन-रिा कायप में जुटे हुए थे। इन्हीं ंचदनों ंमेरे पूज्य चपिा जी एवं िािा जी आश्रम के मक्तन्दर में
संगमरमर का कायप पूणप करने हेिु कैम्प लगाये हुए थे। जहाँ िक मुझे याद है, मेरी अवस्था
लगभग आठ वषप की रही होगी। उन्हीं ंचदनों ंइस धवल वस्त्धारी महान् चवभूचि के दिपन हुए,
चजन्हें लोग सम्मानपूवपक 'राव जी' कह कर सम्बोचधि करिे थे। िब से अब िक उनका वरदू
हस्त सदैव मुझ पर रहा है और चवश्वास है चक सदा बना रहेगा।

मुझ जैसे अनुभविून्य एवं सांसाररक कायों में चलप्त व्यक्ति के चलए ऐसी महान् चदव्यात्मा के
प्रचि कुछ चलखना या कह पाना असम्भव-सा ही है, परन्तु चफर भी साहस बटोर कर कुछ चलख
पाऊँगा, यह उनकी कृपा व आिीवापद का ही फल है। सेवक को महाराजश्री के साचन्नध्य में
चनवास करिे हुए चवद्याध्ययन का गौरव प्राप्त है। इसचलए समीप से सब-कुछ देखने व सुनने का
अवसर प्राप्त हुआ है।

'Service of man is Worship of God- मानव-सेवा ही प्रभु आराधना है-गुरुदेव
की इस आज्ञा को चिरोधायप कर महाराजश्री ने ब्रह्मियप जीवन से आश्रम के लंगर (रसोईघर) के
समीप क्तस्थि एक कक्ष में एक आलमारी में ही 'चिसे्पिरी' िोला कर सेवा कायप आरम्भ चकया।
आपकी सेवा-सुशूरूषा से आश्रमवाचसयों ंके अचिररि मुचनकीरेिी की जनिा एवं ढालवाला के कुष्ठरोगी
स्वास्थ्य-लाभ करिे रहे। सभी के मन में आपके प्रचि श्रद्धा जाग्रि हुई। 'राव जी' भी 'िाक्टर
स्वामी' कहलाने लगे।

गुरुदेव के जीवन पर आधाररि 'Light Fountain' ने आपको आश्रम के चवद्वानों ंकी
श्रेणी में अग्रणी बना चदया। योग मूूचजयम आपकी ही देन थी। योग-वेदान्त आरण्य अकादमी में
'राजयोग' के अध्यापन के चलए गुरुदेव ने आपको ही चनयुि चकया। सेवाभावी िाक्टर स्वामी,
चवद्वान् के रूप में सबके समक्ष अविररि हुए। इिने पर भी अचभमान पास फटकने का भी

दुस्साहस नहीं ं कर सका। सदैव प्रसन्नचित्त, दीन-दुक्तखयों ं को सानत्वना दिे, आश्रम के रोचगयों ं की सेवा-सुशूरूषा करिे िथा अपनी साधना में सदैव िल्लीन रहिे ।

आश्रम में बिपन माँाँजना, पानी भरना, मक्तन्दर के चलए चवल्वपत्र िोड कर लाना आचद आश्रम के सभी छोटे-छोटे कायों को चकया, लेचकन उन्हें कभी छोटा नहीं ं समझा। सदैव 'नारायण-सेवा' समझ कर पूजा-अिपना के समान चदल लगा कर इन कायों को सम्पन्न चकया। एक और यह कायप, दूसरी ओर आश्रम के 'जनरल सेक्रेटरी' के रूप में राष्ट्रपचि महामचहम िा. राजिेप्रसाद एवं सवपल्ली िा. राधाकृष्णन् जैसी महान् चवभूचियों ं का स्वागि करने का गौरव भी आपको प्राप्त हुआ। परन्तु आपने सभी कायों को समान समझा।

सडक पर बैठे, भीख माँाँगिे हुए कुष्ठरोचगयों ं को देख कर सदैव ही आपका सरल हृदय द्रचवि हो उठिा। इस महान् िपस्वी ने आक्तखर एक चदन कुष्ठ से पीचडिों, ं दुक्तखयों ं के चलए रहने, खाने व कपडे की व्यवस्था कर इन्हें अचनवायप आवश्यकिाओं ं की चिन्ता से मुि कर चदया। सेवा-सुशूरूषा व चिचकत्सा की स्वयं व्यवस्था की िथा दिे-चवदिे से आये साधक स्वामी जी की प्रेरणा पर कुष्ठरोचगयों ं के बिी रह कर उन्हें रोग-मुि कर पाने में समथप हुए। हथकरघा उद्योग का ज्ञान चदला कर इन्हें जीने की राह चदखाई। आज ये कुष्ठ रोगी समाज पर भार नहीं, ं बक्ति समाज के उपयोगी अंग बन गये हैं।

संक्षेप में-

संक्षेपमेंमैंनेश्रीस्वामीचिदानन्दजीमहाराजकोदेखाहैमक्तन्दरमेंपुजारीबनकरपूजा करिे, जंगल से चबल्वपत्र और फू ल लािे, चिस्पेंसरी में रोचगयों ं की सेवा करिे, घायल व्यक्तियों ं कीमरहम-पट्टीकरिे,इंजैक्शनलगािे,कुष्ठरोचगयों ंकीसेवाकरिे,औरदेखाहैमाँाँगंगाको प्रणामकरजलमेंकूदिे,िैरिे,जैसेबालकमाँाँकीगोदमेंक्रीडाकररहाहै,खेलरहाहै, चनष्कामसेवाकापाठअपनेसामनेवालों ंको(साधकों ंको)चसखािेजैसेभवन-चनमापणके चलए ईंटढोिे,पाकिाला(चकिन)के चलए,गंगाजीसेपानीभरिे,लंगरके चलएलकडीपहुँाँचािे, 'दचिवाइनलाइफ'मैगजीनकोचिस्पैिकेचलएिैयारकरिे,फाविडािलािे,आश्रमकेसभी प्रकारकेचनमापणकायपमेंहाथबटािे,नगर-संकीिपनकरिे,नाटकमेंभागलेिेऔरनाटकों ंका चदग्दिपनकरिे,जादूकेखेलचदखािेऔरदेखाहैकुत्तेऔरचबल्लीकोएकहीबिपनमेंखाना क्तखलािे,देखाहैबन्दरकोउनकीआज्ञाकापालनकरिे,चजसेयेप्यारसे'ऋचषराम'कहकर पुकारिेथे,गऊमािाकोप्रणामकरिे,उनकीसेवा-सुशूरूषाकाध्यानरखिे,चवश्वनाथबागकी देख-रेखऔरसाज-साँवारकरिे,औरदेखाहैसाईचकलिलाकरआश्रमकीचवचभन्नप्रकारकी सेवा करिे।

अध्यक्ष पदग्रहणकरनेकेउपरान्तभीसाईचकलसेचनत्यऋचषकेिचवश्वनाथबागआौ-
सिंघ,**नाग्यामेंबैठकर**आपश्रमक्तस्थिजजसाहबगौरीिंकरजीमहाराजके
कबीर-चवमिप करिे, देखा है सन्तों ं के समीप बैठ कर सन्मागप पर लिने की िािपि मुचनकीरीिमेंसफाईकमपिारीसेप्रेमसेवािापकरिेऔरदेखाहैभारिकेराष्ट्रपचिकेसाथवािाप करिे और दोनों ं को ही सम्मान और आदर प्रदान करिे, समान भाव के साथ छोटे-बडे, अमीर-गरीब से चमलिे।

श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज ने सदैव अपने ओठों ंकी बजाय अपने जीवन के कायों द्वारा धमोपदि शदया है अथाणि् हमारे कृत्य िब्दों ंकी अपेक्षा अशधक प्रभावी हिो हैं,
अिएव हम जो कहना िाहिे हैं, उसे करके शदखायें।

He only is fitted to command and control who has succeeded in Commandingand Con- trolling himself.

'गुरिां गुरुः'

– वैद्य अनसूया प्रसाद मैठानी जी, श्यामपुर-

मैं महचषपकु ल ब्रह्मियापश्रम संसूकृ ि चवद्यालय, लक्ष्मणझूलू ा में प्रवेचिका का छात्र था। चिवानन्द आश्श्रम में स्व. सक्तिदानन्द मैठानी जी (मास्टर जी) व महिानन्द िास्त्ी जी गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी द्वारा चिक्षा प्रसार हिु खोली गयी प्राइमरी पाठिाला में अध्यापन का कायप करिे थे।

स्व. श्रदे्धेय मैठानी जी आश्रम में 'मास्टर जी' के नाम से ज्यादा जाने जािे थे। बाद में अन्तरापष्ट्रीय ख्याचि प्राप्त 'चिवानन्द आयुवेचदक फामेसी' के प्रमुख चिचकत्सक व मैनेजर भी रहे। स्व. मैठानी जी ररश्िे में मेरे अग्रज थे, मेरी उनमें अत्यन्त श्रद्धा थी। मैं उन्ें न के वल बडा भाई ही मानिा था, अचपिु ईश्वरीय छचव भी उनमें देखिा था। प्रवेचिका का छात्र होने के कारण मेरी आयु उस समय बहिु कम (लगभग १०-११ वषप) थी। घर से दूर रहने के कारण घर व घरवालों ं की याद बहिु सिािी थी। इसी के िलिे एक चदन मैं लक्ष्मणझूलू ा से जैसे-िैसे चिवानन्द आश्रम में श्रदे्धेय भाई साहब (मास्टर जी) से चमलने पहुाँिा, चकनुिु भाई साहब नहीं ं चमले। मैं चनरािा हो कर बडा दुीःखी हुआ और दुीःखी मन से वापस लक्ष्मणिूला जाने हिु नाव घाट की िरफ जािे हुए पुराने चिवानन्द पोस्ट आचफस व विपमान पोस्ट आचफस के बीि की गली के चपछले चहस्से में बने आलमारीनुमा आले में व्याकुल हो कर बैठ गया। इिने में ही "प्रसीद देवि जगचनवास" को लय के साथ गािे हुए श्िेि पररधान में एक दुबले-पिले युवा साधक वहााँ पर आये, बोले-"कहााँ से आये हो, चकसका इन्तजार कर रहे हो व चकससे चमलना है?" वह युवा साधक और कोई नहीं ं **परम पूज्य श्रदे्धेय स्वामी शिदानन्द जी महाराज थे।**मैंनेअपनीआपबीिीऔरअपनापररिय पूज्य स्वामी जी को ऊाँिे गले से बिाया। **पूज्य स्वामी जी ने बडे स्ेनेह और प्ेरेम से मेरे आाँसू पोंछिे हुए गोद में उठाया** और लंगर में ले जा कर कहा चक- "पहले आप भोजन करो, और चफर लक्ष्मणझूलूा जाना िथा चकसी अन्य चदन आ कर मास्टर जी से चमल लेना, क्ोंचक वे अभी छुट्टी पर गााँव गये हैं।" **स्वामी जी का वह स्ेनेह व प्ेरेम मेरे शलए हमेिा अशवस्मरिीय रहा है। ऐसे थे स्ेनेह व वात्सल् के धनी महान् समाजसेवी सन्त परम श्रदे्धेय स्वामी शिदानन्द जी महाराज।**

******

कुछ समय पश्िाि् मुझे यज्ञोपविी लेना था। मेरी श्रद्धा भाई साहब (मास्टर जी) पर थी। उनके द्वारा िुभ चदन चनचश्िि चकया गया। यज्ञोपविी से पूवप जैसे चक सुना था िीन चदन का व्रि (पहले चदन चसफप फलाहार, दूसरे चदन जलाहार लेना िथा िीसरे चदन जल भी ग्रहण न करना)
धारण कर, िपोवन (लक्ष्मणझुला) के मोक्ष आश्रम में क्तस्थि पीपल के पेड की सुखी लकडी हवन

हिु िुन करवघरसेऔविचपिाजीद्वारादीगयीअठन्नीकोदचक्षणाहिुरखकरब्रिबि
(यज्ञोपविी) व गायत्री मि लेने चिवानन्द आश्रम में पहुाँाि। भाई साहब (मास्टर जी) ने मक्तन्दर में
बि पूवप की पररक्रमा में क्तस्थि प्रिीन हवन कु ण्ड (अब पचश्चमी चदिा में यज्ञिाला बनी है) में मेरा व मेरे अनन्य चमत्र व गुरुभाई श्री चिरंजीलाल कोचठयाल जी, जो बाद में ठेकेदार भी बने, का
यज्ञोपविी हवन व कमपकाण्ड चकया।
रीक िथ्य यह है चक इस यज्ञोपविी संस्कार का पूरा कमपकाण्ड िो भाई साहब (मास्टर
जी) ने चकया, चकनुतु यज्ञोपविी (जनेऊ) पूज्य राव जी (स्वामी चिदानन्द जी का संन्यास-पूवप
नाम) ने चदया। यज्ञोपविी के पश्चिा् मैंने दचक्षणा हिु रखी अठन्नी को यज्ञिाला में िढ़ाना िाहा चक
उससे पूवप ही परम श्रदे्धेय राव जी (स्वामी चिदानन्नद जी) ने एक-एक धोिी व आठ-आठ आना
दचक्षणा हम दोनों ं बजमानों ं (श्री कोचठयाल व मुझे) दि हुए नमस्कार भी कर कर िाला। ऐसे से
थे पूज्यगुरुमहाराज।

******

चिवानन्द आयुवेचदक फामेसी में औषचध चनमापण िाला इंजिप के रूप में कायपरि रहिे हुए
एक चदन मुझे स्वामी चिदानन्द जी से चवश्वनाथ बाग में सत्यनारायण कथा करने का आदिे प्राप्त
हुआ (िब मैं आश्रम में स्वामी जी के आदिे पर पूजन-कायप भी कर लिेा था)। जैसे ही मैंने
कथा पूवप गणेि-पूजा आरम्भ की पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज यजमान बन कर मेरे सामने बैठ गये। मेरा पसीना चनकलना स्वाभाचवक था। कथा पूणप हुई, बाद में पूज्य स्वामी जी ने पूछा-
"पसीनाक्यों ंआया",औरपरमश्रदे्धेयगुरुदेवस्वामीचिवानन्दजीमहाराजकीहीभााँचिमुझे
भचवष्य के चलए प्रोत्साचहि चकया। पूज्य गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी भी बडी िारीफ करके प्रोत्साचहि
चकया करिे थे। बीजाक्षरों ं का अथप भी कभी-कभी पूछ चलया करिे थे। यद्यचप मैं मात्र पुस्तक पढ़ने के अलावा कु छ नहीं ं जानिा था, चकनुतु उनकी कृ पा से सही उत्तर भी दे बैठिा था।

एक बार मुझे आश्रम चप्रंचटंग प्रेस के पीछे क्तस्थि 'सरस्विी कु टीर' के चिलान्यास-पूजन का
आदिे प्राप्त हुआ। चमक्तस्त्यों ं द्वारा वहााँ जमीन खोद कर गड्ढा बना चदया गया था। मैंने उसमें गणेि
आचद बना कर पूजा आरम्भ कर दी, चकनुतु िायद भूलवि उसमें दीपक नहीं ं रखा। स्वामी
चिदानन्द जी अन्य वररष्ठ सन्तों ं के साथ पास ही खडे थे। चिलान्यास-पूजन हुआ, 'जै गणेि
संकीिपन' व प्रसाद चविरण हुआ, चमक्तस्त्यों ं व मुझे दचक्षणा भी प्रदान की गयी। जािे हुए पूज्य
स्वामीजीमहाराजचनकटआयेऔर**धीरे से बोले-"गणेि के पास दीपक जला कर रख दें।"**
मैं सन्न रह गया। भचवष्य में मैं जब भी पूजन-कायप करिा, दीपक जलाना जरूर याद रखिा। ऐसे
थे**'गुरुिां गुरु' स्वामी चिदानन्द जी महाराज।**

******

एक बार मुचनकीरेिी टाउन एररया के िुनाव आये। नगर के कुछ राजनैचिक व्यक्ति िाहिे
थे चकस्वामीजीउनकोसमथपनदें।स्वामीजीनेजबउदासीनिाचदखाईिोअगलेहीचदनआश्रम व
स्वामीजीपरकटाक्षवअपिब्दभरापैम्फ्लेट(पत्रक)नगरमेंचविररिहोनेलगा।मैंनेवह
पैम्फ्लेट स्वामी जी िक पहुाँाया, स्वामी जी ने िुरन्त आदमी के भेज कर मुझे बुलाया और उस
पत्रक का चवरोध न करने की मुझे आज्ञा दे िाली।

अगले िुनाव में एक नवयुवक स्वामी जी से आिीवापद ले गया और सफल हो गया। उस
िुनाव में नवयुवकपक्षके लोगों ंद्वारामुझेपोचलगएजेन्टबनाचदयाचदयागया।मैंउनचदनों ंबहिु

मुखर बिों करिा था व सिी बिाों ं पर अड जिाा था। मिदान के चदन जब दूसरे पक्ष के ऐजेन्ट द्वारा गलि वोट िलवाने की कोचिि की जा रही थी िो कडे चवरोध के िलि उसे पोचलंग बूथ छोड कर बाहर जाना पडा। पूज्य स्वामी जी ने जब सुना िो मुझे बुला कर कुछ न कहने को कहा और अगले चदन जब वह अचधकारी स्वामी जी के दिपन करने गया िो पूज्य स्वामी जी द्वारा उसे न चसफप सानत्वना दी गयी अचपिु अचे्छे व किपव्यचनष्ठ बनने का आिीवापद भी चदया। इिने
महान् सन्त थे पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज।

******

श्रदे्धेय स्वामी शिदानन्द जी महाराज एक महान् कमणयोगी भी थे।आश्रममेंकोयला जलाने हिेु आिा था। एक बार कई बोरों ंमें कोयला आया।सभीसेवकनदारद,िबआश्रममें सेवक भी कम हिो थे। पूज्य स्वामी जी िब चवश्वनाथ मक्तन्दरके चलएजानेवालीसीढ़ीके दाचहनी रिफ के बरामदे वाले पहले कमरे dot 4 रहा करिे थे।उन्ोंनेदेखासडकमेंकईबोरेकोयले के ढेर पडे हैं। **स्वयं एक खाली बोरी को अपनी पीठ में िाल कर अकेले ही कोयले को गोदाम में ढोने लगे। सेवकों ंने जैसे ही देखा, भागिे हुए कोयला ढोने पहुँिे और िन्द शमनट में ही सभी कोयला गोदाम पहुँि गया।**

******

पूज्य स्वामी जी एक कुिल प्रबन्धक भी थे। परम श्रदे्धेय गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज की महासमाशध हो रही थी। हजारों ंभि समाशध-थथल पर जमा थे। गुरुदेव की कृपा से मैं भी समाशध-थथल पर जहाँ समाशधपूजन-कायण िल रहा था, उपच्चथथि था। भीड अशनयच्चन्त्रि हो गुरुदेव के अच्चन्तम दिणन के शलए पूजन-थथल की ओर बढ़ रही थी, अिानक एक मोटी रस्सी िीव्र वेग से भीड के बीि शगरी और उसे जोर से खींि कर अशनयच्चन्त्रि भीड को समाशधपूजन-थथल से पीछे कर शदया गया। चकिनी कुिलिा और िेजी से वह कपडे की मोटी रस्सी िाली गयी थी, कहा नहीं ंजा सकिा। अगर उस वि रस्सी न चगराई गयी होिी िो िायद बेकाबू भीड में कई लोग दब जािे। उस रस्सी को िालने वाला और कोई नहीं, ं पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज ही थे।

******

आश्रम में जब कोई प्रोग्राम होिा िो स्वामीजीबडेचनरालेप्रोग्रामदेिेथे।सवाल-जवाबके प्रोग्राम में जब कोई सवाल पूछिा था िो पूछनेसेपहलेहीस्वामीजीसवालकाउत्तरचकसी अन्य के पास दे देिे थे। स्वामी जी के इस चनरालेअंदाजसेसभीहिप्रभरहजािेथे।

******

पूज्य स्वामी जी महाराज मानविा व करुणा के पुजारी थे। एक बार मेरा स्वास्थ्य खराब हुआ। स्वामी जी को मालूम हुआ िो िुरन्त आज्ञा हुई "कल लुचधयाना जाना है।" उस वि स्वामी जी के पास लुचधयाना के कोई सहायक मुख्य अचभयन्ता (चजनका नाम मुझे चवसृ्मि हो रहा है) उपक्तस्थि थे। स्वामी जी ने कहा चक आप इनके साथ लुचधयाना जायें, वहााँ आपका इलाज करायेंगे। मैं असमंजस में था, घर पर छोटे-छोटे बिे सूकू ल में पढ़ने वाले व अके ले (क्ोंचक मेरी धमपत्नी का देहावसान हो िुका था), रािन, सब्जी आचद की भी समस्या। कु छ समझ में नहीं ं आ रहा था। सायं होिे-होिे मेरे चबना कु छ कहे स्वामी जी द्वारा महीने भर के रािन आचद की भी व्यवस्था कर दी गयी। मेरी उलझन और बढ़ गयी चक अब कै से स्वामी जी से लुचधयाना जाने के चलए मना करूाँ । राचत्र में ही मुझे पेचिि की चिकायि हो गयी। सुबह जब मुझे आदमी बुलाने आया िो मैंने

लुचधयाना जाने से ना कह चदया। स्वामी जी ने पूछा 'क्यों' ं ो मैंने पेचिि का हवाला दे चदया। "िब ो जाना और भी जरूरी है और अभी जाना है," स्वामी जी का आदेि हुआ। िथा दो गोली माँगा कर दी चजससे पेचिि बन्द हो गयी। लुचधयाना में स्वामी जी के उन चिष्य महानुभाव व उनकी सहधचमपणी जी ने मेरी देख-भाल व अच्छे ा. से इलाज व ैकअप (पररक्षण) कराया। जाँाँ में चकिनी में पथरी चनकली। मैं कुछ चदन चिचकत्सा करा वापस लौट आया। लुचधयाना जािे वि स्वामी जी द्वारा मुझे १०० रुपये भी चदये गये थे। वापस आने पर मैं ५० रुपये की बफी चमठाई ले कर स्वामी जी के दिपन हेिु पहुाँँा। स्वामी जी द्वारा मेरा हाल–ाल पूछा गया। चमठाई भेंट देखिे ही स्वामी जी अपने चदये पैसे वापस माँगने लगे। स्वामी जी ने कहा ५० रुपये वापस दो। िभी रामस्वरूप जी ने अपने चलए कोई दवा बाजार से माँगाने हेिु ५० रुपये मुझे चदये जो मैंने स्वामी जी को चदये, िब जा कर स्वामी जी को सन्तुचष्ट हुई। ायद स्वामी जी को मेरा चमठाई भेट में पैसे अपव्यय करना उचिि न लगा।

******

कु ष्ठरोगी ो पूज्य स्वामी जी को अपना ईश्वर ही मानिे थे। उनकी सेवा के चलए ो स्वामी जी आश्रमवअपनिारीरिकत्यागनेकोिैयाररहिे।स्वामीजीनेअपनाचिष्यबनानेकी कसौटी भी यह रखी थी चक पहले चनलेप, चनष्काम बनें, घृणा को त्याग कर कु ष्ठसेवा करें, चफर चिष्यत्व ग्रहण करें। उन्होंनें कु ष्ठरोचगयों ं के चलए स्थाचपि ापोवन, लक्ष्मणझुला क्तस्थि कु ष्ठ कालोनी में दैचनक भगवि् दिपन हेिु िोिोष भगवान् ंकर व पावपिी का मक्तन्दर बनाया चजसका उद्घाटन पूवप जनरलसेक्रेटरीवउपाध्यक्षपरमपूज्यब्रह्मलीनमाधवानन्दजीद्वाराचकयागयाथा।

पूज्य स्वामी जी गरीब, पीशडि व उपेशक्षि दशलिों ंके प्रशि बडा स्नेह रखिे थे।गािी जयन्ती पर प्राि: हररजन बस्ती में जा कर स्वयं सफाई चकया करिे व अपराह्न १२ बजे समाचध मक्तन्दर में पधारे सभी हररजनों ं को पाद्य, अर्घ्य, गि, धूप, दीप, भोजन, वस्त् और दचक्षणा दे, माल्यापपण व आरिी कर उनकी पूजा चकया करिे। ित्् पश्चाि् उनकी पत्तल में से अविेष अन्न को भीख माँग कर (उसका भी उन्हें उचिि मूल्य दे) उन्हें अपने नारायण रूप में देख समाचधस्थ हो कर उि अविेष अन्न को भोजन रूप में ग्रहण करिे। के के

और अन्त में-

पूज्य स्वामी शिदानन्द जी महाराज परम श्रदे्धेय गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज के न शसफण एक महान् शिष्य थे अशपिु उनकी प्रशिमूशिण थे। पूज्य गुरुदेव व स्वामी जी में बडी समानिा थी चक वे प्रत्येक व्यक्ति को अचधक से अचधक प्रोत्साचहि करने का प्रयास करिे ाहे वह चकिना ही छोटा क्यों ंन हो। उन्हें छोटों ंका दबूबूपन व संकोचिि रहना बडा अखरिा था। गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज से जुडा एक वाक् मुझे हमेिा स्मरण रहिा है व समय-समय पर आत्मबल भी प्रदान करिा है। एक बार में गंगा स्नान करिे हुए, गंगा में ैर रहा था। गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी सत्संग से अपनी कुचटया (विपमान गुरुदेव कुटीर) लौट रहे थे। उन्होंनें साथ िल रहे चिष्यों ंसे सहभाव से कहा- को बुलाओ" (गुरुदेव चिवानन्द "िाायप जी जी महाराज स्नेह से मुझे इसी नाम से पुकारिे थे)। चिष्यों ंने मुझे आवाज लगाई-गुरुदेव बुला रहे हैं।" मैंने सोिा, गुरुदेव ने मुझे ैरिे हुए देख चलया है, इसचलए बुलाया है। मैं आपाधापी में चकनारे आया और धोिी लपेट गुरुदेव के समुुख खडा हो गया। गुरुदेव ने वहाँ उपक्तस्थि गया-नेपाल की रानी व अन्य

भिों ंको एक िरफ होने को कह स्वामी पुरुषोत्तम जी से कहा चक फोटो खिींनी है। उन्होंनें चिष्यों ंसे एक आदमकद माला अपने गले में और एक मेरे गले में िलवा कर दो बडी कुचसपयााँ भी
माँगाई। एक कुसी में गुरुदेव स्वयं बैठ गये व बगल की दूसरी चकनुतु में गुरुदेव के साथ बगल
रिणों ंके पास जमीन पर बैठ कुसी में मुझे बैठने को कहा, की कुसों ंमें न बैठ कर उनके गया।
गुरुदेव का पुनीः आदेि हुआ-"मेरे साथ ऊपर कुसी पर बैठो।" चकनुतु मैंने कहा- यह मेरे चलए
सम्भव नहीं ंहै।" गुरुदेव गुस्से से बोले- "यह दबूबूपन है।" खैर, आक्तखर मेरे जमीन पर बैठे ही फोटो खिींी गयी, चकनुतु फोटो क्तखिवाने के बाद गुरुदेव नाराज हो कर अन्दर कमरे में िले गये
व चफर गुरुदेव के मुझे दिपन सम्भव न हुए। कुछ समय पश्चाि् गुरुदेव के चदवंगि (ब्रह्मलीन) होने
की राचत्र में मुझे स्वप्न में ही पुनीः उनकी कृपा से दिपन हुए। गुरुदेव के साथ खिींी गयी वह
फोटो आज भी मेरे पास उनकी एक मूल्यवान् सूमृचि के रूप में सुरचक्षि है चजसे देख कर मुझे
हमेिा गुरुदेव का स्मरण बना रहिा है।

'जय सद्गुरुदेव!'

'जय गुरुदेव दयाशनधे'

-श्री सोमदत्त हरिी िमाण जी, देहरादून –

'जय गुरुदेव दयाशनधे! भिन के शहिकारी'

प्राीः स्मरणीय श्री सद्गुदेव स्वामी चिवानन्द जी महाराज िथा परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द
जी महाराज से मेरा सम्पकप सन् १९४७-१९४८ से लगािार बना रहा है। प्रारक्तम्भक चदनों ंमें अपने
चपिा श्री चपं्रसीपल िमन लाल िमाप (स्वामी अपपणानन्द जी), मािा श्री रामप्यारी िमाप जी, अनुज
भ्रािा जी एवं अपनी बहनों ंसचहि आश्रम में श्री गुरु िरणों ंमें पहुंिने का सुअवसर प्राप्त
होिा रहा। सन् १९४९ में गुरुदेव की कृपा से ही उत्तर रेलवे चवभाग में मेरी चनयुक्ति हो गयी। सन्
१९५० में अक्तखल भारि-यात्रा के समय मेरी डूयूटी िाहजहााँपुर स्टेिन पर थी। मेरी बडी िीव्र इच्छा
थी चक लखनऊ से पहले गुरुदेव यहााँ पर भी थोडी देर रुक कर दिपन का दुलपभ लाभ प्रदान
करें। यात्रा-योजना में यह सम्भव प्रिीि नहीं ंहो पा रहा था। आश्चयप! महान् आश्चयप ! िाहजहााँपुर
में प्राीः गाडी रुकने पर गुरुदेव पूछने लगे-"िमन लाल जी के सुपुत्र हरिी जी कहााँ हैं?" सुनिे
ही मेरी खुिी की सीमा न रही। परम दयालु गुरुदेव व हमारे स्वामी चिदानन्द जी की पचवत्र
सचन्नचध में बीिे वे क्षण मेरी धरोहर हैं, अनमोल धन हैं। असीम दयालुिा। अहैिुकी कृपा।

पश्चाि् अपनी टैरवचलग डूयूटी के दौरान िो अक्सर श्री स्वामी जी महाराज के साथ रहा।
जहााँ देखा मैंने उनके 'स्वावलम्बन' गुण का अनूठा उदाहरण। चजसे देख स्टाफ के मेरे अन्य साथी
लोग भी िौंक उठिे। रेलवे कम्पाटपमेंट में अपना चबस्तर खोलने और प्राीः उसे व्यवक्तस्थि ढंग से
बााँधने का काम स्वयं अपने हाथों ंसे ही करिे थे। जबचक सेवक जन साथ में रहिे थे।

सन् १९८५ में एक बार आश्श्रम में राचिपुरम के श्री िििेखर जी (श्री स्वामी
गुरुप्रकािानन्द जी) ने मुझे कहा- "आपके चपिा जी पट्टमाई, राचिपुरम आचद स्थानों ंपर श्री

स्वामी जी महाराज के साथ गये थे। आप भी कभी प्रोग्राम बनाइए।" बाि मन को जाँ गयी। मैंने स्वामी जी महाराज के समक्ष अपनी भावना व्यि की। उन्होंने सहषप अपने टूर (tour) में साथ िलने की स्वीकृचि दे दी। मैं, मेरी पत्नी चवमला िथा िीन बेचटयों ंका ररजवेिन उन्हीं ंिारीखों ंमें करा चलया। पूरे प्रोग्राम में हम उनके साथ रहे। अनेक आश्चयपजनक घटनाएँ देखने को चमलीं।ं उनकी ही कृपा से यह दचक्षण यात्रा अचि आनन्दप्रद व अचवस्मरणीय रही।

अपनी पुत्री अिपना की िादी का काडप ले कर जब मैं आिीवापद हेिु देहरादून से स्वामी जी महाराज के पास पहुँिा िो देख कर बोले-"मेरे आिीवापद हमेिा आप सबके साथ हैं। इस िारीख में िो मेरा उडीसा का प्रोग्राम है।"

आश्चयप िब हुआ जब िादी से दो चदन पहले आदरणीय चब्रगेचडयर सब्बरवाल जी के द्वारा सन्देि चमला- होटल का एक कमरा स्वामी जी महाराज के चलए बुक कराना है। िभी मुझे पिा लगा चक उडीसा का प्रोग्राम कैन्सिल कर चदया। चववाह की राि महाराजश्री का िुभागमन हुआ। अपना अमूल्य समय दे कर राि भर बैठ कर सब ध्यानपूवपक देखा-सुना। उस समय बेटी को १०३ चडग्री बुखार था। श्री स्वामी जी महाराज को प्रणाम करने गयी िो उनके िरणों ंमें चगर गयी। भरपूर आिीवापद पाया उसने। आज वह बेटी मेरी िन-मन से सेवा कर रही है। उसका यही अटल चवश्वास है चक मैं िो गुरुदेव की कृपा से ही जीचवि हूँ। उन्होंने ही मुझे िचि दी हुई है।

सन् २००६ की २४ चदसम्बर को गुरु महाराज का ९० वाँ जन्मोत्सव था। मन में चिर अचभलाषा थी चक एक बार महाराजश्री के दिपन का सौभाग्य चमल जाये। सद्गुरु भगवान् से प्राथपना-याचना करिा रहा। हम दीन जनों ंकी पुकार सुन ली गयी। सि कहें िो अहैिुकी कृपा ही थी। िान्त चनवास, देहरादून में उनके दुलपभ दिपन सत्संग का सुअवसर-लाभ प्राप्त हुआ। बडी अच्छी िरह भेंट हुई। इसका ध्यान कर मैं अचंकंचि गद्गद् हो उठिा हूँ। वे हमारी श्वास-प्रश्वास में बसे हैं। उनकी माधुरी मूचि हमारे हृदय में बसी है। उनके चवषय में कुछ कहना-चलखना 'सूयप को दीपक चदखाना' जैसा है। गुरु महाराज के उपदेि सन्देि से भरे इस भजन का ही हमें सहारा रहिा है।

सीिा राम कहो, राधे श्याम कहो ।
सीिा राम कहो, राधे श्याम कहो ।। सीिा राम...

सीिा राम चबना सुख स्वप्न नहीं।ं
राधेश्याम चबना कोई अपना नहीं ं।। सीिा राम...

सीिा राम चबना सुख कौन करे।
राधेश्याम चबना दुख कौन हरे ।। सीिा राम...

सीिा राम चबना उद्धार नहीं।ं
राधेश्याम चबना बेडा पार नहीं।ं सीिा राम...

सब हैं समानसबमें एक प्रि ,

त्यागकेअशभमानहररनाम गाओ।
हरर नाम गाओ दया अपनाओ,
अपने हृदय में हरर को बसाओ ।।

मेरे गुरुभय्या जी की शदव्य सृमृशियाँ

१३-१०-१९५३ से २८-८-२००८ िक

– शिवानन्द सुिीला काम्बोज मिाा जी, देहरादून-

श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज के दिणन की प्रथम-झलक

प्रबल इच्छा व व्याकुलिा के पश्चाि् १३ अिूबर १९५३ को मुझको प्रथम बार सुश्री पुष्पाआनन्द व मोचहनी आनन्द के साथ चिवानन्द आश्रम में जाने एवं श्री गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी के दिपन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री गुरुदेव के आदिेनुसार मुझको एक भजन द्वारा अपने हृदय की व्याकुलिा प्रकट करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। भजन गािे समय मेरी दृचष्ट् अपनी दाचहनी ओर पडी; मैने देखा एक दुबले, पिले, लम्बे, गौर-वणप स्वामी दीवार के सहारे खडे, ध्यान-मगन हो कर भजन सुन रहे थे। वे थे श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, इसका ज्ञान मुझको दूसरे चदन हुआ।

दूसरे चदन श्री गुरुदेव के दिपन करने हम िीनों गुरुबचहनें उनके आचफस में गयीं। आचफस कायप की समाक्तप्त पर श्री गुरुदेव ने हम िीनों को अपनी कुचटया में भोजन के चलए आमक्तिि चकया िथा कुछ अन्य भिों को भी। अपना सौभाग्य समझिे हुए हम लोग गुरुदेव की कुचटया में पहुाँच गये। गुरुदेव अपनी कुसी पर बैठे हुए थे। उनके सामने मेज पर बडी सी थाली व भोजन से सम्बक्तिि सभी बिपन रखे हुए थे। हम सभी भि लोग फिप पर दोनों ओर बैठ गये। भोजन परसना आरम्भ हुआ। सवपप्रथम एक संन्यासी, लम्बे, दुबले, पिले, गौर-वणप िरीर वाले, हाथ में सब्जी का बिपन चलये आये और परसना आरम्भ चकया। उसी समय श्री गुरुदेव जी ने उसी संन्यासी को 'स्वामी चिदानन्द जी' कह कर पुकारा। उस समय मुझको ज्ञाि हुआ चक ये संन्यासी श्री स्वामी चिदानन्द जी हैं। श्री स्वामी चिदानन्द जी को गुरु-सेवा के प्रचि इिनी अचधक आस्था थी- इसका ज्ञान भी मुझको इसी समय ही हुआ। श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज जी, श्री गुरुदेव के परम चवचिष्ट् चिष्यों में से थे और हैं।

संगीि के प्रशि श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज की रुशि

कुछ समय पश्चाि् मुझको पुष्पा आनन्दके साथआश्श्रमआनेकाचफरसौभाग्यप्राप्त हुआ। चदल्ली से सुश्री मनोरमा जी (महाराचष्ट्रयन)आईहुईथीं।राचत्र-सत्संगमेंउन्होंनेश्रीगुरुदेव को भजन सुनाया। अगले चदन श्री स्वामी चिदानन्दजीमहाराजनेहमीनों कोअपनीकुचटया (योग-साधना कुटीर) पर आने के चलए बोला। हमीनों वहााँपहुाँगिईं।श्रीस्वामीचिदानन्दजी आये, मयापदानुसार देहली के अन्दर की ओर अपनेकमरेमेंबैठगयेऔरहमीनों देहलीके

बाहरबैठे।श्रीस्वामी महाराज जी ने मनोरमा को वो भजन जो उन्होंनें राचत्र-सत्संग में गाया था- 'िरणं,िरणंजय चिवानन्दा...' गाने के चलए कहा। साथ में श्री स्वामी जी ने स्वयं भी गाया। इसप्रकारश्रीस्वामी जी महाराज ने उस भजन को सीखा। इस घटना से उनकी संगीी-चप्रयिा का पररियप्राप्तहुआ।

श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज की सेवा में प्रथम राखी-भेंट

ुभिावसरपर**श्रद्धेय एवं पूजनीय श्री स्वामी** 'के चिदानन्दजीकोमैंनेअपनी'राखी'भेजी।उत्तरमेंश्रीस्वामीजीका आिीवापद प्राप्त कर मैं धन्यहुई। इसीपत्रमेंश्रीस्वामीजीमहाराजनेमुझको'गुरुबचहन'चलख कर सम्बोचधि चकया व स्वयंको'गुरुभर्या'चलखा।यहमेरापरमसौभाग्यहै।यहसबश्रीगुरुदेव की कृपा का ही फल है।श्रीस्वामीजीमहाराजजीकायहपत्र(२१-८-१९५६)वअन्य पत्र 'सुखद-संस्मरण' पुस्तक में भी चदये गये हैं।

गुरु-शनवास में 'राखी' भेंट

श्रीस्वामीजीकीआज्ञाप्राप्तकरमैंगुरु-चनवास पहुाँिी। साथ में 'राखी', फल-फूल एवं िीनीसेबनेमखाने(कमलके फूल)भोगलगाने हेिु ले गयी। श्री स्वामी जी महाराज हाल में चवराजमानथे।उनकीअनुमचिप्राप्तकरमैंनेउनकी **'शदव्य-कलाई'** में राखी बााँधी और मखानों ं का भोगलगानेकीप्राथपनाकी।

कृपालुस्वामीजीमहाराजनेएकमखाना खा कर भोग लगाया; इसके उपरान्त मुझको एक एक मखानादिेगयेऔर**"धमण, अथण, काम, मोक्ष"** -बोल कर आिीवापद दिे गये। जब िरि आिीवापददेचदये,िबमैंुरन्तिबोली-

"भच्चि, ज्ञान, वैराग्य और अशवरल नाम" भी- दयालु स्वामी जी **"भच्चि, ज्ञान, वैराग्य और अशवरल नाम"** बोल कर एक-एक मखाना दिे गये। इस प्रकार मुझको ही नहीं ंमानो समस्त भिों ंको यह 'चदव्य-सन्देि' चदया।

मेरे गुरुभय्या श्री स्वामी शिदानन्द जी महाराज ज्ञान-मूशिण, सहदय, समदिी, साधु-रूप, शनष्क्ष, प्रेेम-स्वरूप, सद्भावना-रूप और ब्रह्म-स्वरूप थे। श्री सद्गुरु के कथनानुसार श्री स्वामी शिदानन्द जी का यह अच्चन्तम जन्म था। श्री स्वामी जी महाराज, श्रीरामजी के परम भि थे। िान्त-आत्मा एवं धैयप से युि थे। दूसरों ंके कल्याण के चलए ही मानो श्री स्वामी जी का जन्म हुआ था। श्री स्वामी चिदानन्द जी का आिीवापद सदैव पूणप हुआ। इनकी मचहमा-वणपन करने के चलए िब्-कोष भी असमथप हो जािा है और वाणी द्वारा वणपन करना असम्भव है।

ऐसे थे मेरे गुरुभर्या-श्री श्री पूजनीय एवं श्रद्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, चजनका स्नेह, कृपा एवं आिीवापद प्राप्त कर मैं एक िुच्छ प्राणी धन्य हो गयी। यह सब मेरे सद्गुरुदेव श्री श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज जी की अपार कृपा एवं आिीवापद के फल-स्वरूप ही मुझको प्राप्त हुआ है।

जय चिवानन्द ! जय चिदानन्द !

सदा स्मरीय

–श्रीमिी शप्रयारिनलाल रैना पररवार, शदल्ली –

दुलपभ सािना में (परम कृपालु सन्त श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के प्रथम चदव्य दिपन का सौभाग्य, सुपुत्र [illegible] मेंप्राप्तहुआ।बडाही अनोखा,अलौचककआनन्दथा।उनकिरणस्पिपकरनेकामुझेमौकाक्राचमलामानोसब-कुछ चमलगया।िरणछोडनेकामनहीनकरिाथा।वहचवलक्षणदिपन-सत्संगिोसदास्मरणीयहै। िीन वषीय चप्रय पौत्र 'सोहम' (सुपुत्र चवक्रम-चनवेचदिा रैना) िो हमारे स्वामी जी का ही कृपा-प्रसाद है।

इसपचवत्रचिवानन्दआश्रमकेसाथआजीवनसदस्यरूपमेंहमेंस्वामीजीमहाराजजोड गये हैं। उनसे हमारी प्राथपना है चक यह सम्बि अटूट बना रहे। आश्रम में जाने पर पूजा-प्राथपना-सत्संगआचदसेजोिाक्तन्तऔरआनन्दचमलिाहै–बोंमेंप्रकटनहींचकयाजासकिा।येसब स्वामी जी महाराज की अनन्य दया है। उनकी मीठी याद हमेिा रहिी है। वे िो भगवान् हैं-

उजाले अपनी मधुरयादोंके,
सदा हमारे साथरहनेदो।
लिगी जीवननौकाइसीदमपर
िुम ही ने िो पारलेजानाहै।

****

सुमधुर स्मृशि सौरभ

– प्रेम रमेि िौनक, श्रीधाम, शदल्ली –

प्रणम्य 'चिवानन्द-आत्मरूप' अनूप िुम्हारा,
सि्-चिि्-आनन्द-रस-रूप है न्यारा;
दूर सुदूर चदव्य जीवन प्रिारा, चिवानन्द ज्ञानोपदेि-सन्देि प्रसारा;
सत्यस्य सत्यं 'ब्रह्मचवद् ब्रह्मैव भवचि'; सद्गुरुदेव के
आप सरीखे उत्तमोत्तम चिष्य 'न भूिो न भचवष्यचि'।
सादर वंदन िव अचभवंदन हे।
नमाचम प्रणमाचम चिदानन्द हे ।।

हैंआप अचद्वितीय, वरणीय, अनुपमेय औ' अवणपनीय,
आपको पाने का है सोपान, सिि चदव्यचिन्तन,
चनत्य चनरन्तर श्री िरण-आचश्र रहने में है आनन्द ही आनन्द,
जैसे आप पहले थे हमारे चलए; हैं वैसे ही अब भी;
श्रीधाम पररवार के हदय को रही हैं झकझोर,
आपकी अद्भुि लीलाओं ंकी, अनोखे अलबेले दिपनों ंकी
मानस पर उिीं ंउमडघुमड मधुर सूमृचियााँ अपार;
प्रसुिुि हैं भावनानुभूचि वचणपि दो िार ।

।। सूमृशि १९५६ जून मास की-शिवानन्द-अशभन्नरूप शिदानन्द की ।।

८६वषीय चपिामह हमारे श्री गणपि राय जी, अपनी िारीररक अवस्था में भी
न्दिौसी से पहुाँि पिरवार के साथ ग्रीष्मावकाि में ऋचषकेि-
हृदय आराध्य सद्गुरुदेव स्वामी चिवानन्द जी के दिपन की प्रबल इच्छा चलए।
गुरुदेव ने की चदव्य लीला...
भेजा महाराजश्री स्वामी चिदानन्द जी को उन्हें दिपन देने हेिु,
चपिामह अचि प्रसन्न, िेहरा िमक उठा दिपन कर, हुए कृिकृत्य ।
बिाया चपिाश्री ने "गुरुदेव ने भेजा है इनको, ये हैं स्वामी चिदानन्द जी।"
पुनीः-पुनीः ऐसा समझाने पर भी चपिामह का उत्तर था एक यही-
"हााँ, हााँ, मुझे दिणन हो रहे हैं स्वामी शिवानन्द जी के, बहुि अच्छे से दिणन हो रहे हैं।"
प्राथणना-किीणन-पश्चाि पूछा महाराजश्री ने- "आपकी इच्छा क्या है?" शपिामह ने शवनीि स्वर में कहा-
"अपनी देह को यहााँ गंगािट पर छोडना िाहिा हूाँ।
और आपके िरि स्पिण करना िाहिा हूाँ।" िुरन्त ही दयाणद्र हो श्री स्वामी जी महाराज
ने उनकी प्रसन्निा के शलए अपने िरि आगे कर शदये।
और शमल गया आिीवाणद ऐसा ही होने का।
स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। पर थोडे ही चदनों ंबाद
एकादिी चिचथ को स्नान चकया गंगाजल से।
उस चदन कहा, देखा पंिांग में कौन सी चिचथ है आज, सब सुना
संध्या पूवप अपराह्न में 'राम' 'राम' कह अक्तन्तम श्वास भी ले चलया उिनक।
उनका िान्त-चनश्चल िेहरा बिा रहा था- जो मााँगा था, चमल गया।'
अगले चदन सूयोदय होिे ही महाराजश्री पुनीः पहुाँिे
श्री स्वामी हररिरणानन्द जी िथा अन्य भिों ंके साथ।
स्वयं कंधा दे कर िवयात्रा आरम्भ की; दाहचक्रयाकमप हुआ मायाकुण्ड गंगा चकनारे।
चदवंगि आत्मा की िाक्तन्त व चदव्य साचन्नध्य के चलए प्राथपना की। चपिाश्री को धीरज बंधाया।

॥ जय हो चिवानन्द-मचहमा मक्तण्डि चिदानन्द महाराज की ॥

|| स्मृशि ८ शसिम्बर १९६३की – 'शिवानन्द- स्वस्वरूप' शिदानन्द की||

गुरुदेव की महासमाचध के पश्चाि उनके जन्मोत्सव का था पावन चदवस,
चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष के रूप में महाराजश्री चदल्ली पधारे,
चिवानन्द सत्संग भवन, लाजपिनगर के चिलान्यास समारोह के उपलक्ष्य में,
जहाँ चनमंत्रि थे- भारि के राष्ट्रपचि सवपल्ली श्री राधा कृष्णन जी।
अहैिकी कृपा दयाचनधान गुरुदेव की
वहााँ जाने से पूवप महाराजश्री का िुभागमन हुआ हमारे यहााँ िक्तिनगर में

मानो साक्षाि् सद्गुरुदेव ने पूवप विनानुसार स्वयं पधार कर सौभाग्य प्रदान चकया दुलपभ
दिपनों ंका सबको;
हमारे हषप की सीमा न रही। आनन्दाचिरेक में सब हुए गद्गद् ।
साथ में थे विपमान परमाध्यक्ष स्वामी चवमलानन्द जी, उस समय थे
चनजी सचिव नागराज जी के रूप में।
पररवार द्वारा स्वागि गान और भजन कीिपन सुनने के पश्चाि
महाराज के आिीवपिन ने कर चदया सबको कृिाथप-
"I Wonder Whether it is Shaktinagar or Bhaktinagar."
यह िक्तिनगर है चक भक्तिनगर-
भक्तिभाव को िीसि बढ़ाये रखने का यह था उनका सदुपदेि ||

|| जय जय करुणा चसिु गुरु महाराज की ||

|| स्मृशि ३१ शदसम्बर १९६७ की-भि-मुकुटमशि महाराजश्री की ||

३१चदसम्बर को था प्रचिष्ठा चदवस भगवान् चवश्वनाथ का,
िीिीक्षिि, गंगा का चकनारा।
अन्तरिम की प्रबल प्रेरणा से िैयार चकया
मनमोहक मुरलीमनोहर का सुन्दर शृंगार सचहि नव पररधान।
अगाध करुणाचि महाराजश्री ने चकया सब स्वीकार।
उस समय आश्रम में रहना हमारा हुआ सफल ||
प्रथम बार नयी पोिाक पहना लेने के बाद
चनज कर कमलों ंसे धारण कराया शृंगार;
और स्वयं ही आरिी उिारी भगवान् की।
चवचिष्टि, चवलक्षणिा उन अचवस्मरणीय क्षणों ंकी थी यह चक
महाराजश्री आरिी की मुद्रा में खडे िो शजधर ही शजधर,
कृपाकटाक्ष िोिा मुरली मनोहर का उधर ही उधर ||

|| बचलहारी बचलहारी-लीला चवहारी की।

|| सृमृशि झूलून िीज की-शिदानन्द 'गोपदेवी ' स्वरूप की||

आश्रम में रानीकुटीर (गुरुप्रसादकुटीर) में वास था मिाा-चपिा सचहि सब बहनों ंका, हररयालीिीज का आया त्योहार
वहीं ंबाहर के वृक्ष की िाल पर पुष्प सज्जा सचहि झूलूा चकया िैयार
श्यामाश्यामस्वरूप प्रचिमा रूप में चवराचजि हुए सद्गुरुदेव झूलूे पर;
महाराजश्री हाचदपक प्राथपना स्वीकार कर हमारी, पधारे योग साधना कुटीर से,
सीचढ़याँ उिर कर मनमोचहनी मुस्कान सचहि, अपने उत्तरीय से घूँघट चनकाले हुए,
सबको आह्लाचदि करिे मन्थर गचि से पहुँिे झूलूे के पास।
आपने सम्हाला झूलूा एक िरफ से और दूसरी िरफ से
हम सबको बारी-बारी से पकड कर झुलाने का स्वचणपम अवसर चकया प्रदान ।
झूलून गीि गायन िलिा रहा
अिानक आ कर पूछा एक स्वामी जी ने 'यह सब क्ा
"आज क्ा उत्सव है?' उत्तर चमला उन्हें-
'महाराजश्री गोपी बन कर आये हैं आज के झूलून उत्सव में उसी आनन्द में मि सब
सुनिे ही महाराजश्री ने प्रकट चकये उद्गार-
"गोपी बन कर नहीं ंजी। गोपी भाव में आये हैं हम िो।"
भजन कीिपन की पूणापहुचि पर भोग अपपण कर आरिी उिारी,
और चदया सबको कृपाकटाक्ष सचहि प्रसाद चनज करकमलों ंसे,
एक-एक को सखी भाव से पुकारिे हुए-'ले सखी' 'आ सखी' 'सखी प्रसाद ले'

आनन्दपूवपक

|| बचलहारी बचलहारी चिदानन्द चित्त िोर की।

|| सृमृशि १९७१ में आनन्दमय आश्रम वास की-शिवानन्द- प्रशिरूप शिदानन्द की ||

जननी रामप्यारी मिाा जी रुग्णावस्था में भिी थी, चदल्ली अस्पिाल में
मई १९७१ आश्रम में हालि गम्भीर का समािार प्राप्त कर महाराजश्री ने िा. कुट्टी मिाा जी की राय ली।
करुणावरुणालय ने औदायपवि बुला चलया रोगी सचहि 'श्रीधाम पररवार' को आश्रम में
सन् १९६८, ६९, ७० में चवदेि में रहने के पश्चाि चदसम्बर में लौटे थे महाराजश्री ।
आकुल व्याकुल थे प्राण हमारे दिपन-साचन्नध्य के चलए, आश्रमवास के चलए आिुर थे ही सब, पहुँि गये
श्रीिरणों ंमें। वहाँ ँरहने की व्यवस्था, ऋचषकेि से िाक्टर दम्पचि के साथ रहने की व्यवस्था आपने ही की।
इलाज िुरू हो गया; यकायक पुनीः रोगी की अवस्था चिन्ताजनक हो गयी;
सुन कर आये महाराजश्री हमारी गुरुप्रसाद कुटीर में, प्राथपना-कीिपन चकया,

मिाा जी की आँखें खुलीं ंिो उन्ें आिीवापचदि चकया।
"आप अचे्छे हो जायेंगे जी। हमें िििी बनाकर क्तखलायेंगे जी।"
आश्चयप! महि् आश्चयप। चदनों ंचदन होने लगा सुधार
िीघ्र ही कुछ चदनों ंमें स्वस्थ हो कर महाराज के वास स्थान '
योग साधना कुटीर' के रसोईघर में अपने हाथ से िििी बना कर
उन्ें क्तखला पाने का सुअवसर प्राप्त हुआ।
इन्हीं ंचदनों ंमें महाराजश्री के जन्मोत्सव २४ चसिम्बर को उनकी परम भिा
श्री सीिाबाई मिाा जी, हम सब बचहनों, ं 'पंकिन्या' कभी 'चिवानन्द िेरी' कभी
'कन्याकुमारी' भी पुकारिे थे, को
मिााश्री सचहि महाराजश्री की परम पुनीि पादपूजा-अिपन का दुलपभाचिदुलपभ परम सौभाग्य
प्राप्त हुआ।

|| जय जय भि पे्रमी-प्राण रक्षक की जय ||

|| सू्मृिि संन्यास दीक्षा की-वांछा कल्पिरु गुरुमहाराज की||

सन्१९८० में चपिा श्री िमनलाल िमाप जी रहे हृदय रोग से पीचडि,
दो-िीन बार अटैक हो िुका था। क्तस्थचि की गम्भीरिा देखिे हुए
महाराजश्री को आिीवापद-प्राथपना हेिु सम्पकप करना िाहा परन्तु
ज्ञाि हुआ चक वे चदल्ली में नहीं ंहैं। चनरिर हो, प्राथपना जारी रही
आश्चयप। दवराजे पर कोई आहट होने पर देखा िो स्तक्तम्भि रह गये,
महाराजश्री गाडी से उिर रहे हैं; चफर पहुँिे अन्दर घर में,
सवपसमथप सवापन्तरयामी के दिपन कर-सब हिप्रभ! अपार, अहैिुकी कृपा !
मंगलमय दिपन करिे ही चपिाश्री चबस्तर पर ही उठ कर बैठ गये,
कुसी पर आसन ग्रहण कर महाराजश्री ने अपने दोनों ंिरण
चपिाजी के सन्मुख रखे, उन्ोंने हाथ जोड, निमस्तक हो
श्री िरणों ंका स्पिप चकया। महाराजश्री प्राथपना िीपन में मि। ||
अवसर पािे ही चिन्तािुर मिाा जी ने अपने सुहाग की रक्षा यािना सचहि
महाराजश्री की कोमल कलाई में राखी बाँधी (अगले चदन रक्षाबिन पवप था)
आिीवापद था उनका, मिाा जी के चलए-कचनमालाई मध
'आप इनको ले कर आश्रम आयेंगे जी।' और
चपिाश्री को देख कर कहा-'You will Come to Ashram for good. Dr. Shivananda will treat you.' मिााश्री चपिाश्री सचहि आश्रम गये सब।
उनके विानुसार ही सब घचटि हुआ। १९८१ के नवम्बर में अपने दो मास के
प्रवास से पूवप मिाा श्री को अपने दिपनों ंसे अनुगृहीि चकया।
'धमप-अथप-काम-मोक्ष' कह कर िार फल चदये। और कुछ ही चदनों ंपश्चाि् सुमंगली रूप
में
मिाा जी का चदल्ली में स्वगपवास हुआ।
ितन्तर आश्रमवास प्रारम्भ हुआ चपिाश्री का। संन्यास दीक्षा अनन्तर योगपट्ट चदया- 'स्वामी
अपपणानन्द !' और कहा - "आपने िो सवपस्व अपपण कर चदया जी।

अपने पूरे पररवार को श्री गुरुदेवि–रणों ंमें लगा चदया।"

।। ११ जुलाई सन् १९८५ को सद्गुरुदेव महाराज के आराधना शदवस की पुण्यशिशथ, राशत्र सत्संग समय
महासमाशधथथ हुए स्वामी अपणिानन्द जी। गुरु आश्रम, गुरुवार, गेरुआ वेष में गंगा टि पर गुरु प्रसाद कुटीर में ली अच्चन्तम श्वास गुरु-गोशवन्द ध्यान में

महाराजश्रीनेराचत्रमेंदोबारआकरदिपनदेअगरबत्तीसेआरिीकीऔरहमसबको
आश्वाचसि चकया।
अगली प्रािीः स्वयं उनकी चदव्य उपक्तस्थचि में पुष्पों ं से
पालकी की सजावट हुई। कि पर उठािे हुए
िभियात्राप्रारम्भकी।रास्िेभरचपिाजीकीपालकीकीओरश्रीमुखकरपुष्पिृढ़ािे
गंगािट पर पहुँाँ कर
चनज करों ं से अचभषेक, पूजा, अिपना आरिी उिारी और
सबसे करवाया अचभषेक आचद।
जल चवसजपन की अक्तन्तम चवदाई िक गंगाघाट पर उपक्तस्थि रहे।
'गुरु कृपा ही केवलम्' - 'गुरु कृपा ही मंगलम्'
श्रीधाम-जीवन-सवपस्व रूप में, सभी सदस्यों ं को बुला कर
चनज वात्सल्यपे्रमसेचकयाचसंचिि।औरअगलेवषपकी
पुण्यचिचथ से पूवप ही कु म्भ मेला के अवसर पर पूचणपमा पर श्री हनुमान जयन्ती को

हररद्वारगंगािटपरमेरीरीरबहनों ंकोकाषायवेषदे कर'ज्ञानसंन्यास'कीकृपा
बरसाई। सन् १९८७ के मकर संक्राक्तन्त-पुण्य पवप पर, चवरजा होम के पश्चाि
महाराजश्री ने परम पूज्य श्री स्वामी कृ ष्णानन्द जी महाराज की सचन्नचध में
िुिमिपहावाक्यों ं का श्रवण कराया, नये योगपट्ट (संन्यास नाम) चदये।
चवचधवि् हुई संन्यासदीक्षासमूपूणप।अबकरिीहैं
'संन्याचसनी ििुष्टय'केरूपमेंआश्रममेंस्थायीवास।

****

जीवन-आराध्य हम िैनक पररवार को, यदा कदा चनवास स्थान चदल्ली में
अपने चदव्यदिपनों ंसेकरिेरहेअनुगृहीि।
िेषािचिचवेष सौभाग्य पचिदेव रमेि िैनक जी का, चजन्हें चववाह से पूवप
प्रथम भेंटमेंहीपहनायीमहाराजश्रीनेस्वचणपमअंगूठीअपनेकरकमलों ंसे।
दोनों ं बिेटों ं (यमुना) नीिू और (पवन) िीनू को मि दीक्षा एवं आध्याक्तत्मक
ज्ञान से लाभाक्तन्वि कर हम को चकया कृ िाथप।... िैनक पररवार को सन् २००७ में
दीपावली के अगले चदन ही परम
सौभाग्य चमला दुलपभ दिपनों ं का िाक्तन्त चनवास देहरादून में
'प्रणि वत्सल' - 'जीवन अवलम्ब' ने पुनीः हम अचंक िना
को अनुगृहीि चकया मािप २००८ में चकया आध्याक्तत्मक
अन्तीःिक्ति संरिण चदव्य जीवन-सफलिा-हेिु।
भरपूर कृपा-वृचष्ट!अनुपमअथाहपे्रम-प्यारवषपण!
चकसे मालूमथाचफरआगेक्याहोनेवालाहै।...

रीर की अस्वस्थ कें्लिप्रद क्त्स्थचि में आप रहे,
सदा सवपदा चनज चदव्य स्वरूप में अलमस्त ।
चकसी प्रकार की चिन्ता या बैिनी का था नहीं ंकोई प्रश्न;
मानो दे रहे संकि हम सबको - "यही है वास्तचवक आन्तररक अचमट प्रसन्निा।
है अचिग धैयप भी यही, िाश्वि सत्य की आत्म दृचष्ट् से
है समाराधना भी यही ।।

हे क्त्स्थिप्रज्ञ! गुणिीिा! अद्विै विन के प्यारे विा !
हे गुरु चनष्ठ! अनुभव चसद्ध स्वरूप! अवस्था त्रय से रहे िीिा !
आपकी ममिामयी उपक्त्स्थचि रहीं हर हमेि हमारे साथ ही
पहले भी रही और अब भी हमारे चहिाथप अकुलािी; उत्सुक रहीं।
हे चवनम्र-मूचिप! कृपा-रस-मूचिप! हे चवश्व-चवश्रुि चिवानन्द-हृदय रूप!
'प्रेम' सचहि सब स्मरण करें; आजीवन चदव्य-पथ-अनुसरण करें।
जय हो सवणदेवमय सद्गुरु शिवानन्द भगवान् की!
शिवानन्दमय शिदानन्द महाराज की ।।
जय जयकार है कल्पवृक्ष शिवानन्द आश्रम की ।।

श्रीस्वामीचिदानन्दजीमहाराजचदल्लीसेट्िनपर उपक्त्स्थि थे, वहााँ बहुि बडी संख्यामेंभिउनकेदिपनिथाआीिावापदकेचलएएकचत्रि हो गये। उमडिी हुई भीड में उनकीदृचष्ट्एकवृद्धमचहलापरपडीजोअपनेचिरपर भारी बोझ चलये िथा हाथ में एकसनदूकपकडेबडीकचठनाईसेिलरहीथी।स्वामी जी िुरन्त ही भीड़ ंको एक ओरकरउसकेचनकटिजीसेगये।उन्होंनेउससेकोमल वाणी में कुछ कहा, उसके हाथसेभारीबोझछीनचलयािथाउसेगन्तव्यस्थानिक ले जाने के चलए उसके साथ-साथ िलने लगे।

पूज्य स्वामी शिदानन्द और हम

– श्री एस. पी . जैन जी, शदल्ली-

समझ में नहीं ंआिा चक कहााँ से िुरू करूाँ और कैसे िुरू करूाँ, क्योंचक हम सबके पास जो कुछ है और सबका जीवन है, सब उन्हीं ंकी ही देन है। चवस्तार में जाने से पहले मैं बिाना िाहाँगा चक आश्रम से मेरा पररिय कैसे हुआ।

सन् १९५७ में जब मैं टाइम्स ऑफ इंचिया में िीफ मैकेचनक था, िब एक चदन मैनेजर ने मुझे अपने ऑचफस में बुलाया। वहााँ देखा चक मैनेजर के सामने एक संन्यासी बैठे हुए हैं। जब मैंने मैनेजर से पूछा चक मुझे चकसचलए बुलाया है, िो उन्होंने बिाया चक चिवानन्द आश्रम में लाइनो मिीन खराब हो गयी है चजससे कम्पनी के इंजीचनयर भी ठीक नहीं ंकर पा रहे हैं। उसके चलए आपको स्वामी जी के साथ आश्रम जाना होगा। मैंने पूछा- "वहााँ जाना ऑचफचियल है या पसपनल काम है?" बोले- "हम ऑचफचियली नहीं ंभेज सकिे। आपको अपनी छुट्टी ले कर जाना है।" िब

मेरा उत्तर था चक, "चफर ो स्वामी जी को मुझे सौ रुपये रोज के चहसाब से और आना-जाना, रहना-सबका खिप देना होगा।" मैनेजर हालाँचक चक्रचश्चयन था, चफर भी क्रोध में आ गया और बोला चक ुम एक धाचमपक संस्थान से पैसे माँगे हो? मेरा उत्तर था- "चजस धाचमपक संस्था के पास दुचनयादारी की मीनें हैं और चजसके चलए उन्ोंनें पैसे चदये हैं, उनसे अपनी मेहनि का पैसा लेना मैं बुरा नहीं समझिा।" मैनेजर के सामने जो संन्यासी बैठे थे, वो स्वामी दयानन्द जी थे। मैनेजर के कुछ भी बोलने से पहले वो बोल पडे चक हमें मंजूर है। यहाँ यह बिाना अनुचिि नहीं ं
होगा चक मैं पक्का नात्तस्तक था। खैर, मैं आश्रम आया। ीन चदन लगािार काम करने के बाद मीन चबलकुल ठीक हो गयी। जाने का समय आया, मैंने पैसों ंकी और फस्टप क्लास चटकट की माँग की। िब स्वामी वेंकटेशानन्द मौजूद थे। उन्ोंनें कहा- "इिनी दूर आये हैं, क्ा गुरुदेव के दिपन भी नहीं ंकरेंगे?"

"क्ा करूँगा गुरुदेव के दिपन करके" मैंने कहा। लेचकन वो मेरे कंिे पर हाथ रख करके स्वामी दयानन्द जी के साथ गुरुदेव के दिपन करने के चलए िनी ले गये। मैं चकिना मूखप और घमण्डी था चक गुरुदेव के सामने झुका भी नहीं।ं खडे-खडे नमस्ते की। गुरुदेव स्वामी चिवानन्द लगािार कम-से-कम दो या ीन चमनट मेरी आँखों ंमें देखिे रहे और बोले- अब ो आपका यहाँ आना-जाना लगा ही रहेगा।" और आिीवापद, चकिाबें और फल दे कर बोले-"आप थोडी देर प्ेरेस में इन्तजार कीचजए, आपके पैसे, चटकट वगैरह सब वहीं ंचभजवा दूँगा।" प्ेरेस में आने के थोडी देर बाद ही स्वामी वेंकटेशानन्द और स्वामी दयानन्द ने मेरी फीस और चटकट मेरे हाथ में चदये और दोनों ंने मेरे पैर छू चलये और बोले चक आपका बहुि-बहुि धन्यवाद चक आपने एक धाचमपक संस्थान की मदद की। खैर, चवस्तार में न जा करके मुझे कहना होगा चक इसके बाद मैं लगािार बदलिा िला गया। पहले फीस लेनी बन्द की, चफर खिाप लेना भी बन्द कर चदया। उसके बाद मेरा जो भी सामथ्यप था, वह मैं ोनिन देने लग गया। नात्तस्तक से पक्का आत्तस्तक बन गया, जैन के साथ-साथ वैष्णव भी बन गया। उसके बाद भी मेरा हर साल दो-ीन बार आना-जाना लगा रहा और अब मेरा सौभाग्य है चक २००५ से मुझे आश्रम में परमानेंट सेवा करने का अवसर चमला।

अब मैं ुरू करिा हूँ परम पूज्य स्वामी चिदानन्द जी के सम्पकप में मुझे क्ा-क्ा नहीं ं चमला? इससे पहले एक छोटी-सी घटना है चक जब भी मैं बिों ंको चकसी जगह ले जाना ाहिा था, उससे पहले एक बार खुद वहाँ क्कर लगा आिा था चजससे ठगी से बि सकूँ। इसी चसलचसले में वृन्दावन-मथुरा दिपन के चलए मैं गया। साथ में सोलह साल के एक युवक को गाइड के रूप में चलया। वह सब जगह दिपन करिा-करिा बीि में बार-बार दोहरािा था चक यहाँ कुछ नहीं,ं चसफप िमत्कार को नमस्कार है, चकसी ने चिचडया चनकाल कर उडा दी, चकसी ने और कुछ जादू की िरह चदखा चदया, ो महाराज की जय-जय हो गयी, जनिा पीछे पड गयी और पैसे बरसने लगे। लेचकन जो वास्तव में संन्यासी हैं, वह िमत्कार चदखािे नहीं।ं उनके साचन्नध्य से िमत्कार अपने-आप होिे रहिे हैं जैसे चक मेरा पूरा जीवन पूज्य स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आिीवापद से चमले िमत्कारों ंसे भरा हुआ है। उनमें से कुछ के बारे में बिाना ाहूँगा।

सन् १९६४ में मेरी पत्नी बहुि बीमार हुई। कोई इलाज काम नहीं ंकर रहा था और उनकी मानचसक त्तस्थचि भी ठीक नहीं ंथी। अन्त में मैंने आश्श्रम में स्वामी जी से प्राथपना की। उन्ोंनें कहा चक अपनी पत्नी को ले कर आइए। पत्नी को ले कर आने के बाद स्वामी जी का सन्ेदि आया चक सुबह ५ बजे ैयार रचहए, हम बुलवायेंगे। रािी को चकसी ने बिाया चक स्वामी जी को बुखार हो गया है। बडी दुचवधा में पडा चक सुबह बुलायेंगे भी या नहीं।ं चफर भी हम ैयार हो गये और पाँि

बजे के करीब मैं कमरे के बाहर घूमने लगा। इिनै में देखा चक स्वामी जी गंगा-स्नान करके एक हाथ में गंगा-जल का लोटा और दूसरे हाथ में लाठी के सहारे धीरे-धीरे िल कर अपने चनवास की िरफ जा रहे हैं। उस वि स्वामी जी का चनवास योग साधना कुटीर में था। पााँि चमनट बाद बुलावा आया। स्वामी जी आसन पर चवराजमान थे। सामने के आसन पर मेरी पत्नी को बैठने को

कहा और मि उिारण करने िुरू चकये। साथ में हर मि के बाद गंगा-जल का छीटां दिे रहे।

ये प्रचक्रया आधा घण्ा िलिी रही। इस बीि में मेरी पत्नी को जैसे ऐसा लगा चक वह अपने होि

में नहीं ंहै। आधे घण्े के बाद उन्ोंने एक छोटे चगलास में गंगा-जल पीने को चदया। गंगा-जल

पीिे ही वह िौंक गयीं ंऔर चबलकुल जाग्रि अवस्था में आ गयीं। ंआनन्द यह रहा चक मानचसक

रूप से और िारीररक रूप से चबलकुल स्वस्थ हो कर उनके िरणों ंमें चगर गयीं। ंिब से आज िक मानचसक रूप से कोई परेिानी नहीं ंरही। हुआ न िमत्कार!

सन् १९६६, अिूबर का महीना। स्वामी जी का बुलावा आया। मैं भागा-भागा योग साधना कुटीर में गया। स्वामी जी पूवप की िरफ चजधर गंगा जी हैं, मुाँह करके चवराजमान थे। बराबर में एक आसन और लगा हुआ था। दायीं ंिरफ गुरुदेव की बहुि बडी छचव आसन पर चवराजमान थी और बायीं ंिरफ आठ-दि श्रद्धालु बैठे हुए थे। स्वामी जी मुझे देखिे ही बोले-"आप हमारे पास आ कर बैचठए।" िरण स्पिप करने के बाद मैं उनके बराबर वाले आसन पर बैठ गया। स्वामी जी ने कहा चक जैन साहब आज हम आपको अपने हाथ से बना कर िाय चपलायेंगे। अन्दर से कोई साधक टी-सैट और दो कप ले कर आया। स्वामी जी ने दो कप िाय बनायी और बोले- "चकिनी िीनी िालें?" मेरे यह कहने पर चक 'चसफप आधा िम्मि' मुस्करा कर बोले-"जैन साहब, हम िो अपने कप में ढाई िम्मि िालिे हैं।" उसके बाद उन्ोंने िीनी चमला कर कप हमारे हाथ में चदया और कहा- "पहले िाय पी लीचजए, चफर बाि करेंगे।" ित्पश्चाि् हालिाल पूछने के बाद बोले- "चकिने बिे है?" मैंने कहा- "िार।" "लडके हैं या लडचकयााँ?" मैंने कहा- "सब लडचकयााँ।" बोले-"सब ऊपर वाले का कररश्मा है।" इसके बाद उन्ोंने बाि बदल दी। लेचकन जो और दिपनाथी बैठे हुए थे, उनमें से दो-िीन एक-साथ बोले- "स्वामी जी! आपने बाि घुमा दी और लडके के चलए आिीवापद नहीं ंचदया?" स्वामी जी ने आाँखें बन्द कर लीं ंऔर कहा- "हम कौन होिे हैं ऐसा आिीवापद देने वाले!" चफर उि स्वर में बोले चक अगर इन्ें गुरुदेव में चवश्वास है िो गुरुदेव कृपा करेंगे; लेचकन एक बाि का ख्याल रखें चक िाहे लडका हो या लडकी-नाम गुरुदेव पर रखें। चफर बाि बदल दी। आधे घण्े इस िरह से सत्संग करिे रहे चक हमारे चदमाग से आिीवापद की बाि चबलकुल चनकल गयी। वाचपस चदल्ली लौटने के बाद टाइम्स ऑफ इक्तण्डया में हमारे चलए उचिि और उि पद न होने के कारण और हमारे मैनेजमेंट का कहीं ंऔर सचवपस के चलए नो-आबै्जैक्शन साचटपचफकेट न देने के कारण हमने ररजाइन कर चदया इस चविार के साथ चक अब सचवपस करनी ही नहीं ंहै, अपना ही काम करना है। इस चसलचसले में मैंने प्रोग्राम बनाया चक हर अखबार के आचफस को सारे भारि में चवचजट चकया जाये और उनकी जरूरिों ंको समझा जाये वो भी इसचलए चक हमारा नाम सारे भारिीय अखबारों ंमें मिहूर था, क्ोंचक हम पहले से ही सारे भारि में प्राइवेट काम पर जिो रहे थे। जब मैं कलकत्ता में था िो घर से पत्नी का टेलीफोन आया चक वो गभपविी है। हमारा जवाब था -"पहले िो हम नहीं ंजानिे चक ऐसा कैसे हो गया और अगर अब हो गया है िो अपने िाक्टर से चमल करके जो कुछ करना हो, करवा लें। हमें िंग मि कीचजए।" बीस चदन के बाद भारि घूम कर जब मैं चदल्ली पहुाँिा िो पत्नी बोली- "िाक्टर ने मना कर चदया है।" खैर, हम काम जमाने में जुझिे रहे और एक चदन सुबह साढ़े पााँि बजे पुत्र-जन्म हुआ। साि बजे हमारे पडोसी अखबार ले कर दौडे-दौडे आये और बोले चक

आज आठ चसिम्बर स्वामी चिवानन्द जी का जन्म चदन है। ओ हो! िब हमें याद आया स्वामी जी का िआीवापद और हमने बालक का नाम िआीवापद अनुसार चिवानन्द रख चदया। है न िमत्कार!

१९८३ में हमारी बडी बेटी चवनीिा बहुि सख्त बीमार हुई और कोई दवाई उसकी उलचटयााँ बन्द नहीं ंकर पायी। हमने चदल्ली का कोई अस्पिाल नहीं ंछोडा। सबका कहना था चक या िो गभप के बालक को साफ करा दीचजए, नहीं ंिो ये बिेगी नहीं। चवनीिा चबस्तर से लग गयी, बैठना और िलना भी नामुमचकन हो गया। पिा िला चक उन चदनों ंस्वामी जी महाराज पंिीलि में आये हुए हैं। मेरे प्राथपना करने के बाद उन्होंने आज्ञा दी चक कल सुबह बेटी को ले करके पंिीलि आ जाइए। जब हम पहुाँिे स्वामी जी अपनी पूजा में थे। पूजा के फौरन बाद हमें बुलाया। बेटी को अपने सामने बैठने को कहा। बेटी बोली- "मैं बैठ नहीं ंसकिी।" "जरूर बैठ सकोगी" स्वामी जी ने कहा। और वह बैठ भी गयी। स्वामी जी ने गंगा-जल का एक लोटा, चजसमें िुलसी-पत्र पडे हुए थे, हाथों ंमें ले कर आाँखें बन्द कर मि उिारण िुरू चकया। दि चमनट के बाद आाँखें खोलीं। एक चगलास मैगाया। उसमें जल भरा, िुलसी-पत्र िाला और बेटी को आज्ञा दी चक िुलसी-पत्र के साथ सारा जल पी जाइए। वह िर गयी, sin hat t =in hat t =an hat t , मैं अगर एक िम्मि भी जल पी लूाँ, उसकी उलटी हो जािी है और अगर इसे पीयूाँगी, िो यहााँ सब गन्दा हो जायेगा।" स्वामी जी बोले-"कोई बाि नहीं।" स्वामी जी ने उि स्वर में आज्ञा दी "फौरन पी जाओ।" एक चगलास पूरा पी चलया। उसके बाद लोटे का बाकी पानी चगलास में िाला और वह भी चपला चदया। और कुछ नहीं ंहुआ। बेटी की उलचटयााँ सदा के चलए बन्द हो गईं। है न िमत्कार!

१९९४ में मेरा गाल ब्लैिर का आपरेिन हुआ। उसमें एनेथेचटस्टक िाक्टर की वजह से मैं कौमे में िला गया। मुझे हाटप और लंग मिीन लगा कर आई सी यू में िाल चदया गया। दो चदन बाद जब आश्रम में स्वामी जी महाराज को पिा िला, िो िाम के सत्संग में छह चदन िक मेरे स्वास्थ्य के चलए सामूचहक प्राथपना की गयी। उसके बाद स्वामी जी ने स्वामी दयानन्द जी महाराज और स्वामी चवमलानन्द जी महाराज दोनों ंको चवभूचि और िन्दन दे कर चदल्ली भेजा और जैसे ही दोनों ंस्वाचमयों ंने आई सी यू में मेरे ऊपर चवभूचि चछडकी और माथे पर िन्दन लगाया। मुझे होि आ गया। हालााँचक िाक्टरों ंने उम्मीद छोड दी थी। है न िमत्कार!

१९९८ में मेरी िारों ंआटपररयों ंके बाईपास के चलए मुझे अपोलो में भिी चकया गया। स्वामी जी लन्दन में थे। मेरी पत्नी ने स्वामी जी को लन्दन में टेलीफोन चकया। स्वामी जी का उत्तर था- "मिा जी, चबलकुल चिन्ता नहीं ंकरना। जैन साहब आपरेिन के बाद ऐसे बाहर आ जायेंगे जैसे मक्खन में से बाल और हम भी जल्दी ही चदल्ली लौटेंगे।" हालााँचक आपरेिन में साढ़े आठ घण्टे लगे, लेचकन आपरेिन कामयाब रहा और चजस चदन मुझे आई सी यू से रूम में टरािफर चकया, उससे पहली राि स्वामी जी चदल्ली लौटे और सुबह श्री सन्दीप गोस्वामी जी के साथ हाचस्पटल में आ कर मुझे िआीवापद चदया। क्या यह िमत्कार नहीं!

२००४ में सुप्रीम कोटप के िआदेि से चदल्ली में चकसी भी िरह की फैक्टरी कामचिपयल जगह में िलाने की मनाही हो गयी। िअिः मुझे अपना आफसेट प्रेस और फैक्टरी दोनों ंबन्द करनी पड गयी। उन चदनों ंआश्रम के प्रेस के मामले को ले कर स्वामी जी से पत्रािार और फोन पर बािें होिी रहिी थीं। जब मेरी कमाई का साधन प्रेस और फैक्टरी बन्द हो गयी, िो चविार आया चक क्यों ंन एक मकान खरीद चलया जाय चजसके चकराये से आगे जीवन यापन होिा रहे। उन्हीं ंचदनों ं हमारे घर के पास िार बेिरूम का मकान चबक्री के चलए उपलब्ध हुआ, चजसकी कीमि बहुि-

बहिु ज्यादा माँगी गयी। हमारे पास चसफप पााँ लाख कै ि था, वह दे कर छह महीने का समय ले के बुक कर चदया। पिा नहीं ं चकस िक्ति ने ऐसा करने चदया। अगले चदन आचफस में स्वामी जी का टेलीफोन आया। िििबिी के आक्तखर में मैंने स्वामी जी को बिाया चक मकान का एिवा दे चदया है। स्वामी जी ने एकदम कहा - "बाकी पैसा कहााँ से आयेगा?" मैंने एकदम कहा- "स्वामी जी, आयेगा कहााँ से, वह िो आप देंगे।" वह बोले-"क्ा मिलब?" मेरा उत्तर था आपका आिीवापद चमल गया, िो पैसा अपने-आप आ जायेगा।" स्वामी जी महाराज ने दि चमनट कि टेलीफोन पर ही िमिोरण करने के पश्चाि् आिीवापद चदया। निीजा, मुझे नहीं ं मालूम चक बाकी पैसा कै से और कहााँ से इकट्ठा हो गया, चबना उधार चलये। अब उसी मकान की कमाई से बहिु अच्छा गुजारा लिने के साथ िबि भी हो जािी है, क्ोंचक चदल्ली यूचनवचसपटी के सामने होने से हमने उसे सूटेंट होस्टल बना चदया है।

कहने को िो िमत्कार पर िमत्कार अपने-आप हिो िले गये चजनकी कोई संख्या नहीं ं है। अगर सबके बारेमेंचलखूाँिोपूरीपुस्तकबनजाय।इसके अलावामेरीनवीफैक्टरीका१९७४में उद्घाटन, १९७८ को आफसेट प्रेस का उद्घाटन और १९८९ में गृह प्रवेि सब स्वामी जी की कृपा से उन्हीं ं के हाथों ं से हुआ और उन्हीं ं की कृपा से २००५ से मुझे आश्रम के प्रेस और पक्तब्लके िन में सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ चजससे चक मैं अपने िजुबे से हर िीज को मिापन चसस्टम में िाल सकूाँ ।

मेरा मेरे गुरु पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज को िििि– प्रणाम, चजनकी वजह से मेरा जीवनसुधरगयाऔरबुढ़ापेमेंकमाईकाभीपरमानेंटसाधनबनगया।

ॐ

जहााँ भी आप स्वयं को एक जीवन के रूप में, जीवन जीने के रूप में अचभव्यि कर रहे हैं, उन समस्त स्तरों ंपर स्वयं से पूछें-"क्ा मैं अपना जीवन िारीररक, मानचसक, सांस्कृचिक, नैचिक और आध्याक्तत्मक स्तर पर इस ढंग से जी रहा हाँ जो कपोल-कल्पनाओं ंसे, अवास्तचवकिाओं ंसे वास्तचवक चदव्यिा के सत्य की ओर ले जाये? इन समस्त स्तरों ंपर क्ा मैं असत्य से सत्य की ओर, अिकार से प्रकाि की ओर, जन्म-मरण से अमरत्व की ओर का जीवन जी रहा हाँ? उस ओर चिन्तन कर रहा हाँ, कायपरि हाँ और आगे बढ़ रहा हाँ? अपने पूणप रूप में, समग्रिा से और पचवत्रिापूवपक जीवन जीिे हुए क्ा मैं इस महान् गररमा को बनाये रख रहा हाँ?" यह 'कसौटी' है।

स्वयं से प्रश्न करिे रहें। जैसा भी इस प्रश्न का आपका उत्तर होगा, उसी प्रकार की गुणवत्ता आपके जीवन की होगी और वैसा ही आपके जीवन का पररणाम होगा।

-स्वामी शिदानन्द

सिि स्मरीय एक शिक्षाप्रद प्रसंग

– ब्रह्मिारी श्री पानु जी महाराज –

वषप १९६६ की जनवरी का महीना था। पूज्य श्री श्री आनन्दमयी माँ की जन्म िाबि् के समारोह का समय िल रहा था। मेरी गहन प्राथपना पर परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज अत्यन्तकृपापूवपकश्रीमााँकेचवचभन्नआश्रमों ं मेंहोनेवालेकायपक्रमों ं कीशृंृंखलामेंभागलेनेके चलए उन सभी स्थानों ं पर पधारने के चलए सहषप मान गये। उनकी यह अचि पावन उपक्तस्थचि समस्त कायपक्रमों ं की िोभा को बढ़ाने वाली थी। वास्तव में यह एक अत्यन्त भव्य यात्रा-क्रम था, चजसे पूज्य श्री स्वामी जी ने अत्यन्त सूक्ष्मिा से स्वयं ही चनधापररि चकया था।

इस प्रकार पूज्य श्री स्वामी जी अपने दो–ीन भि सेवकों ं िथा मेरे सचहि वाराणसी, चवन्ध्याल, नैचमषारण्य, लखनऊ, कनखल (हररद्वार), बेरागढ़ (भोपाल), कोलकिाा, अगरिला (चत्रपुरा) और यहााँ िक चक िाका और श्री माँ की जन्मस्थली बांगलादिे में खेओरा भी गये।

कसबा के मक्तन्दर का श्री माँ के जीवन से अत्यन्त गहन सम्बि रहा है और उनका चित्र अब स्थायी रूप से वहााँ बेदी पर रख चलया गया है चजसकी चनत्य पूजाएँ हीोी हैं। इस पावन मक्तन्दर के दिपन के समय पूज्य स्वामी जी वहााँ के वाािावरण से अत्यन्त प्रभाचवि ििीिी हो रहे थे। उन्ोंने

भगवान् के चवग्रह के समक्ष साष्टांग दण्डवि् प्रणाम चकया और चदव्य भाव से पूणप भजन गाने लगे। पुजारी से आज्ञा ले कर वे मक्तन्दर के गभपगृह में प्रचवह हुए, प्रभु-चवग्रह के पाद स्पिप चकये और भावसमाचध की अवस्था में मौन धारण चकये बाहर आ गये।

कु छ ऊाँ िाई पर क्तस्थि इस मक्तन्दर से नीिे लौटिे समय पूज्य स्वामी जी अत्यन्त धीरे-धीर 'कमला सागर' नामक प्रचसद्ध चवशाल झील-जो चक बांगलादिे की सीमा पर है की ओर िलने लगे। िभी अिानक एक चवशालकाय कु त्ता कहीं ं से आ गया और स्वामी जी के एकदम कदमों ं के आगे आ कर मानो उनका रास्ता ही रोक कर खडा हो गया। हम में से ही एक कु त्ते को भगाने के प्रयास में एकदम से लगभग ठोकर मारने जैसा हुआ। स्वामी जी एकदम व्यग्रिा से बोल 33,^ -1 7 - 7 ^ 11 > ित्काल कु ठे को संके ि से अपनी ओर बुलाया, उसे प्रणाम चकया, उसकी पीठ थपथपाई और कुछ चमठाई भी खाने को दी। स्वामी जी मेरी ओर घूमे और कहा, "सबमें भगवान्!"

मैं स्तब्ध रह गया। यह थे पूज्य स्वामी जी, जीव मात्र के प्ेरमी! हम सबके चलए यह एक चिक्षा, एक उपदिे था। एक अचवस्मरणीय प्रसंग जो सदैव मेरे मन में इसी प्रकार जीवन्त रूप से स्मरण रहेगा, सिि स्मरणीय!

माँ आनन्दमयी आश्रम, वारािसी

'परोपकाराय सिां शवभूिय:'

परम पूज्य स्वामी श्री शिदानन्द जी महाराज

-ब्रह्मिाररिी गीिा बनजी, वारािसी-

शपबच्चन्त नद्य: स्वयमेव नाम्भ:
स्वयं न खादच्चन्त फलाशन वृक्षा:।
धाराधरो वषणशि नाहिीै:
परोपकाराय सिां शवभूिय:।।

चजस प्रकार नचदयाँ स्वयं अपना जल पान नहीं ंकरिी, वृक्ष स्वयं अपना फल नहीं ंखािे
िथा जलधर अपने चलए नहीं ंबरसिा, उसी प्रकार महापुरुषों ंका जीवन एवं उनकी सारी चवभूचियाँ
दूसरों ंके उपकार के चलए ही हिोिी है। सन्त 'बहुजनसुखाय', 'बहुजनचहिाय' ही जीवन धारण
करिे है।
ऐसे ही विपमान युग के महान् पुरुष थे चदव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष त्यागमूचिप, िपोमूचिप,
सन्तचिरोमचण स्वामी श्री चिदानन्द सरस्विी जी महाराज। आपके जीवन का प्रत्येक क्षण िथा समूपूणप
चक्रयाएँ प्राचणमात्र के कल्याण के चलए ही पूणप रूप से समचपपि थीं।ं

स्वामी चिदानन्द जी का जन्म २४ चसिम्बर, सन् १९१६ को दाचक्षणात्य में 'मंगलोर' नामक
हिर में 'मनोहर चवलास' नामक भवन में मिाामह के पास हुआ था।

संसूकृि साचहत्य में कहा गया है-

कुलं पशवत्रं जननी कृिाधाण
बसुन्धरा पुण्यविी ि िेन।
अपारसच्चि् सुखसागरे ऽच्चस्मन्
लीनं परे ब्रह्मशि वस्य िेि: ।।

अथापि् चजनका चित्त परमानन्दज्ञान के सुखसागर में परब्रह्म में लीन है, उनके द्वारा ही
अपना वंपिचवत्र िथा धन्य हिोिा है, उनकी जननी कृिकृत्य हो जािी है। उनसे धरिी मािा भी
पुण्यविी हिोिी है। ऐसे ही िररत्र से सम्पन्न थे स्वामी चवदानन्द जी महाराज।

आपके सदृि महान् आत्मा का स्तवन करिे हुए ही गोस्वामी िुलसीदास जी ने चलखा है-

मुद मंगलमय संत समाज।
जो जग जंगम ितीरथ राजू।।

मानस बालकाण्ड दो, १ िौ.४

सन्तों ंका समाज आनन्द और कल्याणमय है, जो जगि् में िलिा-चफरिा िीथपराज प्रयाग है। पूज्य महाराजश्री के जीवनरूपी प्रयागराज में प्रवाचहि होिी हुई ज्ञान-भक्ति-कमप-सररिा की चत्रधारा में अवगाहन कर हम यथाथप में धन्य होिे हैं।

स्वामीचिदानन्दजीकाजीवनहीएकमहान् आध्यात्त्मक ग्रन्थ है। आपके प्रत्येक सद्गुण ही उसचवराट्ग्रन्थकेअमूल्यअध्यायहैऔरआपके दैनक्तन्दन महत्कायप, अद्भिु िमत्कार पूणप घटनावलीहीउसचदव्यग्रन्थकाएक-एकपृष्ठहै। पूज्य महाराजश्री के जीवन रूपी इस अपूवप ग्रन्थकेयथिात्तिअनुिीलनसेहीमानवसुगमिा से चदल्य जीवन की उपलत्तब्ध कर धन्य हो सकिा है।

परमपूज्यमहाराजश्रीके उसमहान्जीवनवेद के पृष्ठों ंको पलटने पर हम देखिे है उसमें स्वणापक्षरों ंमेंचलखाहै-

साधना और साधक

श्रीश्रीआनन्दमयीमााँनेसाधनिाब्काअथपकरिेहुए कहा है-"स्वधन लाभ की िेष्टा हीसाधनाहै।उनकाहीसब,उनकेहीिरणों ंमेंपडेरहनेको छोड और कोई उपाय नहीं ंहै। चिन्ता करनी है िो उनकी ही चिन्ता करनी िाचहए।"

साधककोगुरुऔरईश्वरकेप्रचिपूणपिरणागचि,अटूट श्रद्धा और अपररमेय चवश्वास की आवश्यकिाहै।साधककोसभीबाधा-चवपचत्तयों ंकाधीरिाके साथ सामना करिे हुए अपनी साधनाके पथपरचनरन्तरअग्रसरहोिेरहनािाचहए,जीवनपयपन्त अभ्यास करिे रहना िाचहए। िभी साधक को सफलिा चमलिी है।

स्वामीचिदानन्दजीमहाराजश्रीकाजीवनएकसिेसाधक का ज्वलन्त चनदिपन था। **आप स्वयं शसद्ध पुरुष होिे हुए भी जनशिक्षा के शलए साधक का जीवन व्यिीि करिे थे।** आप चनयमों ंका कभी उल्लंघन नहीं ंकरिे थे, दूसरों ंसे भी दृढ़िा से चनयम पालन कराने के कठोर पक्षपािी थे। उन्हें श्री रामकृष्ण परमहंस के वेदान्तवादी गुरुदेव श्री िोिापुरी जी का कथन सदा स्मरण रहिा था चक पीिल के पात्र को िमकाने के चलए उसे प्रचिचदन रगडना आवश्यक है।

पूज्य महाराजश्री के गुरुदेव श्रद्धेय स्वामी श्री चिवानन्द जी भी कहिे थे, "**िरीर गधे की िरह है और मन अन्त समय िक कशपसदृि िंिल। अिः इसके शलए आध्यात्त्मक िाबुक और शिशिक्षा, िपस्या आशद की छडी सदैव िैयार रखनी िाशहए।"**

पूज्य महाराजश्री के जीवन में गुरुदेव की आज्ञा का अक्षरिः पालन होिे देखा जािा था। आप भीकहिे थे," यचद आप जीवन्मुि हैं िो भी आपको सावधान रहना है।"

पूज्य महाराजश्री के चवषय में उनके गुरुदेव ने कहा था, "स्वामी चिदानन्द जी अपने पूवप-जन्म में ही एक योगी थे। यह उनका अक्तन्तम जन्म है। ये जीवनुमि हैं।"

आप जीवनुमुच्चि की उस ज्ञिवथथा में अवथथान करि हुए भी अपने को एक साधक थिा गुरुदेव का िुच्छ सेवक मानि थे।

मनसे्येकं विसे्येकं कमणणे्येकं महिानाम्

संसृ्कि में यह नीचिश्लोक अचि प्रचसद्ध है-

मनसे्येकं विसे्येकं कमणणे्येकं महिानाम्।
मनस्यन्यद् विस्यन्यत्कमणण्यन्यद् दुरािनाम् ।।

दुजपन मन में कुछ ससेि हैं एवं वाणी से और कुछ दूसरा ही बखानि हैं और करि कुछ और ही हैं। अथापि् उनकी करनी और कथनी में चभन्निा होिी है। परनु्त सज्जनों ंके मन, वाणी और कमप में एकिा होिी है। यहााँ चविेषिा परम पूज्य चिदानन्द जी में देखी जािी थी। मधुर मधुर भाषणों ंके द्वारा लोगों ंको एकचत्रि चकया जा सकिा है। चकनु्त लोगों ंको प्रेररि िथा प्रभाचवि करने के चलए भाषण नहीं, ंआिरण की आवश्यकिा होिी है।

स्वामी चिदानन्द जी महाराज जो भी कुछ कहि थे, उसे पहले अपने जीवन में उिारि थे। एक सज्जन ने आपके चवषय में ठीक की कहा था, **"यह यशि अपनी मान्यिाओं ंका प्रिार करने के बजाय उन्ें अपने जीवन में उिारना अशधक पसन्द करिा है।"** िभी आपकी वाणी में इिनी ओजक्तस्विा थी। आपकी वाणी हृदय के अन्तीःस्थल को स्पिप करिी थी। आपके अनुभवचसद्ध ओजस्वी उपदेिों ंसे लोगों ंके जीवन में क्राक्तन्तकारी पररविपन आिा था और चदव्य जीवन की प्राक्तप्त सहजिा से होिी थी।

आप सदािार का पालन, नैचिकिा के आिरण पर अत्यचधक जोर दिे थे। एक बार आपने भाषण में कहा था- "मेरे अनन्य चमत्रो! आध्याक्तत्मक िुला द्वारा मानव के चक्रया-कलापों ंकी िौल, न केवल की गयी प्राथपना या उिारि मिों ंसे ही अथवा न केवल जलायी गयी मोमबचत्तयों, ंउिारी गयी आरचियों, ंबजायी गयी घक्तण्यों ंऔर िास्त्ों ंके पारायण से ही होिी है अचपिु मुझे आपको यह स्पष्ट् बिलाना है चक आध्याक्तत्मक िुलाएाँ मनुष्य का िौल करिी हैं, उसके हृदय में पाचलि भावनाओं ंकी गुणवत्ता से, उन िब्ों ंसे जो चक आप बोलिे हैं और जैसा आप अपने पडोचसयों ंको सम्बोचधि करि हैं और आपके व्यवहार के प्रते्यक उस सामान्य चक्रया-कलाप से जो प्रभु द्वारा प्रदत्त जीवन में दूसरों ंके प्रचि व्यवहार में आप अपनािे हैं।"

साधनामय साधक के जीवन में अथवा उस परम करुणामय प्रभु के साथ चजन्ोंने अपना सम्बि जोड चलया है, उनके िलने में, बोलने में, दूसरों ंके साथ व्यवहार करने में, जीवन की प्रते्यक चक्रया में एक अपूवप नैसचगपक सौन्दयप की छटा प्रसु्फुचटि होिी है, जो दूसरों ंको स्वभाविीः आकचषपि करिी है। िभी िो कहा गया है-

धमे ित्परिा मुखे मधुरिा दाने समुत्साशहिा
शमत्रेऽवंचकिा गुरौ शवनशयिा शित्ते ऽशिगम्भीरिा ।

आिारे ि्ुशिा गिु रशसकिा िाखेऽशि शवज्ञाशनिा
रूपे सुन्दरिा हरी भजशनिा सते्स्वेव संदृश्यै ।।

धमण में ित्परिा, विाी में मधुरिा, दान में उत्साह, शमत्रों ंसे शनष्कपटिा, गुरुजनों ंके प्रशि नम्रिा, शित्त में गम्भीरिा, आिार में पशवत्रिा, गिु ग्रहि में रशसकिा, िाख में शवद्वत्ता, रूप में सुन्दरिा और हररस्मरि में लगन-ये सब गिु सतुपुरुषों ंमें ही देखे जािे हैं।

उपयुपि सभी गुण पूज्य चिदानन्द जी में उपलब्ध थे।

पिस्या

"जीवन सन्त-स्वामी चिदानन्द" नामक महाराजश्री के वररष ग्रन्थ के प्रणेिा श्री अक्तखल चवनय जी अपनी पुस्तक में चलखिे हैं-"कर िपस्या का दूसरा नाम 'स्वामी चिदानन्द' था। अपै्रल १९६२ से मई १९६३ िक वे अज्ञािवास में रहे, ज्वार, बाजरा उनका चभक्षा-आहार था। अचनकेि की क्तस्थचि रही। नामदेव, िुकाराम, एकनाथ और ज्ञानेश्वर जैसे सन्तों ंकी साधना का वे अनुसरण करिे रहे। िुकाराम के अभंगों ंकी धुन में मस्त रहे। कोलापुर के पास गाणगापुर में गये।" **श्री शिदानन्द जी का जीवन ही िपस्यामात्र था। वे िपस्या के मूिण शवग्रह थे।**

त्यागेनैके अमृित्वमानिुः

'न कमणिा न प्रजया धनेन
त्यागेनैके अमृित्वमानिुः ।'

कैवल्योपचनषद् श्लोक नं. ३ महानारायण उपचनषद् ।। १२/१४

कमप के द्वारा नहीं,ं सन्तानोत्पचत्त से भी नहीं ंिथा धन से भी नहीं,ं केवल त्याग के द्वारा ही प्रािीन काल के ऋचषयों ंने अमृित्व की प्राक्तप्त की।

कैवल्योपचनषद् का यह मि पूज्य महाराजश्री के जीवन में साकार हो उिा था। आप वधाथप में औपचनषद् पुरुष थे। आप त्याग के प्रिीक थे। आप घुटनों ंिक वस्त् पहनिे थे। िरीर पर कभी उत्तरीय के रूप में िादर ग्रहण करिे वे कभी वह भी नहीं।ं एक चदन आपके गुरुदेव ने आपसे मजाक में कहा था, **"ओ जी! अब आप शदव्य जीवन संघ के महासशिव हैं। आप सुन्दर लम्बे वस्त्र क्ों ंनहीं ंधारि करिे?"** उनका चवनम्र उत्तर था, "इन छोटे गमछों ंसे पहाडी पर िढ़ने-उत्तरने में सुचवधा रहिी है।"

आप सादा आहार करिे थे। सादगीपूणप जीवन यापन करने के पक्षपािी थे। महात्मा गांधी के साथआपके कुछ गुणों ंमें समिा देखी जािी थी। आपके साथ पैदल िलिे हुए एक संन्याचसनी ने कहाथा, "इनकी िाल िो गांधी जैसी है।"

अमानी मानदः

िैिन्य महाप्रभु का एक अचि प्रचसद्ध श्लोक है-

िृणादशप सुनीिेन िरोरशप सशहष्णुना।
अमाशनना मानदेन कीिणनीयः सदा हररः ।।

पूज्य महाराजश्री इस श्लोक के जाज्वल्मान प्रिीक थे। आप अपनी आयु, पद, प्रशिष्ठा की ओर ध्यान न दिे हुए सबको साष्टांग दण्डवि् प्रणाम करिे थे। शवनम्रिा आपका भूषण था।

उनचदनों ंवाराणसीमेंश्रीश्रीमाँआनन्दमयी कन्यापीठ का स्वणप-जयन्ती समारोह का आयोजनिलरहाथा।इसअवसरपरपूज्यमहाराजश्री वाराणसी में उपक्तस्थि थे। एक चदन कायपक्रमकीसमाक्तप्तकेपश्चाि्आश्रमकेहॉल(घर) में पूज्य महाराजश्री ने प्रसन्निापूवपक िीघ्रिा से जाकरअपनेसेअपेक्षाकृिकमवयस्कआश्रम के ही एक ब्रह्मिारी के पैर छू कर प्रणाम चकया।यहदेखकरसबअवाक् रहगये।बहुिचदनों ंके पश्चाि् चमलने पर हाचदपक अचभनन्दन का आपका यह अनुपम उदाहरण था।

भच्चिमय जीवन

आपका जीवन भक्तिमय था। श्रीमद्भागवि में कहा गया है-

वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां
हस्तौ ि कमणसु मनस्तव पादयोनणः।
स्मृत्यां शिरस्तवशनवास जगत्प्रणामे
दृशष्टः सिां दिणनेऽस्तु भवत्तनूनाम्।।

– १० – १० –३२

भि भगवान् से प्राथपना करिे हैं- हे प्रभो! वाणी आपके गुणानुवाद में, खवण आपके कथा-श्रवण में, हाथ आपकी सेवा में, मन आपके िरण कमलों ंके स्मरण में, िीष आपके चनवासभूि सारे जगि् के प्रणाम करने में िथा नेत्र आपके िैिन्यमय चवग्रह सन्तजनों ंके दिपन में लगे रहे।

पूज्य महाराजश्री के हृदय की प्राथपना भी यही थी। श्री अक्तखल चबनय 'जीवन सन्त-स्वामी चिदानन्द' िीषपक अपने ग्रन्थ में चलखिे हैं चक "गृह त्याग कर जब वे (पूज्य महाराजश्री) वेंकटेश्वर के दरबार में पहुँिे िो वे भगवान् बैंकटेश्वर को भेंट िढ़ाना िाहिे थे, परन्तु पास में कुछ न होने से उन्होंने एक ठेकेदार से चनवेदन चकया चक उन्हें मजदूरी पर रख ले। गौरवणप, क्षीणकाय और जैसे कद से युि उि सौम्य युवक को देख कर उसने इनकार कर चदया। उसने समझा चक उसके साथ हंसी की जा रही है। जब स्वामी जी ने चवश्वास चदलाया चक वे अपनी कमाई का धन बेंकटेश्वर को अचपपि करना िाहिे हैं िो उसने उन्हें मजदूर के रूप में रख चलया। चकन्तु इन्होंने

सिाचदनकीमजदूरी का केवल एक रुपया चलया, उसे भगवान् को अचपपि कर आनन्द प्राप्त चकयाऔरआगेकी राह ली।" ऐसी ही पूज्य महाराजश्री की भगवान् के प्रचि चनष्ठा थी।

सेवा ही मूल मन्त्र

आपके जीवन का मूल मि था सेवा िथा प्राचणमात्र के प्रचि पे्रम। आपका सेवाभाव अद्भिु था। **रोशगयों ंके प्रशि आपकी सहानुभूशि शवलक्षि थी। कुष्ठ रोशगयों ंकी, दररद्रनारायि की सेवा ही उनके शलए सिे अथों में प्रभु की सेवा थी।** एक बार पूज्य चिवानन्द जी ने आपके चलए कहा था, **"बे िाक्टरों ंके भी िाक्टर हैं, वे कोशडयों ंके िाक्टर हैं। वे दया के सागर हैं।"** वे चकसी की भी अस्वस्थिा की खबर पािे ही उसकी सेवा में, उसके उपिार में िुरन्त संलान हो जािे थे।

सन् १९८७, फरवरी के महीने में वाराणसी में आपके सभापत्य में श्री श्री माँ आनन्दमयी कन्यापीठ का वाचषपकोत्सव िल रहा था। **अनुष्ठान की समाचि पर भीड के भीिर ही आप जमीन पर बैठ कर आश्रम की एक वयोवृद्धा संन्याशसनी से उनकी िारीररक व्याशध के शवषय में पूछिाछ करने लगे। वह संन्याशसनी भी शवश्वस्त हृदय से उस मानविा के परमबनु्धु को अपनी ददण भरी कथा सुनाने लगी। स्वामी जी ने उन्हें बिन शदया शक वे उनके शलए ऋशषकेि से औषशध भेज देंगे, और कुछ ही शदनों ंमें उन्हें एक औषशध का पासणल प्राि हुआ।** "

वसुधैव कुटुम्बकम्" की उदात्त भावना आप में थी।

करुणामय पुरुष

िान्िा महान्तो शनवसच्चन्त सन्तो
वसन्तवलोकशहिं िरन्तः ।
िीणाि: स्वयं भीमभविाणवं जनाः
नहेिुनान्यानशप िारयन्तः ।।

चजस प्रकार बसन्तऋिु अपनी बासक्तन्तक आभा से, नवपल्लविि पुष्पों ंसे सबको आह्लाचदि करिा है, उसी प्रकार सन्त महापुरुष भयंकर संसाररूपी सागर को स्वयं पार कर अपनी अहेिुकी कृपा से इस संसार-सागर में डूबी हुई जनिा को पार कर िाक्तन्त िथा परमानन्द प्रदान करिे हैं। पून्य महाराजश्री की गणना ऐसे ही महापुरुषों ंमें होिी थी।

आपके गुरुदेव ने आपके चवषय में कहा था, **"स्वामी शिदानन्द में करुणा और शवनम्रिा का प्रािुयण है।"**

व्यावहाररक वेदान्ती

पूज्य महाराजश्री ने वेदान्त के शसद्धान्त को अपने जीवन में उिारा था। आप प्राशिमात्र के भीिर उस पर ब्रह्म परमात्मा का ही दिणन करिे थे। िभी िो प्राशिमात्र के प्रशि आपकी इिनी श्रद्धा, पे्रम िथा आदर की भावना थी।

श्रीमद्भागवि में कहा गया है-

सवणभूिेषु यः पश्येद् भगवद्भावमात्मनः।
भूिाशन भगवत्यात्मन्येष भागविोत्तमः।।

-११/२/४५

सम्पूणप प्राचणमात्र में जो आत्मस्वरूप भगवान् का दिपन करिा है िथा भगवान् में जो प्राचणमात्र का दिपन करिा है, वही उत्तम भि है।

श्री श्री आनन्दमयी माँ ने कहा है- "संसार में अश्रद्धा व उपेक्षा की कोई वस्तु नहीं है, वे अनन्त भावों, अनन्त रूपी से अनन्त खेल खेलिे हैं। बहु न होने से यह खेल कैसे िले ? देखिे नहीं प्रकृति और विकार, सुख और दुःख, अचध और जल चकस प्रकार एक ही शृंखला में बंधे। बंधे हुए हैं

अिः सवपत्र भगवद्-दिपन ही मनुष्य मात्र का किपव्य है।

सुन्दरिा के प्रशि जागरूकिा

"सत्यं शिवं सुन्दरम्" जो सत्य है, जो कल्याणमय है एवं सुन्दर है वही परमात्मित्व है। अिः सुन्दरिा के भीिर भगवान् का चनवास है।

एक शवरि सन्त होिे हुए भी पूज्य महाराजश्री में सौन्दयण के प्रशि अपूवण िेिना िथा रुशिसम्पन्न बुच्चद्ध देखी जािी थी। आप अपने िारों ओर स्वच्छ िथा सब कुछ यथाथथान देखना पसन्द करिे थे। आपके छोटे से छोटे कायण में भी एक नैसशगणक सुन्दरिा झलकिी थी।

"स्वयंसुन्दर हो कर सुन्दर हृदय आसन में शिर सुन्दर को पशद प्रशिशष्ठि कर सको िो सबहीसुन्दर िीिी होगा।"

श्रीश्रीआनन्दमयी माँ की यह वािी आपने यथाथणिः। फलीभूि होिे देखी जािी थी।

जीवन्मुि की च्चथथशि

त्तिसंसारकलनः कलावानशप शनष्फलः ।
यः सच्चिनो ऽशप शनशश्चन्तः स जीवन्मुि इष्यिे ।।

चजसकी संसार-वासना िान्त हो गयी है, जो कलावान् हो का भी कलाहीन है अथापि् व्यवहारदृचष्ट् ऊपर से चवकारवान् िीिी होिा हुआ भी चनरन्तर अपने चनचवपकार स्वरूप में ही क्तस्थि रहिा है िथा जो चिचियु होने पर भी चनचश्चन्त है, वह पुरुष जीवन्मुि माना जािा है।

पूज्य महाराजश्री की यही वास्तचवक क्तस्थचि थी। ि।हर से यद्यचप उनको जगि् से व्यवहार करिे देखा जािा था, चकन्तु बास्तचवक रूप से इस जगि् में आपको चकसी से चकसी बाि की
अपेक्षा नहीं ंथी। वे भीिर से सदा भगवान् से अपने को युि रखिे थे। अिः भगवान् स्वयं कहिे
हैं–

सन्तोऽनपेक्षाः मच्चित्ताः प्रिान्ताः समदशिणनः ।
शनममणमा शनरहंकारा शनद्वणनद्वा शनष्परग्रहाः ॥

अथापि् सन्तजन चकसी प्रकार की इच्छा नहीं ंकरिे, वे मुझमें ही चिि लगाये रहिे हैं िथा नम्र,समदिों,ं ममिाशून्य, अहंकारहीन, चनद्वपि एवं संग्रि न करने वाले होिे हैं।

मद्गुरुः श्री जगद्गुरुः

श्री श्री गुरुस्तोत्र में कहा गया है–

मन्नाथः श्रीजगन्नाथः मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः।
ममात्मा सवणभूिात्मा िस्मै श्रीगुरवे नमः॥

(गुरु गी. ७–८)

इस श्लोक के सारभूि अथप को महाराजश्री ने पूणपरूप से हृदयंगम चकया था। वे अपने गुरुदेव परम पूज्य स्वामी श्री चिवानन्द जी के िरणों ंमें पूणपिः समचपपि थे।

आप कहिे थे-"श्री स्वामी चिवानन्द जी महाराज मेरे गुरु ही नहीं ंवरन् मेरे मािा-चपिा भी
है। मैं उन्हीं ंका एक रूप हूँ। मैंने अनुभव चकया चक मेरे पीछे उन्हीं ंकी प्रेरणा कायप कर रही
है।"

आप अपने गुरु में जगद्गुरु का दिपन करिे थे। िभी िो आप सभी सम्प्रदाय के चकसी भी धमापवलम्बी सन्त के पास चवनम्र भाव से चनसंकोि रूप से उपक्तस्थि होिे थे।

ध्यानमूलं गुरोमूणशिणः पूजामूलं गुरोपणदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोवाणक्यं मोक्षमूलं गुरोकृपा ॥

यह श्लोक आपके जीवन का सवपस्व था।

श्री श्री आनन्दमयी माँ के साशन्नध्य में

कनखल में माँ के आश्रम में पूज्य महाराजश्री ने एक बार स्वयं कहा था चक माँ के साथ आपकीसवपप्रथम भेट सन् १९४८ में फरवरी के महीने में बाराणसी आश्रम में हुई थी। उन चदनों ं बाराणसीआश्रम में िीन वषप व्यापी साचवत्री यज्ञ िल रहा था। माँ से चमल कर स्वामी जी अत्यन्त प्रसन्न हुए।

पूज्यमहाराजश्रीथाचदव्यजीवनसंघकेसभीमहात्मागणमााँकोचविेषआदरकीदृचष्
सेदेखिेथे|मााँभीउन्ेंपूणपमान्यािदेिीथीं|ास्वामीजीनेमााँकोजगन्मिााके रूपमेंस्वीकार
चकया था|

आजचदव्यजीवनसंघके साथश्रीश्रीमााँआनन्दमयीआश्रमकाअचिघचनष्ठसम्बि
स्थाचपि हो गया है|

संयम-सिाह में पूज्य महाराजश्री

श्रीश्रीआनन्दमयी संघ द्वारा प्रचि वषप संयम साह महावि का आयोजन चकया जािा है| इस
उपलक्ष्यमें भारिके सभी चवचिष्ट महात्मागण आमंचत्रि होिे हैं| पूज्य महाराजश्री प्रायीः प्रचिवषप
संयम-समाहमेंपधारिे थे|

संयम-सिाह में पूज्य महाराजश्री का शदव्योपदेि

पूज्य स्वामी श्री चिदानन्द जी ने संयम-सप्ताह के उपलक्ष्य में सन् १९८६ के ११ चदसम्बर
को कनखल में यह कथा सुनायी थी-

"एक जज थे| वे सदािारी, किपव्यपरायण िथा सत्यवादी थे| परन्तु अपनी जीचवका के
अनुसार उन्ें अनेक समय चनददोषी मनुष्यों ंको भी दोषी साचबि कर उन्ें सजा देनी पडिी थी|
अन्तिीः उन्ें वैराग्य हो गया| वे अपने काम-काळ, घर-बार-पररवार सबका पररत्याग कर भगवान्
की खोज मे चनकल पडे| परन्तु वे संन्यास लेने के पूवप छीः महीने िक साधु-जीवन के अभ्यास में
संला हुए| अच्छा भोजन, अच्छा पानी, अच्छी िय्या पर सपन-इन सबमें अभ्यस्त थे, चकन्तु धीरे-
धीरे उन्ोंनें सब छोड चदया और साधु-जीवन के अनुकूल खान-पान का अभ्यास करने लगे| चकन्तु
संन्यास से कर जब वे चभक्षा लेने गये िब उन्ें अचभमान होने लगा चक "मैं िो चिचक्षि कुलीन
पररवार में जन्मा व्यक्ति हाँ|" बाद में जब वे साधु हो गये, िब श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार जी के
अनुरोध से उन्ोंनें अपना अनुभव चलखा था चक जब उनका जज का अचभमान नहीं ंजा रहा था िब
उन्ोंनें अचभमान त्यागने का दृढ़ चनश्चय कर चलया| वे सबेरे रोज गंगाजी में स्नान कर घाट पर एक
ओर खडे हो जािे थे और जो भी स्नान करने आिे थे, उन्ें साष्टांग दण्डवि् करिे थे| इस प्रकार
बीस चदन करने के बाद उनका जज साहब का अचभमान छूट गया|"

पूज्य महाराजश्री कहा करिे थे-"**बीि-बीि में मन का शनरीक्षि करना साधक का
किणव्य है| उन्ें मन के हर शिन्तन को नोट करिे रहना िाशहए|"**

सन् १९८७ के संयम महाव्रि में पूज्य महाराजश्री ने एकचदन सबके आग्रह करने पर अपने
गुरुदेव परम पूज्य स्वामी श्री चिवानन्द जी महाराज के चवषय में कहा था| आपने उनके वैराग्य की
पराकाष्ठा के सम्बि में बिाया चक चकस िरह वे िौवीस घण्े साधना में लगे रहिे थे| चभक्षा में
प्राप्त रोचटयों ं को एक वृक्ष के गहुर में रख देिे थे और ७-८ चदन िक उन सूखी रोचटयों ं को िूणप
कर गंगाजल में घोल कर पी जािे थे| पुन ७-८ चदन बाद एक चदन चभक्षा मााँगने जािे थे| चनरन्तर
साधना का अभ्यास करिे थे| उनकी कठोर िपश्चयाप वधाथपिीः अनुकरणीय है|

इसप्रकार संयम-सप्ताह में पूज्य महाराजश्री का चदव्योपदि श्रवण कर सभी धन्य हिो थे।

श्री श्री माँ आनन्दमयी कन्यापीठ के वाशषणकोत्सव में पूज्य महाराजश्री

चदव्यख्याश्रीश्रीमादंग्दिपकेमें प्रसुफुचटि यह छोटी सी संस्था 'श्री श्री माँ आनन्दमयीकन्यापीठ'है।सन्१९३८ मे २६ चसिम्बर को कन्यापीठ की स्थापना हुई थी। चिवनगरी किाीधाम में यह प्रचिचष्ठि है।

इस संथथा का उद्देश्य है जीवनदीप को आदिण िररत्ररूपी िेज से प्रज्वशलि करना, शजससे एक आदिण जीवन के प्रकिा में आ कर अनेक जीवन प्रकाशिि हो सकें।

श्रीश्रीमाँआनन्दमयीकन्यापीठकेउनिासवेवाचषपकोत्सवकाआयोजनचकयाजारहाथा। सबकीइच्छाथीचकइसबारपूज्यश्रीचिदानन्दजीमहाराजकोइसअवसरपरआमन्त्रििचकया जाये।उनसेप्राथपनाकीगयी।उन्होंनेइसप्राथपनाकोअनुग्रहपूवपकस्वीकारकरचलया।आपचदनांक १३-२-८७कोसायंकालपूचणपमाके चदनसत्यनारायणकीपूजाके समयकिाीआश्रमपधारे। आपके आिे ही आश्रम में बारों ं ओर आनन्द की लहरें छा गई।

दूसरेचदनप्राकालपूज्यमहाराजश्रीनेसमूपूणपचवद्यालयकाचनरीक्षणचकया।िीनिल्ले में ठाकुरपरमेंभीगये।

आश्रम-बाशलकाओं ंकेप्रशि महाराजश्री का उपदि

चवद्यालय के हॉलपर में कन्यापीठ की छात्राओं ंको सम्बोचधि करिे हुए पूज्य महाराजश्रीने कहा-

"चवद्याथी जीवन के मुख्य िीन उद्देश्य है- (१) चवद्याजपन, (२) सदािार (पचवत्रिा), (३) स्वास्थ्य के प्रचि ख्याल रखना।

यशद मोक्षशमच्छशस िात्त!
शवषयान् शवषवि् त्यज।
ब्रह्मियणमशहंसा ि
सत्यं पीयूषवि् शपि ।।

अचहंसा, ब्रह्मियप और सत्य-वे िीन चवद्याचथपयों ंके चलए अवश्य पालनीय है।

"शवद्यािुरिां न रुशिनण शनद्रा।"

"रामायि के दो पात्र हनुमान् िथा रावि दोनों ंगुिों ंसे पररपूिण थे। शकन्तु इनमें से एक अपने सभी सद्गुिों ंको प्रभु के िरिों ंमें अपणि कर संसार में यिस्वी िथा पूजनीय बने। यही हमारे हनुमान् जी हैं िथा रावि सभी गुिों ंके द्वारा अपना ही िपणि कर संसार